CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2005

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2005

Contents

February 28 2005 Vol-18 No. 1

March 31 2005 Vol-18 No. 2

Jun 30 2005 Vol-18 No. 3

August 31 2005 Vol-18 No. 5

September 30 2005 Vol-18 No. 6

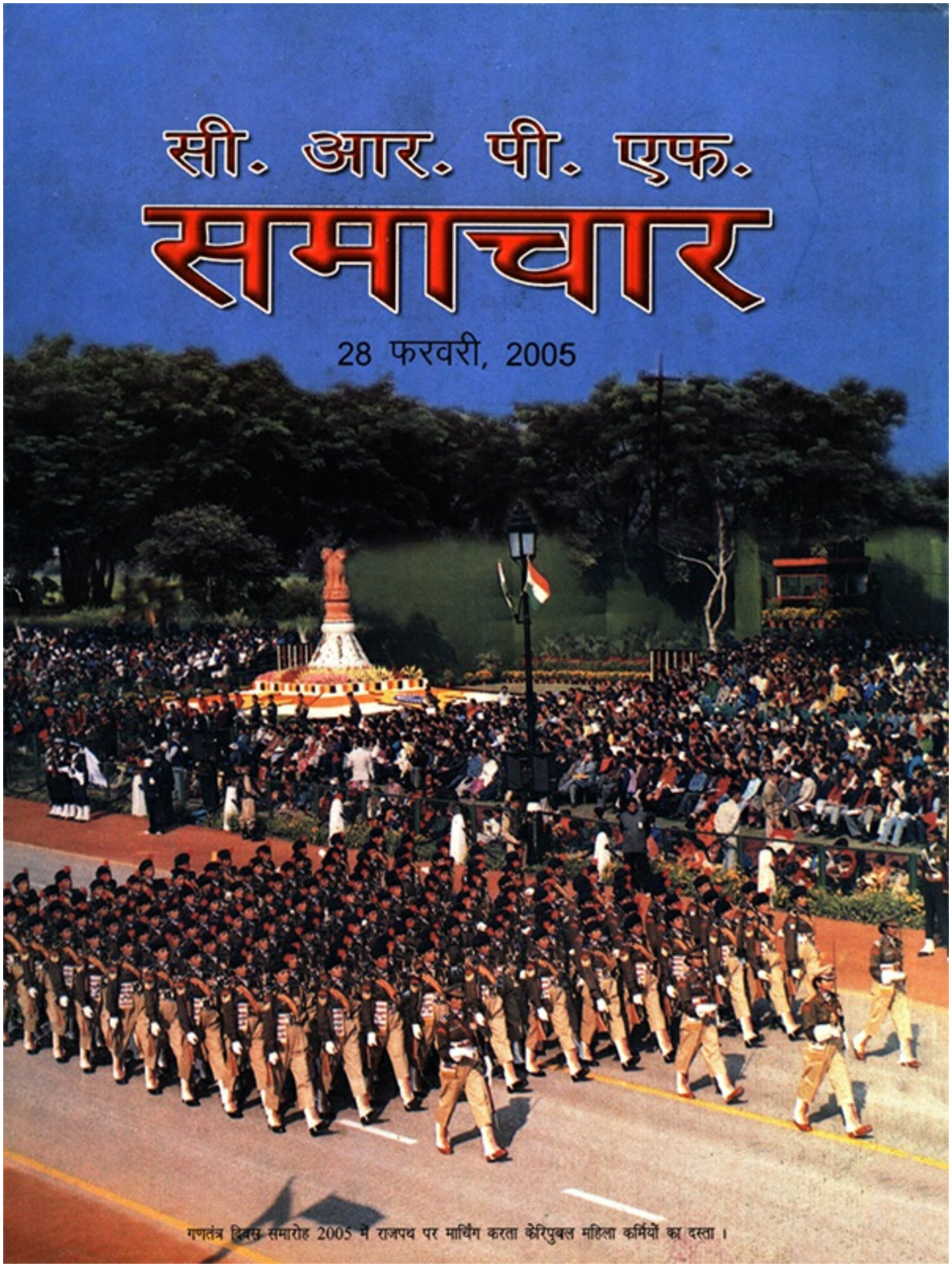
November 30 2005 Vol-18 No. 7

December 31 2005 Vol-18 No. 8

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

28 फरवरी, 2005



गणतंत्र दिवस समारोह 2005 में राजपथ पर मार्चिंग करता केरिपुबल महिला कर्मियों का दस्ता ।



22 फरवरी, *2005* को मेजर ध्यान चंद नेशनल स्टेडियम, नई दिल्ली में केरिपुबल द्वारा आयोजित *6*वीं अखिल भारतीय पुलिस बैण्ड प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि दिल्ली के उप राज्यपाल श्री बी.एल.जोशी सोविनियार जारी करते हुए।



आतंक विरोधी सेन्टर की दक्षिणी पूर्वी एशिया संकाय, कोलालंपुर *(*मलेशिया*)* के महानिदेशक श्री डाटो जैनल

आबेदीन जायन तथा टीम के अन्य प्रतिनिधि बल मुख्यालय में कोरपुबल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा से विचार-विमर्श करते हुए।



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खण्ड-18 अंक-1
28 फरवरी, 2005
9 फाल्गुन, शक, 1926

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072



<u>सम्पादकीय सलाहकार मण्डल</u>

<u>अध्यक्ष</u>

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

<u>सदस्य</u>

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक)
एस.एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
वी.डी. टोकस, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

अंदर के पृष्ठों पर



प्रकृति का तांडव-सुनामी त्रासदी और केरिपुबल का योगदान



श्रद्धांजलि



कोरेपुबल में नये महानिरीक्षक



विश्व एड्स दिवस पर बल के कार्यालयों में अनेक कार्यक्रम



89 बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम



कादरपुर में राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान का शिलान्यास



राज्य विधान सभा चुनाव-2005



बल के सामाजिक क्रियाकलाप



व्यक्तित्व विकास में ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर की एक नई पहल



कावा समाचार

अन्य

सम्पादकीय

क्या हुआ ? क्यों हुआ ?

“देश भक्त हो तो ऐसा”

“और दीपक बुझ गया”

बल के सितारे देश का गौरव

केरिपुबल के जवान को शौर्य चक्र

पर्यावरण संरक्षण में ग्रुप केन्द्र, भोपाल की एक नई पहल

ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम में नये परिवार आवासों का निर्माण

पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय में काव्य गोष्ठी व संध्या

कविताएं

सम्पादकीय

के०रि०पु०बल अपने पूर्ण विकास की ओर अग्रसर है। एक बटालियन से गठित यह बल आज देश का ही नहीं अपितु संसार का सबसे बड़ा अर्द्धसैनिक बल बनने जा रहा है। 65 वर्ष की इस लंबी विकास यात्रा में बल में कई उतार-चढ़ाव आए, कई गौरवमयी गाथाएं दर्ज हुई तो कई विकट चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। विकास की इस यात्रा में हमारे वीर साथी सदैव अपने कर्तव्य वाक्य "सेवा एवं भक्ति" को ध्यान में रखते हुए अपने प्राणों की परवाह न करते हुए सर्वदा आगे बढ़ते रहे, तभी यह सब संभव हो पाया है।

किसी भी संगठन /संस्था के विकास में उसके निपुण कर्तव्यनिष्ठ ईमानदार एवं साहसी कार्मिकों का विशेष योगदान होता है और कार्मिकों में, इन सब गुणों/ खूबियों को विकसित/उजागर करने का काम संगठन की कुछ शाखाएं व उससे जुड़े लोग करते हैं। जैसे प्रशिक्षण से जुड़े लोग नवारक्षियों को अत्याधुनिक प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें कुशल सिपाही बनाने का कार्य करते हैं वैसे ही संभरण शाखा उनके लिए अत्याधुनिक हथियार, गोलाबारूद व साजो-सामान मुहैया कराने का कार्य करती है। कार्मिक शाखा कार्मिकों की योग्यता को जांच परखकर, उन्हें उनकी योग्यतानुसार तैनाती सुनिश्चित करती है तो संचार शाखा बेहतर सूचना तंत्र मुहैया कराती है। प्रशासन निदेशालय का काम बल कार्मिकों के कल्याण एवं आंतरिक प्रबंधन की जिम्मेदारी निभाना है जबकि परिचालन निदेशालय, कार्य क्षेत्र में किस तरह से विजयश्री प्राप्त की जाए, कैसे हमारे अभियान सफल हों आदि से संबंधित दिशा-निर्देश देती है। इसी तरह जन संपर्क शाखा, बल की नीतियों, उपलब्धियों, सफलताओं, क्रिया-कलापों आदि को देश के सभी भागों में जन-जन तक पहुंचाकर बल की ख्याति बढ़ाने का कार्य करती है। आज के परिदृश्य में बढ़ते हुए जन संचार माध्यमों के फलस्वरूप जन संपर्क से जुड़ी संकायों एवं कार्मिकों का महत्व और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि देश के एक छोर पर होने वाली घटना सूदूर दूसरे छोर पर तुरंत देखी जा सकती है।

मुझे 1997 में जन संपर्क अधिकारी के रूप में इस महान गौरवशाली बल में सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग 8 साल के इस लंबे सफर में, मुझे बल को बारीकी से जानने-पहचानने का मौका मिला। सी.आर.पी.एफ. समाचार जहां पहले 14 से 24 पृष्ठ का ब्लैक एण्ड वॉइट में प्रकाशित होता था, आज नयी रूप और सज्जा के साथ चार कलरों में प्रकाशित होने लगा है। पाठकों की भी इसे पढ़ने में रूचि बड़ी है तथा लेखन में रूचि रखने वाले कार्मिकों ने अपने विचार, कविता, कहानी, लेख, व्यंग आदि के माध्यम से इस प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित कराने उत्साह दिखाया है। आज यह पत्रिका 100 से भी अधिक पृष्ठों में प्रकाशित हो रही है और हमारी फील्ड फारमेशनों में कार्यरत हमारे सूदूर तैनात कार्मिक इसे पढ़ने के लिए लगातार मांग

कर रहे हैं। यह संभव सब इस समाचार पत्रिका से जुड़े लोगों के सहयोग व सहायता के ही फलस्वरूप ही हो पाया है।

जन संपर्क अधिकारी के रूप में मुझे अपने कार्यों का सफल कार्यान्वयन करने के लिए बल के महानिदेशक से लेकर सब यूनिट स्तर पर तैनात एक जवान का भी हर संभव सहयोग व प्यार मिला है जिसके लिए मैं सदैव आभारी रहूंगा। मैं सी.आर.पी.एफ. समाचार पत्रिका में योगदान करने वाले लेखकों का ही नहीं बल्कि इसे पढ़ने वाले पाठकों का भी धन्यवाद करना चाहूंगा जिनके सुझाव और मार्गदर्शन मुझे हमेशा से मिलते रहे।

मैं, 28 फरवरी, 2005 को इस गौरवशाली बल से अधिवर्षिता पर सेवा निवृत्त हो रहा हूँ। आशा करता हूँ कि जन संपर्क शाखा में तैनात सभी स्टाफ ने जिस तरह से मुझे इस ब्रांच की ख्याती बड़ाने में सहयोग व सहायता दी, उसी तरह इसे और ऊंची बुलंदियों पर पहुंचाने के लिए ऐसी ही निष्ठा से कार्य करते रहेंगें व भविष्य में सी.आर.पी.एफ. समाचार पत्रिका और अधिक ज्ञानवर्धक, रोचक और उपयोगी रूप में प्रकाशित होगी तथा इसकी गरिमा बड़ेगी, यहीं मेरी आशाएं व शुभकामनाएं हैं।

सी.आर.पी.एफ सदा अजय
भारत माता की जय।

डी.जी. महापात्र

(डी.जी. महापात्र)
मुख्य संपादक
जन संपर्क अधिकारी



सूनामी पीड़ितों की सहायता एवं पुनर्वास के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय आपदा कोष में केरिपुबल कार्मिकों द्वारा एक दिन के वेतन भत्ते के रूप में दी गई *4.40* करोड़ रूपये की राशि का चैक प्राप्त करने के बाद प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा का धन्यवाद करते हुए।

26 दिसम्बर, 2004 सूरज की पहली किरण के पदार्पण के साथ जब पूरी दुनिया चैन की नींद से सोकर उठने के बाद जिन्दगी की शुरूआत कर रही थी और महानगरीय जीवन रफ्तार पकड़ की रहा था, ठीक उसी समय प्रकृति का एक विकराल रूप दक्षिण एशिया में पुनः देखने को मिला, जिसने लाखों लोगों को बेघर कर दिया। कई लोग एक दूसरे से बिछड़ गये तो कई की पूरी दुनिया ही उजड़ गई। चारों तरफ का मंजर एक विकराल रूप प्रस्तुत कर रहा था। रोते बिलखते जन समुदाय तथा बच्चे अन्यन्त दुःखद स्थिति बयान कर रहे थे।

26 दिसम्बर, 2004 को 0630 बजे हिन्द महासागर में आय सूनामी भूकम्प इन्डोनेशिया- सुमात्रा के समीप की चपेट में इण्डोनेशिया, जकार्ता, सुमात्रा, श्रीलंका तथा भारत के तटीय राज्य अण्डमान-निकोबार द्वीपसमूह, केरल, आन्ध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु ज्यादा प्रभवित हुए। इस समुद्रीय भूकम्प- सुनामी के कारण हुए त्रासदी को राष्ट्रीय आपदा की संज्ञा दी गई।

सुनामी एक जापानी भाषा का शब्द हे जिसमें सु और नामी दो शब्द मिले है जिसका अर्थ समुद्री लहर होता है। ये सुनामी झटके कई बार महसूस किये गये।

इस सदी में सुनामी का यह प्रथम प्रकोप देखने को मिला जिसने लाखों घरों को तबाह कर दिया। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की लहरें सिर्फ भूकंप से ही नहीं बल्कि तटीय क्षेत्रों में भूस्खलन, ज्वालामुखी फटने और परमाणु बम विस्फोट जैसे कारणों से भी पैदा हो सकती है। अमरीका के भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग की एक खबर में कहा गया है कि 26 दिसंबर को आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 9.0 थीं। खबर के अनुसार सुनामी लहरें समुद्र में या तटीय हिस्सों में जबरदस्त भूगर्भीय हलचल के अलावा परमाणु बम और कई बार उल्कापात अथवा धूमकेतु के प्रभाव से भी उठ सकती हैं। भूगर्भ वैज्ञानिकों के अनुसार भूकंप तथा जमीन के अंदर होने वाली अन्य हलचलों का कारण वह विभिन्न सतहें हैं जिनसे पृथ्वी बनी है। पृथ्वी की अंदरूनी सतह ठोस, मध्य तरल और बाआरण ठोस है जिन्हें क्रमशः सालिड इनर कोर लिक्विड आउटर कोर और सालिड मेंटल कहा जाता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार बाहरी सतह नर्म एस्थेनोस्फेयर तथा ठोस लिथोस्फेयर का निर्माण विशाल प्लेटों से हुआ है। ये प्लेटें तरल एस्थेनोस्फेयर के ऊपर है और पृथ्वी के महाद्वीपों और महासागरों को सहारा देती है। इसे ही प्लेट टैक्टोनिक परिकल्पना कहा जाता है जिसके अनुसार इन प्लेटों के नीचे मौजूद लावा उन्हें धीरे-धीरे विभिन्न दिशाओं की ओर खिसका रहा है। वैज्ञानिक मानते है कि कई बार ये प्लेटें एक दूसरे के बहुत करीब आ जाती है और आपस में टकरा जाती है तथा कई बार ये एक-दूसरे के ऊपर चढ़ जाती है।

26 दिसंबर को सुनामी लहरें हिंद महासागर के उस हिस्से में उठीं जो टेक्टोनिक प्लेट की सीमा पर हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार समद्र में इन प्लेटों के एक दूसरे के करीब आने का परिणाम शक्तिशाली भूकंप के रूप में सामने आता है। इसकी बजह से महासागर का ही बड़ा हिस्सा कुछ किलोमीटर से लेकर 1000 किलोमीटर या उससे ज्यादा विस्थापित हो जाता है जिसके कारण सुनामी लहरें उठती है।

एक बार सुनामी लहरें उठने के कारण उत्पन्न ऊर्जा समूची जल सतह को प्रभावित करती और महासागर की गहराई से इसका कोई संबंध नहीं होता। वैज्ञानिकों के अनुसार सुनामी लहरों का वेग 800 किलोमीटर प्रतिघंटा तक हो सकता है।

जेट विमान की भी यही गति होती है। पानी में पत्थर फैकने से जिस प्रकार लहरें उठती है सुनामी लहरें भी उसी तरह उठती है।

आगे वाली लहरों के बाद मूल स्त्रोत से लहरें उठती रहती हैं। इनकी अवधि पांच मिनट से 90 मिनिट हो सकती है और इनकी ऊँचाई कई किलोमीटर हो सकती है। गहरे समुद्र में इनका वेग और अधिक होता है। सुनामी लहरें अक्सर उस भूकंप के बाद उठती हैं जिसकी तीव्रता 7.5 या उससे अधिक होती है। केंद्र की तुलना में किनारों पर इनकी प्रचंडता अधिक होती है।

वैज्ञानिक मानते हैं कि सुनामी लहरें किसी भी महासागर में समुद्र में या विशाल जल क्षेत्र में उठ सकती हैं। लेकिन अभी तक इन विनाशकारी लहरों की चपेट में प्रशांत महासागर सर्वाधिक आया है।

वैज्ञानिकों के अनुसार इसका कारण यह है कि प्रशांत महासागर पृथ्वी के एक तिहाई हिस्से में फैला हुआ है और पहाड़ों की श्रृंखला, गहरी समुद्री दरारों तथा उन द्वीपों के दायरे से घिरा है जिसे रिंग आफ फायर कहते है।



सुनामी से हुई तबाही के दौरान पीड़ित बस्तियों के लोगों की सहायता करते केरिपुबल के जवान।



सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री पहुँचाने के लिए गाड़ी में लोड करते आरएएफ के जवान।

'रिंग आफ फायर' में कामचटका, जापान, कुरील द्वीप समूह, अलास्का और दक्षिण अमरीका के तटीय हिस्से आते है और अधिकांश भूकंप भी यहीं आते है प्रशांत महासागर की सीमाओं से लगने वाले जल क्षेत्रों में कई बार सुनामी लहरें उठी है। **सुनामी प्रभावित तटीय राज्य केरल व तमिलनाडु में बचाव व राहत के लिए तुरन्त कार्यवाही की गई और देश के विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संगठन पीड़ित क्षेत्र में लोगों की जानमाल की रक्षा के लिए लगा दिये गये सैनिक तथा अर्ध सैनिक बलों को भी सरकार ने बचाव एवं राहत कार्य में लगाया गया। चूंकि प्राकृतिक आपदा प्रबन्धन के केरिपुबल एवं आर.ए.एफ. को राहत एवं बचाव कार्य करने का विशेष अनुभव है। अत: केरिपुबल तथा आरएएफ की 19 कम्पनियों तुंरत प्रभावित क्षेत्रों में बचाव एवं राहत कार्य के लिए भेजी गई। केरिपुबल ने 43 लाख रु. मूल्य की खाद्य सामग्री एवं वस्त्र, कम्बल आदि पीड़ित लोगों के लिए भेजे। केरिपुबल के सभी कार्मिकों ने प्रधानमंत्री की राष्ट्रव्यापी अपील पर उदारता पूर्वक पीड़ितों की सहायता एवं पुनर्वास के लिए 4.40 करोड़ रूपये की राशि एक दिन के वेतन एवं भत्ते के रूप में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय आपदा कोष में भेजी गई। बल की ओर से महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने यह राशि प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह को उनके कार्यालय में 4 जनवरी, 2005 को सौपी।** समुन्द्र किनारे वाले राज्य तमिलनाडु स्थित ग्रुप केन्द्र आवडी और 165 बटा० आवडी के जाबांज जवानों, रंगरूट एवं अधिकारियों ने पुलिस उप महानिरीक्षक, चेन्नई, श्री एच. बी. सिंह, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री जार्ज सी फ्रांसिस, एवं 165 बटा० के कमाण्डैंट श्री ए.एम. मुहम्मद. के मार्गदर्शन में

कैम्पस के नजदीक मरीना बीच में राहत व बचाव कार्य करने के साथ-साथ वेघर हुए असहाय पीड़ित लोगों को राशन, उपयोगी सामग्री इत्यादि सहायतार्थ रूप में प्रदान की। देश के अन्य भागों से प्राप्त हो रही राहत सामग्री को तत्काल हवाई जहाज द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में भिजवाने में पूर्ण मदद की। बल के जवान हर संभव सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहे, क्षेत्रीय प्रशासन एवं शिविरों में आवश्यकतानुसार मदद के अलावा चिकित्सीय सुविधा भी प्रदान की गई। प्रभावित क्षेत्र में फँसे हुए लोगों के बचाव के साथ-साथ उन्हें खाना व कपड़े वितरित किए। बल के जवानों ने मानवीय कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। और बल के उद्देश्य **वाक्य सेवा एवं भक्ति** को हमेशा की तरह साकार किया। अतः एक बार फिर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने सेवा और भक्ति की भावना से लोगो के दिलों को जीतने में कामयाब रही।

अण्डमान-निकोबार द्वीपसमूह में प्रभावित लोगों की सहायता व राहत के लिए ग्रुप केन्द्र आवड़ी द्वारा राहत सामग्री वायु सेना के हवाई जहाज द्वारा प्रभावित राज्यों में तुंरत पहुंचाई गई।

इस नेक कार्य में बल की महिलाएं भी पीछे नहीं रही और कावा के सहयोग से उन्होंने स्वेच्छा से धन एकत्रित करके केन्द्रीय स्तर पर पीड़ित व्यक्तियों के लिए भेजा। क्षेत्रीय कावा समीति ने स्वेच्छिक रूप से बल कार्मिकों के परिवारों द्वारा दान में दिये गऐ वस्त्र तथा खाद्य सामग्री सुनामी पीड़ितों के लिए भेजी गई। अतः कावा ने भी इस मानवीय कार्य में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

<u>व्यंग</u>

क्या हुआ ? क्यों हुआ ?

- अनिल गुप्ता, सहा०कमा०
122 बटा० के०रि०पु०बल

“जो हुआ वो क्यों हुआ? और जो नहीं हुआ वो क्यों नहीं हुआ?” यह एक ऐसा सवाल है, जिस से सी.आर.पी.एफ. में हर छोटे बड़े ओहदेदार की अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में कभी न कभी दो-चार होना पड़ता है। सवाल थोड़ा टेढ़ा है, मगर हर आपरेशनल कमाण्डर के गले की फांस बना हुआ है। वो कुछ करता है तो सवाल उठ खड़ा होता है, क्यों किया और नहीं करता है तो फिर वही बात कि क्यों नहीं किया ? हर आदमी बार-बार इस सवाल से बचने की कोशिश कर रहा है। मगर सवाल है कि तलवार कि तरह सिर पर लटका रहता है।

हवलदार साहब परेशान थे, कल शाम गेट के सामने दो लड़के झगड़ रहे थे, हवलदार साहब बीच-बचाव कराने गये तो दो चार हाथ उन्हें भी पड़ गये। जवानों ने हवलदार को पिटते देखा तो दौड़ पड़े। और झगड़ा करने वाले दोनों लड़कों को दो-दो हाथ लगा कर बात रफा दफा कर दी। बात मामूली थी खत्म हो गयी। इन्तफाक से दोनों लड़कों में से एक स्थानीय नेता का भाई निकला। नेता जी वकील भी थे। बात बढ़ गयी। नेताजी को अपनी दुकानदारी जमाने का मौका मिल गया। रात को सी.आर.पी.एफ. के खिलाफ एफ.आई.आर लिखवा दी गई। सुबह बाजार बंद का आह्वान कर दिया गया, टी.वी., कैमरे वाले बुलवा लिए गये। हवलदार साहब का तो जो हुआ सो हुआ, ऊपर से नीचे तक कई लोगों की फजीहत हो गई। और अब हवलदार साहब मेरे सामने खड़े थे।

मैने पूछा, "जो हुआ वो क्यों हुआ ?"

वह बोला "साहब मेरी किस्मत खराब थी और क्या कहूं ?"

"मगर तुम्हें सिवीलियन के झगड़े में पड़ने की जरूरत क्या थी ?"

"साहब पिछली बार भी दरवाजे के सामने यही लड़के लड़ रहे थे। मैने सोचा कि मैं क्यों इनके झगड़े में पड़ूं, तब भी मुझ से पूछा गया था कि आप के दरवाजे के सामने इतना बड़ा झगड़ा हो गया, आपने कुछ क्यों नहीं किया?"

"तो क्या जवाब दिया था तुमने ?"

मैने कहा था साहब कि "लोकल आदमी है, मैंने इनके झगड़े में पड़ना ठीक नहीं समझा।"

"फिर?"

"फिर क्या? मुझे कहा गया कि वो कोई अराजक तत्व भी हो सकते थे। मैं अपनी ड्यूटी ठीक नहीं करता और मुझे सजा मिल गई।" थोड़ा रूक कर वह फिर बोला, "यहां तो साहब यही होता है, करो तो कहते हैं, क्यों किया, और नहीं करते तो कहते हैं, क्यों नहीं किया?"

मैं जिस सवाल से बच रहा था, वही सवाल मेरे सामने फिर खड़ा हो गया।

मैने कहा,"मगर तुम्हें मौका और हालात देखकर अपने दिमाग का इस्तेमाल करना चाहिए।"

"आप नये हैं साहब, आप को मालूम नहीं यहां अगर दिमाग इस्तेमाल करते हैं, तो कहते हैं तुम्हें दिमाग इस्तेमाल करने के लिए किसने कहा था, तुम्हें जितना कहा गया था उतना ही करना था। तुमने दिमाग इस्तेमाल किया और काम बिगड़ा।"

मेरे समक्ष ज्ञान के नित नए द्वार खुल रहे थे। मैं पहली बार सुन रहा था कि दिमाग का इस्तेमाल करने से काम बिगड़ जाते हैं। मगर जल्दी ही मेरे सामने वास्तविकता भी खुल गयी।

मेरे सामने एक सिपाही खड़ा था। मुझे बताया गया था कि उससे मकरा सिपाही पूरी

कंपनी में नहीं है। उसे जो काम दो उलटा करता था। हार कर उसे कोइ काम के लिए कहता ही नहीं था। मैने उसे सुधारने का बीड़ा उठाया। एक बार जब वह एक गलती करने के बाद मेरे सामने आया तो मैंने उसके सिर की तरफ इशारा करके पूछा, "ये क्या है?"

"सिर है साहब।"

"वो तो मुझे भी मालूम है। मगर इसके अंदर क्या है?"

"दिमाग है साहब।"

"दिमाग नहीं भूसा है।"

"ठीक है साहब, आप कह रहे हैं, तो भूसा ही होगा।" (मैने उसके पैरों की तरफ इशारा किया) "ये क्या है?"

"आप ही बता दो साहब" ?

"क्यों तुम्हें नहीं मालूम ?"

"मेरे मालूम होने से क्या होता है साहब, होगा तो वही जो आप कहेंगे।"

"अबे ये तेरे पैर हैं।"

"आप कह रहे हैं तो पैर ही होंगे। यहां तो वहीं होता है जो अफसर कहता है।"

"ये तेरे पैर हैं और ऊपर वाले का शुक्र कर कि सही सलामत है, फिर तुझे क्या तकलीफ है जो न मार्के में आता है, न रोल काल में।"

वह चुप खड़ा रहा। मैनें उसके कानों के तरफ इशारा किया और पूछा, "ये क्या हैं ?"

"यह भी आप ही बता दो साहब?"

"ये तेरे कान हैं।"

"आप कहते तो जुबान भी हो सकती थी।" आप कोई झूठ थोड़ी बोलेंगें।

"बस एक जुबान ही तो है तुम्हारे पास, जो हर समय कैंची की तरह चलती रहती है। ये तेरे कान ही हैं, और इनसे तुझे जो कहा जाता है वह सुनाई देता है या नहीं।"

"सुनाई देता है साहब।"

"अगर सुनाई देता है तो कहना मानता क्यों नहीं।"

"मानता हूँ साहब।"

"क्या मानता है ? कल जब एस.पी. साहब आए थे, तो सी.एच.एम. ने तुम्हें बाजार से ठंडा लाने के लिए भेजा था?"

"भेजा था।"

"तो लाया ?"

"लाया था साहब।"

"अबे तो ढाई घंटे के बाद लाने का क्या मतलब था। कोल्ड ड्रिंक लाने गया था कि

बनाने के लिए गया था "। यही तो मुसीबत है साहब, काम करो तब भी डांट खाओ और न करो तब भी डांट खाओ।

"बगल वाली दुकान में ठंडा था नहीं और सी.एच.एम. ने कहा था कि अगर ठंडा हो तभी लेकर आना। आपको मालूम है साहब बाजार कितनी दूर है। आधा घंटा तो बस का इंतजार किया। वापसी में तो मैं जल्दी के चक्कर में आटो में आया।"।

"अगर नहीं था ठंडा तो लौट आता, एस. पी. साहब को चाय पिला देते। वो तो तुम्हारा इंतजार करके चले गये।"

"ये तो आप सी.एच.एम. से पूछिए, साहब उसने कहा था, "तुझे जो कहा है वही करना अगर कुछ गड़बड़ किया तो तेरे को छोडूंगा नहीं"।

मैने अपना सिर पकड़ लिया। वह फिर से बोला, "साहब यह सारी गलती सी.एच.एम. की है। हम तो वही करते हैं जो आदेश मिलता है।"

क्यों सी.एच.एम. की क्या गलती है?"

"उसी की गलती हैं साहब, पहले तो कोई काम ठीक से बताता नहीं। फिर काम कर दो कहता है ऐसे क्यों किया

और न करो तो कहता है क्यों नहीं किया। बड़ी मुसीबत है साहब।"

मैं सोचने लगा, "वाकई बड़ी मुसीबत है। जो हुआ वो क्यों हुआ, और जो नहीं हुआ वो क्यों नहीं हुआ? ये सवाल सिर्फ मुझे ही नहीं नीचे तक सभी को परेशान किए हुए है। मुझे कुछ सोचते देख कर उसने धीरे से एक पर्ची आगे बढ़ा दी। मैंने पूछा, "ये क्या है"?

"बिल है साहब।"

"बिल? किस चीज का बिल?"

"साहब कोल्ड ड्रिंक लाने गया था तो चार रूपये बस के, 20 रूपये का कोल्ड ड्रिंक और 30 रूपये आटो के सिर्फ 54 रूपये हैं साहब।

मैंने हैरत से उसकी तरफ देखा "भाई वो कोल्ड ड्रिंक है कहां?"

"साहब सी.एच.एम. कह रहा है वापस कर आओ, आप कहें तो मैं वापस कर आता हूँ"

"अब तुम उसे वापस करने जाओगे?"

"साहब आप की गाड़ी ले जाता हूँ, जल्दी आ जाऊंगा"

मैं घबरा गया, "नहीं नहीं तुम रहने दो, मेरे पास ले आओ बिल भी और कोल्ड ड्रिंक भी। बिल मैं दे दूंगा और कोल्ड ड्रिंक पी लूंगा।"

"ठीक है साहब, अभी लेकर आता हूं। "वह हंसता हुआ बाहर चला गया और मैं बैठे-बैठे सोचने लगा, 'जो हो रहा है वो क्यों हो रहा है और जो नहीं हो रहा वों क्यों नही हो रहा।"





पुण्य आत्माएं कभी मरती नहीं है, वे मरकर भी अमर हो जाती हैं और छोड़ जाती हैं ऐसी दास्तान जिन्हे लोग सदैव याद करते रहते हैं। एक जनवरी, 2005 नए वर्ष का पहला दिन, सभी लोग अपनी-अपनी तरह से नव वर्ष मनाने की तैयारियों में थे। हांलाकि इस बार नये वर्ष की पूर्व संध्या तथा नव वर्ष पर होने वाले समारोहों की चमक दमक कुछ फीकी रही, इसकी एक वजह दक्षिण भारत तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में आये विनाशकारी प्रलय दायी सुनामी लहरों में मारे गये लाखों की वेदना थी, भला कैसा नया साल का आगमन और कैसी यह त्रिसादी, देश ही नहीं विश्व के अन्य देश भी इस प्रकृति के महातांडव से हुए विनाश के बारे मनन- मंथन में लगे हुए थे। भला नव वर्ष को किसे मनाने की पड़ी, फिर भी कुछ रस्म रिवाजे करनी पड़ती हैं। ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, झड़ौदा कलां के गेट के पास कुछ बल के जवानों व अधिकारियों ने मकान बना रखे है, इनमें कुछ लोग सेवानिवृत्त हो चुके है, कुछ अपने परिवार व बीवी बच्चों को यहाँ छोड़ कर सुदूर तैनात हैं। बच्चों को यहां छोड़ने का

एक ही मकसद है, उनकी शिक्षा-दीक्षा जो देहात में नहीं हैं, और तैनाती के दौरान बार-बार मूवमेंट भी एक वजह है।

अतः कुछ कार्मिकों ने गेट के बाहर अपने परिवारों को रखना उचित समझा है। कोई भी कैसा त्यौहार हो, बच्चों में जरा ज्यादा ही कुछ उत्साह होता है, उसे मनाने में, भला उन्हें क्या पता कि कहां सूनामी आया? और कहां क्या हुआ? उन्हें तो वस त्यौहार मनाना है। सामान्य रूप से एक जनवरी को दिल्ली के सरकारी तथा कुछ पब्लिक स्कूलों में शीतकालीन अवकाश चल रहा था और जो स्कूल खुले भी थे। उनमें एक जनवरी की छुट्टी थी। बच्चों में नव वर्ष मनाने का जोश तो होता ही है। ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां के गेट नं० दो के पास केरिपुबल के भूतपूर्व निरीक्षक ओमप्रकाश डाबला का परिवार भी रहता है। श्री डाबला ने बल की 20 वर्ष गौरवशाली सेवा करने के बाद ही स्वेच्छा से रिटायरमेंट ले लिया था और वह यहीं दिल्ली में रहकर कोई छोटी-मोटी नौकरी कर अपने बच्चों को पढ़ाने लगे। बार-बार की बदली उनके बच्चों के भविष्य पर प्रभाव डाल सकती है। अतः एक छोटा मकान बनाकर श्री डाबला दो पुत्र, एक पुत्री तथा पत्नी के साथ रहते हैं। ओमप्रकाश डाबला का छोटा बेटा मास्टर बॉबी डाबला देव पब्लिक स्कूल, नजफगढ़ में पढ़ता था। बड़ा बेटा तथा बेटी अन्य स्कूल में। बॉबी शुरू से ही नटखट स्वभाव का एक विलक्षण बच्चा था।



स्वर्गीय मास्टर बॉबी डाबला अपने भाई-बहन के साथ।

नव वर्ष आया बॉबी के साथियों ने नव वर्ष के उपलक्ष्य में एक पार्टी अपने स्तर पर आयोजित कर खुशी मनाने की योजना बनाई। बॉबी को पार्टी की सब जिम्मेदारी सौपी गई, बॉबी ने एक मैन्यू बनाया और अपनी मां तथा भाई से कहकर पार्टी का सामान लाने चल दिया, परंतु किसे पता था कि उसकी मौत उसका इंतजार कर रही है। बड़े भाई ने हॉलाकि बॉबी से कहा "बॉबी तू घर में तैयारी कर, पार्टी का सामान मैं ले आता हूँ।" परन्तु बॉबी ने नहीं मानी और कहा "आप घर पर तैयारी करों।" मैं सामान लाता हूं, क्योंकि पार्टी मेरी और मेरे मित्रों की है, इसीलिए क्या लाना है? क्या हमने खाना? हम जानते हैं? भाई ने कहा "ठीक है, लेकिन जल्दी आना, ओ.के., बॉबी पैसे ले घर से आकर सड़क पर खड़ा किसी दोस्त का इंतजार कर ही रहा था कि अचानक एक मारूति वैन आई और एक स्कूटर सवार को बचाने के चक्कर में विचारों-सवालों में डूबे बॉबी को हिट कर दिया, जब तक कि बॉबी कुछ समझ पाता और बचाव करता, मारूति वेन ने ऐसी टक्कर मारी कि वह गिर पड़ा और सिर में चोट आने से बेहोस हो गया, वहां घर पर उसके दोस्त पार्टी का इंतजार कर रहे थे। परंतु बॉबी जीवन मृत्यु से लड़ रहा था। सभी आसपास के लोग इक्ट्ठे हो गये, मारूति वेन को पकड़ लिया गया तथा बॉबी के घर सूचना भेजी गई। बॉबी को तुरन्त हरी नगर के दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल में ले जाया गया, फिर वहां से जयप्रकाश नारायण अस्पताल में, लेकिन बॉबी की हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी, परिवार शोकाकुल हो गया, परिवार के सदस्य बॉबी के जीवन की दुआ मांग रहे थे। जय प्रकाश नारायण अस्पताल के चिकित्सकों ने गहन जांच करने के बाद मास्टर बॉबी को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्था में रेफर कर दिया गया। मामला हेड इन्जरी का था। अतः न्यूरोलॉजी विभाग में बॉबी को आपातकाल में भर्ती कराया गया। श्री ओमप्रकाश डाबला मन ही मन में रो रहे थे, क्योंकि वह भाप चुके थे कि बॉबी अब नहीं बच सकता, लोग उन्हे झूठी तसल्ली दे रहे हैं। चिकित्सक भी साफ साफ कुछ नहीं बता रहे थे। दुआ और दवाओं के बीच अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान के चिकित्सकों ने मास्टर बॉबी को आखिरकार 7 जनवरी, 2005 ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया। अस्पताल में मानो जैसे शौक की लहर दौड़ गयी, बॉबी के दोस्त जान-पहचान वाले सभी के ऊपर उदासी का मातम छागया। एक पुत्र के पिता के सामने मौत, भला उसके पिता के दिल पर क्या बीत रही होगी जिसने उसे कितने यत्नों से पाला था। ओमप्रकाश डाबला के दिमाग में ऐसी बहुत सारी यादें रह रह कर आ रही थी, वह दिल ही दिल में रो रहे थे। ऐसी स्थिति में एक पिता का दायित्व क्या है ? उसे क्या करना चाहिए ? ऐसे सारे अनेक प्रश्न है जिनका जबाव तलासना शायद ही हम सबके लिये असंभव हो, श्री ओमप्रकाश डाबला ऐसी जहदो जद में थे। बॉबी के परिजन, रिस्तेदार तथा शुभ चिन्तक उसकी डेड बॉडी को लेकर क्रिया कर्म के बारे में कुछ घुसर पुसर कर रहे थे। चूंकि बॉबी अपने पिता ओमप्रकाश का लड़ला था तथा हर बात उनसे कहता, पूछता था। अतः आगे क्या करना है सब बॉबी के पिता ओमप्रकाश डाबला की ओर देख रहे थे। परन्तु श्री ओमप्रकाश डाबला ने सब मिथ्या माया-मोह से ऊपर उठ कर बॉबी के अंग दान करने की जिज्ञासा चिकित्सों से जाहिर

को, क्योंकि ब्रेन डेड व्यक्ति के अधिकांशत अंग व प्रांते अंग दूसरे मरीजों के काम आ सकते है। और श्री ओमप्रकाश ने मास्टर बॉबी की आँखें, गुर्दे, वाल्ब आदि सभी अंग अखिल भारतीय आर्यविज्ञान संस्थान के अंग प्रत्यारोपण बैंक को दान कर दिये और सोचा कि जिसको भी, जहाँ भी उनके बच्चे के अंग जिस मरीज को लगेगें, वह यही समझगे कि उनका वह बॉबी ही है, क्योंकि एक पिता अपने बच्चे को हमेशा मुस्कराते देखना चाहता है। अतः श्री डावला ने इसी जिज्ञासा में बॉबी के अंग दान कर दिये। इस संबध में बॉबी के पिता श्री ओमप्रकाश डाबला से पूछा गया कि आपने यह निर्णय अंगदान करने का क्यों और कैसे लिया जब आप अथाह दुःख के सागर में डूबे थे ? और पिता के होते हुए पुत्र की मौत होना पिता के लिए सहस्त्र दुःखों से कम नहीं है। श्री ओमप्रकाश डावला ने कहा कि "मेरा बेटा बॉबी मेरा प्रिय पुत्र था और है।" जब वह के.रि.पु.बल. में तैनात थे तो ड्यूटी के दौरान बहुत से ऐसे हादसे उनके सामने आये जिनमें कुछ साथियों की आँखें, तो कुछ के पैर खराब हो गये, किसी की किडनी खराब हो गई तो किसी के वाल्ब खराब। **कई लोग इन की वजह से समय से पहले अलविदा कर गये, तो कई अभी भी जीवन मृत्यु से संघर्ष कर रहें है। यह प्रेरणा उसी का परिणाम है। के.रि.पु. बल की 20 वर्ष सेवा करने से उन्होंने त्याग, कर्तव्य निष्ठा, परोपकार, दूसरे को अपना सर्वस्व बलिदान करना ही सीखा है उन्हे गर्व है कि उनके बेटे बॉबी ने मर कर भी कईयों को जिन्दगी देकर नई उन्हें दुनियां दिखाई हैं। वह यहीं सोचेगे कि उनका बेटा ही जीवित है, जिसमें उसके अंग प्रत्यारोपित किए जाएगे। ऐसे शब्द थे उस बहादुर पिता डाबला के "ऐसे पुत्र बिरले ही मिलते है जो दुनिया छोड़ कर भी दुनिया में रहते हैं, स्कूल के प्राचार्य जिसमें बॉबी पढ़ रहा था से बॉबी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा "बॉबी एक ओजस्वी छात्र था", उसके सब क्रिया कलाप आलौकिक तथा प्रेरणा दायक थे। कक्षा में सदा प्रथम आता था, ऐसे विद्यार्थी कभी कभा ही मिलते है।** वह स्कूल की शान और गौरव था। अतः बॉबी को श्रद्धांजली स्वरूप उसकी सीट इस शर्त पर खाली रखी गई है कि जो विद्यार्थी बॉबी के बनाए अकों के रिकार्ड को तोड़ेगा, वह उस सीट पर बैठेगा।" हालांकि बॉबी चला गया पर छोड़ गया कुछ अपनी यादगार जो सदैव हमें उसकी याद दिलाती रहेगी, क्योंकि पुण्य आत्माएं कुछ बोलती नहीं है वह तो जाते जाते भी अनकहे ही कुछ कह जाती है। हमें नाज है बॉबी के परिवार, उनके पिता श्री ओमप्रकाश डाबला पर जिन्होंने एक अप्रत्यासित फैसला लेकर बॉबी को हमेशा-हमेशा के लिए अमर कर दिया। राष्ट्र ऐसे बहादुर पिता, ऐसे बेटे के लिए सदैव कृतज्ञ रहेगा। के.रि.पु.बल के सभी कार्मिक ऐसे महान, परोपकारी पुण्य आत्मा मास्टर बॉबी की आत्मा को शांन्ति प्रदान करने की ईश्वर से कामना करते है तथा मास्टर बॉबी के पिता ओमप्रकाश डाबला के अभूतपूर्व त्याग व परोपकार की कदर करते है। श्री डाबला ने सेवा निवृत्ति के बाद भी बल की श्रेष्ट गौरवशाली परम्पराओं को बनाए रखा उनका यह त्याग गवाह है, बल कार्मिक के सेवा समर्पण और त्याग का जो सदैव अन्य लोगों को प्रेरणा देता रहेगा। बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने बल की ओर से मास्टर बॉबी की असामयिक मृत्यु तथा उसके पिता

श्री डाबला के सभी मानवीय बिडवनाओं से ऊपर उठकर मानवता के कल्याण के लिए किये गऐ त्याग के बारे में कुछ ऐसे कहा **“आपका प्रिय पुत्र मास्टर बॉबी एक मेधावी बच्चा था। उसकी आकस्मिक मृत्यु से आपके परिवार को जो आघात हुआ है उस कमी को कभी भी, किसी भी तरह से पूरा नहीं किया जा सकता है। यह खबर सुनकर मुझे भारी दुखः हुआ। ईश्वर आपके परिवार को इस असामयिक दुख से उभरने की शक्ति दे तथा स्व. मास्टर बॉबी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे। पिता के जीवित रहते हुए पुत्र की मृत्यु पिता के लिए सबसे बड़ा आघात है फिर भी आपने ऐसी दुखद घड़ी में सभी वेदनाओं को भुलाकर जरूरतमंद लोगों के लिए अपने प्रिय पुत्र के अंग-प्रतिअंग दान कर मानवता की मिसाल कायम की है और बल की सेवा-भक्ति की भावना को बनाए रखा। मैं अपके त्याग व सेवा-भाव की तहे दिल से प्रशांसा करता हूँ और मास्टर बॉबी को अपनी श्रदांजलि देता हूँ।** हम सभी आभार व्यक्त करते है और कामना करते है ईश्वर उन्हें इस विकट संकट की घड़ी में दुःखों से उभरने की शक्ति दे और मास्टर बॉबी की आत्मा को शांति प्रदान करें।

-प्रस्तुति नि०/ संपादक रनवीर सिंह
महानिदेशालय

“देश भक्त हो तो ऐसा”

- निरी. (एम) हंसराज ओझा
147 बटा., केरिपुबल

सामने टेबुल पर रखी किताब हालांकि खुली थी, लेकिन कविता का ध्यान किताब के पन्नों पर नहीं था। वह खिड़की से अपने क्वार्टर के बगल में छोटी सी बागवानी में खिले हुए गुलाब के फूलों को एकटक निहार रही थी। गुलाब के फूलों की कोमल पंखुड़ियों से निकल रही सुगन्धी से सारा वातावरण सुवासित हो चला था, और कविता इससे भलीभांति प्रभावित हो चुकी थी। भला किसका मन ऐसे वातावरण में नहीं खो जायेगा, कविता उस समय अकेले थी, घर में और कोई दूसरा सदस्य नहीं था। उसकी माँ पूजा करने के लिए मंदिर जा चुकी थी। रह-रह कर बह रही पुरवइया हवा के झकोरे जब कभी कविता के बदन को छूते तो अनायास ही उसके शरीर में सिहरन का आभास होता। ऐसे में कविता का मन-प्रांगन खुशी से झूम उठता। कभी कभी कविता अपने भावी जीवन की सोंच में लीन हो कर अर्द्ध निद्रावस्था में चली जाती थी।

अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया तो वह चौक उठी। ऐसा लगा जैसे उसकी आनन्द मुद्रा में कोई खलल डालने आ गया हो। जब कविता ने आकर दरवाजा खोला तो सामने उसका बड़ा भाई जो केरिपुबल में सहायक कमांडेन्ट के पद पर तैनात था खड़ा था। कविता उसे एकटक देखते रह गई, क्योंकि कभी उसने अपने भाई को पुलिस पोशाक में देखा ही नहीं था। आज पंकज सिंह अपनी प्यारी बहन के सामने एक अधिकारी की वेशभूषा में खड़ा था। घर में किसी और को न पाकर वह झट से पूछ बैठा-माँ कहाँ है ? मेरे छोटे भाई कहाँ है ? क्योंकि अभी तो स्कूल जाने का भी समय नहीं हुआ। कविता ने धीरे से कहा, भैया आज करवा चौथ है, माँ पूजा करने के लिए मंदिर गई हैं तथा दोनों भाई भी माँ के साथ ही गए हैं। मैं भी जाने वाली थी, लेकिन चली जाती तो आपको काफी देर तक इन्तजार जो करना पड़ता। पंकज ने सामान को अन्दर किया तब तक कविता ने अपने भईया के लिए झटपट गरम-गरम चाय बनाकर सामने रख दी। पंकज ने अपनी बहन को बताया कि उसे दो महीने के लिए अवकाश मिला है, हो सकता है, इसी छुट्टी के दौरान उसे कविता के हाथ भी पीले करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाय। अभी इन्हीं सारी बातों पर भाई-बहन में खींचा तानी हो ही रही थी कि तभी दोनों छोटे भाई एवं माँ घर में आ गई। अपने लाड़ले बेटे को अचानक घर में देखकर उसे काफी हैरानी हुई, फिर जब उसे मालूम हुआ कि वह दो महीने की छुट्टी पर आया है तो मानो सबके बीच खुशी की लहर ही दौड़ गई।

खाने पीने के बाद, थका-मादा पंकज थोड़ा आराम करने के लिए अपने कमरे में चला गया, घर में उसके बारे में चर्चा होने लगी। कविता ने अपने भैया से नये-नये कपड़े की मांग की योजना बनाई तो छोटे भाइयों ने अपने लिए साईकिल खरीदवाने का निर्णय लिया। माँ ने कहा मुझे क्या मांगना है ? मेरा बेटा खुस रहे, यही मेरे लिए सब कुछ है। कविता के पिताजी घर के पास ही एक प्राइवेट संस्थान में नौकरी करते थे, उन्हें भी पंकज के आने के बारे में सूचना दे दी गई, आधे-घंटे में अपने दफ्तर का काम निबटा कर, वह भी घर में आ गए।

छोटा परिवार होने की वजह से घर में किसी भी प्रकार की कमी नहीं थी। एक संतुलित परिवार में जो कुछ भी होना चाहिए, सब कुछ उपलब्ध था। जब पंकज की नींद खुली तो उसे मालूम हुआ कि घर में माता-पिता एवं उसके अनुज पधार चुके हैं। उसने विनम्रता से अपने माता-पिता के पैर छू कर उन्हे प्रणाम किया। सगे दोनों छोटे भाईयों ने भी उसके चरण स्पर्श किए, तब पंकज ने उन्हें प्यार से गले लगा लिया, फिर बरामदे में एक जगह पूरा परिवार बैठ कर आपस में बातचीत करने लगा ममतामयी माँ ने अपने लाड़ले के बारे में पूछा कि बेटा कैसे हो? किस प्रकार तुमने सीआरपीएफ की कठिन ट्रेनिंग पास की ? हालाँकि तुम्हारे कभी-कभी भेजे गए पत्रों से तो जानकारी मिलती थी, परन्तु उससे तुम्हारी माँ को संतोष थोड़े ही होता था। पिताजी उसके स्वस्थ्य एवं भावी सुखी जीवन की कामना करते नहीं अघाये। दोनों छोटे भाईयों को खुशी का ठिकाना नहीं था। नीरज तो यहाँ तक कह बैठा कि "मैं भी एक दिन ऐसे ही सीआरपीएफ में आफिसर बन के दिखाउँगा।" वह बड़ा बातुनी है, बचपन से ही उसकी बाकपटुता सबको भाती थी। धीरज कम बोलता था, वह सबसे छोटा भी था

तथा उसे केवल अपनी कक्षा में प्रथम आने का भूत सवार था। एक दूसरे का हाल समाचार पूछने के सिलसिले में अचानक पंकज की माँ ने पकंज के विवाह का प्रस्ताव रख दिया तो वह बातों-बातों में टाल गया और करने लगा पहले मुझे अपनी छोटी बहन के हाथ पीले करने हैं, क्योंकि वह बड़ी हो गयी है। जब बेटा सयाना और कमाऊ हो जाय तो उसकी बात टाली नहीं जाती। सबके द्वारा सहमति व्यक्त की गई। बाबू नारायण सिंह को भला कौन नहीं जानता था उन्होंने भी इस बात को स्वीकार किया कि पहले कविता के हाथ पीले होगें, उसके बाद ही पंकज के विवाह के बारे में सोचा जायेगा। इस संदर्भ में आने वाले सभी हितेषियों को उसकी जानकारी दे दी गई।



पूर्वोत्तर क्षेत्रों में पेट्रोलिंग करते केरिपुबल के जवान।

वैवाहिक लगन का महीना चल रहा था। बाबू नारायण सिंह अपने एकलौते पुत्र को लेकर पास के गांव में लड़का देखने गये। वहाँ पर श्री रघुनन्दन सिंह का लड़का जो सेना में अभी-अभी अधिकारी के पद पर भर्ती हुआ था अवकाश पर आया हुआ था। उनका भरा पूरा परिवार काफी सुखी एवं सम्पन्न था। राघव सिंह अपने माँ बाप के इकलौता पुत्र था और वह स्वेच्छा से सेना में भर्ती हुआ था। उसमें बचपन से ही देश भक्ति के प्रति झुकाव देखकर गांव के लोग अनायास ही कह दिया करते थे। "ई रघुआ ना जानी का करी, इत अपना देश के गरिमा के बढ़ावे खातिर अबहीए से उतावला, बता आगे जा के का करी।" रेलवे सुरक्षा बल के अधिकारी पद से अवकाश प्राप्त बाबू रघुनन्दन सिंह जैसे अनुशासित व्यक्ति का आज्ञाकारी पुत्र राघव जब कभी भी किसी को अपने देश के खिलाफ बोलते हुए सुनता या देखता तो उसी समय उससे दो चार हाथ कर लेता। उसे बचपन में ही पाठशाला के गुरूजी से मिली शिक्षा

अभी तक याद थी। **"जननी जन्म भूमेश्च स्वगेदापे गारेयासे" की शिक्षा से तो वह पहले से ही प्रभावित था। मातृभूमि की सेवा, रक्षा करना सब देशवासियों का परम धर्म होता है।**

नारायण बाबू के प्रस्ताव को स्वीकार करने में बाबू रघुनन्दन सिंह और उनके पुत्र राघव सिंह को कोई झिझक नहीं हुई, क्योंकि दोनों ही एक दूसरे को भली-भांति जानते-पहचानते और कविता के चाल चलन उसकी सुन्दरता एवं प्रखर बुद्धि से पहले से ही परिचित थे। रीति-रिवाज के अनुसार बातचीत पक्की हो गई एवं वैवाहिक कार्यक्रम की तरीखे तय कर ली गई। दोनों पक्ष वाले विवाह प्रबंधन कार्य में जुट गये। वांछित प्रबंध आदि करने के बाद वह शुभ घड़ी आई जिसकी वेसब्री से सभी को प्रतीक्षा थी। बाबू नारायण सिंह के दरवाजे पर गाजे-बाजे, नगाड़ों की धूम मचने लगी। हिन्दू धर्म की रीति के अनुसार कविता-राघव एक दूसरे के साथ वैवाहिक सूत्र में बंध गए। अपनी सामर्थ के अनुसार बाबू नारायण सिंह ने दहेज आदि भी दिया जिसके लिए बाबू रघुनन्दन सिंह की ओर से कोई मांग नहीं की गई थी। उनके अनुसार तो "दुलहन ही दहेज है" सदैव ही कहा जाता रहा। **कविता के माता-पिता एवं उसके बड़े भाई द्वारा जो कुछ भी लड़के वाले को दिया गया, वह दहेज नहीं था, केवल कविता के भावी जीवन को सुखमय देखने हेतु एक प्रकार से सहयोग मात्र था।** इस तरह कविता, बेटी से दुल्हन बनकर अपनी मां के आंचल के छोड़कर, दूसरी मां के आंचल की साया में निर्वाह करने चली गई। अभी सुहागरात की रश्म अदा की जानी थी कि अचानक लेफ्टिनेन्ट राघव के हेड क्वार्टर से संदेशा आया "दुश्मनों ने कारगिल क्षेत्र में घुस पेठ करली है, अवकाश रद्द, शीघ्र ड्यूटी पर हाजिर होइयें।" उधर बटालियन मुख्यालय से सहायक कमांडेन्ट पंकज सिंह को भी तार भेज कर ड्यूटी पर बुला लिया गया। राघव सिंह के पैरों में कविता के रूप में बेड़िया लगी थी, फिर भी उसने अपने स्वार्थ को तिलांजली दे दी तथा देश भक्ति की भावना को उजागर एवं चरितार्थ करता हुआ कर्त्तव्य पथ की ओर चल दिया। जाते-जाते उसने अपनी धर्म पत्नी और मां को इतना जरूर कहा "यदि हममें अपने देश के प्रति स्नेह भावना उत्कृष्ट है और हम देश की सुरक्षा के लिए समर्पित है तो अपनी मातृभूमि के आंचल में कतई दाग नहीं लगने देंगे और दुश्मनों के दांत खट्टे करके शीघ्र ही वापिस आयेंगे।" सेना मुख्यालय में पहुँचते ही उन्हें एक सैन्य टुकड़ी का कमान्डर बनाकर बटालिक क्षेत्र में एक पोस्ट को दुश्मन के कब्जे से छुड़ाने हेतु भेज दिया गया।

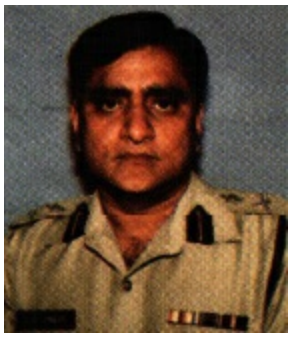
स्कूल एवं कालेज स्तर पर एन.सी. सी. का कमान संभालने के बाद लेफ्टिनेन्ट राघव सिंह को सेना में अपना जौहर दिखाने का यह पहला मौका था, जिसे वह गंवाना नहीं चाहते थे। मां का आशीर्वाद जिसके सिर पर हो, साथ हो जिसमें मातृभूमि की सेवा के प्रति दृहण निष्ठा, उसे भला कौन क्या कर सकता है ? ऐसे देश भक्तों के सामने स्वंय यमराज को भी एकबार पीछे मुड़ कर देखना पड़ता है। जिस सैन्य बल का हौसला बुलन्द रहता है, इरादे पक्के होते हैं, असली हार भी जीत में बदल जाती है। राघव सिंह का कुशल नेतृत्व काम आया और उसकी टुकड़ी द्वारा किए गये प्रचण्ड आक्रमण से घबरा कर दुश्मन के पैर उखड़ गये और उस पोस्ट पर तिरंगा

लहराने लगा।

उधर सहायक कमांडेन्ट पंकज सिंह के यूनिट मुख्यालय में पहुँचते ही उन्हें आदेश मिला कि वह अपनी कम्पनी को लेकर द्रास सेक्टर में जायें, जहाँ पाकिस्तानी दुश्मनों ने अपना अड्डा अनाधिकृत रूप से जमाया हुआ है। केरिपुबल में सीधे नियुक्त अधिकारी सहा. कमा. पंकज सिंह हाल ही में प्राप्त प्रशिक्षण का लाभ उठाते हुए अपने जवानों की इस प्रकार मोर्चे पर लगाकर चक्रव्यूह की रचना की थी कि दुश्मन चारों ओर से घिर गया। हालांकि जहाँ दुश्मनों ने भारत भू-खण्ड पर अपना पोस्ट बना लिया था वह आम जमीन से थोड़ी ऊंचाई पर था जहाँ से वे किसी भी आक्रमणकारी को दबोच सकते थे, फिर भी सहा. कमा. पंकज सिंह एवं उनकी कम्पनी के जवानों के बुलंद हौसले को परस्त करना उनके बस में नहीं था। यह सर्व विदित है कि चोर के पास स्थायी ताकत या क्षमता नहीं होती है, वह घुसपैठिये थे, हमारे भूमि पर अनाधिकृत रूप से पैर जमा रखे थे, जब उन पर चहुँमुखी आक्रमण होने लगा तो उनके दांत खट्टे हो गये और पंकज सिंह की टोली द्वारा आक्रमण का कहर बरसने पर उन्हें यह भी सोचने का मौका नहीं मिला कि वे प्रतिकार में कोई कार्रवाई कर सकें। जब तक वे अपने आप को संभालते, तब तक दुश्मन की पूरी की पूरी टुकड़ी चिर निन्द्रा में सुला दी गई। इस तरह मिला द्रास क्षेत्र में भारतीयों को विजय और तब वहाँ फहराया गया भारत का प्यारा झंडा 'तिरंगा'। जब बेतार के माध्यम से केरिपुबल के मुख्यालय में इस सफलता की सूचना मिली, सारा मुख्यालय खुशी से झूम उठा, और झूम उठे वे सारे भारतीय जिन्होंने यह समाचार रेडियो/टेलीविजन से सुना। जब घर पर बैठे बाबू नारायण सिंह एवं उनके परिवार के सदस्यों ने अपने लाडले पंकज की सफलता का समाचार सुना तो वे भी गद् गद् हो उठे। कहने लगे आज हम सभी का जीवन सार्थक हो गया। विजय श्री हासिल करने के बाद दोनों ही अधिकारियों को उनके मुख्यालय द्वारा वीरता पदकों से विभूषित किया गया एवं उन्हें अवकाश पर भेज दिया गया ताकि घर जाकर अपने परिवार के साथ आराम कर सकें।

दोनों ही अधिकारी एक ही दिन अपने-अपने घर पर पहुँचे। घर पर आने के बाद उनके घरों में फिर से खुशी की लहर दौड़ पड़ी, क्षेत्र के सभी लोगों ने मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा की एवं कहा-"देश भक्त हो तो ऐसा"।

के.रि.पु.बल मुख्यालय में नये महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)



श्री ओम प्रकाश सिंह ने 25 जनवरी, 2005 को केरिपुबल मुख्यालय में पुलिस महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) का पदभार संभाल लिया है। इससे पूर्व श्री सिंह केरिपुबल में ही उप महानिरीक्षक(प्रशिक्षण) के पद पर तैनात थे। 2 जनवरी, 1960 को जन्में श्री ओम प्रकाश सिंह भारतीय पुलिस सेवा के 1983 बैच के उत्तर प्रदेश कैडर के अधिकारी हैं। श्री सिंह 7 जुलाई, 2000 में केरिपुबल में पुलिस उप महानिरीक्षक(चण्डीगढ़) पद पर तैनात हुए तथा इन्हें 24 मई, 2001 को बल मुख्यालय में उप महानिरीक्षक(कार्मिक) की जिम्मेदारी दी गई। बाद में श्री सिंह को उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) का कार्यभार सौंपा गया।

के.रि.पु.बल मुख्यालय में नये महानिरीक्षक (प्रशासन एवं निर्माण)



श्री हरीश चन्द्र मीना ने 27 जनवरी, 2005 से केरिपुबल मुख्यालय में महानिरीक्षक (प्रशासन एवं निर्माण) का पदभार संभाल लिया है। श्री हरीश चन्द्र मीना भारतीय पुलिस सेवा के 1976 बैच के राजस्थान कैडर के अधिकारी हैं। श्री मीना केन्द्र सरकार तथा राजस्थान पुलिस में विभिन्न पदों पर आसीन रह चुके हैं जिनमें पुलिस महानिरीक्षक (अपराध) तथा अपर महानिदेशक(मुख्यालय) इनकी प्रमुख नियुक्तियां रही। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में श्री मीना को पुलिस महानिरीक्षक (प्रशासन एवं निर्माण) की अहम जिम्मेदारी सौंपी गयी है।

अनमोल वचन

1. कभी भी किसी व्यक्ति की बुराई नहीं करनी चाहिए। अक्सर लोगों को दूसरों की बुराई करने में अपनी आत्म प्रशंसा की झलक मिलती है, पंरतु अपनी आत्म प्रशंसा करना एक बुरी बात है।
2. यदि आप किसी व्यक्ति की मदद करते हैं तो उसका ऐहसास उस व्यक्ति को कभी भी न कराएं।
3. कुछ व्यक्ति दूसरों की सहायता करने के बजाय अपना मशवरा (राय) देने लगते हैं। यदि कोई व्यक्ति आपसे सहायता मागें तो सहायता दें, और राय मागें तो राय दें, क्योंकि दोनों ही चीजें अलग-अलग हैं।
4. किसी भी भाषा, धर्म, जाति की अलोचना कदापि न करें।
5. किसी व्यक्ति से उसकी व्यक्तिगत बातें पूछने का हमें कोई हक नहीं है, इससे बचना चाहिए।
6 जब कोई वाहन जाम में फंस जाता है तो वाहन चालक को जैसे-जैस जगह मिलती है, वह वैसे-वैसे गाड़ी को एक-एक इंच आगे बढ़ाता जाता है। ऐसे अनेक अवसर हमारे जीवन में भी आते है जब हमें प्रगति मार्ग पर जाम लगे प्रतीत होते हैं। इन जीवन रूपी जामों से उबरने के लिए हमें जब भी थोड़ा-बहुत मौका मिले, आगे बढ़ते रहना चाहिए।

- स.उ.नि. (मं.) नरेश कुमार
99 बटा.,

<u>एड्स के सम्बन्ध में</u>

“और दीपक बुझ गया”

- सि. शहाबुद्दीन खां
7 बटालियन



ग्रुप केन्द्र गौहाटी में एड्स विषय पर आयोजित कार्यशाला में बल कार्मिकों को जानकारी देते बेस अस्पताल-तीन के चिकित्सक।

मैं गत महिने अपने गांव में अवकाश पर गया हुआ था। मेरे गांव का एक व्यक्ति जिसका नाम धुलियाँ था, वह बहुत ही गरीब परिवार का था। गरीबी के कारण धुलियाँ की शिक्षा-दीक्षा नहीं हो पायी तथा वह पिछले कुछ सालों से गाँव को छोड़कर कलकत्ता शहर में रिक्सा चलाने का काम करने लगा था।

धुलियाँ के मां-बाप ने धुलियाँ का विवाह बचपन (कम उम्र) में ही रंगियां नामक लड़की से कर दिया था। धुलियाँ के तीन लड़की और दो लड़के पैदा हुए। धुलियाँ रिक्सा चलाकर बच्चों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी सभालता जबकि घर की देखभाल उसकी पत्नी रंगिया करती, परन्तु कुछ समय से अपने साथियों के चक्कर में पड़कर धूलियां गलत आदतों का शिकार हो गया।

धुलियाँ अचानक बीमार पड़ गया और वह कई सालों से बीमार चल रहा था, उसे अक्सर दस्त, खाँसी, श्वास की कमी तथा बुखार जैसी बीमारियों की शिकायत रहती जिनका इलाज वह वहां (कलकत्ता में) छोटे-मोटे डॉक्टरों से करवा लेता। साथ ही आराम के लिए वह रिक्शा छोड़, ढेला लगाने का काम चालू कर देता, फिर भी उसके स्वास्थ्य में सुधार नहीं आया और उसका शरीर सूखता चला गया। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण धुलियाँ कलकत्ता छोड़ गाँव में चला आया। गाँव के लोगों ने उसकी

दयनीय दशा देख कर पैसों से सहायता कर नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में इलाज हेतु ले गये। डॉक्टर द्वारा खून की जांच के बाद पता चला कि धुलियाँ HIV + से ग्रसित है और उसके शरीर में AIDS महामारी पूरी तरह से तबदील हो चुकी है।

धुलियाँ का सम्पूर्ण परिवार उसके ऊपर ही निर्भर था, ऐसी स्थिति में उसके घर की परिस्थितियाँ और ज्यादा खराब होती चली गयी। ऊधर धुलियाँ का स्वास्थ्य भी धीरे-धीरे और गिरता चला गया। अन्ततः दूसरों से ली गई भयंकर इस बीमारी के कारण वह मर गया और छोड़ गया असहाय रंगिया और बच्चों को, धुलियां तो मर गया पर अपने पीछे छोड़ गया एक बहुत ही दर्दनाक दास्तान। उसकी एक छोटी सी गलती के कारण कई जिन्दगियाँ बर्बाद हो गयी। आने वाले हालातों का सामना करने का साहस उसके परिवार में नहीं रहा। ऐसे कई धूंलियां हर रोज अज्ञानता के कारण इस महामारी का शिकार होते है और मर जाते है; छोड़ जाते है कई ऐसे सवाल जिसका हम सब उत्तर तलासते रहते हैं।

उपरोक्त घटना क्यों घटी? क्या हुआ? ये सब प्रश्न से मेरे दिलो दिमाग में आते रहे ? एक हँसता खेलता परिवार बर्बाद क्यों हुआ? मुझे रात दिन यही प्रश्न कौधते रहे, तभी मेरे ध्यान में यह विचार आया, कि यह घटना उसकी अशिक्षा व अज्ञानता की वजह से घटी। सायद उसे AIDS के विषय में सही जानकारी नहीं थी।

आज विभिन्न प्रकार की भयंकर बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं जैसे कैन्सर, टी.बी. हेपाटाइटस तथा HIV एड्स। हमारे वैज्ञानिक चिकित्सकों ने अपने अथक प्रयासों तथा शोध द्वारा कैंसर, टी.बी., हेप्पाटाइरस जैसी भयानक बीमारियों की तो दवा तथा इलाज खोज निकाला परंतु एड्स महामारी का इलाज व दवा अभी तक नहीं खोज पाये हैं। यह बीमारी आज भी लाइलाज बनी हुई है। अतः हर नागरिक को AIDS के विषय में जानकारी होना ही चाहिए जो धुंलिया को नहीं थी। सायद वह अनपढ़ था या हो सकता है उसे सोचने का मौका ही ना मिला हो कि एड्स क्या है ? जिससे कि वह अपने परिवार को सुरक्षित रख पाता और अपने को खुशहाल बना पाता। एड्स क्या है ? क्यों फैलता है ? इससे कैसे बचा जा सकता है ? इस सबके बारे सभी युवाओं, युवतियों को जानकारी होनी चाहिए। हालाकिं इस संबध में सरकार तथा कुछ स्वयं सेवी संस्थाएं कार्यरत हैं जो विभिन्न कार्यक्रमों के जरिये लोगों को एड्स के वारे में जानकारी दे रही हैं लेकिन यह निचे स्तर तक नहीं पहुंच पा रहीं हैं। जरूरत है एड्स के विरूद्ध देशव्यापी व विश्व व्यापी मुहिम चलाने की ताकि फिर कोई किसी घर का दीपक न बुझे।



विश्व एड्स दिवस के अवसर पर बल मुख्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में विजेता कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान करते महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा।

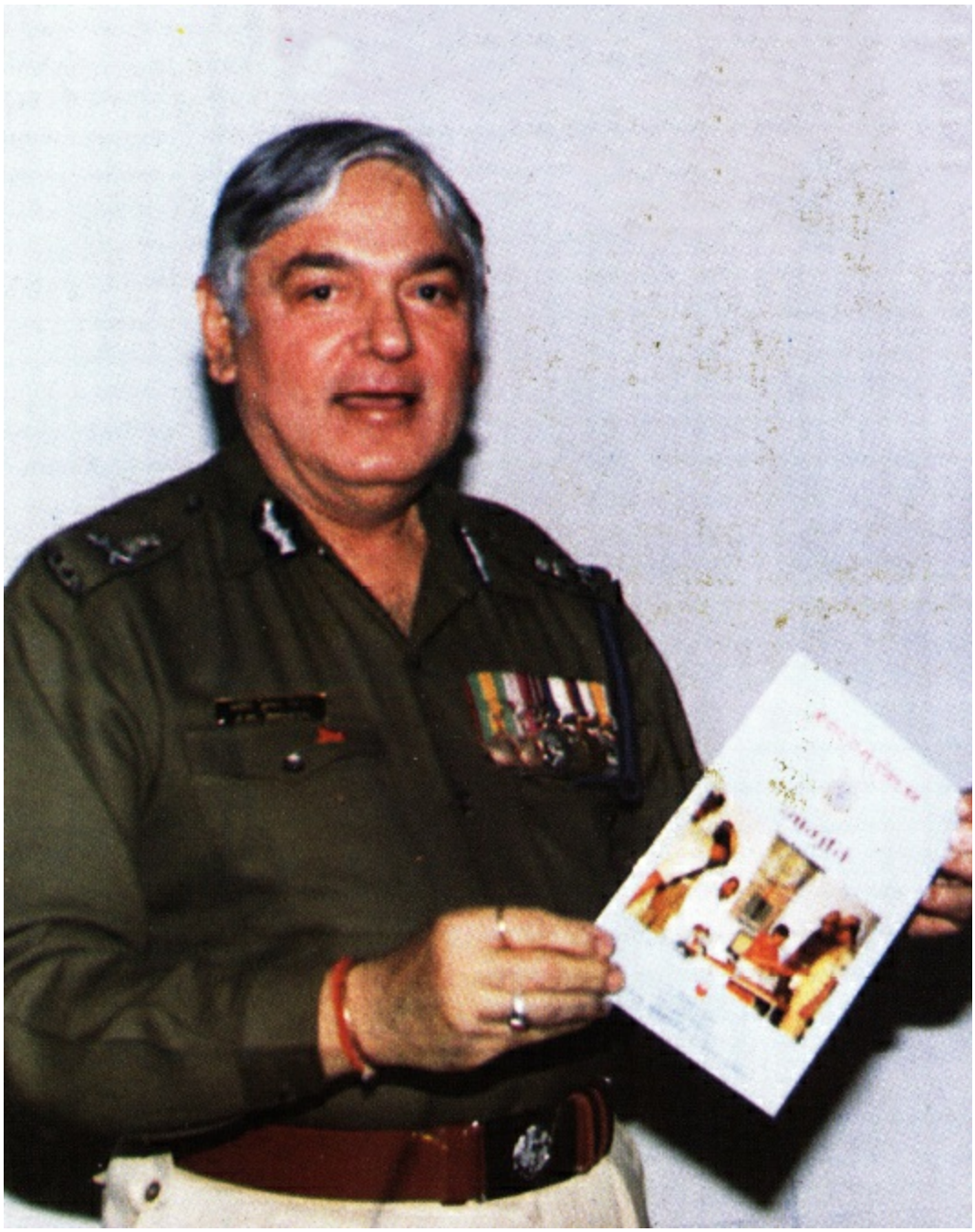
मुख्यतः AIDS असुरक्षित तरीके से यौन संबंध बनाने, दूषित रक्त व रक्त उत्पाद के इस्तेमाल करने से, दूषित सुइयाँ व सिरिंज के प्रयोग से, भेदक उपकरणों के इस्तेमाल से, तथा बच्चों को गर्भावस्था में एच.आई.वी. /एड्स पीड़ित माँ से होती है। हालांकि इस बात की अभी पुष्टि नहीं हो पाई है कि स्तनपान से, एक ही सेविंग ब्लैड के इस्तेमाल से, चुम्बन लेने से, मच्छर के काटने से, महिलाओं द्वारा एक ही लिपिस्टक के इस्तेमाल से भी HIV फैलने की संभावना रहती है। अतः इस के सार्वजनिक प्रयोग से बचना चाहिए।

AIDS से बचने के लिए हमें एक से अधिक के साथ यौन संबंध नहीं बनाने चाहिए, यदि बनाने हो तो निरोध का इस्तेमाल करना चाहिए, शरीर में रक्त लेते समय, रक्त की जाँच कर लेनी चाहिए कि कहीं उस रक्त में HIV वायरस तो नहीं है। एक ही सीरिंज के बार-बार प्रयोग से सदैव बचे, यदि आप नाई से बाल, दाढ़ी बनवाते हैं तो ध्यान रखे कि नये ब्लेड का इस्तेमाल किया गया हो। यदि संभव और मान्यता हो तो विवाह से पहले लड़का एवम् लड़की दोनों का HIV टेस्ट करवा लेना चाहिए।

हम सभी का यह कर्त्तव्य बनता है कि इस भयंकर जान लेवा बीमारी का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें ताकि लोगों में इसके वारे जागरूकता व जानकारी बढे

ताकि भविष्य में किसी दीपक को बुझने से बचाया जा सके।

बल के कार्यालयों में विश्व एड्स दिवस पर अनेक कार्यक्रम

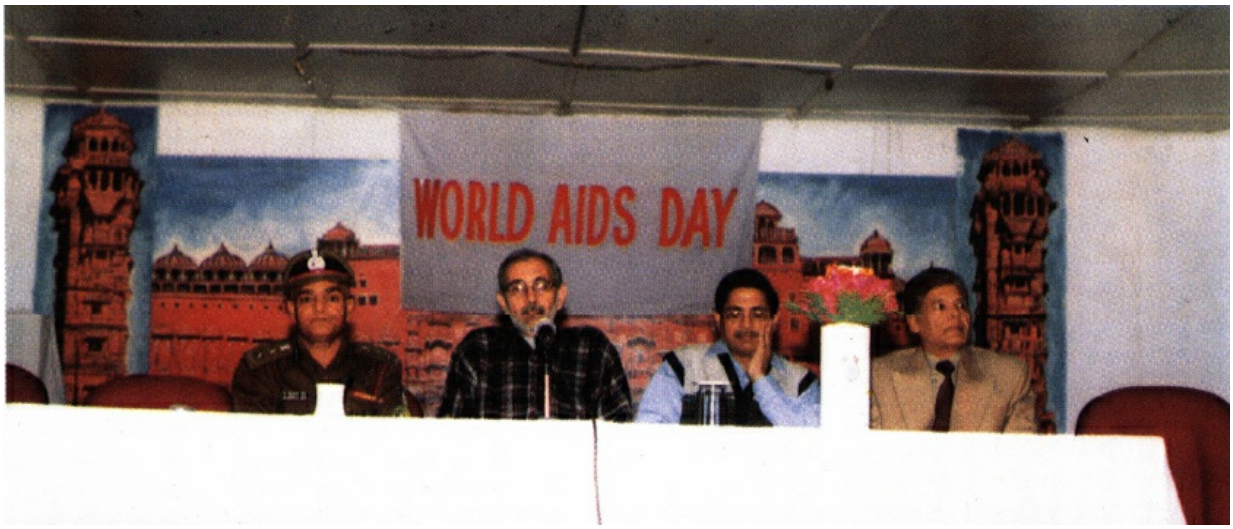


विश्व एड्स दिवस पर आयोजित समारोह में एड्स की जानकारी से संबंधित प्रकाशित पुस्तक "जागृति" का विमोचन करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।

ग्रुप केन्द्र-एक केरिपुबल अजमेर में विश्व एड्स दिवस मनाया गया। विश्व एड्स दिवस 1 दिसम्बर, 2004 अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बी.डी. चौहान की अध्यक्षता विधिवत सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि डा० अशोक सिंह, प्रिंसिपल फेमिली वेलफेयर और ट्रेनिंग सेन्टर, जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कालेज ने दीप प्रज्वलित

कर एड्स की जानकारी समस्त जवानों को दी। डा० सिंह ने बताया कि एड्स से बचाव ही उपचार है। एड्स का कोई इलाज नहीं है। अतः स्वयं को परिस्थितियों से बचाकर रखे एवं जब भी जरूरत हो निरोध का प्रयोग करें।

अजमेर टी.बी. अस्पताल के प्रोफेसर डा० एम.एल. गुप्ता ने विशिष्टि अतिथि के भाषण में टी.वी. व एड्स का भाई- बहन का रिश्ता बताते कहाकि क्षय के मरीजों में ज्यादातर एच.आई.बी. पोजिटिव पाया जाता है। डा० एल चण्डक, डायरेक्टर ऑफ चण्डक नर्सिग होम ने भी एड्स के बचाव के उपायों पर प्रकाश डाला। डा० श्रीमती सुधा चण्डक ने परिवार कल्याण केन्द्र की महिलाओं को एड्स की जानकारी दी। इस अवसर पर एड्स के पोस्टर, चार्ट, बैनर लगाये गये।



गुप केन्द्र अजमेर-एक में एड्स पर आयोजित कार्यशाला में जानकारी देते सिविल तथा केरिपुबल के चिकित्सा अधिकारी।



गुप केन्द्र नीमच में विश्व एड्स दिवस पर जवानों की समस्याओं का समाधान करते केरिपुबल के अधिकारी तथा सिविल अस्पताल के चिकित्सक।

अपर पुलिस उप महानिरीक्षक बी.डी.एस. चौहान ने कहा कि केरिपुबल कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा सोमनाथ से मणिपुर तक, देश के कोने-कोने में कार्यरत है। केरिपुबल के जवान परिवार से दूर रहकर अपने कर्त्तव्यों का पालन कर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में किसी के सम्पर्क में आना संभाविक है फिर भी हमें संयम रखना चाहिए, क्योंकि एड्स का कोई इलाज नहीं है केवल बचाव ही इस भयंकर बीमारी इलाज है। केरिपुबल में एड्स 181 लगभग मामले गतवर्ष तक दर्ज हुए है जिसमें से 64 का इन्तकाल हो चुका है तथा 117 रोगियों का विभिन्न अस्पतालों में इलाज चल रहा है, यह आंकड़े तो समस्या का एक पक्ष है, लेकिन इससे कई गुने लोग हमारे साथ एड्स के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अतः हमें सयंम और समझदारी से काम लेना चाहिए।

साम को इसी विषय पर आधारित हिन्दी फीचर फिल्म "फिर मिलेंगे" जवानों को दिखाई गई।

इसी तरह के कार्यक्रम एक दिसम्बर 2004 को ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल नीमच परिसर में स्थित सभी संस्थानों/ बटालियनों द्वारा सामूहिक रूप से आयोजित किए गये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस उप महानिरीक्षक, सी.टी.सी. प्रथम, श्री एस.एस. यादव थे। इस नेक कार्य के लिए श्री ओ.डी. माथुर, रैंज पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपुबल नीमच द्वारा सिविल चिकित्सा विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। डॉ. श्रीमती गोविंद जी शुक्ला, प्रभारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला चिकित्सालय नीमच, डॉ. आर.पी. माहेश्वरी, चिकित्सा विशेषज्ञ एवं एड्स नोडल अधिकारी, जिला चिकित्सालय नीमच एवं डॉ. बी.एल. मीणा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, स्टेशन अस्पताल, केरिपुबल नीमच ने बल के कार्मिकों को इस घातक बीमारी की रोकथाम एवं इस पर नियंत्रण रखने के विभिन्न उपायों एवं तरीकों की जानकारी विस्तार पूर्वक दी। वृहद प्रचार-प्रसार तथा विस्तृत जानकारी हेतु विभिन्न स्थानों पर बैनर/पोस्टर भी लगाये गये एवं एड्स से संबंधी निर्देशिका वितरित की गई।

गोष्ठी में एड्स विशेष पर उपस्थित जवानों द्वारा उठाए गए सवालों/शंका का समाधान एवं जानकारी विशेषज्ञों द्वारा अपने व्यावहारिक ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर दी। एड्स पर आधारित एक वीडियों फिल्म शीर्षक "सुबह होने तक" भी दिखाई गई ताकि वीडियों फिल्म के माध्यम से भी कार्मिक जागरूक हो सके।

स्टेशन अस्पताल में कार्यशाला आयोजित कर कण्डोम वितरित किए गए तथा स्टेशन अस्पताल में तैनात डॉ. लॉरेन्स बान्डो एवं डॉ. अमूल्या कुजूर द्वारा आर.टी.सी. प्रथम के नवारक्षियों तथा परिवार कल्याण केन्द्र में उपस्थित महिलाओं को इस विषय पर व्याख्यान दिये गये।

89 बटालियन के सिविक एक्शन कार्यक्रम

89 बटालियन, केरिपुबल ने राउरकेला में 6 जनवरी, 2005 को सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजिन ग्राम कालियापोश, थानाक्षेत्र बिसरा में किया जिसका उद्देश्य केरिपुबल तथा स्थानीय नागरिकों के बीच आपसी संबंधों को मजबूत बनाना था। इस कार्यक्रम में गाँव के लोगों को एड्स के बारे में जानकारी दी गई तथा मलेरिया से बचाव तरीके बताये गये। गाँव के लोगों को असामाजिक तत्वों से भय मुक्ति रहने के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम का उद्घाटन 6 जनवरी, 2005 को स्थानीय पुलिस के उप महानिरीक्षक, वेस्टर्न रैंज, राउरकेला श्री एस.एस. हॅसदा ने किया। इस अवसर पर श्री वाय के. जेठुआ. एस.पी. सुन्दरगढ मिडिया तथा प्रेस के अलावा स्थानीय लागा एवं बल के अधिकारी एवं जवान भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए ग्राम कालियापोस, बिसरा में बटालियन द्वारा मुफ्त चिकित्सा शिविर लगाया तथा स्थानीय लोगों को निःशुल्क ईलाज व दवाईयां प्रदान की गयी। चिकित्सा अधिकारियों द्वारा स्थानीय लोगों को अनेक प्रकार की बीमारियों के संबंध में परामर्श दिया एवं दवाईयां भी वितरित की गई। चिकित्सा शिविर में लगभग 400-500 ग्रामीण महिला-पुरूष तथा बच्चों का विभिन्न रोगों के संबंध में निदान कर परामर्श/ईलाज से संबंधित दवाईयां प्रदान की। बल के इस कार्य की स्थानीय लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

एड्स के बारे में जानकारी– ग्राम कालियापोश, बिसरा के स्थानीय लोगों को डॉ. जी.आर. गिरी, (एच.ओ.डी., उत्तकल मनी होम्योपैथिक कॉलेज, राउरकेला) ने विस्तार से एड्स होने के कारणों एवं इससे बचाव के उपायों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि एड्स कोई छूत की बीमारी नहीं है जो रोगी के साथ रहने, खाने-पीने या छुने से हो जाए बल्कि यह असुरक्षित यौन संबंधों के अलावा रक्त-प्रत्यारोपण, इनजेक्शन आदि से एक-दूसरे में फैलती हैं। कई महिलाओं से संबंध रखने वाले लोगों में एच.आई.वी. के जीवाणु होने के अधिक आसार होते हैं। एड्स की पहचान तुरन्त नहीं होती बल्कि कई वर्ष के बाद ही इसका पता चलता है। इस अवसर पर कमाण्डन्ट,



केरिपुबल द्वारा आयोजित मुफ्त चिकित्सा शिविर में लोगों को दवाई बांटते मुख्य अतिथि उड़ीसा पुलिस की पश्चिमी रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एस.एस. हुँदसा।

श्री एस.एस. सन्धु ने बताया हालाकि एड्स का इलाज नहीं है फिर भी आधुनिक चिकित्सा तकनीक के फलस्वरूप एड्स पीड़ित रोगी कुछ ज्यादा समय तक जिन्दा जरूर रह सकते हैं। इसके पूर्ण ईलाज की खोज अभी तक नहीं हो पायी है। अतः सभी को रक्त-प्रत्योरोपण के समय एच.आई.वी. की जांच अनिवार्य रूप से करा लेनी चाहिये। उन्होंने उपस्थित लोगों से एड्स जैसे भयानक रोगों से बचने के लिये सयंम एवं सावधानी बरतने की अपील की।

मलेरिया रोग के बारे में जानकारी एवं मलेरिया रोधक वस्तुओं का निःशुल्क वितरण–इस कार्यक्रम में डॉ. एस.के. शर्मा, डायरेक्टर मलेरिया रिसर्च सेन्टर, राउरकेला ने स्थानीय लोगों को मलेरिया जैसी खतरनाक बीमारियों से बचने के उपायों के बारे में भी जानकारी दी। श्री शर्मा ने बताया कि मलेरिया जैसे रोग से बचने के लिये मच्छरदानी का प्रयोग ही श्रेष्ट उपाय है। डॉ. शर्मा ने आगे बताया कि मलेरिया रिसर्च सेन्टर, राउरकेला ने रिसर्च किया है कि मलेरिया रोधक के लिये-ओथ्रीन टेबलेट द्वारा मच्छरदानी को मच्छर रोधक किया जा सकता है। यदि मच्छरदानी प्रयोग में नहीं लायी गयी तो मलेरिया हो सकता है, जो जानलेवा भी हो सकता है। ओथ्रीन टेवलेट फूलों द्वारा मच्छरदानी को कैसे मलेरिया मच्छर रोधक बना सकते हैं, इसका डेमोस्ट्रेशन भी गांव के लोगों को दिखाया जो काफी लाभप्रद रहा।



89 बटा. द्वारा आयोजित सिविक एक्शन कार्यक्रम में भाग लेते स्थानीय गणमान्य नागरिक बल के अधिकारी।



89 **बटा. केरिपुबल के कार्मिक स्थानीय लोगो को मुफ्त दवाई बांटते हुए।**

4 जनवरी, 2005 को ग्राम झारवेडा के नेहरूगुलाव युवा मंच तथा 89 बटालियन, केरिपुबल के जवानों के बीच ग्राम भालूलता मैत्रीय फुटबाल मैच का आयोजन किया गया जिसमें नेहरू युवा मंच द्वारा 0-2 गोल से विजय प्राप्त की गई। विजेयताओं व मैच प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि श्री एस.एस. हँसदा, द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये।

बल के सितारे देश का गौरव

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 105 अधिकारियों और जवानों को इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति के वीरता पुलिस पदक, वीरता के पुलिस पदक, विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया है। 105 कार्मिकों में से बल के 12 कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता पदक(7 को मरणोपरांत), तथा 6 अधिकारी व जवानों को वीरता के पुलिस पदक(एक को मरणोपरांत), उग्रवाद प्रभावित राज्य जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों तथा नक्सलवाद प्रभावित राज्यों में उग्रवादी, आतंकवादी तथा नक्सलवादी अभियानों में अभूतपूर्व सहास तथा वीरता का उत्कृष्ट प्रर्दशन करने के लिए प्रदान किये गये हैं। इसके अलावा 11 अधिकारी व जवानों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक

जबाके 76 आधेकारी व जवानों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

राष्ट्रपति के शौर्य पदक

स्व० हवलदार नंदजी सिंह (मरणोपरांत), स्व० हव० व्रिकोधर सिंह (मरणोपरांत), स्व० सि० कृष्णा बहादुर (मरणोपरांत), स्व० सिपाही अम्बाराम मालवीय (मरणोपरांत), स्व० निरीक्षक एच.एल.गुप्ता(मरणोपरांत), स्व० सि० आनंद सोलंकी(मरणोपरांत), स्व० सि० लाभ सिंह(मरणोपरांत), श्री अमित कुमार सक्सैना,सहा०कमा०, श्री एस.एस.परिहार,सहा०कमा० हवलदार जालंधर पाण्डेय, सि० बच्चा लाल यादव तथा सि० सभापति सिंह।

वीरता के पुलिस पदक

स्व० सिपाही मो० सादिक(मरणोपरांत),श्री बी.एस. राठौर,कमा०, हव० शीशराम, सि० संदीप यादव, सि० टी.रमेश भाई तथा सि० देशराज।

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक



श्रीएस.सी. शर्मा (पु०महानिरीक्षक पूर्वोत्तर सेक्टर)



श्री मान सिंह रावत (पु०उ०म०नि० महानिदेशालय),



श्री डी.सी.दे (पु०उ०म०नि० अगरतला)



श्री हरभजन सिंह (पु०उ०म०नि० आर.टी.सी–नीमच)



श्री एम.एस. अग्रवाल (पु०उ०म०नि० पल्लीपुरम)



श्री बी.डी.एस.चौहान (अ०पु०उ०म०नि० ग्रुप केन्द्र अजमेर)



श्री रघुबीर सिंह (अ०पु०उ०म०नि० जम्मू)



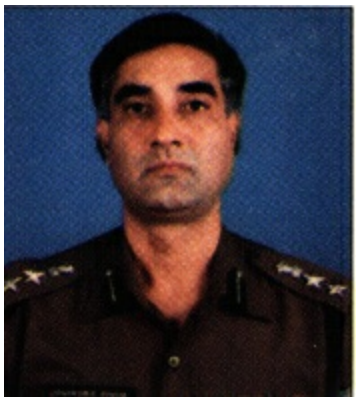
श्री डी.आर. पाठक *(*अ०पु०उ०म० ग्रु०के० ग्वालियर*)*



श्री एस.पी.एस. नागर *(*कमा० *136* बटा०*)*



श्री टी.सी. शेखरन *(*कमा० सी.टी.सी.–कोयंबटूर*)*



श्री जोगिन्दर सिंह (कमा० महानिदेशालय)

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



श्री ओ.डी. माथुर (पु०उ०म०नि० नीमच)



श्री जी.एस.मस्ताना (अ०पु०उ०म०नि० ग्रु०के० भुवनेश्वर)



श्री विनोद कुमार सागर *(*अ०पु०उ०म०नि० ग्रु०के० दुर्गापुर*)*



श्री निर्मल सिंह, कमा०*(*कार्यालय पु०उ०म० जालंधर*)*



श्री मनजीत सिंह,कमा०*(48* बटा०*)*



श्री आर.पी.एस. राणा,कमा०*(16* बटा०*)*



श्री करमजीत सिंह,कमा०*(74* बटा०*)*



श्री एस.पी.सक्सेना कमा०*(120* बटा०*)*



डा० एन.सी.मोहन्ती.मु०चि.अधि० *(*बस अस्पताल-तीन*)*



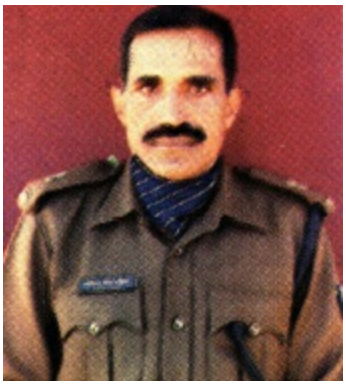
श्री प्रताप सिंह,द्वि०क०अधि०*(13* बटा०*)*



श्री पी.सी.सैनी,द्वि.क.अधि.*(*ग्रु०के० मोकामाघाट*)*



श्री एच.एल.शर्मा,द्वि०क०अधि०*(30* बटा०*)*



श्री गोविन्द सिंह दहिया, द्वि०क०अधि०*(61* बटा०*)*



श्री रामपाल सिंह,उप कमा०*(3* सिग०बटा०*)*



श्री सतबीर सिंह,उप कमा० *(108* बटा०*)*



श्री सूरत सिंह,उप कमा० *(138* बटा०*)*



श्री एस.एन.यादव, उप०कमा०*(151* बटा०*)*



श्री जे.एस.बहाद, उप०कमा०*(ग्रु०के०इम्फाल)*



श्री एल.डी. राय, सहा०कमा०*(148* बटा०*)*



श्री के.सी. राणा,सहा०कमा०*(*के०हथि०भ०,रामपुर*)*



श्री बिहारी लाल,सहा.कमा.*(96* बटा०*)*



श्री रूपराम,सहा०कमा०*(161* बटा०*)*



श्री सी.एम.चिन्तामारकिशन प्रशा० अधी०*(*कार्यालय पु०उ०म० पल्लीपुरम*)*



श्री एन. गहलौत, अनु०अधि०(महानिदेशालय)



का०अधीक्षक आर.आर दास(ग्रु०के०दुर्गापुर)



का०अधी० एस.एस.नायर(ग्रु०के० गांधीनगर)



निरीक्षक/आशु० सुंदरेशन सी.*(*कार्यालय पश्चिमी सेक्टर*)*



निरीक्षक रमेश चंद*(153* बटा०*)*



निरीक्षक राम सिंह, *152* बटा.



उप निरीक्षक रामाकांत सिंह, महानिदेशालय



उप निरीक्षक जे.पी.एन, मिश्र, *(कार्यालय पुमनि, परि., जम्मू)*



उप नि॰ सहदेव सिंह*(महानिदेशालय)*



उप नि० ममन राम यादव*(96* बटा०*)*



उप नि० प्यार चंद*(*ग्रु०के०जालंधर*)*



उप नि० बलबीर सिंह*(84* बटा०*)*



उप नि० विजय बहादुर सिंह*(एक बटा०)*



उप नि० प्रेम बल्लभ*(67* बटा०*)*,



उप नि० श्याम मोहन शर्मा*(45* बटा.*)*



उप नि० एस.डी.भट्ट *(ग्रु०के०गांधीनगर)*,



उप निरीक्षक/तकनिकी ई.पी.रामाचन्द्रन*(5* सिग० बटा०*)*



उप नि. भगवान सिंह*(100* बटा० आर०ए०एफ०*)*



उप नि०/टेलर एन.के बालन(ग्रु०के०बैंगलौर)



उप नि० निर्मल सिंह*(128* बटा०*)*



उप नि० टी. शंकरन*(113* बटा*)*



उप नि०रमाकांत सिंह*(145* बटा०*)*,



उप नि० आर. मुरलीधरन*(45* बटा०*)*



उप नि०बालक राम*(*ग्रु०के०पिन्जौर*)*,



उप नि० भुवनेश्वर राय*(116* बटा०*)*,



हवलदार धर्मपाल सिंह*(6* बटा०*)*



हव० हंसनाथ राम*(53* बटा०*)*



हव० जय प्रकाश*(60* बटा०*)*



हव० देव नारायण सिंह*(8* बटा०*)*



हव० सौदान सिंह*(148* बटा०*)*



हव० ढोकलराम*(63* बटा०*)*



हव० वी.शशांकन*(28* बटा०*)*



हव० नाथूराम*(126* बटा०*)*



हव० बाबू लाल*(89* बटा०*)*,



हव० सिधू राम*(4* बटा०*)*



हव० रामेश्वर दयाल *(*ग्रु०के०गुड़गांव*)*



हव० बी.सी.यादव*(55* बटा०*)*,



हव० एस.एन.सिंह*(145* बटा०*)*,



हव० के.एस नायर*(41* बटा०*)*,



हव० एस.आर.त्रिपाठी*(49* बटा०*)*



हव० पी.एन.पिल्ले*(31* बटा०*)*



हव० पी.के.भट्टाचार्य*(39* बटा०*)*



हव० गोवर्धन शर्मा*(66* बटा.*)*,



हव० थोमस मैथ्यू*(77* बटा*)*,



हव० लाल बहादुर*(40* बटा०*)*,



हव० कामनचंद*(61* बटा*),*



हव/महिला कलावती देवी*(88* बटा०*)*



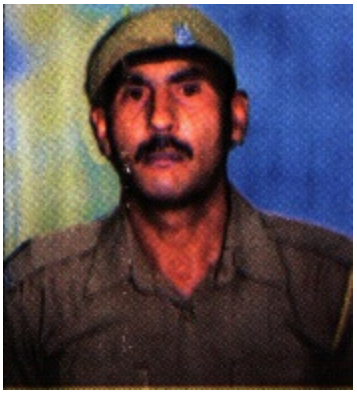
सि/महिला परमजीत कौर*(88* बटा०*),*



स० ब्रहमानंद*(35* बटा०*)*,



सि० गुरुंग जेना*(*ग्रु०के०भुवनेश्वर*)*,



सि० प्रताप चंद*(71* बटा०*)*



नाई रामलाल*(49* बटा०*)*,



कुक आलम सिंह नेगी*(54* बटा.*)*

के.रि.पु.बल के जवान को शौर्य चक्र



असम के उल्फा उग्रवादियों के साथ हुई मुठभेड़ के दौरान अदम्य साहस और शौर्यवीरता का उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने के लिए भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने 93 बटा० के.रि.पु.बल के हवलदार (अब उप निरीक्षक) छोटे लाल को शौर्य चक्र प्रदान किया है।

10 जुलाई, 2003 को एक निश्चित सूचना मिलने पर असम के बारपेटा रोड पुलिस थाने की आनंद बाजार बाहरी पुलिस पोस्ट के अन्तर्गत होनपारा गांव में 93 बटा. केरिपुबल के एक प्लाटून ने रेड/तलाशी अभियान चलाया। जब क्षेत्र में तलाशी/खोज अभियान चलाया जा रहा था तो सिपाही समय सिंह ने ख्याराबाड़ी गांव में झोंपड़ियों के पास मिट्टी से सनी दो साईकलों को देखा। जैसे ही वह झोपड़ियों की तलाशी लेने के लिए आगे की ओर बढ़ा, झोपड़ियों में छिपे उल्फा उग्रवादियों ने गोलीबारी शुरू कर दी और सिपाही समय सिंह दाहिने हाथ में गोली लगने से वह घायल हो गया। हवलदार छोटेलाल ने तुरंत सिपाही समय सिंह को पीछे की ओर खींचकर सुरक्षित स्थान पर छोड़ा तथा स्वयं चतुराई से झोपड़ियों की ओर आगे बड़ा।

हवलदार छोटेलाल ने आगे बड़कर अपनी कारबाईन से उग्रवादियों के ऊपर अन्धाधुन्ध गोलीबारी की जिससे एक उग्रवादी मारा गया तथा एक घायल हो गया। जख्मी उग्रवादी ने बल की टुकड़ियों के ऊपर एक हथगोला फैंकने का प्रयास किया तो हव० छोटेलाल ने हाजिर जवाबी, तत्परता तथा अदम्य साहस दिखाते हुए उग्रवादी के दोनों हाथ पकड़ लिये और उसे धक्का दे दिया जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादी नीचे गिर गया और ग्रेनेड उग्रवादी के शरीर पर फटने से उसकी घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गयी।

उग्रवादी के साथ हुई इस धक्का-मुक्की में हवलदार छोटेलाल के हाथों में कई चोटें आई और उसके दाहिने हाथ की तीन, उंगलियां तथा बाएं हाथ का अंगूठा कट गया। हथेली एवं दाहिने पैर के घुटने में गहरा जख्म होने के कारण हव. छोटे लाल बुरी तरह घायल हो गया परंतु हौसला नहीं हारा और अपने अन्य साथियों के पहुँचने तक बहादुरी से उग्रवादियों का मुमाबला करते रहे। हव. छोटे लाल द्वारा इस कार्रवाई

प्रदर्शित अदम्य साहस तथा वीरता का परिचय देने के लिए कोरपुबल के महानिदेशक ने बल का गौरव बड़ाने वाले हवलदार छोटेलाल को समयपूर्व उपनिरीक्षक पद पर पदोन्नति प्रदान कर उसकी हौसला अफजाई की।

आजादी

लाशें बिछ जाती है यहाँ,
किसी कसाई खाने की तरह
क्या आदमी भी ?????
जानवर बन गया है,
यहाँ तो घर से बाहर भी
निकलने का डर है,
अपने ही घरों की चार दीवारी में,
हम भी तो कैद है,
बंदूक की गोलियाँ
पटाखों की तरह बरस रही हैं,
यह कौन सी दिवाली है जो
खून की नदियाँ बहा रही है।
कहने को तो हम स्वतंत्र है
पचास साल का जश्न भी बनाया
लेकिन अगामी साँस का भी यहाँ
भरोसा नहीं है।
सि० वी.के. काम्बाले
100 बटा० आर.ए.एफ..

निर्भय वाणी

1. पृथ्वी पर तीन रत्न है, जल, अन्न और सुभाषित।

मूर्ख लोग ही पाषाण खंडो को रत्नों का नाम देते हैं।

2. जो दूसरों से निर्भय है और दूसरों को भी अभय देता है, वहीं सच्चा संन्यासी है। ऐसा स्मृति में कहा गया है।

3. यदि इस देह रूपी वस्तु को मनुष्य जीत ले तो फिर संसार में उस पर कौन सत्ता कर सकता है।

'फरियाद' मजलूमा दी

कहानु बतना तो होऐ हां बे वतन असीं।
साडा कोई ता दर्द बंडाओ लोको।
ऐह का तक सिलसिला रहू चलदा।
ऐना पापियों नूं जरा समझाओ लोको।
जिन्दगी मिली है बड़ा अनमोल हीरा।
कौड़ियाँ बदले न इंसनू गवाओं लोको।
प्यार बधयां मिलदी है बेअन्त शोभा।
नफरत करके पाप दा बोझ ना बधाओं लोको।
जेहाद नाम ऐ उस परवरदिगार दा ही।
इसदे नाम ते कहर ना कमाओं लोको।
जिस मां दे आंचल बिच तुसी खेलदे रहे।
आंखे लग इन्हा काफिरां दें तार-तार न आंचल बनाओ लोको।
जन्नत कहांदी ऐ वादी, काश्मीर दुनियां दी।
नरक दा जामा ना इसनुं पहनाओं लोको।
रज-रज जवानियाँ पये मानों।
जिन्दगी वतन दे लेखे तुसी लाओ लाको।
बड़ा सी जिन्हा उन्ते सानू ऐतवार लोको।
दे गए दगा ओह बदले उपकार लोको।
दुःखी मन नाल ऐ बलबीर फरियाद करदा।
ऐवे मजलूमा दा खून ना बहाओ लोको।

– सहा०कमा० बलवीर सिंह,
37 बटा०

याद में तेरी फरियाद

रहा प्रहरी बन संयम में,
अक्रोश तनाव को कम किया है मैने।
यादो में आज उनकी उज्जवला,
दिन रात स्मरण किया है मैने।
नव निर्मित शाखाओं की तरह,
दिल हाल-ए-पर जीता हूँ मैं।
सम्पन्नता के गुण परख,
ढेरों सपने भविष्य के लेता हूँ मैं।
आज दूर हूँ उस चमन से,
वक्त आने पर खेलुगा संग।
झरनों की झर-झर आवाज सुन,
दिल अपना बहला लेता हूँ मैं।
करिश्मा है उन लम्हों का,
जब दिल में तुम महकी थी।
उलझन घन घटा केसों की,
जिगर पैगाम मैं पी लेता हूँ।
रहा प्रहरी बन संयम में,
अक्रोश तनाव को कम किया है मैने।
मिलन पहरी बेला में,
सपने संयोग कर लेता हूँ, जब याद तुम्हारी आती है।
आराम जिंदगी के क्षण में,
पहाड़ों और झरनों से खेल लेता हूँ मैं।
बिरह मिलन की टीस जब,
तुम सपनों में आती हो हलचल को थाम लेता हूँ मैं।
सपने-चमन से आँख खुली जब,

यादों से गुप्तगू कर लेता हूँ।
खूशबू चमन सपनों की ले,
साथ उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ मैं।
मिलन परवान चढ़ा होगा,
आज ही सपने में है बताया तूने।
शिशु मिलन कर रूठा मन,
छुट्टी फरियाद कर दिया है मैंने।
कर मिलन फरियाद उनको,
संग-संगिनी को भविष्य समझाना है
रहा प्रहरी बन संयम में,
अक्रोश तनाव को कम किया है मैने।
रहे सम्पन्न भविष्य मंगलमय
सुनहरे सपने संजोय कर लेता हूँ मैं।

– सहा. कमा. सुभाष चन्द्र
6 वीं बटा.

पर्यावरण संरक्षण में ग्रुप केन्द्र भोपाल की एक नई पहल

"ग्रुप केन्द्र" भोपाल के प्रांगण के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में बगरोदा ग्राम की लगभग ग्यारह एकड़ जमीन पर बरसाती नाला बहता है। यह जमीन पर्यावरण संरक्षण तथा स्टोप डेम बनाने हेतु ग्रुप केन्द्र भोपाल को राज्य सरकार द्वारा दी गई है। इस भूमि पर अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, भोपाल, श्री बी.एस. नेगी के सतत प्रयासों तथा मार्ग दर्शन में जवानों ने एक स्टोप डेम का निर्माण किया है। बांध का क्षेत्रफल लगभग 4,500 वर्ग मीटर है। इस बाँध के बनने से इसमें वर्ष भर लगभग 15 फीट गहरा पानी उपलब्ध रहेगा। इस बांध में पानी उपलब्ध रहने से बगरोदा ग्राम के जानवर गर्मियों में अपनी प्यास बुझा सकेगें। बांध के किनारे एवं आसपास के क्षेत्र में वृक्षारोपण करके भविष्य में इसे उद्यानमय एवं हराभरा बनाया जाएगा। बगरोदा नाले पर ग्रुप केन्द्र, भोपाल के श्रमदान से बनाए गए इस स्टोप डेम का उद्घाटन 24

दिसम्बर, 2004 को श्री बी.एस. नेगी, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, भोपाल द्वारा किया। इस अवसर पर ग्राम बगरोदा तथा आसपास गांवों के सरपंच व अन्य लोग भी उपस्थित थे। सीआरपीएफ द्वारा जनहित में किए गए इन प्रयासों की उपस्थित स्थानीय लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा इस नेक कार्य के लिए बल का आभार व्यक्त किया।



डेम का उद्घाटन करते ग्रुप केन्द्र, भोपाल के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बी.एस. नेगी व अन्य स्थानीय गणमान्य लोग।



ग्रुप केन्द्र, भोपाल द्वारा बनाया गया स्टोप डेम।

ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में नये परिवार आवासों का निमार्ण

चार बटालियनें तथा हर बटालियन में सात कम्पनी वाले ग्रुप केन्द्र के लिए सरकार से प्राप्त संशोधित प्राधिकार के अनुसार 775 फेमिली क्वार्टर प्राधिकृत हैं। वर्तमान में ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम के साथ पाँच बटालियनें व रेंज कार्यालय है। और अभी परिवारों के रहने के लिए मात्र 699 फेमिली क्वार्टर उपलब्ध हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए 72 टाईप-दो और 04 टाईप-तीन कुल 76 फेमिली क्वार्टरों के निर्माण के लिए गृह मंत्रालय, भारत सरकार से अनुमति प्राप्त हो चुकी है।

अतः 76 नये परिवार आवास बनाने के लिए पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर, श्री सी. बालासुब्रमणियम, ने एक रंगारंग कार्यक्रम में इनकी नींव रखी। प्रस्तावित निर्माण कार्य ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम के सेक्टर-'बी' में अस्पताल से लगी खाली जगह में किया जायेगा। यह निर्माण कार्य 15 महीने में के.लो.नि. विभाग की नवीनतम ड्राईगं व मापदण्डों के अनुरूप किया जाएगा। निर्माण कार्य के लिए उपयुक्त स्थान, सुन्दर

ढ़ॉचा, समय पर निर्माण कार्य पूरा होना, ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम के कार्मिकों के लिए एक गौरव की बात होगी।



अपर पुलिस महानिदेशक (मुख्यालय) श्री श्याम रतन मेहरा अपने विजिट के दौरान ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम के क्वाटर गार्ड में सलामी लेते हुए।



पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर श्री सी. बाला सुब्रामणियम क्वाटरों की आधारशिला रखते हुए।

कादरपुर में राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान का शिलान्यास

"बल कार्मिकों को मानसिक शान्ति प्रदान करने तथा मनोबल बड़ाने के लिए बैण्ड संगीत एक प्रभावी साधन है" ग्रुप केन्द्र केरिपुबल, कादरपुर (गुड़गांव) में 28 जनवरी 2005 राष्ट्रीय बैण्ड पुलिस संस्थान की नीव रखते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने कहा कि बैण्ड संगीत के बिना रेजीमेन्टल फोर्से अधूरी हैं। बैण्ड केवल शान एवं शोहरत ही नहीं बड़ाता है बल्कि टुकड़ियों को भी शौर्य एवं गर्व के साथ आगे बड़ने के लिए प्रेरित करता है।





कादरपुर (गुडगाँव) में राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान की आधारशिला रखते बल के महानिदेशक श्री जे.के सिन्हा।

श्री सिन्हा ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में पुलिस बलों के अधिकारियों तथा जवानों के बीच बैण्ड बहुत ही लोकप्रिय हुआ है। अतः इस दिशा में राष्ट्रीय बैण्ड संस्थान की स्थापना बैण्ड प्रेमियों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी। इस संस्थान में बैण्ड संगीत पर शोध करने प्रशिक्षण तथा विकास की अनेक संभावनाए उपलब्ध होगी। यह संस्थान देश के सभी अर्धसैनिक बलों के बैंड कार्मिकों को प्रशिक्षण देने के लिए होगा। संस्थान में ब्रास, पाईप बैंड, बिगुलर सहित सभी तरह के बैंण्डो का प्रशिक्षण देने का प्रावधान होगा।

उत्तरी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री वी.बी. सिंह ने अपने स्वागत संबोधन में राष्ट्रीय बैण्ड संस्थान के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि यह संस्थान लगभग 20 एकड़ जमीन पर बनेगा। फिलहाल यह संस्थान अस्थाई इमारत में शुरू किया जा रहा है, लेकिन शीघ्र ही इसके लिए भव्य इमारत का निर्माण किया जाएगा जिसमें सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। यह केन्द्रीय पुलिस संगठनों के बैण्डों के विकास एवं उनयन हेतु कार्य करेगा।

बेदर्द सुनामी

कितने लोग समा जाते हैं, एक ही घर में।
कितने घर समा जाते हैं एक ही शहर में।
दिल रोया, आँसू टपक पड़े, जब ये देखा।
कितने शहर समा जाते हैं एक ही लहर में।
लाखों लोग ना पाते, बिन मांगे गुमनामी।
अगर ना बहा ले जाती, ये बेदर्द सुनामी।
ये लहरें कितनी थी प्यारी।
कभी ना लगती थी कलिहारी।
हर इंसा का दिल मोहती थी।
हर पल, हर क्षण, सुख देती थी।
क्यों रास आई इनकी बेईमानी।
छलिया और बेदर्द सुनामी।
चारों ओर तबाही है, हुई बहुत तबाही।
कहाँ गई तेरी नजर रहम की, बता इलाही।
समझ नहीं आता अब कुछ बस ये जाना हैं।
इंसा की कब तेरे आगे पार बसाई।
सब जनों यही बात, जो अब हैं मैंने जानी।
करे दुआ ईश्वर से, कभी ना आए सुनामी।
मिलकर साथ चले अब हमें दुख का ये संकट।
सोचो उनके बारे में छोड़ के सारे खुद के झंझट।
उतनी करो सहायता जितनी कर सकते हो।
उनका नहीं हम सबका है अब ये संकट।
करो सोचकर बात, ना करो बात बेइमानी।
आओ मिले, कहे मिलकर, एक बात तुफानी।
नहीं जीत सकती हमसे लहरे सुनामी।
नहीं जीत सकती हमसे लहरे सुनामी।

– उप कमा० सुरेन्द्र कुमार मेहरा
123 बटा.

के.रि.पु.बल लगे प्यारा

भारत माता केरिपुबल को लगे प्यारा, यही है
भारत देश हमारा।
के.रि.पु.बल लगे सबको प्यारा सबका ये है दुलारा,
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, यह है आपस में सब भाई,
और यह बल है सबका सहारा।
लाखों उग्रवाद आए, चाहें जान चली जायें,
देश वासियों के खातिर मर मिटना भी हमको है प्यारा,
के.रि.पु.बल लगे सबको प्यारा।
कश्मीर हो या कन्याकुमारी, चाहे हो पाँचों भाईयों की घाटी,
असम, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मिजोरम, मणीपुर की घाटी,
देश द्रोहियों का है यह बल पक्का दुश्मन,
और शांति का है यह प्रतीक,
के.रि.पु.बल लगे सबको प्यारा।
भारत की संसद पर फिदायनों ने किया हमला,
उनको केरिपुबल के जवानों ने मौत के घात उतारा,
के.रि.पु.बल लगे सबको प्यारा, यही है भारत देश हमारा।
केरिपुबल का एक ही मिशन है निराला,
शांति से रहे भारत देश हमारा।
यह रास्ता नेक है, इस तिरंगा की शान को,
और ऊँचा उठाना है हम सबको।
केरिपुबल लगे सबको प्यारा,
यह भारत देश है हमारा।
जॉबाज हमको स्वतंत्रता की डोर दे गये,

जब याद उनकी आती, जो शहीद हुए देश के खातिर,
उनके अरमानों पर कभी भी न आये आँच दुबारा,
केरिपुबल लगे सबको प्यारा,
यह भारत देश है हमारा।

– सि. सुरेन्द्र कुमार ठाकुर
37 बटा०

राज्य विधानसभा चुनाव-2005 के मतदान के लिए केरिपुबल की 160 कंपनिया तैनात

2005 में बिहार, झारखण्ड तथा हरियाणा में राज्य विधान सभा चुनाव के मतदान के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) की 160 कंपनियां तैनात की गई। बल की 87 कम्पनियां बिहार में तथा 73 कंपनियां झारखण्ड में चुनाव ड्यूटियों के लिए तैनात की गई। तैनाती से पूर्व बल कार्मिकों को चुनाव पूर्व/क्षेत्र डोमीनेशन ड्यूटियों के अलावा चुनावी ड्यूटियों की संवेदनशीलता के बारे में भी बताया गया। कार्मिकों को संबंधित राज्यों में तैनात करते समय एतहाती सुरक्षा उपाय करने को कहा गया था।

विषम परिस्थियों में यथास्थिति बनाए रखते हुए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का हमेशा से बेदाग रिकार्ड रहा है, इसीलिए केरिपुबल के कार्मिकों की चुनावों में तैनाती की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है।



जम्मू-पूंछ राजौरी संसदीय क्षेत्र में पथनतिर पोलिंग बूथ पर तैनात बल के जवान।



पूर्वोत्तर क्षेत्रों में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने हेतु तैनात केरिपुबल के जवान।

पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय में काव्य गोष्ठी व संध्या

पश्चिमी सेक्टर, मुख्यालय, केरिपुबल नवी मुंबई में 24 नवम्बर, 2004 को कौमी एकता सप्ताह आयोजन के दौरान एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता पश्चिमी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री ए.के. माथुर ने की जो स्वयं एक चित्रकार व कवि भी हैं। इस अवसर पर श्री माथुर ने अपने उद्बोधन में कौमी एकता के बारे में रोशनी डालते हुए मानवीय पहलुओं की सात्विक गहराई के बारे में बताया। श्री माथुर ने कहा कि कौमी एकता एक विशाल सागर की भांति है जिसमें मिलने वाली हर छोटी-बड़ी जलधारा का रास्ता जातिवाद एवं क्षेत्रवाद की इन संकीर्ण गलियों से होकर गुजरता हैं। हमें कौमी एकता को मजबूत करने के लिए पहले अपने मूल स्वरूप पर अर्थात परिवार, समाज व देश स्तर पर सौहार्द स्थापित करना होगा एवं अपनी विचारधारा में अमूल चूक परिवर्तन लाना होगा। कौमी एकता केरिपुबल में ज्यादा है। अतः हमारे लिए इसका अनुकरण अधिक महत्वपूर्ण है।



पश्चिगी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री एस.के. माथुर एवं अन्य लोग काव्य सध्या में भाग लेते हुए।

इस काव्य गोष्ठी में 102 बटा. आर.ए.एफ. तथा पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय के अधिकारीयों एवं जवानों ने बड़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम के आयोजन के महत्व पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए काव्य गोष्ठी का आरंभ भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी को याद करते हुए कुछ इस तरह से किया–

बचपन में वानर सेना की
थी बापू की प्यारी,
दो गुलाब की बेटी थी
पर, सचमुच थी एक चिनगारी।
देख गरीबी अपने देश की
शपथ धरा की खाई,
प्रधानमंत्री बनकर उसने,
पहली महिला कहलाई।
अपनी प्रतिभा, गुण के बल पर
नाम विदेशों में कर आई,
आजादी का अर्थ बताकर
चौतरफा खुशहाली दौडाई।
गरीबी हटाओ का नारा देकर

सच्चो महतारी कहलाइ,
देश के लिए जो खून बहाया
वो खून हमारा है,
मिटी वतन की बेदी पर
उनको नमन हमारा है।
अमर शहीद इस देवी को
शत्-शत् नमन हमारा है।

काव्य गोष्ठी में कवियों ने ओजपूर्ण, करूणा भरे देशभक्ति गीत एवं हास्य कविताओं से दर्शकों को भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर बल के कमांडेंट, श्री अनिल दुग्गल, कमांडेंट, 102 बटा., द्रु.का.बल, के कमांडेन्ट, श्री एम.वी. सिंह, उप कमां., ग्रु.के. पुणे, श्री जे.एस. गिल सहित अनेक कार्मिक उपस्थित थे।

काव्य गोष्टी में पुलिस महानिरीक्षक, श्री ए.के. माथुर, ने भी हिस्सा लिया और अपनी स्वरचित कविताओं द्वारा उपस्थित जन समुदाय का मन मोह लिया–

सब्ज बाग,
बहारों का आलम,
महकते गुल
चहकते परिंदे,
हर तरफ खुशहाली
हर तरफ चैनों अमन
हर तरफ है भाई-चारा,
यह देखकर लगता है, डर बन्द
खोलने से आंखे।



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक गुप केन्द्र पुणे, श्री सी.बी.एस. राठौर एवं श्रीमती राठौर, बाल दिवस पर मांउन्टेसरी स्कूल के बच्चों को उपहार देते हुए।

इसी क्रम में 11 दिसम्बर, 2004 को भी पश्चिमी सेक्टर नवी मुंबई में "काव्य संध्या" का आयोजन किया गया। इसमें मुंबई के जाने-माने कवियों साहित्यकारों ने सिरकत की। इस काव्य संध्या में सर्वश्री अहमदवशी, "संयोग साहित्य", त्रैमासिक पत्रिका के संपादक, मुरलीधर पाण्डेय, सुश्री मरयम गजाला, मोना हैदराबादी एवं श्रुति संवाद साहित्य से संबद्ध कविगणों ने हिस्सा लिया। पुलिस महानिरीक्षक श्री माथुर ने सभी आगंतुकों का अभिनंदन किया एवं मां सरस्वती को माल्यार्पण के पश्चात् काव्य संध्या का शुभारंभ किया। काव्य संध्या में कवियों ने अपनी कविताओं, गीत और गजलों से उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। इस अवसर पर केरिपुबल के श्री उमराव सिंह, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, श्रीमती रीता दुग्गल एवं श्री नागराज द्विवेदी, ने भी काव्य संध्या में अपनी-अपनी कवितायें सुनाई। इस कार्यक्रम का संचालन श्री श्रीमाली ने किया। इस कार्यक्रम को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने में पश्चिमी सेक्टर के अधिकारियों व कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। बल की इस पहल की सभी कवियों ने सरहना की।

बल के सामाजिक क्रियाकलाप



देश व्यापी पोलियों उनमूलन अभियान में सक्रीय रूप से भाग लेते हुए केरिपुबल की 48 बटालियन ने जे.जे. एवं स्लम कॉलोनी तथा वायु सेना स्टेशन बवाना में पल्स पोलियों कैम्प का आयोजन किया। इस दौरान आसपास के इलाकों के बच्चों को पोलियों ड्राप पिलाने के लिए उन्हें घरों से बूथ तक लाने हेतु गाड़ी की सुविधा प्रदान की गई। 48 बटालियन पूर्व में भी इस तहर के सामाजिक कार्यक्रमों में अपना सक्रिय योगदान देती रही है। इस अभियान में 404 बच्चों को पोलियों ड्राप पिलाई गई। बल की बटालियनों द्वारा ऐसे सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करने से जनता और पुलिस के बीच आपसी विश्वास को बढ़ाने में मदद मिलती है।



27 नवम्बर, 2004 को 117 बटा० केरिपुबल द्वारा वार्ड न०-33 गायखुरी, बालाघाट (मध्य प्रदेश) में पल्स पोलियों बूथ का आयोजन किया गया जिसमें 250 बच्चों को पोलियों की ड्राफ पिलाई गई। बालाघाट (मध्य प्रदेश) के क्षेत्र में किसी पुलिस फोर्स द्वारा ऐसा पहली बार पल्स पोलियों बूथ का आयोजन किया गया जिसकी स्थानीय नागरिकों द्वारा बहुत सराहना की गई। बल के ऐसे प्रयासों जनता के बीच विश्वास का माहौल बनाने में मदद मिलती है।

ग्रुप केन्द्र नागपुर में स्थापना दिवस

ग्रुप केन्द्र नागपुर की स्थापना एक जनवरी, 2005 को हुई थीं। अतः दक्षिण एवं दक्षिणपूर्वी देशों के साथ-साथ भारत के तटीय राज्य में सुनामी लहरों के कारण हजारों लोगों के हताहत होने से हुई तबाई को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि एक जनवरी, 2005 ग्रुप केन्द्र का स्थापना दिवस समारोह मनाने के बजाह कुछ अन्य कल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित किये जाय। अतः इसी क्रम में एक जनवरी, 2005 को सुबह वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें ग्रुप केन्द्र के सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों ने 927 पौधे लगाये और मन्दिर परिसर में

एकत्रित होकर मारे गये लोगों के लिए श्रद्धांजलि स्वरूप प्रार्थना की। 11:00 बजे ग्रुप केन्द्र के मनोरंजन कक्ष में सैनिक सम्मेलन का आयोजन किया गया तथा परिवार कल्याण केन्द्र में बल कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को नव वर्ष की शुभकामनाएं आदान-प्रदान की गई। जी.एम.सी.एच. एवं रेड क्राश सोशायटी, नागपुर के सहयोग से एक रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया गया जिसमें ग्रुप केन्द्र के 34 कार्मिकों ने रक्तदान किया।





व्यक्तित्व विकास में ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर की एक नई पहल

ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर विविध क्रियाकलापों द्वारा जवानों व उनके परिवार के सदस्यों के व्यक्तित्व विकाश के लिए सदैव सराहनीय प्रयास करता रहा हैं। विषय चाहे महिलाओं के योग, ध्यान व साधना का हो या फिर छोटी बालिकायों के अन्दर उमड़ रहे क्लासिकल ड्राँस के प्रति रूझान की। एक नयी दिशा देने के लिए यह ग्रुप केन्द्र सदैव सजग व तत्पर रहा है। ग्रुप केन्द्र के अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री वी.के. सागर ने भारतीय संस्कृति के मूल तत्व को इन नन्हीं बालिकाओं के बीच विकसित करने का दृहण निश्चय किया। और उन्हीं के अथक प्रयासों के फलस्वरूप नृत्यकला में दक्ष श्रीमती अपरूपा चक्रवर्ती ने छोटी बालिकाओं के कला नृत्य और संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास का जिम्मा लिया है। संगीत पर इन बाल कलाकारों के सुन्दर सामंजस्य न सिर्फ इस ग्रुप केन्द्र के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हमारी शान बढ़ाते है अपितु यह भी साबित करते हैं कि हम अपनी परंपरा को भलीभांति कैसे आगे बडा रहे हैं। और सींच रहे हैं, एक स्वस्थ पौधे को, जो शनैः-शनैः एक मजबूत पेड का रूप

लेगा और हमारी धनी परम्परा को निरन्तर आगे बढ़ाता चला जाएगा।





कावा की पहल

ग्रुप केन्द्र, कादरपुर में प्रथम वर्षा जल संचय परियोजना का उदघाटन।



'कावा' अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ग्रुप केन्द्र, कादरपुर(गुड़गाव) में वर्षा जल संचय परियोजना का उद्घाटन करती हुई।

सी.आर.पी.एफ. वाईब्ज वैल्फेयर एसोसिएशन 'कावा' ने बल कार्मिकों के परिवार उत्थान के अलावा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के आवासीय परिसरों में स्वच्छ पेय जल मुहैया कराने की पहल करते हुए केन्द्रीय भूजल बोर्ड के सहयोग से ग्रुप केन्द्र कादरपुर(गुड़गांव) में इसकी शुरूआत की है। कावा ने ग्रुप केन्द्र, कादरपुर के कैंपस में पेय जल की समस्या से निपटने के लिए क्षेत्रीय कावा समिति के सहयोग से केन्द्रीय भूजल बोर्ड, जामनगर हाउस, नई दिल्ली से सम्पर्क कर कादरपुर कैम्पस का सर्वे कराया तथा वर्षा जल संचयन प्रोजेक्ट स्थापित करने की सम्भावनाओं का पता लगाने का अनुरोध किया। केन्द्रीय भूजल बोर्ड के अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों ने इस सामाजिक कार्य के लिए सहयोग तथा सहायता के रूप में क्षेत्र का सर्वे किया और भूजल संचयन प्रोजेक्ट कैसे और कैम्पस में कहां लगाया जाए आदि की एक

प्रोजेक्ट रिपोर्ट कावा को दी। कावा ने भूजल बोर्ड की सलाह पर इस संबंध में दिए गये दिशा-निर्देश के अनुरूप ग्रुप केन्द्र कादरपुर, कैम्प में यह प्रोजेक्ट स्थापित करने की पहल की। कावा ने केरिपुबल के विभिन्न परिवार आवासीय परिसरों में, जहां का भूजल स्तर बहुत नीचा है तथा जमीन शुष्क व पथरीली ऐसे कुछ स्थानों को चिन्हित कर वहां वर्षा जल संचयन करने की योजना बनाई है। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए कावा द्वारा केन्द्रीय भूजल बोर्ड तथा केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग से भी सहायता व सहयोग लिया जा रहा है। इस योजना को देश के विभिन्न भागों में स्थित बल के कैंपसों में लागू किया जाएगा, परन्तु इससे पहले बल के कुछ कार्मिकों को प्रशिक्षित करना होगा, तत्पश्चात यह योजना लागू की जाएगी। इस योजना में ऐसे उपाय किए जाते हैं कि बरसाती पानी कैंपस से बाहर न जाने पाए और पानी वहीं संचित रहे, इससे वहां की जमीन का जल स्तर नहीं गिरता है और जमीन में नमी रहती है। जमीन में नमी रहने से क्षेत्र हरा भरा रहता है जो पर्यावरण की दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए अनुकूल है। वर्षा जल संचयन द्वारा हम काफी हद तक पेय जल की समस्या से निपट सकते हैं, क्योंकि इससे नलकूपों, कुओं तथा तालाबों में पानी का स्तर नहीं गिरता और शुष्क मौसम में भी जल का स्तर लगभग यथावत बना रहता है।

कावा ने अपनी इस महत्वाकांक्षी योजना को सर्वप्रथम लागू करने के लिए ग्रुप केन्द्र कादरपुर गुड़गावं को चुना है। ग्रुप केन्द्र कादरपुर (गुड़गांव) सुहाना रोड पर लगभग गुड़गांव से 10 कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यह क्षेत्र चारों तरफ से अरावली पहाड़ियों से घिरा हुआ एक बिहड़ इलाका है। इस क्षेत्र की जमीन पथरीली व शुष्क है। इस क्षेत्र का जल स्तर बहुत नीचा है क्योंकि पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण वर्षा का जल चारों तरफ बह कर व्यर्थ चला जाता है। इस क्षेत्र में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा प्रशिक्षण अकादमी, ग्रुप केन्द्र, बैण्ड संस्थान तथा बल के अन्य कार्यालय स्थापित करने की योजना है। बहरहाल ग्रुप केन्द्र तथा प्रशिक्षण अकादमी के लिए बैरिक तथा आवासीय परिसर का निर्माण कार्य प्रगती पर है। इन संस्थानों के इस क्षेत्र में स्थापित होने से पहले पेय जल समस्या से निपटने के लिए कावा ने अपनी भावी योजनाओं में से वर्षा जल संचयन प्रोजेक्ट को इस क्षेत्र में स्थापित करने की पहल की है। इस कार्य के लिए कावा ने केन्द्रीय भूजल बोर्ड के वैज्ञानिकों से इस क्षेत्र का सर्वेक्षण कराकर योजना को लागू करने की संभावनाओं का पता लगवाया। तत्पश्चात भूजल वैज्ञानिकों की रिपोर्ट के आधार पर इसे इस क्षेत्र में कार्यान्वित करने का शुभारंभ किया गया है।

इस भावी परियोजना का उद्घाटन ग्रुप केन्द्र, कादरपुर में कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने 28 जनवरी,2005 को करते हुए कहा कि वर्षा जल संचयन करने से केवल भूमि का जलस्तर ही नहीं बड़ता बल्कि शुष्कता को कम करने व नमी को बड़ाने में सहायता मिलती है। केन्द्रीय भूजल बोर्ड तथा केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के प्राधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए श्रीमती सिन्हा ने कहा कि कावा ने इनके सहयोग से ही इस योजना को वास्तविक रूप में साकार किया जा सका है। श्रीमती सिन्हा ने आगे कहा कि वर्षा जल संचयन योजना को केरिपुबल के अन्य आवासीय

परिसरों में भी लागू किया जाएगा जहां इसकी सख्त जरूरत है। इस संबंध में कावा ने कुछ क्षेत्रों का सर्वे कराना भी आरंभ कर दिया है। और ऐसी संभावनाओं का पता लगाया जा रहा कि इस योजना को किस प्रकार से पहले कहां-कहां लागू किया जाए। इस कार्य के लिए बल के कुछ कार्मिकों को प्रशिक्षित भी किया जाएगा जो इसे लागू करने में मदद करेंगें। श्रीमती सिन्हा ने आगे कहा कि विश्व भारी पेय जल संकट से गुजर रहा है और भारत में यह समस्या और भी अधिक है क्योंकि हमारे देश की भौगौलिक स्थिती ऐसी है कि कहीं वर्षा कम तो कहीं ज्यादा होती है। अतः कावा ने बल के ऐसे क्षेत्रों को चिन्हित किया है जहां पानी की भारी कमी है।



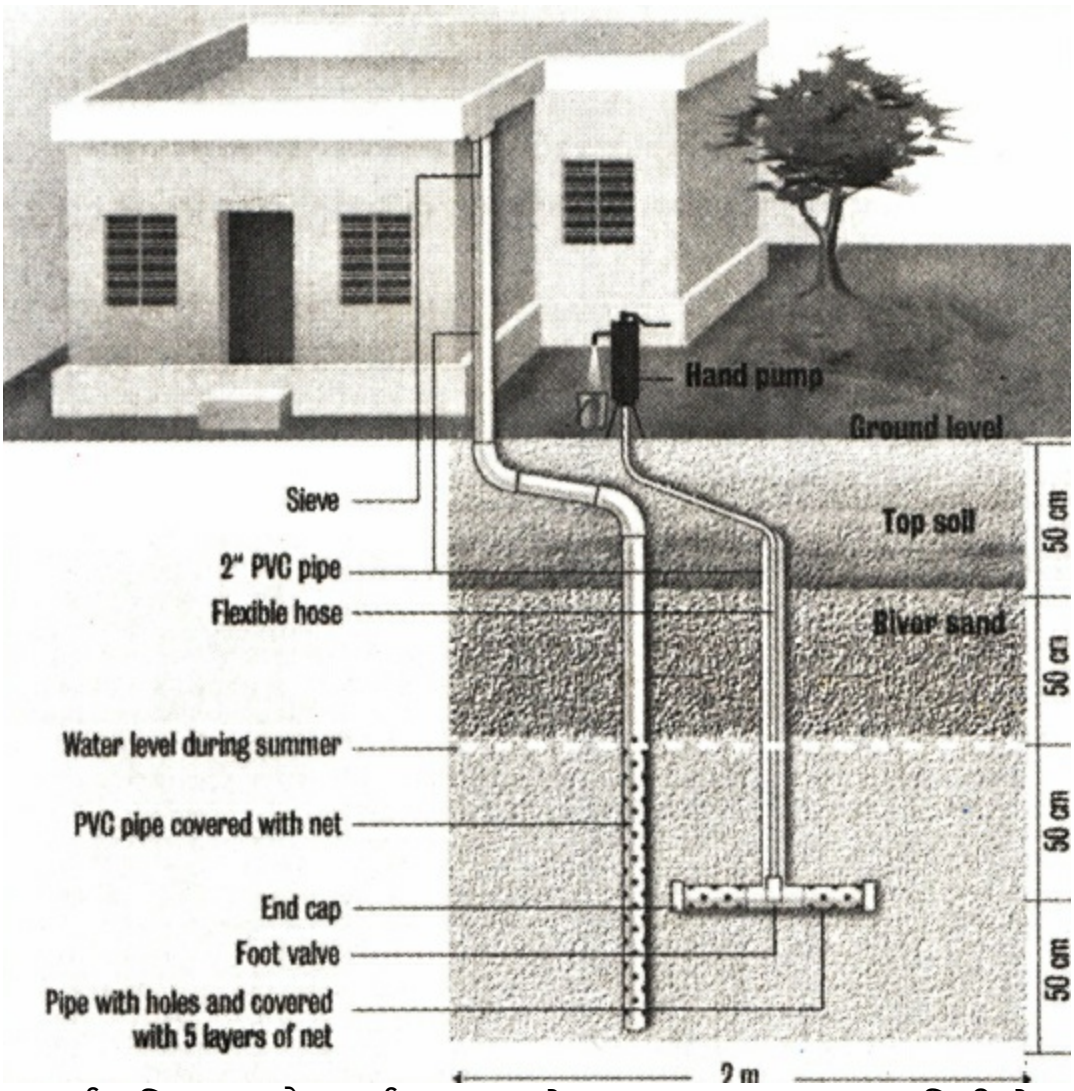
केन्द्रीय भूजल बोर्ड के अधिकारी कादरपुर गुड़गांव) में वर्षा जल संचयन प्रोजेक्ट के उद्घाटन के अवसर पर इसके बारे में विस्तार से बताते हुए।

इस अवसर पर क्षेत्रीय कावा समिति की अध्यक्षा श्रीमती कुलदीप कौर ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि कादरपुर कैम्पस शुष्क वातावरण क्षेत्र में स्थित है जहां का जलस्तर बहुत नीचा है। अतः इसके लिए पर्याप्त भूजल आपूर्ति करने हेतु भूजल प्रबंधन योजना बनाना बहुत ही जरूरी है। पानी की समस्या किसी स्थान या देश विशेष की न होकर पूरे विश्व की है। पूरे विश्व में पानी की डिमांड छह गुणा बढ़ी है। इसके लिए जरूरी है कि बरसाती पानी का सदुपयोग हो सके। अतः कावा ने इस कार्य को अपने हाथ में लेकर एक पूनीत कार्य किया है।

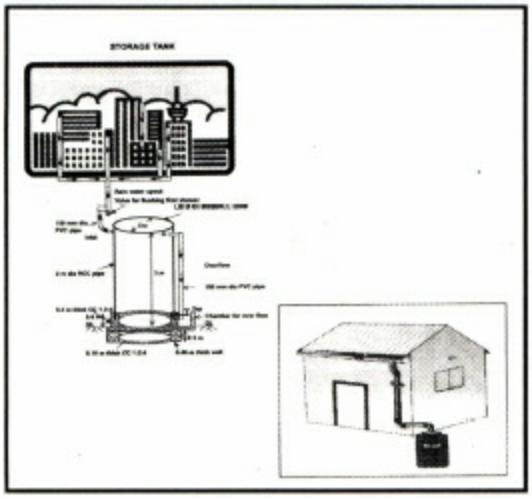


कादरपुर (गुडगांव) कैंपस में वर्षा जल संचय परियोजना के उद्घाटन के अवसर पर क्षेत्रीय कावा समिति ग्रुप केन्द्र, गुडगांव की कावा अध्यक्षा श्रीमती कुलदीप कौर केन्द्रीय कावा समिति की अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा को गुलदस्ता भेंट करते हुए।

जल संचय क्या है? कतिपया इसके तकनीकी पहलू।



भूजल सर्वत्र विद्यमान है। प्रर्याप्त मात्रा में स्वच्छ जल मुख्यतया मिट्टी के कणों, चट्टानों तथा टूटी हुई चट्टानों के बीच में हुई खाली जगह में मिलता है। स्वच्छ भू-जल का उपयोग मुख्य रूप से हम अपने घरेलु आवश्कताओं तथा अन्य कार्यों के लिए करते हैं। जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण तथा वेस्टेज के कारण अभी पेय जल की भारी कमी होती चली जा रही है जिसके परिणाम स्वरूप कुंओं, तालाबों, नलकूपों आदि में जल का स्तर निरंतर कम होता जा रहा है। अतः अब यह आवश्यक हो गया है कि हम जल तथा भूजल के प्राकृतिक स्रोतों को बचाकर सुरक्षित रखे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार बरसात से प्राप्त 364.53 मिलियन गेलन बरसाती जल हर वर्ष व्यर्थ में चला जाता है जिसे विभिन्न तरीकों द्वारा एकत्रित करके उपयोग लाया जा सकता है। इसे एकत्रित करने की कई विधियां तथा तरीके हैं। वर्षा जल संचयन द्वारा बरसाती पानी को एकत्रित करके इसे उपयोग में लाना बहुत ही आसान व किफायती है। आखिर वर्षा जल संचयन है क्या ? आइए हम इस बारे में कुछ जाने :–



बरसात से प्राप्त होने वाले जल को बहने से रोककर एक जगह एकत्रित कर उसके सही उपयोग को ही वर्षा जल संचयन कहते हैं। सबसे अच्छा विकल्प यहीं है कि बरसाती पानी को सग्रह किया जाए ताकि जरूरत के समय इसका उपयोग किया जा सके। वर्षा जल संचयन एक ऐसा प्रभावशाली साधन है जिसके जरिए हमें अच्छी गुणवत्ता वाला जल उपयोग करने के लिए आसानी से सुलभ है। इसके व्यर्थ होने से कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं। अतः वर्षा से प्राप्त जल को एकत्रित कर उसके बहतरीन उपयोग को ही वर्षा जल संचय कहते है।

वर्षा जल संचय क्यों आवश्यक है ?

• क्योंकि अन्य जल आपूर्ति के स्त्रोत हमारी आवश्यकतानुसार जल पूर्ति करने में अपर्याप्त है। इसलिए हम खासतौर पर भू-जल पर निर्भर है, जो एक स्थिर श्रोत है।

• बढ़ते शहरीकरण, वर्षा जल के मिट्टी के साथ बह जाने के कारण इसकी दिन-प्रतिदिन कमी होती जा रही है और भू-जल रिचार्ज नहीं हो पा रहा है।

• भू-जल श्रोतों के उचित प्रकार से उपयोग नहीं करने के कारण देश के अधिकांश भागों में जल का स्तर कम हो गया है।

• भूजल की उपलब्धता को बरकरार रखने के लिए वर्षा जल संचय आवश्यक है।

• जल की शुद्ध गुणवत्ता को सुधारने के लिए वर्षा जल संचय आवश्यक है।

• कुंओं तथा नलकुपों में जल स्तर बढ़ाने के लिए वर्षा जल संचय आवश्यक है।

• वर्षा जल संचय से पावर(ऊर्जा) की भी खपत कम होती है।

• वर्षा जल संचय भूमि की नमी बरकरार रखने में सहायक है।

• इससे क्षेत्र को हरा-भरा तथा वनस्पति युक्त बनाया जा सकता है।

कृत्रिम भूजल रीचार्ज

भूजल को कृत्रिम रूप से रिचार्ज करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें भूजल को

प्राकृतिक रूप से एकत्रित करके इसके स्तर को यथास्थिति तक बड़ा कर आपूर्ति करना है। मानव कृत योजनाओं या सुविधाओं द्वारा जल स्तर को बड़ाकर एक समुचित स्तर तक पहुंचाना ही कृत्रिम पुनभण्डारन व्यवस्था है।

जल संचय परियोजना लगाने के लिए आप अपने स्तर पर क्या कर सकते हैं?

भूजल जल आपूर्ति का एक आम स्त्रोत है। अतः इसके प्रबन्धन तथा संरक्षण की हम सबकी जिम्मेदारी है। बड़ते दुरूपयोग के कारण इसकी उपलब्धी के स्त्रोत कम होते जा रहे हैं इसीलिए जरूरत है भूजल रीचार्ज तथा संचय के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाने की। इस कार्य में कई सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाएं भी प्रयासरत हैं ताकि ऐसी व्यवस्था की जा सके जिससे कि पानी का भण्डारण पर्याप्त रूप से किया जा सके। यदि आप वर्षा जल संचय प्रोजेक्ट अपने कैम्पस में लगाना चाहते हैं तो निम्न प्राधिकारियों से संपर्क करें तथा निम्न बातों का ध्यान रखें :–

• सर्वप्रथम कैम्पस के जल स्तर के बारे में पता लगाएं।

• यदि जल स्तर काफी नीचा है और पर्याप्त पानी की सप्लाई सुलभ नहीं हो रही है तो वर्षा जल संचय परियोजना के बारे में विचार करें।

• वर्षा जल संचय परियोजना लगाने के लिए केन्द्रीय भूजल बोर्ड के अधिकारियों से सम्पर्क करें तथा क्षेत्र का सर्वे करायें।

• क्षेत्रीय भूजल बोर्ड या इस परियोजना पर कार्य कर रही सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं से संपर्क कर प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कराएं।

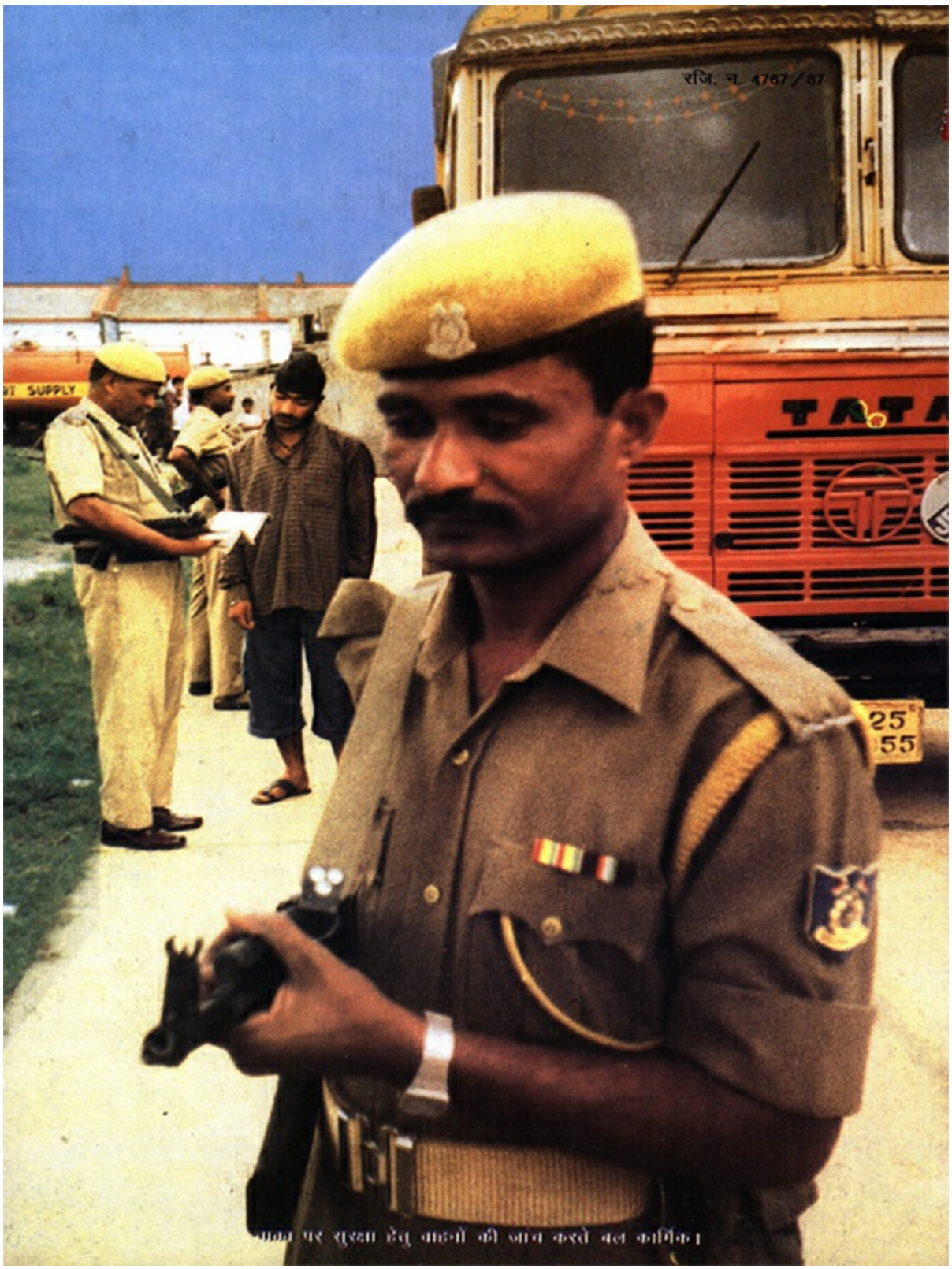
• स्थानीय केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों से संपर्क कर परियोजना स्थापित करने की जगह चिन्हित करायें।

• वर्षा जल संचय परियोजना लगाने के लिए क्षेत्र की बनावट तथा आकार का जरूर ध्यान रखें।

• विस्तृत जानकारी के लिए केन्द्रीय भूजल बोर्ड स्टेट यूनिट कार्यालय, जामनगर हाउस, मानसिंह रोड, नई दिल्ली-110011 फोन नं 011-23843355/23073093 पर संपर्क करें।



'कावा' अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा के *88(*महिला) बटा० केरिपुबल विजिट के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती एक महिला कर्मी।


रजि. नं. 4767/87
TATA
25
55
मार्ग पर सुरक्षा हेतु वाहनों की जांच करते बल कार्मिक।

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

31 मार्च, 2005



6वीं अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप ट्राफी केरिपुबल की बैंड टीम को प्रदान करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल ।



16 से *22* फरवरी, *2005* तक जालंधर में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस टूर्नामैंट में भाग लेने वाली के.रि.पु. बल की लॉन टेनिस टीम के सदस्यों के बीच बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।



संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवों में तैनाती के लिए रवाना होने वाली आरएएफ टुकड़ी के साथ बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खण्ड–18 अंक–2
31 मार्च, 2005
10 चैत्र, शक, 1926–27

मुख्य संपादक
अजय भाटी

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
जन सम्पर्क अनुभाग

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली–110072



<u>सम्पादकीय सलाहकार मण्डल</u>

<u>अध्यक्ष</u>

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

<u>सदस्य</u>

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक)
एस.एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
वी.डी. टोकस, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
आर.के. गौड, उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

अंदर के पृष्ठों पर



बैण्ड सैन्य टुकड़ियों को जोश एवं गर्व के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।


महिलाओं द्वारा पुरूष प्रदान व्यवसायों का चुनना उनकी दृहंण इच्छा शक्ति का प्रतिक है।



द्रुत कार्य बल द्वारा दंगों से निपटने का प्रशिक्षण



राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान का उद्घाटन



159 बटालियन द्वारा नेत्र शिविर का आयोजन



बल के सामाजिक कार्यक्रम



एड्स



कावा समाचार

अन्य

नाम में क्या रखा है

बुरा न माने.....ज्ञानवर्धन है

कविताएं

क्रोध

महिला सशक्तिकरण कावा का रचनात्मक योगदान





6वीं अखिल भारतीय पुलिस बैण्ड प्रतियोगिता का उद्घाटन करते दिल्ली के उप राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी।

बैण्ड बादन एक कलॉ है। वाद्य्य यंत्रो का संबंध मानव सभ्यता से आदि काल से ही रहा है। वाद्य यंत्रों का प्रयोग ईश्वर की उपासना के साथ–साथ मनोरंजन के लिए भी होता रहा है। युद्ध के दौरान सैनिकों का मनोबल बढ़ाने और उनमें जोश भरने के लिए ढ़ोल, नगाड़े, दुर्दूभियां, रण भेरी आदि कई तरह के वाद्य यंत्र बजाए जाते थे, विश्व का पहला पुलिस बैण्ड आस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में 6 जून, 1894 को गठित किया गया था। इसके लिए जन सहयोग से धन एकत्रित किया गया। बैण्ड की लागत मात्र 108 पौंड थी। बैण्ड का उद्देश्य पुलिस तथा शहर के अनुशासित लोगों के मन में जोश और उत्साह की भावना का संचार कर शहर के गणमान्य नागरिकों को पुलिस के नजदीक लाना था।

यह एक मात्र संयोग ही है कि सिडनी के विलामार पार्क में भी फरवरी महीने में ही सेंट्रल पुलिस बैरक्स में बैण्ड वादन की पहली स्वर लहरी गूंजी थी। इसे संयोग ही कहा जायेगा कि इसके एक वर्ष बाद पुनः फरवरी महीने में ही हाई डल पार्क में लगभग 3 हजार लोगों की मौजूदगी में 28 सदस्यों के दल ने पहले सार्वजनिक बैण्ड वादन का प्रदर्शन किया। बैण्ड फोर्स का महत्वपूर्ण अंग है। आधुनिक रूप में रेजिमेंटल बैण्ड ब्रिटिश राज की देन है। पहली बार बैंड इंगलैंड में “किंग्स” बैण्ड के

रूप में 24 वायलन वादकों द्वारा चार्ल्स द्वितीय (1660–85) के कोर्ट में बजाया गया। वादकों का यह ग्रुप मशहूर वाइलेन वादक ग्रुप लूईस XIV की तर्ज पर बनाया गया था। सेना में 18वीं सदी के अंत में पहली बार सैन्य बैण्ड को रेजीमेंटल बैंड के रूप में मान्यता दी गई, यद्यपि वर्तमान स्वरूप में सैन्य बैण्ड का उपयोग केवल 19वीं सदी में, परेड़ समारोह में किया गया। भारतीय बटालियनों ने ब्रास बैण्ड बजाने का आरंभ 1870 दशक में किया। भारतीय पुलिस में बैण्ड प्रयोग की शुरूआत पाइप बैण्ड से की गई।

बैंड संगीत फोर्स के क्रोध को शांत करने तथा मनोबल को बढ़ाने का प्रभावशाली साधन है। बिना बैण्ड के रेजीमेंटल फोर्स अधूरी है, क्योंकि यह अमोद प्रभोद का मात्र साधन ही नहीं बल्कि टुकड़ियों को शौर्य एवं गर्व के साथ आगे बढ़ाने को प्रेरित करता है।

दो विश्व युद्धों से बैण्ड के महत्व का पता चलता है। युद्ध के दौरान सैनिक तर्ज पर रचे गये कई गाने विभिन्न आन्दोलनों का जरिया बने। दोनों विश्व युद्धों के दौरान सैनिकों द्वारा गाए गये कई प्रसिद्ध गाने इसका उदाहरण हैं। अफ्रिका में 18वीं आर्मी ने रोमेल से अफ्रीका कारेपस नामक लिये गये गाने लिल्ली मारलेनि के शब्द आज भी बहुत ही भावनात्मक तथा दिल को छू लेने वाले हैं। जब वर्मा से भारतीय टुकडियाँ वापिस हो रही थी तो **चल चल रे नौ जवानों नामक** गाना सैनिकों के आते समय एक भारतीय फिल्म का ही गाया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध में भी बैण्ड ने युद्ध मोर्चा से पीछे रहते हुए भी विशिष्ठता हासिल की। बैण्ड युद्ध के दौरान घायल, जख्मी तथा हतोसाहित सैनिकों के जीने का मकसद प्रदान करता है।

बहुत पहले से ही भारत में पुलिस बैण्ड की लय बैण्ड वादकों द्वारा स्वयं ही तैयार की गई थी। लोक संगीत के रूप में अब एक नई पहल आरंभ हुई है, जिसकी सफलता, सुगमता व मूलता के कारण इसकी मांग तथा आकर्षिता बढ़ती जा रही है। सशस्त्र बलों में बैण्ड वादन की व्यवस्थित शुरूआत ब्रिटिश काल के दौरान हुई थी।

बैण्ड वादन से मन को सुकून देने वाली अनुभूति होती है। जनता भी इन बैण्ड्स की धुनों को पसंद करती हैं। राष्ट्रीय त्यौहारों के अवसर पर सार्वजनिक स्थानों पर आम जनता के लिए बैण्ड वादन के आयोजन कुछ राज्यो में अकसर होते हैं। ऐसे आयोजनों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे पुलिस को जनता के नजदीक आने का मौका मिलता है। पुलिस बैण्ड के अच्छे स्तर एवं कम रेट के कारण इन बैण्डों की जनता में भी मांग बढ़ती जा रही है। लोग शादी तथा अन्य अवसरों पर पुलिस बैड को ज्यादा पसन्द करने लगे हैं। इससे आय के स्त्रोत बढ़ते है। बैण्ड के रख–रखाव तथा नये उपकरण खरीदन की सुविधा भी मिल जाती है।



बैण्ड प्रतियोगिता के दौरान अपनी कला का प्रदर्शन करते बैंण्ड कर्मी।



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल 6वीं अखिल भारतीय पुलिस बैण्ड प्रतियोगिता में पाइप बैण्ड में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली के.रि.पु. बल की पाइप टीम के बैण्ड मास्टर को ट्राफी प्रदान करते हुए।

अखिल भारतीय पुलिस स्पोर्ट कन्ट्रोल बोर्ड की अक्टूबर 1995 जलांधर में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि पुलिस बैण्ड को उत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता आयोजित की जाए। पहली बैण्ड प्रतियोगिता 1999 में लखनऊ में 43वीं अखिल भारतीय ड्यूटी प्रतिस्पर्धाओं के साथ उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा आयोजित की गई जिसमें पाँच जोन की टीमों ने भाग लिया। के.रि.पु.बल की ब्रास बैण्ड व पाईप बैण्ड टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और विजेयता ट्राफी जीती। मध्य प्रदेश पुलिस ने विगुल प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

के.रि.पु. बल के तत्वाधान में दूसरी बैण्ड प्रतियोगिता नवम्बर 2000 में नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस तथा के.रि.पु. बल की ब्रास तथा पाइप बैण्ड टीमों ने संयुक्त रूप से प्रथम स्थान प्राप्त किया। मध्य प्रदेश पुलिस की बिगुल वादन टीम दूसरे वर्ष भी प्रथम पर रही। के.रि.पु.बल को तीन प्रतिस्धाओं में अधिकतम अंक प्राप्त करने पर चैम्पियनशिप ट्राफी प्रदान की गई।

के.रि.पु. बल को पुनः तीसरी अखिल भारतीय बैण्ड़ प्रतियोगिता, 2002 में ग्रुप केन्द्र पिन्जौर में 13 से 16 मार्च, 2002 तक आयोजित की गई जिसमें के.रि.पु. बल की ब्रास तथा पाइप बैण्ड टीमों ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

अखिल भारतीय चौथी तथा पांचवी बैण्ड प्रतियोगता का आयोजन केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल तथा जम्मू–कश्मीर पुलिस द्वारा क्रमशः 2003 तथा 2004 में

किया गया।

6वीं अखिल भारतीय बैण्ड प्रतियोगिता के.रि.पु. बल के तत्वाधान में आयोजित की गई। प्रतियोगिता का शुभारंभ दिल्ली के राज्यपाल महामहिम श्री बी.एल. जोशी ने विभिन्न संगीत ध्वनों के बीच 22 फरवरी, 2005 को मेजर ध्यान चन्द नेशनल स्टेडियम नई दिल्ली में किया। इस अवसर पर श्री जोशी ने कहा कि बैण्ड सुरक्षा बलों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। प्राचीनकाल में भी संगीत यंत्र सैन्य टुकड़ियों का साहस तथा मनोबल बड़ाने के लिए बजाए जाते थे। युद्ध में थके–हारे सैनिक जब ढोल–नगाड़े तथा ड्रम बजने की आवाज सुनते तो उनका धैर्य और जोश बढ़ता तथा अपने आपको फ्रैस महसूस करते। श्री जोशी ने आगे कहा कि हालाकि रेजीमेन्टल बैण्ड की वर्तमान स्थिति ब्रिटिश राज्य की देन है तथा अब बैण्ड प्रत्येक पुलिस संगठन का एक अभिन्न अंग बन गया है। अतः आज पुलिस को जनता का विश्वास जीतने की बड़ी आवश्यकता है। जनता के सहयोग के बिना पुलिस अपना कार्य अच्छी तरह नहीं कर सकती है। पुलिस का कार्य जितना पारदर्शी और निष्पक्ष होगा उतना ही जनता में पुलिस के प्रति विश्वास बढ़ेगा। पुलिस को भी जनता का पूरा सहयोग मिलेगा। अंततः इससे पुलिस की छवि में भी सुधार होगा।

आसूचना ब्यूरो(आई०बी०) के निदेशक श्री ई.एस.एल. नरसिम्हन ने अपने सम्मानीय सम्बोधन में कहा कि बिना बैण्ड के रेजीमेन्टल फोर्से अधूरी हैं। बैण्ड केवल शान शौकत ही नहीं बड़ता बल्कि टुकड़ियों को शौर्य एवं गर्व के साथ आगे बड़ने को प्रेरित करता है।

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने अपने स्वागत सम्बोधन में कहा कि बैण्ड सुरक्षा बलों के क्रोध को शांत करने तथा मनोबल को बढ़ाने का एक प्रभावशाली साधन है। इससे पहले उप राज्यपाल श्री जोशी ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाली बैण्ड टीमों की भव्य परेड की सलामी ली। 25 फरवरी, 2005 को मेजर ध्यान चन्द नेशनल स्टेडियम, नई दिल्ली में ही इस प्रतियोगिता का समापन करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल ने कहा कि बैण्ड हमेशा से ही सुरक्षा बलों का एक अभिन्न अंग रहा है तथा वर्दीधारी जवानों का मनोबल बढ़ाने में इसने सदैव अहम भूमिका निभाई है। श्री पाटिल ने कहा कि "मुझे विश्वास है कि बैण्ड प्रतियोगिता केवल विचारों को बेहतरीन तरीके से प्रकट करने तथा सैन्य संगीतों में निपुणता प्राप्त करने का मंच ही नहीं प्रदान करता बल्कि लोगों के लिए भारत की मधुर व सुरीली बैण्ड धुनें बजाकर उन्हें आनंदित करने का अवसर भी प्रदान करता है।



ब्रास बैण्ड में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस की ब्रास बैण्ड की टीम अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए।

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने कहा कि बैण्ड प्रतिस्पर्धा विभिन्न राज्य तथा केन्द्रीय पुलिस बलों को अपने संगीत कौशलता को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान कर उनमे नेतृत्व की भावना पैदा करता है।

आसूचना ब्यूरो के निदेशक व अखिल भारतीय पुलिस स्पोर्टस कन्ट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष श्री ई. लक्ष्मी नरसिम्हन द्वारा प्रतियोगिता के समापन की घोषणा की गई। ऑर्गानाईजिंग सचिव श्री अजय कश्यप ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

मेजर ध्यान चंद नेश्नल स्टेडियम, नई दिल्ली में 25 फरवरी, 2005 को सम्पन्न 6वें अखिल भारतीय पुलिस बैण्ड प्रतियोगिता में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने ओवरआल चैंपियनशिप जीती। पाइप बैण्ड में के.रि.पु. बल ने प्रथम स्थान का पुरस्कार जीता जबकि भारत तिब्बत सीमा पुलिस तथा असम राईफल ने क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान के पुरस्कार जीते। बिगुलर काल में झारखण्ड पुलिस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि के.रि.पु. बल ने दूसरा स्थान प्राप्त किया तथा सीमा सुरक्षा बल इस वर्ग में तीसरे स्थान पर रहा। ब्रास बैण्ड में भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस प्रथम स्थान पर रही जबकि दिल्ली व सीमा सुरक्षा बल की टीमें क्रमशः दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रही।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल ने ट्राफियां व पुरस्कार वितरित किये।

के.रि.पु. बल द्वारा आयोजित इस चार दिवसीय प्रतियोगिता में ब्रास बैण्ड की 20, पाईप बैण्ड की 13 तथा बिगुल वादकों की 17 टीमें शामिल हुई। इस प्रतियोगिता में विभिन्न राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों की पुलिस व केन्द्रीय पुलिस संगठनों के लगभग 1200 बैण्ड कर्मियों ने भाग लिया।

व्यंग

नाम में क्या रखा है

– अनिल गुप्ता, सहा०कमा०
122 बटा० के.रि.पु.बल

मैं दफ्तर में बैठा कुछ काम कर रहा था। एक जवान अंदर आया, बांका सजीला, नया–नया ट्रेनिग करके आया था, उसने छाती तक घुटना उठाकर पैर जमीन पर पटका और जोर से सेल्यूट ठोंककर खड़ा हो गया। लकड़ी की छत के साथ मेरा वजूद भी हिल गया, इससे पहले कि मैं संभलू वह शुरू हो गया।

श्री मान जीरो–जीरो बावन ग्यारह सत्ततर सिपाही (जी.डी.) डी. भाष्कर की अर्ज इस प्रकार है।"

मैनें उसकी राजधानी एक्सप्रेस को ब्रेक लगाया, "क्या नाम बताया?"

"श्रीमान जीरो जीरो बावन ग्यारह..."

"अरे नाम बताओ"

"श्रीमान जीरो जीरो..."

"ओफ्फो, मैं आप का नाम पूछ रहा हूँ..."

उसके चेहरे पर असमंजस के भाव थे, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उससे गडबड क्या हुयी है? "वहीं बता रहा हूँ सर जीरो जीरो..."

"अरे मैं तो नाम पूछ रहा हूँ जो तुम्हारे माता–पिता ने रखा है"

उसने बड़े संकोच से, बड़ी हैरत ___ से मुझे देखते हुए बताया, "श्रीमान सिपाही (जी.डी.) डी. भाष्कर।"

मैंने चैन की सांस ली।

वह तो अपनी बात कहकर चला गया, मगर मैं बड़ी देर तक सोचता रहा। फोर्स में

नंबर के बिना आदमी की पहचान अधूरी है, नाम के साथ नंबर ऐसे चिपक जाता है जैसे शरीर के साथ चर्बी, लाख वर्जिश करके भी हटती ही नहीं।

कंपनी में एक हवलदार रिटायर जा रहा था। जवानों ने बिदाई समारोह का आयोजन किया था।

"मैंने पूछा आपका नाम क्या है?"

वह एक दम खड़े होकर शुरू हो गया, "श्रीमान बयासी बारह इक्यानवे जीरो चौरासी हवलदार शिवशंकर सिंह"।

मैंने उससे पूछा "जनाब बयासी बारह इक्यानवें जीरो चौरासी हवलदार शिव शंकर सिंह जी, जानते है आज के बाद आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि क्या होगी?"

वो मेरा मुँह देखने लगा, मैंने उसे समझाया, "जनाब आज के बाद आपके नाम के साथ जुड़ा बयासी बारह इक्यानवे जीरो, उसी तरह झड जाएगा जिस तरह फोर्स में शेप लागू होने के बाद सभी के शरीर से फालतू चर्बी झड़ रही है।"

उसका चेहरा एक तरह उतर गया जैसे कि मैंने उसके तमगे उतार लिए हों। बोला "साइब नम्बर में तो हमारी जान है, इस नंबर के कारण वर्दी है और वर्दी के कारण ताकत और शान है जिस के बूते पर हम सारे शहर में हाथ में ए.के.–47 लिए घूमते है, अमन चैन कायम करते है, जब यहीं नंबर छिन जाएगा और गाँव में कहीं कुछ भी दूरदराज कोई बारदात होने पर भी हमारी लाइसेंसी बंदूक की जाँच हो जाएगी।"

एक लड़का बोला, "सर इसने तो रिटायरमेंट के बाद भी घर के बाहर लगाने के लिए एक तख्ती बनवा ली है, रिटायर हवलदार शिवशंकर सिंह।"

मैंने मन ही मन ही कहा "शुक्र है उस पर बयासी बारह इक्यानवे जीरो चौरासी नहीं लिखवाया।"

कंपनी में दो हजार के भर्ती के कई लड़कें हैं। जब भी किसी को बुलाओ फौरन तपाक से सलाम ठोंककर शुरू हो जाते हैं, "श्रीमान जीरो जीरो पंद्रह इक्कीस छप्पन सात..."

"अरे मैंने आपको नहीं पवन को बुलाया था,"

"कौन से पवन को सर जीरो पंद्रह इक्कीस बासठ तरेसठ वाले या जीरो जीरो पंद्रह इक्कीस..."

"बस बस। जो अभी संतरी ड्यूटी कर रहा है उसे बुलाओ।"

"सर वो तो जीरो तीन वाला है।"

"मुझे लगता है ये जीरो जीरो, जीरो एक, जीरो दो और जीरो तीन सुनते–सुनते मेरा सिर चकरा जाएगा। हजार चौरासी की माँ की तरह लोग मुझे भी जीरो–जीरो पंद्रह इक्कीस वाला कंपनी कमाण्डर कहने लगेगे।

कभी–कभी तो मुझे लगने लगता है कि कहीं ऐसा न हो, कोई मेरा नाम पूछे और मैं शुरू हो आऊं, "श्रीमान जीरो जीरो पंद्रह इक्कीस अनिल गुप्ता।"

मैंने एक बार यों ही एक पुराने जवान से पूछ ही लिया, “मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, तुम सैंकड़ो बार मेरे सामने आये हो, फिर भी जब भी सामने पड़ते हो तपाक से शुरू हो जाते हो– “सत्तासी पंद्रह चालिस.... क्यों?”

जवान गर्व से बोला, “जनाब प्रवीण नाम तो किसी का भी हो सकता है, मगर ये नंबर मेरा है, ये किसी और का नहीं हो सकता।”

“तुमने सैकडों हजारों बार अपना ये नंबर दोहराया होगा, लेकिन क्या आज तक कभी किसी ने तुम्हे नंबर से बुलाया है।”

“तो क्या हुआ साहब? नाम तो हमें बताता है कि हम हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, या किस जाति वर्ग के है, मगर हमारा नंबर हमें बताता है कि हम किस देश, किस फौज के हैं। इसलिए हम पूरे गर्व के साथ बताते हैं कि हम हैं सत्तासी पंद्रह चालीस...”

उसकी बात में दम था। मुझे नीरज की कुछ पंक्तियां याद आ गयी।

हम नहीं हिन्दू नहीं मुसलमान,
हम नहीं शेखो ब्राह्मण।
हम नहीं काजी पुरोहित,
हम नहीं रामू रहिमन ।
भेद से आगे खडे हम,
फर्ज से अनजान हैं हम।
प्यार हे मजहब हमारा,
और बस इन्सान हैं हम।

अगर नीरज कभी हमारी किसी कंपनी में आ जाते तो शायद उन्हें ये पंक्तियां लिखने की जरूरत ही नहीं पडती, वो अपने आप समझ जाते कि यहाँ न कोई राम है न रहीम है, न शेख है न बिरहमन है, यहाँ मंदिर भी है, मस्जिद भी है और गुरूद्वारा भी है। कुरान की बगल में गीता और गीता की बगल में बाईबल और गुरू ग्रंथसाहिब विराजते हैं। यहाँ ईद पर भी बड़ा खाना होता है, गुरू पूरव पर भी, और होली दिवाली पर भी। और हर जवान बडी शिद्दत से उसमें शरीक भी होता है, क्योंकि वह उसमें महेंद्र, सतीश, माइकल, जसबीर, असलम, शेरपा या हजारे की तरह शरीक नहीं होता, वह उसमे शरीक होता हैं, जीरो जीरो पंद्रह इक्कीस...”, या जीरो जीरो पच्चीस बहत्तर.... या सत्तासी पंद्रह चालीस... वगैरा वगैरा एक लम्बी श्रृंखला की एक छोटी कडी की तरह। सच नाम में क्या रखा है, असल मजा तो बेनाम होकर जीने में है।

अनमोल वचन

1. क्रोध मास्तेष्क के दीप को बुझा देता है, अतः संकट की घड़ी में हमें सदैव शांत व स्थिर चित रहना चाहिए।
2. ऐसे कटुवचनों का प्रयोग करने से बचे जिससे दूसरों के दिल को ठेस पहुँचे।
3. बीती को भूल जाओं, आगे की सोचो।
4. केवल एक ही धर्म है वह है देश प्रेम।

महिला दिवस पर विशेष

महिलाओं द्वारा पुरूष प्रधान व्यावसायों का चुनना उनकी दृहंण इच्छा शक्ति का प्रतीक है

– निरीक्षक (सम्पादक) रनबीर सिंह
महानिदेशालय, के.रि.पु. बल

दुनिया भर की आधी आबादी के उत्थान और हालात को तौलने का दिन है ‘अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस’। महिलाओं ने गृहणी और माँ जैसे पारम्परिक कार्यों को छोड़कर गैर महिला संगठनों में कार्य करना शुरू कर दिया है। वे पुरुषों से आगे निकल गई है तथा पुरुष के हर वर्चस्व को तोड़ दिया हैं। आज महिलाओं ने अपने धैर्य, साहस तथा दृढ़ संकल्प से दुनिया को यह बता दिया है कि वे किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं। वे सब कुछ वह कर सकती हैं जिसे पुरुष कर सकते हैं। पुलिस तथा अर्द्ध सैनिक बल जैसे पुरूष प्रधान व्यावसायों में महिलाओं के आने की प्रवत्ति इस बात का सबूत हैं कि महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है, उनमें उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ने की गहरी ललक। अपने अधिकारों के लिए महिलाओं के संघर्ष के इतिहास पर नजर डालें तो पता चलता है कि महिलाओं में वह ताकत है जो इतिहास बदल सकती हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हमें याद दिलाता है उन साधारण और शताब्दियों से दबी–कुचली महिलाओं की, जिन्होंने इतिहास बदलकर रख दिया। यह सफर शुरू हुआ 8 मार्च, 1857 को उस दिन न्यूयार्क की सड़कों पर पहली बार हजारों कामकाजी महिलाएं एकत्र हुई। विश्व के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब लोगों ने इतनी सारी महिलाएं एक साथ देखीं। ये महिलाएं थी न्यूयार्क शहर की गारमेंट तथा टेक्सटाइल कारखानों की कामगार। बहुत कम वेतन मिलना, काम के घंटे बहुत अधिक होना और वर्किंग कंडीशन्स बेहद अमानवीय होना ऐसे कारण थे,

जो उनके लिए असहनीय हो चले थे। आखेरकार उन्होंने हड़ताल कर दी। इसके 53 वर्ष के बाद 1910 में कोपेनहेगन में महिला सोशिलिस्ट इंटरनेशनल ने निर्णय लिया कि 1857 की हड़ताल को एक यादगार दिवस के तौर पर मनाया जाए। अतः 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस घोषित कर दिया गया और 1975 में मान्यता दे दी। संयुक्त राष्ट्र विकसित देशों का वह संगठन है, जहाँ विश्व भर की समस्याओं का हल मिलकर करने का प्रयास किया जाता है। इसके दो ही साल बाद 8 मार्च, 1977 में संयुक्त राष्ट्र महिला अधिकार तथा अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के रूप में मनाये जाने का एक प्रस्ताव पास हुआ। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का विस्तार इतना अधिक है कि महिलाओं से जुड़े हर मुद्दे पर इस दिन करीब–करीब गोष्ठी तथा सम्मेलन में चर्चा की जाती है और हर समस्या का हल ढूंढने का प्रयास किया जाता है। प्राचीन यूनान में, जहाँ महिलाओं ने युद्ध को रोकने के लिए सेक्सुअल स्ट्राइक की, वहीं फांसीसी कांति के दौरान पेरिस की महिलाओं ने महिलाओं की पीड़ा के खिलाफ स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के समर्थन में वरसाइल की सड़कों पर मार्च किया। 1909 में अमरीका की सोशिलिस्ट पार्टी के नेतृत्व में 28 फरवरी को पहला महिला दिवस आयोजित किया गया। और इसके बाद 1913 से महिलाओं ने हर माह के अंतिम रविवार को महिला दिवस मनाने की शुरूआत की।



रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र नीमच में बेसिक प्रशिक्षण प्राप्त करती केरिपुबल की महिला कर्मी।



श्रीनगर की डलझील में पेट्रोलिंग करती अपने पुरूष सहयोगियों के साथ केरिपुबल की महिला कर्मी।

1910 में कोपेनहेगन में 17 देशों की 100 महिलाओं ने एकत्र होकर अपने–अपने देशों की महिलाओं की खराब दशा के बारे में चर्चा की और उसका हल निकालने का प्रयास किया। 1913–14 में रूस में महिलाओं ने 8 मार्च को प्रथम विश्व युद्ध के शुरूआती चरण में महिलओं की दयनीय दशा पर विरोध प्रदर्शन किए। 1917 में करीब दो लाख रूसी सिपाही युद्ध में मारे गये। वहाँ की महिलाओं ने जहाँ युद्ध के विरोध में प्रदर्शन किए, वहीं उन्होंने महिलाओं को मताधिकार देने की भी जोरदार मांग की। उनके उग्र रूप को देखते हुए जार को उन्हें वोट का अधिकार देना पड़ा। वह ऐतिहासिक दिन भी था 8 मार्च का।

भारत में भी महिलाएं कमतर साबित नहीं हुई। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगौर की बहन स्वर्णकुमारी देवी ने सन् 1882 में सखी में सखी समिति नाम से पहला नारी संगठन बनाया। पुणे में पंडित रमाबाई ने महिला आर्य समाज की स्थापना की। ऐनी बेसेंट, डोरीथी जोनाराजदास, माग्रेट कजिंस ने भारतीय महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इन्ही के प्रयासों के फलस्वरूप 1920 में मद्रास और 1921 में महाराष्ट्र में महिलाओं को मताधिकार मिला। छोटे–छोटे कस्बों में दलित महिलाओं की दर्यनीय हालत से परिचित कराया। सावित्री बाई फुले, भाग्य रेड्डी जैसी कई हिम्मती महिलाओं ने, जिसके बाद कई महिला संगठन एकजुट होकर महिलाओं के हक में खड़े हुए। इसके अलावा महिला संघर्ष की नेपोलियन मानी जाने वाली भूजन ब्राउनवेल द्वितीय विश्व युद्ध की नाइका जोसेफिनप बेकर, महिला मताधिकार की

प्रणेता कैरो चैपमैन कैट इत्यादि कुछ ऐसी महिलाएं हैं, जिनका नाम आज भी बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

किरण बेदी ने मेहनत और लगन से अपने करिअर में नित नई उड़ान भरी है और आज भी भर रहीं हैं। उनके साहसिक कार्यों के लिए उन्हें मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। माउंट एवरेस्ट पर झंडा फहराने वाली बजेंद्री पाल भी कुछ कम नहीं, जिसने ट्रेकिंग को अपना कैरिअर बना पहाड़ों की ऊँचाइयों को नापा। ऐसा नहीं कि उनकी राह में मुश्किलें नहीं आई, लेकिन वे सभी बाधाओं को पार कर अपने लक्ष्य लक पहुँची। ये उदाहरण हैं, जिन्होंने लड़कियों को रास्ता दिखाया कि वे अपने मनपसंद कैरिअर का चुनाव करें और नित नई सफलता हासिल करें। पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती स्त्री किसी भी मायने में उससे कमतर नहीं रह गई हैं। शिक्षा से जहाँ उसके विचार आधुनिक हुए हैं, वहीं उसने अपने लिए निषिद्ध माने जाने वाले पुरूषों के क्षेत्र में भी सेंध लगाई है। पहले लड़कियों के लिए शिक्षिका के काम को ही उचित माना जाता था, बहुत हुआ तो डॉक्टर बन सकती थी, लेकिन आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं हैं, जहाँ उसने अपना वर्चस्व कायन न किया हो। भले ही अभी उनकी संख्या कम हो, लेकिन शुरूआत तो हो ही गयी है। पाताल की गहराइयों से लेकर आकाश की ऊँचाइयों तक को नापने में स्त्री ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज कैरिअर के प्रति वह सजग हो गई है। उस पर किसी दूसरे का निर्णय नहीं थोपा जा सकता। अपना कैरिअर वह अपनी इच्छा से चुन सकती हैं। परिवार के सदस्यों की सोच में भी बदलाव आया है। वे भी अपनी बेटी के कैरिअर को लेकर सचेत हुए हैं। अब वे उसके निर्णय में साथ देने के साथ–साथ उसका मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।



पवित्र श्री अमरनाथ गुफा पर सुरक्षा हेतु महिला श्रद्धालुओं की जाँच करती के.रि.पु. बल की महिला

राजनीति से लेकर हावाईजहाज उड़ाने तक के कार्यों में महिलाएं कार्यरत हैं। 6 फरवरी, 1986 को महिलाओं के इतिहास के एक नये युग का सूत्रपात हुआ जब किसी अर्ध सैनिक बल अर्थात के.रि.पु. बल में पहली महिला बटालियन के रूप में महिलाओं ने कदम रखा। अतः के.रि.पु. बल की इस बटालियन में लगभग 1100 महिलाएं शामिल की गयी। इस बटालियन की कार्य कुशलता को देखते हुए सरकार ने के.रि.पु. बल को एक दूसरी 135 महिला बटालियन सन् 1996 में गठित करने की मंजूरी दी। आज केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में दो महिला बटालियन हैं। यह महिला बटालियन बल की महिला शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है तथा होनहार महिलाओं को इस बात का संदेश देती है कि वे किसी भी कार्य में पुरूषों जहाँ तक कानून व्यवस्था तथा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता बनाए रखने की बात हो उसमें भी कभी–भी पीछे नहीं हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही देश का ऐसा अर्ध सैनिक बल है जिसकी दो महिला बटालियनें हैं। आज के.रि.पु. बल में तीन महिला कमाण्डेंट हैं जो बल की बटालियनों का स्वतंत्र रूप से कुशलता पूर्वक नेतृत्व कर रही हैं।

अभी वर्तमान में इन बटालियन की महिला कर्मी इम्फाल (मणिपुर), श्रीनगर (जम्मु एवं कश्मीर) जैसे आतंकवाद उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में अपने पुरूष साथियों की तरह ही अपनी ड्यूटियों का निष्पादन कर रही हैं, वहीं अयोध्या, मथुरा, गांधीनगर

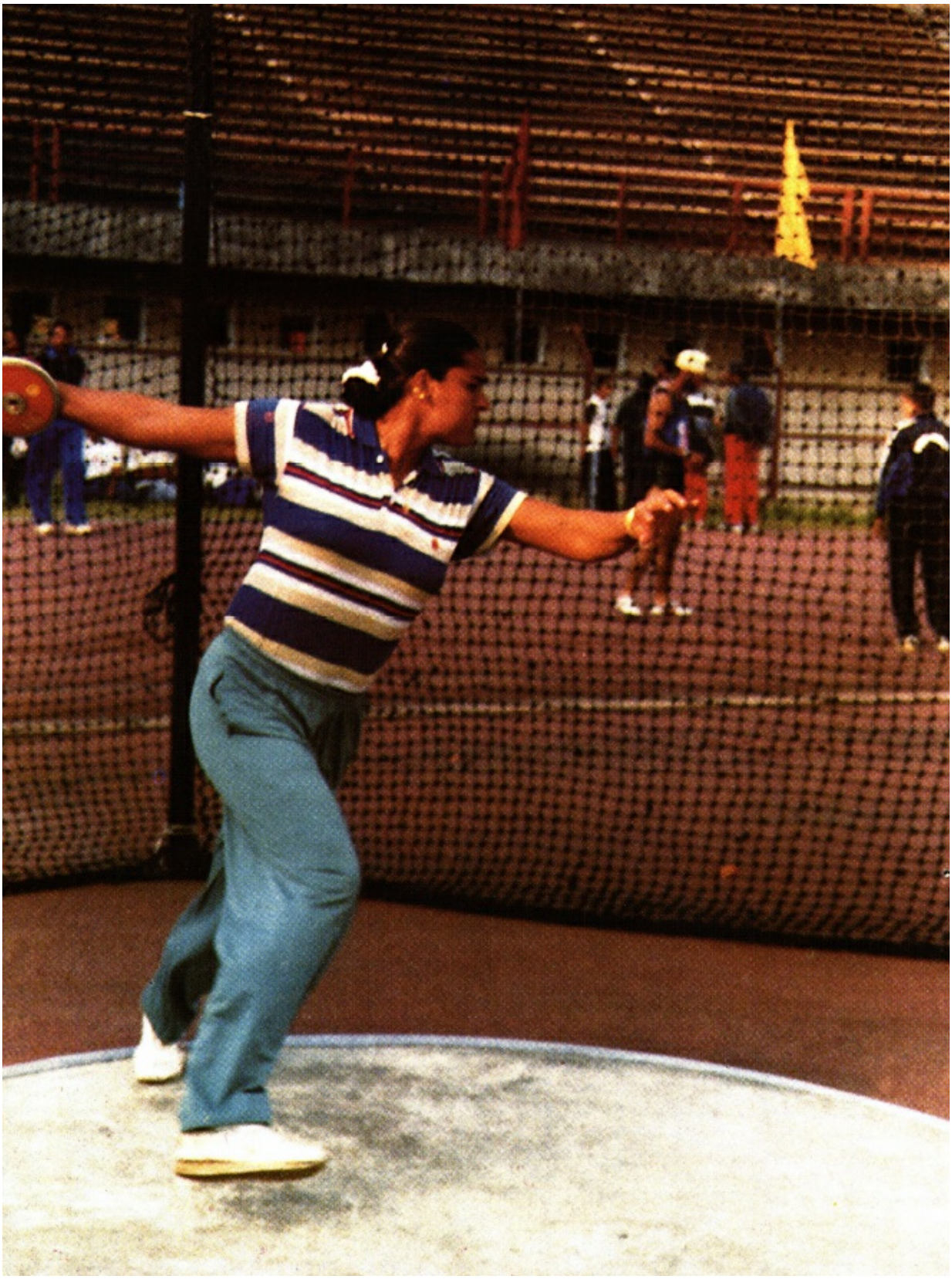
आदि धार्मिक स्थलों पर सुरक्षा हेतु तैनात है। बात चाहे दिल्ली में हो या सीमापार शान्ति व्यवस्था बनाए रखने की इन महिलाओं ने अपनी ड्यूटियों का निष्पादन पूरी निष्ठा के साथ किया है और सेना, राज्य तथा सिविल प्राधिकारियों से अनेक पदक तथा प्रशंसा पत्र प्राप्त किए हैं।



तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन से राजीव गाधी खेल रत्न पुरस्कार प्राप्त करतो बल की विश्व

प्रसिद्ध भारोत्तोलक सुश्री कुजा रानी, सहा. कमाण्डेंट :

13 दिसम्बर, 2001 को संसद परिसर पर हुए आतंकवादी हमले के दौरान अदम्य साहस, वीरता तथा सजगता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए देश के इतिहास में पहली बार के.रि.पु. बल की महिला सिपाही कमलेश कुमारी को मरणोपरांत गणतंत्र दिवस 2002, के अवसर पर देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "अशोक चक्र" प्रदान किया गया था। यह वहीं बल की महिला सिपाही थी जिसने आतंकवादियों को सर्वप्रथम संसद में घुसने से रोका और अपने साथियों को अर्लट किया।



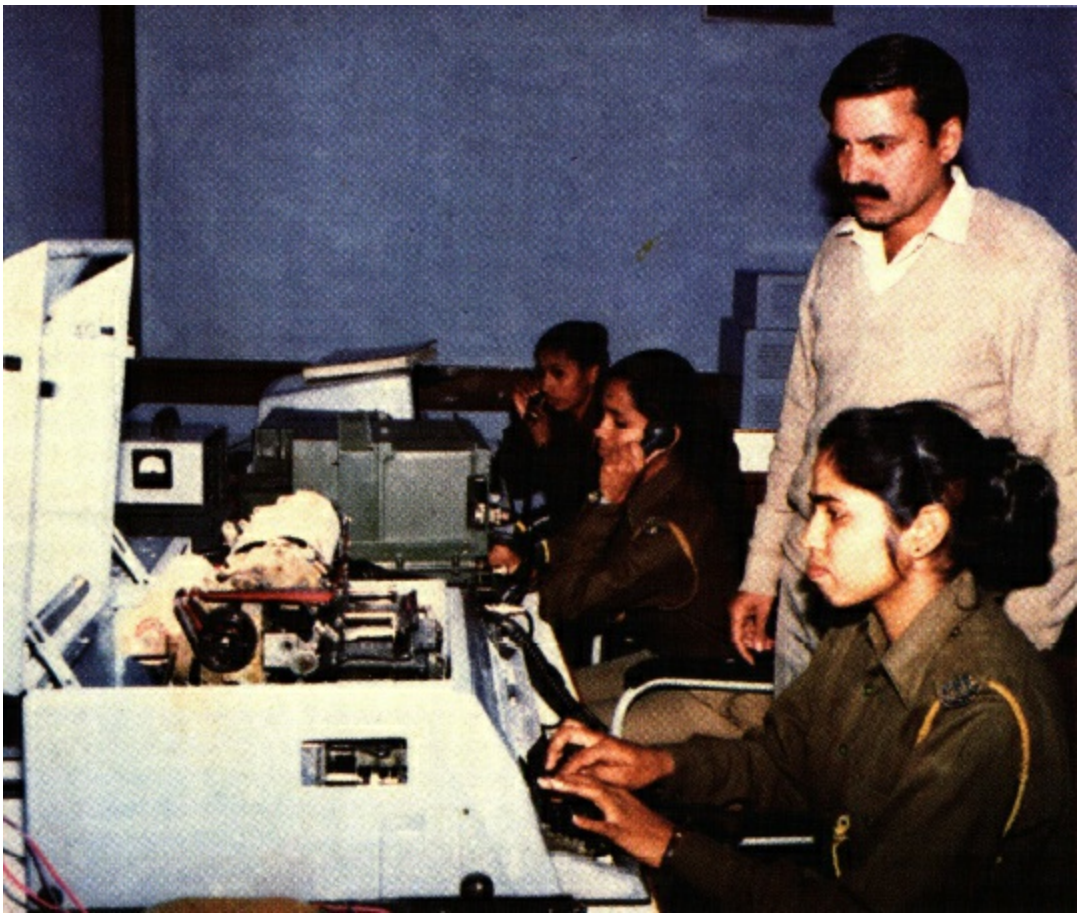
अखिल भारतीय पुलिस प्रतियोगिता के दौरान डिस्कस थ्रो का प्रदर्शन करती बल की महिला खिलाड़ी।

बल की एक और महिला सिपाही बिन्दु कुमरे 16 जनवरी, 2001 को श्रीनगर हवाई अड्डे पर फिदायीन हमले में हवाई अड्डे की नहीं बल्कि अपने कई साथियों की सुरक्षा करते हुए शहीद हुई थी। इस हमले में असाधरण वीरता के प्रदर्शन के लिए उसे मरणोपरात वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। इससे पहले भी बल की एक अन्य महिला सिपाही रेखा कुशवाह को 5 अक्टूबर, 1991 को जम्मू के बतमालू में आतंकवादी अम्बुश में शहीद हुई थी। इसी वर्ष गणतंत्र दिवस 2005 के अवसर पर भी 88 बटा० की दो महिला कर्मी हव. (महिला) कलावती देवी तथा सि० (महिला) परमजीत कौर को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति जी ने विशिष्ट सेवा पुलिस पदक प्रदान कर मान बढ़ाया है। श्रीलंका में भी कैं.रि.पु. बल की महिला बटालियन की एक कम्पनी भारतीय शांति सुरक्षा बल के एक अंग के रूप में तैनात की गई थी। इस बटालियन की (महिला) सिपाही विमला देवी को श्रीलंका में उनके प्रशंसनीय कार्यों के लिए सेना मेडल से नवाजा जाना विदेशों में भी सुरक्षा ड्यूटी हेतु तैनाती में उनकी कार्य कुशलता का परिचायक है।

इन दो महिला बटालियन के अलावा देश के विभिन्न भागों में साम्प्रदायिक व संवेदनशील क्षेत्रों में दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निबटने के लिए तैनात आर.ए.एफ. की 10 बटालियनों में भी महिलाएं भी एक गठक के रूप में शामिल हैं।

खेल प्रतिस्पर्धाओं में भी इस बल की महिलाएं पीछे नहीं रही हैं। इन्होंने अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में देश का प्रतिनिधित्व कर अनेक पदक जीते हैं। 1986 में बल में महिला बटालियन का उद्भव होने के साथ–साथ इस बल में कुछ ऐसी महिला प्रतिभाओं ने भी कदम रखा था जिन्होंने अपनी नियमित ड्यूटियों के क्षेत्र में तो नाम कमाया ही बल्कि खेल जगत में भी भारत का नाम स्वर्णित अक्षरों में लिखा। 1996 में स्टेट वोमेन फेस्टीवल में कुंजा रानी देवी व एन० लक्ष्मी ने पुरूष प्रधान साहसिक खेल भारोत्तोलन में भाग लिया और महिला क्रीड़ा क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। तब से अभी तक बल की महिला खिलाड़ियों ने हर वर्ष भारोत्तोलन एथलिटस, सूटिंग, तैराकी, जूड़ो आदि खेलों में अनेक स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक जीतकर अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा अखिल भारतीय पुलिस खेलों में बल की प्रसिद्धि की पताका फहराई और सफलता का दौर यह रहा कि बल की महिला खिलाड़ियों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उत्कृष्ट प्रर्दशन के लिए कुंजा रानी देवी, एन० लक्ष्मी तथा सोनामाचा चानू को देश के सबसे बड़े खेल पुरस्कार (अर्जुन पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। आज इस बल की महिला कर्मी विभिन्न अन्य खेलों में भी देश का प्रतिनिधित्व कर रही हैं, और पदक जीत रही हैं। अतः अब यह सिद्ध हो चुका है कि अब नारी अवला बेचारी नही है, वह अब सब कुछ कर सकती है जो पुरूष कर सकते हैं । अब महिलाएं अपने लिए एअरफोर्स, नेवी, आर्मी, अर्द्धसैनिक बलों जैसै पुरूषोचित व्यवसायों को बहुत तेजी से चुन रही हैं। और उसमें सफल हो रही हैं। इतना ही नहीं धर्मक्षेत्र भी उनसे अछूते नहीं रहे। धर्म का उपदेश देने वाले पुरुषों के अधिकार क्षेत्र में भी स्त्रियां प्रवेश कर चुकी हैं। पुरूषों के समान ही वे भी साम, दाम, दंड, भेद की नीति से अपना कार्य करने में सक्षम हो चुकी हैं। आयरन लेडी माने जाने

वाली मारग्रेट थचर, इंदिरा गांधी ने अपने आप को राजनीतिक बिसात पर सक्षम सिद्ध किया है। कल्पना चावला नासा की सक्रिय सदस्य बनकर अंतरिक्ष तक जा पहुँची थी। आज की स्त्री दस से साढ़े पाँच बजे तक की रूटीन ड्यूटी से अलग विभिन्न पारियों में काम करने से नहीं हिचकतीं। समाचार पत्रों और टेलीविजन चैनलों में उसने अपनी अलग पहचान बनाई है। अब से पहले कुछेक महिलाएं पत्रकारिता के व्यवसाय में आती थीं। इसे पुरूषों का एरिया माना जाता था, लेकिन अब इस क्षेत्र में महिलाओं की संख्या पुरूषों से कम नहीं। महिला पत्रकार बरखा दत्त कवरेज के लिए युद्ध के दौरान कारगिल गई और वहां सफलतापूवर्क अपने दायित्वों का निर्वाह किया। अपने आत्मविश्वास और काम के प्रति लगन के कारण महिलाओं ने अपने आपको हर उस मुकाम पर खड़ा किया है, जिसे पुरूष अपने लिए सुरक्षित समझता था। पेट्रोल पंप पर काम करने, टैक्सी चलाने से लेकर आधुनिक तकनीक से चलने वाली मैट्रो ट्रेन तक को भी महिलाएं उसी सहजता से चला रही हैं जैसे वे अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करती हैं, अपने प्रति सकारात्मक सोच अपनाने और खुद को बेचारी की छवि से अलग, सक्षम और हर मुश्किल से मुश्किल कार्य को कर पाने की सोच के कारण।



सिंगनल सेंटर में संदेश प्राप्त करती एवं भेजती बल कर्मी।

आधुनिक दौर की महिला इस बात को सही साबित करती है कि वह किसी भी मायने में पुरूषों से कम नहीं है। भले ही उस पर भावनाओं का जोर चलता है, लेकिन उसकी शक्ति में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आती है। घर–परिवार की जिम्मेदारियों को निबाहते हुए बाहर की दुनिया में उसने अपनी सशक्त पहचान बनाई है। अब वह उस मुकाम तक पहुँच गई है, जहाँ पहले केवल पुरूषों की ही पहुँच होती थी।

द्रुत कार्य बल द्वारा दंगों से निपटने का प्रशिक्षण

भारत तिब्बत सीमा पुलिस कैम्प टिगरी, नई दिल्ली में 108 बटा० आर.ए.एफ. के कमांडेंट श्री एस.पी. पोखरियाल की देख–रेख में 23 दिसम्बर, 2004 को राष्ट्रीय यू.एन. सिवपोल केन्द्र पर दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निपटने के लिए एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जनवरी, 2005 को संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत कागों में शांन्ति व्यवस्था कायम करने हेतु जाने की तैयारी कर रहीं 301 आर्मी ब्रिगेड ने इस शिविर में भाग लिया। इस प्रशिक्षिण शिविर में महार रैजीमैंन्ट, बिहार रैजीमैंन्ट तथा ग्रेनेडियर्स के लगभग 37 अधिकारी, 64 जूनियर कमीशन्ड अधिकारी, 242 अन्य सैनिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण को 3 भागों में चलाया गया। प्रथम भाग में द्रुत कार्य बल का परिचय बनावट तथा कार्य पद्धति की जानकारी कमाण्डेंट–108 बटालियन श्री एस.पी. पोखियाल ने दी। विशेष उपकरणों की जानकारी 104 बटा० के उप कमाण्डेंट श्री अरविन्द राय ने, दंगों से निपटने की विभिन्न फार्मेशनों तथा यंत्रों के प्रयोग के वारे में 108 बटा० आर.ए.एफ. के उप कमा० श्री भूपाल सिंह, एवं सुवेदार मेजर एस. के. सिंह द्वारा दी गई।



108 **आरएएफ के जवान आई टी.बी.पी. टिकरी कैम्प, नई दिल्ली में भीड़ नियंत्रण कवायद का प्रदर्शन करते हुए।**

इस प्रशिक्षण में बनावटी परिदृष्य प्रस्तुत कर प्रक्टीकली प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में यह सिखाया गया कि आवश्यकतानुसार कम से कम बल का किस प्रकार से प्रयोग करके गुमराह, हिंसा पर ऊतारू सिविल जनता से किस तरह निपटा जाये। पहली स्थिति में मौके पर उपस्थित मजिस्ट्रेट द्वारा हिंसा पर उतारू भीड़ को समझाने बुझाने के प्रयास किये जाये, विफल होने पर गैस तथा हल्की लाठी का प्रयोग किया जाए। यदि भीड़ उग्र रूप धारण करले तो उसे तितर–बितर करने के लिए अन्ततः रबड़ की गोलियों द्वारा फायर किया जाए। यदि इस दौरान कोई दंगाई घायल हो जाता है तो उसका तुरन्त प्राथमिक उपचार किया जाय। इस प्रशिक्षण में राहत व बचाव पहुँचाने के कार्यों से लेकर इलाके की छानबीन करने की पद्धति को भी समझाया गया।



कमाण्डेंट *108* बटालियन आरएएफ श्री एस.पी. पौखरियाल सेना तथा भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस के अधिकारी एवं जवानों को प्रशिक्षण देते हुए।

301 आर्मी ब्रिगेड के कर्नल एन.आर. निरूधिरकर, महार रैजीमेन्ट के कर्नल हरी सिंह, बिहार रेजीमेन्ट के कर्नल श्री अजीत सिंह, ग्रेनेडियर्स की ओर से अन्य अधिकारी व जवानों के साथ प्रदर्शन में उपस्थित थे। सेना के उपरोक्त अधिकारियों/ जवानों के अतिरिक्त 15 वीं बटालियन भारत तिब्बत सीमा पुलिस के कमाण्डेंट श्री ऑस्टीन इप्पन एवं उनके साथ लगभग 178 अधिकारी तथा जवानों ने भी इस प्रशिक्षण में भाग लिया।

इस प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भारत तिब्बत सीमा पुलिस के सहयोग एवं सहायता से किया गया। आर.ए. एफ. की कार्य शैली की सेना एवं भारत तिब्बत सीमा पुलिस के समस्त अधिकारियों एवं जवानों ने सराहना करते हुए कहा कि हाँलाकि यह कोर्स उनके लिय एक नया कोर्स है। इस कोर्स में उन्हें आम जनता के साथ दंगों जैसी स्थिति से निपटने के गुण सीखने को मिले हैं, भविष्य में यह प्रशिक्षण उनके बहुत काम आयेगा।

राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान का

उद्घाटन

राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान उच्चकोटि के व्यावसायिक सैन्य संगीत व लय विकसित करने वाली उत्कृष्टता का केन्द्र होगा जिससे पुलिस बल उत्साहित तथा प्रेरित होंगे। 26 फरवरी, 2005 को ग्रुप केन्द, के.रि.पु. बल कादरपुर (गुड़गांव) कैंपस में बैण्ड संस्थान का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल ने कहा कि एक लंबे समय से राष्ट्रीय बैण्ड संस्थान स्थापित करने की महसूस की जा रही मांग इस संस्थान के यहाँ स्थापित होने से वास्तविक रूप में पूरी हो गई है। श्री पाटिल ने आशा व्यक्त की यह संस्थान, सैन्य वाद्य संगीत का एक महत्वपूर्ण संस्थान होगा तथा इसमें भारतीय व पश्चिमी संगीत को मिलाकर मधुर लय बनाने के प्रयास किए जाएंगे ताकि सैन्य संगीत और मधुर हो सके।



राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान कादरपुर (गुडगाँव) का शिलान्यास करते केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल।



राष्ट्रीय बैण्ड पुलिस अकादमी कादरपुर (गुडगाँव) के शिलान्यास के अवसर बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा एवं बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

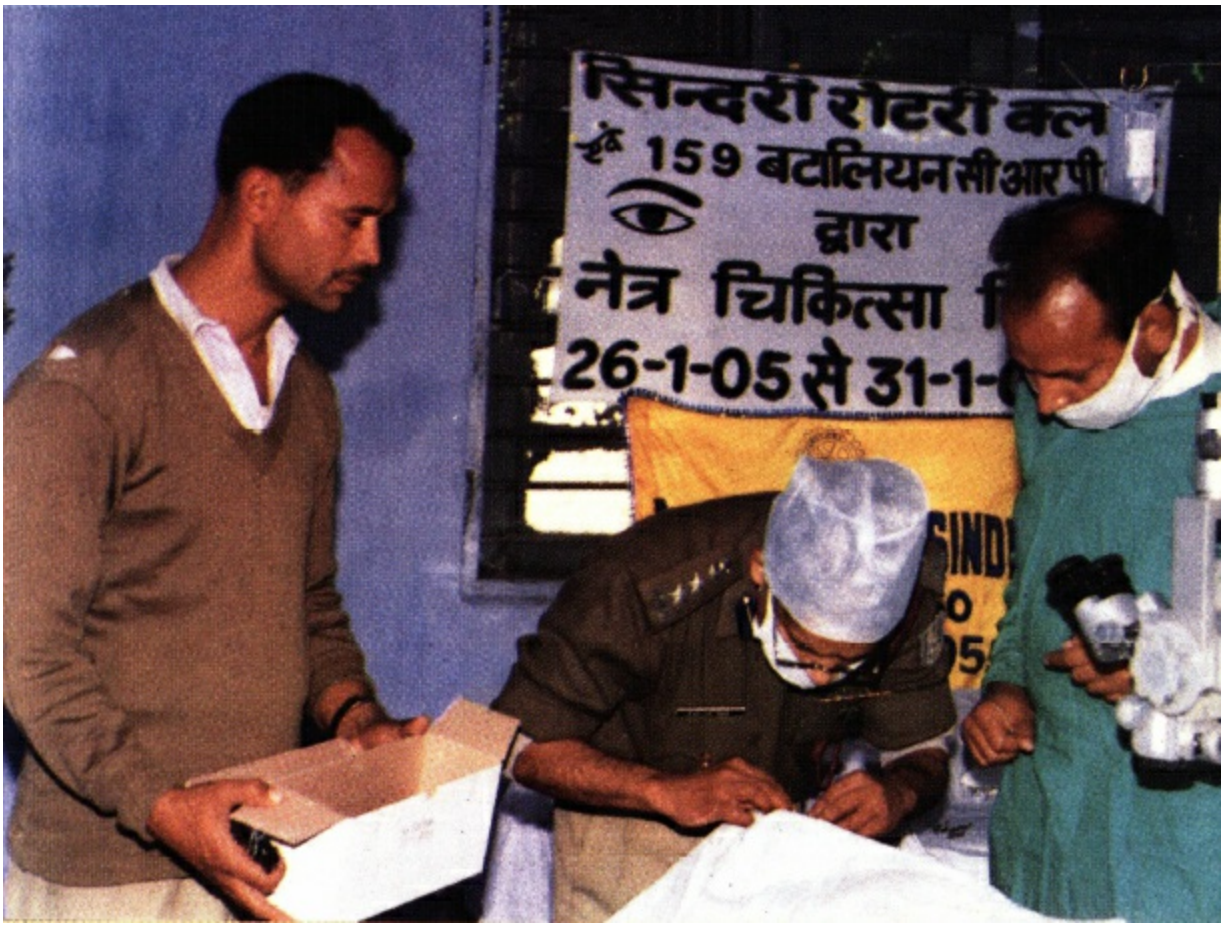
अपने स्वागत सम्बोधन में के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने कहा कि देश में ही पुलिस बैण्डों को सैन्य संगीत का गुणात्मक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए इस संस्थान की बेहतरीन संरचना की जाएगी तथा इसमें प्रशिक्षण की सभी अत्याधुनिक सुविधाएं होगी।

वर्तमान ने इस संस्थान में पाईप बैण्ड के अधीन 6 माह की अवधि का पाइप वाद्य कोर्स, ड्रम वादक कोर्स तथा बिगुलर कोर्स चलाया जाएगा। इसके अलावा इस संस्थान में ब्रास बैण्ड के अंतर्गत 9 माह की अवधि के अन्य 9 विभिन्न विद्याओं के कोर्स भी चलाए जाएंगे। प्रारंभिक अवस्था में प्रशिक्षण की शुरूआत के लिए इस संस्थान में 100 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण देने की क्षमता रखी गई है तथा जैसे–जैसे ही इस संस्थान की नियमित संरचना का विकास हो जाएगा वैसे–वैसे ही इस संस्थान में अन्य विशेष कोर्स भी चलाए जाएंगे।

159 बटा. द्वारा नेत्र शिविर का आयोजन

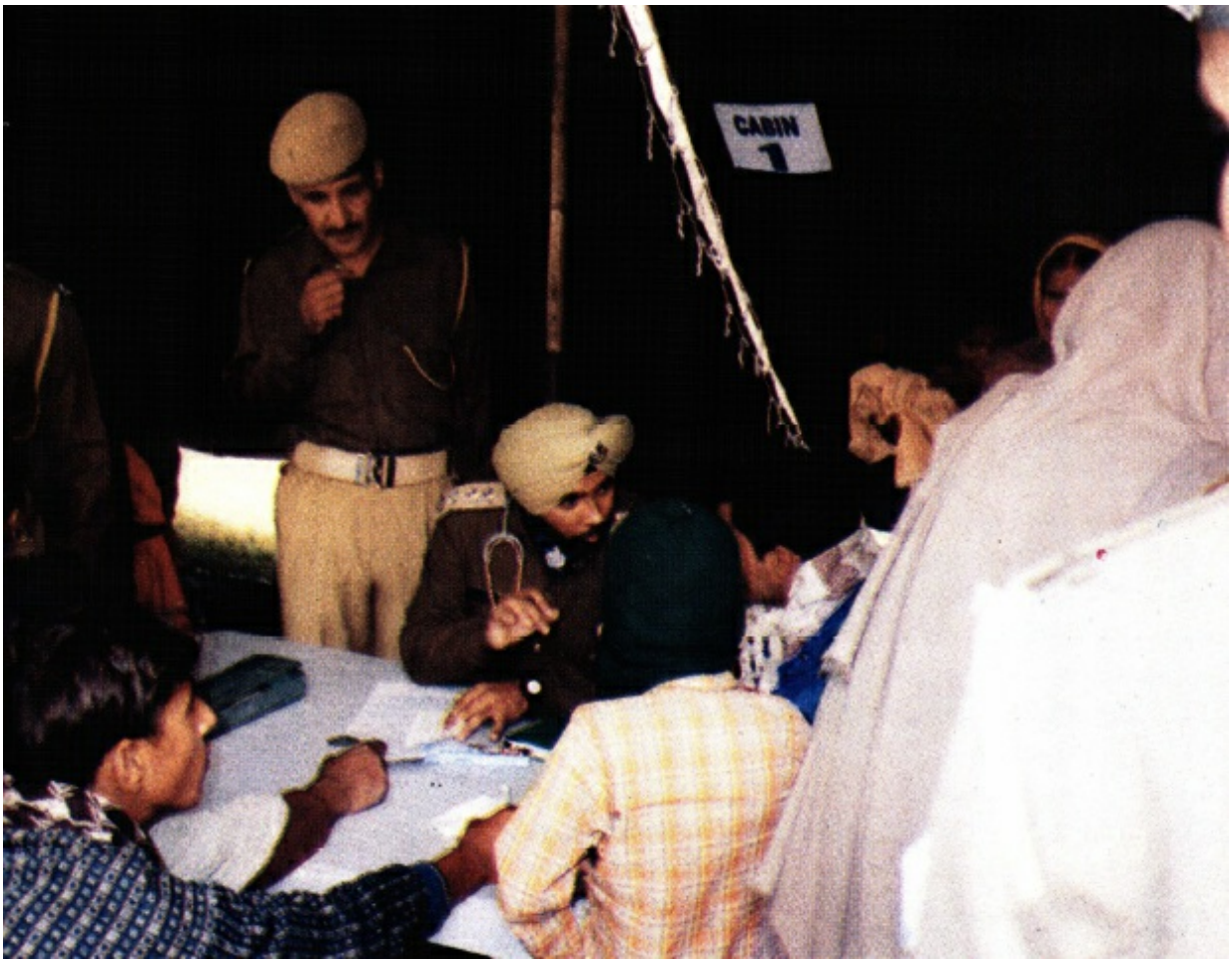
सिन्दरी रोटरी क्लब संस्था (झारखण्ड) ने 159 बटालियन, के०रि०पु०बल के साथ मिलकर गौशाला, सिन्दरी (झारखण्ड) में 26 से 31 जनवरी, 2005 तक एक नेत्र शिविर का आयोजन किया। 159 बटालियन के डॉ० एस०एल० निमेष ने इस शिविर में भाग लिया तथा इन्टा आक्युलर लैंस प्रत्यारोपण व मोतियाबिन्द के मरीजों का आप्रेशन एंव इलाज किया। सिन्दरी रोटरी क्लब के डॉ० मनीष, डॉ० कुमार एवं 159 बटा० के चिकित्सा अधिकारी डॉ० एस०एल० निमेष ने 112 मोतियाबिन्द से पीड़ित रोगियों के मोतियाबिन्द का सफल आपरेशन किया।

डा० निमेष द्वारा इस शिविर के आयोजन में किया गया योगदान उनके अपने व्यवसाय के प्रति गहन त्याग, सर्मपण तथा मानव जाति की सेवा तथा के०रि०पु०बल के नाम एवं यश को बढ़ाने में किया गया एक सराहनीय कार्य हैं।




सिन्दरी रोटरी
159 बटालियन सीआर
द्वारा
से 31-1-05
CLUB OF SINDR
ST. 325
RED IN 19


CABIN
7



45 बटालियन के सामाजिक क्रिया कलाप

23, दिसम्बर, 2004 को बैरिया प्राथमिक विद्यालय, मोताहारी (बिहार) में आम जनता से मधुर सबंध स्थापित करने के उद्देश्य से 45 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें सुदुर ग्रामीण इलाकों से आई महिलाओं एवं पुरूषों का निःशुल्क ईलाज किया गया। शिविर का उद्घाटन बेतिया प्रक्षेत्र के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एस.के. भारद्वाज ने किया एवं मुफ्त ईलाज व दवा वितरण मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ० अरूण साहा, डॉ० सी.बी. सिंह, डॉ० स्वास्ति सिन्हा एवं 45 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के डॉ० जसविन्दर सिंह ने किया। शिविर का संचालन उप कमाण्डेन्ट श्री आर.के. सिंह, ने किया।

शिविर को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी पूर्वी चम्पारण श्री विनय कुमार एवं आरक्षी अधीक्षक पूर्वी चम्पारण श्री कमल किशोर ने मुफ्त शिविर आयोजन के लिए कमाण्डेंट-45 बटालियन श्री वी.के. कौण्डल का आभार व्यक्त किया तथा कहा कि ऐसे आयोजनों से पुलिस एवं जनता के बीच की दूरी कम होती है तथा जनता में बल

के प्रांते विश्वास बढ़ता है। श्री कुमार ने कहा कि चम्पारण क्षेत्र की विधि व्यवस्था को बनाये रखने तथा असमाजिक तत्वों पर अंकुश लगाने में केरिपुबल की यह बटालियन महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। स्थानीय जनता में इस बटा. के जवानों के प्रति गहरी सहानभूति है। इस क्षेत्र के लोगों के बीच इस बटालियन के क्रिया कलापों को देखकर सुरक्षा की भावना सुदृहण हुई है।

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-चार में रंगरूट बैरक का उद्घाटन

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-चार में रंगरूट अपना बेसिक प्रशिक्षण 29 मार्च 1994 से ले रहे हैं। प्रारम्भ में नवारक्षियों के रहने की व्यवस्था प्री-फाइब्रिकेट हट की गई थी।

इस संस्थान में नवारक्षियों के निवास के लिए कुल (980 क्षमता वाली) बैरक बनायी जानी है अभी दो बैरिंक्स निर्माणधीन हैं। एक बैरक का निर्माण कार्य केन्द्रीय लोक निर्माण द्वारा दिसम्बर 2004 में पूरा कर दिया गया है।



इस नवीनोमैत 180 जवानों की क्षमता वाली बैरक का उद्घाटन पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन), श्रीनगर, श्री रणजीत सिंह सिन्हा द्वारा 17 फरवरी, 2005 को संपन्न किया गया।

19 बटालियन के सामाजिक कार्यक्रम

केरिपुबल की 19 बटालियन ने अपने मुख्यालय रामबाग (श्रीनगर) में "सिविक एक्सन प्लान" के तहत हैदराबाद के रेजीडेन्सियल हाई स्कूल के शिक्षा-भ्रमण पर आये हुए छात्रों का स्वागत किया और उनके लिए चाय पार्टी की व्यवस्था की। इस दौरान करीब स्कूल के 50 बच्चों तथा 20 शिक्षकों ने बटालियन के अधिकारियों एवं जवानों से बल के क्रिया कलापों के बारे में चर्चा की। छात्रों को हथियारों की एक छोटी सी प्रदर्शनी भी दिखाई गयी। काश्मीर की संस्कृति तथा यहां के शांतिप्रिय लोगों के बारे में भी बताया गया जिसे देख कर छात्र बहुत खुश हुए।









129 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम

21 दिसम्बर, 2004 को ग्राम–कोटरंका, जिला-राजौरी (जम्म एवं कश्मीर) में 129 बटालियन, केरिपुबल ने सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया जिसमें इलाके के महत्वपूर्ण व्यक्ति, सरपंच, मास्टर व करीब 500 ग्रामीण लोगों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में गरीब ग्रामीणों को चावल, कम्बल व खाना बनाने के बर्तन इत्यादि वितरित किये गये। इस कार्यक्रम से ग्रामवासियों मे बल के प्रति विश्वसनीयता और भी अधिक बढ़ी है तथा पुरे इलाके में बल की प्रशंसा हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री एस.एम. सहाय, पुलिस उप महानिरीक्षक, राजौरी व पुंछ ने ग्रामीणों को आहवान किया कि वे केरिपुबल के सदस्यों को अपना सहयोग दे ताकि क्षेत्र में अमन चैन कायम हो सकें। श्री दलीप सिंह, कमाण्डेन्ट/129 बटालियन केरिपुबल ने इलाके के सभी उपस्थित सदस्यों से अपील की कि वे अपना सहयोग देकर आतंकवादी तत्वों की जानकारी बल के सदस्यों तक पहुँचाये ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में अमन चैन पुनः लाया जा सकें। इस प्रोग्राम के दौरान वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी 129 बटा. डॉ. पुनम चौधरी द्वारा गरीब महिलाओं तथा बच्चों को दवाई भी वितरित की गई। जिला स्तर पर सभी अधिकारियों तथा स्थानीय लोगों ने केरिपुबल सराहनीय कार्यों की भुरि-भूरि प्रशंसा की।

73 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम

73 बटालियन केरिपुबल द्वारा 18 फरवरी, 2005 को नरतप हाई स्कूल सोनापुर, कामरूप (असम) में एक सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया जिसमें स्कूली बच्चों को स्टेशनरी का सामान इत्यादि वितरित किया गया। इस प्रोग्राम में

स्थानीय लोगों के अलावा डी.एस.पी. दिसपुर, एव अन्य अधिकारी भी शामिल हुए।
इस कार्यक्रम का स्थानीय प्रेस व जनता द्वारा भारी प्रशंसा की गई।

कलयुगी "महामारी" एड्स"

नये जमाने की नई महामारी "एड्स" बन गई है।
मानव को बे मौंत मारने वाली "शैतान" बन गई है।
अपने "हम सफर" से बफादार रहना यारो।
ब्याह कर लाते समय का बचन निभाओ प्यारो।
अनमोल है छोटी सी जिन्दगी।
इसे नरक न बनाना दोस्तो।
अपने "संस्कारों" को पैरो तले न कुचलना यारो।
दुश्मन का शिकार करना है आपको यारो,
तुम खुद एच.आई.वी. एड्स का शिकार मत बनो यारो।
असुरक्षित यौन संबन्ध कभी न रखना यारो।
बनना ही है "महापाप" का भागी तो,
कोण्डम का प्रयोग करना मत भूलना यारो।
छूने से, चुम्बन से "एड्स" नहीं फैलता हैं दोस्तो।
साथ रहने से, उठने बैठने से यह नहीं फैलता है दोस्तो।
अपने जीवन साथी से रहना बफादार हमेशा दोस्तो।
भले ही अकेले में चारपाई पर करवटे बदलना पड़े तुम्हे दोस्तो।
नई जमाने की इस "नई महामारी" से खुद को बचावो दोस्तो।

हव. (आरमोरर) आर.बी. कुलकर्णी
ए.डब्ल्यू.एस.-7 इम्फाल (मणिपुर)

जीना एक कलॉ है

छोटा जीवन बड़े इरादे,
दोनों का कोई मेल नहीं।
एक दिन दीपक बुझ जायेगा,
इसमें ज्यादा तेल नहीं।
जीना एक कलॉ है, लोगों,
जो किसी-किसी को आती है।
जीना जीवन में एक लक्ष्य बना कर,
कोई बच्चे का खेल नहीं।

राकेश कुमार सिंह
101 बटालियन

"निशान-ए-शान"

भारत नाम आम नहीं मेरा ईमान है।
मेरी जान है भारत का हर इन्सान है।
गंगा यमुना की धारा में।
सागर में कही सहरा में।
गावों में और शहरों में।
समुद्र की लहरों में।
आगे जो सबसे है अपना हिंदुस्तान है।
सुबह यहाँ सुंदर है,
और साम मनोहर है।
ईमान एक धरोहर है,
देश प्रेम का सरोवर है।
दिल में है तिरंगा जो निशान-ए-शान है।

सि० ईश्वर दास
30 बटा०, केरिपुबल

एड्स

–सि० इमरात सिंह
7 बटा०, के.रि.पु.बल

विभिन्न प्रकार की हड्डियों एवं मांस पेशियों की संरचना को मानव शरीर कहा जाता है। जिस तरह अनेक जोडों का मानव शरीर में होना आवश्यक है, ठीक उसी तरह से विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ भी मानव शरीर में होना स्वभाविक हैं। उन में से एक बहुत ही खतरनाक बीमारी है, एड्स।

"एड्स" दक्षिण अफ्रीका में सन् 1984 को चिम्पैंजी (वन मानुष) में पाई गई थी जिसके अधिकतर क्रिया कलाप मानव जैसे ही होते हैं। और धीरे-धीरे एड्स का हस्तान्तरण मानव जाति में भी होता चला गया।

एड्स क्या है ? एड्स वायरस से फैलने वाली एक बहुत ही खतरनाक बीमारी है जिसकी प्रथम अवस्था **(S E X U A L L Y T R A N S M I T T E D DISEASE)** के रूप में जानी जाती है जो एच.आई.वी. वायरस द्वारा फैलती है। एच.आई.वी. वायरस को **(HUMAN IMUNO VIRUS)** के नाम से जानते है, यदि **STDS** का समय पर उचित इलाज नहीं कराया गया तो यह भयंकर बीमारी एड्स का रूप धारण कर लेती है। एड्स **(AIDS)** अग्रेजी के चार अक्षर अपना एक बड़ा महत्व रखते हैं। **AIDS** अर्थात **(ACCURED IMUNO DEFICIENCY SYNDROM)**।



कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा, गुप केन्द्र, नई दिल्ली में एड्स पर आयोजित सेमीनार के दौरान बल की महिला कर्मियों को एड्स का प्रतीक चिन्ह लगाते हुए।

<u>एड्स के प्रमुख लक्षण</u> :-

किसी भी बीमारी को जानने के लिये यह अति आवश्यक है कि सर्वप्रथम उसके लक्षणों कों जाना जाय। एड्स के प्रमुख लक्षण इस प्रकार है :-

- व्यक्ति के गुप्तांगों में जलन होना।
- व्यक्ति के गुप्तांगों में सूजन आना।

- व्यांक्ति को भूख न लगना।
- स्वास्थ्य का धीरे-धीरे लगातार गिरते रहना।
- चक्कर आने की शिकायत महसूस करना।
- पेंचिस लगना आदि।

एड्स कैसे फैलता है ? आए इसके संबंध में हम कुछ प्रमुख बातें जानें :- एड्स फैलने का सबसे प्रमुख कारण है असुरक्षित यौन सम्बन्ध। अपने जीवन साथी के अतिरिक्त किसी अन्य के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करना ही असुरक्षित यौन सम्बन्ध कहलाता है। एड्स फैलने का प्रमुख कारण भी असुरक्षित यौन सम्बन्ध ही है। हालॉकि इसके फैलने के अन्य कई कारण और भी हो सकते है जैसे संक्रमित सुई को किसी दूसरे व्यक्ति के लगाने से, एड्स से संक्रमित गर्भवती माँ से उत्पन्न होने वाली सन्तान को या फिर एक ही रेजर से कई व्यक्तियों की सेविंग करने या फिर किसी संक्रमित व्यक्ति का खून दूसरे स्वस्थ्य व्यक्ति को चढ़ाने से भी एड्स फैलता है।

एड्स से बचने के प्रमुख उपाय :- एड्स से बचने का सबसे आसान उपाय एड्स की उचित जानकारी है। जहाँ तक संभव हो किसी भी अपरिचित व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित न करें। यदि ऐसा करना सम्भव नहीं है तो कण्डम का उपयोग अवश्य करें। सदैव नई सीरिंज व सूई का इस्तेमाल करें। यदि किसी को खून की आवश्यकता है तो एच.आई.वी. की जाँच अवश्य करायें और यदि खून बाजार से खरीद रहे हैं तो उस पर (A) का निशान अवश्य देखे जिसका मतलव होता है कि रक्त एड्स वाइरस से रहित है।

एडस रोगी के प्रति हमारा व्यवहार :- किसी एड्स रोगी के प्रति घृणा का व्यवहार न करें, क्योंकि एड्स नहीं फैलता है किसी रोगी से हाथ मिलाने से, एक साथ खाना खाने से और ना ही मच्छर के काटने से फैलता है। एड्स के रोगी के प्रति सहानुभूति दिखाये जिससे कि वह अपने आपको समाज के सम्मुख हीनता की अनुभूति न करे।



विश्व एड्स दिवस पर बल मुख्यालय में आयोजित समारोह के दौरान प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।

अतः निष्कर्ष के आधार पर एड्स बहुत ही खतरनाक जानलेवा बीमारी है, इसका बचाव ही इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जिस भी व्यक्ति को एड्स हो जाता है वह तो स्वयं जीते जी मर ही जाता है, साथ ही उसके परिवारिक जीवन पर भी असर पड़ता है। पूरा परिवार भी तहस-नहस हो जाता है। इससे बचने के लिए उचित जानकारी ही इसका मुख्य उपाय है। एड्स किसी को भी हो सकता है, पर एड्स से सभी बच सकते हैं। सही और पूरी जानकारी, संयम् और वफादारी, यौन सम्बन्धों में समझदारी, रहे दूर एड्स की बीमारी।

“KNOW AIDS FOR NO AIDS”



जम्मू-कश्मीर सचिवालय में तैनात सीआरपीएफ की चौथी बटालियन के सहायक कमांडेंट सुनील कुमार सविता को वाहिनी मुख्यालय से सरकारी ड्राफ्ट के भुगतान हेतु प्राधिकृत किया गया था। ड्राफ्ट 4,49,941 रुपये का था और इसका भुगतान स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शालीमार स्थित मुख्य ब्रांच में किया जाना था। बैंक कर्मचारी की गलती से उन्हे एक लाख रुपये अधिक दे दिए गये। वाहिनी मुख्यालय में पहुंचकर जब रुपयों को गिना तो पाया कि उसमें एक लाख रुपये अधिक हैं। अगले दिन श्री सविता ने अधिक रुपये बैंक के शाखा प्रबंधक को वापिस कर दिये। बैंक के अधिकारियों ने श्री सविता की ईमानदारी व कर्मनिष्ठा की भारी प्रशंसा की।

जम्मू क्षेत्र में तैनात बल की बटालियनों के कार्मिकों की जागरूकता के लिए एच.आई.वी./एड्स पर सेमीनार का आयोजन

05 फरवरी, 2005 को 26, 120 तथा 129 बटालियनों के संयुक्त प्रयासों से जम्मू-कश्मीर आर्ड पुलिस कम्पलेक्स, छन्नी हिम्मत, जम्मू में एच. आई.वी./एड्स संबंधित सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें एड्स निवारण और कन्ट्रोल सोसाईटी जम्मू, के डॉ० एम.ए. वानी (प्रोजेक्ट डायरेक्टर) तथा उनके अन्य सहयोगी उपस्थित हुए। सेमीनार में सभी बटालियनों के जवानों ने काफी मनोयोग से हिस्सा लिया। डॉ० एम. ए. वानी ने एच.आई.वी./एड्स के बारे में विस्तृत रूप से बताया और इससे बचने हेतु सुरक्षित उपायों की जानकारी दी। इस अवसर पर 120 बटालियन के द्वि.कमा. अधिकारी, श्री बलराम शील तथा 129 बटा० के उप कमां० श्री छोटन ठाकुर, सहित उक्त सभी बटालियनों के चिकित्सा अधिकारी उपस्थित हुए। इस सेमीनार में जवानों को इस बीमारी की भयावहता से आगाह किया। समारोह के अंत में द्वि.कमा. अधिकारी श्री बी.डी. दास ने एड्स निवारण और कंट्रोल सोसाईटी तथा सभी वक्ताओं का इस नेक कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया तथा जवानों का आहवान किया कि वे इस भयानक महामारी से सदैव सावधान रहे तथा समय रहते समुचित कदम उठाए ताकि इसे और फैलने से रोका जा सके।





बुरा न माने.....ज्ञानवर्धन है

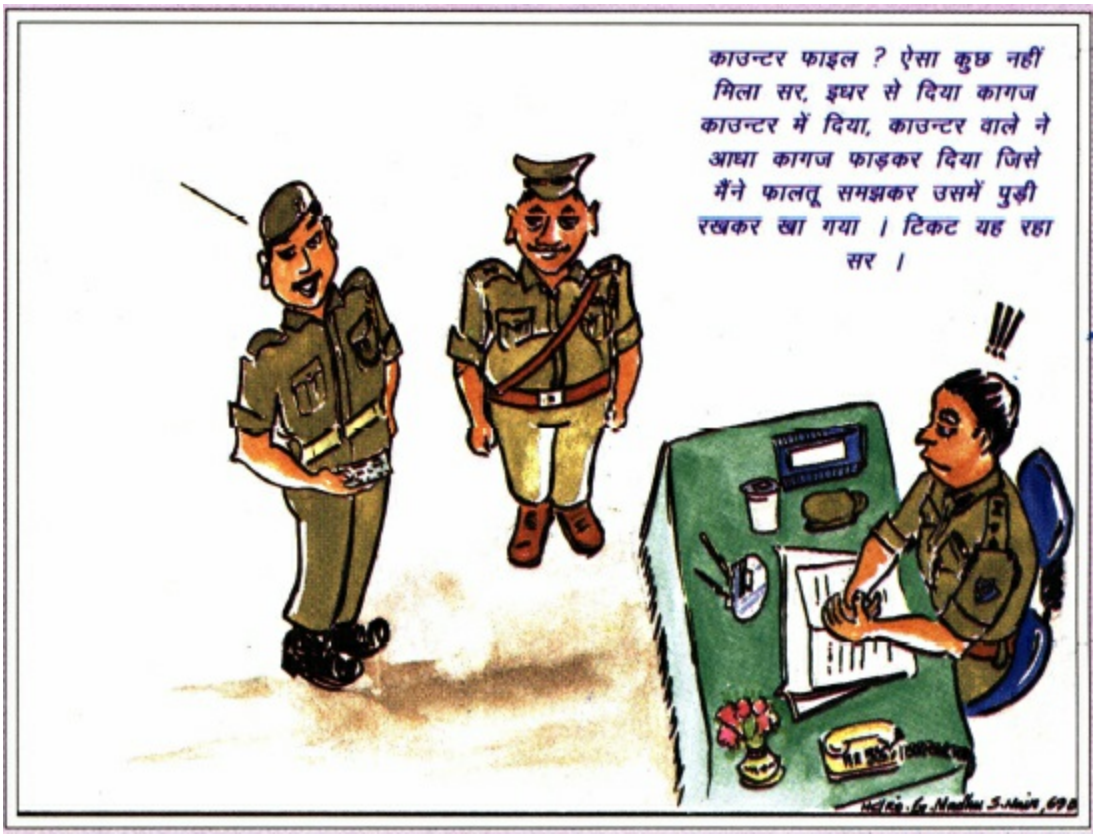
क्या आप जानते है कि हमारे बल में कार्मिक कितने प्रकार के होते हैं ?..... यदि नहीं मालुम है तो जानिये..... जनाव तीन प्रकार के होते हैं :-

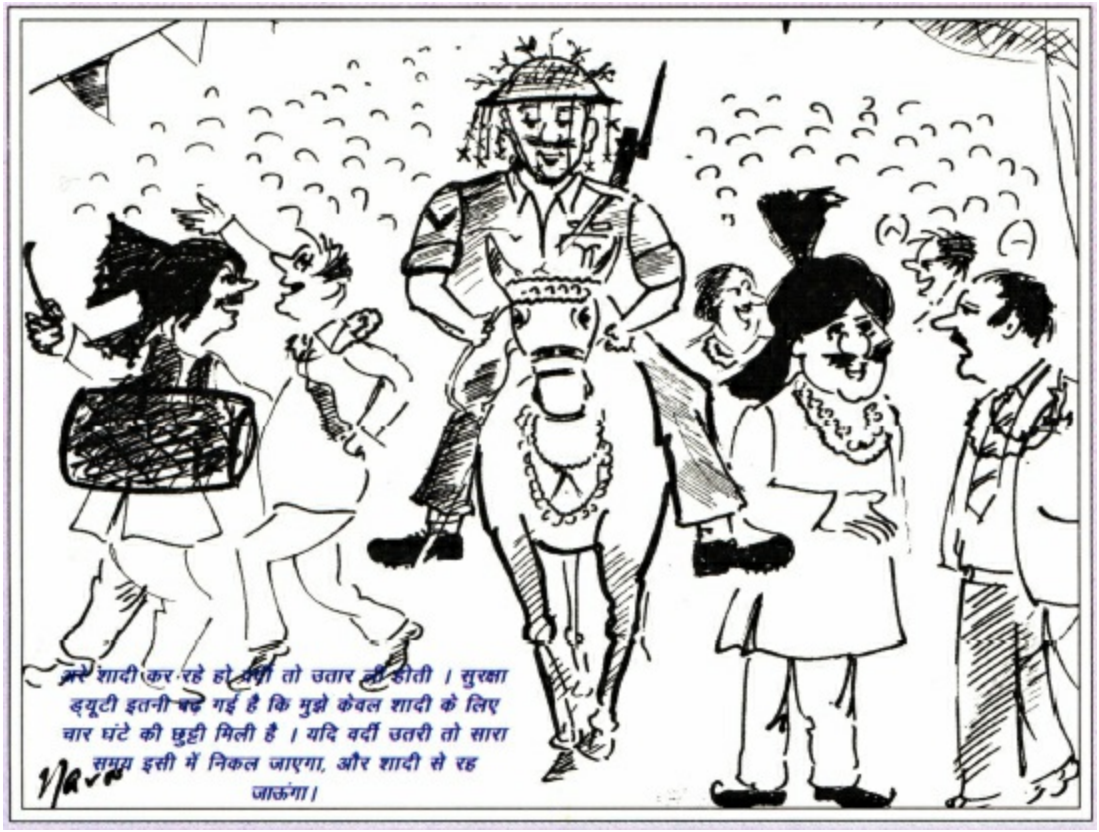
केन्द्रवर्ती :-

ये बल के वो सर्पित संघर्षशील कार्मिक हैं जो अपनी अमुल्य सेवाएं केवल दिल्ली में ही प्रदान करने पर विश्वास रखते हैं। केवल इनका ही नहीं हम सबका भी यह मानना है कि ऐसा वे इसलिए नहीं करते कि इसमें उनका कोई स्वार्थ है, बल्कि शायद अगर ये ऐसा न करें तो बल का चलना मुश्किल हो सकता हैं।

निकटवर्ती :-

केन्द्रवर्ती कार्मिकों को हमेशा समर्पित व संघर्षशील बनाये रखने में इस दूसरी श्रेणी के कार्मिकों का विशेष योगदान है, क्योंकि ये वो कार्मिक होते हैं जो हमेशा उनकी जगह लेने की बाट जोड़ते रहते हैं। इसलिए ये हमेशा केन्द्र के आस-पास रहकर ही सेवाए अर्पित करने में विश्वास रखते हैं ताकि वे किसी केन्द्रवर्ती की गलती होने पर उसकी जगह पकड़ सके। झड़ौदा कलां, चण्डीगढ़, रामपुर, अलीगढ़, मेरठ, ग्रेटर नोएडा, गुड़गॉव इत्यादि इनके मुख्य कार्यक्षेत्र हैं।





<u>चक्रवती :-</u>

बल के वेहद सज्जन व सहृदय कार्मिकों का बना यह वह समूह है जिनका मूलमंत्र है **"जेहि विधि राखे बल वेहि विधि रहिये।"** यानि देश के चारों कोनों में घूमते हुए अपनी सेवाए अर्पित करना ही इनकी विशेषता है। इनकी सबसे बड़ी खूबी यही है कि इन्हे भी केन्द्रवर्ती समूह के कार्मिकों की तरह यह गलतफहमी हमेशा रहती है कि अगर ये नहीं होंगे तो बल चलेगा कैसे।

तो लो जनाब ये है तीन समूहों के कार्मिक अब आप बताएं कि आप कहाँ फिट हैं या फिर खुद जानिये... मेरी तरह.....

–सहा०कमा० हरीश मेहरा
67 बटा०

शक्ति जल की

कहते है कि जल ही जीवन है,

बिना जल के कुछ भी नहीं है जग में,
परन्तु वॉहरी जल की सुनामी लहरोंने,
सब कुछ नष्ट कर डाला पल भर में।
आखिर किस बात पर रूठ गए जल देवता तुम हमसे,
दिखाया विकराल रूप अपना कुछ ही पल भर में,
बहा ले गये अपने साथ हमारे सभी अपनों को कुछ क्षण भर में।
सुनकर नन्हें मुन्हें बच्चों की चीख पुकार,
क्या हृदय तक तुम्हारा नहीं कांपा,
पल में कर डाला सब कुछ तहत-नहस,
नहीं उस खतरे को किसी ने भॉपा।
अब है, तुम्हारी बजह से चारों और खामोशी,
अब नहीं रही खुशी की लहर जीवन में उनके कोई,
नहीं आ सकते वह सभी अपने, न वस्तु वह कोई,
जो हमने है तुम्हारी वजह से खोई।
तेरी सुनामी लहरों से न बच पाए मंदिर, मजिस्द, गुरूद्वारे,
उस नजारे को देखकर दंग रह गये सृष्टि के प्राणी सब सारे,
प्रशासन भी न कर पाया उस समय कुछ,
हे प्रभु भविष्य में करना ऐसा तू कुछ,
ताकि मिलकर रहे आपस में सब खुश।

उप नि० (स्टेनों) नरेन्द्र कुमार भारद्वाज
13 बटालियन

“एक गुटखा आदमी की अर्थी उठा देता है”

गाँव-गाँव और गली-गली फैल गया इसका जहर,
संसार की सर्वाधिक बिक्री वाला यह स्वादिष्ट जहर।
धूम मचा दे, रंग जमा दे, जीते जी अर्थी उठा दे,
जिन्दों की अर्थी उठवाये, फिर भी बेवकूफ गुटखा खाये।
हुई नपुंसक युवा पीढ़ी, मुख कैंसर ने दिया अट्हास,
दाँतों का भी हुआ कबाड़ा, सेहत का भी हो गया सत्यानाश।

अक्ल का अंधा खाने वाला, जहर खरीदकर खाता जाए,
गाँव को बुरा बनाने वाला, जहर बेच कर कमाता जाए।
रंग-बिरंगी पाउचों में जहरीला है पान मसाला,
कैंसर की प्रयोगशाला बन गया है खाने वाला।
तबाह यमराज, मात पराग, मृत्यु गंधा, इसके कितने नाम है,
जिसमें जितना जहर है, उसके उतने ही कम दाम।
हँस कर कहता गुटखा सबसे, कितना मैं सर्वव्यापी हूँ,
हे मूर्ख मुझे खाने वालों, मैं यमराज की कार्बन कॉपी हूँ।
हे सेहत साक्षात सर्वनाश, है कानपुर के बदनुमा दाग,
हे मुख कैंसर के आदि स्त्रोत, तने बना दिया देश को पीकदान।

कमाडेंट-106 बटालियन
सी.सी.डी.

जादूगर

जादूगर का खेल निराला।
टोपी काली जूता काला।
काली कोट छड़ी भी काली।
तेरा बचन न जाये खाली।
जादू मंतर जैसे खोले।
अण्डे में से बच्चे बोले।
परी उतर कर नीचे आये।
खेले, झूमें-नाचे गाए।
लम्बा हो बौना बन जाए।
ताश की गड्डी महल सजाए।
जादूगर कुछ ऐसा कर दो।
हरियाली हर छोर से भर दो।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई।
कभी लड़े ना हम सब भाई।

झूठ न बोले कोइ बच्चा।
दिल सच्चा मन भी हो सच्चा।
इस दुनिया के सारे झूठों हो जाय।
का मुंह काला।

हव० तीरथ राज पाण्डेय
101 बटा० आर.ए.एफ.

जीना एक कलॉ है

छोटा जीवन बड़े इरादे,
दोनों का कोई मेल नहीं।
एक दिन दीपक बुझ जायेगा,
इसमें ज्यादा तेल नहीं।
जीना एक कलॉ है, लोगों,
जो किसी-किसी को आता है।
जीना जीवन में एक लक्ष्य बना कर,
कोई बच्चे का खेल नहीं।

राकेश कुमार सिंह
101 बटालियन

सिपाही की जुबानी

वीर-भूमि भारत की प्यारी मिट्टी हिन्दुस्तान की।
कई वीरबर पैदा हो गये, दी कुर्बानी जान की।
जिस बल पर देश घमड करता, वो के.रि.पु.बल कहलाता है।

सन् 1939 में खड़ा हुआ, हर कोइ इसे बुलाता है।
सब का यह विश्वासी है, सबको ये धैर्य बंधाता है।
भारत के दुश्मन को मिट्टी में यही मिलाता है।
09 अप्रैल, 1965 को सी.आर.पी.एफ. ने अपनी ताकत दिखायी थी।
पाकिस्तानी सेना की, एक छोटी सी कम्पनी ने छक्के छुड़ाई थी।
जब संसद पर हुआ था हमला, तब सी.आर.पी.एफ. ही आगे आई थी।
संसद की आन और नेताओं की जान बचायी थी।
बल की वीरांगना कमलेश कुमारी ने वीरगति पाई थी।
भारत से जो टकरायेगा मिट्टी में उसे मिला देगें।
खाते है कसम तिरंगे की, सीने की छलनी बना देगें।
सी.आर.पी.एफ. का वीर सिपाही बम तोपों से कम नहीं।
हमसे लड़े ऐसा किसी दुश्मन में दम नहीं।
देश के कोने कोने में बल का झंडा गड़ा होगा।
आंधी आये या तुफान, फिर भी जवान खड़ा होगा।
हमें कसम है भारत माता की, हाथ में बन्दूक उठायी है।
जिसके नाम से दुश्मन कॉपते है, हम उस बल के सिपाही हैं।
सी.आर.पी.एफ. महान है, सेवा भक्ति इसकी शान है।
ईमानदारी से करते हम ड्यूटी, यही हमारी पहचान है।
डरने की कोई बात नहीं, पूरा देश हमारे साथ है।
लोहे का बना है यह सीना, पत्थर के बने ये हाथ हैं।
पीछे हटने का काम नहीं, आगे ही बढ़ते जायेगें।
मर जायें तो गम नहीं, सीने पर गोली खायेगें।

वार्ड वॉय राधेश्याम शर्मा
ग्रुप केन्द्र, इलाहाबाद

अफसर के प्रकार

क्या आप जानते हैं कि बल में अफसर कितने प्रकार के होते हैं ?..... नहीं...तो

सुनिये :-

पहले प्रकार के वो अफसर होते हैं जिनका व्यक्तित्व देखने के आधार पर ही पता चल जाता है कि जनाब अफसर हैं।

दूसरे प्रकार के वो अफसर होते हैं जो ऊपर की श्रेणी से मेल तो नहीं खाते, पर जब मुँह से चार शब्द निकालेगें तो आप कायल हुये बगैर नहीं रहेगें और आप समझ जायगें कि जनाब अफसर ही हैं।

तीसरी श्रेणी के अफसर बदकिस्मती से ऊपर की दोनों श्रेणियों से मेल नहीं खाते, पर हाँ पहचान पत्र की बजह से जरूर मनवा सकते हैं कि जनाब भी अफसर हैं।

चौथी, सबसे खराब श्रेणी में वे आते हैं जो परिचय-पत्र दिखाने के बाद भी पिटाई खा जाते है कि झूठा पहचान पत्र कहाँ से बनाया।

बुरा न माने...खुद को पहचाने....तथा ऊपर की श्रेणियों तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील रहें.....मेरी तरह.....

सहा०कमा० हरीश मेहरा
67 बटा०

कहानी

क्रोध

–सिपाही बलराम सिंह
45 बटा०, केरिपुबल

क्रोध मनुष्य के विनाश का कारण होता है, जिस तरह लोहे में लगा हुआ जंग उसे धीरे-धीरे नष्ट कर देता है उसी प्रकार दूसरों पर किया गया क्रोध स्वयं का विनाश करता है।

क्रोध एड्स से भी भयंकर बीमारी है जिसका इलाज डॉक्टर नहीं स्वयं अपने आप किया जा सकता है। जिस व्यक्ति में क्रोध रूपी बीमारी समा गयी है। वह हमेशा यह कहता है कि "तुमने मेरा आज तक राम रूप देखा है अब रावण रूप भी देखा।" यहाँ सोचने वाली बात यह है कि जो इंसान जीवन भर ब्राह्मचारी रहता है और बुढ़ापे में भोग-विलास, मदिरा सेवन करना आरंभ कर देता है, क्या उसे स्वर्ग की प्राप्ती होगी

या नरक को ? यह स्वर्ग नरक का फैसला ईश्वर पर छोड़ने वाला वह इन्सान क्या आपके विचार में ब्राह्मचारी कहलाने योग्य है ? क्रोध में उठाया गया हर कदम विनाश की ओर ले जाता है, और क्रोध उसी व्यक्ति को आता है जिसकी बुद्धि कम हो जाती या भृष्ट हो जाती है। इसलिए किसी कवि ने कहा है।

"विनाश काले विपरित बुद्धि।"

जब मनुष्य के जीवन का अन्तिम समय आने वाला होता है, तब वह इंसान अपने पथ से भटकना शुरू कर देता है जैसे रावण, कंश इत्यादि। लेकिन सज्जन श्रेष्ट पुरूष सर्वदा दुख हो या सुख, गम या खुशी सभी अवसरों पर एक जैसा व्यवहार करते हैं तथा अपने मन को कभी भटकने नहीं देते हैं। एक शहर में एक सज्जन तथा गरीब बलराम नाम का आदमी रहता था, वह मजदूरी कर अपना व अपने परिवार का जीवन यापन करता था, परन्तु वह था बड़ा सच्चा और ईमानदार। गरीब होते हुए भी, सभी लोग उस पर विश्वास किया करते थे। इस गरीब आदमी का लेन-देन साहुकार से भी रहता था, अचानक गरीब बलराम एक वार गम्भीर रूप से बीमार हो गया और उसका काम धन्धा बन्द हो गया। उसके परिवार वालों ने सेठ से उधार सामान लेकर अपना जीवन यापन किया, गरीब बलराम की बीमारी में कोई खास सुधार नहीं हुआ और काफी दिनों तक सेठ को वापिस पैसे नहीं मिले तो सेठ क्रोध करने लगा, काफी दिन हो गये, अभी तक बलराम पैसा देने का नाम नहीं ले रहा है। यह सोचकर सेठ एक दिन गरीब बलराम के घर जा धमका और गरीब बलराम से बोला, "भाई मैंने तुम्हारी ईमानदारी और मेहनत देखकर सामान दिया था, लेकिन आज की तारीख तक आपके प्रति काफी पैसे का कर्ज हो गया है, तुम्हारी तबियत भी दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है, इसलिए तुम पुराना उधार कर्ज चुकाओ। इसके बाद ही उधार समान ले जाना।

गरीब बलराम ने सोचा सेठ ठीक बोल रहा है, मेरी बीमारी ठीक होने का नाम नहीं ले रही है, और जिन्दगी का क्या भरोसा कब क्या हो जाय ? यह सोचकर बलराम साहुकार से वोला सेठजी फिलहाल हमारे पास आपका कर्ज अदा करने के लिए कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे मैं देकर कर्ज से मुक्त हो सकूँ, पर हमारा एक वफादार कुत्ता है जिसे मैंने अपने परिवार के एक सदस्य की तरह पाला है। और इस जानवर ने भी अपनी वफादारी से हमारी पूरी हिफाजत की है।

सेठ जी आप सभी धन सम्पदा से परिपूर्ण व्यक्ति हैं और आपको यह वफादार कुत्ता रखवाली के लिए ठीक रहेगा। जब तक मैं आपका कर्ज न दे दूं, तब तक इसे आप अपने पास रखे।

सेठ ने साचा ठाक ह, पता नहीं यह पैसा दे पाएगा या नहीं भी, कुत्ते को ले जाता हूँ। सेठ कुत्ते को अपने घर लेकर चला गया। कुछ दिनों बाद रात में चोर सेठ के घर में चोरी करने आये, जिनके पास प्राण घातक हथियार भी थे। कुत्ता ने सभी चोरों को देखा पर, बिल्कुल आवाज नहीं की और चुप-चाप छुपकर उनकी हरकतों को देख रहा, कुत्ते ने सोचा कि यदि मैं शोर मचाता हूँ तो चोर हमारे मालिक या मालिक के

परिवार के सदस्यों को जान से मार सकते हैं। अतः वह चुप रहा।

चोरों ने जब किसी प्रकार का कोई शौरगुल नहीं सुना तो वे बड़ी सावधानी से सेठ के घर से सोने-चाँदी और अन्य कीमती सामान चोरी कर ले जाने लगे। बफादार कुत्ता चोरों की हरकतों को देखता हुआ उनका पीछा करने लगा। सेठ के घर से कुछ दूर जाते ही एकान्त स्थान पर बैठकर चोर बंटवारा करने लगे। चोरों को बंटवारा करते-करते सवेरा होने का आभास होने लगा तो उन्होने जल्दी-जल्दी सामान बाटना शुरू कर दिया ताकि उन्हें कोई देख न लें। वफादार कुत्ता जोर-जोर से भौकने लगा, चोर सोचने लगे कि लगता है कोई आ रहा है, चलो सभी सामान को छुपा दे, कल बांट लेगें, सामान छुपाने के लिए आसपास देखने लगे। उन्हे एक कुआँ नजर आया, जिसमें पानी नहीं था। तथा उसका कोई इस्तेमाल भी नहीं करता था। चोरों ने चोरी का सभी सामान उस कुँए में डाल दिया और वे वहाँ से भाग गये। कुत्ता चोरों की सारी हरकतें अपनी आँखों से देखता रहा। जब चोर चले गये तब कुत्ता वहाँ से अपने मालिक के घर गया। और मालिक के जागने का इन्तजार करने लगा। जैसे ही सवेरा हुआ, सेठ और उनके परिवार के सदस्यों ने देखा कि आलमारी खुली है। सभी सामान अपने जगह से गायब है। सेठ रोने चिल्लाने लगा। मेरा सभी समान चोर ले गये, मैं बरवाद हो गया, लुट गया और इस चोरी का सारा दोष वफादार कुत्ता और गरीब बलराम पर मढ़ दिया। बलराम बोलता था कि मेरा कुत्ता वफादार है, यह आपकी हिफाजत करेगा। इस कुत्ते। की वजह से हम लोग सोते रहे, चोर चोरी कर सभी सामान लेकर चले गये, पर यह नमक हराम कुत्ता भौंका तक नहीं अगर कुत्ता भौंकता तो हम जाग जाते और चोर चोरी नहीं कर पाते।

सेठ चोरी के गम में क्रोध से लाल पीला हो गया। और कुत्ते को बहुत जली कटी बाते बोलने लगा। तुमने मेरा सारा सामान चोरी करा दिया। बलराम बोलता था, मेरा कुत्ता बफादार है। हमेशा आपकी हिफाजत करेगा, अरे तेरे कुत्ते ने तो मुझे बरवाद कर दिया, जब गरीब बलराम ने सेठ की जली कटी बातें सुनी तो वह अपने ईमानदारी पर दाग लगता देख, कुत्ते को मारने के लिए क्रोध से डंडा उठा लिया और सोचा जिसे मैंने अपने बच्चे की तरह पाला, आज इस कुत्ते ने मेरा अपमान करवा दिया, इसे मैं जान से मार दूंगा। बलराम ने कुत्ते को मारने के लिए डंडा उठाया, कुत्ता तब बलराम के चरणों में सिर छुका कर रोने लगा, क्योंकि सेठ ने कुत्ते को बहुत पीटा था। कुत्ते को अपने पैरों पर सिर झुकाये रोते देख बलराम को उस पर दया आ गई और प्यार से कुत्ते का सिर सहलाने लगा।

तब वफादार कुत्ते ने अपने मालिक का प्यार देखा, तो उसकी धोती को पकड़कर खिचनें लगा। गरीब बलराम कुत्ते का इशारा समझ गया कि वह कुछ कहना चाहता है। कुत्ता आगे-आगे चलने लगा, उसके पीछे-पीछे गरीब बलराम और सेठ जाने लगे, जिस कुँए में चोरों ने सेठ का सामान छुपा रखा था, उस कुँऐ में कुत्ता ने इशारा किया। जब बलराम और सेठ ने कुँआ में झाक कर देखा तो सारा सामान कुँए में दिखाई दिया।

गरीब बलराम ने प्यार से अपने वफादार जानवर कुत्ते को चूम लिया। और सेठ को अपने क्रोध में कटे गये शब्दों पर शर्मिदगी महसूस हुई। सेठ ने बलराम के कर्ज को माँफ कर दिया तथा कुत्ते को वापस करते हुए बोला मैं अपने क्रोध पर शर्मिदा हूँ।

(यह कहानी काल्पनिक है)



ग्रुप केन्द्र, नागपुर द्वारा क्षेत्रीय कावा समिति के सहयोग से चलाए जा रहे हस्थकरघा प्रशिक्षण में भाग लेती महिलाएं।

सीआरपीएफ वाइब्ज वेलफेयर एसोसिएशन "कावा" महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में निरंतर प्रयासरत है। इस उददेश्य के लिए कावा ने देश के विभिन्न भागों में स्थित हमारे ग्रुप केन्द्रों व बटालियन कैम्पस में कार्यरत परिवार कल्याण केन्द्रों में, क्षेत्रीय कावा समितियाँ गठित कर महिलाओं के सर्वागीण विकास तथा उत्थान के लिए कार्य करना आरंभ कर दिया है। केन्द्रीय कावा समिति ने अपनी सभी क्षेत्रीय समितियों से बल कार्मिकों की महिलाओं के कल्याण से जुड़े

विभिन्न क्रिया कलापों को अपने हाथ में लेकर नई दिशा देने की पहल की है।

आज लगभग 40 परिवार कल्याण केन्द्रों में केन्द्रीय कावा समिति की पहल पर क्षेत्रीय कावा समितियां बल कार्मिकों की महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु अनेक कल्याण कार्यक्रम चला रही हैं ताकि आज के परिवेश में हमारी महिलाएं अन्य महिलाओं की बराबरी कर सकें और अपने आप को हीन व असहाय न समझें। ग्रुप केन्द्र परिवार कल्याण केन्द्रों में विभिन्न तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं, संगोष्ठियां आदि आयोजित कर कावा ने महिलाओं को विकास की एक नई राह दिखाई है ताकि वे गर्व व सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। कावा ने महिलाओं को सामाजिक दायित्वों का निर्वहन, शिशु पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, साफ-सफाई, पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन तथा परिवार की आर्थिक स्थिति के स्त्रोतों में वृद्धि जैसे कार्यक्रम आयोजित कर एक नए अध्याय का सूत्रपात भी किया है। बल परिवार कल्याण केन्द्रों में महिलाओं के विकास एवं उत्थान के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें सशक्त बनाने के लिए प्रयासरत हैं। बल की विभिन्न संस्थानों में कार्यरत क्षेत्रीय कावा समितियों ने विश्व महिला दिवस के अवसर पर अनेक कार्यक्रम सेमीनार आयोजित कर महिला को आगे आकर अपने ज्ञान, बुद्धि, कौशल तथा साहस को उजागर करने का आह्वान किया है।



ग्रुप केन्द्र, इम्फाल के परिवार कल्याण केन्द्र की महिलाओं द्वारा निर्मित वस्त्रों की स्टॉल।



क्षेत्रीय कावा समिति द्वारा चलाये जा रहेगा सरी कल का जायजा लेते दो क्षेत्रीय समिति की कावा अध्यक्षा श्रीमती पी. एम. नागर।

विश्व महिला दिवस पर क्षेत्रीय कावा समितियों द्वारा विशेष कार्यक्रम

ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, आवड़ी में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के अधिकार, राष्ट्र एवं समाज निर्माण में उनकी प्रमुख भूमिका, राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में योगदान, विश्व स्तर पर महिलाओं की उपलब्धियों आदि पर गहन एवं विस्तृत परिचर्चा की गई। महिलाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कायम की गई मिसालों के इतिहास से सभी को अवगत कराया गया। इस अवसर पर महिलाओं की पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याओं पर चर्चा की गई। चिकित्सकीय जानकारी के साथ-साथ सरकार द्वारा महिलाओं के कल्याण के लिए गठित विभिन्न आयोग,

सहायता प्रकोष्ठ तथा सुविधाओं इत्यादि की जानकारी दी गई। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठित कुछ महिलाओं ने अपने विचार व्यक्ति किए।



ग्रुप केन्द्र, आवडी द्वारा महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेती महिलाएं।



महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाली महिलाओं को पुरस्कार प्रदान करते श्रीमती सी.जे.एस. हीरा।

विश्व महिला दिवस 08 मार्च 2005 को केरिपुबल ग्रुप केन्द्र-दो, अजमेर में भी परंपरागत रूप से मनाया गया। 8 मार्च को महाशिवरात्रि का पर्व भी था जो शिवशक्ति प्रतीक है। समारोह में मुख्य अतिथि पुलिस उप-महानिरीक्षक, केरिपुबल अजमेर, श्री ए.एस. मलिक थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सी.जे.एस. हीरा, अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र दो अजमेर ने की। समारोह को संबोधित करते हुए श्री हीरा ने कहा कि प्राचीन काल से ही नारी को शक्ति का दूसरा रूप माना गया है। वह त्याग, प्रेम व बलिदान की प्रतीक है। देश और समाज के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह आवश्यक है कि महिलाओं को समानता का अधिकार मिले ताकि वे सामाजिक और आर्थिक स्तर पर अपनी पहचान बना सके। उनके हर प्रकार के शोषण एवं उत्पीड़न से मुक्ति हेतु उपयुक्त वातावरण तैयार किया जाना चाहिए। महिलाओं की शिक्षा का ग्राफ हाल के वर्षों में बहुत बढ़ा है। आज ऊँची से ऊँची डिग्रियाँ उनके पास हैं। कला हो या विज्ञान या फिर वाणिज्य, हर क्षेत्र में उनका दबदबा है। आज शिक्षा की बदौलत ही महिलाएं विभिन्न उच्च पदों पर कार्यरत हैं। समाज का भी नजरिया बदला है, हर माता-पिता की इच्छा यहीं होती है कि उनकी बेटी आत्मनिर्भरता प्राप्त करे। महिलाएं अभी नौकरी के साथ घर का दायित्व भी

बखूबी निभा रही हैं। केन्द्रीय कावा सामिति के सहयोग से क्षेत्रीय कावा सामिति ऐसे भरसक प्रयास कर रही है कि ग्रुप केन्द्र की महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सुदृढ़ बने। इसके लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वाभिलम्वी बनाने के प्रयास किए जा रहे।

ग्रुप केन्द्र, भोपाल की क्षेत्रीय कावा समिति की उपाध्यक्षा श्रीमती पुष्मा नेगी ने कहा कि महिला दिवस हमें याद दिलाता है महिलाओं के सम्मान, स्वाभिमान एवं गौरव का जिन्होंने अपने बल बूते पर यह साबित कर दिया कि वे किसी भी क्षेत्र में कहीं भी पुरुषों से कम नहीं हैं। हालत चाहे जैसे भी हो वह मुकाबला कर सकती हैं हर परिस्थिति का। आदिकाल से लेकर आज तक स्त्री को विभिन्न स्वरूपों में देखा गया व सम्मान दिया गया। कावा महिलाओं में आत्म विश्वास पैदा कर उन्हें जीविकोपार्जन के कार्य क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलाने के लिए प्रयासरत है।

श्रीमती नेगी ने कहा कि घरेलू महिलाएं अपने आत्म विश्वास से ही सफल हो सकती है। उन्हें अपने बच्चों को अच्छा नागरिक बनाने की शिक्षा, संस्कार, सहिष्णुता तथा क्षमा शीलता आदि जैसे नैतिक गुणों की शिक्षा देनी चाहिए। अपने पति से आदर्श तालमेल रखते हुये, वे ऐसे प्रयास करें कि उनका जीवन साथी किसी भी मोड पर खुद को कमजोर न समझ बैठे।

महिलाओं का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी सशक्त होना आवश्यक है ताकि वह समाज में अपनी अलग पहचान बना सके। केवल समाज से अपेक्षाएं रखने और खुद प्रयत्न न करने से कोई ठोस परिणाम नहीं निकलेगे। इसके लिए उन्हें को खुद को आगे आना होगा।



ग्रुप केन्द्र सिंदरी में महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते बच्चे तथा महिलाएं।



महिला दिवस आयोजित कार्यक्रम में भाग लेती बल कार्मिकों की महिलाएं।

नव वर्ष की शुभकामनाएं

बादलों की संगोष्ठी, आकाश में देखकर
बदली बनकर मेद्यनाद करती जब।
वर्षा में वारिस, तप-तप कर पसीजती जब,
सूरज और धरती के फेरों से लुक छुप,
खेल खेल में दिन रात बन जाती जब,
नव वर्ष आ जाता है वरस-वरस कर,
भुलाकर वर्षों की वर्षा तब।
कौन है समय का साथी, कौन है समय का साक्षी,

कौन बनाता है समय को, जो दे जाता है उदासी।
किस पर भरोसा करता है,
कौन तुम पर भरोसा करता है।
किसका साथ है प्यारा तुझे, जिस पर जग करता हंसी,
कल का बालापन, आज युवा हो चला,
युवा था जो बूढ़ा दिख रहा वही बूढ़ा चला गया काशी।
ना तेरा राम रहा, ना रहीम का घर सारा,
स्वास्थ की करता पूजा, स्वास्थ तक रहता साथी।
बादल की बदला बदली,
साकार दफ्तर में होती है।
पूरा भारत, सी.आर.पी. आकाश मण्डप बन,
बदलों की भाँति भागते दीखते हैं।
और बदला में बदली होती है।
समय उसको नहीं छोड़ता कभी,
उसकी भी सी.आर.पी.एफ. में बदली होती है।
कभी काले मेद्य घनघनाकर बर्षा के साथ,
तो कभी सफेद बादल बर्फ के रूप में,
एक ही ग्रुप में होती है।
आने वाला समय, बीते समय का कल है।
जो आज कर रहा है, वही तेरा कल है,
ऊपर ऊँचा आसमान, तो नीचे धरती तल है।
छोटा-बड़ा कौन किससे जानता, रवि
सिर्फ समय का पल है.....

सन्तोष कुमार श्रीवास्तव
ग्रुप केन्द्र, इलाहाबाद

“फील गुड”

बल के उत्थान में सोच-समझकर,
तन-मन से जूझकर,

“फौल गुड” को दिल में रखकर,
सरकार के ऐहसान को,
दिलो-दिमाक में संजोकर,
गेजों व औजारों के बक्से को,
ढोते हुए. पसीना बहाते हुए,
रणबाँकुर अधिकारियों व
जांबाज जवानों द्वारा
प्रयोग किये जा रहे हथियारों को,
निरीक्षण व मरम्मत करते हुए,
बेजान हथियारों में, जैसे जान भरते हुए,
जवानों को जरूरी सलाह देते हुए,
“स्थित-प्रज्ञ” कर्मयोगियों की टीम बनकर,
देशभर में फैली वाहिनियों में,
अनूठा छाप छोड़नेवाली टीम रचाई है।
हमारे के०रि०पु०बल की जान सी संस्था
नाम है जिसका -ए.डब्लू.एस.-सात।
ओ.सी. साहब के कुशल नेतृत्व में,
हथियारों के डाक्टर के रूप में,
देश सेवा के रंग मंच पर,
जी जान से सेवारत है -ए.डब्लू.एस,-सात

हव (आरमोरर) कुलकर्णी रा० भी०
ए.डब्लू.एस.-7, केरिपुबल
इम्फाल (मणिपुर)



महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेती ग्रुप केन्द्र, नीमच की महिलाएं।



ग्रुप केन्द्र-*II* अजमेर में महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेती महिलाएं।

रजि. न. 4767/87



55वें गणतंत्र दिवस, 2005 पर कोलकता में आयोजित परेड में भाग लेने वाली केरिपुबल की टुकड़ी परेड कमांडर श्री विजय कुमार, सहायक कमांडेंट को सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ी की ट्राफी प्रदान करते बंगाल क्षेत्र सेना मुख्यालय के कमांडिंग अधिकारी मेजर जनरल श्री जेड.यू. शाह ।

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

30 जून, 2005



केंद्रीपुवल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा अपने पूर्वोत्तर राज्यों के विजिट के दौरान
मणिपुर के महामहिम राज्यपाल श्री एस.एस. सिद्धू से विचार विमर्श करते हुए



केरल के मुख्य मन्त्री श्री ओमन चाँदी, आर. टी. सी. पल्लीपुरम में आयोजित परेड समारोह में सर्वश्रेष्ट इनडोर प्रशिक्षु का प्रमाण पत्र रगंरूट विनोद कुमार को प्रदान करते हुए



बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा अपने विजिट के दौरान ग्रुप केन्द्र, इम्फाल के परिवार कल्याण केन्द्र में कावा द्वारा बल कार्मिकों की महिलाओं के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों का जायजा लेते हुए



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खण्ड-18 अंक-3
जून, 2005
9 अषाढ़, शक, 1927

मुख्य सम्पादक
सुनील बावा

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
जन सम्पर्क अनुभाग

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
यू. एस. प्रिन्टर्स, बी-186, ओखला, औद्योगिक क्षेत्र - I, नई दिल्ली-110020



<u>सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष</u>

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

<u>सदस्य</u>

विक्रग श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक)

एस. एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण)

ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)

वी. डी. टोकस, उप महानिरीक्षक (परिचालन)

एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)

सी वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)

एल आर सिद्रा, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)

जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

अंदर के पृष्ठों पर :-



राष्ट्रीय पुलिस बैंड सस्थान में पहले कोर्स का शुभारम्भ



त्रासदी में आप ही सर्वोत्म चिकित्सक है



बल के शौर्य एवं गौरव का प्रतीक-सरदार पोस्ट



सरहदे अमन के कारवां की सुरक्षा का दायित्व



दीक्षांत परेड समारोह



बल के सिविक एक्शन कार्यक्रम



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में सी. आर. पी. एफ. पब्लिक स्कूल का उत्कृष्ट प्रदर्शन



कावा समाचार

अन्य:-

1. जेल और चारित्रिक विकास
2. तनाव क्यों और कब तक
3. कभी न बन्द होने वाला सफर – कानवाई
4. स्वास्थ्य ज्योति योजना
5. उत्कृष्टता की मिसाल केरिपुबल की आई.आई.टी वजीराबाद
6. व्यापक दृष्टिकोण एवं सकारात्मक सोच
7. चार बात जीवन की
8. कविताएं

राष्ट्रीय पुलिस बैंण्ड संस्थान सैन्य संगीत की मधुर धुनें विकसित करने वाला उत्कृष्टता का एक प्रमुख केन्द्र होगा

.....

- **के. पी. सिहं**
भूतपूर्व निदेशक, आसूचना ब्यूरो

"देश के पहले राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान के इतिहास में यह पहला पुनश्चर्या कोर्स मील का पत्थर साबित होगा"। 16 मई, 2005 को राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड संस्थान केरिपुबल, कादरपुर (गुड़गांव) में पाईपर्स, ड्रम तथा बिगुल वादकों के लिए पहले पुनश्चर्या कोर्स का शुभारंभ करते हुए राष्ट्रीय पुलिस बैण्ड स्थापित करने का सुभाव देने वाले आसूचना ब्यूरो के पूर्व निदेशक श्री के०पी०सिंह ने कहा कि यह संस्थान पुलिस बलों को प्रेरणा तथा उत्साहित करने के लिए उच्चकोटि एवं व्यावसायिकता वाली सैन्य संगीत की मधुर धुनें विकसित करने वाला उत्कृष्टता का एक प्रमुख केन्द्र होगा। इस संस्थान द्वारा विकसित किया गया संगीत बल कार्मिकों का समारोहों के दौरान मनोरंजन करेगा। 6 महीने की अवधी के इस कोर्स में केन्द्रीय संगठनों के 8 बैण्ड कार्मिक तथा विभिन्न राज्य पुलिसों के 14 बैण्ड कर्मी भाग ले रहे हैं। यह संस्थान केन्द्रीय पुलिस संगठनों के संयुक्त प्रयासों का ही परिणाम है जिसमें उनके प्रशिक्षकों तथा प्रशासनिक स्टाफ द्वारा इन बैण्ड कर्मियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।



राष्ट्रीय पुलिस बैन्ड संस्थान, कादरपुर (गुड़गाव) में पहले बैन्ड वादक कोर्स का उद्घाटन करते आसूचना ब्यूरो के भूतपूर्व निदेशक श्री के. पी. सिंह एवं केरिपु बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा

केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने अपने स्वागत सम्बोद्धन में कहा कि यह संस्थान भारतीय तथा पश्चिमी संगीत की धुनों को मिलाकर सुरीली अच्छी धुनें विकसित कर सैन्य संगीत को प्रेरणादायक बनाने का प्रयास करेगा।



मुख्यअतिथि एवं बल के वरिष्ठ अधिकारी राष्ट्रीय पुलिस बैन्ड संस्थान में संगीत वाद्य यत्रों को देखते हुए।

अंत में पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री सी.वी.मैथ्यू ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

केरिपुबल की *158* बटा० के *760* नवारक्षी कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेकर पास आउट .....



कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेते *158* बटा० के नवारक्षी।

विगत छह दशकों के दौरान देश की समर्पित सेवा करने पर यह बल एक विशाल संगठन के रूप में उभरा है। यह बडें गर्व का विषय है कि इसने देशवासियों के दिलो-दिमाग में अपनी साख बनाई है। 11 जून, 2005 को के.रि.पु.बल कैम्पस, कादरपुर, (गुड़गांव) में 158 बटा० के 760 रंगरूटों की दीक्षांत परेड के अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक (संभरण) केरिपुबल श्री एस.एस. रावत ने कहा कि बल की लचकता, स्वीकार्यता, बहुमुखी प्रतिभा, धर्मनिरपेक्षता, निष्पक्षता, समर्पण और अनुशासन के कारण ही देश के विभिन्न भागों से राज्य सरकारों द्वारा राजनैतिक भावना से परे होकर इसकी निरन्तर मांग कर रही है।

पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपुबल, नई दिल्ली, श्री आर.के.सक्सेना ने बताया कि इन रंगरूटों को 44 सप्ताह के कठिन एवं सख्त प्रशिक्षण के दौरान एस.एल.आर, ए.के. 47, इनसेस राईफल, एल.एम.जी, कारबाईन, पिस्टल आदि जैसे आधुनिकतम स्वचालित हथियार चलाने का कठिन प्रशिक्षण, बिना हथियार के लड़ाई आदि शारीरिक प्रशिक्षण सहित विभिन्न प्रतिविद्रोहात्मक तथा आतंक विरोधी जैसे विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया गया है ताकि भविष्य में देश के समक्ष सुरक्षा परिदृश्य में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके।

158 बटा० के द्वितीय कमान अधिकारी, श्री ईश्वर सिंह ने बताया कि बेसिक प्रशिक्षण के दौरान सामर्थ्यता बढ़ाने के उपायों के रूप में रंगरूटों को क्रियाशील तथा साहसी बनाने हेतु शारीरिक अभ्यास, 18 किलोमीटर दौड़, लंबी दूरी की मार्च, युद्ध अवरोध पार करने जैसे कोर्यो का प्रशिक्षण दिया गया है। रंगरूटों को प्रशिक्षण

के दौरान पुलिस-पब्लिक संबंधों, मानवाधिकारों, राहत एवं बचाव कार्य अभियानों, विधि, सामान्य ज्ञान तथा अन्य विषयों को भी पढ़ाया गया है ताकि वे बल की बहुमुखी तथा गतिशील भूमिका को बखुभी से निभा सकें।

दीक्षान्त परेड का नेतृत्व 158 बटा० केरिपुबल के कमाण्डेंट श्री एन.एस.ठाकुर ने किया। सिपाही सी.के.दास को समस्त क्रियाकलापों की 'बेस्ट कैडेट ट्राफी', सिपाही कृष्ण कुमार और सिपाही रविन्दर कुमार को क्रमशः 'आउटडोर' और 'इनडोर' श्रेष्ठ कैडेट की ट्रॉफियॉ प्रदान की गई। सिपाही हरविन्दर सिंह को सर्वश्रेष्ठ स्पोर्टसमैन घोषित किया गया। सिपाही के. मिश्रा को अस्त्र - शस्त्र व फायरिंग जबकि सिपाही संजय सिंह को पी०टी० में श्रेष्ठ घोषित किया गया।



पुलिस महानिरीक्षक *(संभरण)* महानिदेशालय केरिपुबल श्री एस एस रावत, कादरपुर गुडगावं) कैम्पस में आयोजित *158* बटा० के नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुऐ।

जेल और चारित्रिक विकास

राजेश प्रताप सिंह
पुलिस उप महानिरिक्षक (बारामूला)



गर्मियों के मौसम में तरह-तरह के कोर्स सिखाने के संस्थान कुकुरमुत्ते की तरह हर शहर में उग आते हैं। जैसे-15 दिन में अंग्रेजी बोलें तो 10 दिन में खाना बनाना सीखें। कभी-कभी तो हद ही हो जाती है जब एक हफ्ते में व्यक्तित्व विकास की गारन्टी ले जाती है। गोया, व्यक्तित्व विकास न हुआ, गन्ने का रस हो गया जो एक हफ्ते में सड़कर खाने का सिरका बन जाता हो और जिसकी इच्छा हो वह उसका इस्तेमाल कर ले।

वैसे आज कल व्यक्तित्व विकास के लिए एक हफ्ते की जरूरत नहीं पड़ती यह तो चाईनीज खाने की तरह है कडाही में डाला, छौका और खाने को तैयार। हॉ व्यक्तित्व विकास में खाने का प्रबन्ध जरूर होना चाहिए अन्यथा कोई नोटिस नहीं लेता।

आज कल शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तित्व विकास का चलन बड़े जोरों पर चला हैं। कई लोग इस क्षेत्र में विकास करना चाहते हैं, परन्तु सबका ऐसा नसीब कहॉ?

रहिमन यह घर प्रेम का,
खाला का घर नाही।
सीस उतारे मुई धरे,
तब बैठे घर माही।

सर पर रखी गठरी को हाथ में लेकर चलो तब कहीं विकास की गुंजाइश बनती है। कभी-कभी जब गठरी हाथ के बजाय होटल में रख दी जाती है तो व्यक्तित्व और निखर जाता है। चहुँ ओर यश पताका फहराने लगती है। कुछ लोग ऊपर से थू-थू करते हैं और मन ही मन कहते हैं "काश मेरा भी ऐसा व्यक्तित्व होता? वैसे यह व्यक्तित्व विकास का सूत्र है कि जो आप करें वह सही, यदि उसे दूसरा करे तो उसका नैतिक पतन। नैतिकता तो प्रभू की मूरत है।

जाकी रही भावना जैसी।

प्रभु मूरत देखी तिन्ह तैसी।

एक कार्यालय के बाबू तो इस व्यक्तित्व विकास से इतने प्रभावित हो गये कि उन्होनें 'बसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा दिया और इस धरती के सभी लोगों को अपने कार्यालय का सहचर मान लिया। उन्हें विपत्ति में पडा देख उनसे रहा नहीं गया। उनके जीपीएफ से पैसा निकाल लिया। वो तो कुछ गिरे चरित्र के लोगों ने पकड़ लिया सो वेचारे जेल की हवा खा रहें है और उनके साहब निरन्तर अपनी सफाई देते हुए घूम रहे हैं और ठण्डी सांस लेते हुए बताते हैं -'केवल बाबू ने ही अपना करेक्टर ठीक किया' धोखा देकर मुझसे दस्तखत करा लिए और सारे पैसे रख लिए उसे मेरे ऊपर जरा भी दया नहीं आई कि लगे हाथ मेरा भी चरित्र सुधार कर देता। सुना है अब पूरे प्रकरण पर जाँच आयोग बैठ गया है। देखिए, किसका चरित्र सुधरता है- अफसर का या जांच आयोग का।

इस प्रचार के युग में अब तो नये-नये नारे भी ईजाद कर लिए गये हैं जैसे दस का विकास कराओ तो एक का विकास मुफ्त। मानों आप सब्जी मण्डी में खड़े हों और कोई कूजडा हाक लगा रहा हो-'10 रूपये की सब्जी पर एक रूपये की धनिया मुफ्त, एक नेताजी का व्यक्तित्व इतना विकसित हो गया कि अब उन्हें साहस की जरूतर पड़ रही है। एक जमाने में वे अपने मित्रों के लिये बडी साहसिक यात्रायें करते थे।



वैसे भरतवर्ष मे ज्यादातर लोग अपनी पत्नी के मायके जाने पर अपने चरित्र का विकास पड़ोसिनों, महारिनों के माध्यम से बड़ी तेजी से करते हैं। इधर जब से किरन बेदी ने तिहाड़ जेल में 'विपासना' का प्रोग्राम कराकर कैदियों का सुधार कर दिया तबसे लोग वहीं जाकर अपना करेक्टर ठीक कर लेते हैं। क्या स्टील फ्रेम, क्या आयरन फ्रेम और समाज के चरित्र पर पैनी निगाह रखने, न्याय के पुजारी सब तिहाड़ जेल में जाकर अपनी-अपनी पर्सनाल्टी सुधारने में लगे हैं। कुछ छुटभैये लोग लखनऊ जेल में जाकर ही सुधार कर रहें हैं। हालांकि उन्होंने लोगों के पुरूषार्थ पर चिन्तन कर 'काम' के जरिये अर्थ प्राप्ति की चेष्टा की थी। शायद 'कर्मणेवाधिकारस्ते' को 'कामेवाधिकारस्ते' पढ़ लिया हो। अगर इसी तरह के लोग आगे बढ़ते रहे तो आगे लोग शादी करने हेतु वर पक्ष के यहॉ जाएगे तो वार्तालाप कुछ इस तरह से होगा :-

वधू पक्ष :- "मान्यवर, हम अपनी कन्या हेतु आपके सुशील लड़के का हाथ मांगने आये है"।

वर पक्ष :- वह तो ठीक है, परन्तु आप तो यहां आकर प्रस्ताव दे रहे हैं। अभी-अभी एक सज्जन ने तिहाड़ जेल से प्रस्ताव भेजा है।

वधू पक्ष :- अरे! आप मुझे यहां देखकर न घबडाये मैं कल ही तिहाड़ जेल से लौटा हूॅ। अभी बडा लड़का वहीं पर है। छोटा कलेक्टर हो गया है लेकिन उसका कहीं और

चक्कर चल रहा है। भगवान ने चाहा तो महीने दो महीने में वह भी तिहाड़ जेल पहुँचेगा। लड़की भी ब्यूटी पार्लर चला रही है। वह भी तिहाड़ जेल के चक्कर में थी, लेकिन हमने मना कर दिया, कहा कि आपके यहां शादी हो जाए तो दोनों तिहाड़ जेल में जाकर हनीमून मनायें और व्यक्तित्व का विकास करें। वैसे आपका लड़का बड़ा होनहार है। पिछली बार तिहाड़ में ही उससे मुलाकात हुई थी। आजकल दिखाई नहीं दे रहा।

वर पक्ष :- 20 करोड़ के घोटाले में पिछले छ: माह से तिहाड़ में है। अब शादी के लिए जमानत कराये तो फिर आगे बात हो।

वधू पक्ष :- अरे ! उसकी क्या जरूरत है आपके आर्शीवाद से लडकी का ब्यूटी पार्लर का धन्धा खूब जोरों से चल रहा है। बस आजकल में ही वह तिहाड़ जेल में जाने वाली है, वहीं शादी करा दी जायेगी। बस अब आप इन्कार न करिएगा। बडी उम्मीद लेकर आया हूँ।

वर पक्ष :- ठीक है लेकिन जेल में शादी ?

वधू पक्ष :- जब आसमान में शादी हो सकती है, पानी में शादी हो सकती हैं तो फिर जेल में क्यों नहीं? मैं तो कहूँगा जेल सबसे अच्छी जगह है। इसी बहाने जो रिश्तेदार जेल से बाहर हैं वे भी जेल देख आयेंगे। हो सकता है वहा के लोगों से प्रेरित होकर कुछ और रिश्तेदार वहाँ पहुँच जायें तो समाज में अपना नाम होगा। अभी तो कई रिश्तेदार जानते नहीं कि जेल क्या है? उन्हें तो रिश्तेदार कहने में शर्म आती है।

इसके बाद दोनों पक्ष शादी तय कर जेल में शादी की तैयारी शुरू कर देते हैं और यथा प्रस्तावित शादी तिहाड़ जेल में सम्पन्न होती है जिसमें तमाम नेता, अफसर, पुलिस अधिकारी और न्याय के पुजारियों (जिनमें से कई तो तिहाड़ जेल में ही थे) ने शादी में शिरकत कर वर वधु को और आगे जाने का (शायद इण्टरपोल से भगौड़ा होने का) आर्शीवाद दिया।

जेल विकास की कुंजी हो गया है। और क्यों न हो, भगवान कृष्ण तो जेल में ही पैदा हुए। नेता जब तक जेल नहीं जाते तब तक उनका विधायक बनना संदिग्ध सा रहता है। इसलिय सन्तों, जीवन में आगे जाना हो तो जेल जाओ, तभी विधायक निधि सांसद निधि, और कमीशन के बारे में अच्छी तरह से जान पाओगे। क्योंकि यही आज की विरासत है जो हम आने वाली पीढ़ी को दे रहे हैं।

त्रासदी में आप ही सर्वोत्तम चिकित्सक है



महिला मरीज की जॉच करते बल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० कुल भूषण

बचपन में कहानी सुनते थे कि ईश्वर ने आदिकाल में ही मानव शरीर की कुम्भ के रूप में रचना कर उसे अमृत से भरकर एक नाजुक तिपाई पर टिका दिया है और मानव को हिदायत दी-कि हे मानव जब तक तुम्हारा शरीर रूपी अमृत कुम्भ तिपायी पर टिका रहेगा तभी तक अमृत टपकता रहेगा और तुम्हारा जीवन चलता रहेगा, राक्षस सदैव तिपाई की टांगों का संतुलन बिगाड़ने या उन्हें तोड़ने के लिए अग्रसर रहेगें। अतः हे मानव तुम राक्षस रूपी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, जैसी अत्यन्त लुभावनी धूर्ततापूर्ण कुटनीति से बचकर रहना। पृथ्वी लोक में स्वास्थ्य रूपी आन्नद का भोग करना। यदि तिपाई की तीनों टागों का आपसी तालमेल बिगड गया तो कुम्भ नीचे गिर जाएगा तथा तेरा नाश हो जाऐगा और तुम राक्षस का ग्रास बन जाओगे।

बड़ा आश्चर्य हुआ जब मेडिकल कालेज (आर्युविज्ञान संस्थान) में इसी तथ्य को महत्वता दी जा रही थी कि मानव जीवन मुख्यतः तीन जीवन रक्षक अगों के परस्पर संतुलन व उचित कार्यशीलता पर आधारित होता है। ये अंग हैं :- मस्तिष्क (ब्रेन), हृदय (हार्ट) व फेंफडे (लंग्स) जो माता के गर्भ में शिशु के अस्तित्व धारण करने से प्रारम्भ होकर मृत्यु तक निंरतर कार्यरत रहते हैं। इस नियमित कार्य क्षमता के लिए इन अंगों को भोजन के रूप में आक्सीजन (जीवन वायु) युक्त रक्त प्रवाह की अविरल तथा अविकल आवश्यकता होती है।

प्रमुखता के आधार पर मनुष्य का मस्तिष्क सर्वाधिक महत्वपूर्ण व संवेदनशील है।

मास्तेष्क हो बिजली बोर्ड की भांति शरीर के सभी अगों का नियन्त्रक हैं जो शरीर के अन्य अगों की कार्यप्रणाली को नियमित रखता है। यदि किसी भी क्षति या रोग के कारण मस्तिष्क को 2-3 मिनट तक आहार ना मिले तो यह होते हुए भी निष्क्रिय हो जाता है। अतः जीवन का अन्त हो जाता है जिसे हम गहरी बेहोशी (कोमा) से मृत्यु होना कहते हैं। कोमा या गहन बेहोशी मस्तिष्क में चोट, संक्रमण, जहर, बीमारी, केंसर, टयूमर आदि किसी भी स्थिति से उत्पन हो सकती है।

दूसरा महत्वपूर्ण अगं हृदय है। यदि ऑक्सीजन युक्त रक्त के निरंतर प्रवाह में कमी या रूकावट आ जाए तो हृदय अपनी संवेदनशीलता एवंम् प्रमुखता का परिचय देता हुआ तीन चार मिनट से अधिक प्रतिक्षा नहीं करता है और अपनी कार्यविधि बंद कर देता है और मृत्यु हो जाती है। हम जनसाधारण भाषा में इसे हृदय आघात या हार्ट अटैक कहते हैं या जीवन के इस ढंग से समापन होने को 'सिनकोप' कहते हैं। सिनकोप (हृदय अवमंदन व हृदय आघात) कई स्थितियों में हो सकता है, जैसे हृदय रक्त नलियों का चिकनाई से बंद हो जाना, हृदय स्पंदन में शिथिलता या अनियमितता, अचानक डर जाना, अत्यधिक मानसिक तनाव, पुरूष के गुप्त अगों पर चोट, अचानक ठण्डे पानी में नहाना या गिर जाना, यौनि, मलद्वार या शरीर की गुहा में बाहरी वस्तु या आप्रेशन के लिए औजार डालना। इन विषम परिस्थितियों में भले ही रचनात्मक परिवर्तन नहीं दिखाई दे परन्तु कार्यात्मक परिर्वतन बहुत गंभीर रूप लेते हैं और हृदय गति को बंद कर देते हैं।

शरीर का तृतीय श्रेणी का महत्वपूर्ण अंग हमारे सांस लेने-छोडनें वाले फेंफडे हैं। ये अपेक्षाकृत दृढ हैं, परन्तु ऑक्सीजनपूर्ण रक्त संचालन में रूकावट की अवमानता को 5 से 6 मिनट से अधिक समय तक सहन नहीं कर सकते व कार्य करना बन्द कर देते हैं। फलस्वरूप सांस प्रक्रिया समाप्त होने से व्यक्ति मृत्यु के आगोश में पहुंच जाता है। मृत्यु की इस विधि को दमघोटूं या 'असफिक्सीयल' मृत्यु कहा जाता है। असफिक्सीया कई कारणों से हो सकता है जैसे डूब जाना, गला घोंटना, गला दब जाना, फॉसी लगा लेना, स्वांस मार्ग में रूकावट आ जाना या सॉस न लेने योग्य वातावरण अथवा जहरीली गैस में घिर जाना आदि।

सभी मृत्यु प्रमाण पत्रों पर मृत्यु का कारण मूलभूत रोग के अतिरिक्त 'कारडियो-रेस्पीरेटरी फेलीयर' अर्थात सांस एवं हृदय की कार्यप्रणाली की अक्षमता ही लिखा जाता है क्योंकि जीवन वास्तव में मृत्यु के द्वार पर तभी कदमताल करते हुए दस्तक देता है जब मस्तिष्क सहित अन्य अगों को ऑक्सीजन युक्त रक्त नहीं मिलता। इस पूर्ति की पूर्ण जिम्मेदारी हृदय व फेंफडों की होती है। अतः सार में यही कहा जा सकता है कि जीवन बनाए रखने के लिए पांच से छः मिनट के अन्दर हृदय व सांस की प्रकिया को कृत्रिम रूप से स्वचालित बनाना होता है जिससे जीवन के तीनों आधारभूत अंगों की यह पूर्ति पूर्ण हो सके तथा शरीर में जीवन ज्योति प्रज्वलित रहे। इस परिस्थिति में एक-एक सैकेण्ड की अत्यन्त महत्वता होती है। जीवन दान की इस आधारशिला क्रिया को -सी.पी.आर.' (कारडीयो-पलमोनरी सेसीटेशन) कहा जाता है

अर्थात हृदय गति को बाहरी माध्यम द्वारा चालू रखना व कृत्रिम सांस द्वारा शरीर में ऑक्सीजन है (जीवन वायु) का प्रवाह सुनिश्चित करना। इसे थोडी सी तकनीकी शिक्षा द्वारा या हम में से कोई भी व्यक्ति आपातस्थिति से मृत्यु मार्ग की ओर अग्रसर पीड़ित व्यक्ति पर कर सकता है व उसे मृत्यु ग्रास में जाने से बचा सकता है। आवश्यकता है- थोडी सूझबूझ, तकनीकी शिक्षा तथा सबसे अधिक-मनोबल की। आप मनुष्य है तथा त्रासदी के समय तमाशबीन बनकर निष्क्रिय खड़े न रहें बल्कि साथी मानव के लिए सहृदयता व सहानभूति रखें, चाहे वह किसी भी आयु, लिंग जाति या देश का क्यों ना हो। आप स्थिति का जायजा शांत भाव, आत्मविश्वास परन्तु फुर्ती से मृत्यु से जूझें रहें उस व जीवन के लिए ले और उसे बचाने के संघर्ष में जुट जाए। आत्मविश्वास रखें कि आपके पास 'सी.पी.आर.' का अमोघ शस्त्र है जिसका सही व यथोचित प्रयोग ही आपको मृत्यु पर विजयी बनायेगा। याद रखें कि 'सी.पी.आर.' का यह अमोघ शस्त्र ईश्वर ने केवल चिकित्सकों को ही नहीं दिया, और नाही अस्पतालों में बन्द करके रखा, अपितु प्रत्येक मानव के हाथों में दिया हैं जिससे आप साथी मानव के अमूल्य जीवन को बचा सकते हैं। और आप सही मायने में 'सृष्टि का सिरमौर', 'टॉप ऑफ दा क्रियेशन' या 'अशरफ - उल-मखलूकात' कहलवाने के सही हकदार बन सकते हैं। आवश्यकता आपके अन्दर मनोबल, करूणा व परोपकारी सदभावना की है। ये तभी पनप सकते हैं जब पीडित व्यक्ति की जगह आप अपने प्रियजन को रख कर देखें तो स्वतः ये भावनाएँ आपके अन्दर सैलाब के समान उमड पडेंगी।

त्रासदी किन्हीं मानवकृत या प्रकृति के कुप्रभावों का परिणाम हो सकती है, जैसे- सड़क दुर्घटना, रेल हादसा, वाड, बम विस्फोट, युद्व, सुनामी लहरें, भूचाल, आगजनी, जहरीली/नशीली गैसें, बर्फबारी, सूखा, महामारी, तुफान, भवन का ढहना, जमीन का खिसकना आदि। भले ही अलग-अलग वैज्ञानीयों ने त्रास्दी को अपने ढंग से परिभाषित किया है परन्तु 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के अनुसार - उन सब परिस्थितयों को जिनसे टूट-फूट, आर्थिक जन-जीवन की हानि, स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य सेवाओं पर कुप्रभाव आदि अत्यधिक मात्रा में हो तथा जिसमें तुरन्त बाहरी व अधिक सहायता की आवश्यकता हो, उसी स्थिति को त्रासदी कहते हैं।



सूनामी त्रासदी के दौरान पीड़ितों की सहायता करते *105* बटा. आर.ए.एफ के कार्मिक



***99* बटा. आर.ए.एफ. के जवान पोर्टब्लेयर *(*पश्चिमी अण्डमान*)* में सूनामी प्रभावित क्षेत्र में सड़क बनाते हुए।**

परिस्थितियों का जायजा लेते हुए तथा आत्मसुरक्षा को ध्यान में रखते हुए तुरन्त पीड़ित व्यक्ति को ठोस समतल धरातल पर लेटा दें। शीघ्रता से सिर से पांव तक उसकी क्षति को भांपें। उसके पैरों को ऊँचा करें। शरीर पर कसे हुए बन्धन जैसे बुट, जुराब, टाई, पगडी, टोपी, बैल्ट, कमीज के बटन आदि खोल दें। जोर से चिल्ला कर आस पास के लोगों को सहायता के लिए बुलाएँ। नम्रतापूर्वक उन्हें पास के अस्पताल, पुलिस स्टेशन, व्यक्ति के परिवार जनों को सूचित करने के लिए बताएँ। पीड़ित को अस्पताल में पहुचॉने के लिए उचित वाहन के प्रबंध के लिए भी निवेदन करें। यदि संभव हो तो पीड़ित को निकटतम सुरक्षित स्थान पर ले जाएं।

रूके हुए सांस को स्वचालित करने के लिए कृत्रिम सांस प्रक्रिया (आर्टिफिशियल रेस्पीरेशन) को तुरन्त प्रारम्भ कर दें। पीडित के नाक व मुहं को साफ करें। बेहोश व्यक्ति की जीभ अकसर गले में फंस कर सांस नली को बन्द कर देती है। अतः जीभ को हल्का बाहर खींच कर सुनिश्चित करें कि स्वांस मार्ग में कोई रूकावट तो नहीं है।

पीड़ित के माथे को पीछे की तरफ दबाकर तथा ठोडी को ऊपर उठाते हुए गर्दन को सीधा करें जिससे सांस मार्ग सीधा हो जाए और स्वास में किसी प्रकार की रूकावट ना आए। पीड़ित की बगल में घुटनों के बल बैठकर उसकी नाक को चुटकी से बन्द कर दें तथा दो-तीन, गहरे-गहरे सांस ले, उसके मुंह में फुर्ति से गहरा सांस फूंक दें। सांस अन्दर जाने से उसकी छाती के उठाव का ध्यान दें। यह प्रक्रिया बहुत तेज दर से करें (30से 40 प्रति मिनट) जब तक पीडित की सांस प्रक्रिया स्वचालित न हो जाए।

यदि पीडित की हृदय गति रूक गई हो तो इसी प्रकार उसकी दाहिनी बलग में घुटनों के बल बैठ कर उसके हृदय को बाह्य रूप से दबाएँ। इसके लिए अपने एक हाथ पर दूसरा हाथ रखकर मजबूत पकड़ बनाएँ तथा हथेली की तली को स्तनों के बीचों-बीच छाती के मध्य में रखते हुए अपने शरीर को आगे झुकाते हुए हृदय को बाहर से नीचे तथा पीछे की ओर दबाए। यह प्रक्रिया प्रति मिनट 90 से 100 की दर से करें, जब तक कि पीड़ित की हृदय गति स्वचालित ना हो जाए या उसे उचित अस्पताल में ना पहुंचा दिया जाए, जहॉ पर कृत्रिम मशीनों द्वारा हृदय व स्वांस को चालू रखा जा सके।

बीच-बीच में देखते रहें कि हृदय गति तथा स्वास स्वचालित हुआ है या नहीं। इसके लिए गर्दन में स्वांस नली के दोनों तरफ हाथ रख कर दिल की धड़कन को महसूस करें, छाती पर बाएँ तरफ कान लगाकर हृदय गति को सुनें या जीभ, होंठ, गाल, हथेलियों के रंग को देखें कि गुलाबी हो रहे हैं या नहीं। कई बार एक ही व्यक्ति को कृत्रिम स्वासं व कृत्रिम हृदय संकुचन/मालिश की प्रक्रिया को कमशः बार-बार करनी पड़ती है। यदि ऐसी स्थिति हो तो यह 15:2 के अनुपात में करना चाहिए यानि प्रति मिनट दो बार कृत्रिम सांस देने के बाद 15 बार कृत्रिम हृदय संकुचन करें, यदि दो व्यक्ति हों तो उत्तम है क्यो कि दोनों अपना-अपना कार्य सुव्यवस्थित ढंग से कर सकते हैं। कृपया एक बात ध्यान में रखें कि एक पल भी व्यर्थ ना जाए क्योंकि एक-

एक पल जुडकर 5-6 मिनट बन जातें है तथा पूरी कार्यावधि सफलतापूर्वक इन्हीं 5-6 मिनटों के अन्दर ही पूर्ण करनी होती है। इन्ही चन्द पलों में हम किसी व्यक्ति को मृत्यु के ग्रास से वापिस जीवन ला सकते हैं। जरा सोचिए यह त्रास्दी पीड़ित व्यक्ति आप ही की तरह किसी का पुत्र-पुत्री पिता-माँ, भाई-बहन, या पति-पत्नी तो है ही परन्तु इन सब से ऊपर वह आपका साथी मानव भी है।

तनाव क्यों और कब तक ?

तनाव ग्रस्त व्यक्ति आतंकवाद का सबसे बड़ा पोषक होता है। क्योंकि तनाव शारीरिक और मानसिक रूप से व्यक्ति को रूग्ण बना देता है। तनाव ग्रसित व्यक्ति अपना विवेक खो बैठता है। उचित-अनुचित का निर्णय करना उसके वस का नहीं रहता है। यह स्थिति नेता से लेकर अभिनेता तक, अधिकारी से लेकर कर्मचारी तक, व्यापारी से लेकर मजदूर तक, सभी की है। उनमें मात्रा का अन्तर होता है, वस्तुत्व का अन्तर शायद न मिले।

त्वरित परिवर्तन और वैज्ञानिक तकनीकि क्रान्ति के कारण हमारे जीवन में सन्तुलन एवं समायोजन का अभाव या कमी हो जाने के फलस्वरूप हम 'अनिश्चयता' के भय से अपने अचेतन मन में भयभीत हो रहे हैं। जीवन-पद्धति अनिश्चित, जीविका अनिश्चि, हमारे विचार, मान्यतायें, जीवन-मूल्य, सिद्धान्त सभी तो अनिश्चितता की महामारी से संघर्षरत हैं। जीवन में ठहराव, विश्राम और शान्ति एवं सन्तोष कहीं दिखायी नहीं पड़ता। उसी की खोज में जगह-जगह भीड़ और मेले-उत्सव लगे दिखाई पड़ते हैं। न समय पर भोजन, न भजन न समय पर शयन न समय पर जागरण और न कर्तव्य कर्म। भाग-दौड़ हाय, तौबा, कमाना और खाना, रोज कुआँ खोदना और पानी पीना-बस यही है जीवन की कहानी दिन चर्या बन गई है। सर्वत्र असुरक्षा। कब क्या हो जाय? कानून और व्यवस्था के नाम पर अराजकता और उत्पीड़न या स्वेक्ष्छा चारिता व्याप्त है। खेत की बाड़ ही खेत को चर रही है। जो लोग अधिकार और साधन सम्पन्न हैं, उनमें भी भविष्य की चिन्ता व्याप्त है।

इस प्रकार की समायिक, अप्रासंगिक चर्चा-परिचर्चा में कभी-कभी लोग इतने उत्तेजित हो उठते हैं कि उन्हें ब्लडप्रेशर हाई या लो होने लगता है। यदि तनाव किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उत्प्रेरणा का कार्य करता है तो वह निषेधात्मक न रहे पर विधेयात्मक हो जाता है। किन्तु यदि ठलुआ बैठे-ठाले लोगों को तनाव घेर ले तो शारीरिक और मानसिक रोगों की उर्वरा शक्ति का काम करता है। विधायक तनाव नयी चुनौतियों का सामना करने की उत्प्रेरणा देकर हमारी अन्तर्निहित रचनात्मक शक्तियों के उद्बोधक हो जाते है। विधायक **(Positive Stress)** तनाव में आत्मविश्वास,

उत्साह, प्रसन्नता, प्रेम, आनन्द, प्रफुल्लता तथा उच्च चेतना के उत्कर्ष का भाव समाहित होता है। जबकि निषेधात्मक तनाव की दशा में अवसाद, नैराश्य, असन्तोष अन्तर्द्वन्द्व, रवीइन, शक, सन्देह तथा चित्त की चंचलता हावी होती है।



आर.टी.सी. - घ नीमच में तनाव मुक्ति हेतु योगा की कक्षाएं अटेंड़ करते रंगरूट।

[तनाव के कारण]

अपनी परेशानी का कारण हर व्यक्ति स्वयं ही होता है। उसके मन की स्वीकृति पाकर अन्य कारण उसके साथी बन जातें हैं। अक्सर आप समाचार पत्रों तथा टीवी समाचार बुलिटन में पढतें, देखते होगें कि आज अमुक पुलिस वाले, अर्ध सैनिक बल के जवान ने आत्म हत्या कर ली, अपने साथियों को गोली मार दी। इस के पीछे क्या कारण रहा होगा यह सब विचारणीय विषय है।

ऐसा कौन व्यक्ति है जिसके जीवन में आशा-निराशा, राग, द्वेष, सुख-दुख अनूकूलता प्रतिकुलता, हानि लाभ, सम्मान असम्मान तथा घात प्रतिघात की घटनाएं न घटती रहती हो। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इन्हें इतनी गम्भीरता से लेते हैं कि आसमान सिर पर उठा लेते हैं कुछ लोग हवा का रूख देखकर अपनी पीठ का रूख वैसा कर लेते हैं। अपने हँसमुख स्वभाव के कारण बड़ी से बड़ी घटनायें भी उन्हें प्रभावित नहीं कर पाती है। उनका कहना है-किस-किस को रोइये। आराम बड़ी चीज

है,

'होइहि वही जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावहिं शाखा।

जो व्यक्ति परिस्थितियों के साथ या स्वयं के साथ समायोजन नहीं कर पाते वे प्रायः तनाव ग्रस्त पाये जाते हैं। घर-परिवार की परिस्थितियॉ बच्चों का स्वास्थ्य, शिक्षा-व्यवस्था, जीविका की अनिश्चितता, राजनीतिक विकृतियॉ, प्रतिभाओं के विकास के अवसरों की कमी, व्यवसाय और वृति का भविष्य, वरिष्ठों द्वारा दुर्व्यवहार, उत्पीडन कार्य हानि, पति-पत्नी, पिता-पुत्र या अधिकारी तथा अधीनस्थ के स्वभाव में वैपस्य, असहिणुता आत्मविश्वास में कमी की मनः स्थिति, निर्धारित समय सीमा में कार्य का पूरा करने की अहान्वोह स्थिति, अचानक बिजली गुल हो जाना, गाड़ी खराब हो जाना, अनचाहे महमानों का असमय आगमन, कार्य स्थल या सभा स्थल पर पहुंचने की शीघ्रता या ट्रेन पकड़ने में कम समय रहना, उसी समय ट्रैफिक जाम की समस्या का सामना करना, जिनसे अपना मन, मत, सिद्धान्त, विचार या आचार-विचार, गुणवृति न मिलती हो उनके साथ रहने की विवशता या कार्य करने की विवशता का होना, नशीले पदार्थों का सेवन धूम्रपान, मदिरा अतिमात्रा में सेवन, नीद की गोलियाँ लेकर सोना, आत्महत्या के विचारों का हावी होना, अथवा प्रतिशोध की भावना प्रबल होना आदि अनेक अन्तवैयत्तिक तथा परिवेशगत जैसे कारण हैं। जिनसे व्यक्ति की अन्तः स्रावी ग्रन्थियों में विशेष रूप से एड्रिन्ल ग्रन्थि में हारमोन के स्राव में गड़बड़ी होकर तनाव की विषम स्थिति उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति को विक्षिप्त दशा की ओर लेकर आत्महत्या तक ले जा सकती है। ऐसी स्थिति में अपराध प्रवृति हो जाती है।

[तनाव के लक्षण]

तनाव के क्षणों में व्यक्ति के अन्दर या तो उत्तेजना बढ़ती है या अवसाद की मात्रा बढ़ जाती है। उसके स्वभाव में तनक मिजाजीपन, चिड़चिड़ापन झुंझलाहट, कटुवाणी, कर्कशता, रूखापन, क्रोध और आवेगपूर्ण असम्बद्ध अभिव्यक्ति, विस्मृति एकाग्रता का अभाव छटपटाहट बेचैनी, सिरदर्द, मिचली, चक्कर आना, तनाव की स्थिति, भुलक्कड़पन उखड़ी-उखड़ी बातें करना, अनिद्रा, शरीर में हडफूटन, टूटन, थकान, भारीपन, किसी काम में मन का न लगना, कमजोरी, रूलाई आना, छुई मुई सा स्वभाव, अपने को धिक्कारने की प्रवृति, हाथ पैरों में पसीना, हृदय धड़कन और श्वास की गति का बढ़ जाना, हॅफाना, वक्षस्थल में उथली-उथली श्वास आना, माथे पर तनाव, सिलबटें, स्त्रियों में रजावराध जन्म एलर्जी होना, अम्लप्रित बीमारियों का जन्म होना, खाज खुजली का होना, कभी कब्ज अजीर्ण, कभी पतले दस्तों का लगना, कभी मरोड़ और ऑव के दस्त लगना, शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का अभाव होने लगना, जीवनी शक्ति का ह्रास, मधुमेय की प्रवृति, रक्तचाप कभी उच्च कभी निम्न आदि अनेक शारीरिक, सामाजिक व आर्थिक रोग तनाव के लक्षण हो सकते हैं।

तनाव के प्रकार- तनाव के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों और चिकित्साशास्त्रियों ने अपने अध्ययनों के निष्कर्ष के आधार पर निम्नलिखित वर्गीकरण किया है :-

(क) संवेगात्मक तनाव-युद्ध की आशंका या नौकरी छूटने की आशंका से।

(ख) पारिवारिक तनाव- परिवार में जन्म, मृत्यु, शादी ब्याह के अवसर पर तनाव। बच्चों की पढ़ाई लिखाई नौकरी आदि।

(ग) सामाजिक तनाव- सभा में भाषण देना, विरोध प्रकट करना आदि।

(घ) परिवर्तन जन्य तनाव-स्थानान्तरण होने, घर बदलने, परदेश गमन आदि।

(ण) रासायनिक पदार्थ जन्य तनाव - धूम्रपान, मदिरापान, नशीली दवाओं आदि से।

(त) कार्य को लेकर तनाव-निर्धारित समय या मात्रा में कार्य निष्पादन से जवाब तलब होने से क्षमा मामले आदि से।

(थ) निर्णयजन्य तनाव-विषम परिस्थितियों में निर्णय लेने के समय।

(द) यात्रा जन्य तनाव-गाड़ी चलाने से, भीड़ भाड़ में फंस जाने से, देर से घर पहुंच पाने से।

(ध) अकारण भय जन्य तनाव-किसी स्थान, जानवर या वस्तु को देखकर।

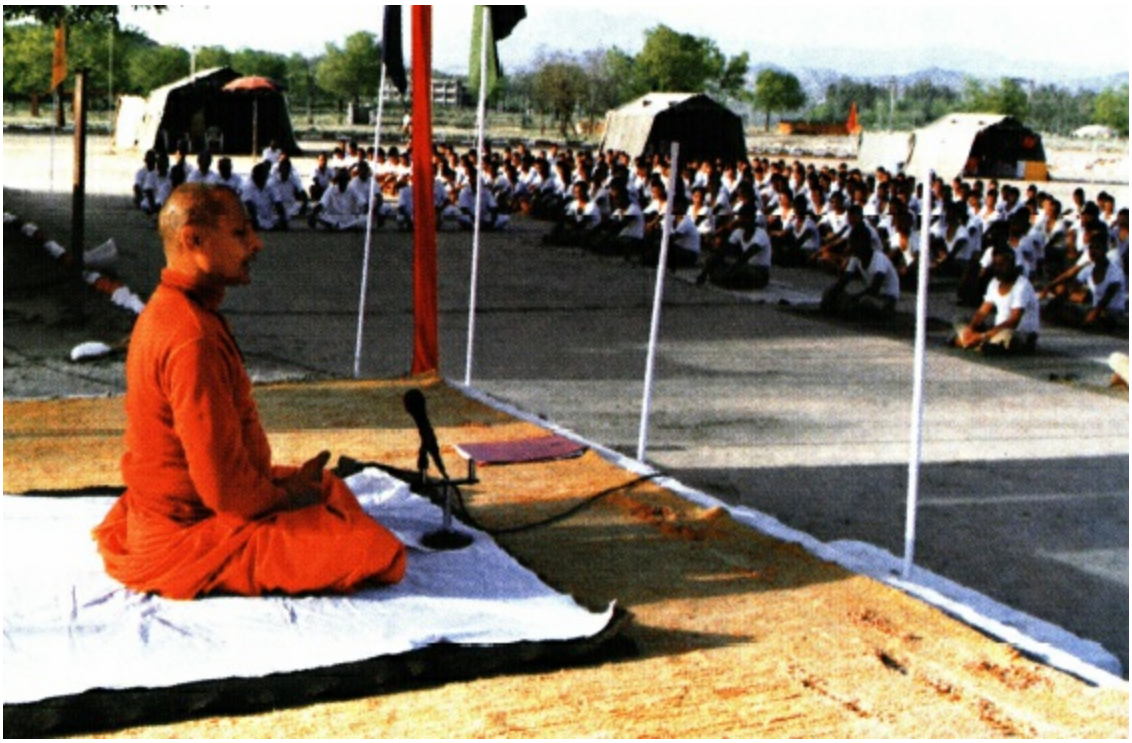


रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र, (प्रथम) नीमच में रंगरूटों के लिए योगा कक्षाओं के शुभारम्भ पर उपस्थित बल के अधिकारी व कार्मिक।

[तनाव निवारण के उपाय]

तनाव-निवारण के लिये आवश्यक है कि हम अपने दृष्टिकोण को आशावादी बनाने के उपाय करें। इसके साथ-साथ अपने प्रयोग में आने वाली हर चीज को व्यवस्थित रखने की आदत डालें। अपनी खाने की आदत में भी परिवर्तन अपेक्षित है। कार्य के साथ-साथ उचित विश्राम का भी ध्यान रखें। धैर्य से काम करें। जल्दबाजी का काम शैतान का काम होता है। खाली दिमाग भी शैतान का अड्डा है। इन उपायों के अलावा अपनों से मिलने का समय अवश्य रखें। अर्थात् प्रार्थना, ध्यान और व्यायाम की कभी उपेक्षा न करें।

जैसे विष की दवा विष होती है उसी प्रकार कुछ व्यक्तियों को एक तनाव को दूर करने के लिये दूसरे प्रकार के तनाव को पैदा करने की आवश्यकता है। जैसे अनुत्तीर्ण होने से होने वाले तनाव को दूर करने के लिए अधिक समय, अधिकाधिक साधनों का उपयोग कर अध्ययन द्वारा उच्च अंकों के प्रति अपनाया गया तनाव पहले वाले तनाव को दूर कर मधुर परिणाम का कारक बन जाता है। अधिकांश तनाव मानसिक नकारात्मक चिन्तन और व्यर्थ चिन्ता के कारण होते है। किसी जवान ने सुना कि अमुक क्षेत्र में कर्फ्यू लगने वाला है। इतना सुनना था कि वह जवान सुनकर तनाव ग्रस्त हो गया। हाय। दिन-रात इतनी डयूटी देनी पड़ेगी? उसकी भूख व्यास विदा हो गयी। साथ वाले भी उसकी असामान्य दशा देखकर तनाव ग्रस्त हो गये। यह तो कम्पनी का अच्छा जवान था, वही काम से गया। उसकी चिकित्सा कराई गयी। कोई लाभ न हुआ। किसी समझदार ने एक नजर से रोग समझ लिया। उस जवान से कहा तुम किस चक्कर में हो? अभी रेडियो ने खबर दी है कि कहीं कर्फ्यू नहीं लगा है। इतना सुनते ही बस जवान तनाव रहित हो खुशी से नाचने लगा। वाह अच्छा हुआ। बला टली। आसानी से आगे छुटी मिल जाएगी।



आर. टी. सी.- *(IV)* में बल के रंगरूट तथा स्टाफ योगा का प्रशिक्षण लेते हुए।

सामान्य जन बहुत कम अवसरों पर तनावग्रस्त होते हैं। उनके पास तनाव की ऊर्जा को बाहर निकालकर तनाव रहित रहने के प्राकृतिक सहज उपाय हैं। जबकि विशिष्ट व्यक्ति का लेविल लगाने वाले व्यक्ति को तनाव के अवसर पल प्रतिपल आते हैं। ऐसे लोग अहंकेन्द्रित होने के कारण तनाव ढोते रहते हैं। जो देश-काल पात्र और अवसर के अनुकूल समायोजन पूर्ण व्यवहार करने में निपुण होते हैं। वह कम तनाव ग्रस्त होता है। गंगा गये तो गंगा दास, यमुना गये तो यमुना दास। जैसा मौका देखा, वैसा कर लेने वाले सदाबहार, हरफनमौला और मस्तजीव कहलाते हैं। किसी को आंख दिखाकर, किसी से आंख मिलाकर किसी से आंख बचाकर काम कर के, किसी को हाथ दिखाकर, किसी से हाथ मिलाकर, किसी को लात दिखाकर, किसी को उससे आगे की चीज दिखाकर तो किसी को सजबाग दिखाकर, किसी के हाथ जोड़कर किसी के पांवों में पड़कर तथा किसी की ऐसी तैसी करने की गीदड़ भपकी देकर जो अपना उल्लू सीधा करने में माहिर होते हैं वे तनाव का बोझ नहीं ढोते। मौका देखकर किसी पर हाथ छोड़ने में भी उन्हें संकोच नहीं होता। ऐसे लोग हर हाल में मस्त रहते हैं। किसी भी प्रकार की विषम परिस्थिति में उन्हें आप विचलित नहीं पायेंगे। जो लोग अन्तर्मुखी होते हैं वे सब कुछ नहीं कर पाते। अन्दर ही अन्दर उबलते रहते हैं। या तो अपने को ही सजा देते हैं या फिर आत्महत्या तक कर लेते है या प्रतिशोध की आग में धधक कर एक दिन अपराध जगत में कुख्यात होकर अपने को तनाव रहित करते हैं।

कुछ लोग आ बैल मुझे मार की प्रवृति के होने के कारण हर जगह पंगा लिया

करते हैं। उन्हें समझाने-बुझाने से काम नहीं चलता। उनका उपचार 'सेर को सवासेर' मिलने पर तनाव ढीला हो जाता है। कुछ लोग व्यर्थ के सैद्धान्तिक वाद-विवाद में पड़ कर भावात्मक तनाव पैदा करने से बचते हैं। हां जी अच्छा ही कह कर रामाय स्वस्ति और रावणय स्वस्ति से तनाव को पास नहीं फटकते देते। घाघ ने इसी नीति का उल्लेख किया है।

'कहै धाध सुन भडुटी इसी गाँव में रहना।
ऊँट बिलाई ले गई हाँ जी हाँ जी कहना।

साहब ने जवान से कहा- 'ऊँट को मुँह में दबाये बिल्ली भाग रही थी। तुमने उसे देखा? वह सहज उतर देकर मस्त हो गया 'हाँ जी देखा। अकबर ने बीरबल से कहा कि बैंगन की सब्जी बहुत गुणकारी है। बीरबल की हाजिर जबाबी थी-हाँ जहाँपनाह! इसमें नाम के अनुसार गुण हैं। कुदरत ने इसी वजह से इसके सिर पर ताज रख छोडा है। दूसरे अवसर पर अकबर ने कहा बीरबल बैगन वायुकारक है। इसे हम नहीं खायेंगें। बीरबल ने तपाक से उत्तर दिया-'बिल्कुल ठीक, जहाँपनाह! इसीलिए इसका नाम बेगुण अर्थात् बिना गुण वाला है। 'अकबर ने डाँटते हुए बीरबल से कहा-कभी तुम उसके सिर पर ताज बताकर उसकी प्रशंसा करते हो, कभी उसे गुणहीन बताते हो। तुम्हारी कौन सी बात सच मानी जाय? बीरबल हाथ जोड़ कर बोला -'सरकार मैं आपकी नौकरी करता हूँ, बैंगन की नहीं। आप जैसे कहेंगे, उसकी हाँ में हाँ मिलाना ही मेरा धर्म है। कबीर जैसे अलमस्त फक्कड़ और तत्वदर्शी भी ऐसी सलाह देते हैं।

कबिरा तेरी झोपड़ी बाल कहन के पास।
जो करेगा सो भरेगा, तू क्यों होइ उदास।

समझोतावादी और आत्म संतुष्टि का दृष्टिकोण तनावमुक्ति का सर्वसाधारण सुलभ उपाय है। नीतिकारों का कहना है कि इस संसार में दो प्रकार के लोग ही सुख का अनुभव कर पाते हैं-एक हैं मूढ जिनके बारे में सन्तशिरोमणि तुलसीदास ने कहा है-**'सबसे भले वे मूढ़ जिन्हहिन व्यापहिं जगत गति।** दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति हैं जो किसी कार्य को करने से पहले उसके परिणाम को विचार कर समझदारी से व्यवहार करते हैं। दोनों का यह समान दृष्टि कोण होता है।

'किस-किस को याद कीजिये किस-किस को रोइये।
आराम बड़ी चीज है, मुँह ढ़क कर सोइये।

जो लोग हास - परिहास प्रिय – हँसन - हँसाने वाली प्रकृति के होते हैं उनको आपने तनावग्रस्त होते नहीं देखा होगा। एक व्यक्ति कष्ट में आ गया, लोगों ने उसे सलाह दी 'देश चोरी परदेश भीख' से काम चलाओं। उसने अपनी लाठी कन्धे पर रखी। उस पर एक थैला लटका कर द्वार-द्वार जोर से पैर पटका कर वह घर के गुजारे के लिए भिक्षा ले आता है। समय बदला। उसकी माली हालत अच्छी हो गयी। बात-बात में लोग उसे ताना मारते, बडा बनता है? वह दिन भूल गया जब द्वार-द्वार पर पैर पटक-पटक कर भीख माँगता था! सहज भाव से वह व्यक्ति बोला-मेंने कभी भीख

नहीं माँगो! मेरी लाठी के भय से लोग खुशामद करके मेरे पीठ पीछे थैले में डाल देते थे।'

प्रकृति का हर स्पन्दन आन्द और उत्साह वर्द्धक है। शान्तचित होकर सुबह-शाम आकाश के विस्तार को निहारना, पक्षियों का कलख सुनना, नदी तालाब व समुद्र के निकट बैठकर उसकी तरंगों का उत्थान पतन देखते रहना, सुरीले राग सुनना, तनाव मुक्ति के बहुपरीक्षित उपाय हैं। अपने मित्रों के साथ बैठकर ठहाका लगाकर, दिल खेलकर उपयुक्त हास्य तनाव मुक्ति का सुरक्षित उपाय है। शान्त चित होकर भोजन को चबा चबाकर खाना, सात्विक पदार्थों का सेवन करना, किसी भी कार्य को योजनाबद्ध नियमित और शान्तचित एकाग्र होकर करना, तनाव मुक्ति का कारगर उपाय है।

प्रेरणा और प्रतिस्पर्द्धाजन्य तनाव प्रगतिकारक है। जर्मन दार्शनिक नीतसे ने मनुष्य जन्म को दो अन्नतताओं के बीच एक सेतु कहा है। **'The man is a bridge between two eternities!** इस पुल का एक छोर है-पाशविक प्रवृति और दूसरा छोर है-परमात्मा, परमान्नद। मनुष्य उस अन्नत की यात्रा के बीच की एक सीढ़ी है। इन दोनों छोरों की ओर चलने की कोशिश में तनाव उसकी एक आवश्यकता है

तनाव मुक्ति के कुछ व्यावहारिक उपाय :-

तनाव एक दिन की गड़बड़ी का परिणाम नहीं है। अपितु लम्बे समय से चली आ रही लस्टम-पस्टम यानि अनियमित जीवन पद्धति, निराशा, कुण्ठाओं असफलताओं निषेधात्मक चिन्तन अविचारित क्रिया-कलाप और अपने ईगो (अंह) की बद्धमूल मूढ़ता की चरम परिणति का नाम तनाव हैं। इसलिए जिस क्षण भी समझदारी पूर्ण जीवन का श्रीगणेश हो जाये तभी अच्छा है। जब सूर्य के दर्शन हो जायें तभी सोने से जगे हुए व्यक्ति के लिए सवेरा है। जिस क्षण से व्यक्ति बाहर की वस्तुओं की अपेक्षा अपने से प्रेम करना प्रारम्भ कर दे, अपनी जाँच पड़ताल करने का संकल्प जगा ले, अपनी गलतियों को कठोर अभ्यास, साहस और दृढ़ निश्चय के साथ दूर कर सके, उसी क्षण से वह शान्त, विवेक युक्त, और प्रसन्नचित व्यक्ति बन सकता हैं। कुछ यौगिक और मनोवैज्ञानिक उपाय व अभ्यास भी तनावयुक्त व्यक्ति के जीवन का रूपान्तरण कर सकते हैं। आइये हम निश्चय पूर्वक उनके अभ्यास में जुट जांये।

याद रखें, जीवन में असफलता नाम की कोई चीज नहीं है। गिनती गिनते हुए यदि हम कहीं भूल कर भी जायें तो गिनन छोड़ने से क्या लाभ होगा? फिर से ठीक-ठाक गिनने का अभ्यास करें। दो - चार बार के अभ्यास से हम सफल हो जायेंगे। जब एक छोटा सा कीड़ा कठोर पत्थर में घर बना सकता हैं, एक छेद कर एकता हैं तो ऐसा कौन सा मुश्किल काम है-जिसे धैर्य और साहस से मनुष्य हल नहीं कर सकता।

दसवें हथौड़े की चोट से पत्थर टूटा है। तो क्या यह माना जाय कि नौ चौटें असफल तथा खाली चलीं गयीं? देखने में जरूर ऐसा लग सकता है कि दसवी चोट भलेही

निष्फल गयीं हो पर उन्होंने पत्थर को अपने प्रहारों से इतना कमजारे अवश्य कर दिया कि दसवीं चोट सफलता देने वाली बन सकी। इसलिसे क्यों व्यर्थ में तनावग्रस्त रहते हो। अपने कर्म करते जाओ, रूको मत। याद रखो, माली सीचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।

अपनी तुलना निराश, शक्की और भयभीत लोगों से मत करो, जिन्होने कभी प्रयास ही नहीं किया, उन्हें तनाव कैसे होगा? एक दिन वे सफलता की चोटी पर भी कैसे पहुँगे? ऐसा सोचें कि हम उन लोगों से बेहतर हैं जिन्होंने कुछ होने के सपने ही नहीं संजोये और न सपनों को साकार करने के लिए अपने परिश्रम रूपी सोने को तप रूपी अग्नि में कभी डाला। वे कभी कुन्दन बनकर न निकल सकेगें। जीवन एक संग्राम है। इसे अन्त तक लड़ना है। जीवन की चुनौतियों का हँसते-हँसते सामना करना है। जीवन की पहेली को सावधान रहकर मुस्कराते हुए हल करना है। इस प्रकार की कोशिश में अगर कभी पाशा उलटा पड़ भी जाय तो दुःखी नहीं होना चाहिए।

जीवन एक कसौटी है। इस पर खरे उतरने का प्रयास करें। मैदान छोड़कर भाग खड़े होने में समझादारी नहीं है। न आत्महत्या करने से काम चलने वाला है। जीवन के संघर्ष को निष्क्रिय और भयभीत या चिन्ताग्रस्त होकर मुहर्रमी सूरत बनाकर नहीं लड़ा जा सकता। न तनावग्रस्त बन कर या हाथ पैर फुला कर या जैसे बिल्ली को देखकर कबूतर अपनी आँखे बन्द कर सोचता है, कोई भय नहीं उस प्रकार ऊब जाने से अथवा डूब जाने से काम नहीं चलता है। परिस्थितियों को अपने ऊपर हाबी न होने दें

बार-बार प्रयास करने पर भी यदि किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती है तो परेशान न हों। सब कुछ हमारे अपने हाथ में ही नहीं है। हमारे ऊपर कोई और भी शक्ति है, जो हमारे भले के लिए हमारा हर दम साथ देती है। क्या पता जिसे करने की हम जिद कर रहे है, उसमें हमारा भला न हो। इसीलिए ईश्वर हमारी चाह पूरी नहीं होने दे रहा। जैसे नारद जैसे देवर्षि के मन में विवाह का भूत सवार हो गया तो भगवान ने ऐसा कौतुक कर दिया कि नारद जी को सुन्दर मनुष्य का रूप न देकर बन्दर का मुँह दे डाला। उनके बन्दर के चेहरे को देखकर राजकुमारी व्यंग्यभरी हँसी हँसते हुए घर से उन्हें निराश करती हुई निकल गयी और नारद जी हाथ मलते रह गये। याद रखें, कर्म करना तो मनुष्य के अधिकार में हैं किन्तु उसका शुभाशुभ फल देना ईश्वर के अधिकार में है। अतः दूसरे के अधिकार में अतिक्रमण करके तनावग्रस्त न हों।

तनाव का मुख्य कारण जीवन का असन्तुलित होना है। बहुधा हम हर काम कल पर डालते चले जाते हैं। परिणाम यह होता है कि काम का बोझ इतना अधिक हो जाता हैं कि हम उसे समय सीमा में निबटाने के चक्कर में हर किसी पर लाल-पीले होने लगते हैं। अपनी चिन्ता की रेखाओं से वातावरण को विवाद, चिन्ता और आक्रोश से भर देते हैं। यदि हम विचार पूर्वक अपने कार्यों की प्राथमिकतायें और बरीयतायें निश्चित कर निश्चित समय पर कार्य सम्पन्न करने का स्वभाव बना लें तो कभी हमारी संकल्पना के विपरीत परिस्थिति होने पर भी हम अपना सन्तुलन नहीं खोयेगे! विश्राम

के क्षण और कार्य के समय में समुचित सन्तुलन स्थापित कर सके तो हम तनाव मुक्त रह सकते हैं। हम अपने अन्दर साहस करना सीखें। शिष्टाचारवश या दबाब अथवा लिहाजवश ऐसे कार्य को स्वीकार न करें जिसमें आपकी रुचि नहीं है या अन्य कार्य को प्राथमिकता देने के कारण अपेक्षित समय - सीमा में कर सकना सम्भव नहीं है। कार्य से प्रेम करें किन्तु उससे भी बढ़कर अपने से भी प्रेम करें। भोजन करने के समय भोजन और व्यायाम करने के समय अवश्य व्यायाम करें।

चिन्ता, भय, तनाव और शक सब मिलकर एक साथ रहते हैं। तनाव होगा तो आपके मन में दूसरों पर क्रोध अवश्य आयेगा, अविश्वास का भाव पनपेगा। भविष्य के प्रति चिन्ता होगी जो कभी घटित भी नहीं हो सकती, ऐसी परेशानियों के संबंध में काल्पनिक भय मन में घर करने में प्रतिरोध और प्रतिशोध की अपेक्षा व्यर्थ में स्वीकार करना हितकर न होगा। अपने अहम को अधिक सबल न होने दें, अन्यथा वह अनेक उत्पात करने पर उतारू हो जाएगा। क्रोध की स्थिति में समझाने से काम नहीं चलेगा। जब संकट से उभर कर मनोदशा सामान्य हो जाए, उस समय विवेचन और आत्मविश्लेषण से असम्भव और सम्भव को समझकर सामान्य व्यवहार की स्थिति को पुनः लाकर प्रसन्नचित रहें। पुनः वहां से परिस्थिति को ठीक करने का प्रयास करने लगें जहां से आपकी अपेक्षाओं से बाहर जाकर विपरीत हो गयी थी।

अकड़, मिथ्याहंकार और मूर्खता की पहिचान है। तनाव की स्थिति में व्यक्ति में अकड़ बढ़ जाती है। ठीक बात सुनने को तैयार नहीं होता है और न मानने को। जीवित व्यक्ति और लकड़ी में नम्रता होती है। मुर्दा व्यक्ति और सूखी लकड़ी टूट सकती हैं पर झुकना उसे स्वीकार्य नहीं। अच्छा है, पर एक सीमा से आगे ठीक नहीं। **'अंजन कहा आंख जेहि फूटे'** इसलिए हवा का रुख पहचान कर मनुष्य को नम्र होना आना चाहिए। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन बदलता रहता है। कोई चीज स्थायी नहीं हैं। न कोई समस्या स्थायी है और न उनका हल स्थायी है। जीवन का सौन्दर्य इसी में है कि 'सुख-दुख के मधुर मिलन से परिपूर्ण हो यह जीवन।

कुछ लोग ऐसे होते हैं कि घर पर भी दफ्तर की ही भाषा और काम-काज की चिन्ता से घर का आया हुआ सुख भी हाथ से खो देते हैं। यदि कोई वकील घर में अपनी पत्नी के कार्यों में गलतियां निकालकर हर जुर्म की दफा लगाकर न्यायालय की तरह आपस में बहस करने लगे तो पूरा घर तनावग्रस्त हो जाएगा। न्यायालय का अभिनय न्यायालय तक ही ठीक है। घर में आप साहब नहीं है। आपका अभिनय किसी के बेटे, किसी के पति और किसी के पिता की भूमि में है। प्रस्तुत भूमिका के अनुसार हमें अभिनय करने में संकोच नहीं होना चाहिए। छोटे बच्चों के लिए हम घोड़ा बनना स्वीकार कर लें तो हमारे अंह की अकड़ से जो तनाव पैदा हो गया है, वह क्षणभर में नौ दो ग्यारह हो जाएगा।

समय पर यदि तनावमुक्ति का हमने कोई उपाय न किया तो तनाव सघन और गहन होते-होते हमारे चेतन मन से चलकर अचेतन मन में परिव्याप्त हो जाएगा। पश्चिमी मनोविश्लेषण सम्प्रदाय के मनोवैज्ञानिक-सिगमझड-फ्राइड, जुंग तथा एडलर

आदे ने तनावमुक्ति के कुछ प्राकृतिक उपाय बताये हैं ये उपाय स्वप्न जगत में अवचेनत मन द्वारा व्यक्ति हल्का हो जाता है। हमारे चित्र-विचित्र स्वप्न तनाव की ऊर्जा को स्वप्न के प्रतीकों के माध्यम से उत्सर्जित कर हमें तनावमुक्त करते हैं। कुछ उपाय हम चेतन मन द्वारा जाग्रत स्थिति में अनजाने में करते रहते हैं। बहाना बनाने की आदत भी हमारे तनाव के बसाव को ढीला करती है। काम करना नहीं आता तो पीछा छुडा लेते हैं। गला खराब है इसलिए भाषण नहीं दे सकेगें। नाच न जाने आंगन टेडा।

कभी-कभी अपने तनाव को सार्वत्रिक-सब जगह व्याप्त दिखाकर व्यक्ति हलका हो जाता है। वह सन्तोष कर लेता है कि मै अकेला ही परेशान नहीं हूँ। बड़े-बड़े लोग भी तो मेरी तरह परेशान हैं। कुछ लोग खाली पुलाव और हवाई किले बना कर दिवास्वप्न के उपाय से तनाव मुक्त रहते हैं।

यौगिक उपाय

व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक उपायों के अतिरिक्त योग में रोचक प्राणायाम तथा अमनस्क योंग विधि से तनाव रहित होने में मदद मिलती है। हमारा मन ही अनुभव के स्तर पर किसी भी परिस्थिति को लाकर दुःख सुख का आभास कराता है।

(अ) दृष्टा या साक्षीभाव में स्थित होना-सीधे लेटकर अपनी श्वास प्रश्वास को गहरी और लम्बी करके शरीर को धीरे-धीरे शिथिल करें शरीर को अग्नि के समर्पण कर दिया गया है ऐसा करें।-इस प्रकार अपने शरीर और उस में रहने वाले अहंकार को नष्ट होते हुए, दूर खड़े होकर केवल दृष्टाभाव से देखना है। कुछ भी विचार नहीं करना है। प्रति दिन पन्द्रह दिन के अभ्यास से तनाव नाम की कोई वस्तु नहीं रहेगी।

(आ) जिन परिस्थितियों या विचारों से भय लगता है, शिथिलीकरण की पूर्वोक्त प्रक्रिया द्वारा उन्हीं का पुनः अनुभव करके कल्पना द्वारा वापिस अपने पूर्व क्षण में लौटकर पूरी तीव्रता से उस घटना दृश्य या विचार को अनुभव कर उसका पूरा भोग कर लें। दांत दबाकर हाथ की मुट्ठी कड़ी कर श्वास को रोक कर उस अनुभव को अचेतन से कल्पना द्वारा चेतन में लायें। इस सिथति में दो मिनट रहने के बाद पुनः शान्त स्थिति का अनुभव करें। श्वास की गति नाभि तक होने दें। इस क्रिया को पन्द्रह मिनट तक एक सप्ताह तक करें। आप अपने में एक नये परिर्वतन का अनुभव करेंगे।

(इ) रीड़ की हड्डी सीधी रखकर किसी ऊन के आसन पर बैठकर हृदय में ऐसी भावना करें कि मैं परम शान्त परमप्रसन्न और परम आनन्द रूप हूँ। परमपिता की कृपा मेरे ऊपर है उसमें सराबोर हो रहा हूं। अपने हृदय को कृतज्ञता और अहोभाव से भर लें। कृपा का हृदय में अनुभव करें।

(ई) विस्तृत नील गगन को उपर्युक्त ढंग से बैठकर पहले कण्ठ में आँख बन्द कर अनुभव करें। पहले कल्पना से ही सही। उसके बाद भौंहों के बीच में एक बिन्दु पर अनन्त आकाश को देखते देखते खो जायें- और असीम में समा जायें। अनन्तता के अनुभव से अहंकार के साथ जुड़े हुए विचार, बोध और अनुभव सभी टूट जायेंगे। मन निर्मल हो जाने पर तनाव मिट जायेगा।

(उ) सीधे लेटकर पूरे शरीर के अंग-प्रत्यंगों और मांस पेशियों को इतना तानों कि उसके आगे फिर तानने की गुंजायश ही न रहजाय। तनाव के बाद उन्हें एक दम शिथिल कर अपने को मृतवत् समझ कर कुछ देर निश्चेष्ट हो जायें। पाँच मिनट के इस अभ्यास से तनाव मुक्त अवस्था का जीवन लौट आयेगा।

ऊपर बताई गई वातों पर यदि आप ध्यान देगें सकारात्मक सोच रखने तथा सब का भला सोचेगे। अपने धर्म व कर्म को पूरी निष्ठा से ध्यान देगें तो कभी भी तनाव ग्रस्त नहीं होगें। तनाव से दूर रहने का यह उपाय है। तो आई हम सब मिल कर प्रयास करें और हम स्वयं तो तनाव से दूर रहें दूसरों को भी इससे बचाने की कोशिश करें।"

(सभागार-संचार समन्वय)



सी.टी.सी-दो, कोयम्बटूर में आगमन पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के महानिदेशक श्री संतोष कुमार एवं श्रीमती कुमार का स्वागत करते प्राचार्य/पुलिस उप महानिरीक्षक श्री जार्ज सी. फ्रान्सिस एवं श्रीमती फ्रान्सिस



संयुक्त राष्ट्र शान्ति मिशन के तहत कोसोवो में तैनात भारतीय स्पेशल पुलिस यूनिट के टुकडी कमान्डर श्री के. सी. यादव डीपीकेओ के अस्सिटेंट सेक्रेटरी जनरल श्री हेडी अनावी के कोसोवो विजिट के दौरान चर्चा करते हुए।

* सरदार पोस्ट *

बल के शौर्य एवं गौरव का प्रतीक

नरेन्द्र कुमार सिंह
उप कमाडेन्ट, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउन्ट अबू



मुझे तोड़ लेना वन माली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जायें वीर अनेक।

कविवर माखन लाल चर्तुवेदी की ये पंक्तियां मुझे बार-बार उद्वेलित कर रही थी। मेरा शरीर रोमांच से भर उठा था। मैं उन दृश्यों की कल्पनाओं में खो जाता था और सोचता कि वह कैसा दृश्य होगा जब पाकिस्तानी सेना की बढ़ती हुई विशाल टुकड़ी, उसके सामने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महज दो कंपनिया, अपने देश की सरहद पर मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्व-न्यौछावर करने को तत्पर। जैसे-जैसे मेरा काफिला सरदार पोस्ट की ओर बढ़ रहा था, धड़कनें तेज होती जा रही थी , मस्तिष्क उन दृश्यों को जो 9 अप्रैल, 1965 को भारत-पाक सीमा पर कच्छ के रन में हुए ऐतिहासिक युद्ध जिसकी गूंज भारत की संसद में सुनाई पड़ी थी, जोड़ने में व्यस्त थी। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की उस टुकडी के सदस्य के रूप में जो देश के कोने-कोने से उन अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए 9 अप्रैल, 2005 को सरदार पोस्ट पर एकत्रित हुए थे, उनके साथ मैं भी उपस्थित था। मैनें उन शहीदों को श्रद्धांजलि देकर

अपने आप को धन्य समझा। देश की खातिर मर मिटने का जज्बा रखने वाले उन वीर जवानों की धड़कने आप आज भी महसूस कर सकते है जिन्होनें 1115 बार्डर पीलर पर पाक सेना के साथ लड़ते-लड़ते अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

कच्छ का रन, अपने आप में धरती का वो हिस्सा है, जिसमें मनुष्य अगर एक बार भटक जाये तो मौत ही उसका पहला और अंतिम पड़ाव होता है। आप जिधर भी नजर घुमाएं, रेत ही रेत, न कोई पेड़ पौधा और न ही कोई जीव-जन्तु जरा सोचिये! आज से तकरीबन 40 साल पहले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी ने किस हौसले और बुलन्दियों के साथ उन असीम विपरीत परिस्थितियों में अपनी मातृभूमि की रक्षा की होगी। सचमुच वे लोग स्मरणीय हैं, नमनीय हैं।

पाकिस्तान की सेना द्वारा 1965 के शुरूआत में भारतीय सीमा के अन्दर कानजरकोट तथा डींग में अपनी स्थायी पोस्ट बनाई गई। जैसे ही इसकी खबर भारत सरकार को लगी, के.रि.पु. बल की दूसरी वाहिनी की 04 कम्पनियाँ भारत-पाक सीमा पर तैनात कर दी गई और इनमें से 02 कंपनियों को सरदार पोस्ट की सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई।

09 अप्रैल, 1965 को जब सरदार पोस्ट की एक कंपनी पेट्रोलिंग के लिए गई तब करीब 0330 बजे पाकिस्तानी सेना की 51वीं इन्फेंट्री ब्रिगेड ने सरदार पोस्ट पर अपने तोप खाने तथा टैंकों सहित हमला बोल दिया। के.रि.पु.बल के बहादुर जवानों ने शाम 5 बजे तक पाकिस्तानी सेना का डटकर मुकाबला किया और उसे वापिस लोटने पर मजबूर कर दिया। के.रि.पु.बल के जवानों ने पाक सेना के 34 जवानों को मार गिराया जिसमें उनके दो अधिकारी भी शामिल थे। देश की रक्षा करते हुए बल के भी 6 जवान शहीद हो गये। 12 अप्रैल, 1965 को भारत सरकार के तत्कालीन गृह मंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने संसद में के.रि.पु.बल के जवानों द्वारा प्रदर्शित अद्धितीय साहस एवं पराक्रम की सरहाना करते हुए कहा :-

“सरदार पोस्ट पर तैनात के.रि.पु.बल की टुकड़ी ने पाक सेना का अदम्य साहस और वीरता से मुकाबला किया और पाक-सेना को वापस खदेड़ दिया। उनके 34 जवान मारे गये, जिसमें 2 अधिकारी भी शामिल हैं। 4 पाकिस्तानी सैनिकों को जीवित बंदी बनाया।”

किसी देश की सेना के साथ तकरीबन 12 घंटे से ज्यादा तक किसी अर्द्धसैनिक बल का सफलता पूर्वक लड़ते रहना, इतिहास के पन्नों में ऐसे उदहारण विरले ही मिलते हैं। भारत सरकार ने बल के जवानों द्वारा इस युद्ध में प्रदर्शित उच्च कोटि की वीरता एवं देशभक्ति को सम्मान देते हुए तैनात टुकड़ी के 6 सदस्यों को राष्ट्रपति के पुलिस एवं फायर शौर्य पदक से तथा 7 सदस्यों को वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया।

आइये हम सभी मिलकर इस पंरपरा को और आगे बढ़ायें और यह शपथ ले कि हमारे वीर साथियों ने जो वीरता की मिसालें कायम की है हम उन्हें व्यर्थ न जाने दें और जरुरत पड़ने पर अपने आपको देश की रक्षा के लिए न्योछावर कर दें।



9 **अप्रैल,** *2005* **को शौर्य दिवस के अवसर पर बल के कार्मिक रन ऑफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर अपने वीर साथियों को श्रंदाजलि देते हुए।**

सस्मंरण

[कभी न बन्द होने वाला सफर, "कानवाई"]

अनिल गुप्ता
सहा, कमां,*122* बटा,

मैंलम्बे समय तक महानिदेशालय में तैनात रहने के पश्चात अपनी मूल 122 बटालियन में गया। उस समय 122 बटा. की सभी कम्पनिया तथा बटालियन

मुख्यालय घाटी में तैनात थी। बटालियन को उस समय श्रीनगर से जम्मू तथा जम्मू से श्रीनगर तक चलने वाली कानवाई की सुरक्षा का उत्तरादायित्व सौपा गया था। सामान्य डयूटी से कहीं अधिक संवेधनशील पल-पल पग-पग पर खतरा था, उस समय घाटी में आंतकवाद भी अपनी चर्म सीमा पर था, आये दिन कुछ न कुछ होता रहता। वैसे तो घाटी में बर्फ वारी अक्टूबर के बाद शुरू हो जाती है परन्तु उस बार कुछ देर से हुई।

बड़े लम्बे इंतजार के बाद जब 15 जनवरी, 2002 की रात श्रीनगर के आसपास के इलाकों में बर्फबारी शुरू हुई तो सारी रात और सारा दिन चलती रही। जम्मू श्रीनगर के लगभाग 300 किलोमीटर लम्बे हाईवे की ऊँची पहाड़ियों पर भारी बर्फबारी एक दिन पहले ही शुरू हो चुकी थी, नतीजा हाईवे पर टनल के पास भारी वर्फबारी के कारण ट्रैफिक जाम हो गया, और जम्मू से श्रीनगर की ओर आने वाली कानवाई टनल से थोडा पहले ट्रैफिक जाम में फंस गयी। जनवरी, 2002 को श्रीनगर से जम्मू की ओर जाने वाली कानवाई को भी छोड़ने की दुविधा थी, क्योंकि खबर थी कि टनल के पास भारी हिमपात हुआ है, इस कारण रास्ता बंद है, मगर रास्ता खुल जाने का संकेत मिल पर श्रीनगर से जम्मु की ओर जाने वाली कानवाई को छोड़ दिया गया। यह कानवाई तो टनल को पार कर गयी, मगर जम्मू की ओर से आने वाली कानवाई शाम करीब 04-30 बजे टनल के थोडा पहले ट्रैफिक जाम, भारी हिमपात और भूस्खलन के कारण बंद हुए रास्ते में फंस गयी। 122 बटालियन के जवान कानवाई ग्रउंड में भारी वारिश के बीच बख्शी स्टेडियम के सामने ए0एस0कालेज चौक से शेरगढी चौक तक आर0ओ0पी और नाके लगाये रहे।

जम्मू और श्रीनगर के बीच चलने वाली कानवाई के संचालन की जिम्मेदारी उस समय 122 बटालियन के पास ही थी। 122 बटा0 की दो कम्पनी उस समय में पूरी तरह कानवाई संचालन के काम में लगी थी। पहले यह कानवाई एक दिन छोडकर चलती थी तब प्रायः कानवाई में यात्रियों की संख्या औसतन चार सौ पॉच सौ रहती थी और गाड़ियों की संख्या औसतन 27-28। इतनी लम्बी कानवाई की सुरक्षा को लेकर घाटी में स्थित उच्चाधिकारी खासे चिन्तित रहते थे। विशेष तौर पर 122 बटा0 की चिंता इसलिए सर्वोपरि थी, क्योंकि कानवाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी अंततः उसके पास ही थी। जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर आतंवादियों की कार्रवाईयां बढती जा रही थी। आई0ई0डी0 लगा कर कानवाई की गाड़ियों को उठाने के कई मामले रोज सामने आ रहे थे। रास्ते में आई0 ई0 डी0 लगी होने की सूचना के कारण सेना द्वारा रोक दिए जाने से कानवाई कई बार काफी देर से अपने गंतव्य बख्शी स्टेडियम पहुचेंती जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर सेना, सीमा सुरक्षा बल सहित अन्य कई कानवाई रोज आज भी चलती हैं। विशेष तौर पर सेना की कानवाई कई बार आई0ई0डी0 की चपेट में आ चुकी थी। 06 सितमबर, 2001 को तो हमारी कानवाई भी आई0ई0डी0 की चपेट में आ गयी थी। और इस विस्फोट में बल की 71 बटा0 की बस क्षतिग्रस्त हो गयी थी। बस में सवार 31वीं बटा0 का एक उपनिरीक्षक (मंत्रा०) मारा गया और कई जवान घायल हुए। कानवाई की सुरक्षा और इसके कुशल

संचालन को दृष्टि में रखते हुए जनवरी, 2002 से कानवाई को एक दिन छोड़ कर एक दिन की जगह प्रतिदिन कर दिया गया। और वाहनों की संख्या घटा दी गयी। तब कानवाई में यात्रियों के लिए कुल 05 बसें, और तीन ट्रक जाते थे। साथ में दो प्रोटेक्शन की गाडियां जिन्हें आम बोचाल की भाषा में जवान लाल झंडा और हरा झंडा कहते हैं, एक रिकवरी और एक कानवाई कमाण्डर की गाड़ी जाती। इस प्रकार कुल मिलाकर कानवाई में 12 गाड़ियां जाती। विशेष परिस्थितियों में कुछ गाड़िया और जोड़ दी जाती है। कानवाई की सुरक्षा की दृष्टि में रखते हुए इसके संचालन के नियम और कड़े बना दिये गये। कानवाई की गाड़ियों की प्रोटेक्शन और ड्राईवरों को कानवाई जिम्मेदारी वाली बटालियन के कमाण्डेंट स्वंय हर सुबह ब्रीफ करते है। इस प्रयास से कानवाई का संचालन तो थोडा सुगम हो गया और कानवाई, कमाण्डर के नियंत्रण में रहने लगी, मगर 122 बटा0 के जवानों का काम और जिम्मेदारी और बढ़ गयी थी।

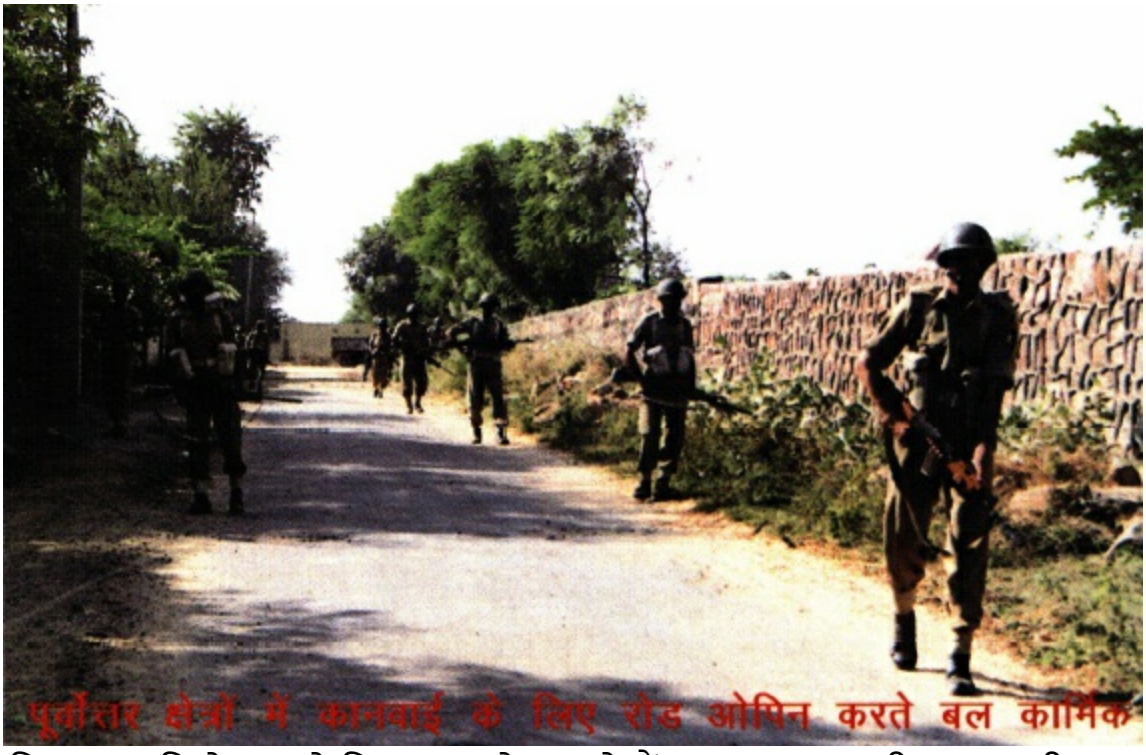


श्रीनगर–जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर आरओपी करते केरिपुबल की *64* बटा के जवान

घाटी में लगातार बढ़ रहे फिदायीन हमलों को दृष्टि में रखते हुए कानवाई ग्राउन्ड बख्शी स्टेडियम के सामने खड़ी कानवाई की गाड़ियों और जवानों की सुरक्षा एक बहुत संवेदनशील जिम्मेदारी थी। बीसियों गाड़ियां और सैकडों जवान और अधिकारी कानवाई गाउन्ड के सामने सड़क पर होते किसी भी सिरफिरे दहशतगर्त की कोई बहशियाना हरकत कहर ढा सकती थी।

लिहाजा 122 बटा0 के जबान सुबह कानवाई ग्राउन्ड में गाड़ियों के पहुंचने के

करीब घंटा भर पहले और उसी प्रकार शाम को जम्मू से आने वाली कानवाई के आने की सूचना मिलने पर कानवाई पहुचने के घंटा भर पहले कानवाई ग्राउन्ड के सामने वाली सड़क पर आर0ओ0पी0 लगा देते थे। सड़क के दोनों ओर ए0एस0 कालेज चौक और शेरगढी चौक पर नाके लगा दिये जाते थे। एक नाका बीच में तुलसी बाग मोड़ के पास भी लगाया जाता था। वर्षा, तुफान, और हिमपात के बीच भी सुबह करीब साढे पांच बजे से रात जब तक कानवाई ग्राउन्ड में पहुॅच नहीं जाती और कानवाई से आए जवानों को उनके ठिकानों पर पहुंचाने की व्यवस्था नहीं कर दी जाती तब तक रोज बिना नागा बटालियन की मुख्यालय में मौजूद कमाण्डेंट सहित सभी अधिकारी कानवाई ग्राउन्ड में तैनात रहते। आज भी कानवाई घाटी में तैनात केरिपुबल के लिए जीवन धमनी के समान है जिसका निरन्तर चलते रहना नितांत जरूरी है। छुटटी से आने-जाने वाले कार्मिक, रसद, हथियार, गोलाबारूद घाटी में हर चीज निर्भर करती है कानवाई पर। कानवाई बंद होने का मतलब जीवन का थम सा जाना।


पूर्वोत्तर क्षेत्रों में कानवाई के लिए रोड ओपिन करते बल कार्मिक

किन्तु प्रकृति के अपने नियम अपने कायदे हैं। बात 15 जनवरी, 2002 की रात की है तब प्रकृति के इसी चक्र में उलझ कर कानवाई टनल के पास रूक गयी। सर्दियों की काली लम्बी रात, उस पर भारी हिमपात, निर्देश हुआ कि कानवाई रात को मूव नहीं करेगी। रात के अंधेरे में बिना आर0ओ0पी0 के कानवाई के मूवमेंट का मतलब है बहुत बड़ा खतरा। यहां यह बाताना जरूरी है कि पूरे जम्मू श्रीनगर राजमार्ग पर सेना और अन्य सुरक्षा बलों के साए में कानवाई गतिशील रहती है। 16 जनवरी 02 की रात कानवाई भारी हिमपात के क्षेत्र टनल के पास रूकी । यात्रियों की व्यवस्था पास

के भारत तिब्बत सीमा पुलिस के कैंप में कर दी गयी। कानवाई की सुरक्षा के लिए 122 बटालियन ने पर्याप्त इंतजाम किये। कानवाई की अगली और पिछली गाड़ियों में जवानों की एक-एक सैक्शन भारी हथियारों के साथ एक उप निरीक्षक के नेतृत्व में तैनात कर दी। इसके अलावा हर गाड़ी में करीब चार जवान हथियारों के साथ तैनात कर दिये गये। कानवाई कमाण्डर लगातार अगली और पिछली गाड़ी के सम्पर्क में रहता हैं और जिम्मेदारी वाली बटालियन लगातार कानवाई कमाण्डर के सम्पर्क में कानवाई के लिए गाड़ियों और कानवाई कमाण्डर की नियुक्ति घाटी में तैनात बटालियनों में से ही क्रम वार की जाती है। 16 जनवरी, 2002 को श्रीनगर से सुबह करीब 06.00 बजे जब हम उस दिन को कानवाई के लिए आर0ओ0पी0 और नाके चैक करने निकले तो भारी बर्फबारी हो रही थी। किंतु एक अनुशासित फोर्स के जवान आर0ओ0पी0 और नाकों पर मुस्तैदी से तैनात थे। कानवाई के लिए डिटेल गाड़ियां समय पर पहुंच गयी, मगर टनल पर भारी हिमपात के कारण जम्मू श्रीनगर राजमार्ग पर कई जगह जमीन धस जाने के कारण ट्रैफिक बंद कर दिया गया था। लिहाजा उस दिन की कानवाई को निरस्त कर देना पड़ा। मगर 15 जनवरी, 2002 को जम्मू से चली कानवाई को श्रीनगर को रवाना कर देने की सूचना 122 बटालियन को मिली और 122 बटालियन के जवान फिर निकल पड़े कानवाई ग्राउन्ड के सामने आर0ओ0पी0 और नाके लगाने के लिए बिना इस बात की परवाह किए कि उस वक्त भी भारी हिमपात जारी था।

के.रि.पु.बल की 34 बटा. ने सरहदे कारवां-ए-अमन की सुरक्षा का दायित्व बखूबी निभाया

काफी प्रयासों के बाद पुनः भारत-पाकिस्तान के बीच संबंधों को मधुर बनाने का एक प्रयास 16 फरवरी, 2005 को दोनों देशों के विदेश मंत्रियों की इस्लामाबाद में हुई बैठक से प्रारम्भ हुआ। बैठक में 172 किलोमीटर लम्बा श्रीनगर-मुजफ्फराबाद मार्ग को खोलने एवं बस सेवा प्रारम्भ करने का फैसला लिया गया ताकि कश्मीरी अपने 57 वर्षों से बिछडे हुऐ भाईयों और रिश्तेदारों को मिल सके, किन्तु अमन चैन के दुश्मन आतंकावादी संगठनों को इस फैसले से खुशी नहीं हुई और उन्होंने इसका विरोध प्रारम्भ कर दिया। जैसे-जैसे 7 अप्रैल का दिन निकट आता गया, आंतकवादियों ने अपने हमले तेज कर दिये। आतंकवादियों ने मुजफ्फराबाद जाने वाले यात्रियों तथा बस डाईवरों को जान से मारने की धमकी भी दी। बारामूला-उड़ी के मध्य सड़क पर हुआ विस्फोट इस बात का संकेत था। दो स्थानों पर सुरक्षा बल के जवानों ने 65 किलोग्राम से अधिक विस्फोटक बरामद किए। आतंकवादी गिरोहों ने इसके विरोध में फिदायीन हमले भी शुरू कर दिये और TRC (टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर) को उड़ा दिया

गया। इससे यह बस सेवा और आतेसंवेदनशील बन गयी।

आतंकवादियों की धमकी को देखते हुए इस ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण फैसले को सफल बनाने के लिए यात्रियों को कमान पोस्ट तक पहुँचाने एवं मुजफ्फराबाद से कमान पोस्ट (वास्तविक नियंत्रण रेखा) से श्रीनगर तक लाने के लिए बस की सुरक्षा, जम्मु व कश्मीर प्रशासन के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती थी। श्रीनगर में महत्वपूर्ण कार्यालयों / भवनों की सुरक्षा हेतु तैनात 34 बटालियन की ड्यूटी को देखते हुए जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने बस की सुरक्षा व्यवस्था का जिम्मा के.रि.पु.बल 34 बटा0 को सौंपने का फैसला किया। और 34 बटालियन ने उत्साहपूर्वक इस ड्यूटी को स्वीकार किया। ड्यूटी के लिये नियुक्त बटा. के जवानों को प्रशासन द्वारा विशेष प्रशिक्षण दिया गया। इस ड्यूटी के लिए तैनात जवानों ने अपनी वीरता का परिचय देते हुए आतंकवादियों की कडी धमकियों/खतरों के बावजूद सफलतापूर्वक इस ड्यूटी को निभाया और ऐतिहासिक अमन का यह कारवां अपने गनतव्य मुकाम तक पहुचा। बस यात्रियों, जम्मू कश्मीर प्रशासन एवं आम नागरिकों इस केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को इस कार्य के लिए काफी सराहा है। पुलिस महानिदेशक जम्मू-कश्मीर पुलिस ने इस ड्यूटी में भाग लेने वाले बटालियन के जवानों को पारितोशिक देने की सिफारिश भी की। बटालियन द्वारा सफलतापूर्वक पूर्ण की गई इस महत्वपूर्ण ड्यूटी से निश्चित रूप से पुनः एक बार फिर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की ख्याति में वृद्धि हुई है।



कारवां-ए-अमन बस के यात्री *34* बटा. केरिपुबल के जवानों से हाथ मिलाकर उनकी सराहना करते हुए।

रंगरूट प्रषिक्षण केन्द्र - (दो) में दीक्षांत पटेड समारोह का आयोजन

09मई, 2005 को रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र, आवडी में 378 वें बैच के 202 नवारक्षियों का दीक्षान्त एवं शपथग्रहण समारोह का आयोजन किया। चैन्नई रेन्ज के उप महानिरीक्षक श्री एच. वी. सिहं ने परेड़ की सलामी ली एवं निरीक्षण किया। परेड़ का आयोजन रंगारंग कार्यक्रमों के साथ किया गया। समारोह में लगभाग 3000 गणमान्य अतिथि, अधिकारीगण व क्रामिकों व उनके परिवार के सदस्य परेड देखने के लिए उपस्थित थे। उत्कृष्ट प्रशिक्षुओं (रंगरूटों) को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल खटखटी के रंगरूट विकाश को सर्वोत्तम प्रशिक्षु का खिताब दिया गया। अपने स्वागत भाषण में श्री रत्नाकर रामन, अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक / प्राचार्य रगरुट प्रशिक्षण केन्द्र दो ने कहा कि "रंगरुटों को प्रशिक्षण आज के बदलते हालातों के अनुरुप दिया गया है। रंगरुट प्रशिक्षण केन्द्र एक ऐसी जगह है जहॉ पर एक सामान्य नागरिक को एक समर्पित एवं अनुशासित सिपाही के रुप में तबदील किया जाता हैं और प्रशिक्षत होकर वह रंगरूट एक कुशल जवान बनकर इतना कर्मठ हो जाता है कि वह देश के किसी भी कोने में सेवा कर सकता है। श्री एच. बी. सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, चैन्नई ने नवारक्षियों को सौपे गये कार्यों को पूर्ण निष्पक्षता, जिम्मेदारी, समपर्ण भाव से बिना किसी भय के पूरा करने को कहा और इस महान बल की प्रतिष्ठा को बनाये रखने का आहवान किया। श्री सिहं ने रंगरूटो से जम्मू कश्मीर के उग्रवादी संगठनों तथा उत्तर-पूर्व में असामाजिक तत्वों व नक्सल बाद से उत्पन्न खतरों से निपटने के लिए तैयार रहने को कहा। श्री एच. बी. सिंह ने आर. टी. सी. दो के प्राचार्य, प्रशिक्षण तथा प्रशासनिक स्टाफ को बधाई दी तथा रगरूटों को सफल उज्जवल भविष्य की शुभ कामनाएं दी



पुलिस उप महानिरीक्षक, चैन्नई श्री एच.बी.सिंह रंगरूट विकाश को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु की ट्राफी प्रदान करते हुए।



श्री एच.बी.सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक चैन्नई, एवं परेड कमांडर ट्राफी विजेता रंगरूटों के साथ





पुलिस महानिदेशक द्वारा 105 बटा0 आर. ए. एफ का दौरा:-

श्री जे0 के0 सिन्हा, महानिदेशक, केरिपुबल द्वारा 105 बटालियन, द्रुत कार्य बल,

कोयम्बटूर का दौरा 22 माचं 2005 को किया गया। महानिदेशक के साथ श्री सी. बालासुब्रमनियन, पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी क्षेत्र, श्री ओ0 पी0 सिंह, पुलिस महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) तथा श्री जार्ज सी. फ्रान्सीस, प्राचार्य सी0टी0सी0-दो भी उपस्थित थे। बल के महानिदेशक ने 105 बटालियन, द्रुत कार्य बाल के नवनिर्मित अधीनस्थ अधिकारी मैस / शयनकक्ष का उद्घाटन किया। श्री सिन्हा ने 105 बटालियन, द्रुत कार्य बल में भवन निमार्ण की प्रगति का जायजा लिया तथा के0 लो0 नि0 वि0 के अधिकारियों के साथ कार्य की प्रगति के बारे में विचार विमर्श किया।

इस मौके पर 105 बटालियन के जवानों द्वारा यू0 ए0 सी0 का डेमो प्रस्तुत किया गया। बल कार्मिकों के बच्चों ने जूडों/कराटे का प्रर्दशन किया। महानिदेशक, केरिपुबल द्वारा बच्चों एवं कार्मिकों द्वारा प्रस्तुत हैमो की प्रशंसा की।

143 बटा. द्वारा बचाव एंव राहत कार्य

143 बटालियन की 4 कम्पनियां काश्मीर घाटी में और 2 कम्पनियां जम्मू रीजन में रेलवे सुरक्षा के लिए तैनात है। 143 बटा0 का मुख्यालय मिनी ग्रुप केन्द्र, अवन्तिपुर में स्थित है। इस वर्ष, 2005 में जनवरी-फरवरी माह में काश्मीर घाटी में स्थानीय नागरिकों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। उस मुश्किल की घड़ी में 143 बटा. के अधिकारी और जवानों ने अपने कर्तव्य को भली-भांति समझकर आम जनता की बढ-चढ कर सहायता की। 143 बटालियन के अधिकारी, फार्मशिष्ट एवं जवानों ने एक जुट होकर 24 फरवरी से 1 मार्च, 05 तक काश्मीर घाटी के अति ग्रामीण इलाकों जैसे वामफोह, कोरीगांव, मलंगपुरा, काजीकुण्ड गांवों में वचाव एवं राहत कार्य किया। इस यूनिट के जवानों ने बुलडोजर की मदद से घर की छतों एवं गांव के आने-जाने वाले रास्तों से बर्फ को हटाया। आम नागरिकों को भारी मात्रा में दवाईयां भी उपलब्ध करवाई, जिसमें से लगभग 90 बुर्जुगों, 25 महिलाओं एवं 25 बच्चों को दवाई दी। आम जनता को आने जाने के लिए गाडियों का भी प्रबंध किया गया एवं खाने का सामान आदि वितरित किये गये। वटीहाल गांव में 9 से 10 फिट बर्फ गिरने के कारण आम जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया जिसके लिए 143 बटालियन के जवानों ने वहां की आम जनता के लिए खाने का भी प्रबंध किया। इस यूनिट के अधिकारी एवं जवानों ने काश्मीर घाटी जैसे अति संवेदनशील ईलाकों में भारी बर्फवारी के बावजूद अपने कर्तव्यों का पालन सच्ची निष्ठा एवं लगन से किया जिसके लिए वे युनिट के अधिकारी एवं जवान सराहना के पात्र हैं।

*27*वीं बटालियन के सामाजिक कार्य क्रम

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 27वीं बटा. ने आम जनता के साथ मधुर संबंध कायम करने कि लिए सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजन 12 मई, 2005 को 11.00 बजे शेर ए कश्मीर इण्डोर स्टेडियम श्रीनगर में किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत स्कूली छात्र-छात्राओं द्वारा क्षेत्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों से की गई। मनोरंजन हेतु जादुई खेल भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) के.रि.पु.बल श्रीनगर श्री रंजीत सिन्हा ने राजकीय हाई स्कूल, बटपोरा (श्रीनगर) के छात्र छात्राओं को मुफ्त स्कूल यूनिफार्म व लेखन सामग्री वितरीत की। कार्यक्रम में उपस्थित सिविल प्रशासन के आला अधिकारियों सहित स्कूल के प्रधानाचार्य, शिक्षक और प्रेस मिडिया ने बल के इस कार्यक्रम की सराहना की।



पुलिस महानिरीक्षक (परि.) श्रीनगर श्री रंजीत सिन्हा सिविक एक्शन कार्यक्रम में स्कूली बच्चों को उपहार बाटते हुए।



श्री के.के. जोआरदार, अ0पु0 उपमहानिरीक्षक गुप्र केन्द्र, रॉची, बच्चों को पोलियो की बूदं पिलाकर शिविर का शुम्भारम करते हए।

सिगनल ग्रुप केन्द्र, रॉची में पोलियो उन्मूलन शिविर का आयोजन

सिगनल ग्रुप केन्द्र/केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (आई0टी0) रॉची के तत्वाधान में 15 मई 05 को देश व्यापी पल्स पोलियो उन्मूलन अभियान के अवसर पर ग्रुप केन्द्र के आस पास के गावों में तिरील बस्ती, आर्दश नगर, लाबेद, कुटे बस्ती में रह रहे 5 वर्ष तक के 185 बच्चों को पोलियों की दवा पिलाई। पोलियों उन्मूलन कार्यक्रम के दौरान कैम्प के आस पास के गॉवों के नागरिकों को स्वास्थ्य संबंधी दवायें निःशुल्क वितरित की गई। भारी संख्या में स्थानीय नागरिक एकत्रित होकर अपर पुलिस उप महानिरीक्षक से पीने का पानी उपलब्ध कराने हेतु अनुरोध किया। और अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री के. के. जोआरदार द्वारा यथा सम्भव मदद का आश्वासन भी दिया गया। इसके अलावा ग्रु0के0 कैम्पस में भी पोलियो उन्मूलन शिविर

का आयोजन किया जिसमें 5 वर्ष तक के 65 बच्चों को पोलियों की दवा पिलाई गई।



46 बट के सिविक एक्शन कार्यक्रम

46 बटालियन द्वारा 30 मई, 2005 को राजकीय माध्यमिक विद्यालय, रोंगमेई, डिफूपार, दीमापुर (नागालैंड) में सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन 46 बटालियन, केरिपुबल की कमाडेंट श्रीमती उषा किरण कन्डुलना की देख-रेख में किया गया। इसमें दिमापुर की डिप्टी कमीश्नर मिस भी. हेकाली झिमोमी मुख्य अतिथि थी। मिस हेकाली ने इस कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को वर्तमान में केरिपुबल द्वारा नागालैंड में किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तार से समझाया। मुख्य अतिथि मिस हेकाली ने के. रि. पु. बल द्वारा कम्युनिटी संस्थान के भवन की मरम्मत के लिए मुहैया कराये गये सामान की प्रशंसा की तथा स्कूली बच्चों को खेल-कूद, स्टेशनरी व किताबें बाटी। इस अवसर पर नागा समुदाय के लोगों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

140 बटा*0* द्वारा बस्तर के सुदूर अंचल में सिविक एक्शन प्रोग्राम



छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग में सुदूरवर्ती अंचल में बामपंथी, चरमपंथी (नक्सली) उन्मूलन अभियान के अन्तर्गत तैनात 140 बटा0 द्वारा अपने परिचालनिक कार्य क्षेत्र में 20 से 22 मार्च तक कोण्डागॉव, नारायणपुर, धनौरा, अन्तागढ तथा पखांजूर में सिविल एक्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में निर्धन तथा जरूरत मन्द स्कूली बच्चों को पाठ्यसामग्री का वितरण किया गया। आदिवासी कन्या छात्रावास को रंगीन टी. वी. प्रदान किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बटा0 के कमाण्डेन्ट श्री कमलकान्त शर्मा ने जनसमूह को सम्बोधित करते कहा कि यह बल लोक कल्याणकारी राज्य का बल है। अतः सुरक्षा के साथ साथ इसका कार्य जन कल्याण करना भी है। बल के इन कार्यक्रमों की सराहना स्थानीय लोगों व समाचार पत्रों ने व्यापक रूप से की।

ग्रुप केन्द्र, पुणे द्वारा आपसी प्रेमभाव के पर्व रंगपंचमी पर रक्तदान शिविर का आयोजन



30 मई, 2005 को आपसी प्रेमभाव के पावन पर्व "रंगपंचमी" को ग्रुप केन्द्र केरिपुबल, पुणे में एक अनूठे रूप में मनाया जिसमें जवानों ने रंगों से रंगपंचमी मनाने के बजाय जनकल्याण की भावना से रक्तदान किया। ससुन शासकीय अस्पताल, पुणे के सहयोग से आयोजित इस रक्तदान शिविर में ग्रुप केन्द्र के 88 जवानों ने स्वच्छा से रक्तदान किया। श्री सी0बी0एस0 राठौर, अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र ने इस अवसर पर शिविर का उद्घाटन करते हुए जवानों को इस पुनीत कार्य के लिए स्वेच्छा से आगे बडकर रक्तदान करने का आहवान किया और वर्तमान परिपेक्ष्य में रक्तदान जैसे महान पुण्य के कार्य के महत्व को समझाते हुए बताया कि जवानों द्वारा किया गया यह रक्तदान कईयों को जीवन दे सकता है। इस शिविर के सफल आयोजन में ग्रुप केन्द्र अस्पताल के मु0 चि0 डा0 एस0 एन0 कुमार, डा0 अनु वर्मा तथा डा0 रंजिता कार व अन्य अधिकारियों के साथ-साथ ससुन शासकीय अस्पताल के डा0 मीन मुन्दड़ा, डा0 वैशाली पाटिल तथा डा0 दीप्ति अग्रवाल ने भी भरपूर सहयोग किया। ससुन शासकीय अस्पताल के चिकित्सा अधिकारियों, स्थानीय सिविल प्रशासन व प्रेस मिडिया ने के.रि.पु.बल के इस पुनीत कार्य की प्रशंसा की।

के*0*रि*0*पु*0*बल की महिला तैराकों की पदोन्नति

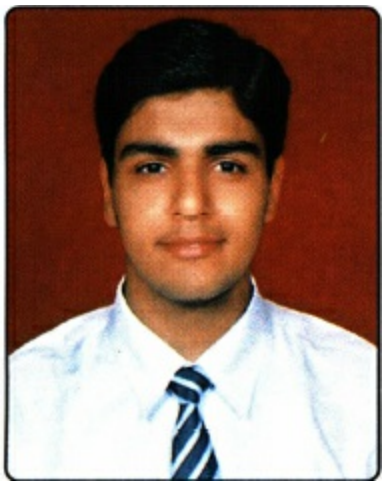
अक्टूबर,2004 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित 58वीं सीनियर राष्ट्रीय तैराकी चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने तीन हवलदार (महिला) तैराकों को समय पूर्व उप निरीक्षक के पद पर

पदोन्नत किया है

पदोन्नत होने वाले तैराकों में हवलदार (महिला) लीजा महन्ता, विभा गौड़ तथा सुजाता नतुआ शामिल हैं।

सी0आर0पी0एफ पब्लिक स्कूल का केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शना

कक्षा 12वीं के सबसे अधिक अक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राएं



चेतन आहुजा, *12*वीं कक्षा *(टापर कामर्स)*

किसी भी संगठन को अधिकतम परिचालिनिक दक्षता प्राप्त करने के लिए संगठन के कार्मिकों का उच्च मनोबल तथा उनकी प्रेरणा का महत्व सर्वोपरि है।

सेवारत कार्मिक मुख्यतः अपने बच्चों की शिक्षा के बारे में हमेशा चिन्तित रहते हैं। इसलिए केरिपु बल के सभी ग्रुप केन्द्रों में मांन्टेसरी तथा सेन्ट्ल स्कूल स्थापित किए गये हैं। बल कार्मिकों के बच्चों को महत्वपूर्ण तथा उच्च क्वालिटी की शिक्षा देने के लिए दिल्ली तथा जवाहर नगर जिला रंगारेड्डी (आन्ध्र प्रदेश) में दो सी0आर0पी0एफ पब्लिक स्कूल शुरू किए हैं। तीन आई0टी0आई क्रमशः एक एक दिल्ली, आवडी तथा भुवनेश्वर में भी खोले हैं जो बल कार्मिकों के बच्चों को रेडियो/टी0वी0 मकेनिक, इलेक्ट्रानिक्स, मोटर मकेनिक, इलेक्ट्रिकल तथा वेल्डर ट्रेड में व्यावसायिक प्रशिक्षण

देते हैं। बल ने एक इंस्टीटयूट ऑफ इन्फोमेशन टेक्नोलॉजी भी वजीरपुर, नई दिल्ली खोला है।



व्रामोरी पालादी *(12वीं कक्षा)*

पिछले वर्षों में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा-10 तथा 12वीं के परीक्षा परिणाम बताते हैं कि सी0आर0पी0एफ0 पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य, शिक्षकों की समपर्ण भावना, स्कूल के अध्ययन में अभिभावकों का सहयोग, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों द्वारा समय समय पर दिए गये मार्गदर्शन, आर्थिक सहायता तथा शिक्षा के लिए बेहतरीन उपकरण तथा संसाधन मुहैया कराने के फलस्वरूप ही दिल्ली के उत्कृष्ट पब्लिक स्कूल में इसका नाम दर्ज है। बल के महानिदेशक श्री जे0के0 सिन्हा एक कुशल पुलिस बल अधिकारी होने के साथ साथ प्रख्यात विद्वान भी हैं, इसीलिए कार्मिकों को उच्चकोटि की आधुनिकतम शिक्षा अपने बच्चों को दिलाने के लिए हमेशा प्रेरित करते हैं।

वह जानते हैं कि आज के बच्चे कल के राष्ट्र निर्माता बनेंगें। देश का भार उनके कन्धों पर आना है। अतः जब भी वे फील्ड फारमेशनों का दौरा करते हैं, जवानों को उनके बच्चों को बेहतरीन शिक्षा दिलाने के लिए इन स्कूलों में दाखिल करने को प्रेरित करते हैं। आज दिल्ली का सी0आर0पी0एफ0 स्कूल, दिल्ली के स्कूलों में ज्ञान अर्जन का एक प्रमुख संस्थान बन गया है।



सिद्धार्थ पाल. *12*वीं कक्षा *(टापर सांइस)*

स्कूल में कक्षा 1 से 5 तक के0रि0पु0 बल जवानों के बच्चों को शत् प्रतिशत दाखिला दिया जाता है जबकि आगे की उच्च कक्षाओं में सीटों की उपलबध्ता को ध्यान में रखते हुए दाखिला दिये जाते हैं। बच्चों के सर्वागीण विकास हेतु स्कूल परिसर में विभिन्न प्रकार के खेलों का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है, इसके लिए स्कूल को हर प्रकार के संसाधनों से सुसज्जित किया गया है। क्रीड़ा के साथ विद्यार्थियों को उच्च कोटि के संगीत तथा वाद्य संगीत की शिक्षा प्रदान करने की भी विशेष व्यवस्था है। स्कूल में समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात शिक्षाविदों संगीतकारों, तथा खिलाडियों को छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है जिससे कि छात्र उनके अनुभवों का लाभ उठा सके।

कक्षा 10वीं क सबसे अधिक अक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राएँ



राधव सेक्सेना *(10*वीं कक्षा*)*



स्वाति रावत *(10*वीं कक्षा*)*



भावना टंडन *(10*वीं कक्षा-टापर*)*

सी0आ0पी0एफ0 पब्लिक स्कूल में वर्ष 2005 में आयोजित 10वीं कक्षा में 114 छात्र-छात्रायें परीक्षा में बैठे जिनमें से 93 प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए तथा शेष द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। कक्षा 10वीं का बोर्ड का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। इसी तरह 12वीं कक्षा में स्कूल के 126 छात्र-छात्रायें बोर्ड परीक्षा में बैठे जिनमें से 108 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में तथा 18 द्वितीय श्रेणी में उर्तीण हुए। 12वीं कक्षा का परीक्षाफल भी शत् प्रतिशत रहा।

स्कूल द्वारा मुहैया कराई गई जानकारी के अनुसार 10वीं कक्षा की परीक्षा में के0रि0पु0 बल के अधिकारियों जवानों तथा सिविलियन के कुल 114 छात्र-छात्राए

परीक्षा में बैठे जिनका परीक्षा परिणाम इस प्रकार से रहा।

पांचों विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले छात्र छात्राएं:-

कक्षा 10वीं :-

	नाम	प्रतिशत
1	भावना टंडन	97%
2	राघव सैक्सेना	95.40%
3	स्वाति रावत	95%
4	मुदित कुमार	93.80%
5	सगुन सिंघल	92.40%
6	मयंक वार्सणे	91.80%
7	नेहा मित्तल	91.80%
8	सातविक मुदगल	91.40%
9	सीप	91.20%
10	सान्यम राहेजा	90.80%
11	अभिषेक राय	90.40%
12	करन अग्रवाल	90%
13	ईशा गुप्ता	89.60%
14	तुषार चुग	89.20%
15	पंकज कुमार	89.20%
16	प्रशांत गोयल	89.20%
17	अलकेन्द्र प्रताप सिंह	89%
18	अंगद सिंह	88.80%
19	संध्या पाल	88.60%
20	प्रियंका खेरयात	88.40%
21	अर्जुन नारंग	88.20%
22	सिद्धार्थ दामुआ	88%
23	आजाद सिंह मलिक	88%
24	आरुशी शर्मा	87.80%
25	अजय शर्मा	87%
26	मोनिका रोहिल	87%
27	आरूसि लुथरा	86.40%

इत्यादि :-

स्कूल टॉपर भावना टंडन ने पांचों विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त कर 97% अंक अर्जित कर बोर्ड की दिल्ली रीजन में परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया है।

इसी प्रकार 12वीं कक्षा में केरिपु बल के अधिकारियों जवानों तथा सिविलियनों के कुल 126 छात्र-छत्रायें परीक्षा में बैठे जिसमें 108 छात्र-छात्रायें प्रथम श्रेणी में पास हुए जबकि 18 छात्र छात्रायें द्वितीय श्रेणी में पास हुए। स्कूल टापर सिद्धार्थ पाल में सर्वाधिक 93% अंक प्राप्त किए

12वीं परीक्षा में सभी चार विषयों में मिलाकर सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं का ब्यौरा निम्न प्रकार से है :-

कक्षा 12वीं :-

	नाम	प्रतिशत
1	सिद्धार्थ पाल	93%
2	मधुर भार्गव	92.50%
3	चेतन आहूजा	93%
4	सनी सिन्हा	92.25%
5	वामोरी पलादी	91.75%
6	गरिमा शर्मा	91%
7	सिद्धि अग्रवाल	91%
8	फातिम हसन	90.50%
9	संदीप कुमार यादव	89.50%
10	अंकित गुप्ता	89.25%
11	अनुजा खन्ना	89.50%
12	मेघा नारंग	89.25%
13	प्रोचिता बनर्जी	89%
14	रोहित दाहिया	88.75%
15	विधिसा लोहानी	87.25%
16	आंनद कुकरेती	86.50%
17	अदिति कुमार	86.25%
18	इसान गोयल	86.25%
19	सुग्धा गुप्ता	86%
20	वेण लक्ष्मी महापात्र	85%
21	मनीष त्यागी	83.75%
22	नीलम जाखड़	83.50%
23	आनुरिध श्रीवास्तव	83%

24	स्वाति चौधरी	81%
25	हरीश बेन्जुवाल	81%

केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड की 10वीं तथा 12वीं परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने स्कूल के प्रधानाचार्य, अध्यापकों तथा स्टाफ को बधाई दी तथा विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

बल कार्मिकों के कल्याण की दशा में एक अनोखी पहल स्वास्थ्य ज्योति योजना



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल वर्तमान में आन्तरिक सुरक्षा, प्रतिविद्रोहात्मक कार्रवाई एवं कानून/ व्यवस्था बनाये रखने के लिए देश के विभिन्न भागों मे तैनात है। बल की अधिकतम टुकड़ियों की तैनाती जम्मू और कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में है। अपनी तैनाती के दौरान बल कार्मिकों को उनकी रहन-सहन की परिस्थितियों एवं कर्तव्य पालन के दौरान विभिन्न प्रकार के आघातों एवं बीमारियों का सामना करना पडता है। आतंकवाद विरोधी कार्रवाईयों के दौरान बल के कर्मियों को जख्मी होना, ड्यूटी के दौरान दुर्घटना में जख्मी होना या फिर अन्य बीमारियों के कारण विशिष्ट इलाज की आवश्यकता पड़ती हैं। यही नहीं तनाव ग्रस्त एवं अव्यवस्थित दिनचर्या के चलते शरीर के प्रमुख अंगों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है

जिससे उत्पन्न बीमारियों में इलाज काफी हद तक मंहगा हो गया है।

बल के कार्मिकों के अलावा उनके परिवार के सदस्यों को भी विभिन्न प्रकार की बीमारियों के कारण इलाज पर भारी राशि खर्च करनी पड़ती है। वर्तमान परिस्थितियों में बड़ती महंगाई का इलाज की कीमतों की वजह से समुचित धन की व्यवस्था करना बल के कार्मिकों के लिए कठिन कार्य है। यद्यपि केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सरकारी अनुदान से अग्रिम प्राप्त करने की सुविधा है लेकिन यह एक लम्बी प्रकिया है और बल के कार्मिकों की जरूरत के समय तुरन्त -धनराशि उपलब्ध न होने के कारण इलाज करवाने में देरी होती है। इससे मानसिक परेशानी के साथ-साथ बीमारी के बढ़ने का भी खतरा विद्यमान रहता है।

कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों की इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए बल ने एक विशिष्ट योजना की रूपरेखा तैयार करने की पहल की है। इसी कड़ी में अपोलो ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल संस्था की एक शाखा फेमिली हैल्थ प्लान लिमिटेड (Family Health Plan Limited) कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त निजी अस्पतालों में अच्छा बेहतरीन इलाज प्रदान करने कीव्यवस्था की गयी है। प्रस्तावित योजना के प्रमुख बिन्दु निम्न प्रकार है :-

क) यह एक स्वपोषित स्वास्थ्य योजना है जिसमें एक ट्रस्ट निधि निर्मित की जायेगी जिसमें सभी सदस्यों से नाम मात्र मासिक अंशदान लिया जायेगा।

ख) इस व्यवस्था का संचालन स्वास्थ्य ज्योति योजना, ट्रस्ट केरिपुबल के माध्यम से होगा जिसमें महानिदेशक से लेकर आरक्षी/अनुचर तक हर स्तर से चयनित प्रतिनिधि, ट्रस्टी के रूप में योजना का संचालन करेंगे। अतः यह आपकी अपनी योजना होगी।

ग) इस योजना के तहत के कार्मिक एवं उनके परिवार के सदस्य निर्धारित निजी अस्पताल में इलाज करवाने के लिए प्राधिकृत होगें। यथा आवश्यकता एवं स्थान के अनुरूप अन्य निजी अस्पताल भी सदस्यों के सुझाव पर प्राधिकृत कराये जा सकते हैं। कालांतर में भारत के हर जिला मुख्यालय में एक उच्चीकृत निजी अस्पताल इस योजना के तहत उपलब्ध होगा।

घ) बल के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों से इलाज के लिए किसी भी प्रकार का भुगतान अस्पताल द्वारा नहीं लिया जायेगा एवं बिल का भुगतान सीधे ट्रस्ट निधी से किया जायेगा। अस्तु सदस्यों एवं उनके परिवारों के लिए इलाज की व्यवस्था रोकड रहित (Cash less) होगी।

च) बल के प्रत्येक सदस्य किसी भी नामित अस्पताल में सीधे परामर्श प्राप्त कर सकते हैं तथा निर्धारित इलाज करा सकते हैं। इस के लिए हर कार्मिक को अपने परिवार के सदस्यों को एक फोटोयुक्त पहचान पत्र भी जारी किया जायेगा जिसे इलाज के समय संबधित अस्पताल में दिखाना होगा।

छ) इलाज के उपरांत कार्मिक को मात्र बिलों पर अपने हस्ताक्षर कर यह घोषणा पत्र देना होगा कि संबंधित खर्च को प्रतिपूति हेतु ट्रस्ट को दे दिया जाये। तदानुरूप ट्रस्ट वह अंश सरकारी कोष से प्राप्त कर लेगा एवं शेष राशि का भुगतान ट्रस्ट निधि से वहन किया जायेगा।

ज) इलाज के खर्च की दर सरकार द्वारा निर्धारित दरों से अधिक नहीं होगी। एफ.एच.पी.एल. के माध्यम से निजी अस्पतालों से किये जाने वाले अनुबंधों में इलाज की गुणवत्ता, क्रेडिट फेसिलिटी, बिलों के प्रेषण आदि बिन्दुओं को समुचित वरीयता दी गयी है।

झ) इस योजना के अन्तर्गत दो प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई गयी है।

अ) इनडोर ट्रीटमेंट जिसमें सभी प्रकार के इलाज लिये रोगी को अस्पताल में भर्ती किया जाना आवश्यक होगा। इसमें अति विशिष्ट इलाज एवं शल्य चिकित्सायें भी सम्मिलित होगीं।

ब) विभिन्न प्रकार के उच्चीकृत जाचं (High end diagnostics) एवं अन्य विशिस्थ शल्य क्रियाए जिनमें अस्पताल में भर्ती होना आवश्यक ना हो।

ट) इस योजना के अर्न्तगत इलाज के दौरान निम्नलिखित इलाज एवं प्रकियाएं सम्मिलित होगी :-

- दवाइयां एवं आहार **(Medicines consumables)**
- व्यावसायिक प्रभार **(Professional charges)**
- नर्सिगं प्रभार **(Nursing Charges)**
- प्रत्यारोपण प्रभार **(Implant cost)**
- ऑपरेशन थियेटर प्रभार **(Operation Theater charge)**
- अचेतन प्रभार **(Anesthesia fee)**
- आवास प्रभार-बेड प्रभार **(Accommodation charge)**
- व्यायाम प्रभार **(Physiotherapy charges)**

ठ) एक बल कार्मिक के परिवार के कुल छः सदस्यों (अधिकतम सीमा) को इस योजना के तहत सम्मलित किया जायेगा जिसमें बल कार्मिक, पति-पत्नि, दो संतान, माता-पिता, आदि शामिल होगें।

3. वस्तुतः इस योजना के तहत इलाज के खर्च की प्रतिपूर्ति सरकारी निधि से ट्रस्ट द्वारा की जाऐगी तथा प्रतिपूर्ति के अतिरिक्त हुए व्यय का वहन सामहिक ट्रस्ट निधि से किया जायेगा। यह योजना लागू होने के पश्चात बल के कार्मिक एवं उनके परिवार के सदस्य किसी आपातकालीन परिस्थिति या गंभीर बीमारियों के इलाज हेतु इन निजी अस्पतालों में सीधे इलाज करा सकेगें जिसके लिए उन्हें इलाज से पहले इलाज के दौरान या इलाज के बाद किसी भी प्रकार के भुगतान की

आवश्यकता नहीं होगी तथा पैसा न होने की स्थिति में भी बेहतर एवं अच्छा इलाज सुलभ होगा।

अंशदान

इस योजना के लिए सदस्यों से मासिक अंशदान के रूप में आरम्भ में लगभग 60/- रूपये प्रतिमाह लिया जाएगा और योजना के क्रियान्विति होने के पश्चात इसके अनुभव के आधार पर अनुदान को घटाया या बढाया जा सकता है।

आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि इस योजना से सम्बधित जानकारी एवं इसके लाभों के बारे में पढ़ें तथा भली भांति समझें और योजना को लागू करने के सम्बन्ध में अपनी सहमति या असहमति राय व सुझाव अपनी यूनिट कार्यालय से सेक्टर के माध्यम से महानिदेशालय को भेजें। क्योंकि आपका स्वास्थ्य हमारी चिन्तां है।

उत्कृष्टता की मिसाल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का सूचना एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र बजीरावाद, नई दिल्ली

उदेश्य :- आज के आधुनिक युग में कम्पयूटर मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है, आज के युग में कम्यूटर चिकित्सा, सेना, शिक्षा कार्यालय, विज्ञान, मनोरंजन आदि जैसे जीवन के हर क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसी कारणवश कम्पयूटर शिक्षित व्यक्तियों की समाज में बहुत मांग है। विशेषतः नई पीडी कम्पयूटर शिक्षा में विशेष रुचि दिखा रही है।

कम्पयूटर की इस प्रगति को देखते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कर्मचारी शिक्षा संस्था ने (के0रि0पु0) के कर्मचारियों के बच्चों के कल्याण के लिए एक सूचना एवं प्रौद्यौगिकी केन्द्र खोलने का निर्णय लिया ताकि हमारे बच्चे तेजी से बदल रहें इस वैज्ञानिक प्रगतिशील युग में कदम से कदम मिलाकर चल सके। अतः सन् 1999 में वाजीराबाद आई-आई टी नामक तकनीकी शिक्षण संस्थान का निमार्ण किया इस संस्थान में 1999 में '0' लेवल (बेसिक कोर्स) शुरू किया जिसकी अवधि एक वर्ष की है और यह कोर्स डी0 ओ0 ई0 ए0 सी0 सी0 (सूचना एवं तकनीकी मंत्रालय, भारत सरकार) से मान्यता प्राप्त है। इस कोर्स की महत्वता को देखते हुए वर्ष 2000 में सूचना एवं प्रौद्यौगिकी केन्द्र में 'A' लेवल कोर्स आरंभ किया गया जिसकी की अवधि भी एक वर्ष की है ताकि इस का सफल प्रशिक्षण प्राप्त करने पर इस कोर्स में दाखिला लेने के लिए उम्मीदवार को बल के कर्मचारियों के बच्चों को आसानी से

भारत सरकार / राज्य सरकार/निजी संस्थाओं में रोजगार प्राप्त हो सके।

योग्यता :- 'O' लेवल कोर्स के लिए उम्मीदवार को :- 10+2 या ITI पास (एक वर्ष) दसवीं के बाद होनी चाहिए **'A'** लेवल कोर्स के लिए :- इस कोर्स में दाखिला प्राप्त करने के लिए उमीदवार को **'O'** लेवल कोर्स की स्नातक परीक्षा पास होना चाहिए

सीट संख्या

'O' लेवल कोर्स :- 30 सीट

'A' लेवल कोर्स :- 30 सीट

प्रवेश का समय

प्रत्येक वर्ष प्रवेश हेतु प्रार्थना पत्र जमा करने की अवधि अप्रैल से 30 जून तक रखी गयी है। कक्षाए अगस्त के पहले सप्ताह में आरम्भ होती हैं।

चयन

छात्रों का चयन मैरिट के आधार पर किया जाता है, परन्तु छात्रों की संख्या अधिक होने पर चयन प्रवेश परिक्षा के आधार पर होता है।

रोजगार के अवसर

इन कोर्सों को पूर्ण करने के बाद छात्र भारत सरकार, राज्य सरकार और निजी संस्थानों में रोजगार पा सकते हैं। छात्र नीचे दिये गये पदों के लिए सार्वजनिक क्षे? के उपक्रम सरकारी अनुस्थानों में आवेदन कर सकते है।

'O' लेवल	**'A'लेवल**
जुनियर प्रोग्रामर	प्रोग्रामर
इ०डी०मी० असीस्टेन्ट	वेब एडमीनिस्टेटर,
वेब डिजाईनर	ट्रेनिंग फेक्लटी,
लेब डिमोन्सटेटर	वेब कन्नटेन्ट डेवलेपर, ट्रबल शूटर

अवसंरचना, हाइवेयर

- पेन्टीयम सरवर **(P-III), 450 Mhz, 16-bit, ,LAN, 128 MB Ram, 4.3 GB HDD,**
- वर्कस स्टेशन **(P-III), 350 Mhz, 32MB Ram, 2.1 GB HDD,**
- वर्कस स्टेशन (मल्टी मीडिय/ग्राफिक्स) **P-III, 64 MB Ram, 4.3 GB HDD, CD ROM**
- पलैट बैड स्केनर रेजूलेशन **9600*9600 DPI Scan Area 8.5*14"**
- एल0 सी0 डी0 प्रोजेकट, रेन्ज **15-100 khz, 50-130 hz, 8000*6000SVGA,**

16.7 million colors, video compatible.

साफटवेयर

Windows Nt, Bordland C++, Lotus smart suite-97, Microsoft Office 2000, word star, Macromedia Director, Adobe Pagemaker, Corel Draw, Borland Dbase, SCO Unix, Visual Forxpro, McAfee Antivirus software, Cobol-85 for Dos, Ms-Dos, Microsoft Visual Studio Enterprise Edition, Microsoft SQL server 2000.

प्रार्थना पत्र जमा करने का पता

जो उम्मीदवार इस सस्थान में प्रवेश पाने के इच्छुक है। वे अपने प्रार्थना पत्र **Superintendent, CRPF II&T 103 BN RAF, Wazirabad, Delhi-94** पास 30 जून तक भरकर भेज दे। प्रार्थी को चाहिए कि वे अपने प्रार्थना पत्र के साथ 10वीं और 12 कक्षा के प्रमाण पत्र की फोटोकापी सत्यापित करके फार्म के साथ लगाकर जरूर भेजें। तो आप बल के इस प्रौधोगिकी प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर देश के विकाश और प्रगति में अपना योगदान दें।

व्यापक दृष्टिकोण एवं सकारात्मक सोच

उप निरीक्षक *(*प्रशिक्षु*)* सी.टी.सी. *II*,
बिरेन्द्र कुमार

व्यापक दृष्टिकोण अपनाकर किए गए कार्यों और लिए गए निर्णयों का परिणाम बेहरत होता है। किन्तु इसके लिए सोचने का तरीका सकारात्मक होना आवश्यक है। सकारात्मक सोच का अभिप्राय किसी व्यक्ति के अंदर निहित उस भावना या गुण से है जिसके कारण वह किसी वस्तु, घटना या विषय आदि के अच्छे पक्ष पर अपना ध्यान अधिक केन्द्रित करता है। उसके विषय में सोचते समय संकुचित दृष्टिकोण के बदले व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है। ऐसा माना जाता है कि प्रायः प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु, धटना बात या विषय के दो पहलू होते हैं, एक सकारात्मक या अच्छा और दूसरा नकारात्मक या बुरा।

सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति सामान्यतः किसी चीज के नकारात्मक या बुरे पक्ष पर ध्यान देने अथवा उसके गुण दोषों का छिद्रावेषण करने के बदले उस चीज के

सकारात्मक या अच्छे पक्ष पर ध्यान देता है। उदाहरणरवरूप "आधा ग्लास पानी" को सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति कहेगा "आधा ग्लास खाली है"। तब सच बोलने की बात है तो दोनों ही व्यक्ति सच बोल रहे हैं किन्तु जहाँ तक सोचने की बात है तो प्रथम व्यक्ति की सोच सकारात्मक है और दूसरे व्यक्ति की सोच नकारात्मक, किन्तु यहाँ प्रश्न यह उठता होता है कि "व्यक्तित्व के विकास" अथवा किसी के समक्ष वार्तालाप में नकारात्मक सोच होने से क्या अंतर पड़ता है,

वस्तुतः किसी व्यक्ति के सोचने का अथवा किसी चीज के प्रति उसके दृष्टिकोण का सर्वाधिक असर उसके व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन पर पड़ता है। इसका तात्पर्य यह है कि कोई व्यक्ति किसी विषय में किस प्रकार की भावना या दृष्टिकोण रखता है, अपना सकता है। इसकी जानकारी उस व्यक्ति की सोच से ही मिलती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यदि कोई व्यक्ति नकारात्मक सोच या दृष्टिकोण रखने वाला है तो इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि वह व्यक्ति कुंठित या हतोत्साहित हो उसके जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण निराशाजनक हो और जो व्यक्ति स्वयं निराश हो अथवा कुंठाग्रस्त हो, इसके लिए सफलता प्राप्त करना अत्यंत कठिन होता है। दूसरी ओर जो व्यक्ति सकारात्मक सोच या दृष्टिकोण रखता है उसमें अपेक्षाकृत अधिक जोश उत्साह, हिम्मत एवं कुछ कर गुजरने की महत्वाकांक्षा होती है। फलतः ऐसे व्यक्तियों में आत्मबल भी अधिक होता है, व्यक्तित्व के विकास में सहायक एवं सफलता के मार्ग को सुगम बनाने में सहयोगी होता है।

प्रायः ऐसा देखा गया है कि सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति में "विनम्रता का एक ऐसा विशिष्ट गुण होता है जिसकी वजह से वह अच्छे को और अच्छा तो बना ही सकता है, पर बुरे या बिगड़े हुए को भी अच्छा बना सकता है। जो कार्य किसी व्यक्ति, अधिकारी या महानुभाव से कठोरता या जिद्द से अथवा नियम कानून की दुहाई देकर नहीं करवाया जा सकता है। वही कार्य विन्रम व्यवहार, मधुरवाणी और सकारात्मक सोच से सरलतापूर्वक करवा लिया जाता है। इसका अभिप्राय यह है। विनम्रता व्यापक दृष्टिकोण एवं सकारात्मक सोच किसी कठोर व्यक्ति को भी प्रभावित करने का एक सहज साधन बन सकती है। वैसे विनम्रता मानव के लिए निर्धारित शिष्टाचारों में से एक है, किन्तु जो व्यक्ति इसका आत्मसात कर लेता है उसका व्यक्तित्व स्वतः ही निखरकर आकर्षक वन जाता है। कोई भी व्यक्ति किसी विनम्र और सकारात्मक सोच स्वभाव वाले व्यक्ति से सहज ही प्रभावित हो सकाता है।

व्यापक दृष्टिकोण एवं सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति में शीघ्र निणर्य लेने की भी क्षमता होती है। वह समय के साथ आगे बढ़ने में सक्षम होता है। प्रभावशाली व्यक्तित्व के लिए ये तीनों गुण अवश्य ही होने चाहिए। तभी तक किसी भी क्षेत्र में उसका प्रदर्शन अपेक्षाकृत बहतर होगा, सिर्फ अपने पर या स्वयं पर विश्वास होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति आत्मविश्वास अर्जित कर सकता है। अपनी इच्छा शक्ति और अपने दृढ़संकल्प से आत्मविश्वास प्रायः सकारात्मक होता है। किसी कार्य की सफलता तभी सुनिश्चित हो सकती है जब उस कार्य को पूरा करने की व्यक्ति में अभिलाषा तो हो ही

साथ ही उस अभिलाषा को पूर्ति हेतु वह साहसपूर्ण एवं सक्रीय प्रयत्न भी करें। तभी किसी क्षेत्र में सफलता सुनिश्चित होगी।

कहानी

चार बात जीवन की

उप निरी. (प्रशिक्षु) बीरबल राम मीना
DASO(LDCE) SI.No.4 CTC-2, CRPF CBE-17

एक समय की बात है किसी गाँव में एक मुखिया व उसका परिवार रहता था। मुखिया के परिवार में उसके अलावा चार बेटे भी थे, मुखिया का परिवार धन धान्य से सम्पन-समृद्ध था। समय के अनुसार मुखिया ने अपने तीनों बेटों का विवाह भी अच्छे। घर की लड़कियों के साथ कर दिया। चौथा बेटा कुंवारा (अविवाहित) था, मुखिया के चारों लड़के निठले व आलसी थे। धीरे-धीरे समय के चक्र के अनुसार मुखिया भी बुजुर्ग हो गया व बीमार रहने लगा।



मुखिया ने अपनी मृत्यु नजदीक समझ अपने बेटों से चर्चा के लिए मन में विचार किया कि अगर भविष्य में भी ऐसा ही रहा तो मेरे लड़कों का अन्त निश्चित है। यह सोचकर मुखिया ने उन्हें कुछ शिक्षा देने का मन बनाया। और एक दिन उसने अपने चारों बेटों को अपने पास बुलाकर कहाँ कि देखों अब मेरा अंत समय नजदीक आ गया है। मैं तुम्हें कुछ बाते बताऊँगा जिनको निभाने का वादा करो। चारों बेटों ने अपने पिता द्वारा कही जाने वाली बातों को निभाने का वचन दिया। तब मुखिया ने उनको चार सलाह दी :-

- सदैव 100 किलोमीटर की खबर रखना।
- छाया में आना तथा छाया में जाना।
- मीठा भोजन करना।
- अपनी औरत को बाँधकर रखना।

कुछ ही दिनों के बाद मुखिया की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई, चारों बेटों ने अपनी हैसियत के अनुसार अपने पिता का अच्छा दाह, संस्कार व क्रियाक्रम किया। क्रियाक्रम के बाद चारों भाई एकत्रित होकर अपने पिता को दिये गये बचन को निभाने का निश्चय किया। अगले ही दिन मुखिया द्वारा दी गई पहली सलाह करने के

लिए सबसे बड़े वाला बेटा बड़ा होने के नाते अच्छे कपड़े पहन कर अच्छा भोजन कर कुछ रूपये लेकर बस से 100 कि.मी. की खबर लेने के लिए प्रति दिन जाने लगा तथा शांयकाल होने पर खबर लेकर घर आता।

मुखिया की दूसरी सलाह को निभाने के लिए परिवार के शेष सदस्य एकत्रित होकर मीठा भोजन बनाने के लिए प्रत्येक दिन नये नये आइटमों की सारणी बनाकर उसी सारणी के अनुसार भोजन बनाए तथा खूब मजे से खाये। तथा मुखिया द्वारा दी गई तीसरी सलाह को निभाने के लिए जब भी परिवार का कोई भी सदस्य गाँव में घुमने, टहलने व अन्य क्रियाकलापों के लिए निकले तो छतरी हाथ के में लेकर उसकी छाया में आया जाया करे। और चौथी सलाह को पूरा करने के लिए तीनों भाई अपनी अपनी पत्नियों को खम्बे से अच्छी तरह बाँधकर रख जाए कि कहीं उनके जाने के बाद छून न जायें।

यह क्रम उनका कई दिनों तक चलता रहा। अतः मुखिया द्वारा एकत्रित की गई सम्पति भी धीरे-धीरे खत्म होने लगी। इसी बीच तीनों भाईयों ने अपने चौथे भाई को भी अपने बराबर करने का मन बना लिया और उसका भी विवाह कर दिया। चौथे भाई का विवाह किया तो नई दुल्हन के घर आई गई। तब चारों भाईयों ने कहाँ कि हम तो अपने पिता को दिये गये वचन को तो भूल ही गये, अतः चौथे भाई ने भी नई नवेनी अपनी पत्नी को खम्भे से कसकर बाँध दिया। यह सब देखकर दुल्हन ने भी विचार किया कि यह क्या हो रहा है। लेकिन उन मुर्यो की नगरी में उसकी सुनने वाला और कोई नहीं था।

इस प्रकार दिन बीतते गयें, एक दिन दुल्हन ने मौका पाकर उनसे कहाँ कि आप लोगों ने मुझे व परिवार की सभी औरतों को बाँधकर क्यों रखा है। मुझे भी इस रहस्य से अवगत कराओं। तब उन चारों ने अपने पिता द्वारा बतायी गई बात को दुल्हन के सामने दोहराया। तब दल्हन ने सोचा कि पिताजी ने क्या सोचा था और ये सब क्या कर रहे है तब दुल्हन ने कहा है कि हम सब मिलकर पिताजी को दियें गये बचन को निभायेंगें। इस तरीके से नहीं बल्कि जो पिताजी चाहते थे, उस तरीके से अगर तुम सब मेरा साथ दो। तो सब ठीक हो जाएगा। परंतु मैं जैसे कहूँ वैसे-वैसे आप लोगों को कहना है, जिससे पिताजी को दिया गया बचन पूरा हो जाएगा। पहली सलाह को निभाने के लिए सबसे बड़े वाले बेटे को खेत के कोने में जहा आम रास्ता था वहाँ कुछ मटकों में पानी, बीडी, तम्बाकू लेकर एक पेड़ के नीचे बैठा दिया और कहाँ कि इस रास्ते से जो भी राहगीर आता जाता है उसे रोकना और अच्छी तरह से नमस्ते प्रणाम करना, पानी पिलाना और उसकी पूछना तथा अपनी कहना जैसे आपके यहाँ क्या हो रहा? कौन कहाँ है? और कैसा चल रहा है? और इस प्रकार अगर आप दिन में चार पाँच व्यक्तियों से भी पुछताछ करोगे तो आपको 100 कि. मी. खबर भी घर बैठे ही मिल जायेगी साथ ही अपने खेतों की रखवाली भी हो जायेगी। आपको 100 कि. मी. यात्रा भी नहीं करनी पड़ेगी।



दूसरी सलाह को पुरा करने के लिए सभी परिवार के सदस्यों को सूर्य उदय होने से पहले 4 बजे उठना है तथा खेत में काम करने के लिए जाए और दिन में अच्छी मेहनत करें, सूर्य अस्त होने के बाद घर के लिए आए। इस प्रकार उनका छाया में आना व छाया में जाना भी हो जाएगा और खेत में काम भी होगा। पूरे दिन छाता लेकर घूमने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

तीसरी सलाह को पुरा करने के लिए जब व्यक्ति पुरे दिन भर कठिन मेहनत करेगा तो उसे शांयकाल अगर वासी रोटी भी दे दी जायें तो वह भी मीठी लगेगी और बासी रोटी को भी बड़े प्यार से खायेगा न कि पुरे दिन बैठकर लिस्ट तैयार करेगा। बैठे-बैठे खाने पर तो चीनी भी मीठी नहीं लगती। उसको भी खाने का मन नहीं करता।

चौथी सलाह लिए किसी भी पुरूष को अपनी पत्नी को नजरों से बाँधकर रखना चाहिए न कि रस्सी से, क्योंकि रस्सी तो तोडी भी जा सकती है। और खुलकर आजाद भी हो सकती है, लेकिन नजरों से बँधी कभी खुल नहीं सकती।

इस प्रकार नई दुल्हन ने उन चारों भाईयों को उनके पिता द्वारा बताई गई बातों को निभाने के लिए एक नई राह दिखाई ताकि चारों आलसी भाई एक नया सुखमय जीवन यापन कर सके और अपने पिता के बचन को निभा सकें।

परिश्रम ही जीवन की कुंजी है।

कावा समाचार

क्षेत्रीय कावा समितियों द्वारा बल की महिलाओं के विकास के लिए चलाए जा रहें विभिन्न कार्यक्रमों की एक झलक

<u>ग्रुप केन्द्र, बैंगलोर</u>



<u>ग्रुप केन्द्र, बनतलाब(जम्मू)</u>







गुप केन्द्र, सिन्द्री





108 बटा. आर. ए. एफ.



ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में “महिलायें एंव पारिवारिक मूल्य” विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन





प्रजापिता ब्रहमकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एवं कावा के सहयोग से ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में "महिलाएं एवं पारिवारिक मूल्य" विषय पर एक परिसंवाद एवं राजयोग शिविर का आयोजन 24 अप्रैल से 4 मई, 2005 तक परिवार कल्याण केन्द्र में किया गया। इस विचार गोष्टी में ग्रुप केन्द्र की 250 महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर ब्रहमकुमारी सुश्री सरला व सरिता ने बताया कि परिवार समाज की इकाई हैं, यदि पारिवारिक जीवन सुख-शान्तिमय होगा तो समाज पर अवश्य उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वर्तमान समय में परिवारों में पहले जैसी आत्मीयता, सौहार्दता निःस्वार्थता व स्नेहता का अभाव दिखाई देने लगा हैं। स्वार्थ बढ़ता जा रहा हैं, परिवार टूटते जा रहे हैं, बच्चे प्रायः मॉ-बाप से अलग हो रहे हैं। परिवार के सदस्यों में आपसी समझ, स्नेह, सहयोग का अभाव होने से अशान्ति, तनाव व कलेश का वातावरण बना हुआ हैं। ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली की क्षेत्रीय कावा समिति की अध्यक्षा श्रीमती लता डबराल ने अपने स्वागत सम्बोधन में महिलाओं को पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका पारवारिक जीवन व्यवस्थित, सुख-शान्तिमय हो। श्रीमती डबराल ने कहा कि महिलाएं परिवार की धुरी होती हैं। अतः उन्हे स्वव्यवस्थित कुशल गृहणी की भूमिका निभानी चाहिए। समारोह का समापन करते हुए महिला सेवा प्रभाग की अध्यक्षा दादी रूकमणी ने कहा कि हम सब की

कुछ न कुछ समस्या होती है, परन्तु महत्वपूर्ण बात यह हैं कि हम इनका सामना किस ढ़ग से करते हैं।

“शान्ति का घर बनायागे”

हम नौजवान सी0आर0पी0 के बढ़ते ही जायेगें।
हम हर कदम पर शान्ति का घर बनायेगे।
लाखों हमारे देश की नवयोजनाए बनी।
सोने की खान है हमारे देश की जमी।
हम देश की जमीं से आतंक मिटायेगें।
हम हर कदम पर शांति का घर बनायेगे।
जब संसद में घुसपैठियों ने हमको ललकारा।
फिर भी सी0आर0पी0 के एक जवान ने हिम्मत ना हारा।
शहीद होकर देश की लाज बचायेगे।
हम हर कदम पर शांति का घर बनायेगे।
छोडेगे झूठ का रास्ता पकडेगें सच्ची शान को।
बदलेगे अपनी जिन्दगी बदलेगे हम समाज को।
हम देश की जमीं से आतंक मिटायेगे।
हम हर कदम पर शांति का घर बनायेगे।

धीरज शर्मा
नव आरक्षी ग्रुप केन्द्र
केरिपुबल नई दिल्ली

शौर्य दिवस पर शूरवीरों को सामार्पित

मेरी फोर्स के वीर जवानों
करो याद इतिहास
प्रगतिशील इस बल का आज

भविष्य तुम्हारे पास।
राष्ट्रभक्त गतिमान सदा यह बल भारत की शान,
इसी शान से माँ भारती पर करे न्यौछावर जान।
ईमानदारी सेवा निष्ठा और
समर्पण से रखना इसकी आन,
आसामी, बंगाली, द्रविड़, पंजाबी, और गुजराती
सेवारत सुख-दुख में संग संग सगे भाई की भाँति,
केरला से कश्मीर, महाराष्ट्र व अरूणाचल
मद्रास, आन्ध्रा, कर्नाटक, एमपी, दिल्ली या हिमाचल
पूरा भारत हर सेक्शन में सदा तुम्हारे साथ।
आओ शौर्य दिवस पर शहीदों को याद करें तह दिल से,
वीरता भी जिनकी वीर गति पर नाज करे तह दिल से,
जीवित है जो रण बांकुरे उनका सम्मान करें हम,
प्रेरणा लें उनकी कार्यशैली से उस पर अमल करें हम।
रण ऑफ कच्छ सरदार पोस्ट लूह से लिखा स्वर्णिम इतिहास,
जिनकी बदौलत जन-जन का है इस बल पर विश्वास,
प्रगतिशील इस बल का आज भविष्य है तुम्हारे हाथ।

धर्मपाल त्यागी
कमाण्डेंट, *29* बटा.

‘असमंजस’

मैं कितने असमंजस में हूँ
हाँ या ना के बीच पड़ा हूँ,
दोराहे के बीच खड़ा हूँ,
निर्णय लूँ अधिकार ला मेरा,
क्या जाने किसके बश में हूँ.....
मेरे जीवन पथ का लेखा,
कुछ भया नहीं यहाँ अनदेखा,

मुझे परखने वालों वोलो,
यश में हूँ या अपयश में हूँ.....
बीत गया जो कुछ होना था,
पाना कम ज्यादा खोना था,
परिचय पूछ रहे हो मेरा,
तक्षिण तीर हूँ तरकश में हूँ ।

उप नि. *(*प्रशिक्ष*)* आशीष थपलियाल
सी.टी.सी.दो

[वीर सपूतों को प्रणाम]

वीर सपूतो तुम्हे प्रणाम
तुम्ही से आज है इस देश की शान,
देश की रक्षा पर तुम कुर्बान।
भारत माता की तुम्ही हो जान,
हम आज कसम खायेंगे।
मातृभूमि के लिए मिट जायेगे।
अन्याय का सफाया करते इस
न्याय पथ पर बढते जायेगें,
देश को देखे बुरी नजर से
हिम्मत किसी में इतनी कहाँ,
उन आँखों के कुचल-कुचल के
हो जायें चरणों पर कुर्बान।
काम तेरे हम आ जाये तो,
धन्य खुद को हम समझेंगे,
अगले जन्म में इस दुनिया में
फिर तेरी सेवा में आयेगे।

उप नि. *(*प्रशिक्षु*)*
अतेन्द्र सिंह, सी.टी.सी. *-II*

“जगत में कोई नहीं है परमानेन्ट”

जगत में कोई नहीं है परमानेन्ट,
जन्मोतर तेल चमेली, शैम्पू,
चाहे लगा लो सैन्ट
जगत में फिर भी बन नहीं
सकते परमानेन्ट,।
जगत को ऐसे समझों जैसे है
कोई रेस्टोरेन्ट,
अन्त समय में पछताऐगा,
जब उखड़े तम्बू और टेन्ट
जगत में सब है अटैचमेन्ट
कोई नहीं परमानेन्ट।
काशी मथुरा हरिद्वार, चाहे घूमो दिल्ली कैन्ट,
नाम प्रभु का दिल में रखो,
चाहे मागों जायज इन्टाईटलमेन्ट,
जगत मे कोई नहीं परमानेन्ट।
अन्तर सिर्फ टेन्योरमेन्ट
माना केरिपुबल ने चाहा,
नहीं शब्द अटैचमेन्ट,
शिकायत है बस इसी की,
कहा नहीं – शब्द परमानेन्ट,
एच आर ए तो फिर भी लागू होगा,
नहीं तो होगा इम्ब्रासमेन्ट,
जगत में कोई नहीं परमानेन्ट।
है सही शब्द रेगुलर इन्कुम्बेन्ट,
राष्ट्रपति या मुख्यमंत्री,
चाहे वो हे लेफिटनेन्ट,
काल सभी को ले जाऐगा,

नहीं देखता लेडीस है या जेन्टस,
जगत में कोई नहीं परमानेन्ट।
यह है एक कन्टेक्टमेन्ट,
एन्टाईटलमेन्ट का दिल में मीटर लगा
लो यह है अर्जेन्ट,
यमराज की क्या ताकत,
जहॉ सतगुरू है परजेन्ट
जगत में कोई नहीं परमानेन्ट
भुगतान होगा सबको इक्केलेन्ट,
जगत माता की सेवा कर ला
यह है सच्ची गवर्नमेन्ट,
द्रुत कार्य बल के हरिओम मुदगिल
कहते, न्याय से मत हो अबसेन्ट
जगत में सब है ऑटैचमेन्ट,
नहीं है कोई परमानेन्ट।

बल संख्या *-911520312*
सउ नि हरिओम मुदगिल
कार्यालय पु० म० निरीक्षक, आर.ए.एफ.
दिल्ली

माँ

हिमालय की ठंडक सा स्पर्श है
माँ के हाथों में
अनगिनत तारों से भरा आसमान सा
प्यार है माँ की आखों में
तपती हुई धूप में, धने पेड़ों की
छांव सा ऐहसास है माँ की ममता में,
धरती पर प्रकृति की सुन्दरता का सा
दुलर है माँ के प्यार में,

भगवान के समान प्रत्यक्ष व पुज्यनीय
छवि है माँ के रूप में,
जीवन में इक बार जो मिलता वों
स्वर्ग है माँ के चरणों में,
कितने ही नजारों में रणों जाते है
अपनों को क्या खुद को
ही भूल जाते है हम,
कभी गलतियों के ऐसे दल-दल
में, धंस्ते चले जाते हैं हम
न जाने अपनी ही नजरों में
क्यों गिर जाते है हम।

अनिल कुमार आया
आई. आई. टी, नई दिल्ली



सी.आर.पी.एफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुत करती हुए स्कूल की छात्रा

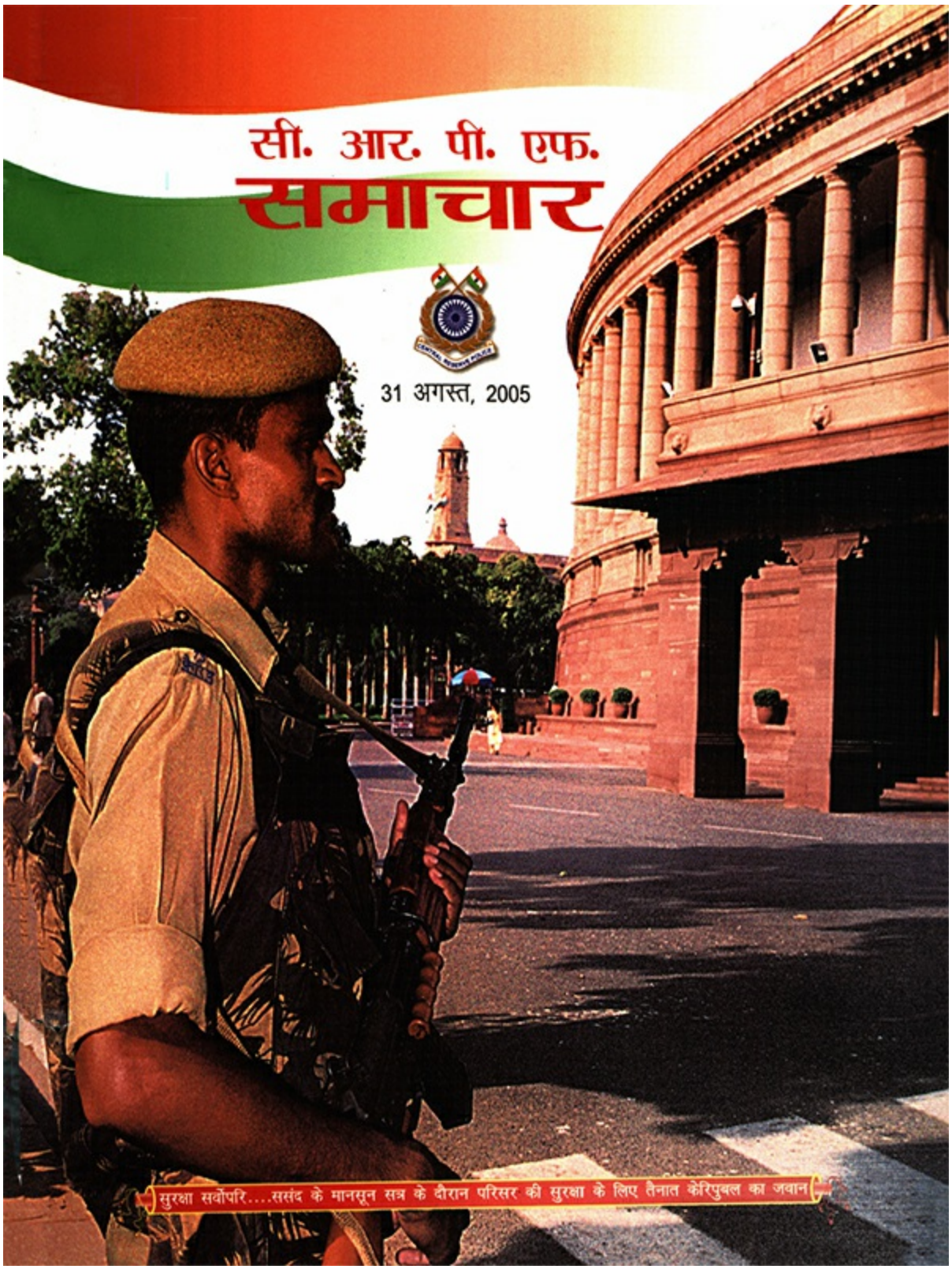
रजि. न. 4767/87



पुलिस महानिरीक्षक, उत्तरी सेक्टर, केरिपुबल श्री जी.बी. सिंह
एस. डी. जी. कैम्पस नई दिल्ली में आयोजित समारोह में बल कार्मिकों को
महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से अलंकृत करते हुए।

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

31 अगस्त, 2005



सुरक्षा सर्वोपरि....ससंद के मानसून सत्र के दौरान परिसर की सुरक्षा के लिए तैनात केरिपुबल का जवान



पुलिस महानिरीक्षक बिहार सेक्टर, श्री अरूण कुमार छिब्बर, *159*वीं बटा दीक्षांत समारोह में समस्त क्रियाकलापों के लिए सर्वश्रेष्ट रंगरूट की ट्राफी नवारक्षी पवन कुमार शर्मा को प्रदान करते हुए।



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशा०) श्री आर. के. सिंह स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बल मुख्यालय सीजीओ कॉम्पलैक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में बल कार्मकों को मिष्ठान बांटते हुए।



सी.आर.पी.एफ
समाचार

खण्ड–18 अंक–3
31 अगस्त, 2005
9 भाद्रपद, शक, 1927

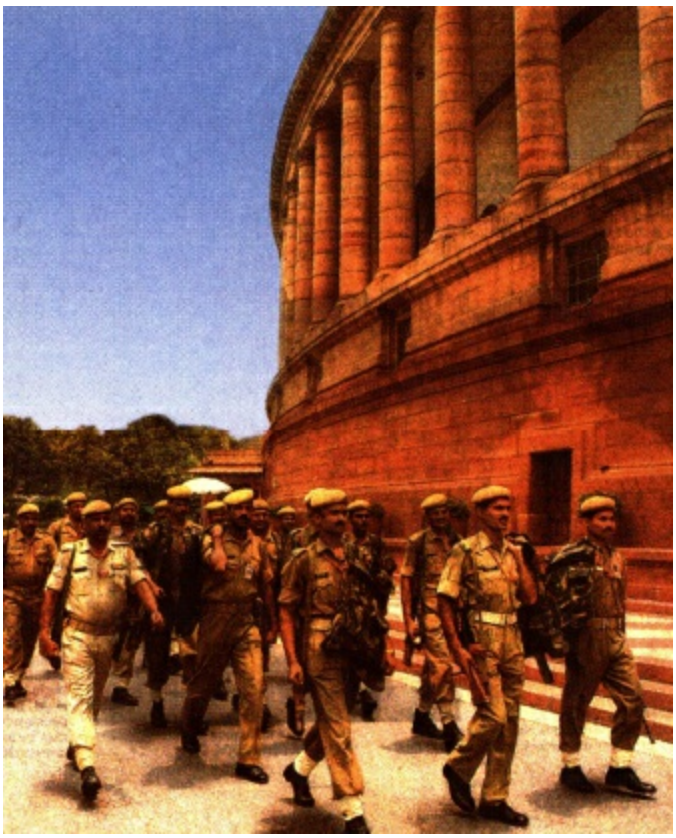
मुख्य सम्पादक
सुनील बावा

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
जन सम्पर्क अनुभाग

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
यू. एस. प्रिन्टर्स, बी–186, ओखला,
औद्योगिक क्षेत्र – I, नई दिल्ली–110020



<u>सम्पादकीय सलाहकार मण्डल</u>

<u>अध्यक्ष</u>

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

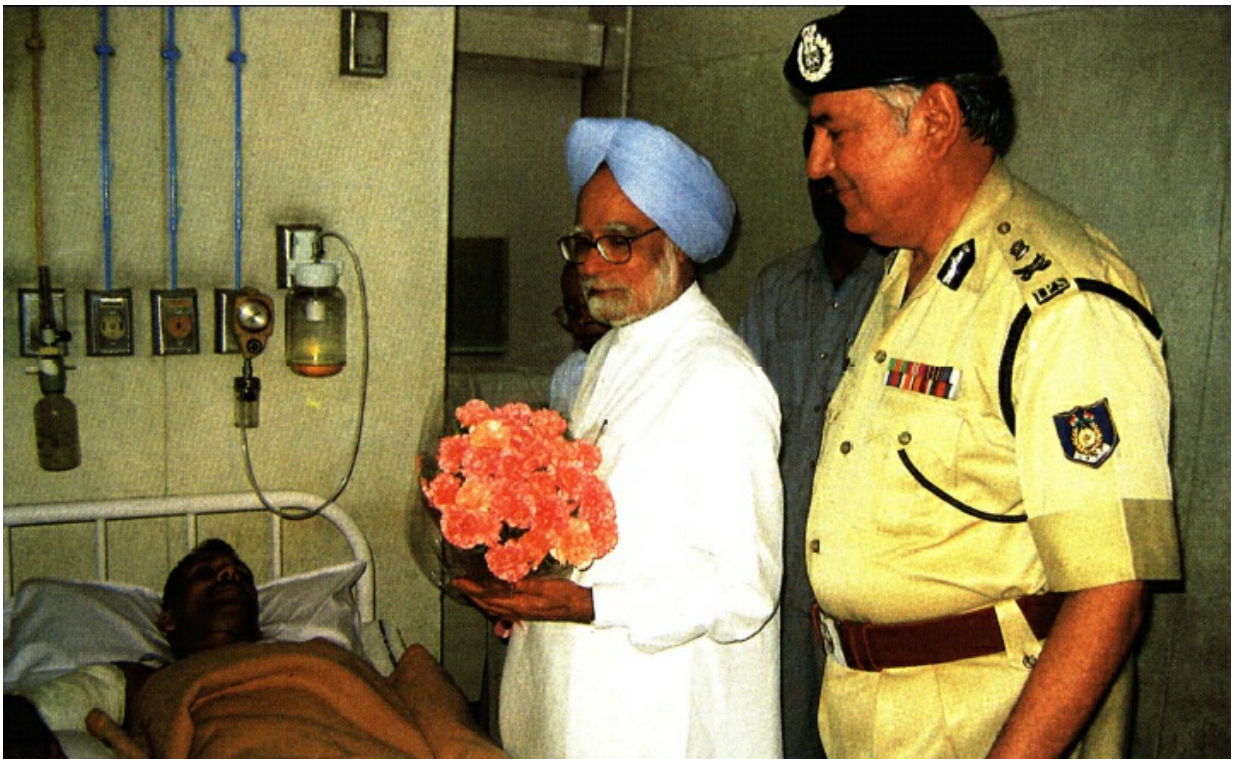
<u>सदस्य</u>

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक)
एस. एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
वी.डी. टोकस, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
एल आर सिद्रा, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

अंदर के पृष्ठों पर :–



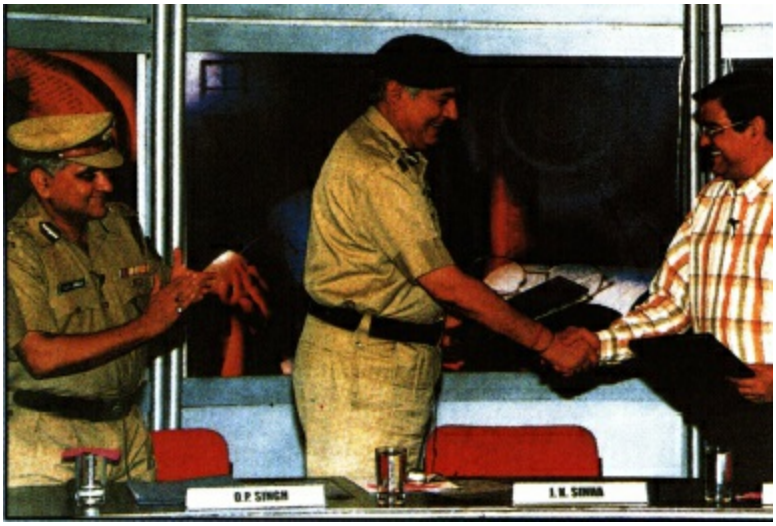
आस्था पर हमला नाकाम



सकारात्मक विचार की शक्ति



उच्च लोक पंरपराओं एवं सांस्कृतिक विरासत का अनूठा संगम श्री अमरनाथ यात्रा



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के केन्द्रों पर 'इग्नो' के अध्ययन केन्द्र स्थापित



सफलता के दो सूत्र “अवसर और कर्म”



कावा समाचार



बल के सिविक एक्शन कार्यक्रम



अन्य

- एम.टी.ओ.–टी–24
- दादी अम्मा
- म. प्र. के मुख्य मंत्री श्री बाबूलाल गौर द्वारा ग्रुप केंद्र, भोपाल की सराहना
- 30 बटा ने मनाया के.रि.पु. बल का स्थापना दिवस
- 59 बटा ने रक्सी में लगाया नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर
- सुरक्षा के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक कार्यों में भी सीआरपीएफ की 144 बटा. सक्रीय
- केन्द्रीय अर्ध सैनिक बलों के बीच मानवाधिकारों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता
- पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय में सुजोक चिकित्सा पर कार्यशाला
- नशे की लत या ड्रग एब्यूज

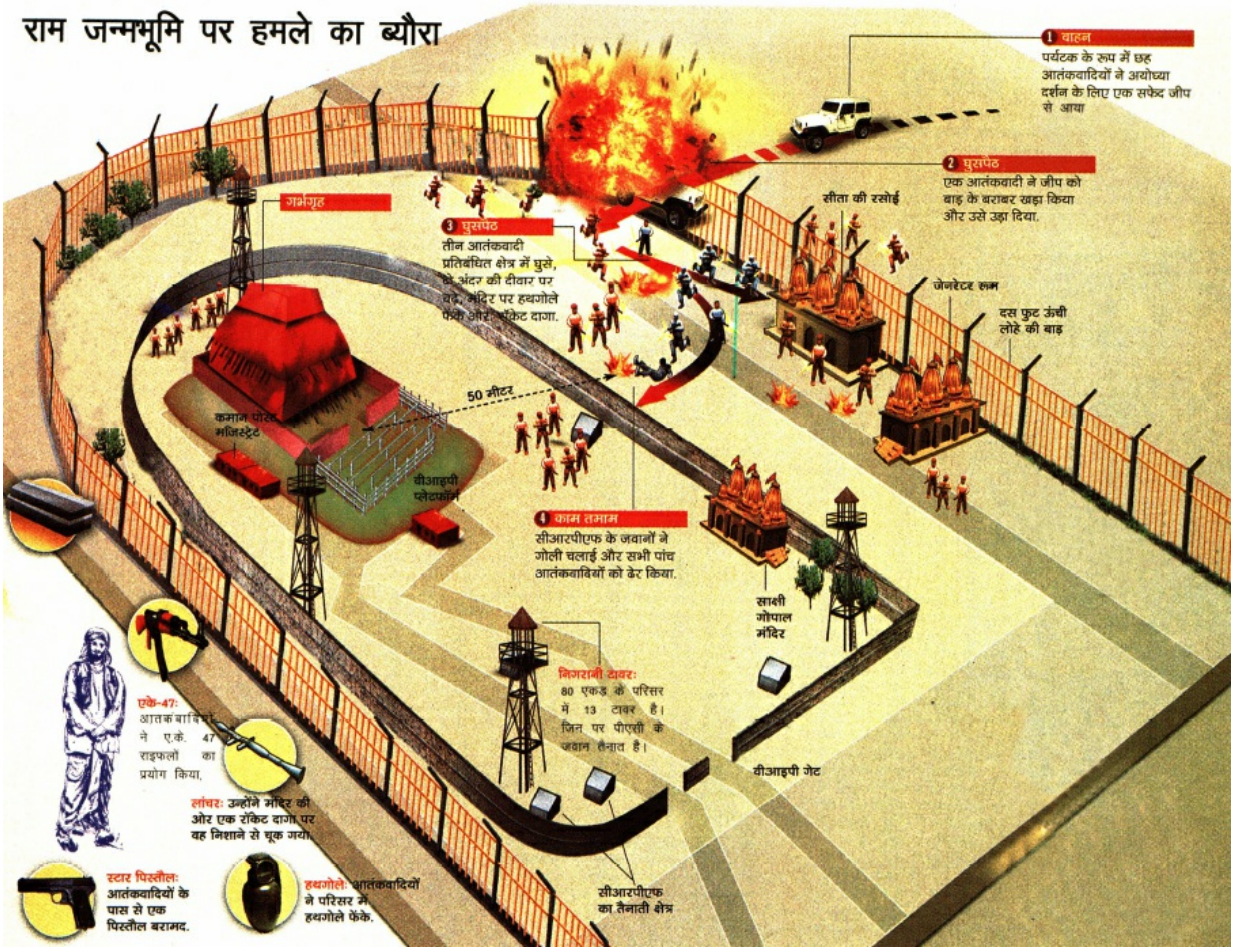
सम्पादकीय

अगस्त का महीना हम सब भारतवासियों के जीवन में एक विशेष महत्व रखता है, सावन और भादों की काली रूमानी घटाओं से घिरा यह महीना, जहाँ जेठ के ताप से तपती धरती की रूह को सीचता है, वहीं हम सभी को यह भी याद दिलाता हे कि **1947** में इसी महीने की **15** तारीख के मध्य रात्रि में हमारा आकाश से गुलामी के बादल सदा–सदा के लिए लुप्त हो गए थे। उस रात प्रज्जवलित की गई आजादी की मशाल आज पूरे गौरव के साथ जल रही है। यह ज्वाला निरंतर जलती रहें इसके लिए कई देश भक्तों को अपने प्राणों की आहुति इसमें देनी पडी। इस मशाल को जितना खतरा आज आतंकवादियों, देशद्रोही तत्वों ओऱ अलगाववादियों से पैदा हो गया है, उतना पहले कभी नहीं था। इसी के साथ–साथ देश की आंतरिक और भीतरी सुरक्षा में तैनात जवानों की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। देश की भीतरी सुरक्षा में तैनात सुरक्षा बलों (जिनका कि के.रि.पु.बल एक बड़ा हिस्सा है) की निरंतर मांग देश की एकता और आखण्डता की ओर बढ़ते खतरे का ही सूचक है। हमारे जवान अपनी आजादी की मशाल को हरदम जलाए रखने के लिए प्राणोपन्न से जुटे हैं। इसका जीवंत उदाहरण हाल ही में राममंदिर (अयोध्या) परिसर में हुए आंतकवादी हमलें के दौरान देखने को मिला। जिस बहादुरी से हमारे जवानों ने देश की सर्वोच्च संस्था संसद की गरीमा पर आंच नहीं आने दी, उसी तरह देश की सर्वोच्च संस्था संसद की को अपवित्र होने से बचाया। आज हम से जुड़ी देश की आशाएं और जनता का विश्वास हमारा सम्बल है। "सेवा और भक्ति" हमारा उद्देश्य है। जनता की सेवा में और राष्ट्र–भक्ति में प्राणों की भेंट हमारे लिए तुच्छ है।

स्वतंत्रता दिवस की इस बेला पर हम के.रि.पु. बल के कार्मिक जहाँ पूरे देश के साथ अपने स्वतंत्रता पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाते है, वही अपनी स्वतंत्रता की मशाल को निरंतर प्रज्जवलित रखने के लिए स्वयं को हथियार के रूप में प्रस्तुत करने की अपनी प्रतिज्ञा को कार्य रूप में प्रणीत करने को भी सहर्ष तत्पर है। आतंकवादियों, देशद्रोही तत्वों एवं अलगाववियों के प्रयास, हमारी इस प्रतिज्ञा की अडिग चट्टान के आगे महज समुद्र का एक ज्वार है, जिसकी नियति चट्टान से टकरा कर लौट जाना है, खंड–खंड हो जाना है।

ह०
(सुनील बावा)

सी.आर.पी.एफ की मुस्तैदी से आस्था पर हुआ आतंकी हमला नाकाम



27 जुलाई, 1939 में क्राउन रिप्रजेन्टेटिव पुलिस के रूप में गठित के.रि.पु. बल का इतिहास सदैव सर्म्पण एवं गौरव गाथाओं का रहा है। आज इस बल के इतिहास के पंनों में एक और अध्याय जुड गया है, वह है अयोध्या का फिदायीन हमला जिसे बल के जवानों ने अपनी जान पर खेल कर देश की आस्था को अपवित्र होने से बचाया। आस्था का केन्द्र राम की नगरी अयोध्या में 5 जुलाई, 2005 को आतंकवादियों ने हमला कर दिया, परसर में तैनात 33 बटा, 135 (म.) बटा के.रि.पु. बल के जवानों द्वारा राम जन्म भूमि विवादित परिसर में बने अस्थाई मदिंर को उड़ाने की साजिस को नाकाम कर दिया 5 जुलाई, 05 हनुमानजी का दिन मगंलवार सुबह के करीब नौ बजे के.रि.पु. बल व पीएसी के जवानों के साथ चली लगभग दो घन्टें की मुठभेड के बाद पाँच आतंकवादियों को बल के बहादुर जवानों ने तुरतं कार्रवाई करते हुए घटना स्थल पर ही ढेर कर दिया जबकि जीप में सवार एक आतंकी ने खुद को विस्फोट से उड़ा दिया। एक कुशल एवं सुप्रशिक्षत सैनिक की तरह सीध्र कार्रवाई

करते हुए के.रे.पु. बल के जवानों ने गभ गृह तथा मंदिर को पूरी तरह से सुरक्षित बचा लिया। मारे गये आतंकवादियों के पास दो रॉकेट लॉचर, एके–47, दो पिस्टल, भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद हुआ। इसकी देश भर में भारी प्रतिक्रिया हुई और लोगों ने इसे देश की आस्था पर हमले को करार दिया। आतंकवादियों की मनसा राम जन्मभूमि पर हमला कर लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर देश के भीतर साम्प्रदायिक दंगा करना था परतुं मंदिर के अन्दर तैनात के.रि.पु. बल की 33वीं बटा, 135 बटालियन के जवानों द्वारा सूजबूझ व तालमेल मिलाकर की गई कार्रवाई के फलस्वरूप पवित्र स्थल को सुरक्षित बचा लिया गया। अयोध्या के संवेदनशील राम मंदिर परिसर में हुआ यह फिदायीन हमला हाल के वर्षों में देश के विभिन्न धार्मिक स्थलों पर आतंकवादियों द्वारा किया गया तीसरा बड़ा हमला है।



धार्मिक नगरी अयोध्या में किसी भी स्थिति से निपटने के लिए मुस्तेद के.रि.पु. बल का जवानों

उल्लेखनीय है कि 11 सितम्बर 2001 को विश्व के सर्व शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका पर भी मगंलवार के दिन ही हमला किया था जिसमें वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर सहित तीन बहुमंजली इमारते रेत के ढेर में तबदील हो गई थी, सैकडों लोग मारे गये तथा

अमेरेका की अर्थ व्यवस्था बुरी तरह चमरागई थी। तभी अमेरेका को पता चला कि आतंकवाद क्या है। इस हमले में अमेरिका के व्यापारिक प्रतिष्ठानों का निशाना बनाया गया था। नवम्बर, 2002 में आतंकवादियों ने जम्मू के रधुनाथ मंदिर पर हमला किया था, जिसमें 9 लोग मारे गए थे और 42 घायल हुए थे। के.रि.पु. बल की जबाबी कार्रवाई से इस मंदिर को आतंकवादियों से मुक्त करा लिया गया था। इस हमले में एक आतंकवादी सहित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) का भी एक जवान मारा गया था। रघुनाथ मंदिर पर हमले के वक्त हमलावरों ने सुरक्षा घेरे को तोड़ने की कोशिश नहीं की थी, बल्कि उन्होंने आम श्रद्धालुओं की तरह ही मुख्य द्वार से मंदिर के प्रांगण में प्रवेश किया था। इसके ठीक दो महीने पहले सितम्बर, 2002 में गुजरात के अक्षरधाम मंदिर पर आतंकवादियों ने हमला किया था, जिसमें 46 लोग मारे गए थे और 81 से ज्यादा घायल हुए थे। एन.एस.जी. तथा के.रि.पु. बल के जवानों ने कार्रवाई कर दो आतंकवादियों को मार कर मंदिर को मुक्त कराया था। इस आपरेशन में एन.एस.जी. का एक कमाडों भी शहीद हो गया था। इस रामजन्म भूमि आतंकी हमले में के.रि.पु. बल के चार जवान सहित छः लोग जख्मी हुएं घायलों में एक महिला भी बताई गई। अंधाधुन्ध फायरिगं और ग्रेनेड फेंकते हुए आतंकवादी अस्थाई मंदिर से 25 गज की दूरी पर पहुँच गये लेकिन के.रि.पु. बल के जवानों ने समय पर कार्रवाई कर उन्हे ढेर कर देश को एक बड़े संकट से बचा लिया। यह आस्था का मंदिर 13 वर्ष पूर्व विवादित बाबारी मस्जिद ढाँचा गिराये जाने के बाद ही अस्तित्व में आया था। बताया जाता है कि आतंकी खुद को श्रद्धालु बताकर किराए की जीप से परिसर के नजदीक तक पहुँचे थे। ज्ञातत्व है कि बाबरी मस्जिद ढाँचा ध्वंस होने के बाद से इस परिसर की सुरक्षा का दायित्व राज्य पुलिस बल तथा केन्द्रीय अर्ध सैनिक बलों पर है। परिसर के बाहरी घेरे की सुरक्षा के लिए उ० प्र० की पी०ए०सी० पुलिस को लगाया है, क्योंकि राज्य का पुलिस बल होने के नाते परिसर में आने जाने श्रद्धालुओं की वह अच्छी तरह पहचान कर सकती है तथा पूरी तरह क्षेत्र से परिचित है। बाहरी घेरे पर पूरी गहन जाँच के बाद ही किसी को भीतरी घेरे में प्रवेश की अनुमति दी जाती है। अन्दर के घेरे पर तैनात के.रि.पु. बल के जवान पूरी गहन जाँच पड़ताव के पश्चात श्रद्धालुओं को रामलला के दर्शन के लिए जाने की अनुमति देते हैं।



अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली में अयोध्या नन्द किशोर एवं हव० सुल्तान सिहं का हाल चाल पूछती



अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली में अयोध्या हमले में घायल हव० सुल्तान सिहं का हाल चाल पूछते प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह एंव बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि कुख्यात आतंकवादियों ने हमले की ऐसी साजिस बनाई होगी कि एक आतंकी जीप में विस्फोट कर बैरीकेडिंग को उडा दे जिससे सुरक्षा बलों में अफरातफरी मच जाएगी और उनको परिसर के अन्दर प्रवेश करने का रास्ता एवं समय मिल जाएगा। आतंकी विस्फोट के बाद दो अलग–अलग जगह से मंदिर में घुसे परंतु हुआ सब उल्टा अर्लट के.रि.पु. बल के जवानों ने तुरतं पोजीशन संभाली और पाँचों आतंकियों को मार गिराया। वैसे अयोध्या में मंदिर परिसर पर भले ही पहली बार हमला हुआ हो, पर आतंकवादियों द्वारा अयोध्या में इस प्रकार की वारदात पहले भी हो चुकी है। वर्ष 2003 में तीन आतंकवादियों को पुलिस ने अयोध्या (फैजाबाद) बाईपास पर मार गिराया गया था, जबकि दो को गिरफतार कर लिया गया था। एक साल पहले अयोध्या जा रहे तीन आतंकवादियों को पुलिस ने लखनऊ में मार गिराया था।



हमले में घायल उप निरीक्षक यू.पी.ए. अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी

सीआरपीएफ के सिपाही हिमांशु यादव जो इस कार्रवाई में सक्रीय रूप से शामिल था के अनुसार "रोज की तरह 5 जुलाई 2005 मंगलवार को भी पीएसी व सीआरपीएफ के जवान गश्त लगाने के बाद सुरक्षा व्यवस्था में मुस्तैदी से लगे थे। सुबह नौ बजे तक सब कुछ सामान्य था। उसकी ड्यूटी दोराही कुआं के पास जनरेटर पर लगी थी, करीब सवा नौ बजे एक सफेद रंग की मार्शल जीप आई और बैरिकेडिगं के पास रुक गई। उसमें से पाँच लोग निकले। हमारी नजर उन पर पड़ी ही थी कि अचानक तेज विस्फोट हुआ और भगदड़ मच गई। वह विस्फोट से पाँच मीटर की दूरी पर तैनात था, विस्फोट से ग्रेनेड का एक छर्रा मेरे गले में जा लगा जख्मी होने के बाबजूद भी वह आतंकवादियों को रोकने के लिए आगे बढ़ा, पर जख्म गहरा होने के कारण यह वहीं गिर पड़ा, विस्फोट की तेज आवाज सुनकर वायरलेस आपरेटर हनुमान प्रसाद साथियों को अलर्ट करने के लिए इधर–उधर दौड़ा और सुरक्षाकर्मियों को सूचित किया। सीआरपीएफ के हव० धर्मवीर सिंह, सुल्तान सिंह, उपनिरीक्षक नंद किशोर सिंह, सि० जय नारायण सिंह जख्मी होने के बावजूद आतंकियों से मोर्चा लेते रहे तथा साथियों की कुशल क्षेम व परिसर की सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी। इन जवानों में हव० सुल्तान सिंह की हालत गंभीर हो गई। मुठभेड़ के दौरान आतंकियों की गोली उसके दाहिने कंधे के नीचे लगने से उसकी नश व मांसपेशियां कट गई। जख्मी हव० धर्मवीर सिंह व जय नारायण सिंह ने बताया कि विस्फोट के तुरंत बाद ही आतंकी ताबड़तोड़ फायरिंग करने लगे। आतंकियों को रोकने के लिए सुल्तान सिंह ने

जवाबी फायारेंग की। मुठभेड़ में उस के दाहिने कंधे पर आतंकेयों की गोली लग गई।

उप निरीक्षक नंद किशोर ने गोली मारकर एक आतंकी को मार गिराया। तभी दूसरे आतंकी की गोली नंद किशोर के सीने को वेधती हुई निकल गई। वरिष्ठ साथी को गिरते देख सि० धर्मवीर सिंह आगे बढ़ा, पर सामने से एक गोली उसके हाथ पर भी आ लगी। गोली लगने के बाबजूद धर्मवीर आतंकियों से मोर्चा लेते रहा। धर्मवीर व जयनारायण सिंह तब तक आतकीयों से मोर्चा लेते रहे जब तक तीन आतंकी हलाक नहीं हो गए। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के बहादुर जवानों द्वारा समय पर की गयी शीघ्र कार्रवाई के फलस्वरूप आतंकवादियों को परिसर के अंदर पहुँचने से पूर्व ही मार गिराया गया। केन्द्रीय गृह सचिव श्री अनिल दुग्गल, के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा पुलिस महानिरीक्षक (कार्मिक) श्री विक्रम श्रीवास्तव, पुलिस महानिरीक्षक (प्रशासन) श्री एच.सी. मीना एवं पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्री वी.डी. टोकस शीघ्र घटना स्थल पर पहुँचें तथा स्थिति का जायजा लिया और सुरक्षा व्यवस्था के बारे में राज्य सरकार के आला प्रसाशनिक अधिकारियों से चर्चा की। साथ ही सीआरपीएफ के जवानों को किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहने के लिए कहा।



संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने वाले सीआरपीएफ के जवान



मेट्रों महिला यात्री की सुरक्षा जाँच करती सीआरपीएफ की महिला कर्मी।

हमले को विफल करने में जख्मी हुए उप निरीक्षक नंद किशोर तथा हवा० सुल्तान को गहन चिकित्सा के लिए दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में हवाई जहाज द्वारा लाया गया।

यू०पी०ए० की अध्यक्षा, श्रीमती सोनिया गांधी, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, विपक्ष के नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी, केंद्रीय राज्य गृह मंत्री श्री प्रकाश जायसवाल, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री, दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित, एंव अन्य नेताओं ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जाकर घायलों की सेहत की जानकारी ली तथा उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। जवानों की निडरता, वीरता तथा साहस की प्रशंसा करते हुए कहा कि जैसे के.रि.पु. बल के जवानों ने लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद की आन बचायी थी उसी तरह देश की धार्मिक आस्था को अपवित्र होने से बचाया, इनकी बहादुरी की जितनी चर्चा की जाए उतनी ही कम है, देश को इनके ऊपर गर्व है।

मध्य प्रदेश तथा गुजरात के मुख्य मंत्रियों ने सीआरपीएफ के जवानों की बहादुरी के लिए 10–10 लाख रूपये की घोषणा की। प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने भी बल के घायल जवानों के लिए एक–एक लाख रूपये देने की घोषणा की। इस कार्रवाई में

के.रि.पु. बल के 32 जवानों को उनकी कर्तव्य निष्ठा, अदम्य साहस, उच्चकोटि के पराक्रम के लिए बल के महानिदेशक ने विनाबारी के समयपुर्व (Out of turn Promotion) पदोन्नत करने की घोषण की। पदोन्नत होने वाले उप निरीक्षक नन्द किशोर को निरीक्षक, हवलदार सुल्तान सिंह, धर्मवीर सिंह, ख्यालीराम, दिनेश कुमार, दयाराम, निर्मल चन्द, हरिनारायण तथा रामभगत को उप निरीक्षक के पद पर पदोन्नत किया गया जबकि सिपाही अब्दुल एस. अली, गौरी शंकर, समरजीत सिंह, ओमप्रकाश स्वामी, हरचन्द जाट, स्वर्ण सिंह, राजेश कुमार, रामआश्रये प्रसाद, महेन्द्र सिंह, ईश्वर दान, राजनारायण, आर.टी.कोलेह, पिजंरी झांगीर, सुखदेव सिंह, सुरेश कुमार, रघुवीर सिंह, जसविन्दर सिंह, जे.एन. साकिया, अर्जुन यादव, सुरेन्द्र मोहन, देवप्रकाश, राजेश्वर प्रसाद तथा एम.जी.शेखरन को हवलदार के पद पर पदोन्नत किया गया।

यहाँ यह स्पष्ट करना जरूरी है कि देश के विभिन्न भागों में अमन चैन कायम करने तथा भय मुक्त वातावरण बनाए रखने के लिए इस वर्ष अभी तक के.रि.पु. बल के जवानों ने 149 उग्रवादियों को मारा जबकि 1328 को गिरफ्तार किया है। उग्रवादियों से 536 घातक हथियार तथा 14365 राउंड गोली–बारूद भी बरामद किया है। 8 उग्रवादियों ने बल के समक्ष आत्मसमर्पण किया। परंतु इस सब के लिए बल को भारी कीमत चुकानी पड़ी और हमारे 29 वीर कार्मिक देश के विभिन्न भागों में हुई 188 मुठभेड़ों में कर्तव्य पथ पर शहीद तथा 137 घायल हुए।

यदि हम जम्मू कश्मीर की बात करें तो 88 आतंकवादियों को मारा तथा 154 को गिरफ्तार किया है जबकि उत्तरी–पूर्वी भागों में 13 उग्रवादियों को मारा तथा 447 को गिरफ्तार किया।

नक्सलवाद प्रभावित राज्यों में भी के.रि.पु. बल ने 48 नक्सलियों को मारने में सफलता हासिल की और 727 संदिग्ध को गिरफ्तार किया।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री अमरनाथ यात्रा शांतिपूर्ण संपन्न कराने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस उद्देश्य के लिए के.रि.पु. बल की एक महिला कंपनी तथा दो कमाण्डों टीम सहित 31 अतिरिक्त कंपनियां श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए तैनात की गई। बल के जवानों ने विभिन्न स्थानों पर यात्रियों को चिकित्सा सुविधा एवं जीवन रक्षक दवाईयाँ मुहैया कराने के लिए मुक्त चिकित्सा शिविर भी लगाए। सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए के.रि.पु. बल के श्वान दस्ते बम खोजी एवं निरोधक दस्तों तथा आश्रू गैस दस्तों की सेवाएं भी ली गई।

के.रि.पु. बल ने सम्पूर्ण प्रतिविद्रोहात्मक भूमिका निभाने के लिए चरणबद्ध तरीके से भी कार्रवाई शुरू कर दी है। जम्मू–कश्मीर तथा मणिपुर में अदला–बदली संबंधी पहले चरण की कार्रवाई आरंभ हो चुकी है। द्वितीय चरण की अदला–बदली में जम्मू–कश्मीर से सीमा सुरक्षा पुलिस की 4 बटालियनें (अरूणाचल प्रदेश से 3 व जम्मू–कश्मीर से एक) की बदली की जा रही है।

इस वर्ष फरवरी में बिहार तथा हरियाणा में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने के

लिए के.रि.पु. बल को 70 अतिरिक्त कंपानेयां तैनात की गइ थी। दिसंबर, 2004 के अंत में देश के दक्षिणी प्रायद्वीपों में आए विनाशकारी सुनामी के दौरान के.रि.पु. बल एवं आर०ए०एफ० ने पीड़ितों के लिए बचाव एवं राहत तथा सुरक्षा मुहैया कराई। उससे सभी देशवासी भली भाँति परिचित है। अभी हाल में मुम्बई में भारी वर्षा के कारण हुई तवाही के दौरान आर.ए.एफ की 102 बटा के जवानों ने जिस तरह लोगों की जान माल की रक्षा की उसकी मिशाल कही नहीं है।



दीमापुर (नागालैण्ड) हवाई अड्डे की सुरक्षा हेतु तैनात *46* बटा. के.रि.पु. बल का जवान

अयोध्या जैसी घटनाओं की पुर्नावृति ना हो और उग्रवाद – आतंकवाद से प्रभावी रूप से मुकाबला करने के लिए के.रि.पु. बल 543 करोड़ रूपये की लागत से अपने हथियार, उपकरण, संचार व्यवस्था तथा प्रशिक्षण को अद्धतन बनाने के लिए एक पंच वर्षीय योजना बनाई है। प्रति विद्रोहात्मक अभियानों में सफलता प्राप्त करने में आसूचना एक महत्वपूर्ण कार्य करती है। अतः के.रि.पु. बल ने अन्य अर्द्धसैनिक बलों तथा पुलिस बलों की तर्ज पर अपनी एक आसूचना विगं गठित की हैं। और बल के कार्मिकों को इस कार्य में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

बल को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। और 41 करोड़ रूपए लागत की इन्ट्रानेट "सेलो" नामक परियोजना के प्रथम चरण का कार्य पूरा कर लिया है। दूसरे चरण का कार्य प्रगति पर

है। सही एवं उचित निर्णय लेने के अलावा इस परियोजना के लागू होने से कार्यालय में नियमित लगी जनशक्ति को काफी हद तक कार्य मुक्त किया जा सकता है जिसका उपयोग वहाँ किया जाएगा जहाँ सैनिक की जगह मशीनें काम नहीं कर सकती।

बात सुरक्षा की हो या खेलों की के.रि.पु. बल के जवान किसी भी कार्य में पीछे नहीं है। हाल ही में क्यूएबिक (कनाडा) में आयोजित विश्व पुलिस खेलों में के.रि.पु. बल के पुरुष तथा महिला खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर 14 स्वर्ण, 17 रजत तथा 09 कांस्य पदक जीतकर देश व बल गौरव बढाया है।

सकारात्मक विचारों की शक्ति

नितीश कुमार, उप कमा.
महानिदेशक के स्टाफ अधिकारी

जार्ज बर्नाड़ शा ने कहा था "कुछ व्यक्ति वर्ष में दो या तीन बार से अधिक सोचते हैं। लेकिन मैंने सप्ताह में एक या दो बार सोचकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।" लोग समझते हैं कि वे तर्कसंगत सोच के आधार पर जीवन बसर करते हैं। सोचना संसार में सबसे अधिक कठिन कामों में से एक है। अनेक मामलों में विचार ही एक ऐसी वस्तु है जो मस्तिष्क को अभिभूत करते हैं।

दैनिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में जिसमें हमारी पुलिस और अर्द्ध सैनिक बल व्यवसाय भी शामिल है। अव्यवस्था व अकुशलता के कारण इनमें भी गलत निर्णय हो जाते हैं जिसके फलस्वरूप अप्रसन्नता, उच्च अधिकारी से रिश्ते खराब होना, मित्रता, प्रेम संबंधों में कडवाहट शादियाँ टूटना, कार्यालय में अरूचिकर समीकरण बन जाना एक आम बात है। एक स्वस्थ्य मस्तिष्क अव्यवस्था में से आदेश बाहर लाकर समय बचाता है, अन्यथा छोटे–मोटे झगड़ों और बेतुकी बातों में बर्बाद होता। 'अनुशासित विचार' ही प्रशिक्षित मस्तिष्क की एक बहुमूल्य संपत्ति हैं। **यद्यपि एक क्षण के लिए किसी भी प्रकार के विचार का आना प्रतिभावान है, लेकिन इसकी तुलना 'अनुशासित विचार' से नहीं करनी चाहिए। ऐसे अनुशासन रहित विचारों से उद्धिग्न परिणाम निकल सकते है, क्योंकि वे बिना दृढ़ तर्क शक्ति के होते हैं।**

लोगों के समूह की उत्तेजनात्मक परिचर्चा को सुनें। वे या तो लालू प्रसाद यादव या सोनिया गांधी पर बहस कर रहे होंगे और अगर ये लोग के०रि०पु०बल के सदस्य हुये तो बहस का विषय कमाण्डेन्ट की बुराई, एम.टी और लंगर की गड़बड़ी तक ही सीमित होंगी। इससे तर्क की अपेक्षा और अधिक उत्तेजना पैदा होती है। वास्तव में जितना अधिक विवादास्पद विषय होगा, उसमें तर्क उतना ही कम होगा। प्रकट किये

गए विचार मेल नहीं खाते हैं तथा आपस में टकराते हैं। तर्क जीतने की अपेक्षा विरोधी को हराने का प्रयास अधिक रहता है। अक्सर सामने रखे गए ऐसे विचार अप्रासंगिक, अविवेकपूर्ण तथा तुच्छ प्रकृति के होते हैं। यह "अनुभूति" की पैठ है, न कि "विचार" की। हृदय मस्तिष्क पर शासन करता है। पहले वाला उत्तेजित ढंग से कार्य कर रहा है, बाद वाला बंद है। जब संवेग आते हैं तो इस बात पर ध्यान दिए बिना कि आवश्यकता क्या है,? हम लोग वही देखते हैं, जो हम देखना चाहते हैं तथा वही सोचते हैं, जो हम सोचना चाहते हैं।



***52* बटा द्वारा आयोजित शिविक एक्शन कार्यक्रम में उपयोग की आवश्यक वस्तुऐं गरीबों को बाटतें हुऐ बल कार्मिक**

बेकार की बात तथा अनुभूति का इस प्रकार का संयोजन प्रतिकूल प्रभाव, दोषपूर्ण फैसले तथा व्यापक सामान्यीकरण का मिश्रण है। जो हमको अत्यन्त फिजूल के नतीजों तक पहुँचा देता है जहाँ हम अपने मस्तिष्क को लगभग बंद कर देते हैं। कुछ ऐसे फिजूल के नतीजे इस प्रकार के भी होते हैं जैसे एक भी सिविल कर्मचारी संशय रहित नहीं है। कोई भी पुलिस वाला ईमानदार नहीं है। सी०आर०पी०एफ में सिर्फ दुख ही दुख हैं। हमारे वरिष्ठ अधिकारी बल के भले के लिये कुछ नहीं करते। सभी राजनीतिज्ञ पूरी तरह से भ्रष्ट हैं आदि। इसमें सच्चाई का एक अंश है, लेकिन बुद्धिमत्ता का अंश शिथिल तथा इतना कमजोर है कि तर्क की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। जब निर्णय लेने का समय आता है या अगर आप स्वंय निर्णय लेने की स्थिति में होते हैं तो टॉए–टॉए फिस हो जाती है। दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप करना आसान है स्वयं

निर्णय लेकर कर गुजरना उतना ही मुश्किल होता है।

विचार करने की सही रीति

इस कमजोरी के लिये प्रमुख कारण आपकी विचारधारा का अस्पष्ट होना है, परन्तु आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं है, आप इसमें उल्लेखनीय सुधार कर सकते हैं। इसके लिए अनुसरण किया जाने वाला मूल पाठ आपको व्यावहारिक रूप में रखकर आपकी दक्षता में सुधार करेगा और अधिक व्यवस्थित तरीके से आपकी दैनिक समस्याओं से निपटेगा। समय–समय पर इस बात पर ध्यान दीजिए कि आपका विचार करना, दिवास्वप्न देखना, हवाई किले बनाना आदि कमजोर मन के लक्षण हैं। इनसे यह पता चलता है कि आप अपने अवचेतन मन (मन का वह भाग जहाँ आपकी सभी कामनाएं, प्रवृत्तियाँ, लालसाएं आदि एकत्रित होती रहती हैं) को नियंत्रित करने के बजाय उससे नियंत्रित हो रहे हैं। आपका चेतन मन पूरी तरह सक्रिय रहना चाहिए, उसमें पूरी जागरूकता रहनी चाहिए और उसे एक मालिक की तरह अवचेतन मन को नियत्रित करना चाहिए, उद्देश्यहीन कपोल कल्पनाएं करने, दिवास्वप्न देखने या हवाई ख्यालों में उड़ने से आप अवचेतन मन को चेतन मन पर हावी हो जाने के लिए उत्साहित करते हैं। इसलिए यह ध्यान रखिए कि वही विचार आपके मन में रहे जो वास्तव में आप उस क्षण रखना चाहते हैं।



सुरक्षा के साथ समाज सेवा भी कर्तव्य है "तैनाती के क्षेत्र में गरीब स्थानीय जनता की स्वास्थ्य जाँच के लिए चिकित्सा शिविर आयोजित करते *89* बटा के कार्मिक,"

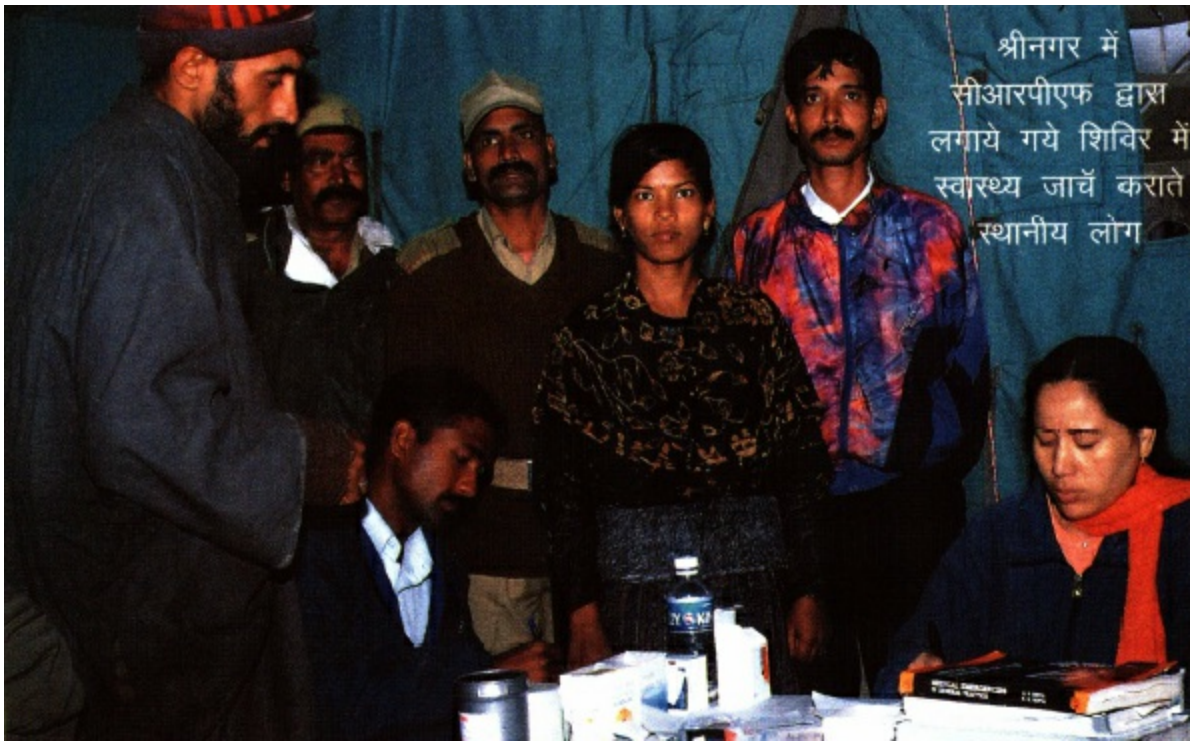
अनेक कार्मिक सही तथा गलत में अन्तर करने में असमर्थ रहते हैं, क्योंकि जैसे–जैसे वर्ष बीतते जाते हैं वैसे–वैसे वे कम सोचते जाते हैं। वे मानकर चलते हैं और मान्यता स्वीकार भी कर लेते हैं। इससे आलोचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक कार्यक्षमता को जंग लग जाता है और उसके बाद क्षय शुरू हो जाती है। वे रूढ़िवादी तरीके से रहना प्रारंभ कर देते हैं 'कम्पनी में लंगर 10 वर्ष पूर्व जहाँ था उसी प्रकार चलने दो, किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं, वह वहाँ तक सोच ही नहीं पाते कि बटा. का प्रशासनिक और परिचालनिक स्तर आज भी वहीं पर हैं, न जाने ऐसे ही कितने उदाहण आम दिनचर्या से जुटाये जा सकते हैं। कोई परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन हम आसानी से स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि हम रूढ़िवादिता के हिस्से बन चुके हैं। इससे बाहर निकलने में बहुत तकलीफ होती है। हम कुछ अलग देखना नहीं चाहते है। जो देख रहे हैं उसी की धारणा बना ली है। यह आम धारणा है कि कम्पनी कमाण्डर साहब छुट्टी आसानी से नहीं देंगे। कमाण्डेन्ट साहब दूर वाली कम्पनी में उसी अफसर को भेजेंगे जिसकी फैमिली उसके साथ है। प्रत्येक फिल्मी अभिनेत्री गजब की खुबसूरत होती है, क्योंकि लोगों ने अभिनेत्रियों को बिना रूपसज्जा के नहीं देखा है। प्रत्येक संघर्षरत युवा अभिनेत्री निर्माता के साथ सोती है। सूची अंतहीन है।

विवेकशील कार्यक्षमता विकसित करना

उपरोक्त चर्चा में आयी मानसिक नीरसता से बाहर कैसे निकलें? विवेकशील कार्य क्षमता को कैसे विकसित करें तथा कैसे इसे जागरूक बनाएं? आप स्वयं सोचने का दृढ़ संकल्प करके शुरूआत कर सकते हैं। उधार की सोच से कार्यक्षमता को जंग लग जाती है। समाचार पत्र पढ़ने को ही लीजिए। अधिकांश लोग सुर्खियों पर ही नजर डालते हैं तथा वृत्तांत के बारे में राय बनाते हैं, यह कल्पना हो सकती है। वृत्तांत के मुख्य भाग में तथ्य अन्य आयामों को उजागर कर सकते हैं, जिन्हें स्थान की कमी के कारण सुर्खियों में नहीं लाया जा सकता। यह पढ़ने के अन्य रूपों पर भी लागू होता है। सम्पादकीय, विशेष लेख तथा मानव रूचि के अंश। पढ़ने तथा अध्ययन करने में अंतर है। सिद्धांत यह होना चाहिए कि यदि यह पढ़ने योग्य है तो इस पर अपना पूर्ण ध्यान लगाना काफी महत्वपूर्ण होगा। इससे केवल वैसे ही पल्ला नहीं झाड़ना चाहिए। इसकी तह तक जाएं। आपको काफी फायदा होगा, आपके सोचने की शक्ति मजबूत होगी। परिणामस्वरूप बल के विभिन्न स्तरों पर प्रशासनिक और परिचालनिक स्तर में सुधार लाने के लिये आप अपने पद अनुरूप सकारात्मक कार्रवाई कर सकेंगें।

थोड़ा आध्यात्मिक पक्ष लें, हमें संसार में एक दर्शक की तरह सब वस्तुओं और परिस्थितियों को देखते हुए यह अनुभव करना चाहिये कि वे हमसे अलग हैं। हमारा

उनके साथ अस्थायी संबंध है, स्थायी नहीं। सांसारिक वस्तुओं के साथ हमारे भावनात्मक लगाव का कारण यह है कि हम उन्हें बहुत अधिक गंभीरता से लेने लगते हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। **हमें यह तथ्य समझना चाहिए कि कोई भी समस्या या कठिनाई हमेशा रहने वाली नहीं है। वे सब एक दिन गुजर जाएंगी, यही प्रकृति का अटूट नियम है। हर चीज निरंतर परिवर्तन और गतिशीलता की स्थिति में है। यहाँ कुछ भी स्थायी और एक-सा नहीं रहने वाला।** वस्तुओं को गंभीरता से लेने से हमारे अवचेतन मन पर गहरे प्रभाव या संस्कार बन जाते हैं। इसका फल यह होता है कि विभिन्न वस्तुओं के संबंध में हमारे मन में उनके पक्ष या विपक्ष में तरह–तरह के मोह और द्वेष के भाव विकसित हो जाते हैं। इससे संसार की वस्तुओं की सच्चाई को निष्पक्ष भाव से देखने की हमारी शक्ति कम हो जाती है। दूसरे शब्दों में, मोह, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, पसंदगी और नापसंदगी आदि भावों को धीमे–धीमे समूल समाप्त कर देना चाहिए। इससे मन पक्षपातहीन और मोह से मुक्त होकर जीवन के संकटों और कठिनाइयों में भी शांत, गंभीर और संतुलित बना रहेगा तथा निश्चित रूप से आप सही दिशा में सोचने को अग्रसर होते रहेंगे जिसे बल और समाज दोनों का लाभ होगा।



कुछ अन्य सुझाव

अपनी मानसिक व्यथाओं से बाहर निकलने तथा अपनी रूढ़ियों को तोड़ने के लिए आपको अपना आलोचक स्वयं होना चाहिए। हर चीज पर विश्वास करने से बचें। दूसरे के कामों में दखल देने वाले कुछ व्यक्ति सुधार करने के नाम पर आते हैं तथा

मामूली मित्र के बारे में निंदात्मक कहानी सुनाते हैं। सोचिए। रूकिए। इस बारे में आगे बढ़ने की जल्दी न करें। इसी प्रकार प्रत्येक चीज के कम महत्वपूर्ण पक्ष पर भी सोचने की आदत बनाए। अपने चौकन्ने दिमाग के सूक्ष्मदर्शी यत्रं के अन्तर्गत अपने विचारों, विशेष सिद्धांतों तथा अविवेकपूर्ण ढंग से अर्जित धारणओं को रखें। जब कभी आप किसी आकस्मिक समस्या या किसी की बेतुकी टिप्पणी अथवा आलोचना से अशांति या बेचैनी अनुभव करें तो एकदम से प्रतिक्रिया करने या यकायक उत्तेजित होने से बचें। बेहतर तो यह है आप उस स्थान से चले जायें और एकांत में कुछ समय तक बैठें। अपने को शांत और संतुलित करें। अपने मन को कुछ विश्राम दें और तब शांतिपूर्वक उस मुद्दे पर विचार करें। मन की इस स्थिति में आप वास्तविक समस्या को बेहतर रूप से समझ सकेंगे। उत्तेजित अवस्था में मन की विवेक शक्ति नष्ट हो जाती है। लोगों के मांगने पर ही अपनी सफाई दीजिये। अपने निर्दोष होने को लोगों पर थोपियें नहीं। उत्तर देते समय अपनी आवाज हमेशा नम्र, आदरपूर्ण और नियंत्रित रखें। आपकी चाहे कितनी गलत आलोचना की जाये अथवा दोष लगाया जाये, आपको कभी अनियंत्रित तरीके से व्यवहार नहीं करना चाहिये और जवाब देते समय कभी चीखना–चिल्लाना नहीं चाहिये। महानिदेशक के स्टाफ अधिकारी होने की वजह से मुझे ऐसे कई वरिष्ठ अधिकारियों को नजदीक से देखने का अवसर प्राप्त हुआ जोकि आम रूप में काफी सालीन व व्यवस्थित रहते हैं, परंतु उन पर कोई दोषारोपण या आक्षेप लगने या किसी परेशानी में फँसने की स्थिति में महानिदेशक के समक्ष उनकी यही व्यवस्था और शालीनता भंग हो जाती है। उत्तेजना और अव्यवस्था का दौर थोडी देर के लिए शुरू हो जाता है और जिस प्रकार से सोचा था कि अपनी बात इस व्यवस्था के साथ महानिदेशक के सम्मुख पेश करेंगे वह व्यवस्था कहीं देखने को नहीं मिलती है। परिणामस्वरूप वे अपनी बात बिना पूर्ण संतुष्टि के रखे कक्ष से बाहर आ जाते हैं।

वार्तालाप–एक उचित समाधान

वार्तालाप अवसर प्रदान करता है। व्यापक सामीकरणों से बचें। दूसरे लोग जो राय बनाते हैं उसे मत बदलिए। क्या वे प्रासंगिक है? क्या उनमें तर्क हैं? मानने लायक हैं? यदि नहीं तो उन्हें तार्किक रूप से, लेकिन नम्रता के साथ अस्वीकार कर दें। तस्वीर का दूसरा रूख भी देखिए। आप इस प्रक्रिया का अनुसरण कर सकते हैं, मित्र की सहमति से एक विषय का चयन कीजिए। दो व्यक्तियों का एक बहस क्लब बनाएं– एक पक्ष में बोलेगा तथा दूसरा विपक्ष में। यह दोंनों के लिए एक प्रकटीकरण का लाभप्रद साधन है। आप दोनों अपनी विचार शैली को तीव्र कर सकते हैं। उदाहरण के लिए अरूण जैटली की पैठ नोट करें। वह अपनी पार्टी के कुछ लोगों या समर्थकों की अपेक्षा सावधानीपूर्वक शब्दों का प्रयोग करते हैं। दूरदर्शन पर जिरह कार्यक्रम में जयप्रदा बहुत अच्छी प्रकार बोलती हैं। बोलने से पहले अपने शब्दों को तोलती हैं। अदक्षता, गलतियों तथा चिंताओं का आम कारण दिमाग का भ्रम है। अनुशासनहीन

दिमाग में अनुशासनहीन विचार आते हैं। इन्हें नियंत्रित करें, इन्हें व्यवस्थित करें तथा नियंत्रण करने से इसके उद्देश्यहीन पथ समाप्त हो जायेंगे। आपका अवचेतन मन आपके चेतन मन के लिए एक विशाल भंडारगृह की तरह काम करता है। आप जो कुछ देखते–सुनते, विचारते और अनुभव करते हैं, सभी कुछ एक स्थायी स्मरण शक्ति के रूप में अवचेतन मन में जमा हो जाता है। लेकिन इनका समस्याग्रस्त भाग यह है कि इन विचारों और इंद्रियों के अनुभवों के साथ ही हम इसमें बहुत–सी भावनात्मक गंदगी और नकारात्मक (जैसे घृणा, प्रतिशोध, भय, क्रोध, द्वेष आदि) सोच भी फेंकते जाते हैं, जो यहाँ वास्तविक उथल–पुथल मचाती है। कुछ लोग अपने अवचेतन मन में, अनजाने में ही लगातार नकारात्मकता भरते जाते हैं। हर बार जब आप नकारात्मक विचार करते हैं तो वह तत्काल आपके अवचेनत मन में चला जाता है, आप इस बारे में जागरूक हैं या नहीं, इससे उसके प्रभाव पर कोई अंतर नहीं पड़ता। यह एक नियम है कि आप अवचेतन मन में जो कुछ डालते हैं, वही चीज फिर अवचेतन मन आपको वापस भी करता है, इस लिए ये सभी नकारात्मक प्रभाव और भावनाएं जो यहाँ भरे होते हैं, चेतन मन में उछल कर वापस आते हैं और वहाँ आवेगों, लालसाओं, दुर्वासनाओं के रूप में लघु तंरगों की रचनाएं करते हैं और उसे बेचैन रखते हैं। रात में जिन भयानक स्वप्नों को आप देखते हैं, वह अवचेतन मन की इसी नकारात्मक और गलत प्रोग्रामिंग का नतीजा है।



“कर्तव्य के प्रति सदैव निष्ठावान,” मैट्रो रेल में यात्रियों की सुरक्षा जाँच करती के.रि.पु. बल की महिला

इस समस्या से बचने का उपाय क्या है? आपको तत्काल अवचेतन मन के सकारात्मक और शक्तिशाली विचारों और भावों से भरना प्रारंभ कर देना चाहिये। वह धीरे–धीरे अवचेतन मन में भरी नकारात्मक और अशुद्ध भावनाओं को समाप्त कर देगा। याद रखिये 'सकारात्मक सदैव नकारात्मक पर विजयी होता है।' इसके लिए आपके चेतन मन को हर उस विचार के प्रति सजग और सचेत रहना पड़ेगा, जो वह विचार कर रहा है, उसे केवल सकारात्मक विचारों के ही प्रवेश करने की अनुमति देनी होगी। इस स्थिति को पाने के लिए आपको प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक घटना, प्रत्येक समस्या, प्रत्येक दुर्भाग्य व प्रत्येक विपत्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना होगा, जिसे आप हर विपत्ति के पीछे छिपी अपनी भलाई को देख कर विकसित कर सकते हैं।

मानव दिमाग संसार में सबसे अधिक भव्य यंत्र है, जो आपकी अपनी टोपी में है। दिमाग को टोपी पर हावी होने दें न कि टोपी को दिमाग पर। दिमाग का प्रयोग करें। प्रयोग करने से यह बढ़ता तथा विकसित होता है।

हास्य व्यंग:–

बलकार सिंह–एम.टी.ओ.–टी–२४

मनीष कुमार सच्चर
उप कमाण्डेंट–*122* बटा.

वसंत की सुबह का वह स्वच्छ धुला आसमाँ, चहचहाते हुए पंक्षियों का झुंड, अंधेरे को चीरकर प्रकाश अपना साम्राज्य फैलाने में प्रयासरत और इन सबके बीच उभरती एक लम्बी ध्वनि, सी.आर.पी. की बटालियन का मार्कर बिगुल। इस ध्वनि का उच्चारण होते ही खाकी सफेद रंग की कई आकृतियां मैदान में डोलने लगी। मैदान के दूसरे छोर से जुड़ी हुई सड़क को दूर कोने पर एक धुंधली सफेद आकृति प्रकट हुई जो धीरे–धीरे नजदीक आती गई।

"अरे, एम.टी.ओ. साहब आ गये, जल्दी फालइन हो जाओ।" एक एस.ओ. के इतना कहने पर खाकी–सफेद ड्रेस में सजे उन जवानों में हलचल बढ़ गई और एम.टी.ओ. साहब परेड ग्राउण्ड के सामने चहलकदमी करने लगे। 6 फिट 2" के कद वाला मध्यम शरीर का सफेद पी.टी.ड्रेस में चहलकदमी करता यह व्यक्ति है

“बलकार सिंह” इस यूनेट का एम.टी.ओ., उसकी सफेद कमीज के कंधे नीचे की ओर ढलके हुए सफेद पेंट अत्यधिक ढीली जिसकी कमर पर कसने के लिए उसने एक बेल्ट लगा रखी, चेहरे पर तकरीबन पकी हुई दाढी और मूंछ आँखो के नीचे वाले गडढे सूखे हुए ओंठ देखकर लगता है मानों यह व्यक्ति युगांण्डा के किसी शरणार्थी कैम्प से आ रहा हो जहाँ उसे कई दिनों से खाना नहीं मिल रहा था, परंतु पंजाब का सरदार, सी.आर.पी. का अधिकारी और एम,टी.ओ. होते हुए भी खाने–पीने का अभाव, यह बात बड़ी विवादास्पद प्रतीत होती है।

लेकिन दो महीने पहले तक ऐसा नहीं था, 118 किलो के सेन्ट्रल कुश्ती टीम के हैवी वेट खिलाड़ी रह चुके सहायक कमाण्डेंट बलकार सिंह की देख–रेख इस बल ने उसी तरह की थी जैसे एक माँ अपने लाडले को पालती है। 1974 में पंजाब के सराय लाडोवाल गांव में जब बलकार सिंह कुश्ती का चैपियन घोषित हुआ था तो सी.आर.पी.एफ. के कमाण्डेन्ट ने खुद उसे इस फोर्स में आने के लिए आमंत्रित किया था। उस दिन बलकार सिंह को लगा जैसे उसे कोई सल्तनत मिल गई हो। उसके बाद देश की सेवा और अपने अधिकारियों के प्रति निष्ठा के फलस्वरूप आज वह सहायक कमाण्डेन्ट बन गया था। सब कुछ एक स्वप्न की भांति बलकार सिंह की आँखों के सामने नाच रहा था कि अचानक एक लम्बी ध्वनि ने उसकी इस सुखद निद्रा को तोड़ दिया। अफसर काल को सुनते ही बलकार सिंह ने एस.एम. से रिपोर्ट ली और परेड को मार्च करके खुद थके कदमों से हिलने लगा।



दो महीने में आये इस भूकम्पीय परिवर्तन का कारण था, सी.आर.पी.एफ की सालाना चिकित्सा जाँच। वार्षिक चिकित्सा जांच में डॉक्टर के कहने पर दो महीने पहले जब बलकार सिंह वजन लेने वाली मशीन पर खड़ा हुआ तो बेचारी मशीन के मुख से छोटी सी कराहट निकल गई और कांटा ठीक 118 किलो के आस–पास नृत्य करने लगा। डॉक्टर की पैनी नजर से चश्मे के माध्यम से उस रीडिंग को रिकार्ड किया और अपने माथे को सिकोड़ते हुए कहा "ओ. हो–आपको तो सब खाना पीना छोड़ना होगा और अपना वजन कम से कम 35 कि० ग्रा० घटाना होगा, ऐसा कहते हुए उसने बलकार सिंह के हैल्थ कार्ड पर लिख दिया "बलकार सिंह – Shapa–3(T-24)"

डॉक्टर के लिखते समय बलकार सिंह को लग रहा था जैसे कोई जज उसके लिए मौत की सजा लिखते हुए अपनी कलम की निब तोड़ रहा हो। "दीवार" फिल्म में शायद अमिताभ बच्चन को भी अपने हाथ पर "मेरा बाप चोर है" लिखे जाने पर इतना दुख नहीं हुआ होगा जितना उस समय बलकार सिंह को हुआ था। दिल तो किया कि डॉक्टर से कह दे कि "डॉक्टर साहब, पिछले हफ्ते जो आपको बाजार घूमने के लिए गाड़ी नहीं दी थी उस गलती की इतनी बड़ी सजा तो मत दो अपने इस बलकार को।

डॉक्टर के शब्द उसके कानों में घंटे की तरह गूंज रहे थे"। आपको खाना–पीना छोड़ना होगा, आपको खाना–पीना.....।" उफ..... बलकार सिंह ने अपने कान बन्द कर लिये। पिछले दो महिनों से बलकार सिंह सिर्फ दलिया, सलाद, भीगे चने, सूप और वाहे गुरू की कृपा पर ही जी रहा था। पंजाब का खलिस सरदार को भोजन की इतनी आपदा, यह कलयुग नहीं तो और क्या है। साढ़े आठ बजते ही बलकार सिंह जी.ओस मैस की तरफ चल दिया। उसके पेट में चूहे दौड़ रहे थे, पर शायद उसने भी चिकन टिक्के की आस छोड़ दी थी। मैस के डाईनिंग टेबल पर डॉक्टर पहले से मौजूद अपने गरम–गरम आलू के पराठे पर मक्खन के चम्मच को पटक–पटक कर उस पर लगे मक्खन के टुकड़े को गिराने का सफल प्रयास कर रहा था। बलकार सिंह ने उसे देखकर अपने ओंठ पर जीभ फेरी और मैस सिपाही बड़े परिहास भरे अंदाज में उसके सामने दलिया और थोड़े भीगे चने रखकर चला गया। नाश्ता करते समय बलकार सिंह को पता लगा कि साढे नौ बजे वेलफेयर मीटिंग है। जी.ओस.मैस से बलकार सिंह अपनी मोटी सी डायरी उठा कर आफिस की तरफ चल दिया। उसकी डायरी वाले हाथ की तरफ का उसका कंधा झुका हुआ था। यह वही बलकार सिंह था जो बड़े–बड़े पहलवानों को उठाकर पटक देता था और आज अपनी डायरी भी उसे एक बोझ लग रही थी।



वैलफेयर मीटिंग के दौरान उजले सफेद रंग की पोशाक में माथे पर चंदन का तिलक लगाये श्याम वर्ण का मैस सिपाही रामास्वामी समोसे और रसगुल्ले लेकर आया, कमाण्डेंट साहब को देने के बाद वह बलकार सिंह के दाहिने बैठे डॉक्टर

साहब के सामने आया। डॉक्टर साहब की पैनी नजर ने चश्मे के फ्रेम में नीचे से उस खान–पान का मुआयना किया और ओठ सिकोड़कर बोले “हाई कोलेस्ट्रोल” और कहने के साथ ही उन्होने एक प्लेट में एक समोसा तथा दो रसगुल्ले रख लिये। रामास्वामी बलकार सिंह के सामने आया और बलकार सिंह की आत्मा चीख कर बोली उठा ले.....। पर बलकार का दिमाग अपने बगल में बैठे डॉक्टर की भय प्रेरक तरंगों से अपने को मुक्त न कर सका और उसके हाथ ने अनायास ही रामास्वामी को आगे बढ़ने का इशारा कर दिया। कमान्डैन्ट साहब जवानों को संबोंधित करने में व्यस्थ थे। और डॉक्टर अपने जिसूल तथा काटें से समोसे की छाती विदीर्ण करने में व्यस्थ था। इस सबके बीच बलकार सिंह पूरे ध्यान के साथ सी.आर.पी. की 50वीं वर्षगांठ के बारे में सोच रहा था, कितने हट्टे-कट्टे जवान थे सबके सब यदि ए.एम.ई के मापदंण्डों से इन्हे आंका जाये तो शायद ये सभी टी-24 होंगें। पर सी.आर.पी. को एक गौरवशाली फोर्स बनाने में सक्षम थे ये सब। ऐसा सोच ही रहा था कि बलकार सिंह की वेलफेयर मीटिंग समाप्त हो गई।



दोपहर में लंच में एक गिलास दाल का सूप और खीरे का सलाद खाते समय बलकार सिंह सोचा था कि उसके घर में ऐसा खाना तो शायद उसकी भैंस भी न खाये। हे वाहे गुरू.... आपने ही तो कहा है कि राज करेगा खालसा.....। अब आप ही बताओ ऐसा खाना खाकर क्या खाक राज करेगा खालसा। सोचते सोचते बलकार सिंह ने अपना ग्रुप ए क्लास-एक लंच समाप्त किया और कमरे में आ गया। बिस्तर पर लेटते ही बेचारे को नींद आ गई। नींद में बलकार सिंह ने देखा कि सफेद पठानी सूट में एक धुंए सी आकृति उसके सामने आ गई। आकृति और नजदीक आई। अरे जागीर सिंह तू “बोला बलकार” तू तो 128 बटालियन में था न, यहां कैसे आया। “वह आकृति बोली,” हां मैं था, पर अब मैं मर चुका हूँ।”

“कैसे” पूछा बलकार ने।

वह आकृति बोली-यार डाक्टर ने मुझे टी-24 कर दिया था। 40 किलो बजन घटाने को कहा। बजन तो घटा नहीं पर मैं ही बटालियन से घट गया। “यार अगर तू बुरा न माने तो एक बात कहूँ।” आकृति बोली। “बोल मेरे वीर मेरे यार। “भर्राई हुई आवाज में बोला बलकार से। आकृति बोली,” यार बलकार, भूख से व्याकुल मेरी आत्मा भटक रही है। मुझे चेन नहीं मिल रहा है। यार प्लीज़ मेरे लिये एक प्लेट चिकन करी और एक प्लेट बिरयानी दान कर दे। प्लीज.....” और उस आकृति ने हाथ जोड़ दिये। “ना यार ना,” कहकर बलकार ने उसके हाथ पकड़ लिये और रोने लगा और बलकार की आंख खुल गई।

अपने इरादों में दृढ़ता लिये बलकार सिंह उठा और तैयार होकर अपने आफिस चल दिया। आफिस जाते ही उसने पैड और पैन उठाकर प्रार्थना पत्र लिखना शुरू किया जिसका विषय था - “स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति,” अपनी आत्मा की तृप्ति के लिए।

रिसीट क्लर्क को आवेदन देने के बाद चल दिया बलकार सिंह चिकन की दुकान की ओर अपने यार जागीर की आत्मा को तृप्त करने के लिए। चिकन करी और बिरयानी दान करते समय बलकार सिंह सोच रहा था, वाकई किसी ने ठीक ही कहा है। खाया पिया ही साथ जाता है, बाकी सब यहीं रह जाता है।

कहानी

सद्भावना दिवस पर

“दादी अम्मा”

अनिल गुप्ता उप. कमा.
122वीं वाहिनी केरिपुबल

कल शहर में फिर दंगा हो गया, जुमे के रोज सजदे में बैठे नमाजियों के आगे से किसी ने दो सुअर दौडा दिये, नमाजी भड़क उठे, मुझे खबर मिली मैं अपनी पार्टी के साथ फौरन घटना स्थल पर पहुंच गया। रेपिड एक्शन फोर्स का शहर में रूतबा था, माहौल शांत हो गया। मगर यह शांति अपने अंदर कितना बड़ा तूफान समेटे थी कि इसका अहसास मुझे था।

रात को थानेदार फिर भागा-भागा मेरे पास आया। मंदिर के बाहर एक गाय के कटे कान और पूछं पड़ी थी। मैंने फौरन अपनी जिप्सी निकाली और पार्टी के साथ

मांदेर पहुंचा, रात के करीब तीन बजे थे। चारों तरफ वीरान था। मैंने फौरन पूछं और कानों को एक थैले में भरवाकर वहां से हटवा दिया। मंदिर के बाहर हलचल देखकर पुजारी बाहर भी आया, मगर मैंने बहला दिया कि कोई खास बात नहीं है, हम लोग अपनी रूटीन गस्त पर हैं। मैं सोचने लगा, अगर गश्त पर निकले सिपाही की नजर मंदिर की सीढियों पर पडे गाय के कटे कानों और पूछं पर न पड़ती तो क्या होता। घंटे डेढ घंटे बाद ही मंदिर में श्रद्धालुओं का आना शुरू हो जाना है, उस दशा की कल्पना मात्र से मुझे भुरभुरी आ गयी।

धर्म कर्म के प्रति मेरी कोई खास आस्था कभी नहीं रही, और खासकर सी.आर.पी.एफ जैसी फोर्स में आने के बाद तो वैसे भी कभी ध्यान ही नहीं रहा कि कब मंगल है और कब बीरवार। मगर जब से साम्प्रदायिक दंगों से निपटने के लिए बनायी गयी सीआरपीएफ की विशेष शाखा आर ए एफ में आया हूँ तब से धर्म के कई विभत्स रूप देखने को मिले हैं।



जब कभी ऐसा कोई हादसा होता, मुझे अपनी दादी की बहुत याद आती, मेरे कानों में दादी के बोल गूंजने लगते। “अरे फौज में रहकर तू तो पूरा मलेच्छ हो गया है। खबरदार जो मेरे ठाकुरद्धारे की चौखट पर पैर भी रखा तो...”

मैं उसे समझाता, “दादी सारे दिन तो तुम्हारे भगवान के ही बनाए हैं, अगर मंगल

और शुक्र भगवान के दिन है तो बाकी दिन शैतान के है क्या? दादी और भड़क उठती और मुझे न पढा और सुन अगर अपनी ही करनी है तो अपनी घरवाली को कहदे, चौका अलग कर देगी, मेरे चौके में तेरी अंडा मुर्गी नहीं बनेगी, सोच लेना।

दादी का आतंक था घर में, मैं या मेरी पत्नी कुछ बोलते उससे पहले अम्मा बोल पडती। "ऐ री तू कैसी औरत है, तेरा दिल है कि पत्थर है, छौरा एक वरस के बाद छुट्टी आया है, और तू है कि आव देखे ना ताव, बके ही जा रही है, ऐ तेरे ठाकुर इतने नाजुक हैं कि छोरे के अंडा खाने से उन का हाजमा खराब हो जायेगा। दादी के तो जैसे बदन में आग लग जाती। हाँ हाँ मैं तो जानती हूँ, ये जो कुछ भी हो रहा है न, उस सब की जड तू ही है, तेरा बस चले तो तू हम सभी को मुसलमान बना दे।

ऐ री, तू भी कैसी बदनसीब है, हीरे जैसा छोरा पा कर भी रो रही है। मैं तो अपनी किस्मत को कोसूं कि राम नरेश मेरी कोख से पैदा क्यों न हुआ ?

इसके बाद दादी रोने लगती और मैं अम्मा को खींच कर दूसरे कमरे में ले जाता। ये एक ऐसा झगडा था, जिसे मैं अपने बचपन से देखता आ रहा था। अलीगढ़ में करीमन अम्मा हमारे घर के बगल वाले घर में रहती थी, मेरी ही नहीं हमारे घर में सभी की पैदाईश उसी के हाथों हुई थी। मां के मरने के बाद तो जैसे उसने घर में मां की जगह ले ली थी। बस उसका वर्जित था तो दादी के ठाकुरद्धारे में जाना। पहले तो दादी उसके चौके में जाने के भी खिलाफ थी, मगर धीरे धीरे अम्मा ने चौके पर अपना कब्जा कर ही लिया था।

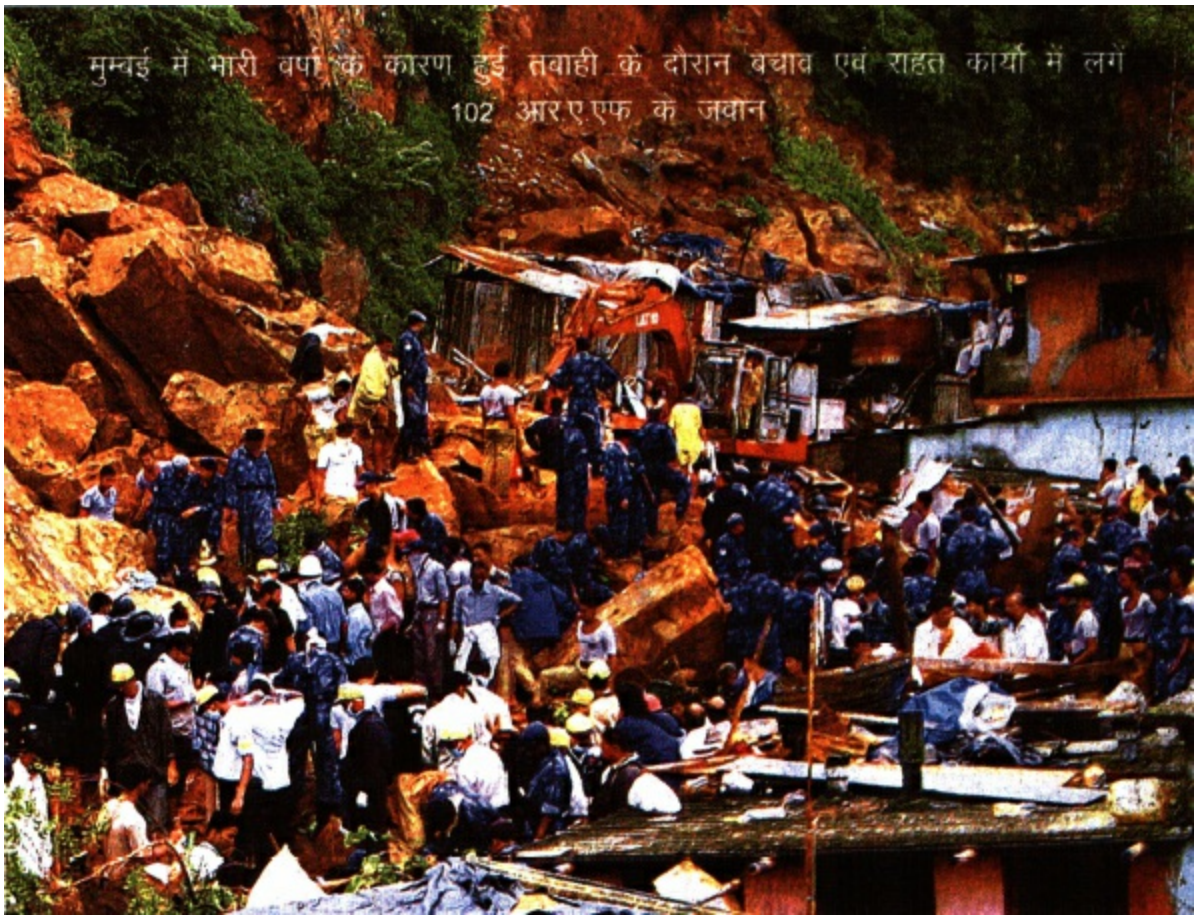
दादी उसे ताना देती थी, ये तुम मुसलमानों की चाल है हिन्दू धर्म को भ्रष्ट करने की। मगर अम्मा उसकी हर बात को हंसकर टाल देती। शहर में मोहर्रम का जुलुस निकलता तो अम्मा जबरदस्ती बच्चों को गोद में उठा कर ले जाती और उन्हें ताजियों के नीच से निकालती, दादी चीखती चिल्लाती रहती, मगर अम्मा उसे समझा देती, देख री ऐसा करने से खुदा की मेहर बच्चों पर हमेशा बनी रहती है।

दादी हफते में तीन दिन कभी कभी तो चार चार दिन व्रत रखती, सर्दी हो या गर्मी, सुबह मुंह सबेरे सब से पहले उठती नहाती और घंटे दो घंटे अपने ठाकुर द्धारे में गुजारती। दादी की साफ-सफाई का वँहा वहम था, मगर अपने हाथ से कोई काम वह बहुत कम करती थी। एक तरह से दादी घर की डिक्टेटर थी और अम्मा एडमिनिस्टेटर, हुकुम दादी का होता मगर होता वही था जो अम्मा करती थी।

दोनों के बीच एक अजीब रिश्ता था। सामने पड़ जाती थीं तो दोनों एक दूसरे को जली कटी सुनाने से नहीं चूकती थी और अगर कुछ देर के लिए अम्मा गायब हो जाती तो दादी का दिल बैठने लगता था। शहर में दगें हो जाते तो दादी आसमान सिर पर उठा लेती, अरे मरो सारे के सारे हो कि कंबल ओढकि पड़े हो, कुछ खबर भी है यासीन की आफताब की, ये करमजली करीमन भी सुबह से गायब है, ऐ राम नरेश उठता है कि मुझे ही जाना पडेगा, अपनी लाठी लेकर बाहर मैं उठकर बाहर आता, दादी तू क्या करेगी बाहर जाकर ?

अरे जब तेरे जैसे मरद चूडियां पहनकर कंबल में दुबके रहेंगे तो हम जैसी बूढियों

को हो बाहर निकलना पडेगा। वही तो पूछ रहा हूँ बाहर निकलकर करोगी क्या? पहले तो मुझे इन बजरंग दल वालों की टांग तोडनी है, अगर कोई सामने पड गया मेरे तो उसकी मुंडी न मरोड दी तो मेरा नाम बदल देना। मार शहर में बदअमनी फैला रखी है। सुबह आयी थी करीमन कितना खौफ था उसके चेहरे पर, ऐ देख जाकर कहीं कत्ल वत्ल न हो गया हो, कोई इन नामुरादों का कोई भरोसा है। ऐ वो कोई मंदिर हुआ जिसकी बुनियाद ही इतने बेगुनाहों की लाशों पर रखी हो, दादी तब तक शांत न होती जब तक करीमन के दोनों बेटे यासीन और आफताब आकर उसे अपनी शक्ल न दिखा देते। यासीन और आफताब भी दादी की उतनी ही इज्जत करते थे जितनी मैं अम्मा की करता था। मेरी अनुपस्थिति में हमारे घर के मर्दों वाले सारे काम वही दोंनों करते थे। इन दोनों को सामने देखते ही दादी का रूप एकदम से बदल जाता। वह लाठी लेकर उन्हे मारने दौड़ पड़ती तो दोंनों हंसते रहते। दादी के गुस्से में कितना व्यार था वे दोंनों जानते थे, अपने होश संभालने के बाद से आज तक मुझे कोई ऐसी होली दिवाली याद नहीं जिसमें दादी ने हमारे साथ-साथ यासीन और आफताब को उपहार न दिये हों, मिठाई न खिलायी हो। पिताजी के समय में मां करीमन की तनख्वा के तौर पर डेढ सौ रूपये दिया करती थी, लेकिन उसके घर को चलाने की अघोषित जिम्मेदारी भी हमीं पर थी, लेकिन धीरे-धीरे तनख्वाह कब गायब हो गयी मुझे नहीं मालूम, लेकिन अम्मा का हक घर पर उतना ही था जितना कभी माँ का होता था, लेकिन मां के समय में वह वैतनिक थी, अब अवैतनिक है, लेकिन उसकी हर जरूरत को उसके मांगने से पहले ही दादी पूरा कर देती। मुझे ज्ञात नहीं कि मैनें कभी अम्मा को कुछ मांगते हुए देखा हो।



मुम्बई में भारी वर्षा के कारण हुई तबाही के दौरान बचाव एवं राहत कार्यों में लगे 102 आर ए एफ के जवान



श्रीनगर में सारका देवी मंदिर की सुरक्षा के लिए तैनात 122 बटा सीआरपीएफ का जवान

अम्मा के इनते किस्से दिमाग में हैं कि लिखने को बैठें तो अच्छा-खासा उपन्यास बन जाए। नयी नयी शादी हुयी थी, पत्नी थोडी शंकित हो गयी, एक मुसलमान औरत का घर में इतना दखल, लेकिन अम्मा ने दो चार रोज में ही उसे भी अपने रंग में रंग लिया, बच्चों को पत्नी अम्मा के हवाले करके बिलकुल बेफ्रिक हो जाती थी। अम्मा ऐसी ऐसी बातें करती, ऐसे ऐसे मजाक करती कि मैं पत्नी के सामने शर्मसार हो जाता। मैं किसी बात पर बच्चों को डांटता तो अम्मा बिफर पड़ती। कमर जले इन मासूमों पर मर्दानगी दिखा रहा है। साल-साल तो शक्ल देखने को तरस जातें हैं, आये हैं तो प्यार के दो बोल तो क्या बोलेगा उल्टा धौंस दिखा रहा है। खबरदार जो मेरे बच्चों को अपना पुलिसियां रौब दिखाया तो, मैं कहता अम्मा तुम्हारे लाड़ प्यार ने इन्हे बहुत बिगाड़ दिया है। अम्मा के चेहरे का रंग बिगड जाता, वो हाथ नचा कर कहती आया कहीं से तू अपने दिन भूल गया, दसवीं जमात तक तो अपनी पतलून पीछे से पीली और आगे से गीली करके आता था। तब कही अम्मा बदले थी तेरी चडढी। क्या कह रही हो अम्मा कुछ बच्चों का तो लिहाज करो? ऐ मुझे लिहाज विहाज का पाठ न पढा खबरदार जो मेरे बच्चों को कुछ कहा तो।

मैं चुपचाप वहाँ से खिसक जाता। दादी पिछले साल गुजर गयी। मुझे याद है पत्नी का फोन आया था, दादी घुसलखाने में फिसल गयी, रीढ़ की हडडी में चोट आयी। मैं छुट्टी लेकर घर गया। दादी की हालत बहुत खराब थी। कमर के पास रीढ की हडडी में फैक्चर था। कमर के नीचे का सारा हिस्सा सुन्न हो गया था। उन्हे मल-मूत्र का कोई अहसास नहीं था। अम्मा का तो जैसे सारा संसार दादी की चारपायी के नजदीक ही सिमट गया था। दादी का सारा काम वो करती। पत्नी को दादी के शरीर को हाथ भी नहीं लगाने देती थी वो। दादी चुपचाप करीमन को देखती कहती। करीमन उसका दर्द समझ रही थी। मगर मजबूर थी। मेरी पत्नी की भी मेरी ही तरह धर्म कर्म में कोई खास आस्था नहीं थी। तीज त्यौहार वह खूब आस्था उत्साह से मनाती, मगर कर्मकांडों से बिलकुल परे थी।

दादी का ठाकुरद्धारा विरान पड़ा था। डरते डरते अम्मा एक रोज दादी से बोली बी कई रोज हो गये तूने अपने ठाकुर जी का न दिया जलाया न भोग लगाया, बहू को क्यों नहीं कहती, दादी कुछ नहीं बोली। उसकी आंखो से दो आंसू लुढककर गालों पर आ गये। अम्मा फिर बोली बी वैसे तो मुसलमान हूं पर अगर तू कहे तो मैं दीया जला दूँ तेरी तरफ से ठाकुरद्धारे में, ठीक हो जाएगी तो माफी मांग लियो। दादी ने अम्मा को इजाजत दे दी, न मुझे यकीन हुआ न पत्नी को न बच्चों को। कुछ दिन बाद दादी की अर्थी को कंधा देने वालों में यासीन और आफताब भी थे। शहर में फिर दंगे हो गये। हिन्दू मुसलमानो को और मुसलमान हिन्दुओं को मार रहे, मैं सोच रहा था, ये कौन से हिन्दू हैं, ये कौन से मुसलमान हैं। मेरे घर में कब अम्मा ने दादी की जगह ले ली किसी को पता ही नहीं चला।

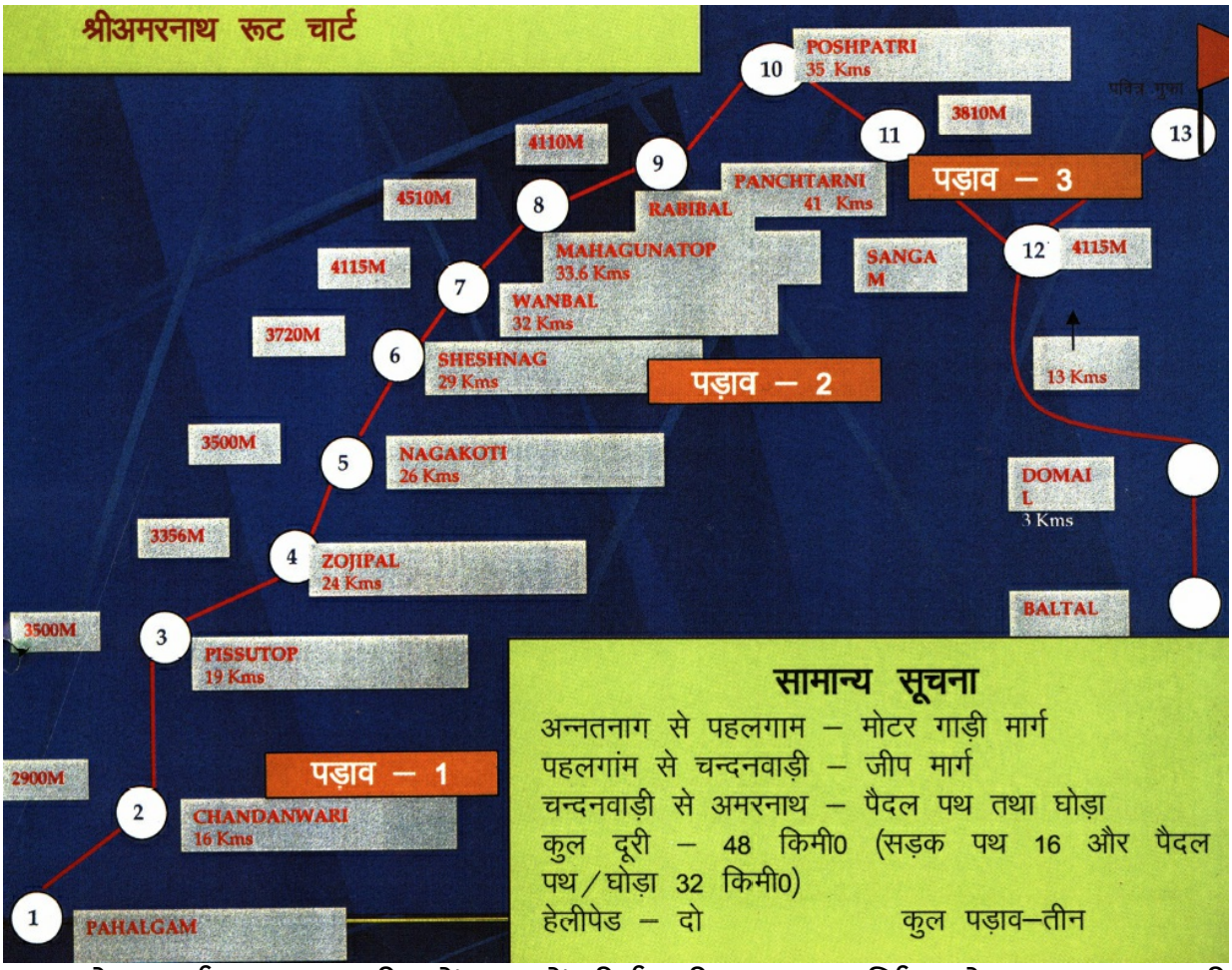
उच्च लोक पंरपराओं एवं सांस्कृतिक विरासत का अनूठा संगम

केरिपुबल की सुरक्षा में श्रीअमरनाथ यात्रा

रनबीर सिंह
निरीक्षक (संपादक) महानिदेशालय केरिपुबल

समय की लंबी रेखा पर मनुष्य जीवन का काल भले ही मात्र बिन्दु सामन हो, लेकिन इस समय रेखा के इस छोटे से बिन्दु में भी मनुष्य को इतना अवसर मिलता है कि वह परमब्रह्म के साथ जुड़ने के लिए प्रयास कर सके और इन्हीं प्रयासों में व्यक्ति तीर्थ यात्रा करता है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष की पवित्र भूमि देवताओ, ऋषियों, मनीषियों की निवास स्थली रही है। स्वयं परम ब्रह्म ने यहाँ कई अवतार ले मनुष्य जीवन के आदर्शों की स्थापना की है। इनमें से कई पवित्र स्थल ऐसे है जहां इस वास्तविक सत्ता के जीवंत अनुभव आज भी होते हैं जिसे देख मनुष्य सिर्फ हतप्रभ ही हो सकता है, श्रद्धा से सिर नवा सकता है, क्योकि अनुभूति से परे इन चीजों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

परम ब्रह्म के कई रूपों में से एक गूढ़ शिव की सत्ता है। भारतवर्ष के इस पवित्र स्थल पर शिवसत्ता के कई ऐसे स्थल है, जहां श्रद्धालु माथा नवाते हैं। इन्ही स्थलों में से एक अमरनाथ की गुफा में स्थित भगवान शिव की जीवंत सत्ता है। प्रत्येक वर्ष अपने-आप शिव की सत्ता इस स्थल पर प्राकृतिक रूप से एक निश्चित समय के लिए अवतरित होती है। यह अपने आप में एक बेहद आश्चर्यजनक घटना है और इसका धार्मिक महत्व भी काफी प्राचीन है। प्रत्येक वर्ष श्रद्धालु शिव के इस जीवंत सत्ता के दर्शन के लिए अमरनाथ यात्रा पर जाते है।



प्रत्येक वर्ष जम्मू कश्मीर में हजारों तीर्थयात्री आषाढ़ पूर्णिमा से श्रावण मास की पूर्णिमा तक श्रीअमरनाथ यात्रा के लिए जाते है। आतंकवादियों द्वारा दी जा रही धमकियों के चलते एवं विगत वर्षों के दौरान कई आतंकवादी घटनाओं तथा प्राकृतिक आपदाओं में मारे गए अनेक यात्रियों के बावजूद भी श्री अमरनाथ के दर्शन का उत्साह यात्रियों में कम नहीं हुआ है। हरेक साल श्रीअमरनाथ के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही हैं। इस वर्ष सुरक्षित एवं भय मुक्त भोलेनाथ की यात्रा सम्पन कराने की जिम्मेदारी हर साल की तरह केरिपुबल की थी। अतः बल की 31 अतिरिक्त कम्पनियां जम्मू एवं कश्मीर रीजन में तैनात की गई। महिला श्रद्वालओं की सुरक्षा एवं जांच के लिए 88 बटा की महिला कम्पनी के अलावा श्वान दस्ते, बमं निरोधक दस्ते तथा आश्रु गैस दस्ता आदि 24 घंटे अर्लट रखे गए।





जम्मू रीजन में आरांभिंक पोन्ट पर 4, 12, 43, 78, 147, 26, तथा 156 बटा, केरिपुबल के जवान यात्रियों की कानवाई, कैम्प सुरक्षा, तथा विभिन्न स्थानों पर जांच हेतु लगाये गए हैं। वे यात्रियों को निर्भय होकर पवित्र मन से भगवान भोले नाथ के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य करने को कह रहे थे। कश्मीर रीजन में बल की 42, 141, 55 था 69, 54 बटा, तथा 142 बटा की कम्पनियां बनताल, मनीगाम, सरबल, नूनवान, पहलगाव, चन्दबाडी, शेषनाग, पौस्थपथरी, पंचतरणी तथा पवित्र गुफा आदि धार्मिक स्थालों पर श्रद्धालुओं की सुरक्षा जाँच तथा मार्ग दर्शन के लिए तैनात थी। बल के चौकन्ने जवानों की नजरों से एक परिन्दा भी बिना उनकी परमीसन के पैर नहीं मार सकता। जवानों का उत्साह वर्द्धन एवं मनोबल बड़ाने के लिए वरिष्ठ अधिकारी भी समय-समय पर इन स्थलों का दौरा करते हैं ताकि सुरक्षा व्यवस्था में किसी प्रकार की ढिलाई न आ पाए।

पवित्र गुफा के लिए यात्रा जम्मू से सुबह तड़के शुरू होती है और यात्री सुरक्षा बलों के संरक्षण में कानवाई में पहलगांव जाते हैं। जम्मू से पहलगाम लगभग 260 कि०मी० दूर है और वहां पहुंचने में लगभग 14 घंटे लगते हैं।



अमरनाथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की स्वास्थय जॉच करते केरिपुबल के चिकित्सक

पवित्र गुफा के दर्शन के लिए दो रास्ते हैं, एक पहलगाम होकर, दूसरा बनताल होकर, बनताल का रास्ता छोटा है परंतु खतरनाक व कठिन है जबकि पहलगाम का रास्ता लंबा है परंतु खतरनाक / कठिन कम है तथा उसका धार्मिक महत्व भी है। इस रास्ते के प्रत्येक स्थान का संबंध धार्मिक घटनाओं से जुड़ा हुआ है। पहलगाम से पवित्र गुफा तक जाने में दो दिन का समय लगता है। पवित्र गुफा महान हिमालय की दक्षिणी पश्चिमी चोटी पर 12,000 फिट की ऊँचाई पर स्थित है, यह कश्मीर घाटी के

अनंतनाग जिले की पीर पंजाल रेंज, लद्दाख क्षेत्र की जनसकर रेंज एवं जम्मू क्षेत्र के डोडा जिले तक फैली है।

3800 मीटर की ऊंचाई पर स्थित श्रीअमरनाथ की यह गुफा काफी प्राचीन है। इस यात्रा पर प्रतिवर्ष सावन माह में शुरू होती है ओर भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़ पड़ते हैं। यह शिव की ही महिमा है कि सावन का महीना आते ही भक्तों के मन में अजीब अजीब उमंगे जन्म लेने लगती हैं कि किस प्रकार सदाशिव की सेवा करूँ ? कोई कैलाश जाने का आयोजन करता है, कोई गंगा जल भर कॉवड लेकर शिवलिंग को अर्पण करने के लिए पदयात्रा, कोई कॉवड यात्रियों की सेवा में और कोई श्री अमरनाथ दर्शन का। हर कोई, कहीं न कहीं अपने आराध्य देव की सेवा में जुड़ना चाहता है। इनमें कश्मीर के श्रीअमरनाथ बर्फानी शिवलिंग दर्शन का विशेष महत्व है। यह तीर्थ स्थान बहुत ही प्राचीन है। इसी जगह पर सदाशिव माँ पार्वती को अमरकथा सुनाने आए और यहां शुकदेव का जन्म भी हुआ ऐसा माना जाता है।

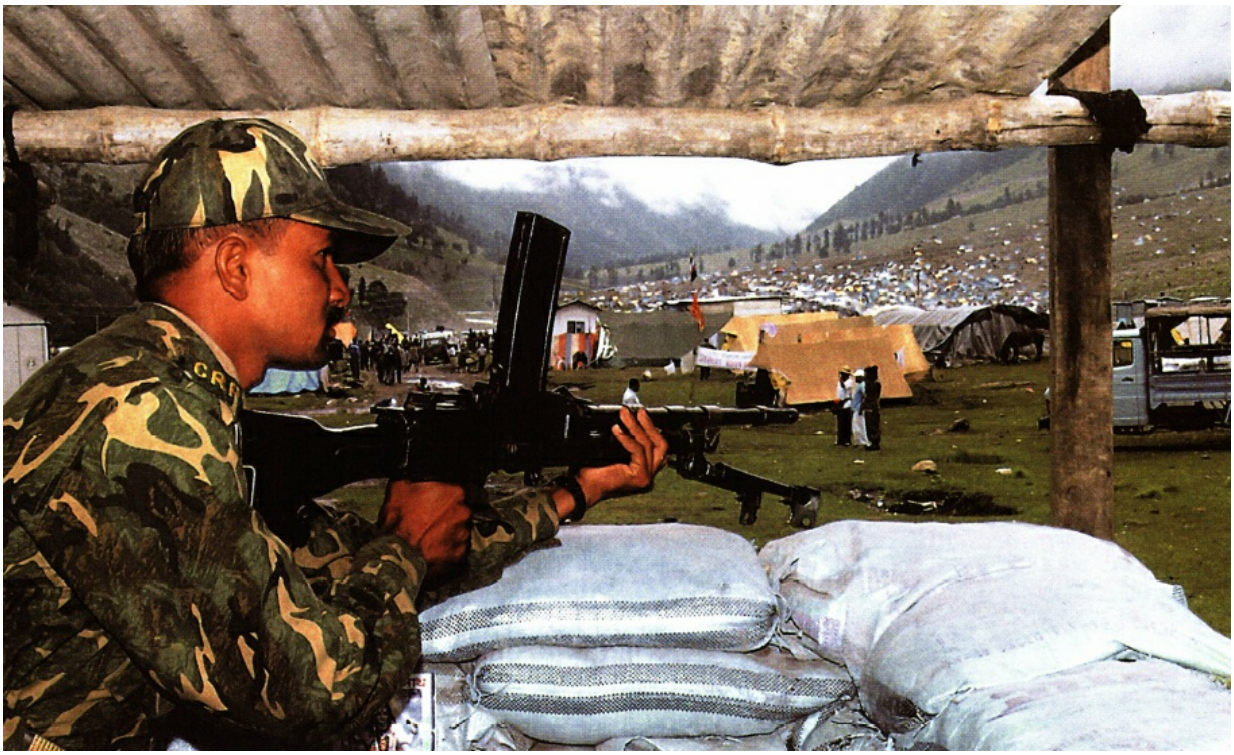
भारत के विभिन्न प्रदेशों से जुड़ा जम्मू रेल मार्ग का अन्तिम स्टेशन है तथा मार्ग द्वारा जम्मू में एकत्रित होते हैं श्री अमरनाथ जाने वाले दर्शनार्थी। यात्रियों की सुरक्षा के लिए राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार द्वारा पुलिस, अर्धसैनिक तथा सैनिकों को पर्याप्त संख्या में तैनात किया जाता है ताकि शिव भक्त निष्कठंक रूप से यात्रा बिना किसी भय व आतंक के पूरी कर भगवान शिव के दर्शन कर अपने को धन्य कर सकें। इस वर्ष यह यात्रा गतवर्ष की अपेक्षा कुछ पहले आरम्भ हुई। बनताल मार्ग से अमरनाथ यात्रा 21जून, 2005 को आरम्भ हो गयी थी लेकिन जम्मू से यात्रा 9 जुलाई से आरम्भ हुई। मौसम की खराबी के कारण यात्रा 3 दिन की देरी से आरम्भ हुई। पहला जत्था केरिपुबल की सुरक्षा में एम.ए.एम स्टेडियम से रवाना हुआ था।

सरकार द्वारा निर्देशित नियमों के अन्तर्गत, कड़ी सुरक्षा में प्रत्येक वाहन व यात्रियों को यात्रा की इजाजत दी जाती है। जम्मू में एकत्रित यात्रियों की सेवा में विभिन्न प्रदेशों की समाजसेवी संस्थाएं एवं भण्डारे दिन-रात यात्रियों को जलपान चाय व जरूरी सामान मुहैया करवाते हैं जबकि सुरक्षा बलों के जवान यात्रियों की सुरक्षा के लिए सदैव मुस्तैद रहते हैं।

जम्मू से सड़क मार्ग उधमपुर, पातनीटॉप, बटोट, बनहाल, जवाहर टनल, काजी कुण्ड होते हुए अनतनाग पहुंचते हैं। वहाँ से एक रास्ता श्रीनगर होते हुए बानताल और दूसरे रास्ते से पहलगाम पहुंचा जा सकता है। किदवंती कथाओं के अनुसार भगवान सदाशिव जब पार्वती को अमरकथा सुनाने के लिए इस स्थान पर पहुंचे तो उन्होंने अपना वाहन नन्दी बैल यहीं छोड़ दिया था। तभी इस स्थान का नाम “बैलगाम” पड़ा और अब पहलगाम जो विश्वप्रसिद्ध पर्यटक स्थल है।

पहलगाम यात्रा का बेस कैंप में अनेकों सेवा संस्थायें यहां भण्डारा लगाती हैं। केरिपुबल और अन्य पुलिस बल के जवान यात्रियों की सुरक्षा हेतु यात्रियों के ठहरने के कैंपों की सुरक्षा करते हैं। स्थानीय होटलों में भी यात्री ठहर सकते हैं। यात्रा में प्रयोग आने वाला जरूरी सामान व दवाईयां आदि उचित मूल्य पर मिलती हैं।

पथरीला मार्ग, गहरी खाइयों, बर्फीले कलकल करते झरने व प्राकृतिक नजारे आप को देखने को मिलेंगे। पर जरा संभल कर।



बलताल में श्रीअमरनाथ यात्रियों के कैम्प की निगरानी करता सीआरपीएफ का जवान

पहलगाम में रात्रि विश्राम कर सुबह आगे यात्रा तय कर चन्दनवाड़ी पहुंच सकते हैं। कई श्रद्धालु भक्तगण पहलगाम से ही पैदल यात्रा पर निकल पड़ते हैं, बम बम भोले कहते हुए। रास्ता सर्पाकार लिद्दर नदी के साथ, छोटी तंग सड़क, प्राकृतिक नजारों का आनंद लेते हुए, बर्फानी बाबा की माया मोह लेती है तन मन को।

चन्दनबाड़ी सदाशिव अमरेश्वर जाते हुए अपने मस्तक का चन्द्रमा यहीं छोड़कर आगे बढ़ गए, तब से इस स्थान का नाम चन्दनबाड़ी पड़ गया। इस स्थान पर भी भण्डारे लगे जो दर्शनार्थियों के शिवरूप की सेवा करते हैं। यहां रात्रि विश्राम और भोजन भण्डारे की पूरी व्यवस्था रहती है। चंदनवाड़ी से हर रोज 5 से 10 हजार यात्री पिस्सू टॉप एवं शेषनाग के लिए जाते हैं। प्रत्येक यात्री के पास 4 से 5 बैंग होते हैं जिनकी सघन सुरक्षा जांच का काम केरिपुबल की 88 (महिला) बटा. की महिला कर्मी पूरी तत्परता से करती हुई देखी जा सकती हैं। जांच के दौरान बल की महिला कर्मी हमेशा यह ध्यान रखती है कि सदा शिव के दर्शन करने वाले महिला यात्रियों को किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो। केरिपुबल ने यात्रियों के ठहरने के लिए मुक्त कैंप भी लगाएं हैं। मानव सेवार्थ इस बल के चिकित्सक आपको यहां अस्वस्थ हारे थके यात्रियों की चिकित्सा जांच करते हुए दिखाई देगें। कैसा है यह श्रद्धा एवं भक्ति का संगम कि श्रद्धालू भी असमंजस्य में पड़ जाते हैं।

ज्यादातर यात्री यहां पिस्सू टॉप या शेषनाग के लिए (खच्चर) घोड़ा कर लेते हैं। यहां पर वृद्धों व असहाय लोगों के लिए पालकियों भी उपलब्ध हैं। चन्दनवाड़ी का बाजार पार करने के बाद यात्रियों के सामान की सुरक्षा बलों द्वार सख्त चैकिंग की जाती है। चढ़ाई और चढ़ते-चढ़ते गर्म कपड़े उतारने पड़ते हैं। यात्रियों की सुरक्षा के लिए यहां केरिपुबल की 69 बटा., 88 (महिला) बटा. तथा 54 बटा. के अधिकारी एवं जवान आपको विभिन्न जगहों पर देखने को मिलेंगे।

कहते हैं कि इस स्थान पर देवता और राक्षसों का युद्ध था। सदाशिव की कृपा से सब दानवों को मार दिया गया था। उनके अवशेष शिला रूप में यहां वहां बिखरे पड़े हैं, सारी पिस्सू घाटी में यहां यात्री आपको ऊपर से पिस्सू टॉप की तरफ रेंगते हुए नजर आयेगें।

पिस्सू टॉप पर भी भण्डारे लगते हैं। यहां भी गर्म पानी, सर्वत, गर्म चाय, सात्विक भोजन, रात्रि विश्राम की पूर्ण व्यवस्था, नित्य हवन व संत महात्माओं द्वारा सत्संग। यात्री यहाँ भोजन कर कुछ देर आराम करके आगे शेषनाग की यात्रा प्रारंभ करते हैं। आगे रास्ता समतल हैं लगभग 4 कि०मी० की दूरी पर नागा चोटी पर भी यात्रियों के लिए जलपान की व्यवस्था है। यहाँ से आगे कुछ कठिन चढ़ाई है, घोड़े पर आने वाले यात्रियों को भी यहां 2 कि०मी० पैदल चलना पड़ता है। दूर से दिखाई देता है कल कल करता झरने पर बना लकड़ी का पुल और थका देने वाली चढ़ाई पर आरामगृह। यात्री कुछ देर यहा आराम कर पुनः पैदल या घोड़े पर शेषनाग के लिए निकलते हैं। चढ़ाई पार कर शेषनाग झील के दर्शन करते ही यात्री रोमांचित हो जाते हैं। और वे अपना जीवन धन्य समझते हैं। धन्यवाद करते हैं वे शिवशंकर त्रिपुरारी का। और लालसा रहती है मन में झील में शेषनाग जी के दर्शन करने की। पर भाग्यशाली यात्री ही दर्शन कर पाते हैं।



श्रीअमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा जांच करते केरिपुबल के जवान

हरी नीली झील का लहराता पानी अदभुत नजारा मन को मोह लेता है। चारों ओर सात सर्पाकार पहाड़ियों पर पड़ी बर्फ। कहते हैं कि सदाशिव पार्वती जी को अमरनाथ ले जाते हुए यहां गले में पड़े हुए सर्पों का त्याग किया था। शेषनाग इस झील में वास करते हैं। यहाँ विश्राम करने के लिए कैंपों की समुचित व्यवस्था हैं। अनेकों स्वमं सेवी संस्थायें यहां भण्डारे का प्रबंध करती हैं। हर प्रकार की सुविधा इस स्थान पर उपलब्ध है। यात्री यहाँ रात्रि विश्राम कर सुबह जल्दी ही आगे चल देते हैं। क्योकि यहां से 12 कि०मी० की दूरी पर पंचतरनी पहुंचना होता हैं और आगे होती है, थका देने वाली चढ़ाई। यात्री कदम को धीरे कर आराम करता हुआ महागुनस टॉप पहुँचता हैं। यात्री जल्द ही आगे बढ़ते हुए आगे ढलान ही ढलान पोषपत्री होते हुए आगे पंचतरनी पहुंचते हैं। यात्रियों को अपने सामान उठाने वाले पिटू को हमेशा साथ रखना चाहिए क्योंकि यहा कभी भी मौसम खराब हो सकता है। बारिश या बर्फ पड़ सकती है। शेषनाग से पंचतरनी तक केवल पोषपत्री को छोड़ और कहीं भी ठहरने का कोई अन्य कैंप नहीं हैं। पंचतरनी का खूबसूरत चारागाह की हरियाली मन मोह लेती है। दूर बर्फ से ढके पहाड़, यात्रा का आन्नद दुगना कर देते हैं। इस स्थान पर एक बार सदाशिव मौज में आकर नृत्य करने लगे और उनकी जटायें खुल गई और उनमें से पांच लटायें निकलकर धरती पर पड़ी और वह सभी पापों का नाश करती हैं। कहते हैं कि सदाशिव यहाँ पांच तत्वों का पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि व आकाश को छोड़कर आगे अमरनाथ गये थे। इसलिए यह पंचतरनी के नाम से प्रसिद्ध है।

यहां सरकार द्वारा रात्रि ठहरने की समुचित व्यवस्था है। और भण्डारे वाले भी

यात्रियों को भरपूर सेवा करते हैं। यात्री यहां रात्रोवेश्राम कर सुबह सवेरे आगे गुफा (यहां से 6 कि०मी० दूर) अमरनाथ बर्फानी शिवलिंग के दर्शन के लिए चलते हैं ताकि दर्शन कर शाम तक जल्दी ही वापिस पंचतरनी पहुंच सके, क्योंकि गुफा पर ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है। पंचतरनी से 3 कि०मी० की चढ़ाई है। पहाड़ की ऊँचाई पर मुड़ते ही ढलान पर दूर गुफा दिखाई देती है। थका हुआ यात्री भी दर्शन की चाह में जल्दी-जल्दी बाबा के दर्शन करना चाहता है। लगभग 2 कि०मी० बर्फ पर चलकर गुफा के पास पहुंचकर घंटियों और जय जय बम भोले की आवाज मन में रोमांच पैदा कर देती है। यात्री यहां बर्फीली नदी अमरगंगा में स्नान कर प्रसाद लेकर गुफा में दर्शन के लिए लाईन में लगते हैं। प्रत्येक यात्री की चैकिंग करने के बाद ही आगे दर्शन के लिए जाने दिया जाता है।

गुफा में अलौकिक प्राकृतिक शिवलिंग, पार्वती व गणेश के दर्शन कर जन्म जन्म की प्यास बुझाते हैं, अमर कुण्ड की टपकती बूंद-बूंद दर्शनार्थियों पर पड़कर पवित्र करती हैं। यही है बर्फानी का प्रसाद। भाग्यशाली यात्री तो कबूतरों के दर्शन कर अपने भाग्य की सराहना करते हैं। दर्शन कर वापसी की जल्दी, ताकि दर्शन के रोमांच, अपनी यात्रा और सदा शिव की कृपा सबको बता सकें। कैसी लीला है भोले भण्डारी की। केरिपुबल के उप महानिरीक्षक श्रीनगर श्री पी.वी. बेलगामकर यात्रियों की निष्कंठक यात्रा सुनिश्चित कराने के लिए विभिन्न सुरक्षा बल के अधिकारियों एवं जवानों के साथ समन्वय बनाये हुए है ताकि यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना होने से रोकी जा सके। जम्मू से पवित्र गुफा तक सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए केरिपुबल की पांचवी सिंगनल बटा. के अधिकारी व जवान चौबीसों घंटे कार्यरत रहते हैं। केरिपुबल के पुलिस महानिरीक्षक (श्रीनगर) श्री रंजीत सिन्हा तथा उप महानिरीक्षक (अंनतनाग) श्री आर. पी. सिह सुचारू रूप से यात्रा संपन्न कराने के लिए समय-समय पर विभिन्न स्थानों का दौरा कर जांच करते हैं तथा जवानों को किसी भी प्रकार की स्थिति से निपटने के लिए सदैव अलर्ट रहने को उत्साहित करते हैं।

यह यात्रा कश्मीर की उच्च लोक पंरपराओं तथा सांस्कृतिक विरासत का एक अनूठा मेल है। पवित्र अमर नाथ गुफा राष्ट्रीय एकता का एक अजूबा उदाहरण भी है। इस मन्दिर के योगदान में गुर्जर मुसलमानों का विशेष योगदान रहा हैं क्योंकि वे इस गुफा के संरक्षक माने जाते है। उन्हीं के पूर्वजों ने इस गुफा का पता लगाया था।

खराब मौसम तथा सुसंगठित उग्रवादी संगठनों द्वारा दी गई भारी धमकियों के बाबजूद के.रि.पु.बल श्री अमर नाथ यात्रा में पिछले कई वर्षों से महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जरूरत पड़ने पर के.रि.पु.बल के जवान हमेशा कार्रवाई के लिए सदैव तैयार रहते हैं तथा यात्रियों को आवश्यक सुरक्षा मुहैया कराते हैं। श्रद्धालुओं की यात्रा पूरी कराने के लिए हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी बल के जवान अपनी उच्च परम्पराओं को कायम रखते हुए सेवा भक्ति के इस अनूठे सगंम की गरिमा बनाए रखने के लिए बचन बद्ध हैं।

म. प्र. के मुख्य मंत्री श्री बाबूलाल गौर द्वारा ग्रुप केंद्र, केरिपुबल भोपाल की सराहना

14 जुलाई, 2005, को म.प्र. के मुख्य मंत्री, श्री बाबूलाल गौर ने ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, बगरसिया परिसर में बनाए जा रहें राष्ट्रीय स्तर के गोल्फ-कोर्स की साइड का निरीक्षण किया तथा जवानों द्वारा श्रमदान से बनाए गए कल्याण मण्डप का उद्घाटन। श्री गौर ने इस अवसर पर स्कूली छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम का अवलोकन भी किया। मुख्य मंत्री श्री गौर ने ग्रुप केन्द्र भोपाल द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह सम्भव अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बी. एस. नेगी के कुशल नेतृत्व तथा कार्मिकों की लगन एवं निष्ठा के कारण ही सम्भव हो सका। श्री गौर ने ग्रुप केन्द्र, भोपाल में 27 एकड़ जमीन पर बनने वाले राष्ट्रीय स्तर के गोल्फ-कोर्स के लिए 6 लाख रूपये का अनुदान की घोषण की। श्री गौर ने महिला कल्याण केन्द्र का भी भ्रमण किया और ग्रुप केन्द्र के जवानों की पत्नियों की इस संस्था की गतिविधियों के संचालन के लिए एक लाख रुपए अनुदान देने के घोषणा की।


का
उद्घाट
श्री बाबू
मुख्य मंत्री म. प्र.
के कर कमलों
दिनांक 4 जुलाई 2005



श्री गौर ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाली छात्राओं का मनोबल बढाने के लिए 25,000/- रुपये के नगद पुरस्कार की घोषणा की।

30 बटालियन ने मनाया केरिपुबल का स्थापना दिवस



अपर महानिदेशक पश्चिमोत्तर अंचल श्री डी.पी.सिन्हा केरिपुबल के स्थापना दिवस पर जवानों को सम्बोधित करते हुए।



केरिपुबल स्थापना दिवस पर अपर महानिदेशक (पश्चिमोत्तर अचल) श्री डी.पी. सिन्हा वृक्षारोपण करते हुए।

27 जुलाई, 2005, को 30 बटालियन ने बल की स्थापना दिवस हलोमाजरा कैम्पस में धूम-धाम से मनाया गया। केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल मूलतः क्राउन रिप्रेजेन्टेटिव पुलिस के नाम से 27 जुलाई, 1939 को नीमच (म०प्र०) में स्थापित हुआ था। स्वतंत्रता के बाद इसका नाम केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल कर दिया गया। बल अपने गठन के बाद से ही आतंकवादी व विघटनकारी शक्तियों का दृढ़तापूर्वक मुकाबला कर देश की एकता व अखड़ण्ता को बनाए रखने में केन्द्र सरकार की अवस्मरणीय व सराहनीय योगदान दे रहा है। इस अवसर पर हलोमाजरा के परेड स्थल पर वन महोत्सव का आयोजन किया गया। अपर महानिदेशक श्री डी.पी. सिन्हा ने अपने कर-कमलों से एक पौधा लगाकर समारोह का उद्घाटन किया। इस मौके पर स्टेशन के अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा कार्मिक उपस्थित थे। सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों ने एक-एक पौधा लगाकर वृक्षारोपण अभियान में भाग लिया। इस अवसर पर कुल 1000 पौधे लगाए गएं।

30 बटा के कमाडेण्ट श्री जगमेहर सिंह ने उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि जब तक 30 वीं बटा हलोमाजरा परिसर में तैनात रहेगी इन वृक्षों के सरंक्षण एवं संबर्धन में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। बटालियन भविष्य

में और वृक्षारोपण अभियान चलाने का प्रयास करेगी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के केन्द्रों पर 'इग्नो' के अध्ययन केन्द्र स्थापित



बल के महानिदेशक जे.के.सिन्हा एवं इग्नो के उपकुलपति प्रो० एच. पी. दीक्षित आपसी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के बाद हाथ मिलाते हुए।

"इंदिरा गांधी राष्ट्रीय ओपन विश्व विद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने से मिलने वाले अवसर विद्या अर्जन की दिशा में एक सही पहल होगी और हमारे बल कार्मिकों के कल्याण की दिशा में एक महत्पूर्ण कदम।" 22 जुलाई, 2005 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा तथा इग्नो के उप कुलपति प्रोफेसर श्री एच.पी.दीक्षित के बीच हुए इस ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के बाद कहा कि उच्च शिक्षा द्वारा अर्जित ज्ञान एवं सूझ-बूझ से बल कार्मिकों को अपनी जिम्मेदारियों एवं कर्तव्य निर्वहन में सकारात्मक मदद मिलेगी। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सात ग्रुप केन्द्र दिल्ली, चैन्नई, गौहाटी, जम्मू, लखनऊ, अहमदाबाद तथा हैदराबाद में इग्नो के क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र स्थापित किए जाएंगे। बल कार्मिक अपनी महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अपने ज्ञान के स्तर को

बढ़ाने हेतु इन केन्द्रों में सभी आधारभूत संरचना एवं सुविधाएं उपलब्ध होगी। बल कार्मिक इन केन्द्रों के सहयोग से अपने ज्ञान में वृद्धि कर बल में अपने कैरियर को और अच्छा बना सकते है।

बल के कार्मिक देश के विभिन्न अशांत क्षेत्रों में जनता की सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने में इतने व्यस्त रहते हैं कि वे स्वयं के विकास के लिए समय ही नहीं निकाल पाते हैं। सुरक्षा के जिस महौल में वे कार्यरत हैं उनकी ड्यूटी किसी भी नियमित संस्थान में उच्च शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं देती। अतः बल के अधिकारियों एवं जवानों को अपने कैरियर तथा स्वंय के विकाश में यह बल द्वारा की गई पहल मील का पत्थर साबित होगी। इग्नो के प्राधिकारियों का इस संयुक्त परियोजना आई.पी.ई.पी. (इग्नो पुलिस एजुकेश्नल प्रोजेक्ट) को कार्यान्वित करने के लिए आभार व्यस्त हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री ओ.पी.सिंह ने कहा कि केरिपुबल के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने तथा अच्छे नागरिक एवं समाज के भावी सदस्य बनाने के लिए ऐसे शिक्षा अध्ययन केन्द्रों की बहुत जरूरत महसूस की जा रही थी जो अब पूरी हो जाऐगी।

89 बटा ने रक्सी में लगाया निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

सीआरपीएफ की 89वीं बटालियन की ओर से बणई स्थिल रक्सी में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 200 से अधिक लोगों के स्वास्थ्य की जांच कर उन्हें दवाईयां दी गयी। रक्सी अंचल उग्रवाद प्रभावित अंचल है तथा इस अंचल में सीआरपीएफ की ओर से स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कर लोगों का विश्वास जीतने तथा जनसंपर्क बढ़ाने की दिशा में एक अच्छी पहल है। स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि पश्चिम अचंल के डीआईजी श्री श्यामसुंदर हांसदा ने की। वहीं सीआरपीएफ के कमांडेन्ट श्री भरत सिंह, उप कमांडेन्ट श्री इकबाल सिंह व बणई एसडीपीओ श्री नरसिंह भेल मुख्य रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर आस-पास के ग्रामीण अंचल के उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए श्री हांसदा ने कहा कि उग्रवादी गलत रास्ता अपना कर लोगों को क्षति पहुंचा रहे है। अतः उग्रवादियों से मुकाबला करने के लिए पुलिस एवं प्रशासन को हमेशा ग्रामीणों के सहयोग की जरूरत है। उग्रवादी अंचलों के बेरोजगार युवकों को सीआरपीएफ में नियुक्ति देने के लिए सरकार द्वारा इन सभी अंचल के लिए 40 प्रतिशत स्थान आरक्षण की व्यवस्था की गयी है। उन्होंने संबंधित अंचलों के मैट्रिक

पास बेरोजगार युवकों को यह मौका मिलने का बात कही। हासंदा ने ग्रामीणों के स्वास्थ्य शिविर में 200 से अधिक रोगियों का इलाज किया गया। उत्कलमणि होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज के अध्यापक डा. जीआर गिरी के नेतृत्व में कॉलेज के अन्य 4 हाउस् सर्जन एवं मेलरिया रोग जांच केन्द्र के डा० त्यागी ने इस शिविर का संचालन किया। इस मौके पर कई रोगियों ने अपने खून की जांच करवायी तथा मलेरिया से पीड़ितों को दवाईयां दी गयी। इस अवसर पर लायंस क्लब स्टील टाउन की ओर से 40 मच्छरदानी प्रदान की गयी। आगे भविष्य में भी जिले के विभिन्न ग्रामों में इस तरह के स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने की जानकारी सीआरपीएफ की 89 बटा कमाडेण्ट ने दी।



***89* बटा द्वारा आयोजित चिकित्सा शिविर में स्थानीय लोगों की स्वास्थ्य जाँच करती चिकित्सक**

-शब्दावली-

वैभव लूटा बिहान का, निशा खडी स्तब्ध।
क्या इसका ही नाम है, मेरे प्रभु प्रारम्भ।

जलकर उजेयारा दिया, किया साथक नाम।
गर्भ दीप ऐसा बुझा, तम से ढुबा धाम।
विश्व देव था नाम से, कर्म तपस्या-लीन।
आदि अन्त है आज भी विधाता के अधीन।
शिखर पुरुष की जीवनी थे वरेण्य अध्याय।
जूझारू-जीवट प्रबल कर्मठता की खान।
अन्थक वह लिखता रहा सौभ्य सरल दिनमान।
कभी न बेचों लेखनी, कभी न बेचों धर्म।
नमन-नमन सत बार है, कोटि कोटि प्रणाम।
अर्पित है शब्दावली विश्व देव के नाम।

हवलदार-एम.एच.खान
100 वीं बटा आर. ए. एफ.

सफलता के दो सूत्र अवसर और कर्म

नीतिमा सिंह चौहान
नवारक्षी रंग०प्रशि०केन्द्र प्रथम
केरिपुबल नीमच *(88* महिला) बटालियन

जिस प्रकार सूर्य की किरणों से जगत में प्रकाश फैलाता है, उसी प्रकार कर्म से समाज में चेतना का संचार होता है। मनुष्य अपने कर्मो के द्वारा ही अपने भाग्य का निर्माण करता है। क्योंकि भाग्य से कर्म नहीं बल्कि कर्म से भाग्य बनता है। कवि दिनकर का यह कथन द्रष्टव्य है:—

'ब्रह्म ने कुछ लिखा भाग्य में,
मनुज नहीं लाया है।
अपना सुख उसने ही भुजबल से पाया है।
प्रकृति नहीं डर कर झुकती है, कभी भाग्य के बल से।
सदा हरती वह मनुष्य के उधम से, श्रम से, कर्म से।'

इसके विपरीत जो भाग्य के भरोसे रहते हैं, वे जीवन में कभी सफल नहीं होते हैं।

इस संदभे में यह कथन अत्यतं प्रासेद्ध है एवं लोकाप्रेय है :—

'कादर मन कहुँ एक अधारा।
दैव-दैव आलसी पुकारा।

कठिनाई अथवा मुसीबत आने पर जो लोग भगवान का नाम लेते हुए हाय-हाय पुकारते हैं वे कायर और आलसी होते हैं। जीवन में कर्म या कर्तव्य पालन प्रधान हैं। कर्म के बिना जीवन और जगत का अस्तित्व ही नहीं रह सकता है। मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वंय है। क्योंकि नव-निर्माण कर्मपथ-अभिमान का शुभारम्भ अपने आप से किया जाता है। इसीलिये तो कहा गया है:—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलसुनकदाचिन्ह" अर्थात कर्म करन तेरा अधिकार है फल पर नहीं"- क्योंकि कर्म के अभाव में फल अस्तित्व विहीन हैं।

जिस प्रकार हम दूध में जितना गुड़ डालेंगे दूध उतना ही मीठा होगा। उसी प्रकार हम जीवन के अभ्युत्थान के लिये जिनता कर्म करेंगे उतने ही सफलता के हकदार होंगे। अतः जो कर्महीन होकर जीते हैं, और वे जिस काम से सम्बद्ध होते हैं वह चौपट हो जाता है। **"कर्महीन खेती करें, बैल मरे कि सूखा परे"**

कर्म – शक्ति के संदर्भ में "आचार्य विनोभा भावे" ने एक स्थान पर लिखा है कि **"जहाँ कर्म नहीं वहाँ सुख नहीं है। कर्महीन समाज घुने हुये अनाज के समान होता है।"** उदाहरणार्थ- आपके पास अपनी परीक्षा में सफलता के लिए समस्त पुस्तकें है।" परन्तु यदि आप उनको पढ़ेगे नहीं, अथार्त कर्म नहीं करेंगे तो परीक्षा में सफलता किस प्रकार सम्भव होगी। इसी संदर्भ में आपको एक मनोंरजक घटना बताती हूँ, "एक परीक्षार्थी ने अपनी उत्तर-पुस्तिका के अन्त में परीक्षक को संबोधित करते हुये लिखा-"हजारों की किस्मत तेरे हाथ है जरा पास कर दे तो क्या बात है।" परीक्षक ने उसके उत्तर स्वरूप यह लिखा-"हजारों किताबें तेरे पास थी जरा याद करता तो क्या बात थी।" मन्तव्य स्पष्ट है, साधन-सम्पन्नता का महत्व अपनी जगह सुरक्षित है, कमी थी तो केवल कर्म की, श्रम की।

जीवन में कर्म के साथ-साथ अवसर का बड़ा महत्व है, देहात में एक कहावत मशहूर है-डार का चूका बंदर और खेत का चूका किसान दोनों को ठोर नहीं मिलता। अथार्त जो चूक गया वह पीछे रह गया। जीवन में अवसर का बड़ा महत्व है, खासकर विद्यार्थी और सैनिक के लिए क्योंकि विद्यार्थी का लक्ष्य अध्ययन पूरा कर अच्छी नौकरी पाना तो सैनिक का लक्ष्य अवसर मिलते ही दुश्मन को ध्वस्त करना। समय और अवसर एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। समय आने पर जिसने उसका मूल्य व महत्व न समझा और गवॉ दिया, उसके हाथ सिर्फ पछतावा ही लगता है। अतः अवसर का सदपयोग करना चाहिए।

एक बार एक कलाकर ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगायी, बहुत से लोग उसे देखने आये उनमें एक लड़की भी उसे देखने पहुंची, उस लड़की ने एक चित्र में देखा कि एक आदमी के मुँह को बालों से ढक दिया गया है। और उसके पैर में पंख लगे हैं।

उस लड़की ने उस चित्र को बनाने वाले कलाकर से पूछा— यह चित्र किसका है। कलाकार ने कहा यह चित्र अवसर का है। चूंकि जब यह आता है तो लोग इसे पहचान नहीं पाते इसलिये मैंने इसके चेहरे को बालों से ढक दिया है। इसके पैरों में पंख इसलिये लगे हैं कि यह आता और चला जाता है। इसे जाने से पहले जिसने रोक लिया, वही इसे पहचान पाता है। अवसर को पहचानना और पकड़ना जितना महत्वपूर्ण है, उतना यह भी कि आप अपने को उसके योग्य बनायें। किसी परीक्षा में बैठना या पद के लिये समय से आवेदन करना ही पर्याप्त नहीं होता। जरूरत है उसके लिये आपकी पर्याप्त तैयारी की। अवसर या समय की सही पकड़ इसी को कहते हैं।

सोफोक्लीज ने कहा कि "अक्सर ईश्वर उनकी सहायता कभी नहीं करता जो अपनी सहायता स्वयं नहीं करते हैं।" अपनी सहायता का अर्थ अपने अवसर को सही तरीके से पहचानना और उसका लाभ उठाने के लिए अपने आप को सक्षम बनाना। "डिजरायली" — ने तभी तो कहा कि मनुष्य को जानने के सिवा जीवन में सफलता का रहस्य, हाथ आने वाले अवसर के लिये हमेशा तैयार रहना है।

रगंरूट जीवन का सबसे सुखद और संघर्ष-रत समय होता है। इस समय में जो रंगरूट जितने प्रशिक्षण परिश्रम की अग्नि में तपा वह उतना ही खरा सोना बना। कर्मशील व्यक्ति को निम्न कथन हमेशा प्रेरणा स्वरूप याद रखना चाहिये कि- उपयोगी मनुष्य की सहायता करने के लिये प्रकृति बाध्य है। "विक्टर हूगो" ने भी कहा है - **"अच्छे कर्म वे कब्जे होते हैं, जिन पर स्वर्ग का द्वार टिका रहता है। उन्ही के सहारे वह द्वार खुलता है"**।

यह कथन पूर्णतया सत्य है कि - कर्मशील व्यक्ति के सफलता कदम चूमती है, क्योंकि कर्म एक ऐसी चमत्कारिक शक्ति है जिसके आगे असफलता का भूत टिक ही नहीं सकता।



फरवरी *2005* के दौरान श्रीनगर में भारी हिमपात के दौरान स्थानीय लोगों को हित एवं बचाव के रूप में खाद्धय सामिग्री एवं आवश्यक सामान बाटतें *27* बटा. सीआरपीएफ के जवान



मुम्बई में हुई भारीवर्षा के कारण आई बाड़ में फंसे लोगो को बाहर निकालते आर.ए.एफ के जवान

प्रकारान्तर से यहाँ यह निवेदन करना आवश्यक प्रतीत होता है कि कर्म की सफलता के लिये धर्म व कर्तव्य के ज्ञान की स्थिरता आवश्यक है। हम पूर्ण कर्मशील रहकर अपने भावी जीवन का निर्माण कर भविष्य को स्वर्णिम बनाने का प्रयत्न करें। हो सकता है, हम जितना प्रयास करें, उसके अनुरूप परिणाम या सफलता न प्राप्त हो, परन्तु यह निर्विवाद है कि-'कर्म सदैव सुख ना ला सके, परन्तु कर्म के बिना सुख मिलता भी नही है।" हम अर्थवेद की वाणी से प्रेरणा ग्रहण करें और कर्तव्य कर्म में जुट जायें तो "मेरे बायें हाथ में कर्म और दायें हाथ में जय है।"

अतः हम अपने बुरे कर्मों द्वारा चाहे तो अपने भाग्य को अन्धकार की खाई में ढकेलकर जीवन भर रोते रह सकते है अथवा अच्छे कर्मों से सूर्य की उजली किरणों में शामिल होकर अपना भाग्य संवार लें।

अन्त में एक बार फिर मैं कहना चाहूँगीं कि विफलताओं से अपना साहस न खोयें, असफल होने पर स्वंय की क्षमताओं पर शक न करें, असफलता में सबसे बड़ी बुराई यह नहीं है कि यह किसी को निराश करती है, बल्कि उसकी सबसे बुरी बात यह है कि वह आपका साहस और आत्मविश्वास छीनने की कोशिश करती है। ऐसा नहीं होने दें। आप सतत् कर्मशील होकर उसका सामना करें। विश्वास कीजिये आपके हर एक कदम पर सफलता आपके कदम चूमेंगी और इतना कर्म कीजिये कि मालिक को खुद बन्दे से पूछना पड़े-बोल तेरी रजा क्या है?

सुरक्षा के साथ-साथ पर्यावरण सरंक्षण एवं सामाजिक कार्यो में भी सीआरपीएफ की १४४ बटा. सक्रीय

पर्यावरण सुरक्षा :—

असम के नगॉव जिले में आतंकविरोधी अभियान के लिए तैनात है 144 बटा केरिपुबल के अधिकारी व जवान अपनी कठिन ड्यूटी के समय से कुछ वक्त निकालकर समाजसेवा, स्वरूप शहर की साफ-सफाई, पल्स पोलियों उन्मूलन अभियान, विश्व पर्यावरण दिवस आदि जैसे सामाजिक कार्यक्रम सफलता पूर्वक आयोजित करते हैं। जनता के जान माल की सुरक्षा का निर्वाहन करना केरिपुबल के जवानों का दायित्व है पर प्रकृति की अमूल धरोहर वृक्ष-पेड़ पौधों का संरक्षण व संर्वधन करना उनका कर्तव्य है ताकि वातावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। **जन-जन का है एक ही नारा, हरा-भरा हो देश हमारा।** 144 बटा ने भी ऐसा ही एक प्रयास किया है। पर्यावरण प्रदूषण शब्द का उच्चारण होते ही जन-जन बर्रा उठता है और सभी के मन में बस एक ही सवाल उठता हैं कि किस प्राकर पर्यावरण के इस भयंकर प्रदूषण को समाप्त किया जाये। पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही पृथ्वी का तापमान दिनोंदिन बढ़ रहा है, जिसके कारण पर्यावरण संतुलन तो बिगड़ ही रहा है साथ ही यह वायु व जल कई प्रकार से प्रदूषित हो रहा हैं और तरह के रोग उत्पन्न हो रहे है।

औद्योगिक संस्थानों का कूड़ा-करकट, रासायनिक द्रव्य व इनसे निकलने वाले अवव्यय नालों से होते हुए नदियों में गिर रहे हैं।

शुद्ध वायु जीवित रहने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, और शुद्ध वायु का स्रोत वन, हरे-भरे बाग व लहलहाते पेड़-पौधे है, लेकिन आज जनसंख्या विस्फोट के कारण आवास की समस्या उतपन्न होने लगी है। मनुष्य अपनी आवासीय पूर्ति के लिए वन क्षेत्रों और वृक्षों का दोहन कर रहा है जिसके फलस्वरूप वातावरण का संतुलन बिगड़ रहा है और कैंसर, दमा, टीबी आदि जैसी अनेकों भयंकर जानलेवा बीमारिया फैल रही हैं। वायु प्रदूषण से उच्च रक्त चाप, श्वास संबंधी रोग तथा हमारी त्वचा व नेत्र भी बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। प्रदूषण की वजह से मनुष्य की सामान्य आयु भी घटती चली जा रही है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर समाजोपयोगी कार्य के रूप में सीआरपीएफ की 144वीं बटालियन ने



***144* बटालियन केरिपुबल, नगाँव *(*असम*)* द्वारा आयोजित कार्यक्रम मे तहत स्कूली छात्र-छात्राओं को पुस्तकें एवं खेल सामग्री का वितरण करते कमाण्डेन्ट श्री एल*0*सी*0* गोगोई।**

गत पाँच जून, 2005 को कमांडेंट श्री एल. सी. गोगोई के नेतृत्व में नगांव सिथत शिव मंदिर, पार्क, में साफ - सफाई तथा वृक्षारोपण किया गया ताकि बढ़ते हुए वायु प्रदूषण को रोका जा सके। इसी उपलक्ष्य में कमाडेंट श्री गोगोई ने उपस्थित स्थानीय जनता, हायर सेकेन्डरी स्कूल बटद्रवा के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं, अभिभावकों, पत्रकारों व जवानों को संबोधित करते हुए सभी से जीवन में एक-एक वृक्ष लगानेकी अपील की ताकि वाढ़, सूखा, विषैली गैसों आदि प्रकोप को कम किया जा सकें।



***144* बटालियन केरिपुबल नगाँव *(*असम*)* द्वारा भेंट की गई *500* लीटर की *(*सिन्टेक्स*)* पानी की टंकी**

श्री गोगोई ने लोगों का आहवान किया कि अभी बहुत देर नहीं हुई हैं यदि हम अब भी निरंतर वृक्षारोपण और उसका संरक्षण करें तो सृष्टि को अकाल के भावी विनाश से बचाया जा सकता है। व्यक्तिगत तथा समाजिक दोनों ही स्तरों पर इस ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक ही नहीं बल्कि हमारा धर्म भी है। किसी ने ठीक ही कहा है-**'पेड़ों से मिले शुद्ध वायु, शुद्ध वायु से हो जीवन दीर्घायु।'**



10 विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर *144* बटालियन केरिपुबल के कमाण्डेन्ट श्री एल*0*सी*0* गोगोई वृक्षारोपण करते हुए।

बटालियन के अधिकारियों व जवानों के सहयोग से शिव मंदिर, नगांव एवं श्रीशंकरदेव बटद्रवा तीर्थस्थान में सिन्टक्स की पांच-पांच सौ लीटर की एक-एक पानी की टंकी भेंट की गई ताकि आगंतुक दर्शनार्थियों तथा प्यासे जीव-जंतुओं को पीने योग्य पानी मुहैया कराया जा सकें एवं पौधों को सिंचाई हेतु जल संचित करके रखा जा सके।

इस सराहनीय वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में बटालियन के जवानों के साथ-साथ स्थानीय जनता, शिक्षकों, अभिभावकों, छात्र-छात्राओं व उपस्थित प्रेस -

मीडिया के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपना-अपना योगदान दिया तथा पर्यावरण प्रदूषण को रोकने का संकल्प दोहराया।

पोलियो उन्मूलन शिविर

पोलियो शब्द का उच्चारण करते ही आँखों के सामने एक ऐसे असहाय बच्चे की तस्वीर घूमती है जो अपने शरीर का ठीक से बोझ भी नहीं उठा सकता, जिसे सारी उम्र वैसाखियों का सहारा लेना पड़ता है। क्योंकि उसे बचपन में सही समय पर पोलियों की दवा नहीं पिलाई गई। जरा सोचिए उस बच्चे तथा उसके माता-पिता के हृदय पर कैसा आघात लगता है। भारत ही नहीं बल्कि विश्व का शायद ही ऐसा कोई देश होगा जो आज इस खतरनाक बीमारी को जड़ से मिटाने के लिए दृढ़ संकल्प ना हो। सभी देशों ने यह संकल्प लिया है कि जब तक वे इस बीमारी का जड़ से खात्मा नहीं कर देते तब तक चैन की सांस नहीं लेंगें। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए, बच्चों को उज्जवल भविष्य प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने समय-समय पर पल्स-पोलियों उन्मूलन शिविरों का आयोजन किया।

सरकार के इन्ही निर्देशों के अन्तर्गत 15 मई, 2005 को 144 बटालियन के0रि0पु0बल नगाँव (असम) के चिकित्सा परिसर में पल्स पोलियों उन्मूलन शिविर का आयोजन किया। केम्प का शुभारम्भ 144 बटालियन के कमाण्डेन्ट श्री एल0सी0 गोगोई ने किया। बटालियन के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 उमेश गौतम, उप कमाण्डेन्ट श्री सुनील कुमार, सहायक कमाण्डेन्ट श्री एस0के0 सरकार तथा जवानों की देख-रेख में सुबह से शाम तक पोलियो कैम्प लगाया गया। इस कार्यक्रम के तहत 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों को उनके घरों से बुला–बुलाकर पोलियों की खुराक पिलाई गई।

इसके अलावा बटालियन की मोबाईल वेन द्वारा स्थानीय लोगों के सहयोग से आस-पास के गाँवों में घर-घर जाकर ऐसे माता-पिता जो अभी भी पोलियों जैसी भंयकर बीमारी तथा खुराक के महत्व के बारे में अनभिज्ञ थे, उन्हे इसके महत्व से अवगत कराया गया। उनके बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई गयी। बच्चों को बिस्कुट एवं टाफियां भी बाँटी गई। बटालियन के अधिकारियों तथा जवानों द्वारा किये जा रहे ऐसे समाज कल्याणकारी कार्यों की अभिभावकों, स्थानीय जनता, प्रशासन, चिकित्सा विभाग तथा प्रेस मीडिया ने भूरि-भूरि प्रंशसा की। इस पोलियों उन्नमूलन कार्यक्रम के तहत बटालियन द्वारा लगभग 1000 बच्चों को पोलियों की खुराक पिलाई। बटालियन का एक ही संकल्प था कि उनकी नजरों में कोई बच्चा पोलियों की खुराक लिए बिना न रह जाए।



***144* बटालियन केरिपुबल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ*0* उमेश गौतम पल्स पोलियो उन्मूलन अभियान के दौरान बच्चों को पोलियों खुराक पिलाते हुए।**

शिक्षा अभियान एंव खेल कूद

सरकार के सर्व शिक्षा अभियान को मूर्त रूप देने के लिए बटा. ने स्कूल के निर्धन छात्र-छात्राओं की मदद् के लिए 30 मई, 05 एवं 2 जून, 05 तक नगांव (असम) के सामागुड़ी थाना के पदमिनि शिलपुखरी हाई स्कूल एवं सेन्चुआ स्थित अमरबोकाकांटी हाई स्कूल के निर्धन छात्र-छात्राओं को बहुमूल्य पुस्तकें एवं खेल सामिग्री का वितरण किया गया

वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखै,
नदी न सीचैं नीर।
परमारथ के कारणे,
साधू न धरा शरीर।

“हमारे देश के बच्चों व युवाओं के अन्दर प्रतिभा की कोई कमी नहीं है बल्कि कमी है तो उपयुक्त संसाधनों की, जिसके अभाव में वे अपना मानसिक, बौद्धिक एवं शारिरिक विकास नहीं कर पाते हैं। बटा के कमाडेंट श्री गोगोई ने बच्चों को किताब कापी तथा खेल का सामान बाटतें हुए कहा कि यह सर्व विदित है कि बच्चों के मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक विकास हेतु पढ़ाई के साथ-साथ खेल कूद भी जरूरी है। खेल कूद से स्वस्थ एवं प्रबल शरीर की कामना की जा सकती है। हो सकता है आगे चलकर खेल-कूद के विभिन्न क्षेत्रों में यह बच्चे देश का कुशल नेतृत्व करेगें।



144 **बटा द्वारा आयोजित समारोह में रगांरग कार्यक्रम प्रस्तुत करते स्थानीय स्कूली बच्चे**

कार्यक्रम में हजारों बच्चों व उनके अभिभावकों, स्थानीय जनता, शिक्षक, प्रशासन, प्रेस व मीडिया ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। स्थानीय बच्चों ने बटालियन के जवानों के साथ मिलकर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये।



असम मे प्रमुख प्रतिस्थानों कि सुरक्षा करते *144* बटा सीआरपीएफ के जवान

बटालियन द्वारा किये गये इन परोपकारी एवं समाजोपयोगी कार्यों की चर्चा सुदूर गाँवों तक हुई। यह बटालियन जनमानस, स्थानीय जनता, प्रशासन, प्रेस व मीडिया का विश्वास जीतने के उद्देश्य से आये दिन कोई-न-कोई ऐसे कार्यक्रम आयोजित करती रहती है ताकि जनता का विश्वास पुलिस के प्रति और सुदृढ़ हों।



उड़ीसा के मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक ग्रुप केन्द्र, भुवनेश्वर में *56* वें राज्य स्तर के बनोमहोत्सव का शुभारम्भ करते हुए।



मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री बाबू लाल गौर ग्रुप केन्द्र भोपाल के विजिट के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली स्कूली छात्राओं के साथ।

केन्द्रीय अर्ध सैनिक बलों के बीच मानवाधिकारों पर वाद-विवाद प्रतियोगिता

सिगनल ग्रुप केन्द्र/केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (दूरसंचार), रॉची के तत्वाधान बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, अंडमान निकोबार राज्य आदि में तैनात केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों के कार्मिकों के लिए 13 जून, 05 को वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था **"क्या बिना मानव अधिकारों के हनन के विधि के दायरे में रह कर आतंकवाद से नहीं लड़ा जा सकता ? "can terrorism not be countered within the parameters of rule**

of law without sucrificing human rights?"

वाद विवाद प्रतियोगिता में केरिपुबल, बीएसएफ, सीआईएसएफ एवं एसएसबी की चार-चार प्रतिभागियों की टीमों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता को सुचारू रूप से संचालन एवं प्रतिभागियों में प्रथम, द्वितीय स्थान का निर्णय करने हेतु माननीय न्यायाधीश (अवकाश प्राप्त) श्री पी0 के0 सरकार की अध्यक्षता में श्री महेन्द्र प्रसाद, पुलिस महा0. केरिपुबल (अवकाश प्राप्त) श्री पी0आर0 नायडू, उप महा. झारखण्ड पुलिस की समिति बनाई गई।



ग्रुप केन्द्र, रॉची द्वारा आयोजित मानवाधिकार वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते न्यायमूर्ति (सेवा निवृत्त) श्री पी.के. सरकार एवं अपर पुलिस महानिरीक्षक श्री के.के. जोआरदार

प्रतियोगिता के हिन्दी वर्ग का प्रथम स्थान 138 बटा केरिपुबल के सिपाही दिनेश चन्द देशपाल को मिला जबकि सीमा सुरक्षा बल के हवलदार राकेश कुमार राय तथा 41 बटा केरिपुबल के सिपाही मो0एस0 अन्सारी, को क्रमशः दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

प्रतियोगिता के अंग्रेजी वर्ग में सीमा सुरक्षा बल के निरीक्षक शैलेन्दर सिंह नेगी व निरीक्षक एस0 मी0 ठाकुर को क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान जबकि ग्रुप केन्द्र सिंदरी केरिपुबल के कुलदीप कुमार तीसरे स्थान पर रहे।

इस मौके पर ग्रुप केन्द्र राची के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री के0 के0 जोआरदार ने कहा कि इस तरह की वाद-विवाद प्रतियोताओं के आयोजन का उद्देश्य अर्ध सैनिक पुलिस बलों में निचले स्तर तक मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। श्री जोआरदार ने बताया कि हमारे देश में कानून व्यवस्था स्थापित कर पालन कराने के साथ-साथ आतंक रहित माहौल बनाने का दायित्व भी व्यापक रूप से केन्द्रीय सुरक्षा बलों को सौपा गया है। कभी कभार विकट परिस्थितियों में क्षणिक त्रुटि या असावधानी से मनवाधिकार के हनन की प्रबल सम्भावनायें बनी रहती हैं।

श्री जोआरदार, ने प्रतियोगिता में सम्मिलित प्रतियोगियों को बधाई देते हुए निर्णायक मंडल सहित समिति के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा के मद्देनजर कार्य करते हुए केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों के कार्मिकों को अपनी शक्तियों का प्रयोग संयम, विधिक एव विवेकपूर्ण ढंग से करना चाहिए।



ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, बैंगलूर में मानवाधिकार पर आयोजित केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों (दक्षिणी क्षेत्र) की वाद-विवाद प्रतियोगिता में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की (अंग्रेजी) टीम श्री आर.तरार, पुलिस उप महानिरीक्षक, बैंगलूर से प्रथम पुरस्कार (शील्ड) प्राप्त करते हुए।

इसी तरह की प्रतियोगिता का आयोजन ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, बैंगलूर में 20, व21 जून, 05 को किया गया। प्रतियोगिता का विषय **"क्या बिना मानव अधिकारों को बलि पर चढ़ाए कानून की परिधि में रहकर आतंकवाद से नहीं लड़ा जा**

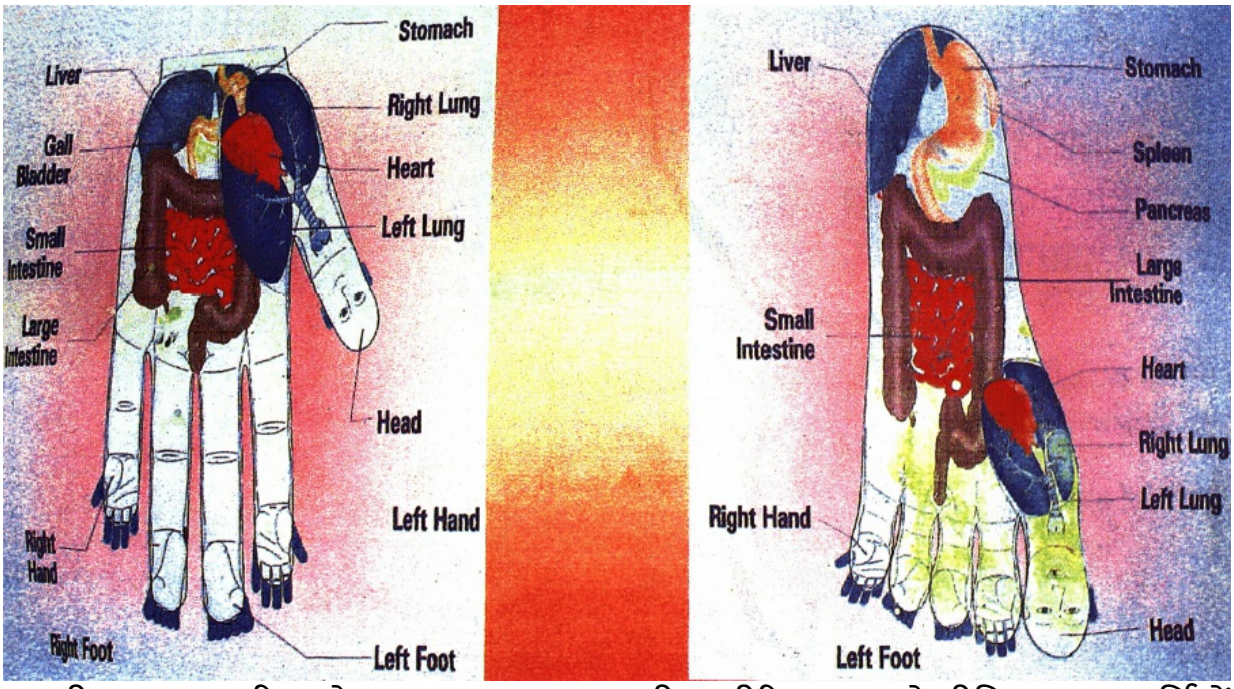
सकता ?” विषय पर हिंदी व अंग्रेजी दोंनों वर्गो के लिए किया गया। इस प्रतियोगिता में दक्षिणी राज्यों अर्थात तमिलनाडु, कर्नाटका, आन्ध्र प्रदेश व केरल में तैनात सी.सु.बल, के.औ.सु. बल, रे.सु.बल तथा के.रि.पु.बल की टीमों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कर्नाटक पुलिस के उपमहानिरीक्षक डॉ. पी. रवीन्द्रनाथन, श्री ए.रंगानाथन, तथा कर्नाटक विधि सेवा के संयुक्त निदेशक (विधि) श्री मोहन टी. कुलकर्णी, ने निर्णयकों की भूमिका निभाई। सर्वश्रेष्ठ चार टीमों का चयन किया गया। प्रतियोगिता के हिंदी वर्ग का प्रथम स्थान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, टीम को मिला जबकि सीमा सुरक्षा बल व केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की टीमों को क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। अंग्रेजी वर्ग में भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को प्रथम स्थान तथा सीमा सुरक्षा बल व रेलवे सुरक्षा बल को क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान मिला। हिंदी व अंग्रेजी दोंनों वर्गों की प्रथम दो टीमें नवम्बर में दिल्ली में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में दक्षिणी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करेंगी। इस प्रतियोगिता का शुभारम्भ श्री डेरिल डीसेना, अ.पु. उ.म.नि. ग्रुप केन्द्र, बैंगलूर किया जबकि श्री आर. तरार, पु.उ.म.नि. बैंगलेर रेंज ने विजेता प्रतियोगियों को शील्ड और निर्णायक समिति के सदस्यों को स्मृति चिन्ह प्रदान किए। इस अवसर पर श्री तरार ने कहा कि केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों के कार्मिकों को देश की आन्तरिक सुरक्षा की डयूटी करते समय यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि वे अपने ही देशवासियों के साथ बर्ताव कर रहें हैं। बल का प्रत्येक कार्मिक वर्दी में भी एक आम नागरिक ही है, इसलिए उसे देश के नागरिकों के साथ व्यवहार करते समय बेहद सावधानी बरतनी चाहिए। श्री तरार ने बताया कि इस तरह की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के आयोजन का उद्देश्य अर्द्धसैनिक पुलिस बलों में नीचे तक के स्तर पर मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। यह प्रतियोगिता सभी केन्द्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस बलों के कार्मिकों के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों मे आयोजित की गई थी।

पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय में सुजोक चिकित्सा पर कार्यशाला

लायन्स क्लब इंटरनेशनल, मुंबई के तत्वावधान में 31 मई, 2005 को पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय में जाने-माने सुजोक चिकित्सक श्री लायन जी.बी लुथरिया ने बहुत ही सरल भाषा में बड़े प्रभावी ढंग से विभिन्न बीमारियों के इलाज में सुजोक चिकित्सा कैसे लाभदायक हो सकती है पर व्याख्यान दिया। श्री लुथरिया ने बताया कि सुजोक शब्द की उत्पत्ति कोरियन भाषा से हुई है जिसका अर्थ है-‘सु’ – हाथ एवं ‘जोक’ – पांव इसमें मनुष्य की हथेली व पांव के तलवे को सम्पूर्ण शरीर का अंग मानकर

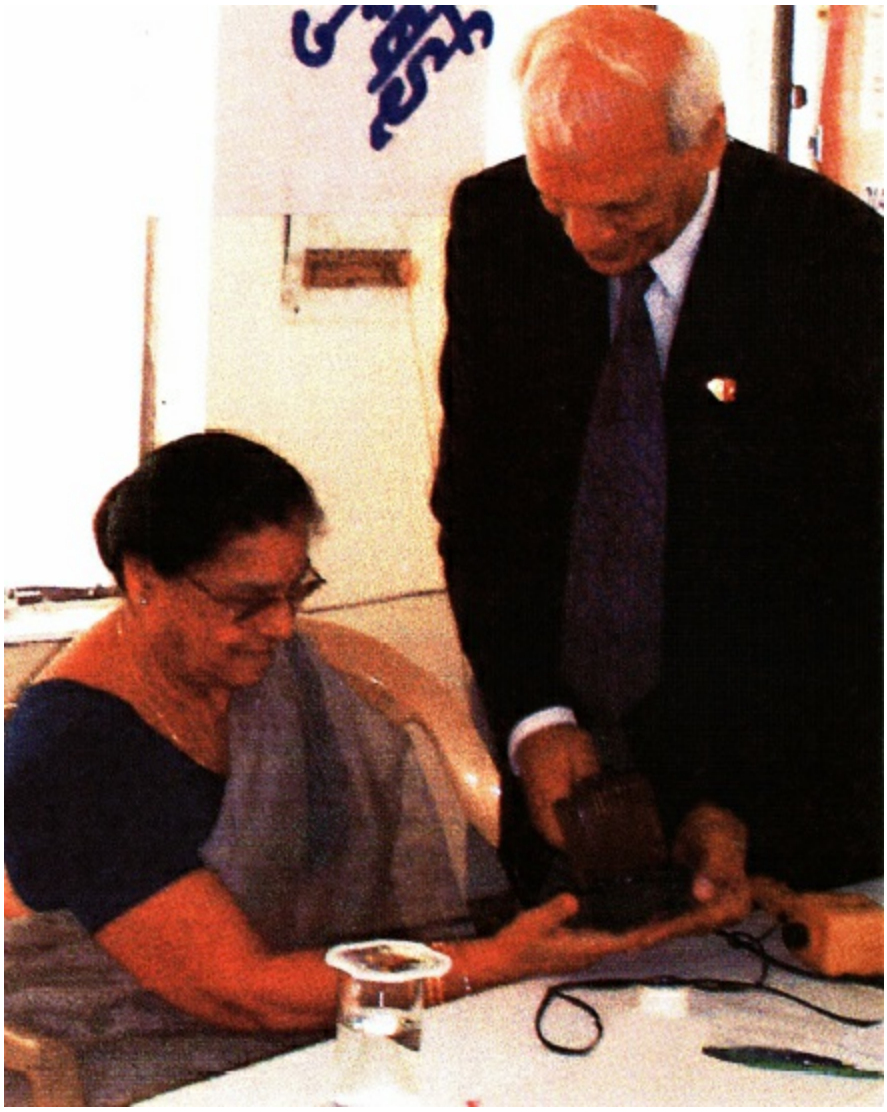
उपचार किया जाता है यथा बीच की दो अंगुलियां-दो पैर, किनारे की दोनों अंगुलियां-दो हाथ, अंगूठे को सिर तथा शरीर का भाग माना जाता हैं। श्री लुथरिया का कहना है कि सुजोक चिकित्सा में न तो कोई भूमिका होती हैं बल्कि इसमें प्राकृतिक तरीके से उपचार किया जाता है।





श्री लायन लुथरिया ने व्याख्यान स्थल पर ही शारीरिक कष्ट से पीड़ित कुछ कर्मियों एवं उनके परिजनों का सुजोक थैरपी से त्वरित उपचार करके सभी को आश्चर्यचकित कर दिया।

इस अवसर पर सर्व श्री सी.बी.एस. राठौर, मुउमनि, गांधी नगर, श्री सत स्वरूप सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, द्रुत कार्य बल, श्री अनिल दुग्गल, कमाण्डेंट (प्रशासन) प.से. मुख्यालय, श्री संदीप दत्ता, कमाण्डेंट (स्टाफ) द्रुत कार्य बल मुख्यालय एवं अन्य अधिकारियों के अलावा बड़ी संख्या में कार्मिक व उनके परिजन भी उपस्थित थे। सभी लोगों ने सुजोक चिकित्सा उपचार में बहुत रूचि दिखाई। और अनेक प्रश्न पूछ कर अपनी शंकाओं का निवारण किया। बड़ी संख्या में कर्मिकों ने इस पद्धति / थैरपी में उपयोग किए जाने वाले छोटे उपकरण वाली किटों को सुलभ कराने का अनुरोध किया। जिन्हे प्राप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस सेक्टर की अधीनस्थ युनिटों/संस्थानों में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर अधिक से अधिक कार्मिकों और उनके परिजनों को लाभांवित करने की योजना है।





अंत में श्री लायन लुथरिया एवं लायन्स क्लब के स्टाफ का धन्यवाद करते हुए पुलिस महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर श्री अतुल कुमार माथुर ने कहा कि लगातार बढ़ती बीमारियां, महंगे होते इलाज एवं इलाज के फलस्वरूप दवाइयों के बढ़ते दुष्प्रभावों की दृष्टि से सुजोक चिकित्सा सबसे सहज, सुलभ व उपयोगी इलाज माना जा सकता है। बल के सदस्य ज्यादातर दूर-दराज क्षेत्रों में तैनात रहते हैं और अक्सर उन्हें चिकित्सा सुविधाएं या तो मिल नहीं पाती या फिर समुचित नहीं होती हैं। अतः जवानों के लिए सुजोक चिकित्सा बहुत ही लाभकारी सिद्ध हो सकती है। श्री माथुर ने निःस्वार्थ भाव से मानव सेवा करने के लिए श्री लायन लुथरिया एवं उनके स्टाफ की सराहना की एवं इस बहुमूल्य व्याख्यान के लिए आभार प्रकट किया।

देश का गौरव बल की शान

59वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने जम्मू - कश्मीर, एवं उत्तरी – पूर्वी राज्यों तथा देश के विभिन्न भागों में उग्रवादियो,

आतंकवादियों तथा नक्सलवादियों के विरूद्ध चलाए गए विभिन्न अभियानों में अदम्य साहस कर्तव्य परायणता तथा उच्च कोटि की वीरता का प्रदर्शन करने के लिए केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के तीन कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक तथा 10 कार्मिकों को शौर्य वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए हैं। पदक प्राप्त करने वाले इन 13 कार्मिकों में से 3 कार्मिकों को यह पदक **मरणोपरांत** प्रदान किए गये हैं।

राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक (पी० पी० एम० जी०)

स्व0 हवलदार सत्यबीर सिंह-132 बटा0 **(मरणोपरांत),** स्व0 सिपाही के0के0 पांडे **(मरणोपरांत)**- 79 बटा0 तथा सिपाही जोगिन्द्र पाल-109 बटा0 ।



सहायक कमाडेंट – श्री वाई*0* एन*0,*

शौर्य वीरता के पुलिस पदक (पी०एम०जी०)

स्व0 सिपाही चौधरी विनोद भाई **(मरणोपरांत)**- 68 बटा0, श्री मूलचंद पवांर, कमांडेंट-68 बटा0, श्री बिपलव मंडल सहायक कमांडेंट-39 बटा0, श्री वाई0 एन0 राय, सहायक कमांडेंट – 52 बटा0, हवलदार देव सिंह- 52 बटा0, हवलदार ई0जी0 राव-79 बटा , हवलदार पी0एस0 राजेन्द्रन-83 बटा0, सिपाही टी0ए0 सिंह-79 बटा0, सिपाही एस0 बाबु–83 बटा0 तथा सिपाही अश्वजीत गायकवाड-68 बटा0 ।

केरिपुबल के स्थापना दिवस पर आर टी सी - I नौमच में आयोजित कार्यक्रमों की एक झलक



अन्तर रेंज फुटबाल की ट्राफी 143 बटा ने जीती

143 बटा0 केरिपुबल में 20 से 25 मार्च, 2005, तक अन्तर बटालियन (अन्नतनाग परिचलन रेंज) फुटबाल टूर्नामेंट 2005 आयोजन किया गया था, जिसमें 8 टीमों ने भाग लिया और 143 बटा0 केरिपुबल की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री एस.आर.ओझा, पुलिस उप महानिरीक्षक परिचालन (अन्नतनाग) ने विजेता टीम 143 बटा0 केरिपुबल को ट्राफी प्रदान की।



कावा समाचार

नशे की लत या ड्रग एब्यूस्

पिछले कुछ समय से नशीले औषधियों का उपयोग बहुत ज्यादा हो रहा है। बच्चे व बड़े सभी जाने अन्जाने में इसका शिकार हो रहे हैं, ज्यादातर युवा वर्ग जिसमें स्कूल व कालेज के छात्र व छात्रायें भी बड़ी सख्या में सम्मिलित हो रहे हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नशीली दवाओं का सेवन आज के समय में एक बड़ी

समस्या बन गई है। यह एक ऐसी बीमारी है जो दूसरी कई बीमारीयों को जन्म देती है। इसमें कई मादक द्रव्यों का मिश्रण होता है जिसमें गैर-कानूनी भांग, गंजा आदि शामिल होते हैं। इसमें तम्बाकू, शराब व नाक द्वारा शरीर में प्रवेश करने वाली वस्तुएं भी बड़ी मात्रा में उपलब्ध होती हैं।

सारांश में किसी भी दवा की मात्रा जरूरत से ज्यादा या जरूरत के अलावा डाक्टर की सलाह के मुताबिक या सलाह के बिना लेना, जिससे शरीर व मस्तिष्क को हानि पहुंचती है उसे सबस्टेंस अब्यूस कह सकते हैं। यदि इसके कारणों पर ध्यान दिया जाए तो पता चलता है कि यह एक ऐसी समस्या हैं जिससे कि इसको इस्तेमाल करने वाला धीरे-धीरे इस पर पूर्ण रूप से आधारित हो जाता है और इसके बगैर उसका जीना मुश्किल हो जाता हैं।

कई लोग शराब का सेवन सौहरत वाली मित्र-मंडली के साथ मिलकर तो कई अपनी घरेलू समस्या को ठीक प्रकार से निपटा न पाने के कारण नशीली चीजों को सेवन कर नशे में मस्त हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में कमजोर व डरपोक अपनी समस्याओं का सामना न करने के कारण इसके शिकार हो जाते हैं। एक सर्वेक्षण के मुताबिक इसके शिकार ज्यादातर बेरोजगार, मजदूर व कम आय वर्ग वाले व्यक्ति होते हैं। अभी युवा वर्ग में 16 वर्ष से 35 वर्ष तक के लड़के व लड़कियां शामिल हो रहे हैं। इसमें से ज्यादातर नशे के काम में आने वाली गांजा व हीरोईन का सेवन कर रहे हैं।



कावा के सहयोग से राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान द्वारा नशे के आदी युवकों को ड्रग्स से होने वाली हानियों के बारे में बताते हुऐ।

सबस्टेंस अब्यूस हमारे समाज के लिए एक जटिल समस्या बन कर रह गई है जिसे चाह कर भी पूरी तरह से दूर नहीं किया जा सकता। जो इसके शिकार हो जाते हैं उनमें निम्न प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं:–

- **किसी काम में दिल न लगना।**
- **वजन व खाने की क्षमता में कमी आना।**
- **आँखों में ललावट व नजर का कमजोर होना।**
- **तुतला कर बोलना।**
- **इन्जेक्शन के कई-कई निशान व कपड़ों पर खून के निशान मिलना।**
- **घर में इन्जेक्शन, सुई आदि का हमेशा मिलना।**
- **उल्टी, घबराहट व शारीरिक दर्द होना।**
- **हर समय शरीर का गिरना व शिथिल रहना व नींद सी महसूस करना।**
- **मन की स्थिति का बार-बार बदलना व चिड़चिड़ापन होना।**
- **व्यक्तित्वहीन व भावनाहीन होना।**
- **याददास्त का कम होना व किसी भी बात पर गौर न कर पाना।**
- **अकेले रहना पसंद करना व ज्यादा समय शौचालय में बिताना।**
- **घर से वस्तु व पैसा आदि का गायब होना।**

यह एक सामाजिक, मनौवेज्ञानिक व चिकित्सीय समस्या है व इसको दूर करने के लिए हम सभी को एक साथ जुटकर प्रयत्न करने होंगे। इसके लिए कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ेगा क्योंकि जो लोग इन मादक पदार्थों की बिक्री करते हैं उनका इससे नुकसान होने से वे एक-दूसरे की जान के दुश्मन हो जाते हैं।

इसमें समाज, माता - पिता, अध्यापक, धार्मिक सस्थाएं मिडिया, समाज-सेवी संस्थाएं आदि इनके गुण व अवगुण का प्रचार हर जगह करके भटके हुए व्यक्तियों, छात्र-छात्राओं को इस नरक से छुटकारा दिलाने में बहुत सहायता कर सकती हैं। यह सभी संस्थायें इन भटके हुए व्यक्तियों या महिलाओं को सुधारने एवं इनका पुर्नवास करने में बहुत मदद कर सकते हैं। ऐसे युवाओं को ड्रग सेवन से होने वाली बीमारियों, परेशानियों, सामाजिक नफरत आदि का महत्व बताकर उनकी आंखों से पर्दा दूर कर सकते हैं।

इसके अलावा अच्छा माहौल समाज में इनके प्रति प्यार की भावना का आभास करा कर, बेरोजगार को रोजगार दिलाने में मदद करके इन्हें व्यस्त रखा जा सकता है। भटके हुए लोगों को राह पर लाने के बाद इन उपरोक्त बातों का ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है, बरना उनका पुनः इन खराब आदतों का शिकार होने का पूरा पूरा डर रहता है। यहां एक बार फिर यह बात बताना जरूरी है कि ऐसे व्यक्तियों को

सही रास्ते पर लाने के लिए जितना उनका इलाज जरूरी है उतना ही उनका सामाजिक उत्थान, साहस, जीवन निर्वाह के लिए काम-काज आदि भी हमारी सरकार ने इन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए सलाह, नशा विरोधी केन्द्र व इसके बाद उनकी देखभाल के लिए कई अलग-अलग केन्द्र स्थापित किए है। आज कुछ गैर सरकारी संस्थाएं भी इनको बहुत सहयोग एवं सहायता कर रही हैं। और इससे ग्रसित लोगों के उत्थान एवं पुर्नवास के लिए प्रयासरत है। प्रायः देखा गया है कि आज कल लोग भोग विलास की जिन्दगी जीना घर की शान समझते हैं। ऐसा प्रचलन सा चल गया है कि वही लोग समाज में बड़े एवं महान है या फिर उन्हे रहीस कह सकते है जो शराब, बीयर विहस्की, सिगरेट या सिगार का अक्सर शौक फरमाते है। आप ने बड़ी बड़ी आलीसान पार्टीयों, शादियों समारोह में लोगों को इसका प्रयोग करते देखा होगा। यदि नहीं देखा तो जरा पार्टी अटेन्ड कर देखिये, आपको अन्दाजा लग जाएगा कि लोग कैसे इस जहर को पीते है इसके चंगुल में फँसते जाते है। बड़े बड़े अपराध भी नशे में होते है क्योकि नशे में आदमी अपना हौश हवास खो बैठता है। अतः ऐसे लोगो के लिए सिर्फ सरकार या उसकी चिकित्सा ही पर्याप्त नहीं, बल्कि हम सबका सहयोग भी बहुत जरूरी है।



जहां तक इसकी चिकित्सा का सम्बन्ध हैं भारतवर्ष में कई सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाएं व चिकित्सालय है जो इन बुरी आदतों के शिकार व्यक्तियों को सही राह पर लाने में पूरी-पूरी सहायता करते हैं। इस बीमारी की चिकित्सा के लिए कई पद्धतियां भारत में प्रचलित हैं, परन्तु होम्योपैथी का योगदान बहुत ही सराहनीय है। इस पद्धति के अनुसार रोगी की चिकित्सा उसके रोग व लक्षण के मुताबिक की जाती है जिससे रोगी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाता है। परंतु इस सबसे खास बात है पीड़ित व्यक्ति की इच्छा शक्ति।

144 बटा में महिलाओं द्वारा सयुक्त परिवार दिवस समारोह का आयोजन

15 मई, 2005 को 144 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल नगांव (असम) परिसर में अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त परिवार दिवस का अयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती अणु गोगोई ने की। समारोह में बल कर्मिकों की पत्नियों के साथ-साथ आस-पास रहने वाली महिलाओं तथा बच्चों को भी आमन्त्रित किया गया। श्रीमती गोगोई ने समारोह की शुरूआत करते हुए उपस्थित सभी महिलाओं को धन्यवाद किया तथा उन्हें संयुक्त परिवार के महत्व के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। श्रीमती गोगोई ने बताया कि यह अनुभव रहा है कि हमें सभी को किसी न किसी कारणवश तकरीबन घरों से दूर रहना पड़ता है, ऐसे में अगर हम सब सयुंक्त परिवार में रहे तो जो समस्याएं हमें अकेले झेलनी पड़ती है उनसे बचा जा सकता है। संयुक्त परिवार में रहने से हमें स्वयं तथा अपने बच्चों के प्रति सुरक्षा का ऐहसास होता है। किसी भी विकट परिस्थिति में हम किसी भी समस्याओं से एकजुट होकर उसका सामना करने में मजबूत रहते हैं।, इतना ही नहीं हमें कोई भी व्यक्ति अकेला समझकर नुकसान पहुचाने की हिम्मत नहीं कर सकता। संयुक्त परिवार के साथ रहने पर हम एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल हो सकते हैं। बड़े बुजुर्ग का आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। किसी ने सच ही कहा है कि बड़े-बूढों के आशीर्वाद के बिना छोटों का कल्याण व प्रगति सम्भव नहीं है।



144 बटालियन केरिपुबल नगाँव *(*असम*)* द्वारा आयोजित सिविक एक्शन प्रोग्राम के दौरान रंगारग कार्यक्रम प्रस्तुत करती स्कूली छात्राएं*।*

जरा सोचिए उन माता-पिता के हृदय पर क्या बीतती होगी जो सारी उम्र मेहनत कर अपने बच्चों को पढ़ाता हैं तथा खुद सारे कष्ट सह कर अपने बच्चों को सारे सुख देते हैं। उनका एक ही सपना होता है कि उनका बेटा अपने पैरों पर खड़ा हो जाएगा तो उनके सुख के दिन लौट आएंगे, उनका बुढ़ापा चैन से कट जाएगा। लेकिन उन माता-पिता का वह सपना तब चकनाचूर हो जाता है तब उनके बच्चे संयुक्त परिवार को न अपनाकर एकांकी परिवार को अपना लेते हैं। श्रीमती गोगोई ने उपस्थित महिलाओं को अवगत कराते हुए यह माना कि संयुक्त परिवार में छोटे-मोटे झगड़े होते रहते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम संयुक्त परिवार को छोड़ दें।



संयुक्त परिवार दिवस पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेती *144* बटा. की महिलाएं।

उन्होंने यह भी कहा कि क्या पति-पत्नी, भाई-बहन, माता-पिता इत्यादि के बीच क्या आपसी झगड़े नहीं होते और क्या वे एक-दूसरे को छोड़ देते हैं। हम ऐसे छोटे-मोटे झगड़े को लेकर संयुक्त परिवार को क्यों छोड़ देते हैं। श्रीमती गोगोई ने यह भी कहा कि आज समाज में अपराध निरन्तर बढ़ रहें है। इससे सबसे ज्यादा नुकसान एकल परिवार के सदस्यों को हो रहा है। अतः आज समाज में संयुक्त परिवार की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

अंत में श्रीमती गोगोई ने उपस्थित महिलाओं से कहा कि वे संयुक्त परिवार को महत्व दें, अपने बच्चों तथा अपने परिवार की जिन्दगी को खुशहाल बनाएं। किसी ने ठीक ही कहा है :–

“उज्जवल भविष्य हमारा है।
अगर हो संयुक्त परिवार का सहारा है।”

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाली महिलाओं ने संकल्प लिया कि वे संयुक्त परिवार के फायदे को ध्यान में रखते हुए पूरी कोशिश करेंगी कि वे भी संयुक्त परिवार का एक हिस्सा बन कर रहें।

कावा द्वारा के0रि0पु0बल के स्थापना दिवस पर ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा विशेष कार्यक्रमों का आयोजन

27जुलाई 2005 को परिवार कल्याण, केन्द्र समूह केन्द्र झड़ौदा कलां में केरिपुबल स्थापना दिवस पंरपरागत रूप से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत श्रीमती लता डबराल, क्षेत्रीय कावा समिति की अध्यक्षा ने वृक्षारोपण करके की। इस अवसर पर परिवार कल्याण केन्द्र की 300 महिलाओं ने कैम्प परिसर में कई फलदार वृक्ष लगाये। तत्पचात महिलाओं द्वारा **"एड्स एक खतरनाक बीमारी"** और **"संयुक्त परिवार प्रथा आज की आवश्यकता"** जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये। महिलाओं के लिये एक होम्योपैथिक चिकित्सया शिविर का भी आयोजन किया गया। महिलाओ और मान्टेसरी के नन्हे, मुनहे बाल कलाकारों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। मान्टेसरी स्कूल के बच्चों के लिये एक पेन्टिंग प्रतियोगिता आयोजित की गयी। महिलाओं के लिये ब्यूटी हैल्थ केयर व टैक्सटाइल डिजाइनिग कोर्स शुरू किये गये। इस अवसर पर क्षेत्रीय कावा समिति की अध्यक्षा ने बताया गया कि आने वाले समय में महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा करने व जीविकोपार्जन हेतु अन्य और कोर्स शूरू किये जायेंगें। समारोह का समापन विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता महिलाओं और बच्चों को पुरस्कार प्रदान कर किया गया।



पर्यावरण में कावा की सक्रिय भागीदारी “ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली की महिलाओं द्वारा वृक्षारोपण”



केरिपुबल के स्थापना दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कावा समिति द्वारा आयोजित समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली के बच्चे

क्षेत्रीय कावा समिति ग्रुप केन्द्र, सिंदरी की गतिविधिया



अचार बनाने का प्रशिक्षण लेती ग्रुप केन्द्र सिंदरी की महिलाएं।



मेहंदी प्रतियोगिता में भाग लेती ग्रुप केन्द्र सिंदरी की महिलाएं।

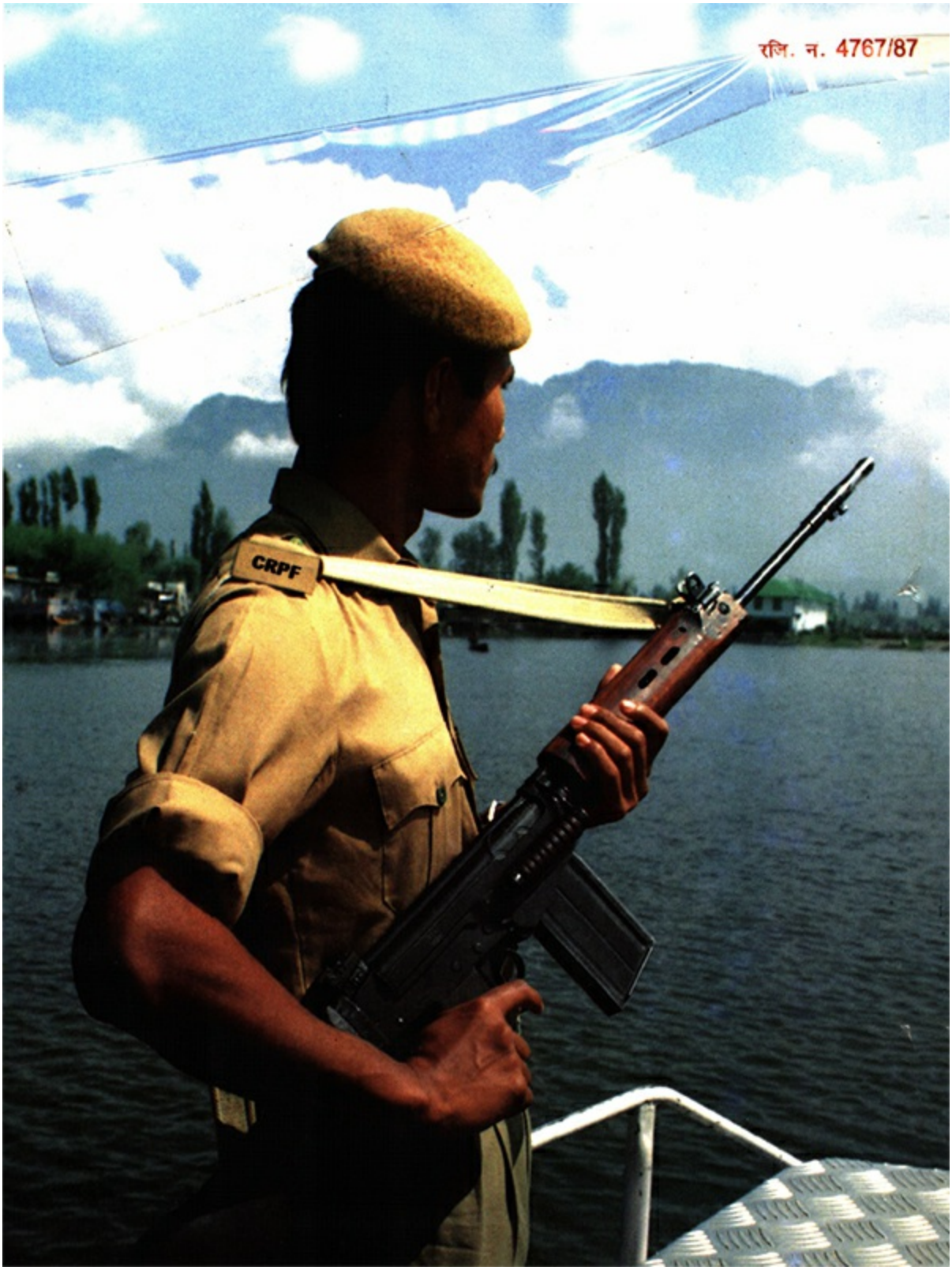


कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा स्वत्रंता दिवस के अवसर पर सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में स्कूल के मेघावी छात्रों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनका मनोबल बड़ाते हुए।



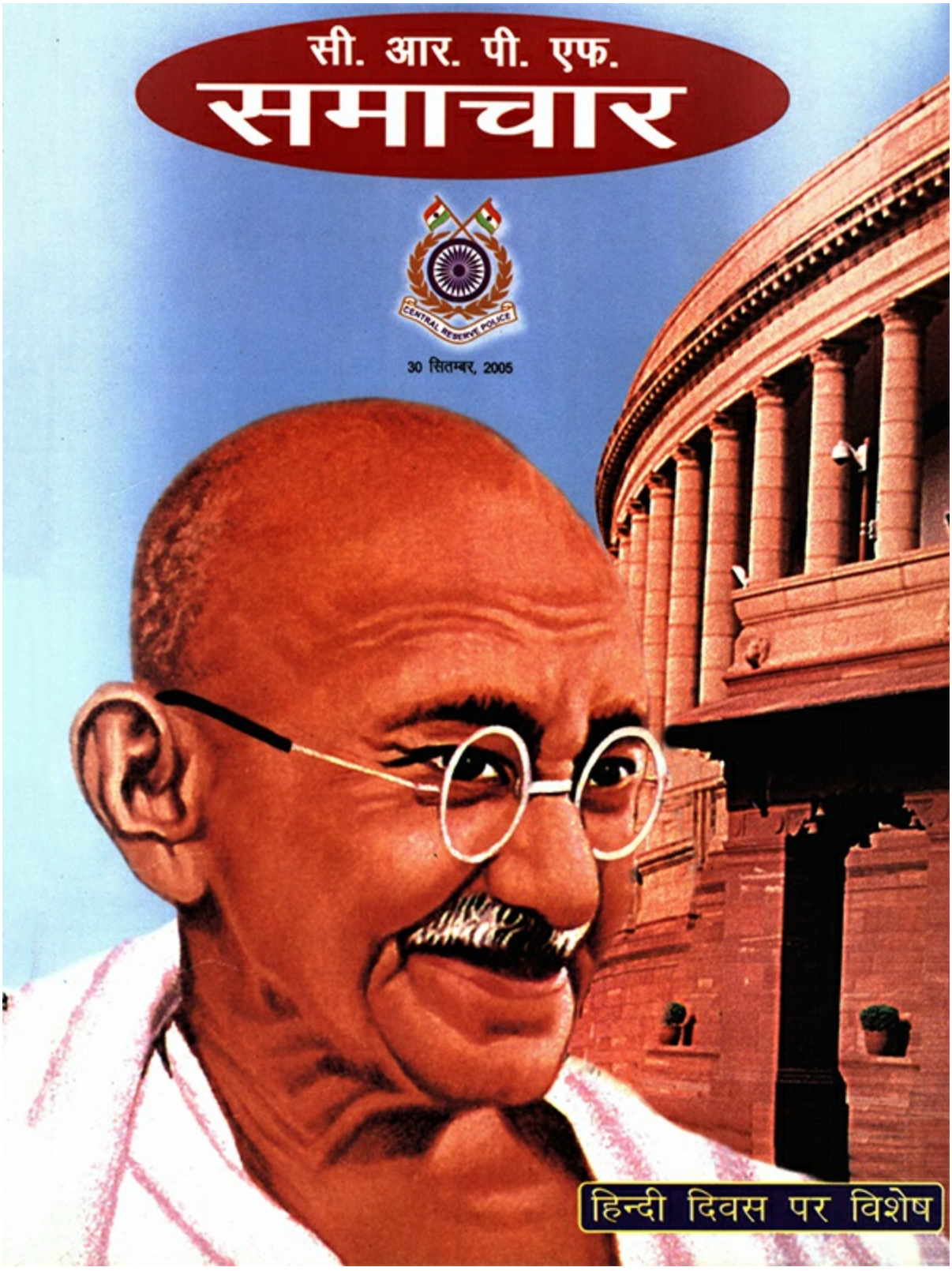
सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी में स्वत्रंता दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती स्कूली छात्राएं।

रजि. न. 4767/87



सी. आर. पी. एफ.
समाचार

30 सितम्बर, 2005



हिन्दी दिवस पर विशेष



बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा हाल ही में राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन पुरस्कार से नवाजे गये कोरपुबल खिलाड़ी निरीक्षक सुन्दर सिंह (कबड्डी) एवं सुश्री अंगोम अनिता चानू (जूडो) के साथ।



सी.आरपी.एफ
समाचार

खण्ड-18 अंक-6
30 सितम्बर, 2005
8 आश्विन, शक, 1927

मुख्य सम्पादक
अभिषेक दयाल

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से
जन सम्पर्क अनुभाग

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
यू. एस. प्रिन्टर्स, बी-186, ओखला,
औद्योगिक क्षेत्र - I, नई दिल्ली-110020

<u>सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष</u>

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

<u>सदस्य</u>

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक)
एस.एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
वी.डी. टोकस, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
एल आर सिद्रा, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
अभिषेक दयाल, जन सम्पर्क अधिकारी

इस अंक में

1. राजभाषा राष्ट्र की अस्मिता से जुड़ी होती है
2. हिन्दी का विकास
3. सर्वगुण सम्पंन सम्पूर्ण लिपि देवनागरी
4. हिन्दी का बदलता स्वरूप
5. राजभाषा हिन्दी और हमारी मानसिकता
6. राजभाषा हिन्दी की प्रगति में पश्चिमी सेक्टर का योगदान
7. नारद की यात्रा
8. सफलता में बाधक बाधाओं से निपटना
9. भवानी आश्रम पोस्ट
10. योग भगाए रोग
11. भगवान किसी को जूनियर न बनाए
12. कावा समाचार

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

सम्पादकीय



सी.आर.पी.एफ. समाचार का यह अंक राजभाषा अंक के रूप में आपके सम्मुख है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसका जितना उत्थान, विकास हो राष्ट्र उतना ही गौरवान्वित होगा। सितम्बर का महीना आते ही सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों में तेजी लाई जाती है। इसी महीने हम हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह भी मनाते हैं। इस दौरान बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता है कि हिन्दी को प्रोत्साहन देने की जरूरत है। यह बात करते समय हम यह भूल जाते हैं कि हिन्दी विश्व की सशक्तम भाषाओं में से एक है। उसे अपने विकास के लिए किसी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं है। दरअसल हिन्दी हमारी प्राथमिकताओं में ही नहीं है। यदि हम हिन्दी को प्रोत्साहन देने की अपेक्षा उसे प्राथमिकता देने पर जोर दें, तो संभवतः हमारा यह हिन्दी पर बड़ा भारी उपकार होगा।

हिन्दी को प्राथमिकता देने के सवाल पर अकसर तर्क दिया जाता है कि हिन्दी के माध्यम से तकनीकी अभिव्यक्ति कठिन है। यह तर्क अपने आप में जितना लचर है उतना ही खोखला भी। हिन्दी की ग्राह्यता बेमिसाल है। इसमें अंग्रेजी या अन्य किसी भी भाषा की तकनीकी शब्दावली को हूबहू अपने सांचे में ढालने की अद्‌भुत शक्ति है। विश्व की किसी अन्य भाषा में यह गुण नहीं मिलता। हर चार कोस के बाद इसका स्वरूप बदल जाता है। मेरठ की हिन्दी और लखनऊ की हिन्दी, हैदराबाद की हिन्दी और पटना की हिन्दी। कहीं भी देखिये, हिन्दी स्थानीय रूप में ढली लिपटी मिलेगी। न यह हैदराबाद में अपरिचित बनकर पहुँचती है न मुम्बई और लखनऊ में। हर जगह यह अपने लिए स्थान बनाती आई है।

हिन्दी आज भी जन-जन की भाषा है, किन्तु अंग्रेजी हमारे यहां फैशन एवं आधुनिकता का प्रतीक बन बुरी तरह से हमारे मानस पटल से चिपट कर रह गई है। हम अंग्रेजी के विरोधी नहीं हैं, अंग्रेजी विश्व भाषा के रूप में तेजी से उभरी है, हम

इसकी भाव क्षमता एवं वैज्ञानिक स्वरूप की प्रशंसा करते हैं। हम यह भी मानते हैं कि वर्तमान स्थिति में उच्च शिक्षा, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के लिए उसका ज्ञान अति आवश्यक है। हम अंग्रेजी को उसके स्थान से हटाना नहीं चाहते, किन्तु यह अवश्य चाहते हैं कि अंग्रेजी को यह सम्मान अपनी मातभाषा की कीमत पर न दिया जाये। हिन्दी अपने विकास सार्वजनिक स्वरूप एवं जनदय साम्रागी के पद से संतुष्ठ है। मगर उसे अपमानित तभी होना पड़ता है। जब वह हमारे घरों, खेतों खलियानों, बसों, रेल के डिब्बों से निकलकर शहरों की विशालकाय इमारतों में स्थित भव्य दफ्तरों में पहुंचती है। हिन्दी अगर अपमानित होती हैं, तो इन्ही दफ्तरों में और अगर उसे प्रोत्साहन देने की फैशननुमा कोशिश की जाती हैं, तो वह भी इन्हीं दफ्तरों में, जबकि इन दफ्तरों में काम करने वाले अधिकांश लोग प्राथमिकता के नाम पर हिन्दी की सही जानकारी रखने के बावजूद "नोटशीट" अंग्रेजी में ही तैयार करते हैं। इसी वर्ग के लोग जो अपने बुजुर्गों से बात तो हिन्दी में करते हैं, मगर उन्हें सरकारी नोटिस अंग्रेजी में भेजतें है, हम याद दिलाना चाहेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि यह फिरंगी भाषा एक दिन हमें हम से ही छीन ले और हमें भाषीय व सांस्कृतिक दिवालीयपन के कगार पर ला खड़ा करे।

सी.आर.पी.एफ. समाचार के माध्यम से अपने पाठकों के साथ यह मेरा पहला परिचय है। मैं इसी माह आपके इस परिवार में शामिल हुआ हूं। आशा करता हूं भविष्य में हमारा यह परिचय और प्रगाढ़ होगा। इन संबंधों में हमारे और आपके बीच का यह सम्पर्क सूत्र "सी.आर.पी.एफ. समाचार" और अधिक सुचारू, सुन्दर, ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी बनेगा, इसका मुझे विश्वास है।

(अभिषेक दयाल)
मुख्य सम्पादक

राजभाषा संदेश



किसी भी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का राजकाज जनता की भाषा में हो। इसी बात को ध्यान में रखकर देश का राजकाज चलाने के साथ-साथ केन्द्र व राज्यों के बीच सम्पर्क बनाए रखने की भूमिका निभाने का दायित्व हिन्दी को सौंपकर 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी "हिंदी" को संघ की "राजभाषा" घोषित किया गया था। इसी उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को "हिंदी दिवस" मनाया जाता है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से बल के मुख्यालय तथा अधीनस्थ कार्यालयों में 1 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2005 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। हिंदी पखवाड़े के दौरान गत वर्ष भी हमारे बल में विभिन्न आयोजन किये गए। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अधिनियम/नियम के तहत बनाई गई राजभाषा नीति का बल में समुचित अनुपालन किया जा रहा है। इसमें कार्मिकों को हिंदी भाषा, टंकण, आशुलिपि तथा कंप्यूटर का प्रशिक्षण दिलवाना, विभिन्न प्रतियोगिताएं, प्रोत्साहन योजनाएं/कार्यशालाएं इत्यादि आयोजित करना शामिल है। इसके फलस्वरूप बल के कार्यालयों में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

हिंदी भाषा का वर्तमान स्वरूप भागीरथी की तरह है, जिसमें मारवाड़ी, डिंगल, जयपुरी, ब्रज, मैथिली, अबधी आदि उप भाषाओं और बोलियों का योगदान है। वर्तमान हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं है। अपितु सम्पूर्ण देश की धरोहर है। विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग स्थानीय प्रभावों के साथ हो रहा है। देश की अन्य भाषाएं यथा संस्कृत, कश्मीरी, सिंधी, पंजाबी, गुजराती, असमियां, मराठी, बंगला, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, उड़िया उर्दू आदि भी अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट शब्दावली को हिंदी में मिलाकर हिंदी को समृद्धि कर रही हैं। इस प्रकार राजभाषा हिंदी सबकी भाषा है और सदियों से यह प्रशासन की भाषा रही है।

यह सत्य है कि सैद्धांतिक मान्यताओं के होते हुए भी प्रयोग के क्षेत्र में हम अंग्रेजी का मोह पूरी तरह से नहीं छोड़ पाए हैं, जिसके फलस्वरूप पांच दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी हिंदी को हम वह स्थान नहीं दिला पाए हैं जिसकी वह अधिकारिणी है। कई व्यक्तियों के मन में यह बात घर कर गई है कि जब तक वह अंग्रेजी में बात या काम नहीं करेंगे, दूसरे उन्हें पूर्ण शिक्षित या आधुनिक नहीं मानेंगे तथा उनसे प्रभावित नहीं होंगे। इसलिए वे गलत-सलत ही सही, किन्तु अंग्रेजी का प्रयोग करने में गर्व महसूस करते हैं। हिंदी का व्यवहार हमारे लिए गौरव और गर्व का विषय होना चाहिए। अच्छी हिंदी का व्यवहार गलत अंग्रेजी के व्यवहार से कहीं बेहतर है। मेरी व्यक्तिगत धारणा तो यह है कि व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध हिंदी भी गलत अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक बोधगम्य होती है।

मैं, आज हिंदी दिवस पर आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए हमने जो निर्णय लिये हैं, उनको प्रभावी ढंग से लागू करें और राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक काम करके देश का गौरव बढ़ाएं। मैं, इस सुअवसर पर बल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

नई दिल्ली
14 सितम्बर, 2005



(जे0 के0 सिन्हा)
महानिदेशक केरिपुबल

राजभाषा राष्ट्र की अस्मिता से जुड़ी होती है।

अभिषेक दयाल
जन सम्पर्क अधिकारी, केरिपुबल

चौदह सितम्बर, 1949 को भारत के संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया, लेकिन उसके साथ ही यह प्रावधान भी रखा गया कि जब तक सरकारी कामकाज हिन्दी में नहीं होने लगेगा अर्थात् लोग हिन्दी में सरकारी कामकाज करने में अभ्यस्त नहीं हो जाते, तब तक सरकारी काम-काज में अंग्रेजी का भी प्रयोग होता रहेगा। लेकिन आज 59 वर्षों के पश्चात भी हिन्दी भाषा सरकारी काम-

काज में अपना वह स्थान नहीं बना सकी जिसकी कल्पना उस समय हमारे संविधान निर्माताओं ने की थी। इसका क्या कारण है ? अगर हम ईमानदारी और निष्पक्ष रूप से इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ेगें तो पाएंगे कि अंग्रेजी भाषा के प्रति तथा कथित बुद्धिजीवी वर्ग में दासता की प्रवृति एवं उसी अनुपात में हिंदी भाषा के लिए हीनता की भावना ही इस स्थिति का करण है।

भाषा मानव भाव की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख साधन है जिसके अभाव में वह पशु समान है। व्यापक रूप में विचार विनियम के साधनों को भाषा कहा जाता है। भाषा ज्ञान प्राप्ति का एक मुख्य साधन भी है। भाषा द्वारा ही किसी भी जाति या समाज का अस्तित्व सुरक्षित रहता है। किन्तु भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं वरन् अर्जित सम्पति है। भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है। भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं, वह चिरपरिवर्तनशील है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भाषा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसलिए ऐ पैई नामक विद्धान ने कहा है **"भाषा एक कहानी है।"** महर्षि पंतजलि ने यह परिभाषा इस प्रकार व्यक्त की है **"भाषा वह व्यापार है जिससे हम वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचार प्रकट करते हैं।"**

हमारे देश में सौ से भी अधिक भाषाएँ एवं बोलियॉ बोली जाती हैं उनमें से कई भाषा तो साहित्य की दृष्टि से भी समृद्ध है यथा बंगला, तामिल, तेलगू, गुजराती, मराठी इत्यादि किन्तु फिर भी अगर सम्पूर्ण रूप से गणना की जाए तो हिन्दी भाषा का क्षेत्र सबसे विस्तृत है। हिन्दी भाषा की लिपि का सरल एवं सुबोध रूप शीघ्र ही समझ में आने वाला है। यूँ तो भारत की सभी भाषाएँ संस्कृत भाषा से प्रभावित हुए हैं। संस्कृत भाषा में वह महान् शक्ति निहित है जो इन सभी भाषाओं को एक सूत्र में बांधे रखती है। आज संस्कृत की भांति हिन्दी भी देवनागरी लिपि के द्वारा अन्य भाषाओं के साथ-साथ तालमेल बनाए बैठी है।

जब हम घर से लेकर बाजार तक का सारा वार्तालाप/कारोबार हिन्दी में बिना किसी शब्दकोश या अनुवाद कर सकते हैं, तब यह समस्या सरकारी काम-काज करने में ही आड़े क्यों आती है? संभवतः हमारी विपरीत सोच, हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा देने में शिथिलता तथा अपनी राजभाषा के प्रति सकारात्मक मानसिकता का अभाव है। ये ही वो अड़चने हैं जिनसे उबरने में हम अब तक असफल रहे हैं। हममें से कई ऐसे हैं जो यह मानते हैं कि अंग्रेजी बोलने-लिखने से व्यक्तित्व में श्रेष्ठता आती है और काफी हद तक यह सही भी है। पर इसके साथ यह भूल जाना कि राजभाषा से हमारी अस्मिता जुड़ी है पूरी तरह निंदनीय है। वास्तव में एक अरसे से सरकारी कामकाज में लगातार अंग्रेजी के प्रयोग से हमारे मस्तिष्क रूपी संगणक (कम्पयूटर) में मात्र कुछ पत्र तथा शब्दों का एक सीमित कोश स्थापित हो जाता है और हम इन शब्दों को घुमा फिराकर प्रयोग कर सभी सरकारी काम-काज अंग्रेजी में कर लेते हैं। यदि हम इस प्रणाली को हिन्दी में कम्प्यूटीकृत कर लें तो हम आसानी से हिन्दी में भी सरकारी काम-काज करने लगेंगे। आवश्यकता अभ्यास की है, अभ्यास करने से हिन्दी में काम-काज करना अत्यन्त सरल हो जायेगा। हिन्दी में काम करने से हमारी

अन्दर न सिर्फ आत्म गौरव की भावना को बल मिलेगा बल्कि आम जनता के साथ हमारा संपर्क भी अधिक सहज हो जाएगा। हिन्दी एक सरल व सुबोध भाषा है। फादर कामिल बुल्के ने भी लिखा है कि **"शायद ही संसार की कोई ऐसी विकसित भाषा होगी जो हिन्दी की तरह अभिव्यक्ति में सरल हो।"**

कुछ लोग हिन्दी को एक क्लिष्ट भाषा मानते हैं जो आसानी से समझ में नहीं आती। लेकिन वास्तविकता इससे उल्टी है, न कोई भाषा और न कोई शब्द क्लिष्ट होता है। बार-बार प्रयोग करने से क्लिष्ट शब्द भी आसान लगने लगते हैं, हॉ मैं यह अवश्य कहूंगा कि विशुद्ध वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों जैसे रेडियो, रिफाइनरी, कम्प्यूटर, इंजन, राडार इत्यादि शब्दों को उसी रूप में हिन्दी में स्वीकार किये जाए क्योंकि मूल हिन्दी में इन्हें लिखने से अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है।

पहले जिन कम्प्यूटरों तथा इलेकट्रॉनिक उपकरणों पर हिन्दी में कार्य करना संभव नहीं था अब हमारे वैज्ञानिकों ने इन उपकरणों तथा यंत्रों पर हिन्दी में कार्य करना संभव बना दिया है। अब ऐसे-ऐसे इलेक्ट्रॉनिक यंत्र उपलब्ध हैं जिन पर हिन्दी में दो लाख शब्दों को स्टोर कर शब्दाकोश की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। वर्तनी संबंधी त्रुटियॉ निकाली जा सकती हैं। अब हमारे पास हिन्दी भाषा में अनेक वर्ड प्रोसेसर भी उपलब्ध हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वे सभी सुविधाएं जो अब तक अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध थी अब हिन्दी में भी उपलब्ध हैं। और हिन्दी भी अंग्रेजी की भॉति एक पूर्ण रूप से साधन सम्पन्न भाषा बन चुकी हैं। तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने हमारी सुविधा के लिए तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों को सरलीकृत कर हिन्दी में कर दिया, वो भी ऐसी हिन्दी में जो सभी आसानी से पढ़ सकें व लिख सकें। इससे राजभाषा के प्रयोग एवं सरकारी काम-काज को हिन्दी में करने में सहायता मिलेगी।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा वर्ष *2004* में सरकारी कामकाज में हिन्दी के श्रेष्ट कार्यान्वयन के लिए बल की अन्तर सेक्टर प्रतियोगिता की रनिंग शील्ड आन्तरिक सुरक्षा अकादमी केरिपुबल, माउन्ट आबु के महानिरीक्षक/प्राचार्य श्री डी.एन.एस.बिष्ट को प्रदान करते हुए।

वास्तव में भाषा कोई कठिन नहीं है। आवश्यकता है भाषा के प्रति मानसिकता की, सीखने की लगन की, लिखने-पढ़ने के अभ्यास की। जब तक हिन्दी के प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन नहीं होगा, लोग हिन्दी में कार्य करने पर गौरव महसूस नहीं करेंगे तब तक हिन्दी संविधान में राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने पर भी अंग्रेजी के सामने टिक नहीं पाएगी और स्थिति वही बनी रहेगी जो 59 वर्षों से हम देख रहे है। यही कारण है कि चदं अंग्रेजीदा व्यक्ति किसी न किसी बहाने हिन्दी को नकारने की बात करते हैं ताकि सरकार और समाज में उनका वर्चस्व बना रहे। यह घोर चिंता का विषय है कि हम स्वतंत्रता के 59 वर्षों के बाद भी हिन्दी को अपना स्थान नहीं दिला पाए हैं। इस पर सभी हिन्दी प्रेमियों, साहित्यकारों, सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों और देशवासियों को अविलम्ब ध्यान देना चाहिए।

हममें से अधिकतर लोग भूल गए हैं कि आजादी से पहले भी सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग प्रचलित था। देशी रियासतों का राज-काज हिन्दी में ही चलता था। राज्यादेश हिन्दी में जारी किये जाते थे। एशिया में समस्त व्यापार हिन्दी में होता था। उस समय भारत के सभी लोंगो के बोल-चाल व व्यवहार की भाषा हिन्दी ही थी न कि अंग्रेजी। यही नहीं स्वतंत्रता संग्राम में संलिप्त देशवासियों को एक सूत्र में बांधने में हिंदी भाषा का अमूल्य योगदान था। यह बड़ी विडम्बना है कि आज जब हम स्वतंत्र हैं

और हिन्दी को राजभाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त है तो हम इसमें काम करने में क्यों कतराते हैं। पं0 जवाहर लाल नेहरू ने 1958 में मद्रास में एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था **"यह बड़े दुख की बात है कि हमें अपना सरकारी काम-काज एक विदेशी भाषा में करना पड़ रहा है। मुझे बहुत शर्म आती है जब मैं विदेशों में अपने ही देशवासियों से अंग्रेजी या विदेशी भाषा में बात करता हूँ।"**

हम देश के एक सबसे बड़े व सबसे पुराने अर्द्धसैनिक बल के सदस्य हैं। इस बल के जवानों ने देश की एकता एवं अखण्डता बनाये रखने में मिसालें कायम की है। अतः हमें अब संकल्प लेना होगा कि राजभाषा को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाने में भी किसी से पीछे नहीं रहेंगें। हमने जैसे दुश्मनों से देश की एकता एवं अखण्डता को सुरक्षित रखा है, उसी तरह हम राजभाषा की गरिमा बनाए रखने के लिए भी सत्त एवं कारगर प्रयास करेंगे। यह प्रयास होगा हिन्दी में सरकारी काम काज कर विदेशी भाषा के वर्चस्व को कम करना।

हिन्दी का विकास

वह राष्ट्र नहीं जिस की अपनी भाषा न हो। सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा ने कहा कि **"राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।"** यूँ तो देश की सभी भाषाएं हमारे लिए अत्यन्त आदरणीय हैं। इन सभी भाषाओं का विकास हिन्दी को शक्ति प्रदान करता आया है। पर भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का गौरवपूर्ण पद प्रदान किया गया है। हिन्दी भारतीय सभ्यता और संस्कृति द्वारा सदा इस देश को जोड़ती आई है। यह सन्तों और भक्तों की वाणी रही है।

हिन्दी को राजभाषा का पद प्रदान कर देश की भाषाई विकास की बात तो जरूर सोची गई किन्तु इस परिपेक्ष्य में गंभीरता से कार्य नहीं किया गया। संवैधानिक व्यवस्था और राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए अधिनियम / नियम एवं नीतियों के बावजूद भी इसकी वह प्रगति नहीं हो सकी, जितनी अपेक्षा थी। खैर जहां तक सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने और उसे बढ़ाया देने का प्रश्न है, इसके कई उपाय अपेक्षित हैं।

प्रायः कार्यालयों में अभी भी देखा गया है कि हिन्दी का प्रयोग करने के लिए हम मानसिक रूप से तैयार नहीं होते हैं। **कुछ अधिकारी तो हिन्दी प्रयोग को अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल मानते हैं। इसे छोटे कर्मचारियों की भाषा मानकर अपनी अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेजी का ही सहारा लेते हैं।** यद्यपि इस मानसिक झिझक को दूर करने के लिए हिन्दी कार्यशालाएं चलाई जाती हैं और उनमें भाषानीतियों की

जानकारी देने के साथ व्यावहारिक हिन्दी के प्रयोग पर समुचित जोर दिया जाता है। भाषाई स्वाभिमान जगाने की दिशा में यह एक सार्थक प्रयास है और अब काफी हद तक हमें सफलता भी मिल रही है।

कार्यालयों में विशेष प्रकार के फार्मों, नियमों, संहिताओं और लेखन सामग्री आदि के साथ सहायक साहित्य का प्रचलन हैं, इनकी एक विशेष प्रकार की भाषा होती है। यदि इनके मानक रूप उपलब्ध हों और उनकी भाषा. सहज, सरल हो तो अंग्रेजी के बदले हिन्दी में प्रयोग करना सुविधाजनक हो जाए। कहीं कहीं भाषा इतनी जटिल, तकनीकी और व्याकरण निष्ठ तथा परिनिष्ठित होती है कि हिन्दी में कार्य करना अति कठिन हो जाता है। हमें अपने काम काज में बोलचाल की हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना चाहिए ताकि भाषा के प्रयोग में कहीं बाधक सिद्ध न हों, इस दिशा में नई सोच अपेक्षित है।

हरेक विभाग संस्था की अपनी प्रशासनिक तकनीकी शब्दावली होती है। यद्यपि हिन्दी का प्रयोग करते समय हमें अपने कार्य व्यवहार में प्रचलित अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी अनुवाद या परिवर्तित कर प्रयोग करना पड़ता है। परन्तु अनुवाद की भाषा जब मौलिक रूप में प्रयुक्त होगी तो सहज शब्द सामने आएंगे। हमें संस्कृतनिष्ठ शब्दों को नहीं, बल्कि तद्भव, देशज शब्दों के रूप-प्रयोग को अपने कामकाज में बढ़ावा देना चाहिए। आज अनेक शब्दकोश, शब्द संकलन, संचयन हमारे यहाँ उपलब्ध है। हमें अपने विभाग संस्था से जुड़े अथवा दैनिक प्रयोग में आने वाले शब्दों की निर्माण प्रक्रिया की ओर ध्यान देना होगा और अलग-अलग विषयों, अनुभागों, विभागों के अनुरूप अनुकूल शब्दों का संचयन/संकलन कर जारी करना चाहिए जिससे पूरे देश में शब्द प्रयोग में समरूपता हों। हमें विभागीय कार्य हिन्दी में करते समय अंग्रेजी के शब्दों को देवनागरी में प्रयोग भी करना स्वीकार्य हो ताकि शब्दों के पीछे काम रूके ना। धीरे-धीरे शब्द भी हिन्दी में बदलने लगेंगे। आज अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के अनेक शब्द हिन्दी में इतने घुल-मिल गए हैं कि उनका अन्तर करना कठिन सा हो गया है।

सरकारी कार्यालयों में फाइलों में टिप्पणियाँ लिखी जाती हैं। इसे लिखने का भी सरकारी कार्यालयों में एक अलग अन्दाज है जिसे कर्मचारी (सहायक) से लेकर अधिकारी तक अपनी आवश्यकतानुसार लिखते हैं। नियमतः 50 प्रतिशत टिप्पणियाँ अनिवार्य रूप से लिखने का प्रावधान है किन्तु यदि 'क क्षेत्र; में सभी प्रकार की टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखी जाएं तो हिन्दी पत्राचार में स्वयं बढोत्तरी हो जाएगी। मानक टिप्पणियों के नमूने जारी करने चाहिए। और प्रायः जारी होते भी हैं किन्तु वह पर्याप्त नहीं है। कुछ लोग हिन्दी में टिप्पण-लेखन करते समय अंग्रेजी टीप का अक्षरशः अनुवाद करने की कोशिश करने लगते हैं या अंग्रेजी वाक्यों के रूपांश को जैसे का तैसे रखने का प्रयास करते हैं जिससे उन्हें कठिनाई होती है। हिन्दी में काम करना आसान है मगर इसके लिए सतर्कता आवश्यक है। इसलिए हिन्दी में मूल टिप्पण/ प्रारूप करने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि सिर्फ अनुवाद के सहारे हिन्दी का

विकास नहीं होगा। इसे अपने पैरों पर खड़ा करना होगा। हमारी फील्ड फारमेशनों सहित बल के सभी कार्यालयों के पत्राचार का अध्ययन कर कार्यालय सहायका की तर्ज पर मानक मसौदों की एक किताब तैयार करने की योजना है। इस किताब के तैयार हो जाने से बल के कार्यालयों में हिन्दी में काम करना अत्यन्त आसान हो जाएगा।



हिन्दी में काम करने और विभागीय कामकाज में उसे बढ़ावा देने के लिए जरूरी यह है कि अन्य साधन, जैसे हिन्दी टाइपराइटरों की खरीद, अंग्रेजी टंककों (टाइपिस्टों) और आशुलिपिकों तथा कम्प्यूटर आपरेटरों को अनिवार्य रूप से हिन्दी टंकण, आशुलिपि और आपरेटिंग का प्रशिक्षण दिलाया जाना चाहिए। अंग्रेजी कम्प्यूटरों में हिन्दी साफ्टवेयर लोड कराकर हिन्दी में कार्य को विकसित किया जाना चाहिए। सभी कार्यालयों में प्रमुखों को चाहिए कि वे उन कार्मिकों को हिन्दी में कार्य करने के लिए उत्साहित करें जो हिन्दी का प्रशिक्षण ले चुके हैं। हिन्दी में काम करने वालो को हतोत्साहित न किया जाए। हिन्दी अशुलिपिकों को हिन्दी की डिक्टेशन नियमित रूप से दी जानी चाहिए ताकि उनका हिन्दी आशुलिपि का ज्ञान बरकरार बना रहें। हिन्दी आशुलिपिकों एवं टकंकों को किसी भी तरह से अंग्रेजी आशुलिपिकों/ टंककों की तुलना में कम योग्य न समझा जाए। हिन्दी में काम करने वाले कर्मचारियों के कार्य की प्रंशसा कर उनके मनोबल को बढ़ाया जाए ताकि वे स्वयं तो हिन्दी में कार्य करने के उत्सुक हो, दूसरे कार्मिकों को भी हिन्दी में काम करने को प्रेरित कर सके। क्योंकि कभी-कभी प्रशिक्षित कर्मचारियों को हिन्दी में काम न मिलने से उदासीनता आ जाती हैं, वे सीखा हुआ भूल जाते हैं। अतः इधर ध्यान देना आवश्यक है। समय-समय पर हिन्दी कार्यशाला आदि का आयोजन कर इस दिशा में संज्ञान कराना चाहिए आवश्यकतानुसार सभी को हिन्दी में प्रपत्र (प्राफार्मों) फार्मो, कोडों, मैनुअलों का हिन्दी-रूप उपलब्ध कराना निहायत जरूरी हैं। साथ ही अन्य सहायक सामग्री-साहित्य भी प्रदान किए जाऐ ताकि प्रसंगत उनकी सहायता ली जा सके। इस

दिशा में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित "बृहद प्रशासन शब्दावली" "कार्यालय सहायिका /प्रवीणता" जैसी पुस्तकों के अतिरिक्त "राजभाषा हिन्दी : प्रयोग और प्रविधि" पुस्तकें जिनमें कामकाजी हिन्दी के विषय और व्याकरण की पूर्ण जानकारी दी गई है वितरित की जानी चाहिए। नेमी कार्यालय टिप्पणियों के प्रतिदर्श (नमूने) समय-समय पर जारी करना भी अपेक्षित है। वैसे हमारे बल के हिन्दी अनुभाग द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयास हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक शुभ संकेत है।

इस प्रकार के प्रयोगों से बल कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग क्रमशः बढ़ाया जा सकता हैं। यहां ध्यान देने योग्य विशेष तथ्य यह भी है कि कार्यालयों में हिन्दी कर्मचारी (स्टाफ) भी पर्याप्त मात्रा में हों। और आवश्यकतानुसार हिन्दी पदों का सृजन कर विभागीय हिन्दी का काम कर रहे सुयोग्य कर्मचारियों को पदोन्नति देकर और तत्पश्चात् नई भर्तियां कर उन्हें भरा जाए। क्योंकि किसी कार्य को समुचित रूप से क्रियान्वित करने हेतु अपेक्षित योग्यता रखने वाले पर्याप्त स्टाफ का होना अनिवार्य है, संक्षेप में, यह कि हिन्दी को व्यावहारिक रूप में प्रयोग में लाने और विकास के लिए अपनी-अपनी तरह से प्रयास करने चाहिए। सरलता और शीघ्र सीखी जानेवाली भाषाओं में हिन्दी सर्वोपरि है। इसका व्याकरण वैज्ञानिक दृष्टि से सबसे प्रामाणिक है। अतः हमें कठिन और सरल की बात छोड़कर एकमत से हिन्दी को विभागीय कामकाज में अपनाना चाहिए। भाषा राष्ट्र की पहचान होती है और कोई भी राष्ट्र और उसके निवासी अपनी भाषा के बिना विकास नहीं कर सकते।

सर्वगुण सम्पंन सम्पूर्ण लिपि देवनागिरी

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी संघ की राजभाषा स्वीकार की गई है। देवनागरी लिपि जो उद्गम और विकास में सर्वथा भारतीय है और अन्य भारतीय लिपियों से अधिकतर मिलती-जुलती है, जब उसे भारतीय भाषाओं की लिपि के रूप में स्वीकार कर ली जाएगी तभी यह वास्तव में राष्ट्रलिपि होगी।

लिपि की उत्पति और विकास के संबंध में कहना उसी प्रकार कठिन है जिस प्रकार भाषा की उत्पति और उसके विकास के बारे में। लिपि की उत्पति भाषा की उत्पति की तुलना में बहुत बाद में हुई। संसार की लिपियों में कौन सी प्राचीनतम है, इस बारे में तथ्य को देखना असंभव हैं। इसके बारे में अभी तक अनुमान ही लगाये गये हैं। आज संसार में जितनी भी लिपियॉ हैं, उनमें पांच मुख्य लिपिया मानी गयी हैं। रोमन लिपि जिसका क्षेत्र पश्चिमी यूरोप, आस्ट्रेलिया और संपूर्ण अमेरिका है। दूसरी

ग्रेशोरोमन लिपि, जिसका क्षेत्र पूर्वी यूरोप तथा सोवियत संघ का एशियाइ भाग है। तीसरी चीनी लिपि जिसका क्षेत्र मुख्य रूप से पूर्वी एशिया है। चौथी अरबी या फारसी लिपि जिसका क्षेत्र पश्चिम एशिया है। पाचॅवी ब्राम्ही लिपि जिसका क्षेत्र भारत तथा दक्षिण पूर्वी एशिया रहा है।

भारत में लिपि का इतिहास बड़ा ही रोचक है। कुछ प्राचीन नमूने जो सिंधु घाटी के हड़प्पा तथा मोहन जोदड़ो से प्राप्त मोहरों पर अंकित हैं, उससे यह पता चलता है कि भारत में लिखने की कला का ज्ञान अत्यंत ही प्राचीन काल से रहा हैं।

विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में भी मिले कुछ तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस काल में भी भारतियों को लिपि का ज्ञान था। मौर्य काल में ब्राम्ही लिपि का प्रचार रहा और चौथी शताब्दी के आरंभ में ही उत्तर और दक्षिण की ब्राम्ही लिपि में अंतर परिलक्षित होने लगे थे। ब्राम्ही को वास्तव में भारतीय मस्तिक का एक चमत्कार समझना चाहिए जिसमें स्वर और व्यंजनों के सुव्यवस्थित चिन्हों द्वारा वर्णमाला की सभी मूलभूत ध्वनियों का स्पष्ट विभाजन है। ब्राम्ही लिपि भारतीय लिपियों की जननी मानी जाती है।

अब हम भारत की मुख्य लिपि देवनागरी को देखें जिसका स्रोत भारत की प्राचीनतम राष्ट्रीय लिपि ब्राम्ही को माना जाता है। देवनागरी नाम की उत्पत्ति के विषय में बहुत मतभेद हैं। ऐसा माना जाता है कि देवनागरी नाम काशी नगर के नाम के आधार पर दिया गया है, जिसे संस्कृत में देवनगर कहते है। विद्वानों का मत है कि एक बार भारत की समस्त प्राकृतिक भाषाओं के प्रतिनिधि काशी नगर में एकत्रत होकर भारत की एकता को बनाए रखने के लिए एक सामान्य लिपि को अपनाने के संबंध में विचार विर्मश करने के बाद देवनागरी को सामान्य लिपि के रूप में स्वीकार करने को सहमत हुए। कुछ विद्वान इसका संबंध “नागर ब्राह्मणों” से मानते हैं। उनके अनुसार जो लिपि नगर ब्राह्मणों में प्रचलित थी, वह नागरी कहलाती है। नागरी एक बौद्धिक लिपि है। समय-समय पर इसमें परिवर्तन व विकास होता रहा है। इसमें स्वर और व्यंजनों को पृथक-पृथक रूप से लिपिबद्ध करने की क्षमता है।

श्रेष्ठ लिपि के गुणों के प्रकार में देखा जाय तो भी देवनागरी लिपि इस सूची में सर्वोपरि स्थान रखती है।

लिपि शास्त्रियों ने वैज्ञानिक लिपि में निम्न गुण बताये हैं:-

- लिपि कलात्मक हो।
- जिस भाषा के लिए उस लिपि का प्रयोग हो, उसकी सब भाषा प्रयुक्त ध्वनियों के प्रतीक उसमें आ जाए।
- जो लिखा जाये वही पढ़ा भी जाए।
- एक ध्वनि के लिए सदैव एक चिन्ह हों।
- एक चिन्ह से एक ही शब्द का बोध हो।
- लिखते समय प्रत्येक शब्द के अक्षर मिलकर एक पूर्ण शब्दीकरण धारण कर लें।

- गतिपूर्वक ऐसा लिखा जा सके कि वह शुद्ध पढ़ा जा सके।
- अक्षरों के लिखित और मुद्रित रूप में भ्रम न हो।

देवनागरी लिपि यह सर्वगुण,-सम्पन्न है और देश की राष्ट्रलिपि होने की समस्त योग्यताएं रखती है।

देवनागरी लिपि हमारी राष्ट्रीय लिपि के रूप में स्वीकृत है। इसकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण स्वाभाविकता और वैज्ञानिकता है। इस लिपि का महत्व केवल इस बात में ही नहीं है कि यह देश की राजभाषा हिन्दी की मान्य लिपि है बल्कि इस बात में भी है कि इस लिपि का प्रयोग भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत तथा एक आधुनिक भारतीय भाषा मराठी और गुजराती के लिए भी होता है। भारत की कई अन्य लिपियां भी देवनागरी लिपि के बहुत समीप हैं। नेपाली भाषा के लिए भी देवनागरी का प्रयोग किया जाता है। एक बार आचार्य विनोवा भावे ने कहा था कि **"हिन्दुस्तान की एकता के लिए हिन्दी भाषा जितना काम देगी, उससे बहुत अधिक काम देवनागरी लिपि देगी। इसलिए मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की समस्त भाषाएं देवनागरी में लिखी जाएं।"**

जवाहरलाल नेहरू जी का विचार था कि भारत की सारी भाषाओं के लिए किसी ने किसी दिन एक सामान्य लिपि को प्रोत्साहित करना होगा। उन्होंने यह मत भी व्यक्त किया था कि समस्त भारत के लिए जो सामान्य लिपि स्वीकार की जाए, वह संबंधित लिपियों को हटाने के विचार से न होकर उनके लिए अतिरिक्त लिपि के रूप में स्वीकार होनी चाहिए। एक क्षेत्र के लोग दूसरे क्षेत्र की भाषाओं से अपना परिचय आसानी से बढ़ा सके, इसके लिए देवनागरी को समस्त भारतीय भाषाओं की एक अतिरिक्त लिपि के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। पूरे देश के लिए एक सामान्य लिपि की महत्ता न्यायमूर्ति शरदाचरण मित्र ने भी स्वीकार की थीं, उन्होंने अपने इस विचार के पोषण के लिए वर्तमान सदी के प्रारंभ में "एक लिपि विस्तार परिषद" नामक संस्था के तत्वाधान में "देवनागर" नामक पत्रिका के माध्यम से यह आंदोलन चलाया था।

देवनागरी का प्रयोग भारत के बहुत बड़े भाग पर होने तथा इस लिपि की विशिष्टता के कारण ही देवनागरी लिपि को राजभाषा की लिपि के रूप में संविधान में स्वीकार किया गया है। भारत की एकता के लिए एक राष्ट्र भाषा की जितनी आवश्यकता है उतनी ही एक राष्ट्र लिपि की भी आवश्यकता है। यह संसार की लिपियों में एक आदर्श लिपि है। देवनागरी यानी नागरी लिपि में भारतीय भाषाओं की ध्वनियों को अंकित करने की अत्यधित क्षमता हैं। नागरी लिपि अत्यंत सुगम भी हैं। इसके बारे में कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति अर्थात् अनक्षर व्यक्ति भी इस लिपि का आसानी से शीघ्रता से समझ सकता है। इसकी सुगमता व सुलभता ही इसके गुणधर्मी का कारण है जो इसके व्यापक प्रसार के मार्ग में सहयोगी है।



हिन्दी दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कार विजेता उप निरीक्षक (मं) श्रीमती चम्पा हरणवाल को पुरस्कार प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा

प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है जिस के माध्यम से उस भाषा के विचारों को लिपिवद्ध किया जा सकता है। लिपि ऐसी होनी चाहिए जो वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी उतरती हो। परन्तु अभी तक कोई भी लिपि पूर्ण वैज्ञानिक सिद्ध नहीं हो पाई है। प्रत्येक लिपि में कुछ विशेषताओं के साथ कुछ कमियॉ भी मिलती है। यह कमियां ही उस लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं। देवनागरी के विषय में इसके विरोधी यह भी मत देते हैं कि इस लिपि में गत्यात्मकता का अभाव है एंव शिरोरेखा के कारण इसका अंकण तथा टंकण अधिक समय सामेक्ष है। विभिनन दिशाओं में लगने वाली मात्राओं के कारण भी यह लिपि अधिक कठिन तथा परिश्रम सामेक्ष हैं। कुछ वर्षों के एकाधिक रूपों के प्रचलन में होने तथा कुछ वर्षों के अवैज्ञानिक स्वरूप के कारण भी यह लिपि भ्रमक हो जाती हैं। संसार की प्रत्येक चीज में कुछ दोष भी हो सकते हैं। दोषों को दूर करने के लिए कुछ उपाय या समाधान ढूंढना चाहिए।

कुछ कमियों के बावजूद भी देवनागरी लिपि अनेक दृष्टियों से काफी वैज्ञानिक तथा भारत की सर्वश्रेष्ठ लिपि की अधिकारिणी है। किसी भी संपूर्ण लिपि में एकरूपता, निश्चितता, स्पष्टता, यंत्रयोग्यता, सुसाध्यता, सुंदरता तथा गत्यात्मकता आदि विशेषताएं होनी चाहिए। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर किसी लिपि की

वैज्ञानिकता को परख को जाती है।

देवनागरी लिपि में इन सभी विशेषताओं का समावेश है। नागरी लिपि की सबसे प्रमुख वैज्ञानिकता है इसके उच्चारण एवं लेखन में एकरूपता है। यह लिपि भाषा के उच्चारण के अनुरूप ही लिखी जाती है। इस लिपि में कोई भी वर्ण लुप्त नहीं होता है। अर्थात प्रत्येक वर्ण का उच्चारण होता है। उच्चारण एवं लेखन में साम्य होने के कारण वर्तनी की समस्या बहुत कम हो जाती है।

देवनागरी लिपि कलात्मक दृष्टि से सुंदर तो है ही, इसके अक्षरों की व्यवस्थित संयोजना इसकी वैज्ञानिकता की भी पुष्टि करती है। अक्षर माला की ओर नजर डालें तो हमें मालूम पड़ेगा कि इसमें स्वाराक्षर और व्यंजनाक्षरों का चयन और वर्गीकरण कितने व्यवस्थित रूप से किया गया है। ह्रस्व और दीर्घ स्वर के लिए स्वतंत्र चिन्हों का प्रयोग होता है। इसकी वर्णमाला संपन्न है और भावाभिव्यक्ति के लिए भाषाओं में प्रयुक्त होने लायक हैं, व्यवस्था क्रम भी नागरी वर्णमाला का काफी अच्छा है। वर्णमाला में पहले स्वर और उनके बाद व्यंजन रखे गए हैं। उच्चारण अव्ययों को ध्यान में रखकर ही अत्यंत वैज्ञानिक ढंग से इस लिपि का निर्माण किया गया है। जिन ध्वनियों का उच्चारण कंठ की सहायता से होता है, वे ध्वनियां अ, क, ख, ग, घ, ध्वनियां हैं। जिन ध्वनियों का उच्चारण तालु की सहायता से होता है वे ध्वनिया च,छ,ज,झ तालव्य ध्वनियां हैं। इसी प्रकार मुर्धा की सहायता से उच्चारित होने वाली ध्वनियां मुर्धन्य और दंत तथा ओष्ठों द्वारा उच्चारित ध्वनियां दंत्य और ओष्ठ्य ध्वनियां हैं। इस व्यवस्था के कारण भाषा को शुद्ध रूप से पढ़ा जा सकता है।

नागरी लिपि लेखन की दृष्टि से भी वैज्ञानिक है यह लिपि बांई से दांई ओर बढ़ने वाली पंक्तियों में भी अंकित होती हैं। इसके साथ नागरी लिपि की दिशा का दूसरा पक्ष ऊपर से नीचे लिखे जाने वाली क्रमित पंक्तियों में दिखाई देता है। इन विविध गतियों के कारण लिखित अंश आंखों के सामने बना रहता है। गणित विषयक लेखन में भी विविध गतिया होती हैं।

नागरी लिपि में जितने वर्ण हैं, लगभग उतने ही लिपि चिन्ह है। 10 स्वर चिन्ह, 33 व्यंजन चिन्ह, अनुस्वार, अनुनाषिक एवं विसर्ग चिन्ह आदि पर्याप्त मात्रा में लिपि चिन्ह होने के कारण विभिनन भाषाओं की ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता इस लिपि में है। नागरी लिपि की एक बहुत बड़ी विशेषता यह भी है कि इस लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिन्ह है तथा एक लिपि चिन्ह से एक ही ध्वनि की अभिव्यक्त होती है।

देवनागरी तथा भारत की अन्य सभी लिपिंया आक्षरिक लिपि हैं। इसमें ध्वनि चिन्ह अक्षर को व्यक्त करता है, इसमें प्रायः व्यंजन तथा स्वर मिले होते हैं जैसे क=क+अ, प=प+अ देवनागरी लिपि के सभी स्वरों का स्वतंत्र उच्चारण संभव है। अतः सभी स्वर अक्षर हैं, देवनागरी लिपि के सभी व्यजनों में 'अ' की सत्ता तथा स्वर वर्गों के लिए मात्रा चिन्हों की व्यवस्था एक आदर्श व्यवस्था हैं। अन्य लिपियों में स्वर तथा व्यंजन को अलग-अलग लिखा जाता है जैसे रोमन में पि-पिन परन्तु देवनागरी में ऐसा नहीं होता,

यह विशेषता अधिक समय और परिश्रम से बचाव करती है। देवनागरी लिपि में "महाभारत" लिखने में पांच वर्ण तथा दो मात्राएं आती हैं। जबकि अंग्रेजी में महाभारत शब्द लिखने पर ग्यारह वर्ण आते हैं।

नागरी में मात्रा प्रयोग के कारण स्थान, समय और परिश्रम की बचत होती है। अनेक दृष्टियों से देवनागरी लिपि की वैद्वानिकता स्वयं सिद्ध है। भारत जैसे विशाल राष्ट्र में भावात्मक एकता की दृष्टि से देश की समस्त भाषाओं की एक लिपि करने का स्वप्न हमारे महापुरूषों ने देखा था उस दिशा में काफी प्रयास भी किए गये।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने जिस प्रकार "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" की घोषण कर राष्ट्र को स्वतंत्रता का मंत्र दिया उसी प्रकार राष्ट्रलिपि के रूप में नागरी तथा राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी की धोषणा काशी नगरी प्रचारिणी सभा में सन् 1905 ई0 में की गई थी। लोकमान्य तिलक की यह ऐतिहासिक घोषण भारतीय कांग्रेस के सन् 1905 बनारस अधिवेशन के अवसर पर गई थी। तिलक की इस विचारपूर्ण और दूरदर्शी घोषणा के महत्व को समझ कर देश के नेताओं ने संविधान सभा में सर्वसम्मति से हिन्दी को राजभाषा के स्थान पर राष्ट्रभाषा और नागरी लिपि को राष्ट्रलिपि स्वीकार किया होता तो आज हिन्दी देश की एकता और अखंडता का सक्षम माध्यम बनती लोकमान्य तिलक की इस घोषणा के ऐतिहासिक महत्व को आज भी समझा जाए तो भाषा और लिपि संबंधी विवाद स्वयमेव समाप्त हो जाये। देश की राष्ट्रभाषा, राष्ट्रलिपि तथा नागरी अक्षरों को राष्ट्रीय स्तर पर ग्रहण करने का लोकमान्य तिलक के निर्णय एवं निर्देश को मान कर ही हम भाषिक तथा राष्ट्रीय एकता तथा लक्ष्य की सिद्धि कर सकते हैं।

भारत की भाषाओं की आत्मा को पहचानने वाले महापुरूपों में स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, बालकृष्ण दत्तात्रेय, काका कालेलकर, रांगेय राधव आदि अहिन्दी भाषी होकर भी हिन्दी की लोकप्रियता हेतु काफी प्रयत्नशील रहे। विनोबा जी का उद्देश्य था कि एक समान लिपि द्वारा ही भारत की सभी भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाया जा सकता है, और इसके द्वारा उन प्रादेशिक भाषाओं की संस्कृति, परम्पराओं एवं भावनाओं को बनाए रखते हुए एक दूसरे को समझने में सरलता पैदा की जा सकती है।

गांधी जी ने कहा था कि "हिन्दुस्तान में सर्वमान्य हो सकने वाली, अगर कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है-**मुझे विश्वास है कि देवनागरी द्वारा दक्षिण भाषायें भी आसानी से सीखी जा सकती हैं। देवनागरी में सौंदर्य या सजावट की दृष्टि से लज्जित होने जैसी कोई बात नहीं**"।

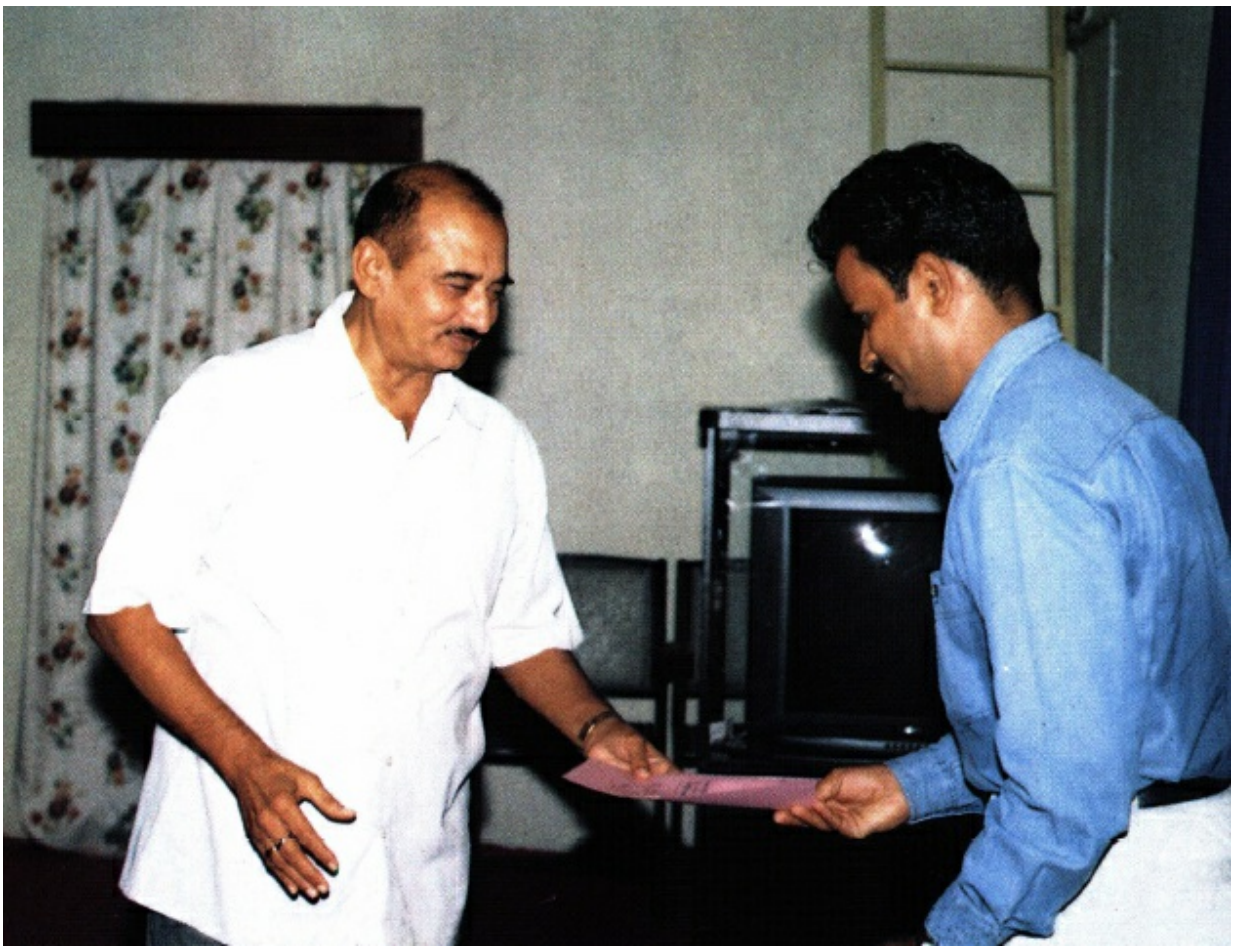
केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन सिंह के अनुसार भारतीय भाषाओं की अलग-अलग लिपियां अवश्य हैं लेकिन नागरी लिपि अनेक भाषाओं की लिपि का मूलाधार है। नागरी लिपि प्रचार-प्रसार के साथ राष्ट्रीय एकता का प्रश्न जुड़ा हुआ है।

गांधी जी देश की एकता के लिए एक संपर्क भाषा और एक संपर्क लिपि के प्रबल समर्थक थे। सन् 1937 के हरिजन सेवक के 3 अप्रैल के अंक में गांधी जी ने कहा था

कि.....

“हम जो राष्ट्रीय एकता हासिल करना चाहते हैं उसकी खातिर देवनागरी को सामान्य लिपि स्वीकार करना आवश्यक है। इसमें कोई कठिनाई नहीं है।”

आजादी की लड़ाई केवल सत्ता परिवर्तन के लिए ही नहीं लड़ी गई थी। स्वतंत्रता सेनानियों की स्पष्ट कल्पना थी कि देश का कामकाज भारतीय भाषाओं में चले। भारत की भाषाएं समृद्ध हों। भारत के लोग साथ-साथ बोलें, मन एक हो, ज्ञान एक हो, विचार एक हो, अंतः करण समान हो। अतः पं. जवाहरलाल नेहरू मानते थे कि “भारत की सभी भाषाओं के लिए एक लिपि अपनाना वांछनीय है। इतना ही नहीं यह सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली एक मजबूत कड़ी का काम करेगी और इसी वजह से देश के एकीकरण में मददगार साबित होगी। भारत की भाषाई स्थिति में यह जगह केवल देवनागरी ही ले सकती है”।



हिन्दी दिवस पर अधिकारियों के लिए आयोजित हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगी को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते चेन्नई रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एच.बी.सिंह

पूरे देश के लिए एक सामान्य लिपि अपनाने की आवश्यकता पर महापुरूषों तथा

विद्वानों ने काफी बल दिया है। स्वंतत्रता के उपरांत भारतीय सांवेधान में यह प्रावधान किया गया कि "देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी संघ की राजभाषा होगी। इसके बाद से ही नागरी लिपि का महत्व और भी अधिक बढ़ गया।

भारत की सभी भाषाएं यदि देवनागरी लिपि में भी लिखी जाने लगे तो यह एक संपर्क लिपि भी बन सकती है और यही एक वह लिपि है जो भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरो सकती है। यदि भावात्मक एकता की आवश्यकता है तो एक जोड़ लिपि के रूप में नागरी लिपि की आवश्यकता की ओर से आंखे नहीं मूंदी जा सकती।"

देश की पत्र पत्रिकाओं ने नेताओं और विद्वानों ने देवनागरी लिपि के संबंध में अपने विचार व्यक्त कर इस लिपि के प्रचार-प्रसार व अपनाने पर अधिक बल दिया है। अब उसमें सरकार का भी पर्याप्त अंशों में कार्य व्यवहार होने लगा है और नागरी प्रचार के इच्छुक देश के प्रबुद्ध वर्ग के सहयोग से देवनागरी लिपि सर्वत्र भारत में लिखी पढ़ी और समझी जाने लगी है। कहीं कहीं देवनागरी समझने वालों का प्रतिशत थोड़ा कम अवश्य है पर उसके प्रचार को नकारा नहीं जा सकता हैं। आज इस गति को बनाये रखने और बढ़ाने की आवश्यकता है।

हिन्दी का बदलता स्वरुप

निरीक्षक (सम्पादक) रनबीर सिंह
महानिदेशालय केरिपुबल

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में उच्च प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों की साम्राज्यवादी, वर्चस्ववादी, वर्सग्रासी आधुनिकता ने तीसरे विश्व के देशों की भाषा और संस्कृति के सम्मुख संकट खड़ा कर दिया है। भूमंडलीकरण के दौर में बहराष्ट्रीय कंपनियों के प्रवेश ने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय भाषाओं पर अंग्रेजी का वर्चस्व कायम करने की दिशा में बढ़ चढ़कर अपनी भूमिका निभाई है।

भूमंडलीकरण का वाहक बना मीडिया अंग्रेजी शब्दों की भरमार से निर्मित नए नियम की हिन्दी को प्राथमिकता दे रहा है। पश्चिमी चिंतकों के साथ कुछ भारतीय विद्वान भी इस हिंदी को समर्थन दे रहे है।

एक प्रसिद्ध अमेरिकी समाजशास्त्री का कहना है, "हमें भाषा के प्रयोगों को छोड़कर टेलीविजन पर उसी भाषा के कार्यक्रम दिखाने चाहिए जो उस स्थान विशेष की भाषा हो, न कि वहाँ की मानक भाषा, क्योंकि मानक भाषा से दर्शकों का कुछ लेना-देना नहीं होता।

रेडियों ने प्रारंभ से लेकर आज तक इसी भाषा को चलाया है। आज की सामाजिक प्रतिबद्धता में कथा चित्र का महत्व तभी आएगा, जब उसमें आदमी के आम-बोल चाल की भाषा का परिवर्तनीय बिंब-बिधा, प्रयोजन मूलक प्रयोग स्थायी रूप से रहेगा। "डेनियल डिफो भी बोलचाल की भाषा का पक्ष लेते हैं क्योंकि उसकी पहुँच साधारण व्यक्ति तक होती है। उपयुक्त भाषा शैली वही है जिसे साधारण व्यक्ति भी समझ सके।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों चाहे रेडियों हो, टी.वी. हो या फिल्में, उसमें ऐसी भाषा की आकांक्षा रखना तो वांछनीय है जिसमें भावों को, विचारों को शक्तिशाली ढंग से वहन करने की क्षमता हो, जो श्रोताओं और दर्शकों के अंतर्मन में गहरी उतरकर उन्हें सुनाए या दिखाए जाने वाले कार्यक्रम की मूल संवेदना तक पहुँचा सके। जो देश की करोडों जनता को कई स्तरों पर शिक्षित कर सके, उनका स्वस्थ मनोरजन कर सके, उनके पास सूचनाओं का निर्बाध प्रवाह पहुंचा सके, लेकिन इस कोशिश में यदि वह अपनी मौलिकता, अपनी गरिमा खो बैठे, यह वांछनीय नहीं होना चाहिए।

संचार क्रांति और सूचना विस्फोट के युग में भूमंडलीकरण की ऑधी में शक्तिशाली देशों की साम्राज्यवादी भूमिका हमारी भाषा की शक्ति और स्वाभाविकता का हरण कर ले, वह स्वीकार्य नहीं है। आज तकनीकी वर्चस्व और भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य के दबाव में जनसंचार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने एक अलग ढंग की हिन्दी विकसित की है जिसका अपना अलग मिजाज है। अपनी अलग ही चाज है। इस हिन्दी ने एक नया व्याकरण गढ़ा हैं नए परिवेश में भाषा की नई चाल ढ़ाल को ऊपरी तौर पर असंगत नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि संप्रेषण की प्रकृति कोई निश्चित सैद्धांतिक कार्य पद्धति नहीं बल्कि मनुष्य की क्रियाशील कार्यों एवं अंतः प्रेरणाओं को समझाती हुई निंरतर चलने वाली प्रक्रिया है। अतः भाषा अपने युग की स्थितियों और प्रेरणाओं के अनुसार बदलती आई है। आज संचार क्रांति, आंकिक (डिजिटल) क्रांति के युग में भी वह तीव्रगति से बदलाव की ओर बढ़ी है। जनसंचार माध्यमों ने उसे व्यापक आधार दिया है। इस आधार पर उसका स्वरूप किस तरह गढ़ा जा रहा है, यह विश्लेषण का विषय है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में संप्रेषण कार्य मूलतः समाचार, मनोरंजन और मूल्य-प्रेषण से संबंधित है। भूमंडलीकरण के सहारे बहुराष्ट्रीय कंमनियों ने जो वर्चस्व भारत में स्थापित किया है उससे संचार माध्यमों ने विज्ञापन को संप्रेषण का, प्रचार का महत्वपूर्ण माध्यम बना दिया है। विज्ञापन के जरिए केवल कंपनियों के उत्पाद का प्रचार ही नहीं हो रहा है बल्कि ये उपभोक्तावादी संस्कृति की जड़ें फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, ये इक्कीसवीं सदी की हिन्दी को ही नवाचार दे रहे हैं। अतः मीडिया की भाषा पर होने वाले विचार विमर्श में विज्ञापनों को विश्लेषण से परे नहीं किया जा सकता है।

टेलीविजन पर दूरदर्शन सहित विभिन्न चैनल हिन्दी के समाचार बुलेटिन, समाचार विश्लेषण और मनोरंजन प्रधान कार्यक्रम (जिनमें धारावाहिक, फिल्मों पर आधारित

कार्यक्रम तथा फिल्में समाहित) दिखाते हैं कार्यक्रमों के मध्य में थोड़े-थोड़े सुनोश्चेत अंतराल पर व्यावसायिक कंपनियों के विज्ञापन प्रसारित किए जाते हैं। रेडियो पर भी कार्यक्रमों की बध्यता को बखूबी समझते हैं। बहुराष्ट्रीय कंमनियाँ भी इस सच्चाई को समझ गई हैं कि विदेशी माल को हिंदुस्तानी बाजार में फैलाने के लिए हिन्दी जरूरी है। इसलिए उनके विज्ञापन भी हिन्दी में होते है। लेकिन सर्वथा नए किस्म की हिन्दी में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा के बदलते हुए स्वभाव को मनोरंजन, सूचना और विज्ञापन के विश्लेषणों में समझा जा सकता है।

विज्ञापन की भाषा

यद्यपि 'विज्ञापन के प्रत्येक दृश्य में प्रतीक गुण, परस्थिति, मूल्य और संदर्भ के प्रयोग से व्यजित अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। लेकिन उसमें कॉपी, अपील शब्द संरचना या वाचिक संदेश से प्रभावोत्पादकता आती है। विज्ञापन की भाषा, प्रचार का महत्वपूर्ण हथियार बनती है। विज्ञापन-निर्माता विज्ञापन में दृश्य-बिंबो, प्रस्तुतिकरण के साथ विज्ञापन की भाषा को कलात्मकता देकर उसे जीवंत और शक्तिसंपन बनाने की कोशिश करते हैं। भाषा को कलात्मक स्वरूप देने में कई बार विज्ञापन में भाषिक विचलन भी आ जाता है। कभी शब्द नया बनकर निकलता है तो कभी वाक्य विन्यास में गद्य व्याकरण की जगह कविता की स्वच्छंदता आ जाती है, और कभी सामान्य बोलचाल की भाषा के दबाब में अंग्रेजी तथा आंचलिक शब्दों के भार से दबी हिन्दी सामने आती है।

व्याकरण के अनुशासन को तोड़ काव्यात्मक स्वरूप में ढलती भाषा के कुछ उदाहरण है:-

धुलाई का **Hero** मैल को कर दे **Zero**। पड़ोसी की जले जान आपकी बड़े शान। ये दिल माँगे **More** आह।

अंग्रेजी के वर्चस्व को ढोते विज्ञापन **No** रूखापन, **No** चिपचिपाहट।

Simplicity में अदुभत शक्ति है। शुक्र है आज की भागदौड़ की जिंदगी में कुछ तो **Simple** है, यही है **Right Choice baby,**

Life हो तो ऐसी।

खाओ **Britannia fifty fifty, very-very tasty-tasty.**

अब बच्चे **nappy** मैं भी **haappy, I Love you** रसना।

ठंडा ठंडा **Cool Cool,**

Mango fruity, fresh and juicy.

effect सही **Side effect** नहीं। डिटॉल **The hundred percent secure Super** शक्ति मेरी **big** सुरक्षा।

दॉतो में दर्द है क्या **tooth paste try** किया।

हिंदी में अंग्रेजी या अंग्रेजी में हिन्दी के सामेश्रण से तैयार विज्ञापन वस्तुतः हिन्दी अंग्रेजी अभिसारी शैली के अंतर्गत विश्लेषित किए जा सकते है। श्रव्य-दृश्य माध्यमों में शब्द की शक्ति असीम होती है। शब्द बड़ी जल्दी पाठक तक पहुँचकर अर्थ को खोलता है। विज्ञापनों में बोलचाल की भाषा का तर्क देकर अंग्रेजी में हिन्दी और हिन्दी में अंग्रेजी मिलाने की संस्कृति को कुछ वर्ग ने स्वीकार तो कर लिया, लेकिन भाषा के अशिष्ट प्रयोग को पचा पाना मुश्किल होता है। अशिष्ट पात्र के चरित्र को उतारने के लिए अनिवार्य हो सकता है, लेकिन अशिष्ट भाषा किसी विज्ञापन की अनिवार्यता नहीं हो सकती लेकिन इधर इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्रसारित होने वाले विज्ञापनों में अशिष्ट भाषा और लहजा साफ सुना जा सकता है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं;-

'तू आदमी है या अंडा, ठंडा मतलब कोका कोला'। 'ताऊ, साधारण नमक से लालच मत कर।' पियो प्योर, जीयो मोर।

विज्ञापन का लक्ष्य उत्पाद या विज्ञापित वस्तु की विशेषता की अभिव्यंजना कौशल से दर्शाना है। उत्पाद की 'विशेषता' विज्ञापन निर्माण का मूल बिंदु होती है। अतः विज्ञापन के संदेश-संरचना में विशेषणों का प्रयोग विज्ञापन की भाषा का महत्वपूर्ण घटक बनता है। विज्ञापनों में कभी एक कभी दो और कभी-कभी तीन विशेषणों का प्रयोग करके वस्तु के प्रति उपभोक्ता के मन में उसे क्रय करने की आकांक्षा को उत्पन्न किया जा सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर विज्ञापन कंपनियाँ विज्ञापन की 'कॉपी अपील' में विशेषणों का सहारा लेती हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

एक अनोखे सुविधाजनक ट्यूब पैक में साफ, स्वस्थ और डेंड्रफ रहित बालों के लिए किलनिक स्पेशल शैपूं, दूध सी सफेदी निरमा से आए रंगीन कपड़ा भी खिल-खिल जाए। झंडू पंचारिष्ट-पाँच औषधियों वाला पाचन टॉनिक। फेयर एंड लवली गोरेपन की क्रीम। दाँतों को चाहिए सुरक्षा। सुपर शक्तियुक्त।

उपभोक्ताओं के ध्यानाकर्षण के लिए विज्ञापन में जितना ध्यान दृश्य की गुणवत्ता पर होता है उतना ध्यान भाषा से व्यंजित होने वाले अर्थ पर भी होता है। उस वांछित अर्थ की अभिव्यक्ति हेतु विज्ञापन की भाषा को गढ़ते समय कई वार भाषिक चतुराई से काम लिया जाता है, भाषा के व्याकरण से नहीं। भाषा व्याकरण खाँचे में बैठे या न बैठे लेकिन उसमें ध्यानाकर्षण की शक्ति अवश्य होनी चाहिए। इसलिए आज विज्ञापनों की भाषा कहीं अंग्रेजी के प्रयोग से, कहीं काव्यात्मक भाषा के माध्यम से, कहीं विशेषणों पर बल देकर और कहीं बोलने के लहजे से उपभोक्ताओं के आकर्षण के केन्द्र बन रही है। बच्चों की दुनिया में भाषा के चातुर्य से निकले विज्ञापन लोकप्रिय तो होते हैं, लेकिन वे हिन्दी भाषा के स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद नहीं होते।

मनोरंजन

संचार माध्यमों के उद्देश्य की सूची में लोगों का मनोरजन करना भी समाविष्ट हैं,

टी. वी. और रेडियों के मनोरंजन संबंधी कार्यक्रमों में धारावाहिक, वृत्तचित्र, संगीत, नाटक, कहानी, हिन्दी फिल्में, क्विज, आदि की चर्चा होती है। टी.वी के मनोरंजन प्रधान हिन्दी कार्यक्रमों की अंग्रेजी से गहरी मित्रता है। इसलिए वह उसे साथ लिये चलती है। अंग्रेजी से अपनी प्रगणता स्थापित करती हुई। नए किस्म के हिन्दी टी.वी. और रेडियों के कार्यक्रमों में व्यापक प्रसार कर। रही हैं। टी.वी. पर प्रसारित होने वाले धारावाहिकों पर यदि दृष्टि डाले तो उनके अधिकाशं धारावाहिकों के उच्च मध्यवर्गीय पात्र जो उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं वे 'इंग्लिश' बोलते हैं, हिन्दी नहीं। इसे संकर **(Hybrid)** भाषा भी कहा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रसारित विज्ञापनों के साथ-साथ प्रधान कार्यक्रमों में इस दोगली भाषा को सम्मान दिलाने की कोशिश जारी है। आज हिन्दी धारावाहिक के किसी पात्र द्वारा लगातार चार–पॉच वाक्य अंग्रेजी में बोलना नई बात नहीं है। यह कहीं पात्र की मॉग है तो कहीं बहुराष्ट्रीय कंपनियों के फैलाए मायाजाल की मॉग। स्टार टी.वी. एम. टी. वी., सोनी तथा जी. टी. वी. और मैट्रो चैनल पर प्रसारित होने वाले अनेक धारावाहिकों में हिन्दी अंग्रेजी के सम्मिश्रण के तरह तरह के अनुपात देखे जा सकते है। कभी-कभी हिन्दी उर्दू के साथ-साथ आंचलिक, क्षेत्रीय या स्थानीय भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से भी अपना श्रृंगार करती है।

फिल्मों पर आधारित कार्यक्रमों में अंग्रेजी का दबदबा अन्य कार्यक्रमों की अपेक्षा ज्यादा देखने को मिलता है। हिन्दी फिल्मों से नाम कमाने वाले, हिन्दी के बलबूते वैभव बटोरने वाले फिल्मीसितारे जब टी.बी के परदे पर हिन्दी कार्यक्रमों में सम्मानपूर्वक बुलाए जाते हैं तो वे हिन्दी बोलने में उन्हें गहरी मानसिक मुशक्त करनी पड़ रही हो या फिर वे हिन्दी के ज्ञान से अनभिज्ञ हों ऐसे प्रतीत होत है। अंग्रेजी दासता और अंग्रेजी मोहमाया का जीता - जागता रूप इन कार्यक्रमों में देखा जा सकता है।

मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों के अंतर्गत 'एंकर' या कार्यक्रम का संचालन करने वाली बालाएँ तो भाषा प्रयोग में कमाल की टूट-फूट, अभद्रता एवं अशिष्टता को दरशाती हैं। 'कमजोर कड़ी कौन' में नीना गुप्ता द्वारा बड़े ही अशिष्ट अंदाज में कहा जाने वाला 'अब आप जा सकते हैं। नमस्ते।' बच्चों को उसी अंदाज में बड़ों से बातचीत करने की तमीज सिखा रहा है। मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों और फिल्मों की हिन्दी और शब्दावली समाज को प्रभावित कर रही है। आज वे टी.वी. से ही बात-बात पर हिंसात्मक तेवर दिखाने के साथ-साथ अशिष्ट और अमर्यादित भाषा का भी प्रयोग सीख रहे हैं।

मनोंरजन प्रधान कार्यक्रम हिन्दी कों व्यापक आयाम देने की भी क्षमता रखते हैं। लोग अच्छी हिन्दी से किस तरह प्रभावित होते हैं इसका उदाहरण 'कौन बनेगा करोड़पति का प्रसारण है। इस कार्यक्रम में एक आम भारतीय ने भले ही पैसे का मायावी जाल बुना हो, लेकिन उसने हिन्दी के प्रति लोगों के मन में खोए हुए आदर को जगाने का काम तो किया है। लोग अमिताभ बच्चन की परिष्कृत हिन्दी मानक हिन्दी पर बाग-बाग हो जाते हैं। लोगों के बीच इस तरह के वाक्य सुने जा सकते थे 'कितनी

अच्छी हिन्दी बोलता है।"

मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों में मानक हिन्दी की जगह व्याकरण के चौखटे के बाहर की हिन्दी को अपनाया जा रहा है। आज टी.वी. से कार्य-व्यवहार की प्रेरणा ग्रहण करने वाले बच्चों पर इस परदे पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों का असर बहुत गहरा होता है क्योंकि जनमाध्यम समाजीकरण के अभिकरण के रूप में कार्य करते हैं। ऐसी हिन्दी को अपनाया जा रहा है जो विदेशी परिधान में अपने मूल स्वरूप को छुपाते हुए आई है जो अंग्रेजी भाषा के मुहावरों और उसके वाक्य विन्यास में अपनी अलग किस्म की पहचान है। यह बदलाव मात्र, परिस्थिति और काल के कारण नहीं है, यह भूमंडलीकरण आंधी की देन है।

सूचना संबंधी कार्यक्रम

जनसंचार के माध्यम रेडियों, टी.वी. , अखबार सूचना को संग्रहीत और संप्रेषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने सूचना समाज की जरूरतों को बदल दिया है। आदमी में सूचनाओं की भूख को बढ़ा दिया है। सूचनाओं के महत्व ने इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के समाचार जगत को बदलकर रख दिया है। इस बदलाव में उसकी भाषा भी बदली है। हालांकि बदलाव का प्रतिशत मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों के अनुपात में कम है।

रेडियो और टी.वी. के समाचार बुलेटिन राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर सूचनाओं को श्रोताओं और दर्शकों तक पहुंचार्ते हैं। दूरदर्शन और रेडियो के समाचार प्रसारण में मानक हिन्दी पर बल दिया जाता है, लेकिन टेलीविजन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की कृपा से विभिन्न चैनलों के हिन्दी समाचार बुलेटिनों के हिन्दी भाषा के स्वाभिमान पर गहरी चोट करते प्रतीत होते हैं, जब कोई समाचार वाचिका अंग्रेजी लहजे में हिन्दी समाचार पढ़ते हुए बीच-बीच में फाइनेंस मिनिस्टर, प्राइम मिनिस्टर, ट्रेन एक्सीडेंट, रेजिगनेशन, इंटरनेशनल मार्केट एजूकेशन जैसे शब्दों का बहुतायत में प्रयोग करती है तो किसी को भ्रम हो सकता है अंग्रेजी की समृद्धता और हिन्दी की दरिद्रता का।

आज भूमंडलीय बाजार ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिन्दी के कुछ शब्द बड़े स्वाभाविक रूप में गूँथ दिए हैं, जैसे-इंटरनेशनल मार्केट, मल्टीनेशनल कंपनी, प्राइवेटाइजेशन, इंटरनेशनल ब्रांड, को ले बोरेशन। इलेकट्रॉनिक मीडिया का हर शब्द बड़ी तीव्र गति से श्रोता या दर्शक तक पहुँचाकर उसे प्रभावित करने की भरपूर शक्ति समेटे हुए है। इसलिए मीडिया से जुड़े लोगों का भी यह उत्तरदायित्व है कि वे भाषा की स्पष्टता, मौलिकता और शालीनता का ध्यान रखें, लेकिन अंर्तराष्ट्रीय चैनलों से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम की यह जिम्मेदारी शायद ही उठाएँ। वे ऐसी भाषा को जन्म दे रहे हैं जो हिन्दी, अंग्रेजी की खिचड़ी है जिसमें कभी अंग्रेजी का अनुपात ज्यादा होता है तो कभी हिन्दी का। इन चैनलों द्वारा मानो विशेष लटकों-झटकों के साथ अंग्रेजी शब्दों के मायाजाल में पिरोई हिन्दी समाज में स्वीकृत करवाने का

अभियान चलाया जा रहा हो। समाज में ऐसी ही हिन्दी प्रसार पा रही हैं, प्रचलन में आ रही है, जिस पर पं. विद्यानिवास मिश्र ने बहुत अच्छी टिप्पणी की है

"अंग्रेजी के बयान के बिना हिन्दी बड़ी गंवारू लगती है, मगर यह बघार केवल शब्दों के उधान तक सीमित रहती तो कोई बात नहीं थी। कुछ हद तक हिन्दी बाहर के शब्दों को पचाने की क्षमता रखती है, परंतु अब अंग्रेजी के वाक्य-विन्यास ने हिन्दी को जकड़ रखा है, अंग्रेजी का मुहावरा हिन्दी में अनुदित होकर आ रहा है।"

कुल मिलाकर आज इलेकट्रॉनिक मीडिया में बाजार की भाषा का आक्रामक प्रभाव को ग्रहण करती व्याकरण के चौखटे को तोड़ती और नए शब्द संसार और वाक्य विन्यास को लेकर गढ़ी हुई अपनाई जा रही है हिन्दी।

"हिन्दुस्तान की एकता के लिए हिन्दी भाषा जितना काम करेगी उससे कहीं अधिक काम देवनागरी लिपि देगी। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की समस्त भाषाएं देवनागरी में लिखी जाएं। लिपि सब भाषाओं में चले इसका मतलब दूसरी लिपियों का निषेद नहीं है। दोनों लिपियां चलेगी।"

–आचार्य विनोवा भावे

राजभाषा हिन्दी और हमारी मानसिकता

सहा0 कमा0 हरीश मेहरा,
67 बटा. केरिपुबल

"हिन्दी....हिन्दी..हिन्दी क्या खाक हिन्दी ?" आज जब भी बल में राजभाषा हिन्दी के संबंध में कोई भी लम्बा चौडा बेतार या पत्र प्राप्त होता है तब बटा0 या कम्पनी स्तर पर अधिकतम कार्मिकों की यही सोच होती हैं कि कोई बेकार का अमहत्व पूर्ण पत्र/ बेकार आया होगा जिसे फोरमलिटी के तौर पर भेजा गया है या फिर अधिकारी उस पर फाईल लिखकर बाबू के पास भेज देते हैं। इसका क्या कारण हो सकता हैं?

इतनी उदासीनता विश्व में अन्य किसी भाषा के प्रति नहीं हो सकती हैं जितनी हमारी मातृ भाषा हिन्दी के प्रति है। अपने तजुरबे के बल पर मैं यह कह सकता हूँ कि यह सब केवल 10 प्रतिशत बल के कार्मिकों में ही सिमट कर रह गयी हैं, बरना तो क्या इस प्रकार के पत्र और बेतार सामान्यतया उनकी तारीख गुजर जाने के बाद ही

प्राप्त होते? इसका कारण वहीं उदासीनता हैं। ना तो ऊपर से ना ही नीचे से इस के प्रति जबाव देना है, वस भारत सरकार का राजभाषा विभाग ही इस के प्रचार–प्रसारी पर जोर देता हैं। इस वर्ष इसके लिये भी कुछ निर्देश, प्रतियोगिताएं, कुछ प्रोत्साहन आदि जारी किये गये होंगे। जो केवल कागजों के माध्यम से पूरे देश में फैला दिये जाते हैं। और कुछ गिने चुने कार्मिक ही हर वार उन सब प्रोत्साहनों और प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर ईनाम प्राप्त करते हैं।

हिन्दी सप्ताह, हिन्दी पखवाडा, हिन्दी कार्यशाला खत्म हुई और अगले वर्ष तक सब चीजें फाईलों में बन्द, तो यह हुआ सरकार की ओर से राजभाषा को बढावा देने का भरसक प्रयास। क्या अपने आप में यह आश्चर्य की बात नहीं हैं? हिन्दी भाषी राष्ट्र में हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिये प्रतियोगिताएं आयोजित करनी पड़ती हैं, और 70 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलने में शर्म महसूस करते हैं।

एक फिल्मी हीरों/हीरोईन जिदंगी भर हिन्दी सिनेमा में काम करके अपना भविष्य सात पीढियों तक सुधार लेते हैं, पर जब भी कभी कही अखबार, दूरदर्शन या मैग्जीन के लिये साक्षात्कार देते हैं तो हिन्दी में बात करने को राजी नहीं या गलती से हिन्दी बोल भी दी कुछ शब्द इस प्रकार बोलेंगे जैसे कोई विदेशी हिन्दी बोल रहा है।

कुछ नेता महोदय की अगर जन्मजात मजबूरी आड़े न आये तो आप को वे अंग्रेजी में ही बाते करते हुये नजर आयेगे, जबकि वे जानते हैं कि बाहर देशों के नेता अपनी मातृभाषा में ही बात करना पसन्द करते हैं। चाहे वे अंग्रेजी जानते भी क्यों न हों।

पूरा जन्म कट गया हिन्दुस्तान में खाक से उठकर सिर पर बैठ गये हमारे खिलाड़ी महोदय,। पर जब भी साक्षात्कार देंगे तो बोलेंगे अंग्रेजी में ही क्यों कि उन्हें उसी में आत्मसम्मान महसूस होता है, शायद।

एक सामान्य मॉ बाप जिन्हें अपने बच्चों को विद्यालय में भर्ती कराना है, तो वे अंग्रेजी बोलने वाले स्कूल के बारे में ही सोचते हैं जबकि वे आज स्वयं जो भी कुछ हैं, शायद अपने जमाने में हिन्दी बोलने वाले स्कूल में पढाई करने की वजह से ही हैं।

भावी पीढी के बच्चे बातचीत केवल अंग्रेजी में करते और वे हिन्दी बोलने वाले बच्चों से दूरी बनाने में अपने को गौरवांवित महसूस करते हैं। हम प्रशंसा हिन्दी फिल्मों की करते है। लेकिन बोलते अग्रेंजी में, इससे भारतीय समाज की मानसिकता जाहिर होती हैं, पर आखिर ऐसा क्यों ? शायद इसकी मुख्य वजह हमारी गुलामी की मानसिकता। हम 200 वर्ष अंग्रेजों के गुलाम रहने के बाद अपनी मूल पहचान खो चुके हैं, नहीं तो हमारे अन्दर मातृभाषा की इज्जत रही और ना ही हम उसमें बोलने-लिखने में गौरव महसूस करते हैं। पूरे देश में अनेक जाति, धर्म, संस्कृति के लोग रहते हैं और सबकी अपनी-अपनी भाषाएं है, जिस कारण वे हिन्दी को प्रमुखता नहीं दे पाते हैं, परन्तु इसे मुख्य आधार नहीं माना जा सकता। यह सब तो हमारी मानसिकता का ही परिणाम है। जब तक हर व्यक्ति के अन्दर जज्बा पैदा नहीं होगा जिससे उसे

महसूस हो कि उसका देश हैं, यह सबको मातृभाषा हैं, तब तक हमारी सभी कोशिशें कोई मायने नहीं रखती।

इसलिये जरूरी हैं सबसे पहले लोगों के आत्म सम्मान को जगाने की। हम भारतीय हैं, हिन्दी हमारी मातृभाषा हैं, यह भावना हमें जागृत करनी ही होगी। हर व्यक्ति को एक उदाहरण पेश करना होगा कि वह अपने बच्चों, दोस्तों, रिश्तेदारी में भी यह धारणा बनाने के लिए प्रेरित करे।

क्या यह हमारे लिए कम आश्चर्य की बात नहीं है ? आज कई विदेशी हिन्दी भाषा सीख रहे हैं, पर क्या आप ने कभी सुना कि कोई उत्तरी पूर्वी भारत या दक्षिण भारत का कोई व्यक्ति हिन्दी सीख रहा हैं ? इसका मुख्य कारण हैं शायद हमारी सोच है। अतः पहले हमें अपनी सोच को बदलना होगा। यदि हम विकसित देशों की श्रेणी में जाना चाहते हैं तो विकसित सोच को अपनाना होगा। वरना हमारी हालत इस प्रकार होगी कि माया मिली न राम।

आपने या मैनें राम या रावण को तो नहीं देखा, पर हमारे ग्रथों व पूर्वजों द्वारा ही हमें बचपन से अब तक यही बताया जाता रहा है कि राम मर्यादा पुरूषोत्तम थे तथा रावण अत्याचारी। और वही हम भी मानने लगे। अगर बचपन से हमें इसका उल्टा बताया जाता तो क्या हम वही न मानते? इसी प्रकार आज मिडिया, उच्च शीर्षस्थ लोग, हमारी किताबें अगर हिन्दी को ही अच्छा बतायेगे तो निःसंदेह आने वाली पीढियों को हिन्दी को मातृभाषा कहने में गौरव महसूस होगा, हीन भावना नहीं।

शुभकामना संदेश

उन्नीसौ उनतालीस सन् में, जो एक बल जमीं पे बोया था।
जिसकी धड़कन में सरफरोश, इक नन्हा पौधा सोया था।
क्या होगा गर्म हवाओं का, गुलशन पे असर भला यारों,
जब-जब पतझड़ तामील हुआ, तब इसमें फूल खिला यारों।
तिनके तिनके को जुटा, सैकड़ों आशिया बना बना,
वह आज छियासठ वर्ष बिता, गुलशन में बहारें लाया है।
हमने भी हाथ बढ़ाया हैं, तुमने भी हाथ बढ़ाया हैं,
महफूज हुए हम हर गम से।
अब दूर नहीं मंजिल हमसे,
हमने भी हाथ बढ़ाया हैं, तुमने भी हाथ बढ़ाया हैं।

होता है इसको रंज बहुत जब लड़ता भाइ भाइ से,
इसने शौला पहचान लिया, नफरत के सबब् को जान लिया।
वह आज छियासठ वर्ष बिता, एहसासे मुहब्बत लाया हैं,
हमने भी हाथ बढ़ाया हैं, तुमने भी हाथ बढ़ाया हैं।
इसका ऐलान यही एक, यदि बना रहेगा आगे भी,
हर संग्रामों में सफलतायें कदमों को आके चूमेंगी,
सब चट्टानों को तोड़ तोड़, सर्वश दिशायें जोड़ जोड़,
वह आज छियासठ वर्ष बिता, ज्वारों का समन्दर लाया हैं,
हमने भी हाथ बढाया हैं, तुमने भी हाथ बढ़ाया हैं।

पूर्व हवलदार गोविन्द सिंह
14 बटा0 केरिपुबल
पता : गांव पोस्ट हरिपुरा
वाया झाड़ली जिला : सीकर (राज0)

राजभाषा हिन्दी की प्रगति में पश्चिमी सेक्टर का योगदान

पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रसार और विकास की गति को सरकारी कामकाज में इसके प्रगामी प्रयोग को बढावा देने के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए।

नवम्बर, 2004 में पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी सैक्टर मुख्यालय में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सेक्टर मुख्यालय व 102 बटा0 द्रुकाब के सभी वर्ग के प्रतिभाशाली अधिकारियों व कर्मचारियों ने कविता पाठ किया।

माह दिसंबर, 2004 में श्री अतुल कुमार माथुर, पुलिस माहनिरीक्षक के सौजन्य से श्रुति संवार साहित्य मुंबई के तत्वावधान में एक काव्यगोष्टी आयोजित की गई जिसमें मुंबई के जाने-माने कवियों सहित सेक्टर मुख्यालय के अनेक प्रतिभा सम्पन्न अधिकारियों, कर्मचारियों ने भी अपनी-अपनी रचनाएं सुनाई। इस कार्यक्रम का संचालन राजभाषा विभाग, मुंबई के सहायक निदेशक श्री अंनत श्रीमाली ने किया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में अधिकारी कर्मचारी मौजूद थे। कार्यक्रम की बहुत सराहना हुई।

भाषा ज्ञान एकांगी न रहे, इसलिए यह आवश्यक है कि भाषा ज्ञान को अधिक समृद्ध बनाने के लिए संगठन से संबंधित ज्ञान व सामान्य अध्ययन का भाषा के साथ सह-संबंध स्थापित किया जाए। इसी अवधारणा को ध्यान में रखकर दिसंबर, 2004 से स्पर्धात्मक तरीके से सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रारंभ की गई एवं इसके कई दौर चलाए गए। इस प्रश्नोत्तरी में विजेता कार्मिकों के लिए प्रोत्साहन का भी प्रवधान रख गया। मुख्यालय स्तर पर इसकी सफलता से उत्साहित होकर इसका विस्तार सेक्टर के सभी अधीनस्थ कार्यालयों में भी किया गया। इसके लिए अपेक्षित प्रश्नोत्तरी सेक्टर मुख्यालय में स्वयं पुलिस महानिरीक्षक श्री ए0 के0 माथुर द्वारा तैयार की गई। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में विजेता रहे कार्मिकों को समुचित पुरस्कार/पारितोषिक भी प्रदान किये गये।

वर्ष, 2005 में भी प्रश्नोत्तरी क्रम को जारी रखते हुए इसे अधिक रोचक बनाया गया है। खेल-खेल में ज्ञानवर्धन करने के लिए केरिपुबल द्वारा प्रचलित खेल तंबोला के नियमों का सहारा लेकर "ज्ञान तंबोला" नामक कार्यक्रम शुरू किया गया है, इसमें इस सेक्टर के जवानों ने गहरी रूचि दिखाई है तथा इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं। यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक अपने सातवें दौर को पूर्ण करने जा रहा है। भाषा व ज्ञान की प्रगति के लिए इस असाधरण कार्यक्रम की संरचना स्वयं पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर श्री माथुर द्वारा तैयार की है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अधीनस्थ कार्यालयों से इस संबंध में समय-समय पर रिपोर्ट प्राप्त करके उसकी सेक्टर मुख्यालय स्तर पर समीक्षा की जाती है।

सभी अधिकारियों तथा कार्मिकों की व्यावसायिक दक्षता को बढ़ावा देने के लिए एक सतत् व्यावसायिक दक्षता उत्थान कार्यक्रम का आयोजन भी सेक्टर मुख्यालय द्वारा किया जा रहा है। 'संवाद' नामक ये साप्ताहिक कार्यक्रम जहां एक ओर व्यावसायिक ज्ञान के उत्थान को प्रोत्साहन देता है वहीं दूसरी ओर अधिकारियों एंव कार्मिकों की हिन्दी में वार्तालाप व अभिभाषण करने की झिझक को दूर करने में भी महत्वपूर्ण कार्य करता है। इस कार्यक्रम में बारी-बारी से प्रत्येक शुक्रवार को लगभग एक घंटे के कार्यक्रम में पहले से निर्धारित वक्ता एक दिये गये विषय पर बोलता है और उस विषय पर सभी उपस्थित अधिकारी व कार्मिक विचार विमर्श व मंथन करते हैं। विषयों का चयन बहुत सावधानी पूर्वक किया जाता है। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विषय हमारे कार्य क्षेत्र से प्रत्यक्ष रूप से जुडा हुआ हो। सभी वर्ग के अधिकारियों व कार्मिकों को इसमें बोलने के लिए विषय आंवटित किये जाते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस कार्यक्रम से सभी सम्बन्धित व्यक्तियों के व्यावसायिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी के साथ हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के प्रति आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।



पश्चिमी सेक्टर द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में कविता पाठ करते पुलिस महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर केरिपुबल श्री ए.के.माथुर

इसके अतिरिक्त सभी वर्ग के कार्मिकों में साहित्य के प्रति रूचि जागृत करने के उद्देश्य से पुस्तकालय में न केवल चुनी हुई अच्छी-अच्छी पुस्तकें खरीद कर रखी गई हैं बल्कि उनकी उपलब्धि सभी को सुगमता से हो सके इसके लिए पुस्तकालय का एक बड़ा हिस्सा कार्मिकों के निवास कॉलोनी में स्थित चिकित्सा कक्ष में फार्मासिस्ट के अधीन रखा गया है। ऐसा करने से न केवल सभी कार्मिक बल्कि उनके परिवारजन भी पुस्तकालय से अपनी रूचि की पुस्तकें आसानी से प्राप्त कर सकेगें। लोगों को अधिक से अधिक पुस्तकें पढने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से एक पुरस्कार योजना चलाई भी जा रही है। इस योजना के अन्तर्गत कोई भी कार्मिक या उसके परिवार का सदस्य अगर एक तिमाही में सबसे अधिक पुस्तकें पढता है तो उसे समुचित पुस्कार से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार समारोहों में ऐसे सभी पुरस्कार विजेताओं को अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों के बारे में संक्षेप में जानकारी देने के लिए मंच पर आमंत्रित भी किया जाता है। पिछले कार्यक्रम में बल के एक कार्मिक की पत्नी भी ये पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है।

सभी में रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नियमित रूप से हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। कोई भी भाषा बिना समुचित अभ्यास के नहीं सीखी जा सकती। सतत अभ्यास के लिए किसी समुचित माध्यम की आवश्यकता हमेशा महसूस की जाती रही है। इसके लिए पश्चिमी सेक्टर ने एक अनूठा प्रयोग किया है। श्री अतुल कुमार माथुर, पुलिस महानिरीक्षक ने सुगम भाषा

नियमित अभ्यास पुस्तिका लिखी है जिसे "सुभाषिनी" नाम दिया गया है। सुगम भाषा कार्यक्रम को भाषा की सरलता व जटिलता के आधार पर विभिन्न चरणों में विभक्त किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी को प्रति सप्ताह एक छोटी पुस्तिका दी जाती है। और सभी से अपेक्षा है कि वे प्रतिदिन कम से कम 5-10 मिनट का समय निकाल कर उस पुस्तिका के एक पृष्ठ का अभ्यास जरूर करें। प्रत्येक सोमवार को उनकी पुरानी पुस्तिका आंकलन हेतु वापस ले ली जाती है व नयी पुस्तिका दे दी जाती है। इन । पुस्तिकाओं में हिन्दी व्याकरण व रचना की प्रगति क्रम में रचना व व्यवहार सम्बन्धित प्रश्न दिये गये हैं। इस कार्यक्रम का पहला चरण इस वर्ष के हिन्दी पखवाड़े के प्रथम दिन यदि 1 सितंबर, 2005 से प्रारम्भ हो चुका है। इस वर्ष के हिन्दी पखवाड़े के दौरान कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयंती का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम के साथ स्थानीय नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति (नराकास) के सहयोग से इस सेक्टर मुख्यालय में सितंबर, 2005 को आयोजित किया जाएगा।



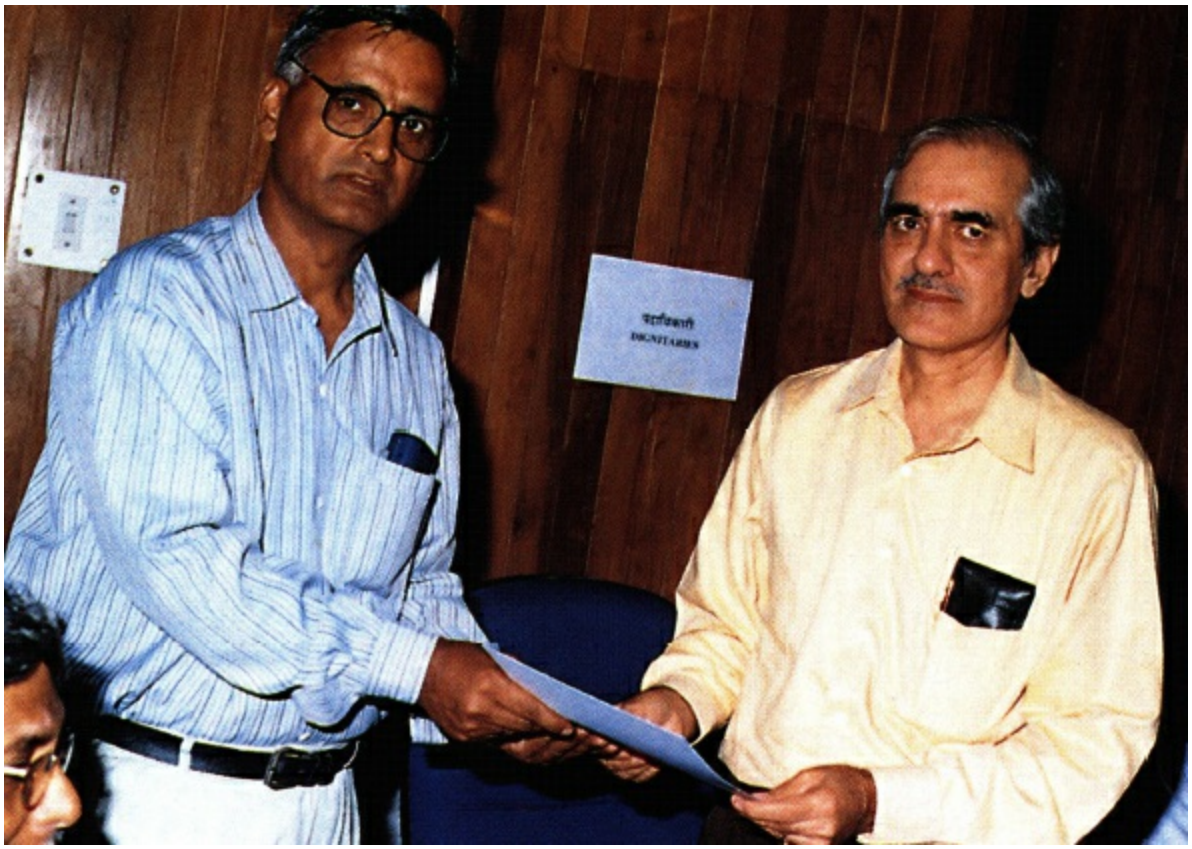
पश्चिमी सेक्टर मुख्यालय मुंबई में आयोजित कवि सम्मेलन में अथितियों का स्वागत करते हुए पुलिस महानिरीक्षक श्री ए.के.माथुर

सेक्टर के सभी अधीनस्थ कार्यालयों के हिन्दी कामकाज की प्रगति का ऑकलन करने के लिए प्रति माह अर्द्धशासकीय पत्र के माध्यम से उनकी रिपोर्ट प्राप्त करके उनके हिन्दी काम-काज की समीक्षा की जाती है। हिन्दी का मौलिक ज्ञान बढ़ाने के लिए अन्य कई नए कार्यक्रमों/क्रियाकलापों पर अनसंधान / शोध कार्य पलिस महानिरीक्षक श्री अतुल कुमार द्वारा किया जा रहा है। परिणाम आने पर इसे शीघ्र प्रयोग में लाए जाने के प्रभावकारी प्रयास किये जाएगें।

व्यंग्य

नारद की यात्रा

निरी. (हि0 अनु0)- **नागराज द्विवेदी**
प0से0, मुख्यालय,



ग्रुप केन्द्र, सिंदरी के निरीक्षक *(हि0अ0)* मक्खन सिंह कठैत कार्यालय के काम काज में हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यन्वयन के लिए नगरं राजभाषा कार्यान्वयन समिति जमशेदपुर के अध्यक्ष एंव निदेशक राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला श्री सूर्य प्रताप मेहरोत्रा से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए।

एक बार नारदजी जब सपनों में खोए हुए थे, उन्हें एक आमंत्रण पत्र मिला कि "श्रीमान् क्या आप हम भारतवासियों को भूल गए हैं? बहुत दिनों से आपके चरण हमारी धरती पर नहीं पड़े हैं, सो कृपा करके आइये एक बार भारत भ्रमण कर

जाइये, नारदजी धुमक्कड तो थे ही, सोचा "चलो क्यों नहीं कुछ दिन पृथ्वी वासियों के आदर सतकार का ही लुफ्त उठाते हैं, वैसे भी स्वर्ग की शांति से ऊब लगने लगी है, भारत में इन दिनों साहित्यक माहौल भी रहता है, हमारी उत्तराधिकारिणी भाषा के सम्मान में कई दिनों तक उत्सव मनाते हैं। देखा जाय तो ऐसा उत्सव विश्व में अन्यंत्र कहीं मनाते नहीं, यह तो धन्य भारत है जहां पर सदियों से देवताओं की कृपा रही है और सांस्कृतिक विविधता के दर्शन होते है" बस फिर क्या था? देवर्षि अपने वाद्य यंत्र सहित सीधे भारत के लिए प्रस्थान कर गए।

मगर कहीं कोई ऐसा नजर नहीं आया नारद को, उससे उनको बडी निराशा हुई और हो भी क्यों नहीं, इतनी उम्मीद से जो आए थे, आखिरकार, देवर्षि ने अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए एक सज्जन की शरण ली, सज्जन ने भी पूरी सज्जनता के साथ मुस्कराये और नारदजी के प्रयोजन के अनुसार उन्हें विधिवत् जानकारी दी।

यकीनन, उबड़-खाबड जगह, खंडहर भवन, जहां-तहां रंगीन पान की पिचकारियां दीवारों पर सजी हुई देखकर नारदजी को सज्जन की बातों पर पूरा यकीन हो गया और अंदर प्रवेश कर गए वहां कुर्सियों पर सजे चंद लोग कानाफूसी में लगे थे–

"यार हिंदी इज सो बोरिंग, ऑफिसियल वर्क विल नाट इम्प्रेसिव इन हिंदी, वर्क इन हिंदी सो हार्ड, वगैरह..वगैरह।"

वहीं कोने में बैठे एक श्रीमानजी आंकडों में कुछ इस कदर उलझे हुए थे जैसे वह किसी विकासशील देश की जन्म-मृत्यु दर का आंकडा निकाल रहे हों, नारदजी ने एकांत समझकर अपनी जिज्ञासा बुझाने के लिए उनसे निकटता बढाई। "बाबू जी बहुत व्यस्त हैं?" नारदजी ने पूछा। "जी, अरे कहां साहब, बस हिंदी दिवस आ रहा है उसी की तैयारी में लगा हुआ हूँ, आखिर साल भर में एक ही बार तो हिंदी दिवस आता है जिसमें राजनेताओं/ नौकरशाहों से अपेक्षा रहती है कि कम से कम इस अवसर पर तो वे हिंदी में भाषण पढेंगे, वरना कहां साल भर तो वैसे भी इनके कोश से हिंदी नदारद ही रहती है।" बाबूजी के इस जवाब से नारदजी सचमुच द्रवित हो गए और अब आगे उन्हें न ही कुरेदना उचित समझा।

वहीं मध्य में बैठे एक महानुभाव आंखों पर मोटा चश्मा चढाए "ईडियट, ब्लडी, नॉनसेंस आदि कई-कई अंग्रेजी की फटकार जोर-जोर से लगा रहे थे। फटकार खाने वाला व्यक्ति थोडी झुकी हुई मुद्रा में फैशन की दुकानों में लगी मूर्ति की भांति "गलती हो गई, गलती हो गई महोदय" कहते हुए कायल पर कायल हुए जा रहा था।

नारद जी को कायल व्यक्ति की यह दशा देखी नहीं गई "वाह जनाब आपने भी क्या गजब कर रखा है? कहने को तो हिंदी दिवस मना रहे हैं पर हिंदी में एक से एक साहित्यिक गालियों के बावजूद भी अंग्रेजी भाषा का सहारा ले रहे हैं। "नारदजी ने टोका"

"अरे साहब अब आप ही बताइये, भला हिंदी में गाली देकर अपनी जुबान क्यों गंदी करें' महानुभाव ने फुर्ती से अपना पक्ष रखा, देवर्षि नारद मातृत्व से भीगे इस

जवाब से खुद ही कायल हो गए और वहां से निकलने में ही अपनी भलाई समझी।

राह से गुजरते हुए नारदजी ने घरों के मुख्य द्वार पर "बीवेयर ऑफ डॉग लिखा देखकर चिंतित हो गए और सोचने लगे कि वाह देवताओं की लोकभूमि, जिस घर पे लिखा रहता था अतिथि देवो भव आज प्रगति का यह आलम है कि हर घर पे लिखा है "बीवेयर आफ डॉग" इतने में एक काले कुत्ते ने उन्हें देखते ही अपना रंग दिखाया और जैसे ही लपका वहां पर तैनात पहरेदार ने अपनी सतर्कता दिखाई और कुत्ते को आवाज दी "चिंकू.....नहीं, नहीं" पर वह उसकी बात को अनुसुना कर गया, शुक्र है कि नारदजी बैठ गए और उसके पहले आक्रमण से बच गए वरना..... इतने में नारद की नाजुक स्थिति को भांपते हुए एक पल गवाए बगैर उस पहरेदार ने फिर जोर से आवाज लगाई "चिंकू....नोनो"

यह सुनते ही वह सचमुच ठिठक गया और अपने क्रूर व्यवहार को ठंडे बर्फ में बदल दिया, नाम मात्र की नन्ही पूंछ को पुस्तैनी हरकत में ढाल दिया, यह देखकर नारदजी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा और उन्हें यह अहसास हुआ कि 'अंग्रेजी ऐसी संकट मोचन भाषा है जिसे कुत्ते समझते हैं,

थके, हारे बेचारे नारदजी अब आगे एक दुकान पर जाकर ठहर गए कुत्तों की इस वफादारी से सहम गए, दुकानदार एक अंग्रेजी अखबार में सिर से पांव तक आकंठ डूबा हुआ है "दुकानदार जी, दुकानदार जी" नारदजी ने आवाज दी इससे पहले कि वह कुछ बोलता अखबार के प्रति उसकी तल्लीनता देखकर नारदजी के मन में भी ताजा खबरें जानने की उत्सुकता जागृत हुई "क्यों भाई ! कोई खास खबर है क्या?" नारदजी ने पूछा "अरे जनाब सच कहूं तो मैं अंग्रेजी पढना लिखना जानता ही कहां हूं, मैं बस यूं ही कम पैसे में ज्यादा पेज मिलते है। इसलिए ग्राहकों को इसमें सामान देने की लालसा से इसे खरीदता है, और फुर्सत होने पर आकर्षक चित्र वगैरह भी देख लेता हूँ दुकानदार ने अपनी मनोदशा बताई।

"वाह भाई, वाह नारदजी को भाषा के पीछे की इस असलियत को जानकर गर्व हुआ कि जिसे रद्दी की जरूरत भी होती है वो यहां अंग्रेजी अखबार पढते हैं।"

अब आगे नारदजी राह में चलकर और कोई जोखिम नहीं उठाना चाहते थे इसलिए अपनी नगरी स्वर्ग लोक लौटना ही उचित समझा। अपने वाद्य यंत्र को संभाला और अलविदा भारतवासियों का शब्द घोष करते हुए स्वर्ग के लिए कूच कर गए। मन में यात्रा का स्मरण करते हुए सोच रहे थे कि अपनी यात्रा की एक रिपोर्ट राजा इन्द्र को जरूर दूंगा और सभी देवताओं को बताउँगा कि देवताओं की लोक भूमि में भाषा दो रूपों में किस तरह विभक्त है, एक घरवाली और दूजी बाहरवाली, मगर यहां के निवासियों को अपने संविधान निर्माताओं का आभारी होना चाहिए जिन्होंने साधु, संतों, गॉव और गरीबों की भाषा हिंदी को सत्ता पर बैठाया और हिंदी दिवस का प्रावधान बनाया। पर साथ ही ख्याल रखा अंग्रेजी का भी जो उसे भी सत्ता का सहभागी बनाया। शायद उन्हें यह आभास था कि भला भजन, कीर्तन से कहीं शासन चलेगा।



हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता कार्मिकों के बीच *127* बटा*0* के कमांडेन्ट श्री एस.एस.सिद्धू

स्वर्गलोक में राजा इन्द्र की सभा का वक्त हो चुका था और जैसे ही अप्सरा मेनका की पायल खनकी महर्षि की नींद टूट गई और हडबडाहट के साथ नारायण नारायण का जाप करते हुए सभा के लिए प्रस्थान कर गए।

राष्ट्रभाषा हिंदी का स्वरूप-समस्या-मेरे विचार

नि. (हि०अ)दिनेश सिंह धनिक
कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक जम्मू

राष्ट्रभाषा का प्रश्न, राष्ट्र चेतना से जुड़ा हैं। भारत में मुस्लिम साम्राज्य के बाद हिंदी का विकास तीव्र गति से हुआ, हिंदी को शासकीय संरक्षण न मिलने पर भी राष्ट्रीय सम्पदा की द्योतक बनी रही। हिन्दी, मुसलमान, आर्य, अनार्य, उत्तर दक्षिण, शैव-

वैष्णव आदर्श को लोगों ने अपने सिद्धान्तों और मान्यताओं के आधार पर हिन्दी में व्याख्यायित किया। सूफी सन्त जायसी ने सूफी दर्शन और इस्लाम, कबीर की निर्गुण, चैतन्य की कृष्ण भक्ति, नामदेव की उपासना भक्ति हिन्दी में उपदेशित हुई। क्या वे सभी हिन्दी प्रदेश के ही थे? नामदेव मराठी, स्वामी रामानन्द दक्षिण भारतीय, केशव, तुलसी, बुन्देली, रहीम और कुतुबल विजातीय थे, किन्तु सबके साहित्य व भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा हिन्दी रही।

पुनर्जागरण काल में जब अंग्रेजी द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार हुआ तो भी धार्मिक आन्दोलन हिन्दी के माध्यम से हुए। खड़ी बोली हिन्दी का विकास बाईबिल के अनुवादों से प्रारम्भ हुआ। आर्य समाज ने तो नियम भी बना दिए कि उनका प्रचार का माध्यम हिन्दी होगी।

1885 में देश में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रूप में एक चेतना आयी और देश में जागरण के लिए देश की ही भाषा को आवश्यक समझा गया। इसी काल में पत्रकारिता का विकास हुआ और बंगाल से हिन्दी पत्रों का सर्वप्रथम प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। सम्पर्क भाषा के महत्व पर विचार करते हुए देश के तत्कालीन जन नायकों को हिन्दी का नाम याद आया क्योंकि बहुत पहले से ही यही भाषा सम्पर्क भाषा के रूप में कार्य रही थी।



ग्रुप केन्द्र, आवड़ी में हिन्दी दिवस पर आयोजित समारोह में अथितियों का स्वगत करती ग्रुप केन्द्र की एक महिला कर्मी

मुस्लिम और अंग्रेजो शासन की उपेक्षा के बाबजूद यह कार्य हिन्दी में इसलिए हुआ क्योंकि यही ऐसी सर्वमान्य भाषा थी, जिसका प्रयोग सारे देश में हो रहा था और जिसे सर्वत्र समझा जा सकता था। स्वतंत्रता से पूर्व से ही हमारे अभिनायकों द्वारा हिन्दी पर जोर दिया जा रहा है। उसी काल में एक अंग्रेज ने टिप्पणी की थी जो भारतीयता पर व्यंग्य है–

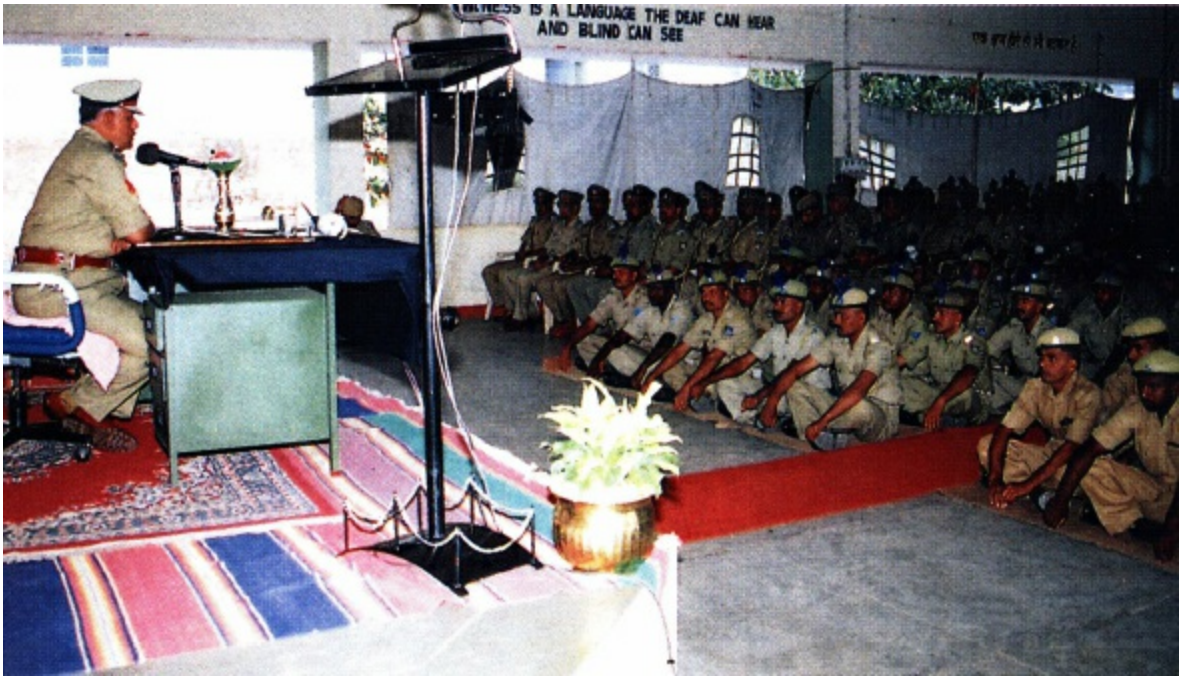
"भारत में जब तक देशभक्ति का जोर है, तभी तक ही हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाई जायगी, उसके वाद यह धीरे धीरे क्षीण होती चली जाएगी और अंग्रेजी पुनः अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करेगी।"

हिन्दी की संवैधानिक स्थिति

15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ और देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया गया। सहभाषा के रूप में अंग्रेजी को जोड़ा गया। सत्ताधारियों नें अंग्रेजी को विवादास्पद बना दिया। कोई गणतंत्र नहीं जो 15 वर्षों तक विदेशी भाषा की प्रतीक्षा करें। इजरायल की स्वतंत्रता के तत्काल बाद हिब्रू को राजभाषा बनाया गया और हिब्रू के माध्यम से इसरायल की प्रगति हुई। हिन्दी प्रयोग के साथ अंग्रेजी भाषा के चलते रहने की बाध्यता अनिश्चितकाल के लिए हो गई। हिन्दी और अंग्रेजी या हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं को लेकर विवाद खड़े किये जाते रहे हैं। लेकिन वस्तुस्थिति क्या है? यह अवलोकनीय है। हिन्दी का समर्थन न केवल उत्तर भारत वरन् दक्षिण भारत में भी उसी तरह से हो रहा है। सर्म्पक भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व बढ़ा। केरल से कश्मीर तक हिन्दी लिखने बोलने और पढ़ने वाले मिल जाते हैं। लेकिन हिन्दी का विरोध करने वाले केवल वे ही मिलते है जो स्वतंत्रता के पूर्व हिन्दी के पक्षधर थे। शचीन्द्रनाथ बख्शी जैसे क्रान्तिकारी का यह उद्गार इस वेदना का प्रमाण है "अंग्रेजों की गोली से अगर मेरी मौत हो जाती तो उतनी तकलीफ न होती जितनी इस अग्रलेख को पढ़कर हुई। यह अग्रलेख आन्नद बाजार पत्रिका और ब्लिट्ज जैसे राष्ट्रवादी पत्रों का है जिन्होनें कहा था कि अंग्रेजी की मर्यादा को बहाल करो"। भारत में कितने लोग ऐसे हैं जो अंग्रेजी को शिक्षा माध्यम बनाने में सक्षम हैं और अंग्रेजी बोल सकते हैं। वस्तुतः प्रश्न भाषा का नहीं, अपनी सत्ता और अस्मिता को बनाये रखने की कुचेष्टा में राष्ट्रीय अस्मिताओ नष्ट करने का है। स्वाधीनता से पूर्व हिन्दी के चाहने वालों को सर्वतत्रता के पश्चात अंग्रेजी में भारत का विकास नजर आया, शचीन्द्रना बख्शी के शब्दों में "यदि अंग्रेजी झरोखा है तो हिन्दी आँखें, क्या हम झरोखे को बनाये रखे और अपनी प्यारी आँखों को जो जिस्म का हिस्सा है, फोड़ डाले"?

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा राष्ट्रद्रोह का प्रतीक है। भारत के समस्त विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा में हिंदी का महत्व स्थापित हो गया है। विश्व के अधिसंख्या देशों में हिन्दी का अध्ययन हो रहा है। हिन्दी को बौना और कमजोर बनाकर तिरस्कृत करना एक षडयंत्र है। राष्ट्र प्रेमियों को इस असंगत विचारधारा को समाप्त करने के लिए आगे के

प्रभाव को तत्काल समाप्त करना चाहिए। हमारा यह दायित्व है कि हम संवेधान सम्मत नीति का क्रियान्वयन करें और भाषा के संदर्भ में किसी खींचातानी को जन्म न दें, क्योंकि यह शाश्वत सत्य है कि जिस राष्ट्र की जो भाषा है, उसे हटाकर विदेशी भाषा को आरोपित नहीं किया जा सकता। हमारा यह पुनीत कर्तत्व है कि यहाँ की प्राचीन संस्कृति को चिरन्तन बनाये रखने के लिए हम माननीय कण्डों की विभिन्न गाथा के बावजूद हृदय की एक भाषा का रहस्य समझे। भाषा सरस्वती और आराधना आन्नदरूपा है, इसे विवाद का विषय न बनाये।



सीटीसी-*II* में सीआरपीएफ के *66*वीं स्थापना दिवस पर सैनिक सम्मेलन में जवानों को संबोधित करते हुए सीटीसी के प्रचार्य/उपमहानिरीक्षक श्री जार्ज सी फ्रांसिस

[मैं हिन्दी हूँ]

हिन्दी है जन-जन की भाषा, यह है स्वाभिमान की भाषा,
पूर्ण राष्ट्र का है यह गौरव, ये ही हैं सबकी अभिलाषा,
राष्ट्र सीमाओं से बाहर भी है इसका अच्छा बोलबाला
जहाँ भी जाओं वहीं पर है इसको चाहने वाले।
इसकी सुगम, सरल शैली, सबके ही मन को भाती है,
तभी जनमानस के हृदय से सरकारी काम तक आती है।
केरिपुबल के जवानों, मेरे महत्व को समझों

मुझे भूलने की कोई नादान गलती न करें
वरना अपनी संस्कृति छोड़ पहचान को खो जाओगे,
अपनी ही सभ्यता से बिछुड़ कर कही के नहीं रह पाओगे,
मैं भारत की भाषा हूँ, मैं सीआरपीएफ की भी भाषा हूँ,
मैं ग्रुप केन्द्र ग्रेटर नोएडा की भाषा हूँ, मैं हिन्दी हूँ, मैं हिन्दी हूँ।

–निरीक्षक बालम सिंह रावत
ग्रुप केन्द्र, ग्रेटर नोएडा

ग्रुप केन्द्र ग्रेटर नोएडा-राजभाषा हिन्दी की प्रगति की ओर अग्रसर

नि. (हि०अ०) महीपाल सिंह रावत
ग्रुप केन्द्र, ग्रेटर नोएडा

हमारे देश को स्वतन्त्र हुए 5 दशक से अधिक हो चुके हैं, लेकिन अभी तक हम अपनी राजभाषा हिन्दी को वह सम्मान जनक स्थान पर प्रतिष्ठित करने में विफल रहे हैं जिसकी वह वास्तव में अधिकारणी है। यद्यपि संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा या राजभाषा का दर्जा दिया गया लेकिन इसके लिए वह अभी भी संधर्षरत है। यह हमारे देश के कर्णधारों एवं उच्च पदों पर आसीन अधिकारियों की कथनी और करनी में भेद इंगित करता है। इससे हिन्दी की प्रगति बाधित होती है तथापि राजभाषा की प्रगति सुनिश्चित करने हेतु सरकार द्वारा गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग स्थापित किया गया है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है तथा विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति काफी सन्तोषजनक है। ग्रुप केन्द्र, ग्रेटर नोएडा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हाल में सृजित ग्रुप केन्द्रों में से एक हैं, इसमें प्रारम्भ से ही सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्यिवन हेतु सार्थक प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस प्रयोजन हेतु निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये गए हैं।

- राजभाषा अधिनियम की धारा 3 का अनुपालन।

- राजभाषा नियम 5 और 7 का अनुपालन।
- रबड़ की मोहरें, नाम-पट्ट, बोर्ड, सूचना पट्ट, ब्रास सील इत्यादि द्विभाषी में तैयार।
- कप्यूटर आदि इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी खरीद।
- हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण दिलाना।
- हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन।
- हिन्दी पत्राचार में निरंतर वृद्धि लाना।
- हिन्दी प्रशिक्षण के लिए शेष बचे कार्मिकों को प्रशिक्षण दिलाना।
- लक्ष्य के अनुसार हिन्दी पुस्तकों की खरीद करना।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कार्रवाई की गई है।

- 'राजभाषा हिन्दी प्रसार पुस्तिका' तैयार की गई है। इसमें राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम, वार्षिक कार्यक्रम सहित दैनिक प्रयोग में काम आने वाली शब्दावली एवं कार्य के मानक नमूनों का समावेश किया गया है।
- राजभाषा अधिनियम व नियम की व्यवस्थाओं का अनुपालन किया जा रहा है।
- रजिस्टरों एवं सेवा पुस्तिकाओं में हिन्दी में प्रविष्टियां की जा रही हैं।
- रोकड़ वही का रख-रखाव हिन्दी में किया जा रहा है।
- बल आदेश हिन्दी में प्रकाशित किये जा रहे हैं।
- लगभग 85 प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जा रहा है।
- कार्मिकों को हिन्दी संबंधी प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है।
- प्रशासनिक शब्दावली की प्रतियां उपलब्ध करादी गई हैं।
- भिन्न-भिन्न विषयों की हिन्दी की पुस्तकें क्रय की जा रही हैं।

इस तरह एक सुनियोजित कार्यक्रम के तहत भविष्य में इसे एक आदर्श ग्रुप केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए सतत् प्रयत्न जारी है। राजभाषा के संबंध में सरकार की यह स्पष्ट एवं सुविचारित नीति है कि सरकारी कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों, निगमों आदि में हिन्दी का प्रयोग धीरे-धीरे बढाया जाए ताकि कम से कम असुविधा हो और सभी इसे स्वेच्छा से स्वीकार करें। अतः ग्रुप केन्द्र, ग्रेटर नोएडा का यह प्रयास है कि हिन्दी का प्रयोग सतत प्रेरणा, अभ्यास और प्रोत्साहन से बढाया जाए।

हिन्दी के प्रेरणा श्रोत



केरिपु बल के प्रशिक्षण निदेशालय में पदस्थ स०उ०नि० (मं०) पंकज कुमार गर्ग ने 1999 से लेकर 2004 तक लगातार हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हिन्दी टंकण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर बल के महानिदेशक से अनेक नकद पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र अर्जित किए हैं। श्री पंकज कुमार गर्ग के प्रर्दशन से यह पता चलता है कि उनका राजभाषा हिन्दी के प्रति कितना अगाध प्रेम है। श्री पकंज द्वारा किए गए प्रदर्शन तारिफे काविल है। इनके प्रयासों से बल के अन्य कार्मिकों में भी राजभाषा हिन्दी में अपना काम काज करने की प्रेरणा जागृत होगी।

“राजभाषा हिन्दी और हम”

स.उ.नि. (म) राजेश शुक्ला
127 बटालियन



बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा हिन्दी दिवस पर आयोजित हिन्दी टकंण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले स.उ.नि. (मं) पंकज कुमार गर्ग को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

14 सितम्बर, 1949 को हम कैसे भूल सकते हैं, क्योंकि स्वतंत्र भारत संविधान सभा ने इसी तिथि को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली 'हिन्दी' को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने की घोषणा की थी। किसी भी राष्ट्र की भाषा उसकी अरिमता की पहचान होती है। कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को अपनी भाषा में ही अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है। अपनी भार्षा के प्रयोग के संबंध में भारतेन्दु हरिश चन्द्र की निम्न पंक्तियां बहुत ही महत्व रखती है:–

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति के मूल,
बिन निज भाषा जान के,
मिटत न हिए के शूल।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अनुसार कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता है। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित किये जाने के बाद प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता हैं। हिन्दी एक बहुत ही सरल भाषा है जिसे आसानी से समझ व बोल सकते हैं। हिन्दी की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि **'अगर आज**

हिन्दी राजभाषा मान ली गई है तो वह इसलिए नहीं कि वह किसी प्रान्त विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता और क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है'।

यदि सचमुच हम देश की उन्नति चाहते हैं तो सर्वप्रथम अपनी भाषा की उन्नति करनी चाहिए। हम सभी को ईमानदारी से हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि हमारी हिन्दी हमारे राष्ट्र की आत्मा एवं हमारा स्वाभिमान है। इसलिए हमें हिन्दी के प्रयोग के प्रति अपना मनोबल सुदृढ़ करना होगा, तभी सच्चे अर्थों में हम राजभाषा हिन्दी को उचित सम्मान दिला पाऐगें। भारतेन्दु हरिश चन्द्र जी ने कहा है कि :–

करहूँ बिलम्ब न भ्रात अब,
उठहू मिटावहू शूत,
निज भाष उन्नति करहूँ,
प्रथम जो सबको मूल।

सफलता में बाधक बाधओं से निपटना

उप० कमा० **निशीत कुमार,**
महानिदेशक के स्टाप अधिकारी

आपके जीवन और व्यवसाय की सफलता अथवा असफलता में कारणों का एक समूह खामोशी से कार्य करता है। जब यह समूह बिखरता है तो यह एक अव्यवस्थित सी फसल उत्पन्न करता है, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के अनुसार अलग-अलग होती है। सफलता के चिकने खंभे पर पढ़ने को लालायित बहुत से व्यक्तियों के लिए कुछ कारण आम हैं, यह हैं, आदतें, विकृति, साहस, शर्मीलापन, कमजोर याद्दाश्त, किन्तु-परन्तु, और एक असफल दृष्टिकोण।

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आदतें होती हैं। कुछ सहायक होती हैं। कुछ नहीं होती। उसकी शारीरिक, मानसिक भावनात्मक एवं नैतिक आदतें होती हैं। उसे प्रथमतया अपनी बुरी शारीरिक आदतों को नियंत्रित करना चाहिए। यदि ये उसके लिए चुनौती बनती हैं तो वह आगे नहीं बढ़ सकता।

उसे अपनी बुरी भावनात्मक आदतों का सामना करना चाहिए। उसे अपने अद्यम भाव नियंत्रित करना चाहिए। उसे अपना दिमाग सही रखते हुए सीखना प्रारंभ करना चाहिएं, जब उसकी इच्छाशक्ति मजबूत हो जाएगी तो वह अपनी कमजोरियों से

निपट सकता है व सच्चारेत्र बन सकता है।

कुछ आदतें सनक की तरह होती है जैसे उदाहरणार्थ नाखूनों को काटना। कुछ लोग बिल्लियों या लिफ्ट से डरते हैं। इस प्रकार की बहुत सी छोटी-छोटी सनक होती हैं। कुछ अहानिकर एक होती हैं। परन्तु सभी असंगत होती हैं।

जैसे ही व्यक्ति अपना जीवन जीने का बड़ा निर्णय लेता है, उसे अपनी आदतों की पूरी तरह जांच करनी चाहिए। जो मूर्खतापूर्ण अथवा हानिकारक हैं उन पर काबू पाना जीवन के छोटे मामलों के संबंध में यन्त्रवत चलने में ही बुद्धिमानी हैं, आपको अपने जीवन को व्यवस्थित करना चाहिए ताकि आप अधिक फुर्सत पा सकें। आपकों आदतें चुननी चाहिए न कि उन्हें अपने पर हावी होने देना चाहिए। एक शब्द में, आपने जो निर्णय लिया है पूरे जीवन को उसके अनुरूप ढ़ालें। हर आदमी में चारित्रिक दोष या सोच की आदत होती है जो अधिक या कम असंगत/अयुक्तिपूर्ण होती हैं, परन्तु अधिकाशं मामलों में इसका यह अर्थ होता है कि उसका सोचने का अपना दृष्टिकोण है। किसी की भी बुद्धि पूर्ण संतुलित नहीं होती। उदाहरणार्थ एक इंजीनियर विज्ञापन के महत्व का अंदाजा नहीं लगा सकता, किसी व्यक्ति ने अभी तक स्वयं को पूर्वाग्रहों से मुक्त नहीं किया है, परन्तु उसे जानना चाहिए कि वह अनेक मामलों में पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है। जैसा कि कई व्यक्ति करते हैं, उसे पूर्वाग्रहों को शौक नहीं बना लेना चाहिए। जहां तक संभव हो, भूल स्वीकार करने में उदार होना चाहिए। उसे सहज बुद्धि और अनुभव के अनुसार अपनी राय में संशोधन करना चाहिए।

विकृति

विकृति एक कमी है। यह गंभीर मामला है क्योंकि इस पर काबू पाना कठिन है। बचपन में कुछ अनुभवों के कारण विकृति आती है। निरपवाद रूप से डर का कोई आघात मस्तिष्क को असंतुलित कर देता है। विकृति एक "मानसिक विकार" है। विकृति व्यक्ति अधिक से अधिक स्वार्थी और आक्रामक हो जाता है। वह अकेलेपन में डूबा रहना चाहता है जो कि स्वयं विकृति का कारण है। विकृति व्यवस्था को नष्ट करती है। यह स्व-दुर्बलता, अवचेतन के भय के समक्ष घुटने टेकता है। यह हजारों लोगों के लिए विनाश और दुःख लेकर आती है। इलाज आसान हैं एक विकृति व्यक्ति को दूसरे प्रसन्न लोगों के साथ घुलना-मिलना, हंसना चाहिए, दूसरों की सहायता करनी चाहिए, विनोद-वृद्धि और प्रसन्नता की भावना का विकास करना चाहिए। किसी पेरशानी कमी अथवा गलती पर चिन्तामग्न अथवा शोकसंतप्त नहीं होना चाहिए। बुद्धिमानी इसमें है कि किसी कार्य पर ध्यान केन्द्रित कर इसे अवश्य पूरा किया जाए ताकि इससे कुछ परिणाम हासिल हो।

उत्तेजना

"उत्तेजना" सामान्यतः यह शब्द बुरे स्वभाव और आत्म-नियंत्रण की कमी के लिए प्रयोग किया जाता है। अक्सर यह शारीरिक अथवा मानसिक विकार/खंड की ओर ले

जाता है।

जिन लोगों में "उत्तेजना" होती है, वे छोटी से छोटी बात पर उत्तेजित हो जाते हैं। वे "पागल प्रवृत्ति" के होते हैं। उनमें कोई संतुलन-कोई दृढता नहीं हाती। यहां तक कि योग्य व्यक्तियों ने भी स्वयं को "उत्तेजना" का शिकार हो जाने दिया। पत्रकार, पुलित्जर, ने अपने जीवन के अंतिक 20 वर्ष एक नौका पर गुजारे, विशेषकर उसके लिए एक "खामोश नौका" का निर्माण किया गया क्योंकि वह हल्का सा शोर भी सहन नहीं कर पाता था। कार्लाइल ने भी छोटी-छोटी बातों से उत्तेजित होकर स्वयं को प्रताड़ित किया। उसने एक बार स्वयं से कहा "हाय, मुझे रूई में लपेट देना चाहिए था। मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं अपनी अयोग्यता पर शर्मिंदा हूँ।"

"उत्तेजना" के किसी भी प्रकार के मामले में इच्छा शक्ति और सहज बुद्धि की खुराक से इलाज किया जा सकता है। उसके आत्म-सम्मान का भाव छोटी बातों की शक्ति से ऊपर होना चाहिए। अगर उसे गलतफहमी हो कि वह इस कठोर संसार के लिए बहुत बढ़िया-बहुत कुशल अति संवेदनशील है तो उसे इस ख्यालों को दिमाग से निकालकर फेंक देना चाहिए। बहुत लोग उसकी अपेक्षा अधिक सहन करते हैं। उसे जीवन का उज्जवल पक्ष देखने के लिए प्रशिक्षित होना चाहिए और अपने बारे में कम तथा दूसरों के बारे में अधिक सोचना चाहिए। उसे "उत्तेजना" से छुटकारा पाना चाहिए जो कि शक्तिहीन कर देता है।

शर्मीलापन

"शर्मीलापन" गंभीर समस्या हैं यदि कोई व्यक्ति पूरा जीवनभर शर्मीला रहे तो यह गंभीर है और उसका दमन आवश्यक है। शर्मीलेपन से छुटकारा पाने के लिए सबसे अच्छा उपाय है कि आप अधिक लोगों से विशेषकर अजनबियों से मिलें। यदि कोई अपनी आवाज की ध्वनि से डरता है तो उसे लोगों के बीच बोलने की कक्षाओं में दाखिला लेना चाहिए। उसे बड़े समूहों से बात-चीत करने में बढ़-चढकर भाग लेना चाहिए।

स्मरण शक्ति

स्मरण शक्ति भी एक रूकावट है। व्यवहारिक रूप से सभी स्मृतियां और भावनाएं औसत बुद्धि कहलाती है। विचारक भाग विकसित नहीं हो पाता है। ओ.एस. मार्डन के अनुसार "स्मृति परंपरा की सुजक है जो प्रगति की सबसे शक्तिशाली शत्रु हैं।" ज्ञान अथवा अज्ञान मानक हो जाता है। जब यह पुराना है जाता है तो यह एक मत का रूप ले लेता है और यह रूढ़िवादी हो जाता है। जो भी इसे चुनौती देता है उसे अनैतिक माना जाता है। किसलिंग के अनुसार "स्मृति की शक्ति-जबरदस्त हैं, यह भूलने की असमर्थता है। यही मुख्य कारण है कि लोग अप्रगतिशील हैं।" वे सोचते नहीं हैं, वे केवल "याद" रखते हैं। हम मस्तिष्क को रूढ़िवाद और वर्ग भेद से बांधते हैं। हमारी सीखने की परम्परागत संस्था है। हम व्यक्तियों को उनकी उपयोगिता और

सृजन शक्ति से नहीं अपितु ऐसी परीक्षाओं से पद देते हैं जिनका बुद्धिमता से कुछ भी लेना-देना नहीं है। हमने मस्तिष्क को सुस्त करने और लकवाग्रस्त करने के उपाय खोज लिए हैं। हम स्व-अभिव्यक्ति के बजाय आँख मूंद लेना लक्षित करते हैं।

प्रत्येक स्फूर्तिमय व्यक्ति सफलता पाना चाहता हैं, वह विशिष्ट बनने की चाह भी रखता होगा। परन्तु वह इसका मूल्य चुकाने में पीछे सिकुड़ जाता है। वह कहता है "लोग क्या कहेंगे" और "मैं ऐसा अनुभव नहीं करता"। वह कमजोर बहाने बनाता हैं वह कहता है "मैं जैसा हूं, वैसा हूं" स्वयं को बदल नहीं सकता", "इसमें बहुत जोखिम है," उसकी महत्वाकांक्षा की चिंगारी राख बन जाती हैं। वह वही करने को तैयार हो जाता है जैसा उसे कहा जाता है और दूसरों के नियंत्रण में अपना जीवन जीता है–एक कठपुतली की तरह।

परिवर्तन

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जो सदा परिवर्तित होता रहे, उसे जगत कहते है, यही जगत या संसार की परिभाषा है। हर मिनट परिपर्तन हो राह है। हम एक घंटा पूर्व जो थे, वह अब नहीं।

इसलिए जीवन में परिवर्तन का विरोध मत करिए। सीखने और आगे विकास करने के अवसरों के रूप में परिवर्तनों का उपयोग करिए। यही परिवर्तन का दर्शन है। अगर कोई परिवर्तन न हो, तो हम सुस्त और गतिहीन हो जाएंगे। परिवर्तनों से घबराने के बजाय उनका आदर करना और अपने लाभ के लिए उनका उपयोग करना सीखिए।

उदाहरणार्थ मान लीजिये कि आपका एक स्थान से दूसरे स्थान पर ट्रांसफर हो जाते हैं, ऐसी स्थिति में नये स्थान व पद के बारे में तरह-तरह के संदेह, भय और नकरात्मक विचार करना शुरू मत कीजिए, क्योंकि असलियत के धरातल पर आप पायेंगे कि सारे भय केवल आपकी कल्पना में थे। वहां की वास्तविकता भिन्न है। सच्चाई यह है कि यदि आप चाहें तो नकारात्मक परिस्थितियों में भी अपना विकास करना सीख सकते हैं। आपकी इच्छाशक्ति सारे नकारात्मक प्रभावों पर विजय पा सकती हैं और आप अपनी इच्छाशक्ति, दृढ़ निश्चय तथा सकारात्मक विचारों से नकारात्मक वातारण को सकारात्मक बना सकते हैं।

नये विचारों और सुझावों का भी स्वागत कीजिए अपने दिमाग को कुछ विचारों, सनकों और कल्पनाओं से बंद करके उसमें ताला मत लगाइये।

याद रखिये, आप चाहे किसी भी स्तर पर हों, आपका आगे विकास करने का मार्ग हमेशा खुला रहता है। कोई भी स्व-विकास की सीमाएं नहीं बंद कर सकता। बहुत लोग गरीबी में पैदा होने के बावजूद इतिहास रचा और राष्ट्र के भाग्य को संवारा।

अगर कोलम्बस ने ऐसा कहा होता "मैं चलते रहना नहीं चाहता हूं," वह भूमि से एक हजार मील की दूसरी पर था, वह कभी एक नया महाद्धीप नहीं खोज पाता यदि वह परम्परा से अथवा लोगों ने जो कहा उससे प्रभावित हो जाता तो वह कभी सर्वाधिक प्रसिद्ध यात्रा प्रारंभ नहीं कर पाता।

कमजोर व्यक्ति सदैव "परन्तु" कहता है। उसे रूकावटों द्वारा तेजी से पकड़ लिया जाता है। जब भी नयी योजना अथवा प्रगति के विषय में कोई सुझाव देता है, तो वह कहता है "यह विचार तो अच्छा है, परन्तु....."। उसके पास सदैव "परन्तु" रहा है। उसके "परंतुओं" ने उसे असफल रखा। हमेशा "परन्तु" होता है–जोखिम और रूकावटें। किसी व्यक्ति के लिए प्रसिद्ध "मोल-भाव" कर प्राप्त होती तो हम सब प्रसिद्ध होते। किसी व्यक्ति के लिए प्रसिद्ध होने का एक मात्र रास्ता है अपने "परंतुओं" पर काबू पाना। काबू पाने में हमेशा प्रतिरोध होता है।

जीवन के सभी पुरस्कार प्रवाह के विपरीत तैर कर मिले हैं, उन्हें धारा में बहकर प्राप्त नहीं किया जा सकता।

समस्याएं

अधिकांश लोग यह सोचते हैं कि जब उनकी सब समस्याएं समाप्त हो जाएंगी, तब वे अपने जीवन के विकास का कार्यक्रम प्रारंभ करेंगे। लेकिन याद रखिये, **समस्याएं जीवन का अभिन्न अंग हैं, वे कभी समाप्त नहीं होंगी। एक समस्या जाएगी, तो दूसरी आ खड़ी होगी। यह जीवन की प्रकृति है। जीवन इस प्रकार बना है कि आप विभिन्न समस्याओं का समाना करें और उनसे अपने विकास के लिए आवश्यक शिक्षा ग्रहण करें। यह केवल आपके साथ नहीं है, हरेक के साथ है। कोई भी बिना समस्याओं के नहीं है।**

समस्याओं को अपने विकास की प्रक्रिया में बाधा न समझिए। आप कैसी भी दयनीय स्थिति में हों, जिन क्षेत्रों में विकास कर सकते हैं, करते जाइए क्योंकि आप कैसी भी स्थिति में हों, विकास करने के कुछ द्वार आपके लिए हमेशा खुले रहते हैं। कोई भी व्यक्ति चाहे कितना ही दुष्ट क्यों न हो, उसके सभी दरवाजे कभी बंद नहीं होते। कुछ लोग अपना बहुत सा समय अपनी अनेक भावी समस्याओं के बारे में कल्पना करने में नष्ट करते रहते हैं, जैसे कहीं उनको यह न हो जाए, कहीं वह न हो जाए? इस संबंध में कृपया स्मरण रखिए कि जीवन में जब और जैसी भी समस्याएं और संकट आयें, उनका बस सामना करना चाहिए। हमें निरंतर अपनी संभावित भावी आपत्तियों के बारे में विचार कर पेरशान नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए यह मत विचार करिए कि, "यदि मुझे कैंसर हो गया, तो क्या होगा?" "यदि मेरे बच्चों ने बुढ़ापे में मुझे अकेला छोड़ दिया तो क्या होगा ?" या "यदि मेरी नौकरी छूट गई तो क्या होगा?'" आदि-आदि। वास्तविकता में आप जो कल्पनाएं करते हैं, उनमें से निन्यान्वे प्रतिशत कभी घटित नहीं होती। वे केवल आपके संदेहग्रस्त मन और बेलगाम कल्पना की उपज होती है।

जैसा मैंने पिछले अंको में भी चचा की है कि यदि कोइ आपत्ति आ भी गइ तो अपमें सदैव उसका सामना करने की शक्ति होना चाहिए। कोई भी समस्या या आपत्ति आपसे बड़ी नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त आप किसी भी आपत्ति में कभी अकेले नहीं हैं। आप किसी भी परिस्थिति में हों सर्वशक्तिमान परमात्मा सदैव आपके साथ होता है। सारा संसार आपको छोड़ सकता है, पर वह नहीं छोड़ सकता। इसलिए कभी हिम्मत मत हारिए और इस सिद्धांत को सदैव स्मरण रखिए, 'समस्याएं जैसे आती जाएं बस उनका सामना करते जाइए। उनके बारे में अधिक विचार मत करते रहिए। यह व्यक्ति को पीछे नहीं, आगे बढ़ाती हैं, और यह डर के बजाय निर्भिकता देती हैं, जब भी आप स्वयं को विरोध और अनिश्यितता में पाते हैं, तो सबसे समझदारी की नीति यही है कि निकट दृष्टि रखें। इस तरह आगे बढ़े जैसे कोई व्यक्ति अंधेरी रात में अनजानी सड़क पर चलता है एक समय में एक ही कदम। यदि समुद्री जहाज सोच सकता और महसूस कर पाता तो वह घाट छोड़ने में डरता। वह चौड़े समुद्र और तूफानों और बड़ी लहरों के बारे में सोचता। वह इन सभी खतरों के बारे में सोचता और डरता। किन्तु सत्य यह है कि वह एक बार में एक लहर का ही सामना करता है और वह एक लहर से निपटने के लिए पर्याप्त मजबूत भी होता है। यदि आपको कोई बड़ी परेशानी है तो इसे बांट ले, एक समय में एक भाग से ही निपटें। व्यक्ति अपने आज से जूझते और कल के लिए योजना बनाकर ही आगे बढ़ सकता है। प्रगति का प्रत्येक अंश उसका विश्वास बढ़ाता है।

व्यक्ति सोने से ठीक पूर्व यह दृढ निश्चय करके सोये कि, वह कल क्या करेगा, कल के काम के लिए स्वयं को तैयार करता है। यह इच्छाशक्ति को मजबूत करता है। यह मस्तिष्क को सकारात्मक बनाता है। उससे आगे सोचने की आदत बनती है और इससे संकल्प और आत्मविश्वास में जोश जगने की भी संभावना होती है।

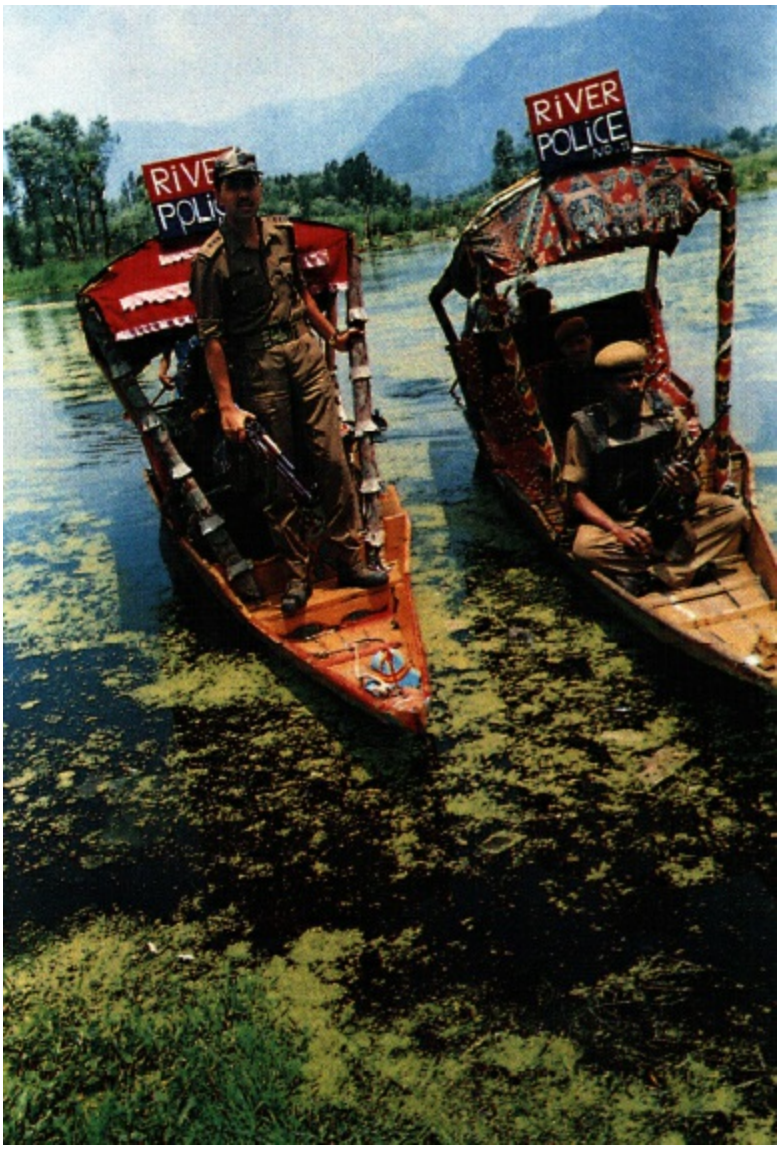
भवानी आश्रम पोस्ट

अनिल गुप्ता
उप कमां. *122* बटा०

कहते हैं वह चिनार का पेड़ पांच सौ साल पुराना है। कभी उसकी छाया के नीचे एक घन्टे बैठने के लिए 200 रूपये तक देने पड़ते थे, आज 122 बटालियन की एक पूरी कम्पनी 24 घन्टे उस विशाल चिनार वृक्ष के नीचे एक नयी ऊर्जा, नयी स्फूर्ति और नयी उमंग प्राप्त करती है। उस विशाल चिनार की शाखाएं इस तरह पूरे आश्रम पर लटक रही हैं, मानो कोई बुजुर्ग अपनी दोनों बाहें फैलाए अपने पूरे कुनवे को एक साथ अपने आगोश में ले लेना चहता हो। यह एक कैम्प कम आश्रम अधिक लगता है।

दरअसल यह एक आश्रम ही है, जहां आज केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 122 बटालियन की डी कम्पनी का कैम्प है। गुवाहाटी से श्रीनगर मूवमेन्ट के बाद जब मैं पोखरीबल स्थित भवानी आश्रम गया तो वहां की सात्विकता, माहौल और एतिहासिकता ने मुझे मोहित कर लिया। एक तरफ हरी पर्वत, दूसरी तरफ नगिन झील, बीच में प्राकृतिक चश्मे को घेर कर बनाया गया मन्दिर और मन्दिर के सेहन के बीचोबीच दो विशाल चिनार और सेहन के चारों तरफ आश्रम के कमरे। पूरा वातावरण एक दिव्य संसार की रचना करता है।

लेकिन गुवाहाटी में राजभवन की ड्यूटी और स्वयं राज्यपाल महोदय के सान्निध्य में रहने के बाद पोखरीबल स्थित भवानी आश्रम में तैनात डी कम्पनी के कम्पनी कमाण्डर पवन कुमार के लिए यह धीरे से लगने वाला जोर का झटका था। अखरोट और बादाम के बगीचों से घिरा सेन्ट्रल जेल के पीछे स्थित यह आश्रम भले ही कभी तपस्वियों और श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धा का केन्द्र रहा हो, लेकिन आज यह अपने अलग थलग और एकाकी माहौल के कारण आतंकवादियों के लिए आसान लक्ष्य है, इस बात का अहसास पवन कुमार को वहां कम्पनी स्थापित करते ही हो गया, क्यों कि तैनाती के मात्र पहले दो चार दिन में ही इनके मोबाईल पर धमकियों भरे सन्देश मिलने लगे, सन्देश एक चोरी के मोबाइल से मिल रहे थे। इस लिए उसे ट्रेस करना आसान नहीं था। लेकिन इससे यह तय हो गया कि कम्पनी के जोरदार एरिया डोमीनेशन के कारण यहां दहशतगदो का मूवमेंट बाधित हो गया है। पवन कुमार सिंह केरिपुबल के उन गिने चुने अफसरों में से हैं जिन्होने अपनी भर्ती के शुरूआती दिनों में ही अपनी जांबाजी का परिचय देकर शौर्यवीरता का पदक जीता है। कम्पनी ने जल्दी ही पूरे इलाके में अपनी उपस्थिति का एहसास करा दिया। कैम्प के जबरदस्त फोर्टिफिकेशन के बाद पवन कुमार का ध्यान अब आश्रम की तरफ गया, कुछ मैंने उन्हें उकसाया, मेरी कम्पनी उनके पास ही शिराज सिनेमा में थी, लेकिन पोखरीबल का आकर्षण लगातार मुझे अपनी ओर आकर्षित करता रहा। मेरा दिल चाहता कि मैं वहां जांऊ और सारा दिन चिनार की छाया तले आश्रम के बीचों बीच पहली मंजिल पर चारों तरफ से खुले कम्पनी कमाण्डर के कार्यालय में बैठकर चिनार के पेड़ या नगिन झील को देखते हुए गुजार दूं। मगर ऐसा संभव नहीं था। लेकिन जब भी मुझे मौका मिलता, मैं भवानी आश्रम के आकर्षण से बिंधा उसकी ओर खिंचा चला आता।



श्रीनगर की नागिन झील में बोट द्वारा पेट्रोलिगं करते हुए *122* बटा० केरिपुबल के जवान

केरिपुबल की बहुत कम्पनियां वहां रहीं और चली गयी, लेकिन शायद बहुत कम लोगों को यह एहसास हुआ होगा कि वे जहां रह रहे हैं वह एक दिव्य स्थान है।

कहते हैं कि कभी इस इलाके में भैरॉसुर नाम के राक्षस का आतंक था। उस राक्षस का दमन करने के लिए सारिका देवी अपने मुंह में एक पत्थर दबा कर आयी और उस राक्षस का वध किया। उन्होंने जो पत्थर मुंह में दबाया था, जब वह नीचे गिरा तो उसने वर्तमान हरी पर्वत का रूप ले लिया। जिस पर बाद में बादशाह अकबर ने एक किला बनवाया। इसी किले के पीछे एक कंदरा में सारिका देवी का मंदिर है। इस मंदिर की सुरक्षा के लिए केरिपुबल की एक प्लाटून तैनात है। कहते हैं कि सारिका देवी प्रति दिन इस कंदरा के पास ही बने एक कुंड में नहाने आती थी। आज इसी कुंड

के आस पास बने आश्रम में केारेपुबल को एक कम्पनी का आवास है।

महाराजा रणजीत सिंह जब अपने अफगानिस्तान अभियान पर निकले तो उन्होंने इस कुंड के चारों तरफ एक मंदिर का निर्माण करवाया और मंदिर के चारों तरफ एक आश्रम निर्मित किया। वह मंदिर और आश्रम आज भी अपने उसी रूप में अपनी पूरी भव्यता और दिव्यता के साथ खड़ा है। फर्क सिर्फ इतना है कि अब आश्रम में संन्यासी नहीं सिर्फ सिपाही हैं।

इस स्थान की एतिहासिकता और महत्ता यहीं खत्म नहीं हो जाती। बादशाह अकबर ने जब हरीपर्वत पर किले का निर्माण किया तो काठी दरवाजे के पास एक और द्वार का निर्माण करवाया, उससे जो भी गुजरता था वह सिर झुका कर गुजरता था। मगर प्रकारांतर में जम्मू कश्मीर के महाराजा रणबीर सिंह जो देवी सारिका के उपासक थे। उन्हें दरवाजे से सिर झुकाकर गुजरना मंजूर नहीं था। उन्होंने दूसरा विकल्प चुना, वह शिकारे से पहले भवानी आश्रम आते और कुंड में स्नान करने के बाद देवी सारिका के दर्शनों को जाते। वैसे भी देवी सारिका के दर्शनों से पहले भवानी आश्रम स्थित कुंड में स्नान कर हवन करने की प्रथा है।



इस स्थान की दिव्यता का एहसास यहां आने से पहले पहाड़ी पर चड़ते ही हो जाता है। पहाड़ी के चरणों में स्थित है छठी पातशाही गुरूद्वारा कहते हैं, कभी यहां एक अंधी महिला भागपरी रहती थी, जो साधु संतों के लिए चोला बनाया करती थी। एक दिन उसे पता चला कि गुरू हरगोविन्द वहां आने वाले हैं, वह उनके लिए भी चोला बनाने लगी। मगर जब गुरू हरगोविन्द वहां आये तो अंधी होने के कारण वह उन्हें पहचान नहीं पायीं, उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर गुरू हर गोविन्द ने अपनी कृपाण से जमीन पर वार किया, जिससे जमीन से अमृत का समेत फूट पड़ा, उससे अमृत की कुछ बूदें भागपरी की आखों पर पड़ी और उसे दृष्टि प्राप्त हो गयी, यहीं भागपरी का मंदिर है। यहीं छठी पातशाही गुरूद्वारे की स्थापना है।

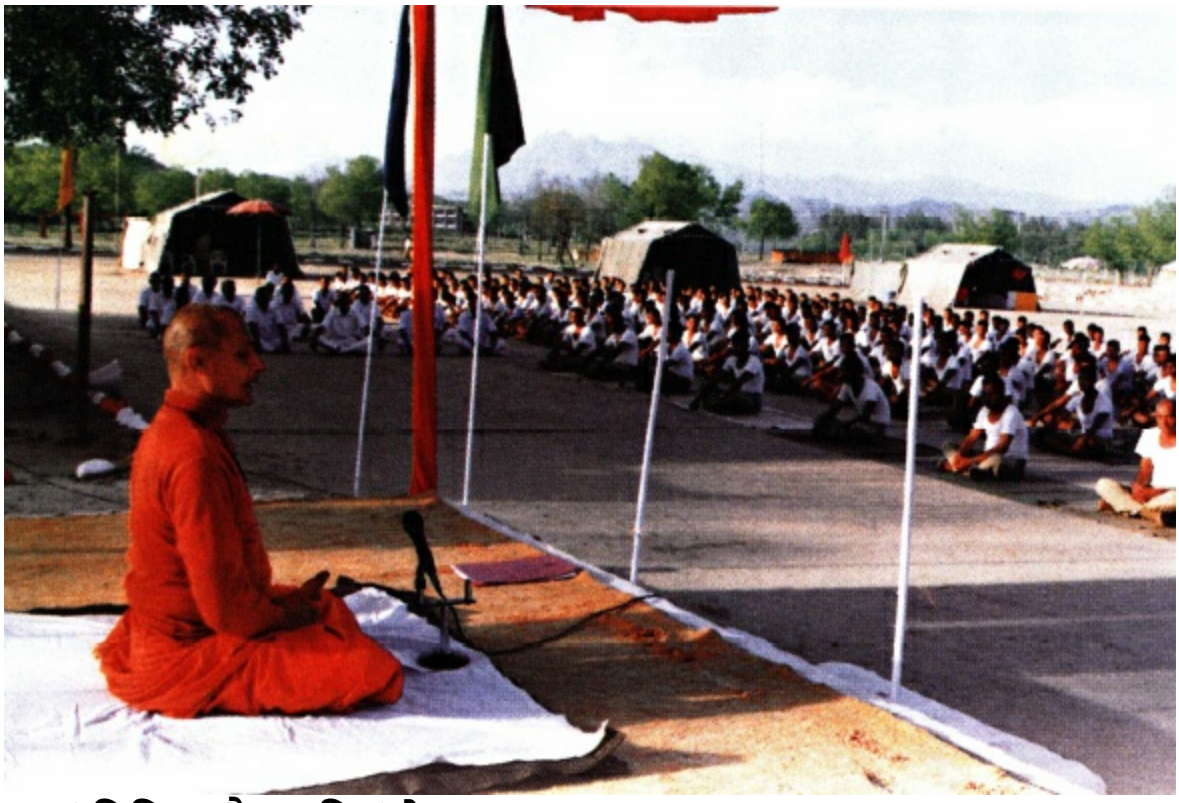
भवानी आश्रम में कुल पांच कुंड हैं। एक मंदिर के अन्दर जिसे गुरू गंगा भी कहते है, एक बाहर स्थापित शिवलिंग के पास, दो सेहन में स्नान के लिए और एक महिलाओं के लिए अलग से है। कुंड कुछ इस तरह स्थापित हैं कि सभी पर विशाल

चिनार की छाया पड़ती है। कैम्प एक तरफ बिलकुल नागेन झील के मुहाने पर हैं, जिसमें इन कुंडों का अतिरिक्त पानी वहकर बाहर निकल जाता है। इसी मुहाने पर खडे रहते हैं। कम्पनी के दो शिकारे जिस पर सवार होकर कम्पनी के जवान नगिन झील की निगरानी करते है। मंदिर के अन्दर प्राकृतिक चश्मे गुरू गंगा का पानी ही आश्रम में स्थित कुडों में एकत्र है, इसी पानी का सेवन पूरी कम्पनी के जवान करते हैं। आश्रम का हर कमरा अपने अन्दर इतिहास की किसी न किसी कडी को समेटे है। आज भी आश्रम में जवानों के अलावा एक अकेला सिख परिवार रहता है। जो महाराजा रणजीत सिंह के बनवाये इस मंदिर की देखभाल के लिए तैनात है।

आज भले ही भवानी आश्रम में विरानी हो, लेकिन उसके कुंड प्राकृतिक चश्में, आश्रम की इमारत, मंदिर की पवित्रता सभी कुछ केरिपुबल के संरक्षण में हैं आज भी यहां मेला लगता है। ये दूसरी बात है कि श्रद्वालु तलाशी देकर अन्दर आते है, अपने वर्तमान हालात पर दुखी होते है। मगर यह देखकर संतुष्ट भी होते हैं कि अपनी जिस विरासत को दहशत के चलते उन्हें छोड़कर भाग जाना पड़ा, वह विरासत केरिपुबल ने अपनी सेवा और भक्ति के दम पर सुरक्षित रखी है।

योग भगाए रोग

सुनील कुमार, उप कमाण्डेन्ट
***144* बटालियन, केरिपुबल**



आसनं विजितः चैनल जितं तेन जगत्रयम्।
अनेन विधिनायुक्तः प्राणयाम सदा कुरू।

अर्थातः जिसने आसन को जीत लिया उसने तीनों लोकों को जीत लिया। इसी प्रकार विधि-विधान से प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए।

योग संस्कृत के 'युज' धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है मिलाना, जोड़ना, संयुक्त होना, बांधना, अनुभव को पाना तथा तल्लीन होना। यह भी कहा जा सकता है कि दो वस्तुओं के परस्पर मिलन तथा जोड़ का नाम ही योग है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार "योगश्चितकृति निरोगः" अर्थात मन की वृत्तियों–रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द के लोभ में दौड़ने को रोकना ही योग है। दूसरे शब्दों में चित की चंचलता का दमन करना ही योग है।

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने योग का अर्थ समझाते हुए कहा है कि:–

'समर्त्व योग उच्यते' अर्थात समता या समानता को ही योग कहते है। (जहाँ साधक और साध्य दोनों का एक ही शब्द व्यवहार का प्रयोग हुआ है।)

'योगः कर्मसु कौशलम्' अर्थात प्रत्येक कार्य को कशलता से सम्पन्न करना ही योग है। अतः अपनी अंतरात्मा के साथ एकाकार होने को ही योग कहते हैं।

योग सिद्धि एवं शरीर शुद्धि के लिये योगाभ्यास जरूरी है। यही कारण है कि आज

विज्ञान को इस दौड़ में विश्व के सभी विकासित, विकासशील एवं विकासरत देश योग शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हैं। सरल शब्दों में कहें तो सुखपूर्वक एवं निश्चल बैठने की मुद्रा ही योग कहलाती है।

योगाभ्यास व व्यायाम एक नहीं है लेकिन दोनों के फायदे समान हैं। व्यायाम से आसन हर दृष्टिकोण से फायदेमंद है। व्यायाम में एक ही कसरत को कुछ समय तक लगातार किया जाता है, जबकि योगाभ्यास में ऐसा नहीं होता है। व्यायाम में जहाँ किसी अंग विशेष की कसरत होती है वही योगाभ्यास में शरीर के समस्त अगों पर इसका प्रभाव पड़ता है। व्यायाम करने के लिये जहाँ समय अधिक चाहिये वहाँ योगाभ्यास करने के लिये कम।

व्यायाम के लिये खुले मैदान व पार्क की आवश्यकता पड़ती है जबकि योगाभ्यास एक ही कमरे में किया जा सकता हैं, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यायाम में किसी रोग का उपचार नहीं होता, और योगाभ्यास से कई रोगों का उपचार भी संभव है। योगाभ्यास वह विद्या है जिसमें मानव अपना शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास कर सकता है। व्यायाम तथा योग में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि कोई व्यक्ति जब व्यायाम करता है तो उसका ध्यान अपने शरीर के विभिन्न अंगों की तरफ हो जाता है अर्थात शरीर से बाहर दौड़ता है। परन्तु जब कोई व्यक्ति योगाभ्यास करता है तो उसका ध्यान शरीर के अन्दर ऊर्जा की तरफ रहता है जिसके कारण व्यक्ति के शरीर के भीतर शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं तथा व्यक्ति के शरीर में विभिन्न रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। इसलिये हमारे ऋषि मुनियों ने सच ही कहा है कि

“योग भगाए रोग”

योग थैरापी के द्वारा उन रोगों को भी दूर किया जा सकता है जिस रोग को ठीक कर पाने में डाक्टर ने जवाब दे दिया। इतना ही नहीं योगा करने से मनुष्य संयमी बना रहता है, उनमें आत्मनिर्भरता एवं आत्म विश्वास बढ़ता है। योगासन का अनुशासन से सीधा सम्बन्ध है।

व्यायाम से शरीर का प्रत्येक अंग पुष्ट होता है जबकि प्रणायाम करने से प्राणों का व्यायाम होता है जिससे मनुष्य दीर्घायु होता है एवं निरोग जीवन प्राप्त करता है। योग द्वारा मनुष्य स्वयं को परमात्मा से जोड़ता है। जिस कारण शरीर के अन्दर के विकार स्वतः समाप्त होने शुरू हो जाते है। योग द्वारा जब हम परमात्मा से जुड़ते है तो परमात्मा के गुण अर्थात दैवीय गुणों को हम आत्मसात करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य के अन्दर के अवगुण जैसे काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, अहंकार आदि से छुटकारा मिलना शुरू हो जाता है। उपरोक्त अवगुणों से छुटकारा पाने के परिणामस्वरूप मनुष्य के अन्दर एक दिव्य शक्ति जागृत होती है। जिससे मनुष्य अपने आप को खुशहाल, शान्त तथा परोपकारी महसूस करने लगता है और इन गुणों की वजह से उनके परिवार, समाज तथा आस-पास रहने वाले सभी व्यक्ति भी उससे

लाभान्वेत होते हैं। हमारा शरीर इन पंच तत्वों-आकाश, जल, आग्नेे, वायु और पृथ्वी से बना है। ये पाँचों तत्व एक दूसरे के पूरक हैं अर्थात एक के आभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। परमात्मा ने इन तत्वों को योग के माध्यम से इस प्रकार से बाँध रखा है जिस कारण मनुष्य का जीवन चक्र गतिमान है, वरना सृष्टि एक क्षण भी नहीं चल सकती।

योग भारतीय संस्कृति की धरोहर है क्योंकि योग विश्व में सबसे पहले हमारे देश के ऋषि-मुनियों द्वारा आज से हजारों-हजार वर्ष पूर्व शुरू किया गया था जो पूर्ण रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किसी भी रोग को पनपने से रोकता है और यदि किसी रोग की शुरूआत हो चुकी हो तो उसे योग के माध्यम से दूर किया जा सकता है और यही कारण है कि वर्तमान समय में जो भी मनुष्य योग के विभिन्न आसनों का निरंतर अभ्यास करते हैं उनसे बीमारी कोसों दूर चली जाती है और परिणाम स्वरूप व्यक्ति आयु पर्यन्त शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर स्वस्थ रहता है।



विश्व की जनसंख्या का लगभग 80 प्रतिशत लोग आज किसी न किसी कारण वश उच्च रक्तचाप या मानसिक तनाव से ग्रस्त हैं जिसका एक मात्र इलाज योग ही है, जिससे काफी हद तक ऐसे रोगों से छुटकारा मिल सकता है। योग के इन्ही महत्वों को आत्मसात कर विश्व के लगभग सभी देशों की सरकारों ने स्कूल, कॉलेज, कार्यालय, उधोग जहाँ तक कि जेल में बन्दी बनायें हुए कैदियों के लिये भी योग के विभिन्न आसनों का अभ्यास करना लागू कर दिया है जिसके दूरगामी परिणाम भी नजर आने लगे हैं।

प्रचलित कहावत है कि भोगों से रोग उत्पन्न होते है और यह भी सत्य है कि योग करने से मनुष्य आत्मसंयमी होता है तथा अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करता है।

जब मनुष्य अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करता है तो वह बुराइयों की तरफ नहीं भगता है। और उसके विचार शुद्ध होते हैं तथा वह समाज के विकास के लिये कार्य करता है, जिससे समाज सशक्त तथा बलवान होता है। समाज के सशक्त तथा बलवान होने से देश बलवान बनता है और एक बलवान देश ही संसार में सर्वदा अपना उच्च स्थान रखता है।

योग की कितनी महत्वता है इसी बात से समझी जा सकती है कि महाभारत में भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को योग का महत्व समझाया, स्वंय भगवान श्रीकृष्ण को योग में महारथ हासिल थी, इसलिये उनको योगीराज कृष्ण के नाम से भी जाना जाता है।

मैं समाज के सभी वर्गों के बुद्धिजीवियों से निवेदन करता हूँ कि योग के इस महत्व को आत्मसात कर, इससे पूरा लाभ उठाएं, जिससे आपका परिवार, परिवार से बना समाज, समाज से बना गाँव, व शहर विभिन्न शहरों से बने राज्यों के साथ-साथ हमारे देश के लोगों से रोग, तनाव, द्वेष, ईर्ष्या, भेद-भाव आदि समाप्त हो सके और हमारी भारत माता का नाम विश्व के परिदृश्य पर स्वर्णाश्ररों में लिखा जा सके।

165 बटा० की पासिंग आउट परेड

19 जून, 2004 को ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, आवडी परिसर में गठित 165 बटालियन ने अपना बुनियादी प्रशिक्षण 2 अगस्त, 2004 से लेना शुरू किया था, अनुभवी अधिकारियों एव प्रशिक्षकों द्वारा 849 रंगरूटों को 44 सप्ताह का बहुआयामी प्रशिक्षण प्रदान किया गया। यद्यपि 165 बटालियन मणिपुर-नागालैण्ड सेक्टर की है फिर भी इस युनिट की ग्रुप केन्द्र, आवडी द्वारा सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति, समय-समय पर प्रशिक्षण संबंधित जरूरतों को पूरा किया गया। 165 बटालियन ने बड़ी सहजता एंव सरलता से रंगरूटों को बहुआयामी प्रशिक्षण प्रदान करने में सफलता प्राप्त की।





44 सप्ताह के कठोर प्रशिक्षण के पश्चात् 2 अगस्त, 2005 को 849 रंगरूटों के शपथ एवं दीक्षांत परेड समारोह का आयोजन किया गया। तमिलनाडु पुलिस के महानिदेशक श्री ए.एक्स. एलेक्जेडर, इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। परेड की सलामी लेते हुए मुख्य अतिथि ने विभिन्न राज्यों से आये हुए इन प्रशिक्षुओं को शुभकामनाएं दी एवं देश में पनप रही चुनौतियों का निस्वार्थ भाव से मुकाबला करने का आहवाहन किया। श्री अलेक्जेन्डर ने अधिकारियों एवं प्रशिक्षकों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए परेड की सराहना की। इस अवसर पर श्री सी. बालासुब्राहमनियन, पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर, श्री एच बी सिंह, पुलिस उप-महानिरीक्षक चेन्नै रेंज तथा बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। 165 बटा के कमांडेट श्री गुर शक्ति सिंह सोढी ने बताया कि इस युनिट की अरूणाचल प्रदेश के दुर्गम क्षेत्रों में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के स्थान पर तैनाती की जाएगी।

सी.आर.पी.एफ को वर्ष 2003-04 का प्रथम पुरस्कार व राजभाषा शील्ड

हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं कार्यालय के काम काज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड 2002-03 के द्वितीय परस्कार तथा वर्ष 2003-04 के लिए प्रथम पुरस्कार हेतु केन्द्रीय पुलिस बल को चुना गया है। केरिपुबल को गृह मंत्रालय की इस राजभाषा शील्ड के लिए चुना जाना हम सब के लिए गौरव की बात है। यह सब महानिदेशालय तथा बल के अन्य कार्यालयों में तैनात हमारे अधिकारियों एवं कार्मिकों के अथक प्रयासों से ही सम्भव हो सका है। हमें यह उपलब्धि बल के कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देने के फलस्वरूप ही प्राप्त हुई है। अतः इसका श्रेय पूरा-पूरा बल के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को जाता है।

सी.आर.पी.एफ. की 36 बटा० को राजभाषा नीति के श्रेष्ट कार्यान्वयन के लिए ग क्षेत्र का द्वितीय पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोतर क्षेत्र) गुवाहाटी में 1 फरवरी, 05 को दो दिवसीय पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। और 36 बटा० केरिपुबल को | वर्ष 2003-04 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर भारत सरकार के माननीय केंद्रीय गृह मंत्री, श्री शिवराज वी पाटिल द्वारा शील्ड तथा 'प्रशस्ति पत्र' प्रदान किये गये जिसे बटालियन के उप कमाण्डेन्ट श्री प्रहलाद पासवान एवं हिन्दी लिपिक सहायक उप निरीक्षक (मं) मृत्युंजय प्रसाद सिंह ने ग्रहण किया।

'राजभाषा हिन्दी और भाईचारा'

"राजभाषा" से ही यह संभव।
पाना वह सामाजिक न्याय।
"हिन्दी" ही है वह "राजभाषा"।
जिससे न होगा कभी भी अन्याय।
भाषा से ही है वह संभव।
विचारों का सहज आदान-प्रदान।
हिन्दी ही है वह विशिष्ठ राजभाषा।
जिसका सभी के मन में है "सम्मान"।
भाषा नहीं सिखाती, जीवन हो "बे सहारा"।

वही है सही भाषा जिससे बनेगा "भाईचारा"।
"हिन्दी" ही है वह राजभाषा जो।
हिन्दुस्तानियों का है इक "सहारा"।
"हिन्दी" ही है वतन का।
"गुलदस्ता" जो हमारा।
भारत की यह लोकप्रिय भाषा।
भारतीयों का कष्ट परिहारा।

कुलकर्णी रामचन्द्र भीमराव,
(हव/आरमोटर) ए डब्ल्यू रास० 7 इम्फाल

माहौल

अब कितना बदला माहौल नजर आता है,
आदमी, आदमी को देखकर घबराता है।
सैंकड़ों में रिश्ते निकल आते हैं जरदारों से,
भाई मुफलिस हो तो भाई को नहीं भाता है।
दोस्ती में भी तो पहले जैसी मोहब्त न रही,
दोस्त भी अब दोस्त के काम नहीं आता है।
कितने घर जलते हैं, कितनों के खून होते हैं,
यह तो रोज की बात है, पर रहम कौन खाता है।
धर्म और जाति के नाम पर, अब होते हैं फसाद,
मुल्क और कौम का बटवारा यह है आम बात।
खुदा के नाम से भी नहीं डरता कोई,
क्योंकि खुदा भी तो उन्ही की मदद करते है भाई।
ये क्या हो गया जमाने के चलन को,
जो कभी अपना था अब गैर नजर आता है।

निरी० महितोष कुमार
100 बटा० आर.ए.एफ.

"मातृभाषा का अनादर, माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है वे देश, भक्त कहलाने लायक नहीं।"

–महात्मा गांधी

खेल उपलब्धियां



पश्चिमोत्तर सेक्टर की अन्तर सेक्टर बास्केटवाल टूर्नामेन्ट *2005* की विजेता टीम



छटवीं अन्तर सेक्टर कुश्ती प्रतियोगिता जीतने वाली *101* बटा० आर.ए.एफ. की टीम

“राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा।”

–महादेवी वर्मा

ग्रुप केन्द्र, आवड़ी ने अंतर सेक्टर बालीवाल शील्ड-2005 जीती।

ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, आवडी, में स्थित दक्षिणी सेक्टर की बालीबाल टीम ने वर्ष, 2005 की अंतर सेक्टर बालीबाल प्रतियोगिता जीत कर जहां अपना वर्चस्व बनाए रखा वहीं दक्षिणी सेक्टर एवं ग्रुप केन्द्र आवडी का नाम भी ऊँचा किया है। सेक्टर की बालीबाल टीम ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल आवडी में एकत्रित होकर अभ्यासरत रही जिसके फलस्वरूप दक्षिणी सेक्टर ने वर्ष 2004 की अंतर बालीबाल प्रतियोगिता की उप-विजेता रही। इस वर्ष की प्रतियोगिता ग्रुप केन्द, बेंगलौर में 21 से 26 जुलाई, 2005 तक आयोजित की गई और प्रतियोगिता में ग्रुप केन्द्र, आवडी की टीम विजेता घोषित हुई।

अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन, सतत अभ्यास व प्रेरणा से यह टीम खेलकूद प्रतिभा की प्रशंसा पात्र बनी। सम्मान समारोह में पुलिस महानिरीक्षक दक्षिणी सेक्टर, श्री सी. बालासुब्रांहमनियन, ने कप ग्रहण किया। ग्रुप केन्द्र, आवडी में आयोजित समारोह में पुलिस महानिरीक्षक ने टीम के अच्छे प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए 2500/-रूपये का नकद पुरस्कार घोषित किया और कहा कि इस टीम को राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर होने वाली बालीबाल प्रतियोगिताओं में भी अपनी वर्चस्वता स्थापित करनी होगी। तमिलनाडु राज्य स्तर पर भी इस टीम ने कई प्रतियोगिताओं में शामिल होकर शील्ड जीती हैं और ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, आवडी का नाम रोशन किया है।



विजेता टीम के कप्तान को ट्राफी प्रदान करते पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर श्री सी. बालासुब्राहमनियन,



दक्षिणी सेक्टर की विजेता अन्तर सेक्टर बालीबाल टीम

"आज अगर भारत को एक राष्ट्र बनाना है तो कोई माने या न माने राष्ट्र भाषा हिन्दी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान आज हिन्दी को प्राप्त है वह किसी अन्य भाषा को कदापि नहीं मिल सकता है।"

–महात्मा गांधी

आर.ए.एफ की छठवीं अन्तर बटा० कुश्ती प्रतियोगिता

छठवीं अन्तर बटा० आर.ए.एफ. क्षेत्र की कुश्ती प्रतियोगिता, 2005 का आयोजन 16 अगस्त, 2005, को 101वीं बटा० में किया गया। यह प्रतियोगिता 16 से 19 अगस्त, 2005 तक चली जिसमें देश के विभिन्न भागों से आई द्रुत कार्य बल की 10 टीमों ने हिस्सा लिया। यह प्रतियोगिता फ्री स्टाइल व ग्रीकों रोमन दोनों विधाओं में आयोजित की गई और पहलवानों का वर्गीकरण सात वजन श्रेणियों में किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन गोल्डन जुबली इन्डोर स्टेडियम वायुसेना बमरौली, इलाहाबाद में किया

गया।



समापन समारोह की अध्यक्षता विंगकमाण्डर पी एस सनल कुमार, स्टेशन कमाण्डर वायुसेना, बमरौली ने की तथा विजेता खिलाड़ियों व विजेता टीम को पदक एवं ट्राफी भी वितरित की। इस प्रतियोगिता की फ्री स्टाइल कुश्ती में 100 बटालियन ने जबकि ग्रीको रोमन में 107 बटालियन, द्रुत कार्य बल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

---

101 बटा० आर. ए. एफ. का परिचितीकरण अभ्यास



101 बटालियन द्रुत कार्य बल की ए कम्पनी की एक प्लाटून ने 10 से 19 जून, 05 तक जिला कुशीनगर का परिचितीकरण अभ्यास किया और प्लाटून के जवानों/ अधिकारियों ने जिले में जाकर वहाँ की भौगोलिक स्थिति, आवादी, पहले हुए साम्प्रदायिक दगों तथा जिले का इतिहास इत्यादि का अध्ययन किया। महत्वपूर्ण स्थानों के फोटोग्राफस एवं सी. डी. तैयार की गई ताकि इलाके के बारे में समुचित जानकारी हासिल की जा सके और कानून व्यवस्था की स्थिति असामान्य होने की दशा में प्रभावी ढंग से निपटा जा सके।

राजधानी एक्सप्रेस को बारूदी सुरंग के विस्फोट से बचाया

16 जून, 2005, को 2:00 बजे कमांडेट श्री भानु प्रताप सिंह, ने अपने सहायक कमांडेंट हेमन्त कुमार बगासी को सूचना दी कि नक्सलवादियों द्वारा चौधरी बंद–पारसनाथ रेलवे स्टेशन के बीच हावड़ा–दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस को उड़ाने के लिए

बारूदी सुरंग लगाई गई है। सहा० कमा० हेमन्त कुमार बगासी ने आवेलम्ब अपनी कम्पनी के जवानों को हर तरह से तैयार किया तथा पुलिस थाने निमियाघाट को सूचित कर सहयोग देने का अनुरोध किया, परन्तु सिविल पुलिस ने यह अपने क्षेत्राधिकार में न होने के कारण सहयोग देने से असमर्थ जाहिर की, फिर श्री हेमन्त कुमार बगासी ने उन्हे मामले की गंम्भीरता को समझाते हुए तैयार रहने को कहा। श्री हेमन्त कुमार बगासी प्रस्थान करने के पूर्व घौर अंधेरा, घने जंगल एवं पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण माईन मेटल डिटेक्टर, सर्च लाईट एवं टॉर्च जैसे उपकरण साथ लेना न भूले।



रेलवे लाईन से विस्फोटक बरामद करने वाली *72* बटा० के.रि.पु. बल की टीम

इस बीच कमांडेट श्री भानु प्रताप सिंह ने अनुमण्डलीय रेल प्रबंधक, धनबाद तथा पुलिस अधीक्षक गिरिडिह को भी सूचना दी। सभी रेलगाडियों को सुरक्षित स्थानों पर रोकने की अनुसंशा की गई। श्री हेमन्त कुमार बगासी ने अपनी कम्पनी को स्थिति से निपटने के लिए तैयार किया तथा विशेष रेलगाड़ी का प्रयोग न करते हुए पारसनाथ रेलवे स्टेशन से पैदल चलकर परिस्थिति अनुसार फारमेशन करके मार्च किया। लगभग 2.5कि.मी. की दूरी तय करने के उपरांत उनकी कम्पनी के सि० उत्तम प्रामाणिक को रेलवे लाईन से 15–20 मीटर की दूरी से एक तार नजर आया, जिसकी

सूचना उसने अपने कम्पनी कमाण्डर हेमन्त कुमार बगासी को आवेलम्ब दी, हेमन्त कुमार बगासी ने तुरंत अपने जवानों को जमीन पर पोजिशन लेने का आदेश दिया और स्वंय तार की दूसरी वाली छोर की ओर सि० उत्तम प्रामाणिक एवं सि० फारूख अहमद के साथ आगे बड़े। लगभग 200 मीटर जाने के उपरांत उन्हे तार के साथ 04 बैटरी सूतली से बंधी कागज में लपेटी हुई मिली, सारे इलाके की गहन छानबीन करने के उपरांत हेमन्त कुमार बगासी तार को देखते हुए दूसरे छोर रेलवे लाईन के पास पहुँचे और सावधानी पूर्वक कंकड हटाने पर एक 5 किलो का एल.पी.जी सिलैण्डर जिसमें लगभग 15 किलोग्राम विस्फोटक भरे थे को निकाला। उसके तार अलग किये एवं उसे निष्क्रीय किया। कम्पनी के जवानों ने पैदल चलकर 12 कि०मी० की रेलवे लाईन की गहन छानबीन की और वापस पारसनाथ रेलवे स्टेशन पहुँचकर रेल गाडियों को पुनः बहाल करवाया। सहायक कमान्डेंट हेमन्त कुमार बगासी ने प्राप्त सूचना पर अविलम्ब कार्य करते हुए नक्सलवादियों द्वारा धनबाद रेलवे मण्डल पर आ रही हावड़ा–दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस को उड़ाने की योजना को विफल करते हुए भारी संख्या में यात्रियों तथा सरकारी सम्पति को नुकसान होने से बचाया। इस प्रकार सी/72 बटा० ने नक्सली योजना को विफल कर झारखण्ड राज्य में बल का नाम गौरवान्वित किया है।

लघु कहानी

राजा कौन

हरीश मेहरा, सहा० कमा०
***67* बटा, के.रि.पु. बल**

एक जंगल के शेर को जाने क्या ख्याल आना कि उसने ठानी कि चलो एक बार अपने जंगल में सबसे पूछ कर देखा जाए कि जंगल का राजा कौन है? और निकल पड़े, सबसे पहले सामने पड़ गया चीता महाशय, शेर ने पूछा “बताइये जंगल का राजा कौन? चीता महाशय ने अपने उस भविष्य को मद्दे नजर रखते हुए कि शेर के बाद ही उसका भविष्य उज्जवल है, तुरंत जवाब दिया “जी निसंदेह आप”। शेर महाशय प्रसन्नता से आगे बढे, आगे तीन भेड़िया बैठे आराम फरमा रहे थे, शेर महाशय ने नजदीक जाकर दहाड मारी “बताओ जंगल का राजा कौन ?” तुरंत उछल कर खडे हो गये और अपने भविष्य के उदार क्षणों के मद्दे नजर तीनों एक ही स्वर में बोले “महाराज आप” शेर ने दमभरी मुस्कान से उन्हें देखा और आगे बढ़ गया।

थोड़ा आगे चला तो नजर पड़ी एक भेड़ पर, जो जंगल के अन्य जानवरों की टूट–फूट की रीपेयर में लगी थी। शेर ने पूछा "बताओ राजा कौन ?" भेड़ ने अतीत के इतिहास व भविष्य की अनिश्चितताओं को मद्दे नजर गहरी मुस्कान के साथ कहा "सर आप" टाइगर की छाती फूल गई और आगे बढ़ा। एक जगह घोड़ा, ऊँट, गाय, साड़, गधा, गेढ़ा आदि कई जानवर खाना खा रहे थे। सभी अपनी धुन में मस्त थे तो मौका ऐ हालात को देखते हुये टाइगर जर्बदस्त हुँकारा और पूछा बताओं "जगंल का राजा कौन है?" छिपते, छिपते खड़े होकर सभी ने एक स्वर में कहा "सर, आप–आप–आप"।

शेर की छाती और फूल गई तथा अंतिम चरण में पहुँच गई। आगे बढ़ा तो देखा एक हाथी पीठ पीछे किये हुये मस्ती से गन्ना खा रहा है। पर मन ही मन दुखी भी हैं कि भगवान ने शरीर तो दिया बड़ा पर शाकहारी बना दिया। इसी उधेड़बुन में किसी ने पीछे से आकर पूछा "बताओं राजा कौन?" आव देखा न ताव हाथी ने सूंड़ से पकड़ा और जोर से झटक दिया। शेर महाराज को ऐसा जर्बदस्त झटका लगा कि एकदम ढीले से पड़ गये। चारों तरफ देखा कि किसी ने देखा तो नहीं, फिर संभल कर बड़ी नजाकत से धीरे से हाथी के पास आकर बोला "नहीं मालूम तो कोई बात नहीं यार, पर नाराज क्यों होते हो" और धीरे से वापस चल पड़ा।

अपनी लाइफ

आया मेरा दोस्त जो रहता था पदरेश में,
देख के मेरा साधु जीवन हो गया पेशोपेश में।
बोला इस सन्नाटे में कैसे समय गुजरते है,
आगे पीछे कुछ नहीं दिखता केवल कुत्ता रोते हैं।
मैंने बोला दोस्त यही तो जीवन की सच्चाई है,
भाग दौड़ में क्या रखा है, जंगल की खुशिया पाई हैं।
इस जंगल में मोर कबूतर, कौवे भी इतराते हैं,
भाव बडें है खरगोशों के, देख हमे लहराते हैं।
पूछा उसने दिनचर्या तो हमने कहा सुनाए मित्र,
साधु जैसे रहते है सब, सबका है हनुमान चरित्र।
पाँच बजे लगता मार्कर सारे पीटी करते हैं,
घोड़े जैसी पटटी बांधे एक लकीर में चलते हैं।
नहीं प्रदूषण ना कौतूहल, सब ड्यूटी में व्यस्त है,

वैसे तो कोइ काम नहीं, पर सारे यहॉ पर व्यस्त हैं।
मत सोचो कि काम में अपने सिर्फ ये मोनोटोनी है,
ब्रीफिंग, डयूटी और परेड नित–नित नई कहानी है।
सुबह हुई तो देखा वर्किंग दौडे भागे जाती है,
हाथों में तलवार फावड़ा, थामे बेलचा गैंती हैं।
हमने कहा यही सेना के लड़ने की सिखलाई है,
अभी तो यह अंगड़ाई है आगे और लड़ाई है।
वर्किंग से ही अपना जीवन, वर्किंग अपनी जान है,
वर्किंग से ही शानों शौकत, वर्किंग अपनी आन है।
वर्किंग की ही रोटी खाते एस.एम,बी.एच.एम, ऐडजुटेन्ट।
वर्किंग सबको बाँधे रहती, होता है इंगेजमेन्ट।
देख कर अपनी वर्किंग लाईफ वह थोडा कनफयूज हुआ,
चटक बना फिरता था लेकिन बल्ब दिमागी फयूज हुआ।
हमने बोला एक ही दिन में हो गये इस लाईफ से बोर,
अपनी तो लाईफ ही घूमें इसी के चारों ओर।
सुनके मेरी सारी बातें सिर उसका चकराया था,
देखा जब मुझ को यूँ सीरियस, मन उसका घबराया था।
बोला मेरा टिकट करा दो मुझे आज ही जाना है,
मस्तिष्क मेरा सुन्न हो गया, मुझ को कही दिखाना है।

उप. कमा. सुभाष चन्द्र शर्मा
सी.टी.सी *3*, के.रि.पु. बल

वर्दी से बड़ा सिपाही

वो सिपाहियों को भर्ती कर ले आये थे, बड़े खुश नजर आये थे, दस सहस्त्र में दस को चुना था, भर्ती के दौरान ना ही किसी की चिट्ठी पढ़ी थी, ना ही किसी का टेलीफोन सुना था। सोचा था, अच्छे तगड़े लड़के है, नाम कमाएगें क्वार्टगार्ड व खेलों में भी अलग नजर आएगें।

आते ही उन्होंने सीएचएम को बुलाया, इन्हे किट दिलवाओं हुक्म सुनाया, अगले दिन जब साहब मार्के में आया, उन लड़कों को सिविल ड्रेस में पाया, उसने सीएचएम को फिर बुलाया, इनको किट क्यूँ नहीं दिलाई, बोला साहब मैनें किट तो कल ही दिला दी, फिर ये सिविल ड्रेस में क्यूँ आये, पी टी ड्रेस क्यूँ नहीं पहनाई है। सीएचएम, बोला साहब पहनाई थी, पर पीटी ड्रेस फिट नहीं आयी, निकर जांघे से ऊपर नहीं जा रही थी, बनियान ब्लाउज जैसी नजर आ रही थी, मौजे पैरों में नहीं आ रहे थे. पीटी शूज में पैर नहीं घुस पा रहे थे, तो इनको वर्दी पहना कर लाना था, साहब मैंने उसकी भी टाई कराई थी, पर इनको वर्दी भी फिट नहीं आई थी, शर्ट के बटन नहीं लग पा रहे थे, पैंट घुटनों तक ही आ रहे थे।

साहब ने आफिस में आते ही क्वार्टर मास्टर को बुलाया था, बडी वर्दी दिलाओं हुक्म सुनाया था, सुनकर क्वाटर मास्टर बोला साहब इनको 1 न० वर्दी दी है, जो इनको नहीं आती है, सीआरपी में सबसे बड़ी वर्दी यही आती है। क्वार्टर मास्टर साहब ने यह बात जब साहब को बताई तो उन्होने वहीं टेलर को बुलाया, बड़ी वर्दी सिलो हुक्म सुनाया, सुनकर टेलर डरते–डरते बोला। साहब जो स्केल हमें मिलता है, उसमें तो इतनी ही बडी वर्दी सिलती है।

साहब ने फिर क्वार्टर मास्टर को बताया, कि वर्दी का कपड़ा बहुत खराब है कहाँ से मंगाया है, वह बोला साहब यह आरसी की सप्लाई है, वहीं से आया है। साहब जब शाम को घूमने जा रहे थे, तो उन्होने देखा, कि कुछ लोग मच्छरदानी के अन्दर कछुआ छाप जला रहे थे, साहब ने पूछा कि तुम लोग जब मच्छर दानी लगाते हो तो फिर कछुआ छाप क्यूँ जलाते हो, साहब का हुक्म है कि मच्छर दानी लगाना है, इसलिए हम लोग मच्छरदानी लगाते है, जबकि इसमें मच्छर आराम से बाहर से अन्दर आते है, उनसे बचने के लिए हम लोग कछुआ छाप अगरबती जलाते है।

साहब ने इन सब मुद्दों को वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन में उठाया था,

डी जी साहब ने मसौदा मंत्रालय को भिजवाया था, कुछ दिनों बाद वहाँ से एक गुप्त संदेशा आया था, कि आपने बड़ा गलत काम किया है। इस तरह के मुद्दे उठा कर फोर्स को बदनाम किया, आईन्दा से ऐसा काम नहीं करना है, वर्दी से बड़ा सिपाही भर्ती ही नहीं करना है। इसके बाद ही मंत्रालय ने एक नया काम किया, के.रि.पु. बल को स्थायी आदेश 10/2000 से बांध दिया। अब जो सिपाही आते हैं, वह वर्दी में पूरे आ जाते है, जो वर्दी से बड़ा हो जाता है, वह मेडिकली अनफिट होता जाता है।

सउनि (म) जी.न.अवस्थी
सीटीसी–तीन, मुदखेड़

एक फोजी था वो

हमारी नींद के लिए वो जागता रहा,
हम थक के रूक गए, मगर वो भागता रहा।
हम अच्छा बुरा कहके जिसे भूल भी गए,
वो दिल में रख के बात जिसे नापता रहा।
वो भीड में अकेला तनहाई में भी मशरूफ,
अपने हर एक गम को यूँ ही टालता रहा।
कभी सूखे कभी बाढ़, कभी दँगों के पीछे,
अपने हाथों की लकीरों की खुशी बाँटता रहा।
एक ही जरूरत थी उसकी हर जगह मगर,
कभी सरहदों के पास, कभी गांगा के किनारे।
कभी ऊँचे पर्वतों पर कभी सीमा के किनारे,
कभी नहीं रूका वो, सदा चलता रहा।
अपने माथे के पसीने से सींचता हुआ,
इस देश का भविष्य और हमारा चैन।
उसका अपना कुछ भी नहीं था मन मौजी था,
वो श्रद्धा का पात्र था एक फौजी था वो।

उ०नि०(मं.) विभा त्रिपाठी
ग्रु० केन्द्र, गुड़गाँव

"शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है। तब केवल शब्दों को याद रखने का बोझ ही विद्यार्थी के दिमाग पर नहीं पड़ता, बल्कि विषय को समझने में भी उसे बड़ी कठिनाई होती है। यह तो स्पष्ट है कि जहाँ रटने की शक्ति बढ़ती है वहाँ समझने की शक्ति मन्द पड़ जाती है। हमारे मुल्क की संस्कृति एक ही है, यह हिन्दी संस्कृति है।"

–सरदार बल्लभ भाई पटेल

"हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारत में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने और समझने वाले व्यक्ति मिल सकते हैं। हिन्दी सीखने का कार्य एक ऐसा त्याग हैं जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को राष्ट्रीय एकता के हित में अवश्य करना चाहिय।"

–श्रीमती एनी बेसेंट

हास्य व्यंग

भगवान कभी किसी को जूनियर न बनाए।

‘करे चाहे कोई, फंसेगा यो ही।

सूरज अगर धरती के चारों ओर चक्कर लगाता है, तो लगाता है इसमें मेरा क्या जाता है, कौन अब धरती को उठा के सूरज के चारों ओर चक्कर लगवाए, कौन उनको समझाए, कौन उनसे जा के इस पर करता रहे फाईट बास इज आलवेज राईट।

वो बोले जब प्यास लगती है तभी कूँए के पास आ के रोते हो, बाकी समय क्या भाँग खा के सोते हो, तुम्हें याद दिलाना चाहिए था कि इस बार फिर 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस मनाया जाता है।

“भूल गया सर” यह तुम्हारे पास अच्छा बहाना है। हमें क्या सपने आ रहे हैं, हम अपना काम तो ठीक से कर नहीं पा रहे हैं। सारा दिन हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हो, तनख्वाह क्या फोकट की लेते हो।

यही सारे ताने सुन–सुन कर कान पक जाते हैं, हम सारे जूनियर भगवान से यही तौफा मांगते है, कि हे भगवान, जो भी सिस्टम करना है करके दिखाए, परन्तु कभी किसी को जूनियर नहीं बनाएँ।

एक दिन साहब बोले, आज बहुत थक गया हूँ, नींद आ रही है, मैंने कहा आ रही होगी। अगले दिन मैंने भी कह दिया साहब थक गया हूँ, नींद आ रही है, बोले चैक कराओ बीमारी होगी।

ऐसी–ऐसी बातों से कोई तो आ के बचाए, भगवान कभी किसी को जूनियर न बनाए।

तो भाईयों संसद में बजट सेंशन के आखिरी दिन शहीद फौजियों का मुद्दा एक बार फिर गरमारया गया, अपोजीशन पार्टी के एक नेता जी द्वारा यह सवाल उठाया गया, कि देश के लिए लड़ते हुए जो लोग शहीद हो जाते हैं, उनके वेलफेयर के लिए आखिर हम क्या क्या कर पाते है?

क्योंकि यह मुद्दा सैनिकों में वेलफेयर का था तो इस पर बिना वॉक आउट हुए पूरे दिन गहन रूप से विचार किया गया परन्तु फिर हर मुद्दे की तरह इस मुद्दे को भी पार्लियामेन्ट के अगले सेंशन लिए स्थगित कर दिया गया।

अब रिएक्शन क्या होता है:–

गृह मंत्रालय ने उसी दिन तुरन्त अपने अधीन सभी महानिदेशालयों को फैक्स किया कि पिछले 10 सालों में शहीद हुए कार्मिकों को दी गई सुविधाओं का ब्यौरा दो महीने के अन्दर अन्दर भेजें।

हमारे महानिदेशालय ने अपने सेक्टरों से पिछले 20 साल का यह ब्यौरा एक महीने के अन्दर माँगा। सेक्टर कार्यालयों ने पिछले 40 साल का ब्यौरा अपने रेंज कार्यालयों से अगली मण्डे मीटिंग तक मांग लिया।

हमारे रेंज कार्यालय से शुक्रवार शाम को सिगनल प्राप्त हुआ कि पिछले 50 सालों का ब्यौरा शनिवार शाम तक उनके ऑफिस में पहुंच जाना चाहिए।

कम्पनी कमाण्डर : पीछे से दूसरी लाईन का बॉयें वाला जवान, क्यों बात कर रहा है?



बॉयें वाला जवान : (मन ही मन में) खुद एक घंटे से भाषण दे रहा है, हम कुछ नहीं बोले। अभी हम बोल रहे है, तो ?????

अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक महोदय ने उस सिगनल पर लिख दिया कि शनिवार लन्च तक यह ब्यौरा प्रस्तुत करें। डी०सी० एडम के रास्ते यह सिगनल अब ए०ओ० तक पहुंचा दिया गया। ए०ओ० साहब द्वारा शनिवार सुबह आते ही मुझे बुला लिया गया।

करे चाहे कोई भी फॅसेगा वो ही।

वैसे तो सारा हफ्ता बिलकुल सही गुजरता है बस शनिवार ही अकसर मुझ पर भारी पड़ता है।

ए०ओ० साहब बोले, पार्लियामेन्ट प्रश्न है जरा तेजी दिखाओ। आजादी के बाद का वेलफेयर का ब्यौरा सभी फाईलों सहित नियमों के साथ मेरे पास एक घन्टे के अन्दर अन्दर ले आओ।

मैंने कहा साहब एक घन्टे में विस्तृत ब्यौरा तो क्या फाईलों का ब्यौरा तक तैयार नहीं कर पाउँगा। अब आप ही बताइये विस्तृत रिर्पोट भला कैसे बनाउँगा। वो बोले मैं कुछ नहीं जानता हूँ, बड़े साहब बहुत गुस्से में हैं, मैंने कहा वो तो हमेशा रहते हैं, क्या कोई भी काम हम उनको ठीक से करके देते हैं?

बोले ठीक है-ठीक है, अब बाते मत बनाओ, यहां से सीधे स्टोर में जाओ, वेलफेयर की पिछली सारी फाईले निकाल लो, उन पर धूल जमी होगी झाड़ लो, मैनें कहा सर फाईले तो मैं निकाल लूंगा, यह बताईए, विस्तृत ब्यौरे में क्या-क्या दूँगां,

बोले खडे-खडे पहेलिया मत बुझाओ, तुम्हे जो समझ में आए लिख कर ले आओ, मैंने कहा वैसे तो कागजों में तो बहुत कुछ हो रहा है सब टेप दूंगां और थोडा बहुत जो वेलफेयर के नाम पर हो रहा है वो भी चेप लूँगां,

उन्होने पूछा कैसे, मैंने कहा जैसे कटिंग एण्ड टेलरिंग, ब्यूटी पार्लर, केन्डल मेकिंग वगैरह-वगैराह, वो बोले संसद में सैनिको के वेलफेयर पर हो रहा है हंगामा तू आदमी है या पजामा,

देश के नेताओं को कटिंग एण्ड टेलरिंग सिखाएगा।

इस ग्रुप सेन्टर में ताले लगवाएगा। बोले छोटा मुँह बड़ी बात करते हो, यू ही खडे समय बरबाद करते हो।

ए० ओ० साहब बुरी तरह मुझे डाटंने लगा। मैं वहाँ सीधे स्टोर की तरफ भागा ताला खोला जल्दी से फाईले छाँटने लगा। कुछ मोटी फाईले बड़ी सी अलमारी में घुसी पड़ी थी। निकालने की कोशिस की फाइलें उसमें फसी पड़ी थी।

तभी अचानक जैसे मेरी किस्मत ही फिर गई, फाईलों से भरी अलमारी मेरे ऊपर गिर गई, जितना साहस था सब छूटने लगा फाइलों की बजह मेरा दम घुटने लगा।

तब तक देखा फाईलों के अन्दर से एक हाथ निकल कर आया और मुझे दबोच लिया, मैंने उफ तक नहीं किया। पता नहीं भाग्य में किसके साथ था। वो यमराज का हाथ था।

उधर देखा एक ही पल में पूरा स्टाफ स्टोर रूम में उमड आया, पहले अलमारी हटाई, फिर फाईले और फिर मुझे उठाया, सीधे अस्पताल पहुंचाया। झट से ऑल इण्डिया मेडिकल के लिए एम्बुलेन्स तैयार करवा दी गई, सांस नहीं चल रही थी इसलिए ऑकसीजन लगा दी गई। उधर स्टाफ वाले मुझे दिल्ली शिफ्ट करा रहे थे, इधर यमराज जी मुझे घसीटते हुऐ ले जा रहे थे।

मैंने कहा यमराज भाइ थोडा आराम से ले जाइए, पृथ्वी लोक के इस जूनेयर मोस्ट कवि पर कुछ तो तरस खाईए। बोले तरस वाली कोई बात नहीं है। इन एम्स के डॉक्टरों ने सारा धन्धा चौपट कर रखा है, एक बार इनके हाथ में पहुंच जाओगे तो मेरे हाथों से निकल जाओगे। मैं तो अपनी रोजी रोटी बचा रहा हूँ, समय नहीं है इसलिए घसीटता हुआ लिए जा रहा हूँ।

(मैंने सोचा अगर यह बात है तो इसे बातों में लगाता हूँ) मैंने कहा यमराज भाई एक सवाल बार बार मेरे जुबान में अटक रहा है, मुझे आपका चेहरा कुछ जाना पहचाना सा लग रहा है। पता नहीं किस्मत का क्या लेखा है? मुझे ऐसा लगता है मैंने पहले भी आपको कहीं देखा है।

वो बोला यही बात मुझसे कहते है सभी, दिल्ली गए हो कभी, मैं दिल्ली में ब्ल्यू लाईन बसों में अक्सर चलता हूँ अपने बिजनेस में आई कमी को वही से पूरा किया करता हूँ। इधर जी०सी० में स्टाफ ने आपस में बातें करना शुरू कर दिया, अच्छा आदमी था, सबसे हॅस बोल लेता था, पर मजाल है किसी का काम करके नहीं देता था, ओ०एस० साहब बोले आदमी तो जैसा भी था यह बाद में देख लेंगे, मुझे तो पहले यह बताओ इसका चार्ज किसको देगें।

तभी देखा एम्बूलेन्स अभी-अभी दिल्ली में प्रवेश हुई है और एक रेड लाईट पर रूकी हुई है। यह देखते ही मैंने यमराज से कहा:—

यमराज भाई एक बात बताऊँ बुरा न मानो तो, रास्ता काटने के लिए कविता - सुनाऊँ, बोला तू क्या मुझे विक्रम और अपने आप को बेताल समझता है, चुपचाप यहाँ से चलता है कि नहीं चलता है।

उधर जब मेरे सहयोगीगण मुझे लिए एम्स में प्रवेश कर रहे, इधर मैं और यमराज स्वर्ग और नर्क के बीच बनी सड़क पर से गुजर रहे थे। मेरी दाहिनी ओर स्वर्ग था और वॉई ओर था नरक, बताऊँ कितना था फरक जैसे आप लोग अपने-अपने टी०वी सेट के सामने रिमोट लेकर बैठे हों स्वर्ग बिलकुल ऐसा था जैसे अस्था चैनल, साधना चैनल, संस्कार चैनल परोपकार चैनल, जी म्यूजिक चैनल, जी सिनेमा, स्टार प्लस, ए०एक्स०एन०, स्टार मूवीज, फैशन टीवी वगैराह वगैराह और सामने जो धर्मराज का दारबार लगा हुआ था वो बिलकुल ऐसा था जैसे दूरदर्शन का नेशनल नेटवर्क।

यह देखते ही मैंने झट से यमराज जी से कहा, यमराज भाई मुझ पर सिर्फ एक उपकार कीजिएगा, हो सके तो मुझे नरक में भिजवा दीजिएगा। बोले इसमें मेरा क्या फायदा होगा? मैंने कहा वाह भाई, पहले तो खाली हाथ ऊपर उठा लाते हो फिर फायदे नुकसान की बाते समझाते हो। अब मेरे पास कुछ देने के लिए है नहीं, इसमें मेरी क्या गलती है? मुझे क्या पता था यहाँ भी रिश्वत चलती है।

यमराज जी बोले रिश्वत वाली बात नहीं है, खत्री साहब आप तो बस इतना कर दीजिएगा। धर्मराज जी आपसे जब कविता सुनाने को कहें तो मेरे ऊपर एक अच्छी सी कविता जड दीजिएगा।

मैंने सोचा हर जगह कॉटे की टक्कर है, यहाँ भी वही इम्प्रेशन वाला चक्कर है।

तो भाई इधर जैसे ही यमराज जी ने मुझे धर्मराज जी के दरबार प्रस्तुत किया उधर एम्स के डॉक्टरो ने इमरजन्सी रूम में मुझे मृतक घोषित कर दिया।

जी०सी० में मेसेज आया तो तुफान मच गया, आधा जी०सी० यहीं कह रहा था। इसे भी शनिवार ही मिला था मरने को हफते के बाकी दिन क्या कम थे यह काम करने को। एक तो आज रेवाडी की गाड़ी छुडवा दी, ऊपर से कल की भी छुट्टी मरवा दी।

उधर धर्मराज बोले यमराज भाई आज बडे लेट आए हो, यह किसे उठा लाए हो, वो बोले महाराज यह पृथ्वी लोक का जूनियर मोस्ट कवि है, सी०आर०पी०एफ० में काम करता है, फाईलों के नीचे दबा पडा था, मैं वहीं से गुजर रहा था, दबोच लाया हूँ, बातों में लगा रहा था, इसलिए लेट आया हूँ।

उन्होने पूछा क्या करते हो? इन कवियों का यमराज जी बोले, महाराज सारी उमर तो यह कवि लोग अपनी-अपनी बीबियों पर हूल-जलूल कविताएँ लिख कर लोगों को हँसाते हैं, ऐसे लोग पुण्य थोडी ही कमाते हैं। नरक में ही भेजे जाते हैं। उन्होने ने पूछा यह कवि शादी शुदा है, इस बार मैंने झट से कहा जी हाँ महाराज, बोले इसे भी नर्क भेज दो, आज की आज।

तभी धर्मराज ने पूछा कवि महोदय नीचे सब कुछ कुशल पूर्वक चल रहा है, मैंने कहा महाराज आपकी परम कृपा है, अब आपसे क्या छुपा है? बाकी सब कुछ तो ठीक लगता है, बस एक ही बात का खटका है, नीचे के लोग दुख और सुख आपस में ठीक ढग से नहीं बॉटते है, और हर जगह सीनियर अपने जूनियर को बहुत बुरी तरह डॉटते हैं।

आप तो कुछ ऐसा चमत्कार करके दिखाए, कभी किसी को जूनियर नहीं बनाए।

धर्मराज जी बोले ऐसा कैसे हो सकता है, जब कोई जूनियर नहीं होगा तो काम कौन करेगा? और यही जूनियर एक न एक दिन तो सीनियर बनेगा ही बनेगा।

मैंने कहा महाराज यह सब आखों का धोखा है ऐसा कभी नहीं होता है। आप पृथ्वी लोक को छोडिये, स्वर्ग लोक को ही ले लीजिए, यमराज भाई स्वर्ग लोक में जूनियर मोस्ट जो है पिछले हजारों सालों से एक ही पोस्ट पर क्यों है? क्या यह जूनियर कभी आपकी जगह ले पाया है? और तो छोडिये क्या कभी ब्रहमा, विष्णु व महेश ने आपको अपने बराबर में बिठाया है?

आपको क्या पता यमराज भाई, आपसे कितना डरते हैं आज भी ब्ल्यू लाईन बसों में सफर किया करते हैं। लम्बा सफर है, क्या कभी आपको अपनी प्रोब्लम बतायी है? इतिहास गवाह है आज तक अपनी कार तक नहीं ले पाए हैं,

इतना सुनते ही यमराज जी की आँखे भर आई मैंने कहा अपने आप को सम्भालों यमराज भाई मैंने कहा महाराज आप मेरे ऑसू पौछे, चाहे न पौछे परन्तु इनके वेलफेयर के बारे में जरूर कुछ सोंचें। यह मत सोचिए कि मैं आप देवताओं को भडका रहा हूँ, प्रोब्लम आपके लेवल की है, इसलिए बता रहा हूँ।

इन्सट्रक्टर : सुच्चा सिंह, अपने बायें वाले जवान को जगाओ, जो क्लास में सो रहा है।



सुच्चा सिंह : (मन ही मन में बोलते हुए) खुद सुलाता है, दूसरों को बोलता है, उठाने के लिए

तब तक देखा यमराज जी की आँखों में तो ऑसू थे, परन्तु धर्मराज जी का चेहरा पीला पड़ रहा था, सारी स्थिति देखकर मैं खडा-खडा डर रहा था।

तभी धर्मराज जी गरज कर कठकठाती आवाज में बोले, ओ वेलफेयर के नाती, तुझे एक फाईल तो निकालनी नहीं आती सीनियेरटी जूनियरटी के नाम पर हम देवताओं को आपस में लडवाते हो, और यमराज जी आप ऐसे नमूने कहाँ से उठा लाते हो,

बोले मेरा दिमाग मत खराब कराओ, इसे मेरी नजर से हटाओ, इसे इसी पल लात मार के भगाओ, जहाँ से लाए हो वही छोड के आओ,

मुझें नहीं पता तू कभी सीनियर बनेगा कि नहीं बनेगा, पर यह आदमी स्वर्ग लोक का नक्शा जरूर चोपट कर देगा।

उधर एम्स में दो सफाई कर्मचारी मेरी बॉडी को पैक कर रहे थे, हाथ पैर बाँध रहे

थे, थोडा-थोडा डर रहे थे।

इधर मैं चिल्ला चिल्ला के कह रहा था, रहम करे महाराज रहम, अब मुझे नीचे मत भेजिए, नीचे गया तो लोग तरस नहीं खाएंगें, ऑफिस वाले मुझसे बहुत काम करवाएंगें, पहले तो सारी की सारी फाईलें वापस उठवाएंगें और अलमारी जो टूट गई है उसकी भी रिकवरी करवा देंगे, थी तो पुरानी सी पर उसके लिए भी आडरली रूम में बुलवा लेंगे।

यमराज ने मेरी एक न सुनी और मुझे ऐसी लात मारी, मुझे हिलता हुआ देखकर दोंनो भाग खड़े हुए सफाई कर्मचारी, एक दरवाजे पर भूत-भूत कहता हुआ गिर गया, दूसरे का तो जैसे भेजा ही फिर गया।

उधर एस०एम० और ओ०एस० साहब भागते हुए आ रहे थे, मुझे याद है वो मुँह में बढ़-बढ़ा रहे थे, वो कोई भूत हूत नहीं है खत्री ही होगा। वो भूत से कोई कम थोडी ही लगता है, यह आदमी एक जगह टिक कर रह ही नहीं सकता है,

दोनों सेरिमोनियल ड्रेस में थे, मैंने लपक कर पूछा सर फाईले मिल गई? ओ०एस० साहब गुस्से से लाल पीले होकर बोले फाईलों की तूमार गोली, तेरे चक्कर में आज हमारी अच्छी खासी परेड हो ली, कमर पकड़ गई है, पैर अकड़े पड़े हैं, सुबह से भूखे प्यासे वर्दी लगाए खड़े हैं।

अब तो तू ठीक लग रहा है, तेरा भी कुछ समझ नहीं आता है तुझसे एक जगह आराम से टिक के नहीं रहा जाता है, अब सुन मेरी बात, एक काम करना ये मेडिकल वेड रेस्ट के चक्कर में मत पडना कल एतवार है, मेरी तरह आराम फरमा लेना और सोमवार को आते ही वेलफेयर की रिर्पोट भिजवा देना,

तभी देखा भीड में से मेरे पिता जी निकल के आ रहे थे, मुझे बोलता देख वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे, रो रो के बुरा हाल था। अपने आप को बडी मुश्किल से सम्भाल रहे थें, छूटते हीं मुझे गले से लगा लिया, बोले तू भी मेरा अजीब बेटा है, अभी तो तुझसे सीनियर यहाँ जिन्दा बैठा है, बोले जान बची तो लाखों पाए, भगवान तुझे किसी की बुरी नजर से भी बचाए, और ऐसे मामले में तो बेटा तू हमेशा जूनियर ही रह जाए जूनियर ही रह जाए, जूनियर ही रह जाए।

(स०उप०नि०(मं) कृष्ण गोपाल खत्री
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल (गुडगाँव)

कावा समाचार

सी.आर.पी.एफ पब्लिक स्कूल ने मनाया 59 वाँ स्वतंत्रता दिवस

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी में 59 स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूम धाम से बनाया गया। इस समारोह में कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा, उपाध्यक्षा श्रीमती अरूणा मेहरा तथा अन्य सदस्य उपस्थित थे। स्कूल के श्रद्धा, श्रम, शक्ति तथा शौर्या हाउस के एन.सी.सी. के छात्र-छात्राओं ने परेड में हिस्सा लिया। श्रीमती रश्मि सिन्हा ने स्कूल में तिरंगा फेहराया तथा परेड की सलामी ली, इस समारोह में स्कूल के नवगठित बैडं ने भी हिस्सा लिया, स्कूल में छात्र छात्राओं ने देश भक्ति के मधुर गीत गाये। समारोह में स्कूली बच्चों ने अपने विभिन्न करतबों से दर्शकों का मन मोह लिया।



स्वतंत्रता दिवस, *2005* के अवसर पर सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी में आयोजित समारोह में सलामी लेती हुई कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा

इस अवसर पर इण्टर हाउस वाद विवाद भाषण प्रतियोगिता के विजेता छात्रों को मुख्य अथिति द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। वाद विवाद प्रतियोगिता का विषय "क्या नशा ही जीवन का सार है" था। श्रीमती रश्मि सिन्हा ने मेधावी छात्रों को भी प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनका मनोबल बड़ाया और उनसे भविष्य में और अच्छा प्रदर्शन करने का आह्वान किया। स्कूल के नन्ने मुन्ने छात्रों ने "वो दिन आया" नामक नृत्य नाटिका व गवरा नृत्य प्रस्तुत किया।

स्कूल के प्रचार्य श्री सूरज प्रकाश ने कावा अध्यक्षा का आभार प्रकट करते हुए कहा कि कावा द्वारा स्कूल की उन्नति एवं विकाश में किए जा रहे प्रयास सदैव सराहनीय हैं।

श्री सूरज प्रकाश ने छात्र-छात्राओं, अध्यापकों तथा स्कूल के कर्मचारियों को स्वतंत्रा दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हम इस स्वतंत्र देश के अहम हिस्सा हैं। अतः हमारा भी कर्तव्य है कि हम देश की उन्नति एवं विकास के लिए कुछ न कुछ कार्य जरूर करें।



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी में आयोजित समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते स्कूली बच्चे

समारोह में श्रम तथा श्रद्धा हाउस के उपलाब्धेयों को चचा की गई। इस अवसर पर स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा निर्मित विभिन्न वस्तुओं एवं परियोजना माडलों की प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निदेशक (शिक्षा) श्री जी. बालासुब्राहमनियमन ने किया। स्कूल के प्रचार्य ने स्कूल में एक नये विषय फैशन स्टडीज आगामी शिक्षण सत्र से आरम्भ करने की घोषणा की। श्री सुब्राहमनियमन ने अपने सबोंधन में कहा कि स्कूल के विद्यार्थियों एवं स्टाफ को केरिपुबल के जवानों एवं उनके परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारियों का निर्वहन कावा के मार्फत करने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए।

कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए और जीवन के किसी भी पल को व्यर्थ नहीं गवाना चाहिए। श्रीमती सिन्हा ने कन्या भ्रूण हत्या, नशा खोरी आदि जैसे विषयों को भी स्कूल के क्रिया कलापों में शामिल करने पर जोर दिया ताकि इस सम्बध में समाज में जागरूकता पैदा की जा सकें। श्रीमती सिन्हा ने महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल दिया तथा उन्होंने स्कूल में प्राइमरी सेक्सन बाल वाटिका स्थापित करने तथा स्कूल में बालिकाओं के लिए नये होस्टल का निर्माण करने की घोषणा की। श्रीमती सिन्हा ने स्कूल द्वारा लगाई गयी वार्षिक प्रदशनीं को बड़े ध्यान पूर्वक देखा तथा बच्चों से विभिन्न प्रोजेक्ट माडलों के बारे में जानकारी हासिल की। छोटे बच्चों द्वारा तैयार किये गये सामान जैसे प्लाटिक बैग, काडबोर्ड इत्यादि की प्रशसां करते हुए इनकी कौशलता की सराहना की।

पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन) एवं स्कूल मैनेजर डा० ए.पी. माहेश्वरी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि स्कूली बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा, इससे इनकी बुद्धिमता कौशलता व क्रियाशीलता का पता चलता है डा० माहेश्वरी ने इस अवसर पर सभी को शुभ कामनायें दी।

“क्या नशा ही जीवन का सार है ?”



जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य को सफलता तभी प्राप्त हो सकती है जब उसने जीवन का सार अर्थात उद्देश्य निर्धारित कर लिया हो। जीवन सार का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त जीवन ही होना चाहिए जो उसके जीवन को प्रत्येक कर्म की प्रेरणा दे। साथ ही उस प्रेरणा को अनुशासित भी करे। जीवन का सार ही जीवन का सर्वोच्च अधिकार है। इसकी सत्ता ही सबसे सर्वोपरि है। जीवन का उद्देश्य जीवन का मार्ग बनाता है। यदि मार्ग सही है तो जीवन एक फूल की तरह है और यदि यही गलत हो जाए तो जीवन एक वेड़ी या बोझ बना जाता है। अतः मनुष्य को अपने जीवन का सार जीवन के तराजू में ही तोल कर देख लेना चाहिए, जैसा कि मानते है जीवन का सार ही जीवन का मार्ग है किन्तु क्या जीवन का अन्त ही जीवन का सार हो सकता है? नहीं कदाचित नहीं।

तो फिर नशा जिससे जीवन भी मौत से बदत्तर होता है किसी के जीवन का सार कैसे हो सकता है? नशा अर्थात मदिरा, गुटका, स्मैक, पान मसाला आदि हानिकारक चीजों का सेवन नशा है। जिनकी शुरूआत चाहे कैसे भी क्यों न हो, किन्तु अतं केवल मौत है। ऐसी मौत जिससे पढे-लिखे ही नहीं, अनपढ–गवांर भी अब वाकिफ है, फिर भी इनका सेवन करते हैं। कुछ लोग गम कम करने के लिए नशा करते है तो कुछ इसका सेवन कभी कभार शौक के तौर पर करते है। शुरूआत में इन पदार्थों का सेवन कम मात्रा में करते हैं, किन्तु धीरे-धीरे इसके आदी हो जाते हैं। और केवल वे नशेडी या शराबी बन कर ही रह जाते हैं।

आज जिस प्रकार से हम फैशन शैली से प्रभावित होकर कई चीज अपने जीवन में अपना रहे हैं, उसी प्रकार यह नशा भी आज की दुनिया का फैशन बन गया है। जैसे- मदिरा सर्वाधिक उत्तेजक पेय पदार्थ है, जो अनेक प्रकार की बुराईयों को जन्म देकर समाज के लिए घातक है। बार-बार अधिक मात्रा में इसका सेवन करना शरीरिक, आर्थिक तथा सामाजिक रूप से हानिकारक है। यह मस्तिष्क तथा सोचने की शक्ति को क्षीण कर देती है। जैसे ठीक से न सो पाना, चिन्ताएं बढ़ना, दबाव की स्थिति सहन

न कर पाना आदि। इस प्रकार की समस्याएं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करने पर भी होती हैं। इसीलिए इनसे दूरी बनाए रखने में ही समझदारी है।

यही नहीं, लंबे समय तक इनके सेवन करने के बाद अचानक छोड़ने या कम करने वाले व्यक्ति को चिन्ता, नींद न आना, आसंकित या भयभीत होना, दौरा पड़ना आदि जैसी अनेक तरह की पेरशानियों का सामना भी करना पड़ता है। एक बार इन नशीले पदार्थों के चगुंल में फसने पर इनसे छुटकारा पाना आम इन्सान के लिए अत्यंत मुश्किल एवं दर्दनाक हो जाता है।

ऐसे मनुष्य को जरूरत है कि वह धैर्य एवं दृढ़ सकंल्प से इस मीठे जहर से आजाद होने की कोशिश करने में दृढ़ संकल्प में बड़ी शक्ति होती हैं, पीड़ित व्यक्ति दृढ़ इच्छा शक्ति से इससे छुटकारा पा सकता है।

आज के हमारे युवा कल देश के भावी नागरिक बनेगें, उनके भविष्य नशे में बुने जाल में न फंसें, हमें उसके लिए प्रयास करने चाहिए। किन्तु जैसा कि कहा गया है कि जहाँ चाह वहाँ राह अर्थात अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, यदि अब भी हम लोग निश्चिय कर ले तो इस समस्या का समाधान हो सकता है।

आज लोगों को जानकारी की नहीं बल्कि जागरूकता की जरूरत है और यह कार्य हमें करना है। याद रखिए जीवन को गले लगाईए मौत को नहीं, अपना सार जिदंगी को बनाइए नशे को नहीं।

सुरप्रीत कौर, (कक्षा 10वीं)
सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी, दिल्ली।

(15 अगस्त, 2005 स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में पुरस्कृत लेख के अंश)

नशा मुक्ति पर कार्याशाला

नशा मुक्ति हेतु कावा की एक अहम पहल

बल के जवानों बढ़ती नशाखोरी की प्रवृति पर अपनी चिन्ताओं को कार्यरूप देते हुए कावा ने नेशनल इन्स्टीटयूट ऑफ सोशल डिफेंस (एन०आई०एस०डी०) के सहयोग से नशे की रोकथाम पर महानिदेशालय के कांफ्रेंस हाल में 27 से 29 जुलाई, 2005 तक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य, नशाखोरी के विभिन्न पहलुओं पर विचार करना तथा सी०आर०पी०एफ० और कावा

के सदस्यों को नशे की रोकथाम के विषय में गहन जानकारी देना ताकि बल के कार्मिकों को आगे इस बारे में प्रशिक्षित किया जा सके।

इस कार्यशाला का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री ज्योति कुमार सिन्हा ने किया। अपने उद्बोधन में श्री सिन्हा ने बल में बढ़ती हुई नशाखोरी की प्रवृति पर अपनी चिंता जताते हुए कावा की इस पहल को प्रशंसनीय बताया। महानिदेशक ने यह उम्मीद जताई कि इस तरह के लाभप्रद कार्यक्रम आगे भी आयोजित होते रहेंगे तथा इसके सहभागी अपने अनुभवों को विस्तार देंगे।



ग्रप केन्द्र, गुडगाँव में नशा मुक्ति पर आयोजित कार्याशाला में भाग लेती महिलाएं ।

एन०आई०एस०डी० नशा निषेध की दिशा में काम करने वाली सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय से संबद्ध एक अग्रणी स्वायत्यशासी निकाय है। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में संस्था के निदेशक श्री सत्येन्द्र प्रकाश ने संक्षिप्त में संस्था के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कावा का आभार प्रकट करते हुए कहा कि कावा ने उन्हें इस देश के सबसे बडे अर्धसैनिक संगठन से जुड़ने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने बताया कि सैन्य बलों में इतने बड़े स्तर पर कार्यशाला/प्रशिक्षण सत्र चलाने का उनकी संस्था का यह पहला अवसर है।

तीन दिन चली इस कार्यशाला में कुल 22 सदस्यों ने भाग लिया, जिसमें कावा के 5

सदस्यों के अलावा सी०आर०पी०एफ० के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों व बटालियनों के अधिकारियों/ कार्मिकों ने भी भाग लिया।

इस कार्यशाला में एन आई एस डी के विशेषज्ञ वक्ताओं ने नशाखोरी के सभी पहलुओं जैसे नशाखोरी क्यों, इसकी शुरूआत, इसका लत में बदलना, नशा कैसे तैयार किया जाता है, नशा उन्मूलन में पीड़ित के परिवार की भूमिका आदि का विस्तार विश्लेषण किया।

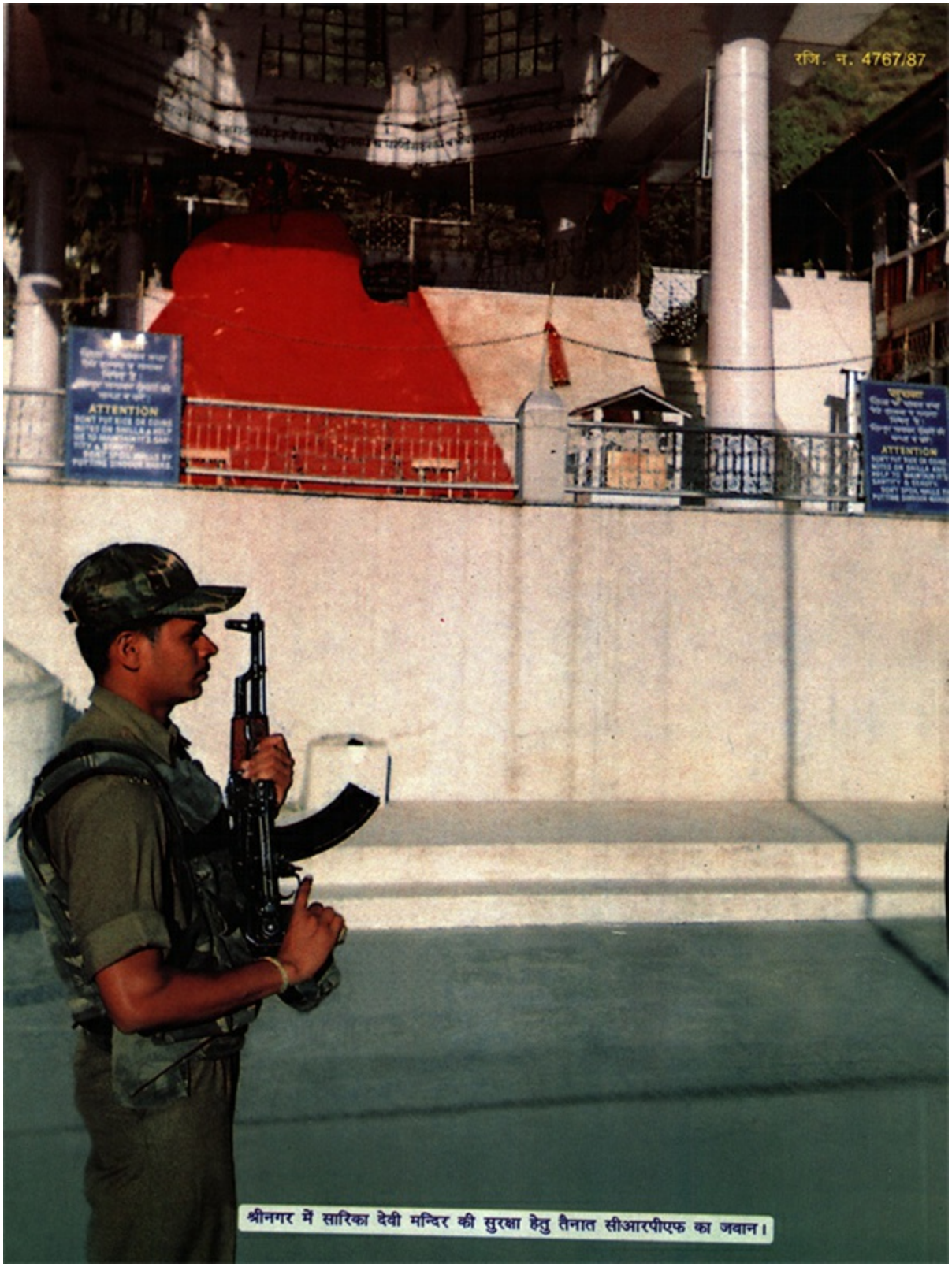
कार्यशाला का समापन श्रीमती रश्मि सिन्हा, प्रेसिडेंट कावा ने किया। समापन भाषण में कावा प्रेसीडेंट ने एन आई डी का आभार प्रकट करते हुए इस कार्यशाला को अत्यन्त उपयोगी बताया तथा यह उम्मीद जताई कि इस कार्यशाला में सम्मिलित प्रतिभागी अपने इस ज्ञान को व्यापक विस्तार देंगे तथा बल के जवानों को नशे के संबंध में जागरूक करेंगे।



नशा मुक्ति पर कावा द्वारा आयोजित कार्याशाला में भाग लेने वाले सदस्यों को प्रमाण पत्र प्रदान करती कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा।



5 सितम्बर, 2005 को कावा के सहयोग से मदिरा एवं नशा मुक्ति जागरूकता हेतु आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लेते ग्रुप केन्द्र, गुड़गांव के कार्मिक एंव उनके परिवार के सदस्य।



श्रीनगर में सारिका देवी मन्दिर की सुरक्षा हेतु तैनात सीआरपीएफ का जवान।

सी. आर. पी. एफ. समाचार

30 नवम्बर, 2005



केरिपुबल की ६६वीं वर्षगांठ समारोह में मुख्य अतिथि महामहिम राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी पाटिल *26* अक्टूबर, *2005* को *54*वीं अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप *2005* की चैम्पीयनशिप ट्राफी केरिपुबल को प्रदान करते हुए।



केरिपुबल के तत्वाधान में *23* अक्टूबर, *2005* को दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित *54*वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलेटिक चैम्पीयनशिप, *2005* को उद्घाटन के अवसर पर सौविनयर का विमोचन करते दिल्ली के उप राज्यपाल श्री बी. एल. जोशी एवं बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-18 अंक-7
30 नवम्बर, 2005
9 अग्रहायण शक, 1927

मुख्य सम्पादक
अभिषेक दयाल

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से **जन सम्पर्क अनुभाग**

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
यू. एस. प्रिन्टर्स, बी-186, ओखला,
औद्योगिक क्षेत्र - I, नई दिल्ली-110020

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्ष

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक)

सदस्य

एस.एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
वी.डी. टोकस, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
एल आर सिधरा, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
अभिषेक दयाल, जन सम्पर्क अधिकारी

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

सम्पादकीय

गत माह केरिपुबल ने अपनी 66वीं वर्षगांठ मनायी, यह मात्र एक वार्षिक उत्सव ही नहीं, एक संकल्प दिवस है, जो शहीद हुए उनकी अमर शहादत को स्मरण कर उनसे प्रेरणा लेकर, उनके द्वारा स्थापित परम्परा को ऊचां रखने, और आगे ले जाने का दिवस है।

केरिपुबल ने अपने 66 साल के इतिहास में अनेक गौरव पूर्ण क्षणों को जिया है, कर्तव्य पथ पर लड़ते हुए मातृ भूमि की गोद में सो जाना या शत्रु दमन कर विजयी ध्वज फैराने के दो विकल्पों के अतिरिक्त तीसरी राह केरिपुबल जवानों के लिए अनजानी है। अपने इसी विजय पथ पर केरिपुबल का साक्षात्कार 29 अक्टूबर, 2005 को वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे महानतम व्यक्ति से हुआ जिसे राष्ट्र का पहला नागरिक ही नहीं बल्कि देश के महान वैज्ञानिक होने का सम्मान भी प्राप्त है। वह व्यक्ति और कोई नहीं हमारे राष्ट्रपति ड़ा ए.पी. जे. अब्दुल कलाम थे। अर्ध सैनिक बलों के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब किसी राष्ट्रपति ने अर्ध सैनिक बल के वार्षिकोत्सव में आकर कार्मिकों की हौसला अफजाई की हो। यह हमारे लिए गौरव की बात है। देश के प्रति समर्पित होकर निष्पक्ष भाव से सेवा करने की जो शपथ डा. कलाम ने दिलाई, वह इतिहास में सदैव दर्ज रहेगी। आज हमारा मस्तक फक्र से ऊंचा हो गया है कि देश के सर्वोच्च महानतम व्यक्ति ने हमें इस लायक समझा और हममें विश्वास व्यक्त किया। इस शपथ को हम सब सदैव याद रखेगें।

वैसे तो गत माह समारोह का माह रहा, 13वीं आर. ए. एफ. वर्ष गांठ मेरठ में मनायी गई. इडिया गेट, लाल किला तथा कुतुब मीनार पर बल के बैड़ का भव्य प्रर्दशन हआ। देश के विभिन्न भागों की प्रमुख वस्तुओं एवं हस्तशिल्प व वस्त्र आदि सामान की झलक कावा के सहयोग से आयोजित वार्षिक कल्याण प्रर्दशनी में देखने को मिली।

दीपों का त्यौहार दिपावली इस माह मनाया गया, परन्तु इसकी झलक कुछ फीकी रही, उसकी एक वजह जम्मू कश्मीर में आये भूकम्प तथा दिल्ली में हुए सीरियल बम विष्फोट में मारे गये निर्दोष लोग। इन घटनाओं में मारे गये लोगों की आत्माओं को शान्ति देने तथा जो लोग पथ भ्रमित होकर ऐसे कुकृत कर रहे हैं उनको सदुबद्धि देने के लिए ईश्वर से प्रार्थना है। नक्सलवादियों की बारबार धमकियों के वाबजूद भी बिहार में स्वंतत्र एंव निष्पक्ष राज्य विधान सभा चुनाव कराकर लोकतांत्रिक सरकार के गठन में बल के जवानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 54वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलेटिक चैम्पीयनशिप का सफल आयोजन किया और हमारे खिलाड़ियों ने सर्वाधिक पदक वटोरे, उन सभी खिलाडियों को बधाई और आने वाली अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में और अधिक पदक प्राप्त करने के लिए शुभकामनाएं।

ह०
अभिषेक दयाल

इस अंक में

1. 66वां वार्षिकोत्सव समारोह

2. मानवीयता एवं सहानुभूति केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कार्यशैली के प्रमांणक हैं :- राष्ट्रपति डा० कलाम

3. जम्मू-कश्मीर में सीआरपीएफ की बढ़ती हुई भूमिका

4. आपदा प्रबंधन

5. प्राकृतिक आपदाएं और सी.आर.पी.एफ.

6. द्रुत कार्य बल के नये आयाम

7. 170वीं बटालियन का दीक्षांत समारोह

8. केरिपुबल का सजरू अभियान

9. सी.आर.पी.एफ. बनाम समाज सेवा

10. मानवता की मिसाल

11. बीस साल बाद

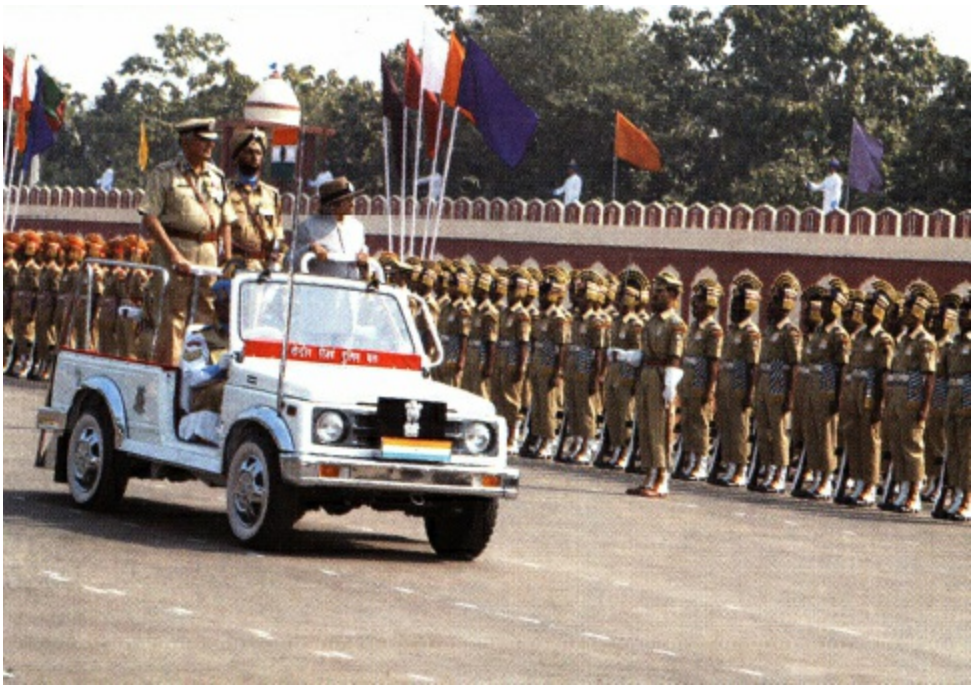
12. केरिपुबल की कल्याणकारी योजनाएं

13. सी.आर.पी.एफ. द्वारा राजभाषा प्रोत्साहनः

14. केरिपुबल के सिविक एक्शन कार्यक्रम

15. कविताएं

16. कावा समाचार







66वाँ वार्षिकोत्सव समारोह



राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम परेड का निरीक्षण करते हुए

किसी भी सगंठन व संस्था का वार्षिक समारोह एक महत्वपूर्ण समारोह होता है, क्योंकि यह उसकी उपलब्धियों, नीतियों, एवं खूबियों को प्रदर्शित करने का अवसर होता है। इस दौरान हर सस्था व सगंठन अपनी गौरवशाली परम्पराओं, किये गये कारनामों, उसके कार्मिकों द्वारा कर्तव्य पथ पर कायम की गयी मिसालें आदि का उल्लेख कर जनता में अपनी पहचान व साख बनाने के लिए संदेश देता है, कि उसके संगठन के कार्मिक सदैव देश की जनता के साथ है, देश हित ही उनके लिए सर्वोपरि है आदि।

वार्षिक समारोह जहां एक ओर अपनी उपलब्धियों का बखान करने का दिन होता है, वहीं उस संगठन के कार्मिकों से पूर्व में हुई कुछ खामियों व भूलों पर आत्म मन्थन करने का दिन भी सीख ली जाती है कि भविष्य में उनकी पुर्नावृति ना हो। यह अवसर कर्तव्य पथ पर जो वीर कार्मिक शहीद हो गये है उन्हे याद करने का भी दिन है। उनके द्वारा कायम की गई मिसालों व परम्पराओं को बनाये रखने तथा आगे बडाने की प्रतिज्ञा लेने का दिन भी। केरिपुबल पिछले 6 दशकों से राष्ट्र सेवा में एक सच्चे

परहरी की तरह निरन्तर कार्यरत है। एक बटा. के गठित इस बल की लगभग आज 200 से अधिक बटालियने तथा अन्य कार्यालय हैं, जिनमें लगभग 2.5 लाख कार्मिक देश की एकता अखण्डता के लिए आने वाली हर चुनौती का मुकाबला करने के लिए कृत संकल्प हैं। इस वर्ष केरिपुलब ने अपनी 66वीं वर्ष गांठ मनाई तथा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन वैसे ही किया गया जैसे किसी शादी/विवाह की तिथि तय होने के बाद विभिन्न तरह के समारोह आयोजित किये जाते हैं।

सी.आर.पी.एफ का बैण्ड प्रदर्शन

केरिपुबल की 66वीं वर्ष गांठ के उपलक्ष में विभिन्न आयोजनों के रूप में 13,14 तथा 23 अक्टूबर, 2005 को बल का बैड़ प्रदर्शन किया गया। बैड़ का प्रदर्शन सायं 3 बजे से 6 बजे तक किया गया। प्रदर्शन में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 56 ब्रास बैंड़ बादकों तथा 33 पाइप बैंड़ बादकों ने भाग लिया। अपने बैंड़ मास्टर की नेतृत्व में अपनी कला का भव्य प्रदर्शन किया। इन बैंड़ वादकों ने दिल्ली के प्रमुख पर्यटक स्थल कुतुब मीनार, इण्डिया गेट तथा लाल किला पर अपनी कला का प्रदर्शन कर आम जनता का मन मोह लिया। बैंड़ वादकों ने भारतीय तथा अंग्रेजी संगीत की विभिन्न मधुर धुनें बजा कर दर्शकों को रोमांचित किया। प्रेस मीडिया और विदेशी व देशी शैलानियों ने भी बल के इन बैंड़ वादकों द्वारा प्रदर्शित विभिन्न कला मुद्राओं की तारीफ की। याद रहे कि सेनाओं एवं अर्ध सैनिक बलों में बैड़ का प्रदर्शन केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं किया जाता बल्कि अपने जवानों सैनिकों को युद्ध भूमि में शत्रु को ललकारने एवं उनमें जोश भरने के लिए भी किया जाता है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पास आधुनिक साजो सामान से सज्जित पाईप बैंड़ तथा ब्रास बैंड़ की टुकडियां हैं जिनका प्रदर्शन आपने हर वर्ष गणतत्रं समारोह के दौरान राजपथ पर सदैव देखा होगा। हाल ही में अपने बैड़ कर्मियों की कला में और निखार लाने तथा बैड़ संगीत को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने के लिए केरिपुबल ने कादरपुर (गुड़गाव) में एक राष्ट्रीय पुलिस। बैड़ सस्थांन स्थापित किया है। इस संस्थान में सभी अर्धसैनिक बलों एवं राज्य पुलिस बलों के बैंड कर्मियों को आधुनिक बैंड संगीत का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।



कुतुबमीनार पर अपनी कला का प्रदर्शन करते केरिपुबल के ब्रास बैण्ड कर्मी



लालकिला पर अपनी कला का प्रदर्शन करता केरिपुबल का पाइप बैण्ड

कल्याण प्रदर्शनी



कावा के सहयोग से आयोजित वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि दिल्ली की मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित का स्वागत करती कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा एंव सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल की छात्राएं

केरिपुबल वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय कल्याण प्रदर्शनी का आयोजन सीआरपीएफ वाईब्ज वेलफेयर एसोसियेशन के सहयोग से 15 से 17 अक्टूबर, 2005 तक केरिपुबल के एम. टी. पार्क, सी.जी.ओ. कॉम्पलैक्स लोदी रोड़, नई दिल्ली में किया गया। आम जनता के लिए यह प्रदर्शनी बिल्कुल निःशुल्क थी। इस प्रदर्शनी में पूरे देश में फैले लगभग 30 ग्रुप केन्द्रों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र की प्रमुख वस्तुओं की स्टाले लगाई गयी तथा परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा निर्मित वस्तुएं भी विक्री हेतु रखी गयी।

इस प्रदर्शनी को लगाने का उद्देश्य एक ओर जंहा केरिपुबल के परिवार कल्याण केन्द्रों में कार्यरत महिलाओं की प्रतिभाव व कला को निखार कर उनका मनोबल बढ़ाना व उन्हे आर्थिक रूप से स्वाभलम्बी बनाना हैं, वहीं इस प्रदर्शनी से होने वाली आय को बच्चों तथा शहीद हुऐ कार्मिकों की विधवाओं के कल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए इखटटा करना है। इस वर्ष दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर श्रीमती दीक्षित ने जम्मू-कश्मीर में भूकंप से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए उदारता पूर्वक सहायता करने का अनुरोध किया। श्रीमती दीक्षित ने

कहा कि हम ऐसे वक्त पर मिल रहे है जब प्राकृतिक त्रासदी ने हमारे सुन्दर राज्य जम्मू-कश्मीर को ध्वस्त कर दिया है। हम सब इस दुःखद घड़ी में जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ हैं। श्रीमती दीक्षित ने केरिपुबल के मार्फत से जम्मू-कश्मीर के लोगों की सहायता के लिए हरेक को आगे आने की अपील की।

कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने मुख्य अतिथि को बताया कि जम्मू-कश्मीर के एक गांव "कमलकोट" को केरिपुबल ने गोद लिया है जिसके विकास एवं पुनर्वास के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। श्रीमती सिन्हा ने मुख्य अतिथि श्रीमती दीक्षित को बताया कि केरिपुबल के प्रत्येक कार्मिक के अंशदान से 4.70 करोड़ रूपये प्रधानमंत्री राहत कोष में पीड़ित लोगों के पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण के लिए दान किए हैं।

बल कार्मिकों की महिलाओं को कुशल बनाने में कावा की भूमिका की चर्चा करते हुए श्रीमती दीक्षित ने कहा कि ऐसे संगठनों के माध्यम से महिलाओं को शिक्षित व सशक्त बनाया जा रहा है ताकि वे अपने व परिवार के मामलों में सही निर्णय ले सकें। श्रीमती दीक्षित ने केरिपुबल की व्यावसायिकता की प्रशंसा करते हुए कहा कि हम सब भारतवासियों को आप पर गर्व है, जब कभी भी केरिपुबल तैनात की जाती है तो हम सुरक्षित महसूस करते हैं। समारोह की शुरूआत अतिथियों का दिल जीत लेने वाले सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी के छात्रों के शानदार आरकेस्ट्रा के प्रस्तुतीकरण से हुई।

3 दिन चली इस प्रदर्शनी में केरिपुबल के परिवारों ने ही नहीं बल्कि दिल्ली निवासियों ने भी खासी रूचि दिखाई और घरेलू सामान के अलावा सजावट तथा हस्थकला की वस्तुएं जमकर खरीदी। दर्शकों के अनुसार "इस प्रदर्शनी का सबसे बड़ा फायदा एक ही जगह सभी आवश्क सामान का उचित दामों पर सुलभ होना, इस प्रदर्शनी में देश के दूर दराज के भागों में पैदा होने वाली वस्तुएं भी मिल जाती हैं, इसीलिए अक्सर हम केरिपुबल की इस प्रदर्शनी का वर्ष भर इंतजार करते हैं।"

इस प्रदर्शनी की इस बार सबसे बड़ी खासियत यह रही कि केरिपुबल द्वारा चलाए जा रहे पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा आरकेस्ट्रा तथा रंगारंग कार्यक्रम का प्रदर्शन किया गया तथा स्कूल द्वारा प्रदर्शनी में अपना पण्डाल लगाया गया, जिसमें आधुनिक घरेलू तकनीक से सम्बधित मॉडलों को प्रदर्शित कर लोगों को संदेश दिया गया कि हमारी तकनीक भी विश्व स्तर की है। अतः स्वदेशी अपनाने में हमें गर्व होना चाहिए। इस वार कावा ने भी प्रदर्शनी में अपना पण्डाल लगाया। और उसमें कावा द्वारा महिलाओं और बच्चों के विकास से सम्बधित चलाये जा रहें विभिन्न कार्यक्रमों की झलक प्रस्तुत की। बेस अस्पताल एक द्वारा चिकित्सा पण्डाल भी लगाया गया जिसमें एड्स, एचआईवी, हेपाटाईटस, डेगूं टीकाकरण, साफ सफाई जच्चा-बच्चा देखभाल जैसे अनेक पहलूओं पर लोगों को संदेश देना चाहा।



प्रदर्शनी के दौरान विभिन्न ग्रुप केन्द्रों के परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा लगाई गई स्टालों को देखती मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित

प्रदर्शनी का समापन 16 अक्टूबर, 2005 को बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने किया।

इस अवसर पर श्री सिन्हा ने बताया कि जम्मू कश्मीर में भूकम्प से तबाह हुए लोगों की केरिपुबल द्वारा हर सम्भव सहायता की जाएगी। बल ने सीमावर्ती जिले बारामूला के कमलकोट गाँव पुनर्वास एंव विकाश के लिए गोद लिया है जो भूकम्प में बुरी तरह से तहस नहस हो गया था। श्री सिन्हा ने ग्रुप केन्द्रों के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा प्रर्दशनी में लगाए गये सामान उनके सृजनात्मक कार्य क्षमता का सबूत है। उन्होंने ग्रुप केन्द्र के परिवार कल्याण केन्द्रों से जवानों के परिवारों को खुशिया प्रदान करने तथा परिवार की महिलाओं को सार्थक एंव खुसहाल जीवन यापन करने के लिए सशक्त बनाने हेतु कार्य करने का आह्वान किया। कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने कहा कि विभिन्न ग्रुप केन्द्रों में कार्यरत महिलाओं की आय के साधन बड़ाने के लिए कावा भरसक प्रयास कर रही है, तथा कुछ नये क्रिया कलापों को सृजित किया जा रहा है।

इस वर्ष ग्रुप केन्द्रों में सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र परिवार कल्याण केन्द्र का प्रथम पुरस्कार के रूप में 15000 रूपये तथा ट्राफी ग्रुप केन्द्र पुणे को दी गयी जबकि ग्रुप केन्द्र, हैदराबाद को दूसरे स्थान का पुरस्कार दिया गया। आर.ए.एफ. की 103 बटालियन के परिवार कल्याण केन्द्र को आर.ए.एफ. बटालियनों में सर्वश्रेष्ट कल्याण केन्द्र का

पुरस्कार दिया गया।

ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली की स्टाल को प्रदर्शनी में सर्वश्रेष्ठ स्टाल घोषित किया गया जबकि ग्रुप केन्द्र, गुड़गांव तथा पल्लीपुरम की स्टालों को दूसरे तथा तीसरे स्थान का पुरस्कार दिया गया। विभिन्न ग्रुप केन्द्रों के परिवार कल्याण केन्द्रों में कार्यरत महिलाओं को भी अलग अलग क्रिया कलापों में कुशल प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ कामगार के पुरस्कार भी इस अवसर पर दिए गये।



प्रदर्शनी के समापन समारोह के अवसर पर ग्रुप केन्द्र के परिवार कल्याण केन्द्रों में कार्यरत श्रेष्ठ महिला कामगारों को प्रशस्ति पत्र एंव पुरस्कार प्रदान करते मुख्य अतिथि केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा

लॉन टेनिस टूर्नामेन्ट

एस.डी.जी. मुख्यालय, ओल्ड जे.एन.यू. कैम्पस में केरिपुबल की 66वीं वर्ष गांठ के उपलक्ष्य के 15वाँ अन्तर सेक्टर लॉन टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया, जिसमें सीआरपीएफ की 9 टीमों ने भाग लिया तथा 28 लीग मैच कम-नाकआउट के आधार पर खेले गये। इस पांच दिन तक चलने वाले टूर्नामेंट के अन्तिम दिन के सिंगल मैच में उत्तरी पश्चिमी सेक्टर के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी ड़ा कोंयाजम ने कमान्डेट श्री पी. के.शर्मा, उत्तरी पश्चिमी सेक्टर को 6–4, 6–4 से हराया जबकि डवलस मुकाबले में उत्तरी पश्चिमी सेक्टर के कमान्डेट श्री पी.के.शर्मा एवं डा० कोंयाजम ने द्रुत कार्य बल

के कमान्डेट श्री श्री वी.एस. राठौर तथा श्री नदीम समदानी को 6-3 व 7-6 से हराया, चैम्पीयनशिप की ट्राफी उत्तरी पश्चिमी सेक्टर ने जीती, बल के महादिनेशक श्री जे के सिन्हा ने विजेता टीम को एक समारोह में 25 अक्टूबर, 2005 को ट्राफी प्रदान की।



विजेता टीम को ट्राफी प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा

महानिदेशक का वार्षिक प्रेस सम्मेलन

26 अक्टूबर, 2005 को 66वीं वर्ष गांठ के अवसर पर महानिदेशालय के सम्मेलन कक्ष में पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। बल के महानिदेशक श्री ज्योति कुमार सिन्हा ने सम्मेलन में वर्ष भर की बल की उपलब्धियों के बारे में पत्रकारों को बताया तथा बल के आधुनिकीकरण, प्रशिक्षण, आपदा प्रबन्धन में बल की सक्रीय भागीदारी तथा आन्तरिक सुरक्षा से सम्बधित केरिपुबल द्वारा की जा रही डयूटियों की विस्तार से चर्चा की। श्री सिन्हा ने पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा कि केरिपुबल की सर्वाधिक नफरी जम्मू-कश्मीर व पूर्वोत्तर में शान्ति व्यवस्था कायम करने में लगी है। अभी जो एक बड़ी चुनौती उभर कर सामने आई है, वह है

नक्सलवाद। अतः इससे निपटने के लिए केरिपुबल ने एक रणनीति बनाई है। बल की 22 बटालियनें नक्सलवाद प्रभावित राज्यों में उस रणनीति के तहत काम कर रही हैं। एक प्रश्न के जबाव में श्री सिन्हा ने बताया कि मानवाधिकार हनन के केरिपुबल के विरूद्ध 74 मामले दर्ज हुए जिनकी जॉच स्वतंत्र एजेंसी से कराने पर केवल एक ही मामला सही पाया गया। अतः मानवाधिकारों के मामले केरिपुबल का वेदाग रिकार्ड पहले से ही रहा है। बल को पूर्णरूप से कम्प्यूटीकृत करने की कार्यवाही चल रही है। और केरिपुबल देश का पहला अर्ध सैनिक बल होगा जो पूर्ण रूप से कम्प्यूटीकृत होगा। श्री सिन्हा ने पत्रकारों को बताया कि जम्मू कश्मीर में सरकार के आदेशानुसार आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी हमने लेनी शुरू कर दी है, और कुछ ही समय में, हम जम्मू कश्मीर की पूर्ण आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी अपने हाथों में लेगें। यह कार्य चरणवद्ध तरीके से चल रहा है। आतंरिक सुरक्षा से जुड़ी सभी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने में केरिपुबल हर तरह से सक्षम है, चाहे वह आतंकवाद की समस्या हो या फिर नक्सलवादी, हम वक्त और परिस्थितियों के अनुसार अपनी रणनीति बनाकर अपने कार्मिकों को प्रशिक्षत कर कार्य करते हैं। अतः बल के जवान किसी भी तरह की जिम्मेदारी को निभाने में पूर्ण सक्षम है।



66वीं वर्षगांठ पर आयोजित प्रेस सम्मेलन में पत्रकारों के प्रश्नों का जबाब देते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा

वर्षगांठ समारोह

27 अक्टूवर 2005 को वर्षगांठ समारोह का रिहर्लसल हुआ। किसी भी समारोह के आयोजन से पूर्व रिहर्लसल इसलिए किया जाता है कि मुख्य समारोह में कहीं कोई कभी त्रुटि न रहजाए। अतः रिहर्सल के दौरान कोई कमी नजर आती है तो उसे ठीक करने का समय मिल जाता है। रिहर्सल के दौरान भी व्यवस्था मुख्य समारोह की तरह की जाती है। इस बार रिहर्सल के दौरान बल के महानिदेशक श्री ज्योति कुमार सिन्हा ने बल के कार्मिकों को वीरता के पुलिस पदकों से अलंकृत किया। पदक प्राप्त कर्ताओं के लिए अलंकरण समारोह आयोजित करने से उनका मनोबल तो बडता ही है दूसरे कार्मिक को भी उनका अनुशरण करने की प्रेरणा मिलती है। इस बार 18 कार्मिकों को पदकों से अलंकृत किया जिनमें 8 कार्मिकों यह पदक मरणोपरान्त दिए गये। पदक उनके निकटतम संबंधियो ने ग्रहण किए। 10 कार्मिक यह पदक प्राप्त करने के लिए स्वयं उपस्थित थे। इन कार्मिकों यह पदक भारत के राष्ट्रपति ने इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर उनके द्वारा देश के विभिन्न भागों में मुठभेडों/कार्रवाईयों के दौरान प्रदर्शित वीरता एवं अदम्य साहस के लिए प्रदान किए थे।



बल के वरिष्ठ अधिकारियों से परिचय कराते राष्ट्रपति डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम



बल के महानिदेशक मुख्य अतिथि राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से बल के वरिष्ठ अधिकारियों का परिचय कराते हुए



अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार/पदक विजेता बल के खिलाड़ियों से मिलते मुख्य अतिथि राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

मुख्य वर्षगांठ का आयोजन, ग्रुप केन्द, झण्डौदा के परेड ग्राउन्ड में हुआ। वर्षगांठ समारोह में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी पाटिल, केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री श्री श्रीप्रकाश जयसवाल, गृह सचिव, सभी अर्धसैनिक बलों के प्रमुख तथा विभिन्न

मंत्रालयों, विभागों के अधिकारीगण उपस्थित हुए। इस वर्ष की परेड में मुख्य अतिथि महामहिम राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की अगवानी बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने की। मुख्य अथिति डा. कलाम का बल के महानिदेशक श्री सिन्हा ने बल के वरिष्ठ अधिकारियों, पदक विजेताओं, अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बल के खिलाडियों से परिचय कराया। सर्व प्रथम बल का ध्वज परेड ग्राउन्ड में लाया गया जिसे सम्मान स्वरूप मुख्य अतिथि सहित समारोह में उपस्थित सभी लोगों ने नतमस्तक होकर नमन किया/सैल्यूट किया, फिर भी परेड समारोह की कार्यवाही आरम्भ। मुख्य अतिथि महोदय को सलामी परेड कमान्डर कमान्डेट श्री आर.एन.एस. वाध ने दी, तत्पश्चात मुख्यअतिथि द्वारा परेड का निरीक्षण किया गया, और परेड की सलामी ली गई। परेड में बल के विभिन्न सेक्टरों की 10 टुकड़ियों ने परेड में हिस्सा लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. कलाम ने बल के कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को उसकी प्रभावशाली क्षमता, निष्पक्ष छवि, विश्वसनीयता, विलक्षण्ता तथा व्यावसायिक उपलब्धियों के कारण ही आतंकवाद के विरूद्ध कार्रवाई करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। 29 अक्टूकर, 2005 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 66वें वार्षिकोत्सव पर राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा कि केरिपुबल की कार्यशैली में जनता के प्रति मानवीयता एंव सहानुभूति ही इसकी विशिष्टता है। डा० कलाम ने आशा व्यक्त की कि बल इसे हमेशा बनाये रखेगा। अपने प्रभावशाली भाषण में राष्ट्रपति ने केरिपुबल का आहवान किया कि बचाव एवं राहत कार्य प्रबंधन अभियानों में एन.सी.सी. के कैडिटों को भी शामिल करें। इससे अधिक जन शक्ति तथा संसाधन तो मिलेगें ही, बल्कि इससे और अधिक लोगों को राहत पहुंचाने में सक्षम होगा। डा० कलाम ने कहा कि केरिपुबल के पास अत्याधुनिक संचार व्यवस्था, सुनिश्चित संचालन, नाईट विजन डिवाइस तथा थर्मल इमेजन जैसे इंस्टूमेन्टस हैं। इससे बल की कार्य क्षमता बडेगी तथा केरिपुबल को अभियानों कों पूरी तरह कार्यान्वित करने में मदद मिलेगी। और बल को क्षति नहीं होगी।



परेड का निरीक्षण करते मुख्य अतिथि डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



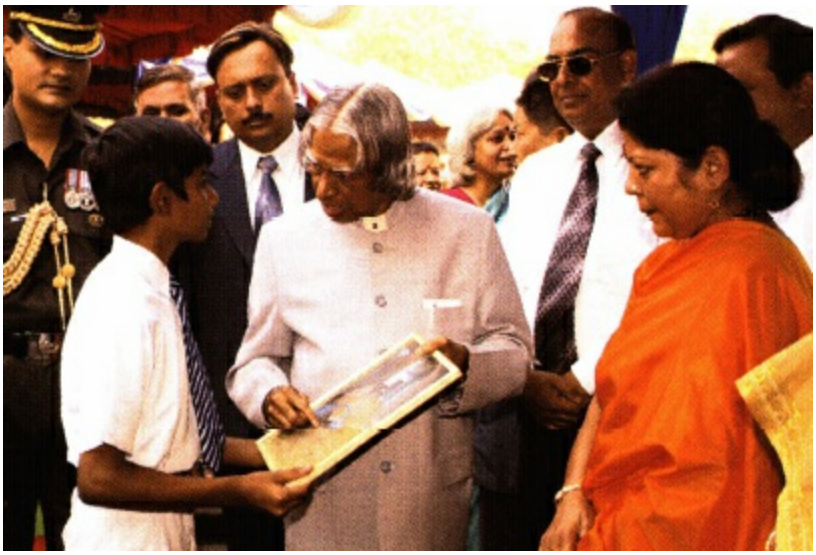
परेड में केरिपुबल ध्वज



वीरता के पदक प्राप्त कर्ता कार्मिकों से मिलते राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



***66*वीं वर्षगांठ परेड में मार्चिंग करते बल के जवान**



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी के छात्रों द्वारा बनाई गई पेटिंग को देखते राष्ट्रपति डा० ए. पी. जे. अब्दुल कलाम



डा. कलाम स्कूली बच्चों एंव अध्यापकों के साथ



डा० कलाम को गुलदस्ता भेंट करती सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल की छात्राएं



डा० कलाम कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा व अन्य सदस्ययों के बीच चर्चा करते हुए।



मुख्य अतिथि डा० कलाम व केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी. पाटिल



परेड देखते आमंत्रित अतिथिगण



पदक प्राप्त कर्ता बल कार्मिक व उनके निकटतम संबंधियों के बीच मुख्य अतिथि डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

डा० कलाम ने केरिपुबल से लोगों के स्वास्थ्य, शिक्षा तथा रोजगार से संबंधित पहलूओं पर योगदान करने पर जोर दिया, इससे देश के विकास में मदद मिलेगी। प्रौद्योगिकी क्रांति के इस युग में नेट तथा समाचार पत्र सूचनाएं प्राप्त करने के सबसे बड़े साधन है जिनका उपयोग हमें करना चाहिए। डा० कलाम ने अपने आर्शीवचनों के पश्चात बल के कार्मिकों को पॉच वाक्यों की देश की एकता अखडंता, जाति व्यवस्था एवं विकास में जी जान से सर्मपित होकर कार्य करने की शपथ दिलाई। मुख्य अतिथि के आर्शीवचनों के बाद परेड़ का समापन हुआ। डा. कलाम ने केरिपुबल द्वारा देश के विभिन्न भागों में निभाई जा रही डयूटियों से संबंधित चित्रों की प्रदर्शनी देखी जिसे देखकर डा. कलाम बहुत ही प्रभावित हुए। चित्र प्रदर्शनी का आयोजन बल की जन सर्म्पक शाखा द्वारा किया गया। इस अवसर पर सीआरपीएफ द्वारा चलाए जा रहे पब्लिक स्कूल रोहिणी के बच्चों ने मन मौहने वाला आरकेस्ट्रा प्रस्तुत किया जिसे सुनकर डा. कलाम भाव विभोर हो गये। उन्होंने स्कूली बच्चों से उत्सुकता पूर्वक बातचीत की, डा. कलाम ने बच्चों द्वारा प्रदर्शित कार्यक्रम की तहेदिल से प्रशंसा भी की। डा. कलाम को छात्रों द्वारा तैयार की गई पेटिंग भेंट की गई जिसे देखकर वे अत्यन्त प्रभावित हुए। डा. कलाम से सीआरपीएफ वाइब्ज वेलफेयर एसोसियेशन की अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा तथा अन्य सदस्यों ने भी मुलाकात की तथा बल की महिलाओं के विकास एवं आत्म निर्भर बनाने के लिए कावा द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में बताया। डा. कलाम ने स्कूली बच्चों तथा कावा के सदस्यों एवं पदक विजेताओं के साथ तस्वीर खिचवाई। महामहिम राष्ट्रपति बल के समारोह को देख कर बहुत प्रसन्न हुए तथा कहा कि ऐसा लगता है कि कुछ लोगों व उनके परिवार से ही नहीं बल्कि बल के 2.5 लाख कार्मिकों एंव उनके परिवार के

सदस्यों से मिल रहे हैं, जो देश के विभिन्न भागों में हमारी सुरक्षा के लिए तैनात है। इस तरह जलपान के बाद 66वीं वर्षगांठ परेड समारोह का समापन बड़ी धूम-धाम से हुआ। 30 अक्टूबर, 2005 को 88 महिला बटालियन (द्वारिका में) बडा खाने का आयोजन किया गया, परेड में भाग लेने वाली टुकड़ियों एवं वर्षगांठ परेड समारोह में भाग लेने वाले अधिकारियों एंव जवानों ने इसमें हिस्सा लिया। फोर्स में बड़ा खाने का अपना एक अलग ही महत्व है, जब कोई खुसी की बात हो या कोई राष्ट्रीय या बल का पर्व हो, तो बडें खाने का आयोजन किया जाता हैं, फिर यह तो सीआरपीएफ का वार्षिकोत्सव था, अतः क्यों ना हो बडे खाने का आयोजन। परेड में भाग लेने वाली सभी टुकड़ियों ने अपने अपने हिसाब से श्रेष्ठतम पकवान बनाएं। और फिर बल के के महानिदेशक से लेकर सिपाही तक सभी ने साथ एक जगह बैठकर परमपरागत खाना खाया। ऐसा लग रहा था कि मानों 36 प्रकार के भोजन नहीं उससे भी कहीं ज्यादा खाने की वस्तुएं हैं। और हर पदार्थ का अपना अलग जायका था। बडे खाने में न कोई रैंक और ना ही छोटे-बडे का भेद भाव रखा जाता है, सब एक जगह एक सा खाना खाते हैं, इससे जवानों का मनोबल तो बड़ता ही है एक दूसरे के मन की बात जानने का मौका भी मिलता है। और यह सदेंश जाता है कि हम सभी एक है, हमारी एक ही पहचान है। इसी फोंस से हम है और हम से ही यह फोर्स है। अतः बडें खाने के बाद खुसनुमा माहौल में हुआ 66वीं वर्षगांठ समारोह का समापन। ऐसे समारोह से एक शिक्षा तो मिलती है कि हम सब एक है, हमारा धर्म हमारी फोर्स है, यहां न कोई छोटा है और न बड़ा, अपने-अपने कार्य के हिसाब से सभी अलग अलग पदों की जिम्मेदारी निभा रहें है। अतः हमें अपनी डयूटियों का निष्पादन पूरी ईमानदारी, निष्पक्षता, बिना किसी को आघात पंहुचाए करना चाहिए। हमारे लिए देश सेवा ही सर्वोपरि है, हर वर्षगांठ हमें यही प्ररेणा की शिक्षा देती है।

- प्रस्तुति
रनबीर सिंह

मानवीयता एव सहानुभूति केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कार्यशैली के प्रमांणक है–

राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

के०रि०पु०बल की 66वीं वर्षगाँठ पर महामहिम राष्ट्रपति द्वारा दिये गये भाषण के कुछ अंश)

केरिपुबल की 66वीं वर्षगांठ के अवसर पर बल के अधिकारियों व जवानों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा कि "आज मुझे अपके बीच इस भव्य शानदार व प्रेरणा दायक समारोह में उपस्थित होने पर अत्यन्त प्रसन्ता हो रही है। मेरे लिए यह गर्व व सम्मान की बात है कि मुझे के०रि०पु०बल के स्थापना दिवस की 66वीं सालगिराह पर आने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। जब मैंने आप लोगों से वार्तालाप किया तो मुझे लगा कि मैं देश के विभिन्न भागों में तैनात बल के 2.5 लाख कार्मिकों से बात कर रहा हूँ। मेरी बल के महानिदेशक, अधिकारियों जवानों एवं उनके परिवार के सदस्यों को बहुत-बहुत शुभ कामनाएं।

पिछले 6 दशकों के दौरान के०रि०पु०बल ने आंतरिक सुरक्षा बनाये रखने के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों तथा देश के आंतरिक भागों में अनेक कारवाईयां, अभियान चला कर नागरिक प्रशासन की सहायता की, जिसकी परिकल्पना स्वतंत्र भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने की थी। केरिपुबल के जवानों के साहस, वीरता एवं कर्तव्य परायणता को मान्यता देते हुए अभी तक 7000 शौर्य पदक तथा 1600 सराहनीय सेवाओं के पदकों से नवाजा गया है। मेरी सभी पदक विजेताओं को शुभ कामनाएं।



महामहिम राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम परेड का निरीक्षण करते हुए

मैंने जब केरिपुबल की उपलब्धियों के बारे में पढा तो पता चला कि यह बल उग्रवादियों एवं विघटनकारी ताकतों के मंसुबों को नाकाम करने के लिए निरंतर कार्यरत है तथा देश के प्रमुख संस्थानों की सुरक्षा का दायित्व भी बखूवी निभा रहा है।

यही नहीं पिछले 6 दशकों के दौरान देश में जहाँ कहीं भी कोइ समस्या शुरू हुई, इस बल ने तुरन्त वहाँ जाकर स्थिति को सम्भाला। अभी यहाँ हाल ही में देश में दो हुई बड़ी प्राकृतिक त्रासदियों के दौरान भी इस बल के जवानों ने पीड़ितों की सहायता की है। 2004 में आयी सुनामी तथा हाल ही में जम्मू-कश्मीर में आये भूकंप के दौरान केरिपुबल के जवानों का योगदान सराहनीय रहा, आप ऐसे पहले लोग थे जो दूर दराज के गाँवों में पहुंचकर पीड़ितों को आवश्यक खान पान तथा सुरक्षा मुहैया करायी, आप का पुनर्वास एवं विकास के लिए कमलकोट नामक गॉव को गोद लेना और ग्रामीणें को सभी आवश्यक सुविधाएं मुहैया कराना अपने आप में एक अनुकरणीय मिसाल है। मैं केरिपुबल के इन प्रयासों की तहे दिल से प्रशंसा करता हूँ। ऐसी सामाजिक मिशनें केरिपुबल द्वारा अनेकों बार चलायी गयी हैं। केरिपुबल आज अन्य संस्थानों के लिए एक रोल माडल बन गया है जिसका वे अनुकरण करेगें।

केरिपुबल को इसकी ग्राहीयता, व स्वीकार्यता जैसे गुणों के कारण ही देश में आतंक विरोधी अभियान चलाने की जिम्मेदारी सौपी गयी है, मुझे जानकर प्रसन्ता हुई कि केरिपुबल को संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा चलाये गये कार्यक्रमों में विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों के लिए भेजा गया है तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने भी इसके कार्यों को मान्यातांएं प्रदान की हैं। मुझे बताया गया है कि केरिपुबल ने अपनी दो महिला बटालियन भी गठित की हैं, जो कानून व्यवस्था की स्थिति में महिलाओं एवं बच्चों से निपटने में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगी। आज के इस समय में जब संसार में सुधार करने के बजाय सुधार बताने की ज्यादा कोशिशें की जाती हैं महिलाएं महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों सहित उनकी समस्याओं, उनकी भावनाओं के अनुरूप सहानुभूति एवं करूणा के साथ बेहतर तरह से निपट सकती हैं।



परेड की सलामी लेते राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

वर्तमान में समाज में अस्थिरता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है, राष्ट्र की सम्पन्नता जिसे हम 2020 तक प्राप्त कर सकते है, लेकिन आज हम लोगों की सुरक्षा एवं रक्षा भी सुनिश्चित नहीं कर पा रहे हैं। यदि हम अपने युवाओं के बीच अनुशासन पैदा नहीं कर सके तो हम देश को निश्चित अवधि मे पूर्णरूप से विकसित एंव सम्पन्न नहीं कर पायेगें। मैंने केरिपुबल के कार्मिकों को अनुशासित जीवन जीते देखा है। देश में दूसरा अनुशासित बल एन० सी० सी० कैडेट तथा स्काउट गाईड हैं, जिन्हें गैर सरकारी संगठन प्रशिक्षित करते हैं। मैं एन० सी० सी० के कैडेट तथा स्काउट गाइड को केरिपुबल के साथ देश के विभिन्न भागों में आपदा प्रबंधन तथा पुनर्वास कार्यों में साथ काम करने की अपेक्षा करता हूँ, इससे केरिपुबल के संसाधनों में इजाफा ही नहीं होगा बल्कि युवाओं को वास्तविक जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने का अनुभव भी प्राप्त होगा।

हमें हर ऑपरेशन में केजुअलटी कम से कम हो, के लिए सभी प्रयास करने चाहिए। विशेष कर आंतरिक सुरक्षा के आपरेशनों के दौरान विद्रोहियों का सामना करने के लिए नई तकनीक से निपटने के नये सामान सुलभ कराने चाहिए, एडवांस सेन्सर, निगरानी के लिए महत्वपूर्ण हो सकते है, जो विभिन्न परिस्थियों में चेतावनी दे सकते है। सुरक्षित मोबाईल व्यवस्था, नाईट विजन डिवाइस, सूचना तकनीकी समाधान, छोटी युक्ति सुरक्षा के साथ आसूचना तंत्र, अचूक हथियारों सहित आधुनिक संचार व्यवस्था स्वचालक संसाधनों के साथ बल की वृद्धि के लिए बेहतरीन उपाय हैं। ऐसी आसूचना व्यवस्था केरिपुबल को योजना बनाने तथा कठिन व जटिल मिशनों को कार्यन्वित करने में सहायक होगी। मुझे पूरी आशा है कि आप इन तकनीकों का उपयोग भविष्य के अभियानों में कर पूर्ण सफलता प्राप्त करोगे।

विश्व में वर्ल्ड वाईड वेब के आगमन से सूचनाओं में एक बहुत बड़ी सूचना क्रान्ति आई है, इससे व्यक्तियों, उद्योग जगत तथा राष्ट्रों के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। पुराने समय में आसूचना प्राप्त करने के स्त्रोतों के आस पास सीधे कार्यरत रहने वाले फिल्ड अधिकारी ही यह एकत्रित करते थे, लेकिन आज आसूचना संबंधी जानकारी विभिन्न समाचार पत्रों, वेवसाईटों के जरिये आप किसी भी समुदाय, उसके ध्येय एवं उसके तंत्र के बारे में पता कर सकते हैं। इंटरनेट को नियमित रूप से देखने से आप उग्रवादी संगठनों के क्रिया कलापों उनकी उत्पति तथा उनके संरक्षकों आदि के बारे में पहले ही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।



मुख्य अतिथि राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल एंव बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा के साथ परेड में भाग लेने वाली टुकड़ियों के कमांडर



स्कूली बच्चों से वार्तालाप करते राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

कई बार हमारी फोर्सों को वास्तविक रूप से आपरेशन करने का अनुभव नहीं होता है, फिर भी आज के इस तकनीकी युग में अभियानों का अनुकरण हार्डवेयर तथा डिजिटल दोंनों ही तरह से काल्पनिक अभियान चला कर आप प्राप्त कर सकते है। मुझे आशा है कि केरिपुबल में आंतरिक सुरक्षा अभियान चलाने की सभी ऐसी क्षमताएं है, फिर भी कार्मिकों को काल्पनिक अभियान चला कर प्रशिक्षित कर सकते है ताकि उनमें क्षमता हर वक्त बनाये रखी जा सके।

मैं केरिपुबल के कार्मिकों के लिए कुछ विशेष कार्य सुझाना चाहूँगा। जैसा कि आप जानते है, देश के कुछ भागों में सशस्त्र उग्रवादी सक्रिय है। अतः हमें इन उग्रवादी संगठनों को राष्ट्र के विकास के कार्यों में शामिल कर इन्हे देश की मुख्य धारा में वापिस लाने के उपाय किए जाए। मैं केरिपुबल की टीमों को समाज विज्ञान के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर उग्रवादी संगठनों की समस्याओं के बारे में अध्ययन करने की सिफारिश करता हूँ ताकि वे एक विशेष क्षेत्र में इनके सुधार एवं पुनर्वास के लिए एकीकृत योजना बनाएं। इस कार्य में केरिपुबल की टीमें स्थानीय जनता की सहायता भी ले सकती हैं। इस योजना में काउंसिलिंग, करेक्शन, शिक्षा, स्वास्थय देख भाल, रोजगार तथा सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी आदि शामिल किये जाने चाहिए। यदि केरिपुबल किसी क्षेत्र में इस मिशन में सफल हो जाती है तो यह देश के अन्य कई भागों में भी निश्चित रूप से लागू की जा सकती है।

आप एक महत्वपूर्ण मिशन में कार्यरत है। रात्रि के दौरान जब राष्ट्र के लोग सोते हैं तो आप सभी जागते है और जागते इसलिए है कि हम सुरक्षित रहे, जिससे हम राष्ट्र के विकास के लिए कार्य कर सके। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप करोडों लोगों के दिल में हैं। हम आपकी वीरता, आपकी प्रतिबद्धता तथा आपके समर्पण की प्रसंशा करते हैं।

आप की खुशी से ही राष्ट्र को अनेकों आशाएँ है। आप जिस तरीके से अपने आप को अनुशासित, चुस्त तथा सुदृढ़ बनाते हो निश्चित ही आप हमारे विरोधियों को खत्म कर सकते है। हमारे सभी युवाओं को एक जुटकर भारत को विकसित करने के लिए उत्साहित करने की आप प्रेरणा है। मैं आपके अच्छे टर्नआउट पहनावे, दृढता के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। आप सभी को 66वीं वर्षगांठ की बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप अपने हर मकसद में कामयाब हो। ईश्वर आपको खुश रखें।

तत्पश्चात डा० कलाम ने परेड में शामिल सभी कार्मिकों को पॉच वाक्यों की शपथ दिलाई

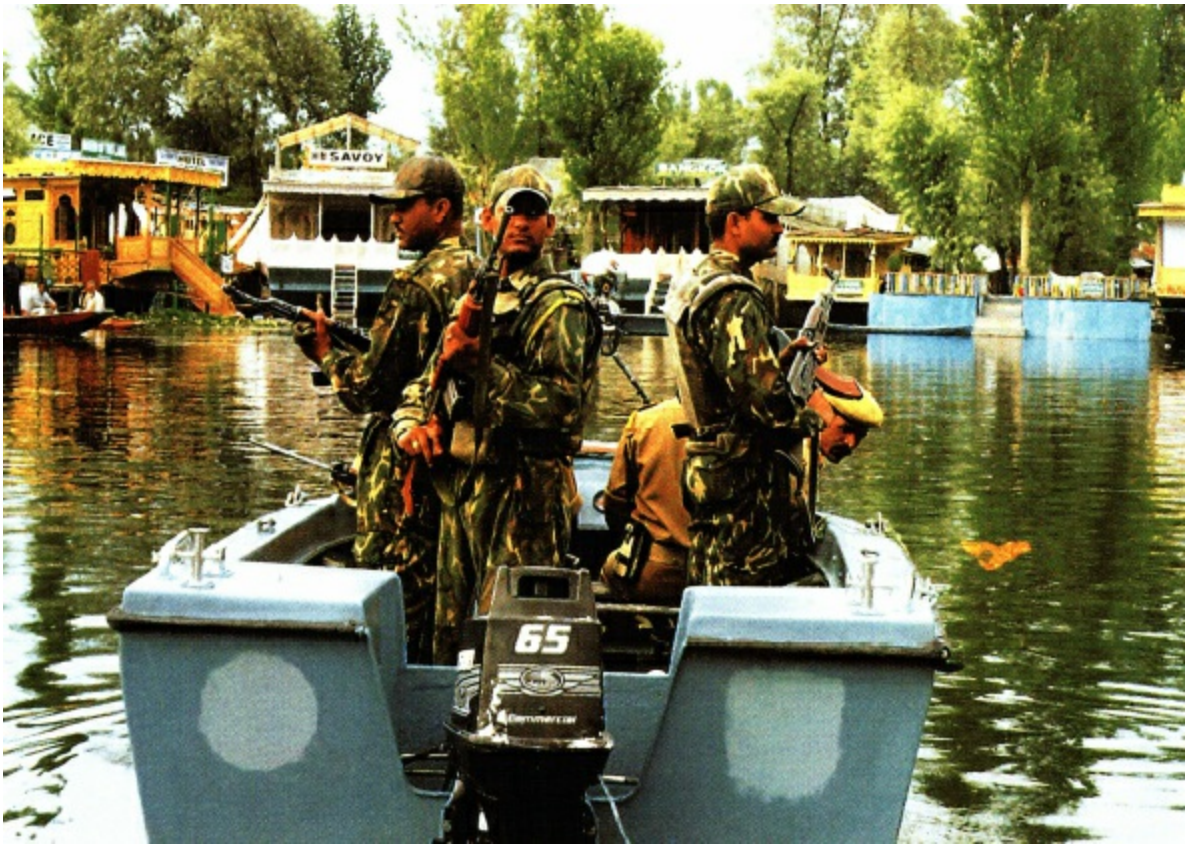
- मुझें केरिपुबल का सदस्य होने पर गर्व है।
- मैं राष्ट्र की सुरक्षा के लिए पूरी वचन बद्धता तथा समर्पण के साथ कार्य करूगां।

- मैं एक सहायता करने वाला नागरिक हूगां और जरूरत के समय अपने देशवासियों की सहायता करूगां।
- मैं अपने देश तथा देशवासियों की हर सफलता कों मनाऊगां।
- मेरा झण्ड़ा ही मेरी जिन्दगी है।

इस तरह से केरिपुबल की 66वीं वर्षगांठ समारोह का समापन एक एतिहासिक आयोजन के रूप मे सम्पन हुआ।

जम्मू-कश्मीर में सीआरपीएफ की बढ़ती हुई भूमिका

अभिषेक दयाल
जन सम्पर्क अधिकारी



श्रीनगर की डल झील में पेट्रोलिंग करते केरिपुबल के जवान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का जम्मू-कश्मीर से काफी पुराना सम्बंध रहा है। सबसे पुराने इस अर्ध सैनिक बल के जवान राज्य की जनता के काम सदैव उस समय आये हैं जब राज्य में कोई प्राकृतिक तथा मानव कृत त्रासदी या चेतावनी पैदा हुई हो। 1980 तथा 1990 से पहले भी केरिपुबल की इस राज्य में काफी संख्या में तैनाती थी लेकिन जब पंजाब में उग्रवाद ने अपने पर फैलाने शुरू किए तो उससे निपटने के लिए बल को उस क्षेत्र में तैनात किया गया। और बल के जवानों ने पंजाब के उग्रवाद को कुचलने में सफलता भी प्राप्त की। आज वहां अमन चेन का श्रेय केरिपुबल को ही जाता है।

गत 10 वर्षों से केरिपुबल की जम्मू कश्मीर में लगभग 200 कम्पनियाँ तैनात हैं, लेकिन अभी यह संख्या बढ़कर 300 सौ से भी अधिक हो गयी है। अर्थात बल की आधी से अधिक नफरी जम्मू-कश्मीर में अमन चैन कायम करने के लिए तैनात है। 1980 के बाद जब राज्य में सीमा पार से आतंकवाद ने अपने पैर जमाने चाहे तो इससे निपटने की जिम्मेदारी केरिपुबल को सौपी गयी और राज्य में आतंरिक शान्ति व्यवस्था कायम करने के लिए राज्य पुलिस की सहायता की जिम्मेदारी सीआरपीएफ को दी गई।

बल का भारी मात्रा में राज्य में तैनात होना इस बात का जीता जागता सबूत है कि भारत सरकार को ही नहीं राज्य सरकार को भी इसकी कार्य क्षमता एवं कार्यशैली पर पूरा विश्वास है। जहां तक कश्मीरी आवाम की बात है तो वे सीआरपीएफ की निरपेक्ष छवि तथा व्यावसाय निपुर्णता एवं बेदाग मानवाधिकार रिकार्ड के परिणाम स्वरूप ही इसमें विश्वास करते हैं। 1995 से लेकर अभी तक बल के विरूद्ध 48 मानवाधिकार हनन के मामले सामने आये हैं, इन सभी मामलों की न्यायालय तथा स्वत्रंत प्राधिकार द्वारा जाचं की गई तो बल के प्रति केवल एक ही मानवाधिकार हनन का मामला सही पाया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को इस प्रकार से प्रशिक्षत किया गया है कि वह उपद्रव की स्थिति में भी कम से कम बल प्रयोग कर सिविल जनता के साथ कार्य करे। जहां कहीं भी इसे तैनात किया गया, मानवाधिकारों के प्रति संवेदनशीलता तथा कम से कम बल प्रयोग इसकी प्रमुख खासियते रही हैं,

कारगिल युद्ध के बाद मंत्रियों के एक ग्रुप की सिफारिस के आधार पर केरिपुबल को राज्य में आतंरिक सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी सौंपने के लिए चुना गया। घाटी में केरिपुबल ने हाल ही में सीमा सुरक्षा बल से यह जिम्मेदारी ली है। सीआरपीएफ को प्रसिद्ध जवाहर टनल की सुरक्षा का जिम्मा भी दिया गया है। जम्मू कश्मीर में आन्तरिक सुरक्षा तथा राज्य में शान्ति व्यवस्था स्थापित करने के लिए केरिपुबल ने जम्मू कश्मीर पुलिस के साथ संयुक्त रूप से निभाने की जिम्मेदारी ली है। फिलहाल जम्मू कश्मीर में केरिपुबल की 64 बटालियन तैनात हैं, जिनमे से 49 कश्मीर घाटी में तथा 15 जम्मू क्षेत्र में तैनात हैं।

सीमा पार से सम्बंध रखने वाले उग्रवादियों से लड़ना कोइ आसान काम नहीं है। विश्व के देशों ने इस वास्तविकता को अभी हाल ही में अच्छी तरह से समझा है, पहचाना है। उग्रवादी भोली भाली आम जनता पर अत्याचार करते हैं तथा जनता को ही एक ढाल की तरह उपयोग करते हैं, और जनता ही उनकी हिंसा का शिकार होती है, सीआरपीएफ ने उग्रवादियों की इस रणनीति को विफल करने के लिए एक योजना बनायी है। बल के जवान अभी वाहनों की रेन्डम जॉच करते है, तैनाती से पहले सूचना तन्त्र को तैनाती के स्थान पर भेजा जाता है। अत्याधुनिक अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग आदि जैसे कुछ ऐसे उपाय किए गये है, परन्तु इस बात का आंकलन किसी पैमान से ही किया जा सकता हैं कि यह लड़ाई कितनी गंम्भीर हो सकती है। केरिपुबल ने 76 मुठभेड़ों में जम्मू-कश्मीर में 101 उग्रवादियों को अगस्त, 2005 तक मारा तथा 190 को गिरफ्तार किया है, परन्तु इस सब के लिए बल को भारी कीमत भी चुकानी पड़ी हैं और इस दौरान हमारे 13 वीर जवान अपने कर्तव्यपथ पर शहीद हुये।

राज्य के शिक्षा मंत्री गुलाम नवी लोन की उग्रवादियों द्वारा गोली मार कर हत्या तथा उसके बाद सासंद श्री तंरगामी के घर पर उग्रवादियों द्वारा की गई फायरिंग ने बल के लिए अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की उग्रवादियों से सुरक्षा पर एक प्रश्न चिन्ह सा लगा दिया है। इन दो घटनाओं में घटना स्थल पर ही सुरक्षा कर्मचारी भी मारे गये, राज्य के नेतागण हर रोज हजारों लोगों से मिलते हैं। अतः उनकी सुरक्षा किस प्रकार की जाए ताकि उनकी मिलने झुलने की प्रक्रिया प्रभावित न हो। सीआरपीएफ ने जम्मू-कश्मीर पुलिस के साथ मिलकर ऐसे लोगों की निगरानी और बड़ा दी है तथा बीच-बीच में उनके आस पास के क्षेत्र व लोंगों की औपचारिक जांच की जाती है। राज्य में हुई इस घटना के बाद वाहनों को आई. ई. डी. विस्फोटकों से आत्मघाती उग्रवादियों द्वारा उड़ा देने की बारदाते लगातार बड़ी हैं। अतः केरिपुबल ने राज्य में अपनी आसूचना सेल स्थापित कर कार्य शुरू कर दिया है। पहले केरिपुबल आसूचनाओं के लिए राज्य पुलिस के आसूचना तन्त्र तथा केन्द्र की आसूचना ब्यूरों पर निर्भर थी। केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा ने विश्वास जताया है, कि केरिपुबल ऐसी चुनौतियों का मुकाबला कर अशान्त राज्य में शीघ्र ही शान्ति कायम करने में सफलता प्राप्त कर लेगी। इस के लिए बल को आत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित एवं प्रशिक्षित किया गया है। श्री सिन्हा ने बताया कि भारत पाकिस्तान के रिस्तों में सुधार आने की वजह से आतंकी ग्रुप के आकाओं में खलबली मच जाना राज्य में शान्ति स्थापित होने की दिशा में यह एक शुभ संकेत है।

इस साल अप्रैल में आतंकवादियों की बार-बार चेतावनी के बाबजूद भी श्रीनगर मुजफराबाद बस सेवा का सफलता पूर्वक आरम्भ हो जाना, जनता में सरकार के प्रति विश्वास तथा सरकार का शान्ति प्रक्रिया को और आगे बढ़ाने का एक दूसरा सबूत है।

हर वर्ष की भातिं इस वर्ष भी दुर्घटना रहित अमरनाथ यात्रा सम्पन कराने में इसवर्ष केरिपुबल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यात्रा के दौरान इस घाटी राज्य में

सुरक्षा मुहैया कराने के लिए केरिपुबल ने एक महिला कम्पनी तथा दो कमान्डों टीम सहित 31 कम्पनियां तैनात की। जम्मू में विभिन्न पर्यटक निवास केन्द्रों एवं यात्री कानवाई, पेट्रोलिगं तथा क्षेत्र की छान बीन आदि सहित बल के जवान सुरक्षा के लिए 24सौं घंटे तैनात रहे । केरिपुबल के जवानों ने बनताल, मनीगांव, सरबम, नूनवाढ, पहलगांव, चन्दनवाड़ी, शेषनाग, पौष्पत्थरी, पचंतरणी तथा पवित्र गुफा पर यात्री कैम्पों की सुरक्षा की। केरिपुबल ने यात्रियों के लिए मुफ्त चिकित्सा सुविधा भी प्रदान की। इस दौरान केरिपुबल ने अपना स्वान दस्ता, बंम खोजी एवं निष्क्रिय दस्ते एवं आंसू गैस के दस्ते की सेवायें भी ली।

राज्य में प्रति विद्रोहात्मक स्थिति से निपटना केरिपुबल का एक प्रमुख कार्य हैं तो राष्ट्रीय आपदाओं से निपटने में निभाई गई भूमिका भी इस वर्ष कम महत्वपूर्ण नहीं रही है। फरवरी में भारी हिमपात से कश्मीर घाटी को जोड़ने वाला राष्ट्रीय राज मार्ग एक बन्द हो गया, बिजली सप्लाई में व्यवधान आया, पानी तथा आवश्यक सामान की आपूर्ति में कमी आ गयी केरिपुबल ने जरूरी सामान की ढुलाई की, दबें हुए लोगों को बचाया, सड़क से बर्फ हटाने का अभियान चलाया तथा सड़क यातायात पर निर्भर रहने वाले इस राज्य के लोगों के लिए राहत शिविर स्थापित किए। जरूरत के वक्त चलाये गये ये राहत कार्य लोंगों को चुनी हुई सरकार (जम्मू कश्मीर तथा दिल्ली) दोंनों के नजदीक आए हैं।



श्रीनगर के एम. एल. ए. हॉस्टल की सुरक्षा हेतु तैनात *27* बटा. केरिपुबल के जवान



श्रीनगर के वादमवाडी एरिया की संघन जॉच करते केरिपुबल के कार्मिक

8 अक्टूबर को राज्य में जब भूकम्प आया तो अन्य सुरक्षा बलों के साथ केरिपुबल भी प्रभावित लोगों की सहायता के लिए गांवों तक गई। 8 अक्टूबर, 2005 के ध्वसंकारी भूकम्प से प्रभावित क्षेत्र एलओसी के नजदीक दूर दराज के उरी व तंगधार तथा अन्य देहाती गांवों में बचाव एवं राहत कार्य शुरू किये। इसके अलावा केरिपुबल ने आवश्यक साजों सामान के साथ पांच कम्पनियां तैनात की। इस आपदा में घायलों का इलाज करने के लिए बल की 9 चिकित्सा टीमें भी भेजी गयी।

भूकम्प के तुरन्त बाद केरिपुबल के जवानों ने 250 लोगों को बचाया तथा 2000 लोगों को चिकित्सा मुहैया करायी और 1200 लोगों के लिए आवास की व्यवस्था की 10000 लोगों को मुफ्त राशन बांटा तथा कमलकोट गांव में 24सौं घंटे लंगर का आयोजन किया। जरूरत मंद लोगों को टैन्ट तथा बर्तन भी बांटे। लोगों को पानी पीने के लिए शीध्र पानी के टैंकर भेजे।

केरिपुबल का दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि इस वार बल के जवान सीमा रेखा से लगे तंगधार से 15 किलोमीटर पिछे गांवो में पहुँचकर मलवे में फंसे लोगों को बचाया। केरिपुबल की चिकित्सा टीम ने घटना स्थल पर 69 घायलों का इलाज किया। इस त्रासदी के दिन से ही केरिपुबल ने 15000 से अधिक ग्रामीणों को चिकित्सा सुविधा मुहैया करायी।

केरिपुबल ने भूकम्प प्रभावितों के पुर्नवास के लिए प्रधानमंत्री राहतकोष में 4.79 करोड़ रूपये का दान भी दिया है। बारामूला जिले का कमलकोट गांव का पूर्ण रूप

से विकास एवं पुनर्वास करने के लिए केरिपुबल ने गोद लिया है। कमलकोट गांव की आबादी लगभग 1680 है तथा इसमें 163 मकान हैं, भूकम्प ने इस गांव के 22 मकानों को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया तथा शेष मकान आंशिक रूप से क्षति ग्रस्त हो गये। इस गांव में 155 लोग मारे गये जबकि 700 लोग घायल हुए। केरिपुबल ने ग्रामिणों के लिए 165 स्थायी आवास स्थापित किये तथा भूकम्प के तुरन्त बाद लंगर शुरू किया। इस गांव की अर्थ व्यवस्था पूरी तरह से धान की खेती वाड़ी तथा चीड़ के वृक्षों पर टिकी हुई हैं। केरिपुबल गांव वालों की अभी हर तरह से सहायता कर रहा हैं ताकि वे अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी पूरी तरह से चला सकें।

केरिपुबल ही एक ऐसा सुरक्षा बल हैं जिसे जनता के साथ कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। जनता में निचले स्तर पर विश्वास जमाने के लिए केरिपुबल नागरिक निकायों के साथ संम्बध कायम करता है। भारतीय सेना की तरह जो राज्य के दूर दराज के इलाकों के लोगों के लिए बहुत कुछ कल्याणकारी कार्य कर रही है। इसी तर्ज पर केरिपुबल ने भी यह प्रक्रिया शुरू की है ताकि वह लोगों की सहायता कर सकें। ग्रामीण स्तर पर शौचालय, पंचायत घर क्रीड़ा स्थल, स्कूल आदि जैसी बुनियादी जन सुविधाएं स्थापित करना, स्कूली बच्चों को लिखाई पढाई की वस्तुएं, कापी-किताब, स्टेशनरी खेलकूद का सामान मुहैया करना तथा देहाती इलाकों में चिकित्सा कैम्प स्थापित करना व दवाईया बांटना आदि जैसी कुछ बुनियादी सहायता देने के उपाय किये जा रहे हैं ताकि केरिपुबल जनता के और नजदीक आ सके और लोगों का दिल जीत सके।

केरिपुबल एक बहुआयामी बल है। पृथ्वी पर स्वर्ग माने जाने वाले इस राज्य को प्रगति, विकास एवं सम्पन्नता पुनः उसी पथ पर लाने के स्वपन को साकार करने के लिए केरिपुबल दृढ संकल्प है, पंजाब में उग्रवाद के समय की तरह आज भी बल अपने कर्तव्य पथ पर इस विश्वास के साथ आगे बढ रहा है कि एक दिन इस राज्य से इस हिंसा रूपी आतकंवाद का खातमा जरूर होगा और यहां भी पंजाब की तरह अमन शान्ति कायम होगी। हमें विश्वास है कि राज्य की जनता की मद्द से जल्दी ही इतिहास के इस काले अध्याय का इस क्षेत्र से अन्त होगा।

आपदा प्रबंधन

डेरिल डीसेना
अपर पुलिस उप महानिरीक्षक
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, बैंगलूर

किसी भी क्षेत्र में किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं या अन्य दुर्घटनाओं के कारण उत्पन्न होने वाली भारी तबाही व नुकसान में किए जाने वाले बचाव या राहत कार्यों के लिए अपनाई जाने वाली पद्धति या क्रिया-प्रणाली को आपदा प्रबंधन कहा जाता है। इस प्रकार की आपदाओं से उत्पन्न संकट के दौरान जितना अच्छा प्रबंधन होगा उतनी ही जल्दी प्रभावित लोगों को राहत मिलने के साथ-साथ उनके पुनर्वास की प्रक्रिया आरम्भ हो पाएगी। इस दौरान लोंगों का सामान्य जीवन न केवल अस्त-व्यस्त हो जाता है, बल्कि वे अपने परिवार के सदस्यों से भी अलग-थलग पड़ जाते हैं। और उस क्षेत्र विशेष में अव्यवस्था की स्थिति पैदा हो जाती है। इस प्रकार की अव्यवस्थित एवं कष्टकारी स्थिति में आपदा प्रबंधन के आदर्श तरीकों को अपनाने से ही प्रभावित पीड़ित लोगों को समय पर राहत पहुँचाते हुए उन्हे बचाया जा सकता है।



हाल ही में जम्मू-कश्मीर में आये भूकम्प के दौरान बारामुला के उरी क्षेत्र में बचाव एवं राहत कार्यों में लगे केरिपुबल के जवान

चिकित्सा प्रबंधन

किसी भी प्रकार की आपदा आने पर सबसे पहले बचाव अभियान की शुरूआत करते हुए पीडितों/घायलों के प्राथमिक उपचार और फिर गहन उपचार की व्यवस्था

से इस कार्य के लिए पर्याप्त विशेषज्ञ चिकित्सकों, पैरा मेडिकल कर्मचारियों और दवाईयों की व्यवस्था करना सबसे पहला कार्य है। इन महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं के प्रबधन व प्रभावकारी क्रियान्वयन के लिए विभिन्न स्थानीय सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों में आपसी समन्वय रखना सबसे महत्वपूर्ण है। स्थान या क्षेत्र विशेष में त्रासदी से पीड़ितों/घायलों को ईलाज के लिए अस्थाई/स्थाई सेल्टरों एवं अस्पतालों में पहुँचाने की व्यवस्था करना भी आपदा प्रबंधन का अनिवार्य पहलू है। इस कार्य के लिए सेना, अर्द्धसैनिक बलों, पुलिस, स्थानीय सामाजिक सस्थाओं, स्थानीय लोगों आदि का सहयोग लेना चाहिए ताकि आपदा प्रबंधन कुशलतापूर्वक किया जा सके।

पंजीकरण व पूछताछ कार्यालय

किसी भी क्षेत्र में त्रासदी के कारण उत्पन स्थिति में परिवार के परिवार अपने सगे-संबंधियों से बिछुड़ जाते हैं और प्रभावित लोगों के रिश्तेदार अपने सगे-संबंधियों की कुशलता व स्थान आदि के बारे में पूछताछ करते हैं। अपने खोए हुए मित्रों व रिश्तेदारों के बारे में सही व प्रमाणिक जानकारी/सूचना समय पर नहीं मिल पाने के कारण लोगों में अत्यधिक चिन्ता व व्याकुलता उत्पंन होने लगती है। इस अव्यवस्थित स्थिति से निपटने के लिए कुशल आपदा प्रबंधन के लिए यह आवश्यक है कि एक पंजीकरण व पूछताछ कार्यालय गठित करके विभिन श्रोतों से विश्वसनीय व सही सूचना एकत्रित की जाए और इसे प्रभावित लोगों के बीच प्रसारित किया जाए। इस संगठन का पहला उत्तरदायित्व आहत हुए व्यक्तियों के रिश्तेदारों के बीच सम्पर्क स्थापित कराना, बिछड़े परिवारों को मिलाने में सहायता करना, मृतकों के बारे में उनके रिश्तेदारों को जानकारी देना, पीड़ितों के सगे-संबंधियों की हिफाजत व कल्याण के बारे में कार्रवाई करना है। कोई भी त्रासदी या दुर्घटना घटने के बाद पंजीकरण व पूछताछ संगठन का गठन करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि प्रभावित पीड़ितों को चिकित्सा उपचार देना है। इस संगठन का गठन करते समय स्थानीय स्वंय सेवकों लोगों को तैनात करना अधिक लाभदायक होगा, क्योंकि इससे घायल/मृतक स्थानीय लोगों की पहचान करने में आसानी होगी। इनका चयन करते समय व राहत कार्यों की योजना बनाते समय स्थानीय नेताओं या सभ्रांत व्यक्तियों की राय लेना भी लाभदायक होगी ताकि सही लोगों का चयन होने के साथ-साथ राहत कार्यों में स्थानीय लोगों की भागीदारी भी बढ़-चढ़ कर हो सके। इस संगठन का पहला कार्य प्रभावित क्षेत्रों में घायलों/मृतकों की पहचान करके उनको पंजीकृत करते हुए सूचीबद्ध करना तथा उनके सगे-संबंधियों को प्रमाणिक जानकारी देना है। इस संगठन का दूसरा कार्य, राहत कार्यों में लगे विभिन सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के बीच समन्वय बनाये रखना तथा इनसे प्राप्त सूचनाओं को एक-दूसरे के बीच प्रसारित करना है। इस संगठन का अगला कार्य प्रभावित क्षेत्रों में कार्यरत विभिन्न अन्य नागरिक सुरक्षा राहत संस्थाओं से प्राप्त सुचनाओं अर्थात पुलिस, आपात अस्पताल, शवगृह तथा शव अन्त्योष्टि मैदान आदि की जानकारी राहत शिविरों या

अस्थाई सेल्टरों में जमा लोगों को देना है ताकि लोगों को इस संबंध में होने वाली परेशानी से बचाया जा सके। इसके अलावा विभित्र अस्थाई सेल्टरों व राहत शिविरों में दी जा रही राहत सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करके इन्हें त्रासदी से प्रभावित लोगों में प्रचारित करना और यदि आवश्यक हो तो इन्हें प्रेस को प्रकाशन के लिए उपलब्ध करवाना भी इस संगठन का महत्वपूर्ण कार्य है। इस संगठन का यह दायित्व भी है कि वह जगह-जगह पर स्थापित किए गए विभिन्न अस्थाई पंजीकरण संस्थाओं में पंजीकरण आदि कार्यों में एक समान क्रियाविधि अपनाने के लिए सहायता करे। और इन कार्यों में उपयोग होने वाले फार्म आदि निर्धारित करके उपलब्ध करवाये ताकि विभिन्न अस्थाई सेल्टरों व राहत शिविरों में पारस्परिक समन्वय व सहयोग करने में आसानी हो सके।

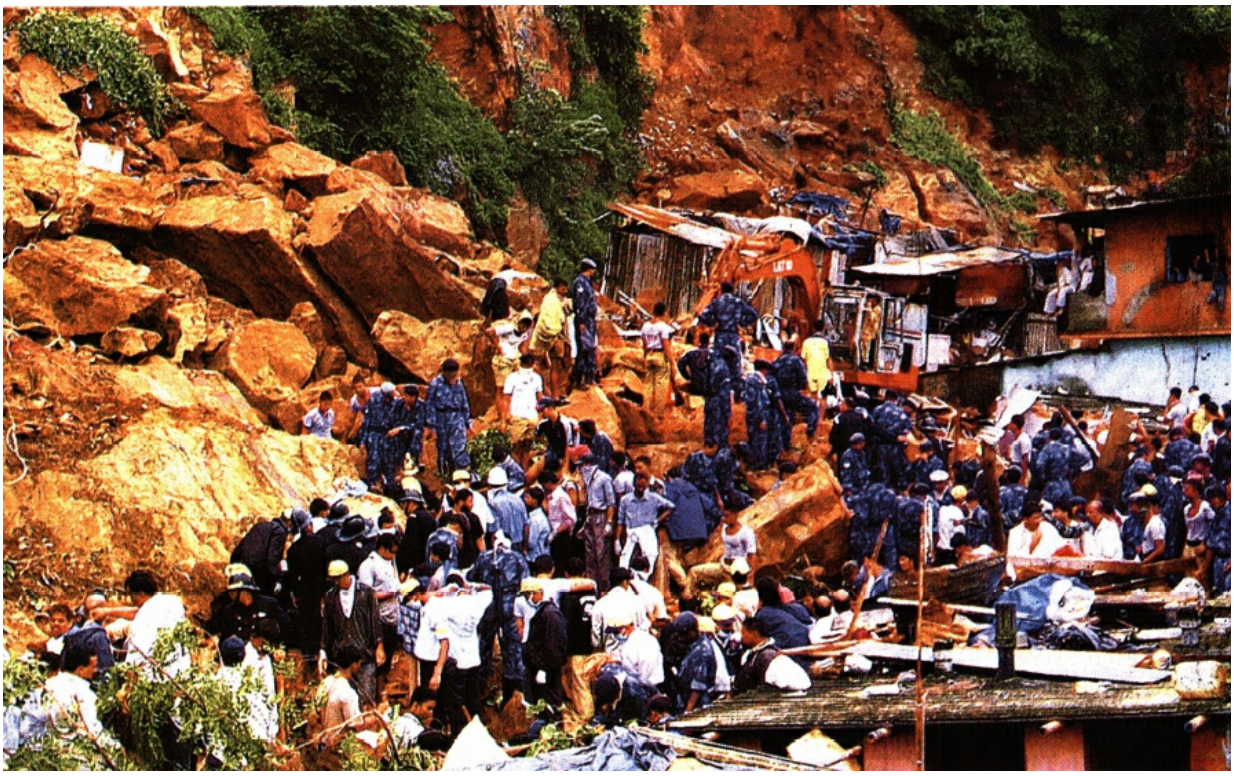


गुजरात में आए भूकम्प के दौरान भुज में तैनात केरिपुबल के जवान

जल पान एवं स्वच्छता प्रबंधन

किसी भी प्रकार की त्रासदी के बाद प्रभावित पीड़ित लोगों को राहत शिविरों में लाया जाता हैं, जहां पर उनकी तात्कालिक जरूरतों अथार्त आश्रय, भोजन, कपड़ा व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती हैं। यहीं पर लोग अपने बिछड़े हुए मित्रों व रिश्तेदारों के बारे में पूछताछ के लिए आते हैं। इस प्रकार इन स्थानों पर अपार जन-

समूह एकत्रेत हो जाता है। अतः ऐसे स्थानों पर भोजन की स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया जाता। बहुत से संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा उत्पन हो सकता है, और पहले से ही त्रासदी से पीड़ित लोगों को एक और विपत्ति का सामना करना पड़ सकता है। जहां पर जन-समूह को भोजन करवाना हो, वहां पर सभी के द्वारा साफ-सफाई की आदत का पालन तब तक नहीं किया जाता जब तक कि उन पर सख्त निगरानी नहीं रखी जाए। किसी भी प्रकार की त्रासदी के बाद जन-समूह को भोजन करवाते समय प्रतिकूल व कठिन परिस्थितियों के बावजूद भी भोजन की स्वच्छता के सिद्धान्तों का पालन करना आदर्श आपदा प्रबंधन के तहत अनिवार्य होता है। भोजन बनाने व वितरित करने के लिए कार्यरत सभी लोगों व स्वयंसेवकों को भोजन व रसोई की स्वच्छता के सिद्धान्तों के बारे में पर्याप्त जानकारी एंव निपुणता होनी आवश्यक है।



मुम्बई में भारी वर्षा के कारण हुए भू-स्खलन के दौरान बचाव एवं राहत कार्यों में लगे आर. ए. एफ. के जवान

राहत शिविरों एवं अस्थाई कैंपों में जलपान की स्वच्छता के मुख्य सिद्धान्त

(क) कच्चा भोजन अर्थात पकाने से पहले सभी वस्तुओं आटा, चावल, दाल, डब्बा बन्द दूध, ताजा दूध, फल, सब्जियां, मसाले आदि सभी वस्तुओं का बारीकी से

निरीक्षण करना आनेवार्य है। इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाए कि कच्चो सामाग्रो में किसी प्रकार की दुर्गन्ध या सड़न तो नहीं आ रही हैं, और उनमें झींगुर, फंफूदी या अन्य कीड़े-मकौडों का संक्रमण तो नहीं है।

(ख) रसोई घर की स्वच्छता और भोजन तैयार करते समय कार्यरत व्यक्तियों, वर्तनों व आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। रसोई घर में कार्यरत सभी रसोईयों व उनके सहायकों की चिकित्सा अधिकारी से जांच करवाकर यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि वे किसी भी प्रकार के संक्रामक रोग से पीड़ित नहीं हैं। उनके नाखूनों आदि की नियमित जांच करवाते हुए उन्हें रसोई धर में पहनने के लिए अलग कपड़े उपलब्ध करवाये जाने चाहिए। भोजन पकाने के बाद, बाटने से पहले, इसे दूषित होने से हर हालत में बचाया जाना चाहिए। पके हुए भोजन के दूषित होने का मुख्य खतरा मक्खियों व धूल कणों से रहता है। इस प्रकार की आपदा के समय मच्छरदानियों का उपयोग करने से मक्खियों से पूर्ण बचाव तथा धूल से आंशिक बचाव किया जा सकता है। भोजन वितरित करते समय नंगे हाथों के बजाए बड़ी चम्मचों, चिमटों आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(ग) रसोई घर के आस-पास के क्षेत्रों की सफाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अनुपयोगी भेजन, सब्जियों के छिलके और रसोई के सभी प्रकार के कूड़े करकट को पर्याप्त दूरी पर गड्ढा खोदकर उसमें डाला जाना चाहिए। रसोई के आस-पास पानी जमा नहीं होने देना चाहिए और पीने के पानी के स्थान, नल की व्यवस्था सुविधाजनक स्थान पर करते हुए मक्खियों, धूल आदि से बचाव किया जाना चाहिए। रसोई घर व भोजन करने के स्थान के चारों ओर कीटनाशकों अर्थात डी.डी.टी., गैमेक्सीन, चूना आदि का नियमित छिड़काव करते हुए कीड़े-मकौड़ों व मक्खियों से बचाव किया जाना चाहिए।

स्वच्छ जल की व्यवस्था

पानी जीने के लिए अनिवार्य है। इसलिए आपात राहत के लिए स्थापित किसी भी राहत शिविर में साफ व सुरक्षित पीने के पानी की आपूर्ति करना नितान्त आवश्यक है। यदि जल के परिशोधन में पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया तो दूषित जल से उत्पन होने वाले संक्रामक रोगों जैसे हैजा, टाइफाइड, बुखार आदि से राहत शिविरों में रह रहे इतने अधिक लोगों की जानें जा सकती हैं, जितनी कि उस त्रासदी के कारण भी नहीं गई होगी। आपात राहत के लिए तैनात सभी लोगों को इस बात की पर्याप्त जानकारी दी जानी चाहिए कि पानी किन कारणों से दूषित होता है और इसे उपयोग के लिए कैसे साफ व सुरक्षित रखा जा सकता है। राहत शिविरों में जल की आपूर्ति के लिए सामान्यतः कुओं, टयूवेल, नदियों, झीलों व तालाबों आदि श्रोतों का सहारा लिया जाता है। अतः इस बात की भलीभाँति जांच-पड़ताल कर लेनी चाहिए कि श्रोत स्थल पर पानी को कोई दूषित तो नहीं करता है। ट्रांजिट के दौरान अर्थात खुली नहरों, नदियों द्वारा आने वाले पानी को उन लोगों द्वारा गन्दा किया जा सकता है जो बीच में

इसका उपयोग करते हैं। इसलिए ट्रांजेट के दौरान भी जल की स्वच्छता पर निगरानी रखना आवश्यक है । जल का भण्डारण करते समय मिट्टी धूल व कीड़े-मकोड़ों से बचाव करना भी आवश्यक है। जल वितरण के समय रिसाव वाले नलों या दूषित वर्तनों का उपयोग नहीं करना चाहिए। पानी के गंदेपन को दूर करने के लिए निर्धारित मात्रा में फिटकरी का उपयोग करना लाभदायक होगा। इसके लावा चूने के तत्व अर्थात कैल्सियम साल्ट रसायनिक तत्वों के कारण पानी में भारीपन होता है। इससे दस्त, बदहजमी आदि रोग उत्पन हो सकते हैं। पानी के भारीपन अर्थात "कैलिसयम साल्ट" आदि दूषित तत्वों को कम करने के लिए निर्धारित मात्रा में आणुनाशक पाउडर (स्टेरलाइजिगं पाउडर) ब्लीचिगं पाउडर आदि से पानी के भारीपन को कम किया जा सकता है। पानी का स्टेरलाइजेशन गरम करके या फिर रासायनिक पदार्थ अर्थात क्लोरीन, आयोडीन आदि मिलाकर भी किया जा सकता है। इसके अलावा विशेषज्ञ वैज्ञानिकों की सहायता से क्लोरीनीकरण की विधि से भी पानी को साफ करके राहत शिविरों में उपयोग किया जा सकता है। हालांकि किसी भी प्रकार की त्रासदी के बाद राहत शिविरों या अस्थाई सेल्टरों में एकत्रित भारी जन-समूह के कारण पानी की कमी होना स्वाभाविक है, फिर भी स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए प्रतिदिन प्रति व्यक्ति को सभी कार्यों के लिए कम से कम 10 से 12 गैलन पानी आपूर्ति किए जाने का लक्ष्य रखा जाना चाहिए ताकि पानी की कमी के कारण किसी को भी किसी प्रकार का और नुकसान नहीं पहुंचे।

त्रासदी पीड़ित लोगों की मानसिक शान्ति के उपाय

किसी भी प्रकार की त्रासदी के बाद प्रभावित पीड़ितों व उनके सगे-संबधियों की मानसिक स्थिति अत्यन्त विकृत और असन्तुलित हो जाती है। अतः इस समस्या का निदान करने के लिए राहत शिविरों/अस्थाई सेल्टरों में योगा, आर्ट ऑफ लिविगं व सर्व धर्म प्रवचनों की कक्षाओं का आयोजन करना तथा अन्य मनोरंजन की सुविधाओं की व्यवस्था करना लाभदायक होगा। इस प्रकार की व्यवस्थाएं करने से विपत्तियों से पीड़ित लोग अपने दुखों व मानसिक अशान्ति से उबर कर अपने पुनर्वास की ओर अपेक्षाकृत कम समय में अग्रसर हो सकते हैं।

आपदा पीड़ित लोगों के पुनर्वास की योजनाएं

किसी भी क्षेत्र में आई प्राकृतिक आपदाओं के कारण शहर व गांव के गांव तबाह हो जाते हैं, इन परिस्थितियों में जीवित लोगों को अल्प अवधि तक अस्थाई कैंपों में रखकर तात्कालिक राहत तो पहुंचाई जा सकती है, फिर भी दीर्घ समय के लिए उनका स्थाई पुनर्वास करना आवश्यक है। इस प्रकार एक निश्चित समय के अन्तर्गत योजनाबद्ध तरीके से पीड़ितों का पुनर्वास करने का कार्य भी आपदा प्रबंधन का महत्वपूर्ण पहलू है। किसी भी आपदा के बाद किए जाने वाले पुनर्वास कार्यों में काफी

मात्रा में धन की आवश्यकता होती है। हांलाकि ऐसे पुनर्वास कार्य प्रायः सरकारों द्वारा किया जाते हैं, फिर भी विभिन पुनर्वास योजनाओं में गैर सरकारी सगंठनों व अन्य सामाजिक संस्थाओं का सहयोग लेने से स्थिति को और जल्दी सामान्य बनाया जा सकता है। अतः आपदा प्रबधंन में सक्रिय रुप से कार्यरत संगठनों का यह दायित्व भी है कि वे तात्कालिक राहत कार्यों के साथ-साथ विभित्र सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं के बीच परस्पर समन्वय कायाम करते हुए पुनर्वास योजनाओं को शीघ्र क्रियान्वयित करवायें ताकि प्रभावित लोगों को अस्थाई शिविरों से उनके स्थाई आवासों में जल्दी भेजा जा सके। और वे अपनी जीवनचर्या नये सिरे से प्रारम्भ कर सकें।

उपरोक्त वर्णित तथ्य और आपदा प्रबंधन की क्रिया-विधियां मेरे विद्यार्थी जीवन में राष्ट्रीय सामाजिक सेवा (NSS) की प्रतिभागिताओं और सेवा के दौरान किए गए सिविल नागरिक कार्यो के अनुभव पर आधारित हैं।

प्राकृतिक आपदाएं और सी.आर.पी.एफ.

सुनामी त्रासदी

26 दिसंबर, 2004 को भूकंप तथा सुनामी लहरों ने अण्डमान निकोबार द्वीप समूह तथा तमिलनाडु के कुछ जिलों को तहस-नहस कर दिया जिसमें जन-धन की भारी हानि हुई। सड़क तथा समुद्री संचार व्यवस्था के पूरी तरह तहस-नहस हो जाने के कारण लोग बिना भोजन पानी के असहाय हो गये। ऐसी परिस्थितियों में आर.ए.एफ. सहित केरिपुबल की टुकड़ियां 30 दिसंबर, 2004 को पोर्टब्लेयर तथा 29 दिसंबर, 2004 को तमिलनाडु में प्रशासन तथा लोगों के लिए कुछ आशा और राहत की किरण लेकर पहुंची। आर. ए. एफ. की चार कम्पनियों सहित केरिपुबल की 12 कंपनियों ने पीड़ित लोगों तक राहत सामग्री लाने ले जान, चढ़ाने-उतारने, मलवे से जीवितों तथा मृत शवों की तलाश करने में मदद की। बल के चिकित्सकों तथा अर्द्धचिकित्सकीय स्टाफ ने भी ऐसी परिस्थितियों में पीड़ितों की पूरी-पूरी मदद की।

तत्पश्चात कैम्पवेल वे, हटवे तथा टेरेसा द्वीप में शेड स्थापित करने के लिए केरिपुबल के 200 कार्मिकों को लगाया गया। केरिपुबल द्वारा किये गये इस उल्लेखनीय कार्य को अंडोमान-निकोबार द्वीप समुह की जनता तथा प्रशासन ने खूब सराहा। जन-धन से सहायता करने के अलावा केरिपुबल ने पीड़ितों के कल्याण तथा पुनर्वास के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष में 4.4 करोड़ रूपये दान किये।



केरल के कोलम जिले के अजहीकल, करूणागपाली, में सूनामी प्रभावित लोंगों के लिए बचाव राहत कार्य में लगे ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम के जवान



सुनामी त्रासदी में कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में मारे गये लोगों के शवों को निकालते *105* बटा. आर.ए.एफ. के कार्मिक

जम्मू कश्मीर में बर्फबारी एवं हिमपात

फरवरी, 2005 में कश्मीर घाटी में भारी हिमपात हुआ जिससे राष्ट्रीय राजमार्ग-1ए सहित सभी मुख्य मार्ग बंद हो गये। बिजली, टेलीफोन तथा पानी की आपूर्ति आदि वाधित हो गई।

केरिपुबल बर्फ हटाने की प्रक्रिया में तुरंत लग गई तथा जरूरतमंदों को पीने का पानी, टेन्ट तथा राशन आदि मुहैया कराकर जन जीवन को सामान्य करने में अपना योगदान दिया। केरिपुबल द्वारा पीड़ितों के इलाज के लिए मेडिकल कैंप भी लगाए तथा मोबाइल मेडिकल यूनिटों से लगभग 10,000 पीड़ितों को चिकित्सा सहायता मुहैया कराई गई। जम्मू के ऊपरी क्षेत्र में भारी हिमपात के दौरान बल द्वारा स्थानीय अस्पतालों के केज्युल्टी वार्डो को कोयले की भी आपूर्ति की।



बर्फबारी के दौरान स्थानीय लोगों की सहायता के लिए तैनात केरिपुबल के जवान

गुजरात में बाढ़

2 से 7 अगस्त, 2005 तक गुजरात के अहमदाबाद, खेड़ा नटियाड तथा गांधीनगर के विभिन्न स्थानों पर बचाव एवं राहत कार्यों के लिए आर.ए.एफ. की दो कंपनियां, 146 बटा0 केरिपुबल की एक कंपनी, ग्रुप केन्द्र गांधीनगर की एक तदर्थ कंपनी तथा आर.टी.सी.-1 की 4 तदर्थ कंपनियां कुल 8 कंपनियों को तैनात किया गया।

बचाव एवं राहत कार्य के लिए गुजरात में तैनात केरिपुबल के जवानों ने पानी, भोजन तथा दवाईयां जैसे आवश्यक सामान मुहैया करा कर भारी संख्या में पीड़ितों की जान बचाई। हमारे जवानों ने खेड़ा में 2000 तथा बड़ोदरा में 25,742 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भी पहुंचाया।



बाढ़ के दौरान बचाव एवं राहत कार्यों में लगे आर. ए. एफ. के जवान।

महाराष्ट्र में बाढ़

27 जुलाई से 3 अगस्त,2005 तक महाराष्ट्र में आयी अचानक भारी बाढ़ के दौरान थाणे तथा रायगढ़ जिलों में बचाव एवं राहत कार्यों के लिए आर.ए. एफ. की 4 कंपनियां तथा 145 बटा० केरिपुबल की 3 कम्पनियों कुल 7 कम्पनियां तैनात की गयी। महाराष्ट्र में बचाव एवं राहत कार्य के लिए तैनात केरिपुबल के जावनों ने अनेक लोगों की जिन्दगी, संपत्ति, पशुधन आदि की रक्षा कर प्रसंशनीय कार्य किया है। हमारे जवानों ने पानी, भोजन तथा दवाईयां आदि आवश्यक सामान भी पीडितों को मुहैया कराया।



गुजरात में आई बाढ़ के दौरान मासूम बच्चों को बचाते केरिपुबल के जवान

जम्मू कश्मीर में भूकंप

8 अक्टूबर,2005 को आये भयंकर भूकपं से भारी तभाई हुई। केरिपुबल ने उरी, तंगधार तथा नियंत्रण रेखा से लगे दूर-दराज के अन्य क्षेत्रों में बचाव एवं राहत कार्य शुरू किये। बचाव कार्य के लिए सभी उपकरणों से सज्जित कंपनियों के अलावा चिकित्सा टीम प्रभावित क्षेत्रों में इस प्रकृातिक त्रासदी से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए तैनात की गयी। इसके अतिरिक्त केरिपुबल ने बारामुल्ला जिले के कमालकोट गांव को गोद लिया है जिसमें इस भूकंप के दौरान भारी संख्या में तभाई हई थी। बल द्वारा इस गांव का पूरी तरह पुनर्वास किया जाएगा।



हाल ही में जम्मू कश्मीर में आये भूकम्प में तबाह हुए बारामूला जिले के सीमावर्ती गांव कमलकोट में बचाव एंव राहत कार्यों में लगे केरिपुबल के जवान।



हाल ही में जम्मू कश्मीर में आये भूकम्प के दौरान तबाह हुए क्षेत्रों में पीड़ितों को चिकित्सा प्रदान करती केरिपुबल की मेडिकल टीम

केरिपुबल ने अभी तक लगभग 250 लोगों को मलवे से निकाल कर सुरक्षित जगह पहुंचाया है, 2000 लोगों को चिकित्सा सुविधा मुहैया कराई, 1200 लोगों के रहने के लिए आवास तथा 6300 लोगों को मुफ्त राशन बांटा। कमलकोट गांव में चौबीसों घंटे लंगर चलाया जा रहा है। जरूरतमंद लोगों को टेंट तथा आवश्यक सामान बांटा जा रहा हैं। पीने का पानी मुहैया कराने के लिए पानी के टेन्कर भेजे जा रहे हैं। केरिपुबल की यह बहुत बड़ी उपलब्धी है कि पहली बार बल ने सीमा रेखा के नजदीक तंगदार से 15 कि0मी0 दूर, एक दूर-दराज के गांव में पहुंच कर मलवे में फंसे लोगों को बचाया। यहां केरिपुबल की चिकित्सा टीम ने 69 घायलों की चिकित्सा घटनास्थल पर ही की। जैसे ही भूकम्प आने का पता केरिपुबल को चला, जम्मू कश्मीर क्षेत्र में तैनात 64 बटालियनों के जवानों को हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार किया और बचाव एंव राहत कार्य के लिए केरिपुबल ने अपनी 5 अतिरिक्त कम्पनियां तथा 3 टीमें सबसे अधिक प्रभावित हुए बारामूला तथा उरी, एल.ओ.सी. के पास जगहों जो बेहद ऊबड़ खाबड़ एरिया में बसे गॉवों में जाकर इस अचानक आई त्रासदी से प्रभावित लोगों की सहायता में जुट गयी। यह ऐसे क्षेत्र हैं जहां अभी पूरी तरह से न तो समुचित यातायात के साधन हैं और न ही रोड़, लोगों का जीवन खेती बाड़ी, और पशुपालन पर निर्भर है।

यह गांव पिछड़े है, और लोगों की माली हालत खराब है। पर्याप्त चिकित्सा सुविधा भी नहीं हैं। अतः ऐसी स्थिति में यदि कोई प्राकृतिक त्रासदी हो जाए तो लोगों के जान माल का भारी नुकसान होना लाजमी है। जम्मू-कश्मीर में नागरिक प्रशासन के साथ कानून एवं व्यवस्था की स्थिति से निपटने में लगी केरिपुबल आंतकवाद से लड़ने के साथ-साथ ऐसे मानवीय कार्यों में भी बड़ चड़ कर हिस्सा लेती है। अतः इस त्रासदी के बाद प्रधानमंत्री के आहवान पर बल के सभी कार्मिकों ने अपने एक दिन के वेतन के रूप में भूकम्प से प्रभावति लोगों के पुनर्निवास के लिए 4 करोड़ 70 लाख रूपये प्रधानमंत्री के आपदा राहत कोष में दान दिये। बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा इस राशि का चैक प्रधानमंत्री कार्यलय में कार्यरत केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री पृथ्वी राज चौहान को सौंपा। बल ने सीमा रेखा के नजदीक कमलकोट गांव का पूरी तरह से विकास एंव पुनर्निमाण करने के लिए गोद लिया है। यह गांव भूकम्प के दौरान पूरी तरह से तबाह हो गया था। कमलकोट गांव की आवादी लगभग 1680 है तथा इसमें 163 मकान हैं, भूकम्प ने इस गांव के 22 मकानों को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया तथा शेष मकान आशिंक रूप से क्षति ग्रस्त हो गये। इस गांव में 155 लोग मारे गये जबकि 700 लोग घायल हुए। केरिपुबल ने ग्रामिणों के लिए 165 स्थायी आवास स्थापित किये तथा भूकम्प के तुरन्त बाद लंगर शुरू किया। इस गांव की अर्थ व्यवस्था पूरी तरह से धान की खेती वाड़ी तथा चीड़ के वृक्षों पर टिकी हुई हैं। केरिपुबल गांव वालों की अभी भी हर तरह से सहायता कर रहा हैं ताकि वे अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में पूरी तरह से लोट सकें। केरिपुबल के जवान इस गांव के विकास/निर्माण कार्य मे दिन रात जुटे हुए है, और वहां की जनता भी हमें हर सभंव सहयोग दे रही है। जिन लोगों की मकान पूरी तरह से टूट गये हैं उनके लिए सैड बनाये गये है। और ठण्ड से बचने के लिए कम्बल व वस्त्र, बल मुहैया करा रहा है, गांव में चौवीसों घण्टे लंगर चल रहा है, कोई व्यक्ति किसी भी समय ताजा खाना खा सकता है, चाय पानी पी सकता है। यह प्रक्रिया जब तक चलती रहेगी तब तक कि यहां के लोंगों की जिन्दगी पूरी तरह से पटरी पर ना आ जाए तभी केरिपुबल का संकल्प व बल का आदर्श **"सेवा भक्ति"** पूरी तरह सार्थक होगा।

द्रुत कार्य बल के नये आयाम

वी० पी० एस० पंवार
पुलिस उप महानिरीक्षक, आरएएफ नई दिल्ली

अपने जनक लौह पुरूष स्व० सरदार वल्भभाई पटेल द्वारा क्राउन रिप्रजेन्टेटिव पुलिस से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रूप में नामित 1 से 200 बटा0 तक विस्तारित,

देश की एकता एवं अखण्डता को कायम रखने में बल द्वारा दिये गये सर्वोच्च बलिदानों एवं गौरवशाली परम्पराओं के इतिहास से देश में आज शायद ही कोई अपरिचित हो, चाहे पूर्वोत्तर के दुर्गम एवं नीरव वन हों, महानगरों का कौलाहल हो, जलता मरूस्थल, बाढ़ की विभीषिका में डूबता उतरता कोई प्रदेश, दंगों की आग में झुलसता कोई नगर या जलजले और सुनामी से नेस्तनाबूत हुआ कोई शहर, भाड़े के आतंकवादी हों या गुमराह हुए भड़काये गये अपने ही खाड़कू/जंगजू, सभी समस्याओं का हल-"केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।"

केरिपुबल के गौरवमयी इतिहास के कारण द्रुत कार्य बल (आर०ए०एफ०) को केरिपुबल के एक विशेष अभिन्न अंग के रूप में गठित किया है। द्रुत कार्य बल की स्थापना 7 अक्टूबर, 1992 को हुई। केरिपुबल की 99 से 108 बटालियनों को द्रुत कार्य बल में परिवर्तित कर किया गया। वर्तमान में इनके मुख्यालय आन्ध्र प्रदेश, म०प्र०, गुजरात, उ०प्र०, झारखण्ड, केरल, दिल्ली, तथा महाराष्ट्र में स्थित हैं। इस बल ने अपने गठन से ही द्रुत प्रभावी ढंग से कार्य किया एंव साम्प्रदायिक दंगों को रोकने में अहम भूमिका निभाई और सम्पूर्ण देशवासियों का प्यार एवं विश्वास हासिल किया।



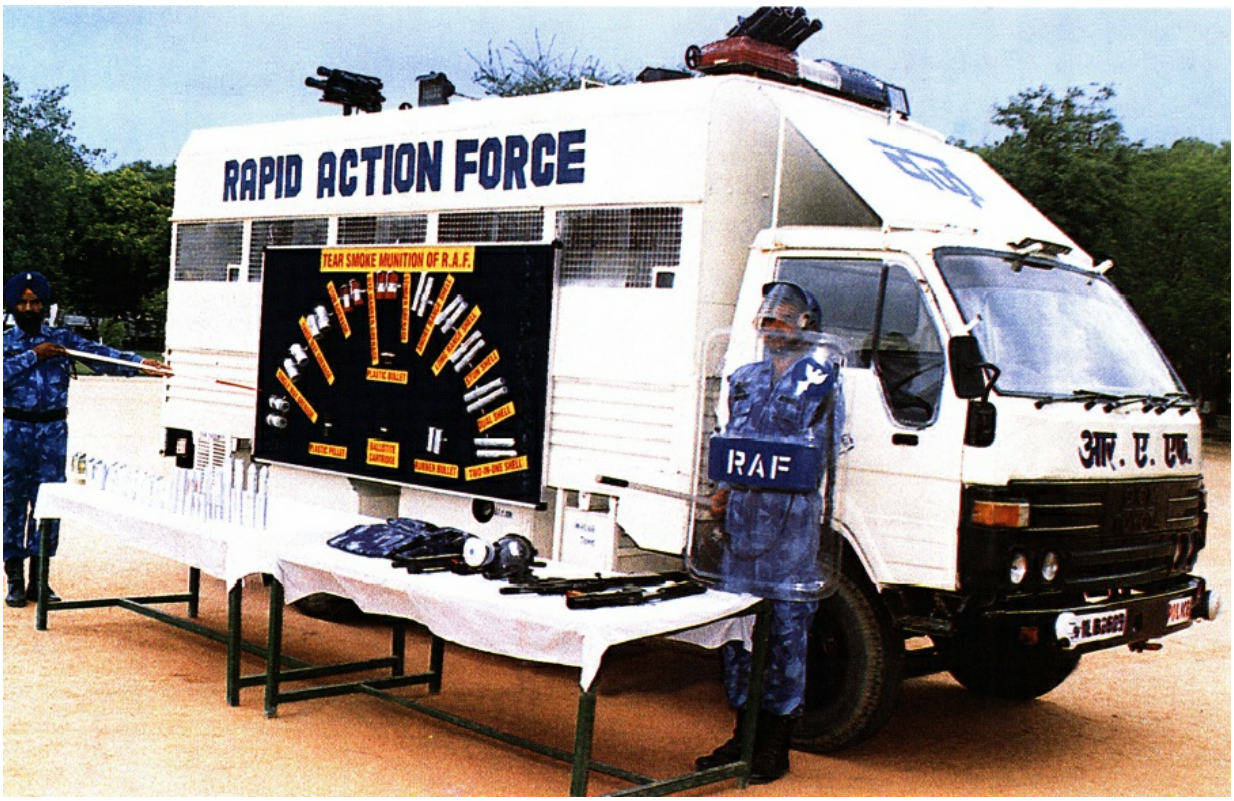
प्राकृतिक आपदा के दौरान घायल लोगों की सहायता करते आर.ए.एफ के जवान

द्रुत कार्य बल ने राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। हैती में वर्ष 1994 में संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में प्रभावी भूमिका निभाई। वर्तमान में 30 जून, 99, से सितम्बर 2005 द्रुत कार्य बल संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में कोसोवो में न्याय व कानून तथा आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करने में सफलता अर्जित की है। द्रुत कार्य बल की कर्तव्य परायणता, गरिमा व गौरव के 11 वर्ष के इतने कम समय में ही राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता को सम्मानित करते हुए भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा वर्ष, 2003 में द्रुत कार्य बल को ध्वज प्रदान किया गया। इतने अल्प काल में किसी भी बल के लिए यह सम्मान अर्जित करना एक असाधारण उपलब्धि है।

द्रुत कार्य बल की विशेषताएं

- धर्म निरपेक्ष एवं समदर्शी दृष्टिकोण
- जीरो रिसपोंस समय (कम से कम समय में तीव्र गति से आपेक्षित स्थान पर पहुंचना)
- गैर प्राणधातक हथियारों का प्रयोग (जिससे मृत्यु एवं गंभीर रूप से घायल न हो)
- दंगा नियत्रण एवं दंगे जैसी स्थिति से निपटना।
- आम जनता की संकट के समय मदद करना।

परिचितकरण अभ्यास जिम्मेदारी के क्षेत्र के अधिकारियों एवं स्थानीय जनता स्थानीय सरकारी कर्मचारियों सभी समुदाय के नेताओं के बारे में जानकारी तथा उनसे विचार विमर्श कर स्थिति का जयजा लेना। क्षेत्र की भौगोलिक बनावट सांस्कृतिक आर्थिक सामाजिक क्रिया कलापों की जानकारी लागों की मनो दशा एवं प्रवृति आदि का आंकलन ताकि जरूरत पड़ने पर त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई की जा सके



आर.ए.एफ. का दंगा रोधी वाहन "वज्र"

द्रुत कार्य बल का प्रमुख उद्देश्य सामप्रदायिक दंगों को रोकना है। वर्तमान में द्रुत कार्य बल के पास दंगों तथा दंगें जैसी स्थिति से निपटने के लिए बेहतर प्रशिक्षण एवं अनुभव के साथ साजोसामन उपलब्ध है:-

पोली कार्बोनेट शील्ड, पोली कार्बोनेट लाठी, ट्रामा पैड़, बॉडी प्रोटेक्टर, हेल्मेट (विजन), गैस मास्क, रूकशॉक, शॉक बटन, ट्रन्चन गन, गैस गन, एन्टी रॉइट गन, एन्टी रॉइट वाहन (वज्र) फायर टेन्डर (वरूण)। इसमें कोई शक नहीं है कि दंगा नियंत्रण कार्य में द्रुत कार्य बल ने अपनी एक खास जगह बनाई है और आज देश में कहीं भी दंगें फसाद हो इसके आगमन को शांति की वापसी के रूप में देखा जाता है।

आज के इस बदलते परिवेश में द्रुत कार्य बल का दायरा यद्यपि केवल दंगा नियंत्रण बल के तौर पर ही सीमित नहीं रह गया हैं। यह बल नये-नये परिवेशों में भी अपनी पहचान बना रहा है। दंगा नियंत्रण के अलावा जिस परिपेक्ष में द्रुत कार्य बल ने सबसे ज्यादा कार्य किया है और एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, वह है आपदा प्रबंधन।

आपदा प्रबंधन:-

आपदा चाहे वह दैवीय हो या मानव जनित, प्रकृति का एक ऐसा भयावह व

विभत्स रूप है जिसकी चपेट में आने पर बहुमूल्य जान-माल की अत्याधिक हानि होती है। आपदा किसी भी क्षेत्र में एकाएक व अप्रत्याशित ढंग से आती है। और वहां का सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त कर देती है। आपदा प्रशासन तन्त्र को पंगु बनाकर उसे कड़ी चुनौती देती है। ऐसी स्थिति में देशवासी सुरक्षा बलों से मदद एवं पुर्ननिर्माण क अनुरोध करते हैं। इसीलिए कोई भी आपदा आने पर सभी देशवासियों का ध्यान सुरक्षा बलों की ओर सहायता के लिए जाता है। द्रुत कार्य बल अपने मूल कर्तव्य साम्प्रायिक दंगों से निपटने के साथ-साथ आपदाओं से निपटने के लिए भी सदैव तैयार रहता है।

पिछले एक दशक में आने वाली सभी छोटी और बड़ी आपदाओं में चाहे वह प्राकृतिक हों या फिर मानव निर्मित, आर.ए.एफ. ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1995 में सूरत में प्लेग महामारी के तौर पर फैला तो वहाँ सबसे पहले मदद के तौर पर पहुंचने वाली टुकड़ी द्रुत कार्य बल की थी। यह एक ऐसा समय था जब सूरत में हाहाकार मच रहा था और नगर के सभी व्यक्ति अपनी जान बचाने के लिए नगर को छोड-छोड कर भाग रहे थे, ऐसे में द्रुत कार्य बल के जवानों ने अपनी जान की परवाह करते हुए जिस तत्परता और मुस्तैदी से आपदा का प्रबंधन किया यह अविस्मरणीय है और आज भी सूरत के लोग याद करते हैं।

द्रुत कार्य बल को मिसाल कायम करने का सफ़र जो सूरत में 1993 में शुरू हुआ वह कदम दर कदम मजबूती से चलता जा रहा है। चाहे वह 1998 के गुजरात और 1999 का उडीसा का महाचक्रवात या 2001 का गुजरात का भूकम्प या फिर दिसम्बर, 2004 का सुनामी का प्रकोप हो, हर जगह आरएएफ के जवानों ने आपदा प्रबंधन में अपनी दक्षता का परिचय दिया और हजारों अमूल्य जानों को बचाया। अपनी अनशासनप्रीयता और वचनवद्धता के आधार पर द्रुत कार्य बल ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है।

इस नई सदी के आरंभ में, समय के बदलते परिवेश में, आज एक अन्य जरूरत यह है कि द्रुत कार्य बल अपने लिए कुछ नये आयाम भी कायम करें और अपनी दक्षता को समय की कसौटी पर साबित करें।



हैदराबाद के हबीब नगर में साम्प्रदायिक दंगों के दौरान शान्ति व्यवस्था कायम करने के लिए तैनात आर.ए.एफ. के जवान

दंगा नियंत्रण और आपदा प्रबंधन के अलावा, अंतरराज्य अपराध नियंत्रण एक ऐसा आयाम है जहाँ द्रुत कार्य बल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अपराधीकारण से बढती हई तकनीकी, विस्तार एवं कार्य क्षेत्र में अपराधियों द्वारा एक से ज्यादा राज्यों का इस्तेमाल बहुधा राज्य पुलिस के लिए परेशानी का सबक साबित होता है। यहॉ पर केन्द्रीय बल होने के नाते और अनेक राज्यों में फैले हुए उसके कार्यक्षेत्र के कारण द्रुत कार्य बल का फायदा उठाया जा सकता है। द्रुत कार्य बल की द्रुत कार्यता उन अपराधियों को पकड़ने में सहायक हो सकती है जो एक राज्य में अपराध करने के बाद दूसरे राज्यों में जा कर छिप जाते हैं।



आर.ए.एफ. की *13*वीं वर्षगांठ के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ आर.ए.एफ.बटा. की ट्राफी प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा

अंतरराज्य अपराध नियंत्रण के अलावा आज के इस नये परिपेक्ष में आतंकवाद से निबटने के लिए भी द्रुत कार्य बल को इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि द्रुत कार्य बल की एस.ओ.पी. में बल का उपयोग आंतकवाद प्रभावित क्षेत्रों में न करने का प्रावधान है, पर तकनीकी विस्तार और कई देशों द्वारा बडे आतकंवादी गुटों की अप्रत्यक्ष रूप से मदद करने की वजह से आतंकवाद का दायरा बहुत बढ़ गया है। अब उनकी गतिविधियॉ सीमित नहीं रही हैं और आज वस्तुतः पूरा विश्व ही इसकी चपेट में है। जो राज्य प्रत्यक्ष तौर पर आतंकवाद प्रभावित नहीं है उनमें आतंकवाद से निबटने के लिए विशेष सुरक्षा बलों की कमी रहती है। और ऐसे में कोई अप्रत्याशित आतंकवादी घटना होने की स्थिति में क्षेत्र में मौजूद द्रुत कार्य बल की टुकडी बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है। जरूरत केवल इस बात की है कि द्रुत कार्य बल की सभी बटालियनों का एक विशेष दस्ता गठित किया जाये जो ऐसी आतंकवादी कार्रवाई के समय बिना समय गंवाये तुरंत कार्रवाई करे। इस तरह का दस्ता गठित करना संभव है, क्योंकि द्रुत कार्य बल में सभी जवान सीआरपीएफ बटालियनों से ही आये होते हैं और उन्हें आतंक विरोधी मुहिम चलने का मूल रूप से ज्ञान होता है।

बदलते परिवेश में हथियारों के आधुनिकीकरण और राजनैतिक विचार धाराओं में बदलाव ने सभी देशों पर आणविक, जैविक और रासायनिक हथियारों द्वारा हमले का खतरा बड़ा दिया है। ऐसी स्थिति से निबटने के लिए जहॉ एक और विशेष दस्तों के गठन की जरूरत है वहीं जरूरत है कि द्रुत कार्य बल की बटालियनों को भी इन

हमलों से निपटने के प्रशिक्षण और हथियारों की। आर.ए. एफ को राहत और बचाव कार्यों के लिए जरूरी उपकरण भी उपलब्ध कराये जाये। क्योंकि संकट के समय, देश के 10 महत्वपूर्ण शहरों में अगर कोई बल सर्वदा तत्पर और तैयारी हालत में मौजूद रहेगा तो वह द्रुत कार्य बल ही होगा और वह अपने इतिहास को दोहराते हुए अपने संकल्पों पर सदा खरा उतरेगा।

170 वीं बटालियन का दीक्षांत समारोह



बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा रंगरूटों की परेड़ की सलामी लेते हुए

8 अगस्त, 2005 को ग्रुप केन्द्र, भुवनेश्वर परिसर में 170 वीं बटालियन के नवारक्षियों का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ। 170 वीं बटालियन की स्थापना 1 अगस्त, 2004 की हुई थी। नवारक्षियों को 44 सप्ताह तक भिन्न-भिन्न विषयों तथा हथियारों का प्रशिक्षण, ड्रिल, आंतरिक सुरक्षा प्रबंधन, जंगल वारफेयर, गुरिल्ला टेक्अिटस, लॉ व मैनुअल, मानवाधिकार, बचाव व राहत जैसे विभिन्न विषयों का गहन प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षुओं ने राष्ट्र के प्रति समर्पित होने का संकल्प लिया। कुल 656 नवारक्षियों में असम से 231, बिहार-205, मध्य प्रदेश-109, उत्तर प्रदेश-84, उडीसा-21, उत्तरांचल-4, हिमाचल प्रदेश व झारखंड के 1-1 नवारक्षी थे। इनमें

स्नातकोत्तर-एक, स्नातक-64,



दीक्षांत परेड़ में भाग लेते *170* बटा. के रगंरूट

इंटरमीडिएट-219 व मैट्रिक उत्तीर्ण -372 थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में केरिपुबल के महानिदेशक श्री ज्योति कुमार सिन्हा उपस्थित थे जिन्होंने परेड की सलामी लेने के बाद नवारक्षियों को संबोधित करते हुए उनसे देश हित में अपना बलिदान देने के लिए सदैव तत्पर रहने को कहा। केरिपुबल के स्वर्णिम इतिहास व वर्तमान उपलब्धियों की चर्चा करते हुए श्री सिन्हा ने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले समय में ये नवारक्षी बल की श्रेष्ठता को कायम रखने में अपना पूर्ण योगदान देंगें। बटा. के उत्साहवर्धन हेतु महानिदेशक ने बटा. कल्याण निधि के लिए रू० 100000/- रूपये अनुदान की घोषणा की। परेड का नेतृत्व बटा. के कमान्डेन्ट श्री संजीव राय ने किया। इस अवसर पर पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री सुभाष गोस्वामी, पुलिस उपमहानिरीक्षक भुवनेश्वर रेंज श्री एस०के०मिश्रा व अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, भुवनेश्वर श्री जी०एस०मस्ताना भी उपस्थित थे। इस अवसर पर भिन्न-भिन्न स्पर्धाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले नवारक्षियों को पुरस्कृत किया गया। इनमें सर्वश्रेष्ठ निशानेबाजी के लिए नवारक्षी अरविन्द कुमार, बाहय प्रशिक्षण के लिए नवारक्षी राजेश कुमार गुडडु, इनडोर प्रशिक्षण के लिए नवारक्षी प्रदीप कुमार कुशवाहा तथा सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षणर्थी के रूप में नवारक्षी मोहम्मद आरिफ को पुरस्कृत किया गया।



सर्व श्रेष्ठ निशानेबाज का पुरस्कार नव आरक्षी अरविन्द कुमार को प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा



170 **बटा. की दीक्षांत परेड के अवसर पर पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री सुभाष गोस्वामी बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।**

सफलता की छः कुंजी

1 अपनी इच्छज्ञ में दृढता लाये।
2 मन में दृढ़ संकल्प लेकर कार्य करें।
3. जीवन को समझतें हुए उत्साही बनें।
5 आत्म विश्वासी, आत्म निर्भर बनें।
6 याद रखे बडे हर उपलब्धि श्रम चाहती है।

सिपाही संजय कुमार
74 बटा० केरिपुबल

केरिपुबल का सजरू अभियान

बी एस नेगी
उप महानिरीक्षक (परि०) (उधमपुर-डोडा) रेंज

ऊचाईयां



उप महानिरीक्षक (डोंडा) श्री बी. एस. नेगी एवं *32* बटा. केरिपुबल के कमान्डेट श्री सर्बजीत सिंह सजरू अभियान के दौरान क्षेत्र का जायजा लेते हुए।

आपके स्मृतिपटल से 13 अगस्त, 2005, के जम्मू से निकलने वाले सभी मुख्य अखवारों में छपी मिलीटेन्टों द्वारा - "उधमपुर जिले के सजरू गांव में पांच हिन्दुओं के मारे जाने और 9 अन्य के घायल" होने की खबर अभी नहीं मिटी होगी। मेरे ख्याल से मिलीटेन्टों का यह कृत्य हमारे देश की 15 अगस्त, 2005 के उपलक्ष्य में एक उपहार

था।

मैं 16 अगस्त, 2005 को पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) के०रि०पु०बल (उधमपुर और डोडा रेंज) का पदभार ग्रहण किया। आते ही अपने इलाके में हुई इस घटना की जानकारी पा कर मन कुन्दित सा हो गया। श्री पी०एम० नायर, महानिरीक्षक परि०, केरिपुबल, जम्मू भी इस घटना के प्रभाव से अछुते नहीं थे। प्रथम साक्षात्कार में ही उन्होने चिंता व्यक्त करते हुए मुझ से कहा कि घटना स्थल के आसपास सुरक्षा बलों के होते हुए भी मिलिटेन्ट इतनी सहजता से यह कार्य कैसे कर गए। मतलब साफ था। मुझे सजरू जा कर वहां हालात का विवरण प्राप्त कर के महानिरीक्षक महोदय को देना था।

मैंने जब कमाण्डेन्ट 32 बटालियन श्री सरबजीत सिंह से सजरू जाने की बात कही तो वह चौंके। उन्होने बताया कि वहां के लिये रियासी से लगभग 110 कि० मीटर का संकीर्ण पहाड़ी रास्ता है और महौर के बीच दो-तीन जगह से भू-इस्खलन होते रहते हैं। अभी भी वहां धरमारी और महौर के बीच दो-तीन जगह पर भू-स्खलन हो रखा है। मिलीटेन्टों द्वारा आई०ई०डी० के लगाने का खतरा है। अतः डी०आई०जी० का वहां **By Road** जाना ठीक नहीं है क्योंकि गाडियों के फंसने का खतरा है किन्तु अपने पक्के ईरादे के अनुसार हमनें 25 अगस्त, 2005 की सुबह, 5:00 बजे 32 बटा० हैडक्वाटर उधमपुर से सजरू के लिये यात्रा प्रारम्भ की। 8:45 पर 32 बटा० हैडक्वाटर अरनास पहुंचे, नास्ते के बाद 9:15 पर आगे बडे और 10:45 बजे पर धरमारी पहुँचे । धरमारी में सी/32 बटा० के कम्पनी कमाण्डर इंस्पेक्टर राम सिंह अपने जवानों के साथ रास्ते में आये हुए थे, वहां कुछ स्थानीय लोग भी खडें थे। क्योंकि अभियान साजरु का था, इसलिए उनसे हाल चाल पूछ कर हम आगे बढे। एक जगह पर मुझे लगभग एक हजार फीट नीचे गिरी एस०एच०ओ० महौर की जीप के अवशेष दिखाये दिये जिसमें एस० एच०ओ० और उसके साथी, जीप के गहराई में लुढ़कने से मारे गये थे। यही पर एक बुल्डोज़र पहाड़ की मिट्टी सरका कर बंद रास्ते को साफ कर रहा था। रास्ता कठिन था और ऊँचाईयॉ तथा गहराईयॉ खतरनाक थी, किन्तु प्रकृति की मनोहर छटा ने हमें सब कुछ भुला दिया था और हम अपने चालक को हिम्मत देने के साथ-साथ, प्रकृति के मनोहर दृश्यों का आनंद ले रहे थे। लगभग 12:00 बजे महौर को पार किया। कुछ दूर ही गये थे कि हमारी टाटा सूमो खराब हो गयी। उसकी प्रोटेक्शन में एक अन्य गाडी व जवानों को छोड़ कर, हम शेष दो जिप्सियों में सजरू की ओर बढे । लगभग 13:00 बजे सजरू पहुँचे। वहॉ पर कैम्प का भ्रमण करने के बाद पहले से ही इंतजार कर रहे जसरू पंचायत के सदस्यों से मुलाकात की। इस पंचायत में 13 छोटे-मोटे गॉव हैं जिनकी कुल जन-संख्या 5500 है, जिसमें हिन्दूओं की जन-संख्या लगभग 500 है। ये सभी हिन्दु परिवार गॉवों में अपने पहाड़ी खेतों के साथ-साथ दूर-दूर रह रहे हैं।

यहीं के एक जमलांन गॉव में सोहन मल के घर में 12 अगस्त, 2005 की शाम लगभग 22 हिन्दू स्त्री-पुरूष एकत्रित हुए थे और एक साथ बैठकर बातचीत व भोजन

कर रहे थे। तभी अचानक लगभग 21:30 बजे मिलीटेन्टों ने उनके ऊपर पहले ग्रेनेड फेंका और फिर ए० के०-47 से अंधाधुंध फायर करके भाग गये। इस हादसे में पॉच व्यक्ति मारे गये और 9 अन्य घायल हो गये। सजरू पंचायत के लोगों ने मुझसे कहा कि जमलान गॉव के पास सी. आर. पी. एफ. का पोस्ट लगना चाहिए, क्योंकि ये गॉव सजरू से 2-3 कि० मी० दूर है और उन्हें निरंतर मिलीटेन्टों से खतरा है। मैंने उन्हें पोस्ट लगवाने का आश्वासन दिया। बातचीत से पता लगा कि उन लोगों के परिवारों को रात में सुरक्षित जगहों पर एकत्रित होकर रात गुजारनी पड़ती है। इन मुश्किलों के कारण इस इलाके के कई हिन्दू परिवार यहॉ से रियासी, उधमपुर की ओर जम्मू चले गये हैं। इलाके के कुल 85 वी.डी.सी सदस्यों में से, सभी हिन्दू हैं। मुस्लिम समुदाय का कोई भी व्यक्ति वी०डी०सी० का सदस्य नहीं बना हुआ है। पिछले दो वर्षों से इस इलाके के हिन्दुओं पर मिलीटेन्टों का दबाव बना हुआ है। कुछ समय पहले तक सुरक्षा बलों की गहन सी०आई० (आप्स) कार्रवाई से कुछ सुरक्षा का वातावरण बना था। किन्तु 12 अगस्त, 2005 को मिलीटेन्टों को अचानक मार-काट करने का मौका मिल गया। जानकारी में आया है कि इस घटना के बाद सभी स्थानीय लोगों में भय व्याप्त है तथा वे मिलिटेन्टों का साथ देने के लिए मजबूर हैं। और कोई भी व्यक्ति सुरक्षाबलों का मददगार बनने से डरता है। फिर भी चूंकि अब जमलान गॉव में अब 16 सितम्बर, 2005 से सी.आर.पी. एफ. का पोस्ट लगा दिया गया है। इससे इन्हें कुछ राहत मिली है।

वास्तव में उधमपुर जिले की महौर तहसील जिसमें साजरू पंचायत का इलाका माना जाता है, बहुत ही गहन उग्रवाद से ग्रस्त है। जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तोएबा और हिजबुल मुजाहिद्दीन के मिलीटेन्ट इस इलाके में सक्रीय हैं। गहन जंगलों और ऊॅची-ऊॅची पहाड़ियों वाला यह ईलाका सुरक्षा बलों के लिये बहुत ही कठिन जमीनी हालात प्रस्तुत करता है। पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हुई चन्द्रभागा (चिनाब) सलाल घाटी परियोजना से सीधी दक्षिण की ओर मुडती है। इसी घाटी में ठीक उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हुई ओनस नदी, चिनाब से मिलती है। सलाल बांध के कारण इस घाटी में अरनास नगर के सामने एक बड़ी सी झील बन गई है। इसके दोनों तरफ ऊँची-उँची पहाडियां हैं, ओनस नदी के पश्चिम में 3018 मी० बटाल, 2326मी० ओपरा, 2209 मी० महोर, 3266मी० उँची धजना आदि घने जगंलों वाली पहाडियां तथा पूरव में 2476 अवहर के जंगल, 2413 शिकारी उँचाई, पाखीधार, हसोट, चानन गॉव, 2169-वरियाना टोप, भालर आदि गहन जगंल व पथरीले सीधे खडी उँचाईयों वाले ईलाके हैं, जिनमें छुपे हुए रास्ते हैं। जिनका ज्ञान लोकल गाईडों या ओ०जी०डब्लू की मद्द से मिलीटेन्टों को है। इसी कारण वे महौर इलाके में वारदात कर के छुपे हुए स्थानों में चले जाते हैं। आजतक का अनजान गांव सजरू लगभग 2300 मीटर की उँचाई पर महौर से 10 की०मी० की दूरी पर स्थित है। रामबन से संगलदान, गुल तथा बुदन से महौर होती हुई राजौरी को जाने वाली सडक सजरू से गुजरती है। भविष्य में यह सड़क **NH-1C** यानी रामबन से राजौरी राजमार्ग का रूप लेगी और क्योंकि उधमपुर से रियासी, अरनास, घरमारी तथा महौर होकर आने वाली सड़क भी सजरू

से जुडा है, इसलिए इस जगह का भविष्य मे सुरक्षा बलों की नजर से राजनैतिक तथा सामाजिक, व्यापारिक व राजनैतिक महत्व भी बढेगा। मेरे विचार से तो केरिपुबल को सजरू इलाके में किसी सुरक्षित जगह का चुनाव कर कम से कम 25 एकड सरकारी या निजी भूमि बटालियन **Camping** के लिये खरीद लेनी चाहिएं, निश्चित ही यह जगह आज से 10 वर्ष बाद बडी उपयोगी सिद्ध होगी।



पुलिस उप महानिरीक्षक *(डोंडा)* श्री बी एस नेगी एवं *32* बटा. केरिपुबल के अधिकारी व जवान माहौर *(ऊधमपुर)* में स्थिति का आकलन करते हुए।



केरिपुबल के अधिकारियों से जमलान गांव में चौकी स्थापित करने का अनुरोध करने आए स्थानीय लोग

मैं सोचता हूँ कि आजादी के 57 वर्षो के बाद भी जम्मू-कश्मीर के इन इलाकों में सड़कों, शिक्षा तथा व्यापार का विकास न होने के कारण स्थानीय लोगों के शिक्षा, वित्तीय तथा सामाजिक हालात नहीं सुधर पायें है। इस कारण कुछ स्थानीय युवाओं को धार्मिक उग्रवाद तथा विदेशों से भेजे जाने वाले धन व हथियारों द्वारा दिशा भ्रमित किया जा चुका है तथा स्थानीय लोग भी दबाव में उनका साथ देने को विवश हैं। बहुसंख्यकों, अल्पसंख्यकों के हमारे बहुआयामी राष्ट्र में चंद आतंकियों तथा सुरक्षाबलों का यह खेल बडा कष्टपूर्ण, अशोभनीय एवं अनिर्णित सा लगता है। हैरानी की बात यह है कि यदि आज से दस वर्ष पहले भी रामबन से सजरू व महौर होकर राजौरी तथा उधमपुर से महौर तक की यह सडकें ठीक बना दी गयी होती तो सजरू आज एक शहर नहीं तो कम से कम एक बड़ा कस्वा जरूर होता। और यहॉ सभी धर्म के नागरिकों को अन्य शहरों के समान सुरक्षा तथा जीवन यापन की अन्य सभी सुविधाएँ उपलब्ध होती। अभी भी देर नहीं हुई है।

“कहानी”

सी.आर.पी.एफ. बनाम समाज सेवा

उ०नि० (म०) राकेश कुमार गंगेले
80 बटालियन, केरिपुबल



समाज सेवा स्वरूप स्थानीय गरीब महिलाओं को जरूरत की वस्तुएं बाँटतें केरिपुबल की *80* बटा. के अधिकारी

पिता सीआरपीएफ में उच्च पद पर पदासीन थे और मॉ गृहणी थी, क्योंकि वह कम पढ़ी लिखी थी, मगर पिता की सेवा निवृत्ति के बाद, उनके द्वारा चलाये जाने वाले सामाजिक कार्यों में बड़ी तन्मयता से समाज को सहयोग करती थीं। और मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी, इसलिए मैं बहुत लाडली थी। चूंकि मैं अपने माता-पिता के चौथे पन में जन्मी थी, इसलिए उनका स्नेह, लाड़, और प्यार कुछ ज्यादा ही मिला था, इस कारण मैं बहुत ही स्नेहमय, शान्त तथा सौम्य, माहौल में, एक विलाशिता पूर्ण जिंदगी से बड़ी हुई थी। पिताजी की सेवा निवृति के समय मैं कक्षा 12वीं में पढ़ रही थी, इसके बाद जब मैं बड़ी हो गई, और शिक्षा पूरी कर ली, तो माता-पिता को मेरे स्थायित्व के लिए मेरी चिन्ता सताने लगी, जब कभी माता-पिता आपस में बातें करते और कहते कि बेटी सयानी हो गई, अब इसका जल्दी घर बसाना है, तो मैं कनखियों से उन्हें देख, लजा कर वहां से भाग जाती और एकान्त में

बैठ कर अपने होने वाले पति की कल्पना करने लगती और उड़ने लगती, सपनों के चांद-सितारों में, पता नहीं मन में क्या-क्या उफान आते थे, सुन्दर साजन, मेरा हमसफर इत्यादि, बस इन्ही फंतासियों को सोच कर एक अजनबी की बाहों में समा कर उसकी विशाल छाती पर सिर रख कर ख्वाबों में सो जाती, जब सपना टूटता तो तब नीरसता ही हाथ लगती।

एक दिन यह सपना मेरे पिता ने हकीकत में बदल दिया, उन्हें एक सुन्दर, बलिस्थ कद काठी का लड़का मिल गया, जो कि एक बहुत बड़ा समाज सेवक था, उसने "सुरभि' नाम की एक संस्था चला रखी जिसमें वह हमेशा असहायों की सहायता करते रहते थे, बे-सहारा लड़कियों की शादी, अनाथों को सहारा, भूखों को रोटी, नंगों को कपड़े तथा गरीब बच्चों को शिक्षा समाग्री उपलब्ध कराते थे। मेरा मन यह सब जान कर मानों कदली के फूल की तरह खिल जाता, और मैं लाजबंती की तरह लजा जाती। वह तारीख आज भी नहीं भूलती जिस दिन मैंने अग्नि को साक्षी मानकर उनके साथ सात फेरे लिये थे, और प्रथम मिलन में ही उन्होंने मेरा सब कुछ जीत लिया था।

सच कहा गया है कि खुशियों का पिटारा बहुत ही कमजोर होता है, जल्दी फूट जाता है। हुआ भी ऐसा ही, मेरे पति द्वारा सामाजिक सेवा के नाम पर एक दिन तीन असहाय कन्याओं के विवाह का आयोजन किया गया, जिसमें नगर के प्रबुद्ध नागरिक, नेता एवं स्थानीय अधिकारी सम्मलित हुए, और अगले दिन मेरे पति, समाज सेवा के इस अनुष्ठान के लिए, सभी समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर छा गये, जैसे ही मेरी मॉ ने इस अनहोने को देखा तो उन्हें खुशी के मारे हदय घात पड़ गया, और वह असमय ही काल के गाल में समा गई। अब घर में मात्र वृद्ध पिता ही रह गये और मॉ की आकस्मिक मृत्यु के सदमें में वह बीमार पड़ गये।

भला जो अन्जानों की सेवा करें, वह अपनों को भगवान भरोसे कैसे छोड़ सकते है। तब मेरे पति ने मुझसे सलाह लेकर मेरे पिता को अपने साथ रख कर सेवा का बीड़ा उठा लिया, और अच्छे से अच्छा इलाज कराया, भला पिता को कोई बीमारी होती, तो वह दवा से ठीक होते मगर उन्हें तो था अपनी जीवन संगिनी के गुजरने का सदमा, भला कैसे ठीक होते, और दरबदर उनकी हालत खराब होती चली गई, चूंकि पिता रूढिगत विचारों के थे, जिस कारण वह अपनी सेवा व बीमारी में दामांद का पैसा नहीं लगवाना चाहते थे, इसलिए इस बीमारी में उन्हें सीआरपीएफ से सेवा निवृत्ति पर मिला पैसा सारा खत्म हो गया और जमीन जायजाद भी इसी बीमारी की बलि बेदी पर हवन हो गई। एक दिन रात करीब 12 बजे मुझे आवाज दी और बोले देख बेटी तेरी मां मुझे बुला रही है और एक बड़ी सी हिचकी लेकर प्राण त्याग दिए अब मैं पूरी तरह से अभिभावक-हीन हो चुकी थी और मां-बाप का साया मेरे सिर से उठ चुका था।

एक दिन जब मेरे पति कहीं बाहर जाने को हुए तो मुझे अचानक उल्टी आने लगी, जी मचलने लगा, कुछ खट्टा-खट्टा खाने का दिल करने लगा, तब पता चला कि मेरे पति का सच्चा प्यार मेरी कोख में आ गया है, इसे सुनकर मेरे पति की खुशियां समझों

सातवें आसमान पर पहुंच गई, मैं भी बहुत खुश थी, मगर किस दुष्ट की नजर लगी थी कि, खुशियों को ढेर होते देर नहीं लगी, अचानक कुछ उल्फाई नकाब-पौश हथियार बंद तत्व घर पर आ गए, चुंकि पति की शौहरत, समाज सेवा शायद उल्फाइयों को फूटी आँख नहीं सुहाती थी, इसलिए ताबड़तोड़ गोलियों की बौछार कर उन्हें पल भर में ही ढेर कर दिया, एक गोली मुझे भी लगी थी जो केवल मेरी कोंख के ऊपर से खरोंच करती निकल गई, मगर मैं मरी हुई बनकर गिर पड़ी, और जब तक पड़ी रही तब तक कि वह हत्यारे वहां से चले ना गए, मेरे सामने ही मेरा सुहाग खून में लथपथ पड़ा देख कर मानो मेरे पति का अंतिम संस्कार हो गया हो। सामने पहाड़ की तरह विधवा जीवन एवं अंधकार मय भविष्य, क्या होगा, कैसे होगा, कैसे कटेगी यह नीरस जिन्दगानी, यही सोच-सोच कर आंसू रूकने का नाम नहीं ले रहे थे। पति के प्रांणांत से अब मैं हमेशा बीमार रहने लगी और घुन की तरह लगे सदमे ने मेरे जीवन व शरीर को बिलकुल ही काठमय कर दिया था।

घर में अकेली, सहमी, दुश्वार जीवन को लेकर जिंदगी के दिनों को इस आशा में धक्का दे रही थी कि पति का प्यार मुझे पाल कर अपना वंश आगे चलाना है, और एक दिन पेडू में असहनीय पीड़ा के साथ मैं बेहोश हो गई, जब मुझे होश आया तो पाया कि गांव के प्राथमिक उपचार केन्द्र में पड़ी थी और बगल में लेटी थी मेरे पति के प्यार की निशानी एक सुन्दर सी बिटिया। बेटी के जन्म ने के बाद मैं हमेशा ही बीमार रहने लगी, और धीरे-धीरे पति के चलाए सभी कार्य देख-रेख के बिना बंद होते गए, कुछ उल्फाइयों ने हड़प लिए। धीरे-धीरे बेटी चौदहवीं के चांद की तरह बड़ी होने लगी और घर में रखी धन-सम्पत्ति, उदर-पोषण और मेरी बीमारी में समाप्त हो गई।

कौन जाने किसकी नजर लग गई थी, मैं अपने स्वर्णिम जीवन के बारे में सोच-सोच कर बस रोती रहती, जब कभी बेटी आंखों के सामने आ जाती तो कुछ राहत मिलती। आय का कोई साधन न होने के कारण धीरे-धीरे घर की लक्ष्मी सब मुख मोड़ गई और गरीबी की खाली झोली मेरे आंचल में छोड़ गई। कहां वह दिन थे, जब दूसरों को पालते थे, आज खुद को पालने के लिए दानों से मुहताज हो गई, बेटी के पालन पोषण की चिन्ता के कारण दो-जून की रोटी जुटाने के लिए मैं गांव के ही एक सेठ के घर में तीन सौ रूपया प्रति माह की मजदूरी पर काम करने लगी, दिन भर उनकी झाड़ू-पौंछा, बर्तन व कपड़े करती सुबह-शाम जो मिल जाती, दो जून की रोटी, वही लेकर बेटी के साथ बांट-खा के सो जाती और उन्हीं तीन सौ रूपये में बेटी को पाल-पौस कर पढ़ा रही थी, एक दिन अचानक मुझे अपने गुजरे जीवन की याद आ गई और मेरी तबियत बिगड़ गई, घर में फूटी कौड़ी तक ना होने के कारण, इलाज तो दूर रहा, खाने को दाने भी नहीं थे। बिगड़ती हुई हालत को देख कर मैंने अपनी बेटी को, जो जिंदगी के पंद्रहवें पड़ाव पर थी, उसी सेठ के घर भेजा, जिसके घर में, मैं नौकरानी का काम करती थी, सेठ से कुछ इलाज के लिए पैंसे तथा खाने को कुछ खाना लाना तथा आंखों में आशा के सपने संजोए बेटी सेठ के घर पहुंची और अपनी माली व्यथा सुनाई, सेठ ने उसके पंद्रहवें पड़ाव पर पहुचे यौवन की ओर भूखे भेड़िये की तरह घूरते हुए कहा कि मैं तुम्हें सब कुछ दे दूंगा, यदि तुम मेरे आगोश मे समा

जाओ। हैवानियत भरी सेठ की अभद्र नियत को भांपते ही बेटी वहां से भाग खड़ी हुई, तरबतर पसीने से सराबोर, अभागी बेटी भाग कर घर की ओर आ रही थी कि देखा गांव के पास कुछ जानी-पहचानी वर्दी वाले लोग खड़े थे, जिनके सामने कुछ वृद्ध व बीमार लोग कतार लगाए हुए थे और उन्हें, एक वर्दी वाला डाक्टर, अलग से जांच कर रहा है, दवाइयों के मुफ्त पैकेट बांटे जा रहे हैं। तब बेटी ने देखा कि कंधे पर दो सितारे और एक स्तम्भ लगाए एक अंकल खड़े सभी को बारी-बारी से देख रहे थे, उसे लगा यही सबसे बड़े हो सकते हैं, पूंछने पर पता चला कि वह सीआरपीएफ के कमाण्डेंट हैं, उन्हें जाकर मेरी बेटी ने मेरी बीमारी की हालत की परी दास्तान सुनाते-सुनाते सेठ की हैवानियत भरी गाथा भी सुना दी और वह उनके सामने फूट-फूट कर रो पड़ी, उन्होनें भावुक हृदय से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, बेटी तुम चिन्ता नहीं करो, तुम्हारी मां को कुछ नहीं होगा, उन्होनें एम्बूलेंस की ओर इशारा करते हुए साथ दो बर्दी बालों को भेज दिया, वर्दी वालों ने मेरे घर पहुचते ही मुझे उठा कर एम्बूलेंश में डाला और लाए जहां पर सीआरपीएफ का मुफ्त चिकित्सा शिविर लगा हुआ था, वहां उपस्थित चिकित्सकों मेरी गहन जाचॅ की और वहीं पर कुछ गोलिया खिलाई तथा सुईयां लगाई, साथ में पंद्रह दिन की दवाइयां मुफ्त में बांध दी, और उसी एम्बूलेंस से घर भेज दिया, तबियत ठीक हो गई व काम करने लायक हो गई, और फिर उसी सेठ के घर पर झाड़ू-पौंछा, बर्तन करने जाने लगी, स्वास्थ्य थोड़ा ठीक हुआ तो मेरा शरीर भी कुछ ठीक लगने लगा, फिर क्या था, सेठ जब-तब मेरी बेटी को जवानी की फिरकियां कसने लगा, सेठ की हरकत देख कर मेरी बेटी ने अपने स्वामित्व व अपनी आबरू को बचाने के लिए लोक-लाज व मर्यादा के कारण सेठ की नौकरी छोड़ दी। अब वही दिन फिर फेर आये, और फिर कंगाली के दिन आ गये, इतना होते-होते बेटी ने 11 वीं कक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर ली, और उम्र के सोलहवें पड़ाव पर आ गई। घर की माली हालत को देख कर व उदर पोषण का सहारा न होने के कारण मैंने बेटी को 11वीं के बाद पढ़ने से रोक दिया, जिससे वह हमेशा, उदास रहने लगी, वह जिद करने लगी, मगर मैं मजबूर, असहाय, बेसहारा, लाचार थी उसे आगे पढ़ा सकने में, और अब मैं पूरी तरह से टूट चूकी थी, एक ओर समाज के भेड़िये मेरी हालत व परिस्थति का नजायज फायदा उठाकर मेरा शरीर नोंचना चाहते दूसरी ओर पहाड़ सा विधवापन लिए, काला जीवन व बढ़ती हुई बेटी के भविष्य की चिन्ता, कभी-कभी बेटी के भविष्य के बारे में सोच कर तो मन करता कि मॉ बेटी दोनों ही खुदकुशी कर लें, मगर पति के प्यार के रूप में मिली बेटी के सामने मैं ऐसा कर सकने में हार जाती।

गांव के बच्चों को स्कूल ड्रेस व वस्ता, टिफिन लेकर स्कूल की ओर जाते देख कर मेरी बेटी की ऑखें पथराई सी रह जाती, शायद सोचती थी कि काश वह भी .....? ऐसे स्कूल जा पाती, मगर खून का घूंट पीकर, उल्टी सांसे लेते हुए मेरे आंचल में चेहरा दुबका कर रो लेती और शान्त हो जाती। एक दिन गांव में नगाड़े के साथ मुनादी को सुन कर मैं, गांव के बाहर लगें कैम्प में बेटी को लेकर पहुंची, जहां पर फिर वही दो सितारे व एक स्तम्भ वाला अफसर, सभी को सरसरी नजर से देख रहा

था, और अब की बार लाईन में मरीज नहीं बल्कि गरीब, असहाय, स्कूली बच्चों के ड्रेस बस्ता, टिफिन, किताबें, पेन, पेंसिल, आदि बांट रहे थे, बेटी ने मेरे चेहरे की ओर मृग-मरीचिका मई नजरों से देखते हुए लाईन में लगने के लिए पूंछा, तो मैनें मूक हो सिर हिलाकर सहमति दे दी।

लाईन में लगे-लगे जब सितारे वाले साहब तक पहुंचने की बारी आई तो उन्होंने फिर से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बेटी के सम्बोधन से उसे दुलारा और सबसे ज्यादा फटे हाल में उसे देख कर स्तब्ध रह गये। सब कुछ पूछने लगे, जब उन्होने बेटी की कक्षा 12वीं पढ़ाई रोकने की मजबूरी बताई तो उनकी ऑखों में ऑसू छलक आये, और उन्होंने सबसे पहले स्कूल के हैडमास्टर को बुलाकर उसका 12वीं कक्षा में एडमिशन कराया, फिर उसके नाप की स्कूल की ड्रेस, वस्ता, किताबें, कापियां, एवं अन्य सभी प्रकार की सामाग्री देकर पूरे साल की पढ़ाई के लिए एक हजार की नगद राशि मेरे के हाथों में पकड़ाई। जब मेरे उन साहब के कंधे पर सीआरपीएफ के बैच को देखा तो मुझे अपने सीआरपीएफ में रहे अधिकारी पिता की झलक उनके चेहरे पर दिखाई दी, और फिर हो गया मेरी मजबूरी के कारण रूकी हुई मेरी बेटी की पढ़ाई का सिलसिला आरम्भ । उन सीआरपीएफ वाले साहब की दयनीयता, सुहृदयता, करूण-कंठता, एंव स्नेहता के कारण ही मेरी बेटी 12वीं कक्षा प्रथम श्रेणी में पास हो पाई। जैसे ही 12वीं कक्षा में जिले में प्रथम आई तो उसे एक निजी कंपनी ने गोद ले लिया और पूरी पढ़ाई के साथ तकनीकी शिक्षा भी दिलाई, और आज वह रिफाईनरी में मैनेजर के पद पर पदासीन है। यदि, 11वीं कक्षा के बाद सीआरपीएफ के सिविक एक्शन में मेरी बेटी मेरे साथ ना जाती और वहां पर वह साहब न मिलते तो ना जाने कहां दर-बदर की ठोकरें खाती या फिर जिस्म को समाज के ठेकेदारों के हवाले करती और या फिर खुदकुशी कर हम मां बेटी मर जाती।

जब कभी सीआरपीएफ की समाज सेवा की वह याद आ जाती है, तो मन में एक शैलाब सा आ जाता है, स्नेहता के ऑसू आँखों में झलक आते, और कंठ से निकल कर होंठों पर गूंजने लगताः- सीआरपीएफ सदा अजय-भारत माता की जय ।

संस्मरण

मानवता की मिसाल

स०उ०नि (मं) कुमार गौरव पडवारा
45 बटा. केरिपुबल



22 **बटा. केरिपुबल के जवान नलबाडी, *(*असम*)* में समाज सेवा स्वरूप बच्चों को कापी किताब बाटतें हुए।**

“मत इधर आयें, डरे-भयभीत हैं जो,
मुश्किलों से भरा यह लंबा सफर है।
मौत से होती यहां आशिकी हमारी,
पुण्य पथ पर यह शहीदों की डगर है।”

अपनी लेखनी शुरू करने से पहले मैं यह लिखना जरूरी समझता हूं कि वर्तमान में मेरी बटालियन अर्थात 45 बटालियन माओवादी/नक्सलवादी गतिविधिओं के उन्मूलन हेतु बिहार राज्य के पूर्वी चम्पारण जिला मुख्यालय, मोतिहारी से करीब छः किलोमीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में तैनात है।

अप्रैल-05 का प्रथम सप्ताह (स्पष्ट तिथि याद नहीं) वैशाख की तपती दोपहर, सूर्य का ताप अपने चरमोत्कर्ष पर था। मैं अपने कार्यालय के कार्यों में व्यस्थ था कि अनायास क्वार्टर गार्ड के **साइरन (खतरे की घंटी)** की आवाज से मन किसी दुर्घटना से आंशकित हो उठा। हुआ यह कि कैंप के दक्षिणी छोर पर बसे ‘फरसतपुर’ गांव का एक ग्रामीण क्वार्टर गार्द के सामने आकर जोर-जोर से करूण कुंदन करने लगा- “गांव को बचा लो बाबूजी, नहीं तो पूरा गांव जल जायेगा।” डयूटी पर खड़ा संतरी मामले की गंभीरता को समझते हुए खतरे की घंटी (साइरन) बजाता है और कैंप में मौजूद सभी जवान अग्निरोधक शस्त्रों के साथ गांव की उस दिशा की ओर भागते हैं जिधर से आग की लपटें और धुआं तेजी से उठ रहा था। उबड़-खाबड़ एवं गड्ढेनुमा

सड़क होने के बावजूद सी०आर०पी०एफ० का पानी टैंकर चालक चंद मिनटों में ही गाड़ी घटना स्थल पर पहुंचा देता है। केरिपुबल के जवानों की तत्परता एवं ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाते हुए जान-माल की क्षति होने से तो बचा लिया गया, परन्तु करीब 100 झोपडिओं को राख में तब्दील होने से नहीं बचाया जा सका। लगभग दो घंटे पश्चात् जब सभी जवान वापस कैंप में आये तो कार्यालय में कार्य करने वाले जवानों से गांव में लगी भीषण आग की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई, तब तक शाम के छ: बज चुके थे। उसी समय मैं क्यू०एम०शाखा में कार्य करने वाले अपने एक सहकर्मी के साथ घटनास्थल को देखने गया। वहां का हृदय विदारक दृश्य देखकर जहां मन दुःख की गहराईओं में गोता लगाने लगा वहीं वहां के लोगों द्वारा 45 बटालियन, केरपिबुल के जवानों द्वारा किये गये सराहनीय कार्यों का वर्णन सुनकर दिल फूला नहीं समा सका। मुझे गर्व हो रहा था कि मैं भी उसी बल की बटालियन का एक सदस्य हूं जिसके जवानों ने अपनी जान पर खेलकर कम-से-कम 100 घरों को उजड़ने से बचाया। कितनी मांओं की गोद सूनी होने से बचाई तो कितनों का सुहाग।

प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार दुर्घटनाग्रस्त गांव में मूलतः मल्लाह जाति के लोग रहतें हैं और गांव में उनके तकरीबन दो-ढ़ाई सौ झौपड़ीनुमा घर हैं। कहते है कि "यदि राख को ठीक से दबाया नहीं गया तो उसमें छुपी चिंगारी ज्वालामुखी बनकर पूरी बस्ती को अपने आगोश में ले लेती है।" ऐसा ही कुछ घटित हुआ संदर्भित गांव 'फुरसतपुर' में। उत्तर से दक्षिण की ओर निकलने वाली कच्ची सड़क के दायीं ओर कूड़े के ढेर पर रखी राख में दवी चिंगारी पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर बहने वाली तेज हवा के झोंके के साथ उड़कर **"पवन जगावत आग की दीपक देत बुझाय"** वाली कहावत को पूर्णतः चरितार्थ करने हुये चंद मिनट में ही एक के बाद एक लगभग सभी झोपड़िओं को अपना शिकार बना लिया। गांव में एक दिन बाद से शादी-विवाह की शहनाई एवं पारम्परिक ढोल बाजे का हर्षपूर्ण माहौल आनेवाला था वहां अग्निदेव ने इसे चिनगार और शौक में तबदील करने पर आमादा हो चुके थे। ग्रामीण अपनी जान-माल की रक्षा के लिए हाथ-पांव मारने लगे। इस बीच 45 बटालियन के जवानों की सूझ-बूझ एवं साहसिक प्रयासों से एक बड़ी अनहोनी को टाला जा सका। ग्रामीण जनता के कथनानुसार "सी०आर०पी०एफ० के लोग यदि दस मिनट भी बिलंब से आते तो गांव (के हर घर में मौत नाच रही होती।"

आग के इस जलजले ने गांव को इस स्थिति में ला दिया था कि गांव वाले के पास खाने को अन्न का एक दाना भी सही रूप में नहीं बचा था। ऐसी दयनीय स्थिति होने के बावजूद उनकी ईमानदारी का एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहुंगा-कुछ ग्रामीण को यह ज्ञात हुआ कि हम लोग सी०आर०पी०एफ० के हैं। इसकी सूचना एक औरत को मिलती है। वह औरत, जिसके शरीर पर ढंग का कपड़ा भी नहीं था, चेहरे पर उदासी और गम के भाव समेटे हम दोनों के समीप आती है, उसके हाथ में पानी भरने की दो वाल्टी हैं। वह औरत अस्पष्ट शब्दों में ग्रामीण भाषा में मुझसे कुछ कहती है। जब मैं उनसे पूछता हूँ "क्या बात है माता जी," इस पर वह कहती है-**"रउये लोगल के बाल्टी बाटे, गलती से छूट गोल बा** (आप ही लोगों का वाल्टी है, गलती से वहां छूट

गयी)। मेरा मन उस नारी के प्रति श्रद्धा से मन भर गया और मन ही मन उसकी ईमानदारी को नमन करने लगा। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर मैं यह सोचने को विवश हो गया कि क्या ये वही बिहार राज्य के नागरिक हैं? जो भ्रष्ट राज्यों में पहले पायदान पर खड़ा हैं। और यदि इतनी विपत्ती में भी जिस राज्य के नागरिकों का ईमान नहीं डोलता है, तो फिर वह कौन है? जिसके कारनामों से न जाने कितने गौरवशाली अतीत को अपने सीने में छुपाये रखने वाला यह राज्य अपनी विख्यात वाली छवि को खोकर कुख्यात हो रहा है।

वापस कैंप आते-आते गोधूली की बेला हो चली थी, अभी भी हम दोनों उस महान नारी की ईमानदारी की चर्चा कर रहे थे। इस दुर्घटना की मार्मिकता से बटालियन के वरिष्ठ अधिकारीगण को अवगत कराया जा चुका था। पलभर में अधिकारियों द्वारा आपसी विचार-विमर्श कर मानवीय दृष्टिकोण का अभूतपूर्व परिचय देते हुये यह आदेश दिया गया कि पीड़ित गांव के लोगों के बीच रात्रि का भोजन बांटा जाए। त्वरित कार्रवाई करते हुये रात 8:30 बजे भोजन वितरित करने हेतु जवान घटना वाले गांव की ओर चल दिये। अपनी सामाजिक सेवा वाली प्रवृति बल की होने के कारण मैं भी उनके साथ हो लिया। सी०आर०पी०एफ० के वनटनर गाड़ी की आवाज से भीड़ स्वतः ही जमा हो गई। गांव के एक बुजुर्ग को बताया गया कि हम आपके लिए भोजन लाये हैं। पक्तियों में जवानों द्वारा भोजन वितरित किया जा रहा था और मेरा ध्यान सफेद खादी पोशाक पहने उस व्यक्ति की ओर केंद्रित था, जो अपनी अत्याधुनिक मोबाईल से कभी यहां कभी वहां विनोदपूर्ण लहजे में वार्तालाप कर रहा था। पता करने पर मालूम हूआ कि वे स्थानीय विधायक थे, जो पिछले एक घंटे से आश्वासन रूपी भोजन से बच्चे, जवान एवं बुढे ग्रामीणों की भूख को शांत करने की कोशिश कर रहे थे। उनके चाटुकारों द्वारा जब उन्हें यह बात बताई गई कि सी०आर०पी०एफ० वालों द्वारा मुफत् भोजन वितरण किया जा रहा है तो अपनी पोल खुलने के डर से लग्जरी जीप पर नौ दो ग्यारह हो गये। यह बात समझ से परे तो है कि क्या यह वही व्यक्त थे? जिन्हें मात्र दो माह पूर्व सम्पन्न चुनाव में यंहा की गरीब जनता ने अपनी सेवा करने हेतु चुना था।

भोजन वितरण का कार्यक्रम 45 बटा. द्वारा तीन-चार दिन तक किया गया। इसी दौरान यह पता चला कि गांव में कई ऐसे लोग हैं, जिनकी बेटी का विवाह अगले सप्ताह होना। इस प्रायोजन हेतु संग्रह किया गया धन भी अग्निकांड की भेंट चढ़ गया और अब शादी टालने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं था।



11 **बटालियन केरिपुबल के कमांडेट गरीब छात्रों को स्टेशनरी का सामान बॉटते हुए**



जम्मू कश्मीर में आये भूकम्प के दौरान उरी तथा बारामुला के देहाती इलाकों में बचाव एंव राहत कार्ये में लगे केरिपुबल के कार्मिक

इसकी सूचना बटालियन के वरिष्ट अधिकारियों को दी गई। विचार-विमर्श कर एक महान निर्णय लिया कि स्वेच्छा से जो भी कार्मिक 'कन्यादान' हेतु स्वैच्छिक दान देना चाहता है, उससे राशि संग्रह करके वे शादिया सम्पन कराई जाए। चूंकि मैं जिस कार्यभार की देख-रेख कर रहा हूं, उसमें एडज्यूडेंट के कक्ष में मेरा आना-जाना लगा रहता है। एडज्युडेंट द्वारा उ०नि० (प्रशा.) को कही गई बात गौर करने लायक है - **"देखियेगा, यहां तक संभव हो स्वेच्छा से मदद की जाए ताकि किसी की बेटी की शादी में रूकावट न हो।"**

इस शुभ कार्य हेतु जिससे जितना हो सका आर्थिक सहयोग किया और 45 बटालियन ने टेंट/शामियाना एवं लड़का/लड़की के परिधान आदि की व्यवस्था करते हुये बारात स्वागत की पूरी तैयारी करके लगभग टल रही शादियों को धूम-धाम से निःस्वार्थ सम्पन करवाया। इसके लिए बल की प्रशंसा सर्वत्र मुक्त कंठ से की गई। हालांकि किसने प्रशंसा की अथवा नहीं, इस बात से न तो अधिकारियों को कोई मतलब रहा और ना ही उन कार्मिकों को जिन्होने शारीरिक एवं आर्थिक दोंनों ही रूप से अपना योगदान उक्त मानवीय कार्य हेतु दिया।

आज जब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सम्पूर्ण भारतवर्ष में आंतरिक सुरक्षा का सबसे सशक्त प्रहरी के रूप में जाना जाता है, जिसका ज्वलत उदाहरण अयोध्या

मांदेर पर हुये आंतकी हमले को विफल करना एवं 45 बटालियन के जवानों द्वारा विफल किये गये मधुबल अग्नि कांड है। परन्तु जहां तक मैं समझता हूं, इस प्रकार के सामाजिक क्रिया-कलापों से आम जनता के मन में मानवीय पहलू जाग्रत कर उनका विश्वास जीतकर हम नक्सलवादी/माओवादी गतिविधिओं पर बहुत हद तक काबू पा सकते हैं। क्योंकि असामाजिक तत्व गरीबों का ऐसी ही कुछ विकट परिस्थितियों में लाभ उठाकर उन्हें दिशा भ्रमित करते हैं और पेट की आग बुझाने के लिए ये निरीह एवं गरीब जनता को न चाहते हुये भी उस पथ का पथिक बना देते हैं, जिसका परिणाम कदापि लोकहित में नहीं होता है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा समय-समय पर विभिन्न बटालियनों द्वारा चलाये जाने वाले सिविक एक्शन प्रोग्राम इस क्षेत्र में एक सार्थक कदम है,। वस्तुतः केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को देशहित एवं लोकहित में किये जाने वाले कार्यों एवं विपरीत परिस्थितिओं में भी धैर्य नहीं खोने की अपनी पहचान से प्रभावित होकर किसी शायर ने इसके झंडे के बारे में सच ही कहा है:-

हर मौसम लहराने वाला, भारत का यह खाकी झंडा, जितनी ही आंधी चलती है, उतना ही यह लहराता है। सेवा भक्ति का यह प्रतीक, सी०आर०पी०एफ० कहलाता है। दिल है पत्थर का इसका बारूद से खेला करता है।

(यह संस्मरण सत्य घटना पर आधारित है।)

कौन यहाँ सुखी है।

किसकी है जनवरी, किसका अगस्त ?
कौन यहाँ सुखी है, कौन यहाँ मस्त ?
सेठ ही शोषक है, नामी गला काटू
गालियाँ भी सुनता है भारी थूकचाटू।
चोर है, डाकू है झूठा मक्कार।
कातिल है, ठलिया है, लुच्चा लवार।
पब्लिक के पीठ पर बजट का पहाड,।
देख लो जी देख लो, बच्चे के हाथ में
ठेले भरमार।
फ्रिज है, सोफा है, बिजली का झार, ।
फैशन की ओट में, सब कुछ उधार,
मुम्बई है, दिल्ली है यही सब आबाद,
महल आबाद है, झोपडी उजाड।
शासन के घोडे पर वो ही सवार।

उसी की है जनवरी उसकी का अगस्त।
वही यहाँ सुखी है, वही यहाँ मस्त।

हवा० एम०एच० खान
100बटा. आरएएफ,अहमदावाद

बीस साल बाद

अनिल गुप्ता
उप कमा० 37 बटा०



आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउन्ट अबू *(राजस्थान)* में *25* अगस्त, *2005* को आयोजित *15*वें बैच के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की रीयूनियन सेमीनार में बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा हो स्मृति चिन्ह भेंट करते महानिदेशालय के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक *(कार्मिक-3)* श्री जोगेन्द्र सिंह

फोर्स में 20 साल का बहुत महत्व है। जिसके पूरे हो गये हैं, बड़ा अकडकर सीना चौडा कर चलता है, कुछ कह दो, मूछो पर ताव देता हुआ बोलता मिलेगा

“साहब इस्तीफा जेब में रखकर चलते हैं। किसी की धौंस में नहीं रहते, जब तक चलती है चलेगी, जिस दिन नहीं चलेगी, इस्तीफा थमाकर निकल लेंगें पतली गली से, अपने तो बीस साल पूरे हो गये हैं”

और जिसके 20 साल पूरे नहीं हुए, सिर झुकाए, दबा दबा सा मिलेगा, सही गलत हर बात को सिर झुकाकर मान लेगा, कछ कहो तो बडी हताशा में कहेगा “क्या करें साहब, टाइम पास कर रहे हैं। एक बार बीस साल पूरे हो जाएं तो हम भी चैन की सांस लें। मेरी गिनती भी दूसरी श्रेणी के ही लोगों में आती है, हालांकि में बहुत खुश हूॅ, अगर जिंदगी में बहुत मौके आते हैं, जब जी चाहता है, सब छोड-छाड़ कर चला जाऊं। पर हाय री किस्मत, बीस साल पूरे होने में अभी दो ढाई साल बाकी हैं।

फिर अपनी लेट लतीफी को कोसने लगता हूॅ, क्यों दो ढाई साल पहले भर्ती नहीं हो गया? जहाँ भी गया देर से ही गया। मुझे निदा फाजली साहब का एक सेर बहुत याद आता है।

कहीं छत थी, दरो दिवार थी कहीं,
मिला मुझ को घर का पता देर से।
जिंदगी ने मुझे दिया तो बहुत कुछ
मगर जो दिया वो दिया देर से।

सचमुच मुझे उन लोगों से बड़ी ईर्ष्या होती है, जो अपने कैरियर के सफर में बीसवें मील का पत्थर पारकर गये हैं। बडी तमन्ना है मेरी कि मैं भी जेब में इस्तीफा लेकर घुमू और बात बात पर उसे लहराता हुआ आगे बढा दूॅ। मगर क्या करूं, अभी तो ऐसा सोचते ही दो प्यारी बच्चियों और एक तेज तर्रार बीबी का चेहरा ऑखों में घूम जाता है, और इस्तीफे के पंख लगाकर उड़ रहा मेरा मन एक झटके में यर्थात की जमीन पर आ टपकता है।

श्रीनगर में अपने कमरे में बैठा जब गोलियों की आवाज सुनता हूॅ तो मन में एक हूक सी उठती है कि कहीं ऐसा न हो जाए कि मुझे गाता हुआ चले जाना पड़े। **ये न थी हमारी किस्मत कि विसाले यार होता। गर और जीते रहते यहीं इंतजार होता।**

बीसवें साल के इंतजार में दिन गुजार रहे बेचारों को किन किन हालत से दो चार नहीं होना पडता, जरा बानेगी देखिये। **ऐसे रगड़ दिये जाओगे कि सूखे घर जाओगे। अगर ए.सी.आर में चैप दिया न, तो जैसा आया था वैसा ही चला जाएगा। अभी तो आपकी स्याही भी नहीं सूखी, जनाब आप हैं किस ख्याल में।**

अभी दूध के दांत टूटे नहीं, हमें सबक पढा रहे हो? इतनी आपकी उम्र नहीं है, जितने साल से मैं आप जैसों को लाइन पर ला रहा हूॅ। ये आपका बी.ए., एम.ए., यहां

नहीं चलेगा, यहा तो पीछे देखिए और आगे चलिये।

और भी झमेले है, इतने कि एक छोटा मोटा कोश बन जाए। कुछ अनजाने में छूटे जा रहे हैं, कुछ जानबूझ कर नहीं लिख रहा हूँ। बाकी पाठक गण अधिक समझदार हैं, कम लिखे को ज्यादा समझ सकते हैं।

हमारे यहाँ हम सभी की दो श्रेणियाँ हैं एक वो हैं, जो सिर्फ सुनते हैं। एक वो हैं जो सिर्फ सुनाते हैं। सुनाने वाला ये सोचकर बोलते चला जाता है कि सुनने वाला कुछ नहीं जानता, और वह मजबूरी में सिर्फ इसलिए सुनता चला जाता है क्योंकि सुनना उसकी मजबूरी है। और इससे बडी मजबूरी और क्या हो सकती है, सुनने वाले की नौकरी कच्ची है, और सुनाने वाले की पक्की। हाय रे बीस साल। एक लड़का कुछ नहीं करता था। बहुत शिकायत आती थी, मैंने पूछा "बात क्या है, जबाव मिला," साहब इसने लिखकर दे दिया।"

मैंने उसे अपने पास बुलाया, अपनी पूरी नौकरी में उसने दो लाईन नहीं लिखी होगी, मगर अब जो दो लाईने लिखी उसकी संतुष्टी और परम तृप्ति से उसका चेहरा दमक रहा था, मुझे थोडी ईर्ष्या हुयी मन में। पूछा गुरू ये बताओ तुम्हारी नौकरी के 20 साल गुजरे कैसे"। उसने बड़े गर्व से बताया" जनाब हमने तो बीसवें साल के इंतजार में ही 20 साल गुजार दिये। बस टाइम पास हो गया।"

ईर्ष्या से फफक रहे मेरे दिल को मेरे विवेक ने धिक्कारा, ये तो बेईमानी है देश के साथ, समाज के साथ, कर्त्तव्य के साथ। बेशक दो ढाई साल के बाद जाएंगे, मगर यें दो ढाई साल सिर्फ 20 वें साल के इंतजार में नहीं गुजारेगें, बल्कि हर पल, हर क्षण की वह कीमत अदा करेगें, जिसके लिए प्रतिवद्ध हैं।

जिसकी कसम खाई है, जिसकी अपेक्षा देश हमसे करता है। तभी सार्थक होगी 20 साल की नौकरी भी और नौकरी के 20 साल - भी। वरना दोंनों ही व्यर्थ है, बीस साल की - जिदंगी भी और 20 साल की नौकरी भी।



री-यूनियन सेमीनार के दौरान *15*वें बैच के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी एंव बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा के साथ ग्रुप फोटो में

केरिपुबल की कल्याणकारी योजनाएं

कर्त्तव्य पथ पर मारे गए कार्मिकों के परिवार, घायल और विकलांग हो चुके जवान तथा उनके परिवारों के प्रति हम हमेशा सजग रहे हैं। उनके कल्याण कार्यक्रम हमारे लिए सदैव अग्रणी रहे हैं। 1 जनवरी, 2005 से किसी भी केरिपुबल कार्मिक की मृत्यु हो जाने पर उसके आश्रित को जोखिम निधि 'ए' से तत्काल 3,00,000 रुपये की सहायता एक मुफ्त प्रदान की जाती है। 100 प्रतिशत अक्षमता के मामलों में प्रभावित व्यक्ति को पांच लाख रूपये तथा 1 से 40 प्रतिशत साधारण आंशिक अक्षमता के मामलों में एक लाख रूपये, 61 से 90 प्रतिशत, अक्षमता के मामले में तीन लाख रूपये तक एक मुश्त प्रदान किये जाते हैं। यह सभी भुगतान जोखिम निधि 'ए' से दिये जाते हैं। 1 जनवरी, 2005 से लेकर 30 सितंबर, 2005 तक 220 मृत्यु तथा अक्षमता के मामलों में कुल 3,17,86,030/— रुपये का भुगतान किया जा चुका है।

हमनें कार्रवाई के दौरान शहीद हुए कार्मिकों के निकटतम संबंधियों से मिलने-झुलने की एक ऐसी अनौखी व्यवस्था की है जिसमें शहीद के निकटतम संबंधी के घर एंक प्रतिनिधि भेजा जाता हैं, और वह प्रतिनिधि निकटतम संबंधी से संपर्क कर बल

कार्मिक की मृत्यु के बाद उसे मिलने वाले सभी वित्तीय लाभों के प्राप्त होने के बारे में पूछ-ताछ करता है, साथ ही उसके परिवार के सदस्यों को सरकार से मिलने वाली पेंशन के अलावा बच्चों को छात्रवृति, अनुकंपा के आधार पर नौकरी, द्वितीय श्रेणी के रेल किराये में 75 प्रतिशत रियायत के लिए पहचान पत्र इत्यादि अन्य लाभों के बारे में बताता है। हमने भविष्य में मृतक/ शहीद कार्मिक के परिवार के घर के नजदीकी ग्रुप केन्द्रों को उनकी समस्याओं एवं शिकायतों के समाधान व उनके कल्याण को देखने की जिम्मेदारी दी है। वर्ष में दो बार ग्रुप केन्द्र का कार्मिक मृतक के परिवार के सदस्यों से मिलेगा और मृतक के परिवार को होने वाली परेशानियों से ग्रुप केन्द्र के प्रभारी को बताएगा। अन्य समस्याओं का निवारण करने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। वहराल यह व्यवस्था सही दिशा में काम कर रही है।

चिकित्सा बीमा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों को उनके रहन-सहन की परिस्थितियां एवं अधिक संवेदनशील इलाकों में लगातार तैनाती के दौरान विभिन्न प्रकार की बीमारियों एवं आघातों का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त बल के कार्मिक अधिकांश समय अपने परिवार से अलग रहते है, इसीलिए वे अपने परिवारजनों की समुचित देखभाल भी नहीं कर पाते हैं। स्वंय तथा परिवारजनों के बीमार होने की परिस्थिति में कार्मिक उचित चिकित्सा सुविधाएं प्राप्त करना चाहते हैं, जोकि सामान्यतः अच्छे निजी अस्पतालों में ही उपलब्ध होती हैं, परन्तु इन निजी अस्पतालों में ईलाज के लिए समुचित धन की व्यवस्था करना कार्मिकों की क्षमता से परे है।



66वीं केरिपुबल वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित एक समारोह में बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा शहीद कार्मिक की धर्म पत्नी को वीरता का पुलिस पदक प्रदान करते हुए।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में चिकित्सा बीमा योजना का प्रचलन बढता जा रहा हैं। अतः बल कार्मिकों एव उनके परिवार के सदस्यों के लिए भी एक सामूहिक चिकित्सा बीमा योजना की रूपरेखा तैयार की गई जिसमें कार्मिक मामली अंशदान

देकर अपने सम्पर्ण परिवार का चिकित्सा बीमा करवा सकता हैं। इस संबंध में विभिन्न बीमा कम्पनियों एवं टी0पी0ए0 से विचार-विर्मश किया गया तथा अधिकतम सुविधाओं का न्यूनतम प्रीमियम आधारित चिकित्सा बीमा योजना का प्रारूप एवं प्रीमियाम राशि तय की गई है। आई0सी0आई0सी0आई लोम्बार्ड जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी तथा फैमिली हैल्थ प्लान लिमिटेड (टी0पी0ए0) द्वारा प्रस्तुत योजना एवं प्रीमियम दरें इस बल के कार्मिकों के लिए समेकित रूप से हितकर होंगी।

बल कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों को सरकारी अस्पतालों में उचित चिकित्सा की व्यवस्था नहीं होने तथा विद्यमान में उपलब्ध चिकित्सा केयर योजना में इलाज तथा ऑपरेशन के समय भारी राशि की मांग को ध्यान में रखते हुए (आई.सी.आई.सी.आई.) लोमवार्ड सामान्य बीमा कंपनी तथा परिवार स्वास्थ्य योजना लिमिटेड (तीसरा पक्ष प्रशासक-टी0पी0ए0) के जरिए एक ग्रुप मेडीक्लेम इंसोरेन्स स्कीम शुरू की गयी है। इस स्कीम के अन्तर्गत बल कार्मिक तथा उनके परिवार के सदस्य अपनी मनपसंद के किसी भी अस्पताल में अपना इलाज करा सकेंगे। देश के सभी भागों में फैले टी.पी.ए. नेटवर्क में आने वाले किसी भी अस्पताल में जो भारत के प्रत्येक जिले में कम से कम एक अस्पताल होगा में इलाज करा सकेगें इस योजना के अंतर्गत सभी प्रकार के मरीजों का इलाज, दुलर्भ जांच, निदान प्रक्रिया, निश्चित समय तक शल्य चिकित्सा के दौरान देखभाल आदि को शामिल किया गया है। सभी प्रकार की बीमारियां भी इसमें शामिल होंगी तथा अस्पताल में भर्ती होने पर 15 दिन पूर्व तथा 30 दिन तक भर्ती रहने में होने वाला खर्च भी इसमें शामिल होगा। प्रसूति के दौरान होने वाला व्यय भी इसमें शामिल किया गया है।

कार्मिक के परिवार (पति-पत्नी) तथा दो आश्रित बच्चों को 3 लाख रूपये में बीमित करने के लिए 1180/—रूपये का अशंदान देना होगा। अभिवावकों (माता पिता) को इस स्कीम में शामिल करने के लिए 400/—रूपये प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रीमियम देय होगा जिसमें प्रत्येक अभिभावक का बीमा रू. 50,000/— परिवार बीमा राशि में और बढ़ जाएगा। दो से अधिक बच्चों की स्थिति में पहले बच्चे के लिए रू 170/— तथा दूसरे बच्चे के लिए रू. 115/— प्रीमियम के रूप में देय होगें जिससे बीमा राशि 50,000/— प्रति शिशु और बढ़ जाएगी। आस्पतालों में बिना नकद भुगतान के इलाज कराने के लिए टी.पी.ए. फोटो पहचान पत्र हरेक लाभार्थी को जारी करेगा तथा लाभार्थी कार्ड दिखा कर नेटवर्क के अंर्तगत आने वाले अस्पतालों में बिना भुगतान के इलाज करा सकेगें। बहराल बल कार्मिक अपनी इच्छा के किसी भी अस्पताल में इलाज करा सकते हैं। इलाज पर होने वाले खर्चे का भुगतान बीमा कंपनी द्वारा किया जाएगा। अच्छी सेवा प्रदान करने के लिए टी.पी.ए. हरेक उपभोक्ता को यूजर मैनुअल/गाइड बुक जारी करेगा। देश भर में टोल फ्री टेलीफोन तथा फैक्स नं0 की सुविधा दी जाएगी। कुछ चुने हुए अस्पतालों में ओ.पी.डी. में मुफ्त जनरल सलाह की व्यवस्था होगी। इलाज का खर्चा केन्द्रीय स्वास्थ्य योजना/राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित दर पर लिया जाएगा। यह योजना जनवरी, 2006 तक बल में कार्यन्वित हो जाएगी।

सामूहिक दुर्घटना बीमा योजना

दिन-प्रतिदिन हो रही कार्रवाईयों तथा दुर्घटनाओं के कारण हमारे जवानों के लिए जोखिम बढ़ रहे हैं। इन दुर्घटनाओं में कार्मिक या तो मर जाते है या फिर घायल, इन मृत्यु तथा अकास्मिकताओं को कवर करने व मृतक एवं आशक्त बल कार्मिकों के परिवार को नियमित वित्तीय सहायता देने के लिए सामुहिक दुर्घटना बीमा योजना शुरू की गयी है। इस योजना के अन्तर्गत कार्रवाई के दौरान मृत्यु तथा स्थाई अशक्तता, दुर्घटना, प्राकृतिक आपदा, खराब मौसम की स्थिति, हिसंक जानवर या कीड़े मकौड़े के काटने, मलेरिया प्रकोप तथा मिसिंग आदि के मामले शामिल हैं। इस योजना में 500/— रूपये के प्रीमियम पर राजपत्रित अधिकारियों को 10 लाख रूपये की राशि का बीमा किया जाता है जबकि अधीनस्थ अधिकारियों को 300/—रूपये तथा अन्य रेंक के कार्मिकों के लिए 250/—रुपये का प्रीमियम पर क्रमशः 7 लाख तथा 5 लाख रुपये का बीमा किया जाता है। बीमा की राशि का भुगतान यथा शीघ्र कार्मिक की उपरोक्त बताई गई घटना में मृत्यु या अशक्तता होने पर भुगतान उसके निकटतम संबंधी या स्वयं उसे जैसी भी स्थिति हो में किया जाता है।

केरिपुबल के ग्रुप केन्द्रों में इग्नों के शिक्षा केन्द्र

देश के अशांत क्षेत्रों में कानून एवं शांति व्यवस्था कायम करने के लिए बल कार्मिकों की दिन प्रतिदिन बढ़ती डयूटियों के कारण वे अत्यंत व्यस्त रहते हैं और स्वयं के विकास के लिए समय ही नहीं निकाल पाते। अतः बल कार्मिकों की महत्वकाक्षांओं को पूरा करने के लिए उनके कैरियर तथा शिक्षा के स्तर को ऊंचा बड़ाने के लिए ताकि उनके व्यावसायिक स्तर में सुधार आए, केरिपुबल तथा इन्द्रागांधी राष्ट्रीय ओपन यूनीवर्सिटी के बीच एक समझौता हो गया है। इस समझोते के तहत केरिपुबल के ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली, चेन्नई, गोहाटी, जम्मू, लखनऊ, अहमदाबाद तथा हैदराबाद में इग्नों के क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र स्थापित किए गये हैं। अब बल के कार्मिक अपना अध्ययन इन केन्द्रों पर कर सकेगें।

परिवार कल्याण केन्द्रों के विविध क्रियाकलाप

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रत्येक ग्रुप केन्द्र में परिवार कल्याण केन्द्र, एक महत्वपूर्ण रेजिमेंटल संस्था है। परिवार कल्याण केन्द्र, कार्मिक के परिवार की आय बढ़ाने तथा उसके परिवार के सदस्यों के बीच विभिन्न क्रियाकलापों में उनकी कौशलता बढ़ाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा चलाए जा रहे क्रियाकलापों का उद्देश्य महिलाओं को पर्याप्त अवसर प्रदान कर उन्हें समाज में उद्देश्यपूर्ण सार्थक जीवन यापन करने तथा आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनाकर सशक्त करना है। जो परिवार कैंपस में रह रहें हैं, उनकी

महिलाओं को कढ़ाई, बुनाई, पेंटिंग, प्रिंटिंग, हस्तशिल्प, मोमबत्ती, सजावटी सामान आदि बनाने संबंधी क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए उत्साहित किया जाता है। कंप्यूटर, ड्रेस डिजाईनिंग, ब्यूटीशियन जैसे व्यावसायिक कोर्स का भी प्रशिक्षण प्रदान कर स्वरोजगार की सुविधाएं मुहैया कराने के पर्याप्त कदम उठाए जा रहे हैं।

परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा तैयार सामान को व्यापार का रूप देने के लिए बाजारों से संपर्क किया है। स्थानीय बैंक एवं गैर सरकारी संगठनों से वित्तीय सहायता एवं सहयोग दिलाने के लिए सहकारी समिति स्थापित की है और संसाधनों को बड़ाने की संभावनाओं का पता लगाया जा रहा है। इन परिवार कल्याण केन्द्रों के क्रियाकलापों का मार्ग दर्शन पर्यवेक्षण कार्य सीआरपीएफ वाईव्स वैलफेयर एसोसियेशन की क्षेत्रीय कार्यकारी समितियां करती हैं। क्षेत्रीय कार्यकारी समिति अपनी फीड बैक रिपोर्ट बल मुख्यालय में कार्यरत केन्द्रीय सीआरपीएफ वाईब्ज वैलफेयर एसोसिएशन को भेजती है जहाँ एसोशिएशन की केन्द्रीय समिति में इन पर चर्चा कर सुधार के लिए अपनी राय केन्द्रीय समिति को भेजती है।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय के उप कुलपति श्री एच.पी. दीक्षित आपसी समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद शुभकामना देते हुए।

सी.आर.पी.एफ. द्वारा राजभाषा प्रोत्साहन : एक मिशन

के०रि०पु०बल में हिन्दी दिवस समारोह

22 सितम्बर, 2005 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में हिन्दी समारोह मनाया गया। इस अवसर पर बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने बल के सभी कार्यालयों में लगे सभी कंप्यूटरों में हिन्दी का सॉफटवेयर तथा उसका प्रयोग कार्यालीन कार्य में करने का आह्वान किया। उन्होंने आशा व्यक्त की इस कदम से भविष्य में बल का और अधिक कार्य हिन्दी में होने लगेगा।

श्री सिन्हा ने कार्मिकों का आहवान किया कि वे अपने काम-काज में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें जिससे विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के विकास को और गति मिले और देश की एकता एवं अखण्डता मजबूत हो।

इस अवसर पर श्री सिन्हा ने घोषणा की कि हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं कार्यालय के कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड 2002-03 के द्वितीय पुरस्कार तथा वर्ष 2003-04 के लिए प्रथम पुरस्कार हेतु बल को चुना गया है।

श्री सिन्हा ने इस मौके पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये। अधिकाधिक सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए सर्वश्रेष्ठ सेक्टर तथा अनुभाग की, 2005 की रंनिग शील्ड उत्तरी सेक्टर तथा अनुभाग की रंनिग शील्ड महानिदेशालय की प्रशासन-3 शाखा दी गई।

पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशा०) डा० ए.पी. माहेश्वरी ने बल में हिंदी की प्रगति की रिपोर्ट से अवगत कराया अपर पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन) श्री आर.के.सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर सी.आर.पी.एफ. समाचार का हिन्दी विशेष अंक का भी विमोचन किया।



बल मुख्यालय में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में भाग लेते बल के महानिदेशक एवं अन्य अधिकारीगण



हिन्दी टिप्पणी आलेखन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स० उप० निरीक्षक (मं.) राजेन्द्र कुमार को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा केरिपुबल मुख्यालय में हिन्दी के कामकाज का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा की पहली उप समिति ने कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लिया। बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा ने संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों का स्वागत किया और कहा कि इस विशाल बल की प्रत्येक बटालियन एक लघु भारत का रूप है जिसमें देश के हर प्रदेश के लोग कार्यरत हैं, सभी की सम्पर्क भाषा हिंदी है। श्री सिन्हा ने समिति के सदस्यों को अवगत कराया कि हमारे बल में सभी सैनिक सम्मेलन हिंदी में होते हैं तथा अन्य सामान्य सरकारी काम-काज हिंदी में ही निपटाया जाता है। बल में राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) तथा राजभाषा नियम - 5 का पूरा अनुपालन किया जा रहा है। बल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। सभी टंकण कार्मियों को हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिलवाया गया है। महानिदेशक ने समिति को यह आश्वसन दिया कि पत्राचार के लक्ष्य को प्राप्त करने में

जो कमी रह गई है उसे शीघ्र पूरा कर लिया जाएगा।



बल मुख्यालय में सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग संबंधी कार्यों का जायजा लेने आई संसदीय राजभाषा प्रथम उप समिति के माननीय सदस्यगण



संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों को स्मृति चिन्ह भेंट करते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा

संसदीय समिति के संयोजक सांसद श्री जयप्रकाश ने उप समिति के अन्य सदस्यों तथा अधिकारियों का परिचय कराया तथा उप समिति द्वारा किए जाने वाले निरीक्षण प्रश्नावली के आधार पर बारी-बारी से महानिदेशक से प्रश्न पूछे जिनका समुचित/ सटीक व संतोषजनक उत्तर दिया गया। समिति के सदस्यों ने हिन्दी कार्य के मूल्यांकन पर संतोष व्यक्त किया तथा कुछ मदों पर मार्गदर्शन भी किया। संसदीय राजभाषा समिति ने केरिपुबल के कार्यों की सराहना करते हुए राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग को सरकारी कामकाज में बढ़ाने की दिशा में बल द्वारा उठाए जा रहे कदमों की प्रशंसा की तथा यह अपेक्षा की कि दिए गए मार्गदर्शन के आलोग में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में सहायता मिलेगी तथा राजभाषा की अभिवृद्धि होगी।

अंत में महानिदेशक ने सभी माननीय संसदों व मंत्रालय के प्रतिनिधियों को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु दिए गए बहुमूल्य सुझावों को अमल में लाने का संकल्प लिया। इसके अलावा बल के गौरवमयी इतिहास की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए श्री सिन्हा ने सभी संसद सदस्यों व अधिकारियों को एक सांकेतिक स्मृति चिन्ह भी भेंट किया।

पश्चिमी सेक्टर, नवी मुंबई द्वारा मुंशी प्रेम चन्द की 125वीं

जयती पर काव्य गोष्ठी का आयोजन

हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार कथा संम्राट मुंशी प्रेमचन्द की 125वीं जयंती नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी सेक्टर, नवी मुंबई द्वारा 8 सितम्बर, 2005 को मनाई गई। इस अवसर पर एक गोष्ठी एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। बल के पुलिस महानिरीक्षक श्री ए०के०माथुर ने सभी आमंत्रित अतिथियों /विद्वानों एवं विभिन्न कार्यालयों के उपस्थित अधिकारियों व कार्मियों का स्वागत किया। एक संवेदी काव्य रचना से गोष्ठी आरंभ हुई। इस गोष्ठी में मुंबई विश्वविद्यालय के जाने-माने विद्वानों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

एलिफिंस्टन कालेज के पूर्व विभागाध्यक्ष डा० सुधाकर मिश्र ने जहां प्रेमचंद को युग की मांग कहा वहीं के०सी०कालेज के रीडर डा० शीतला प्रसाद दुबे ने दलितों की अस्मिता पर लेखन के लिए उन्हे एक महान व्यक्तित्व बताया। एम डी शाह कालेज, मलाड के प्राध्यापक डा० हीरालाल शर्मा ने भी मुंशी प्रेमचंद के, साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री ए०के०माथुर, पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर ने की तथा अपनी एक व्यंग्य रचना 'राजा बाबू की आत्मकथा' पढी। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार को अधिक गति प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार की गई "सुभाषिनी" (सुगम भाषा नित्य अभ्यास) नामक अभ्यास पुस्तिका का विमोचन भी राजभाषा विभाग मुंबई की उप निदेशक श्रीमती पुष्पा सुरती के कर कमलों से किया गया। गोष्ठी का संचालन राजभाषा विभाग के डा० एम० एल० गुप्ता ने किया।



गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की उपनिदेशक श्रीमती पुष्पा सुती, पश्चिमी सेक्टर, केरिपुबल द्वारा तैयार की गई हिन्दी की "सुभासिनी," नामक अभ्यास पुस्तिका का विमोचन करती हुई।

गोष्ठी के तुरंत बाद कवि सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें मुंबई के जाने माने कवियों ने भाग लिया तथा अपनी-अपनी रचनाएं सुनाई। श्री ए.के. माथुर, पुमनि, डा. उमेश शुक्ल, श्री विपुल लखनवी, श्री अरविंद राही, श्री खन्ना मुजफ्फरपुरी, श्री राजीव सारस्वत, डा. सतीश शुक्ल, श्री अन्नत श्रीमाली, डा. उमेश शुक्ल आदि की कवि गोष्ठी का संचालन श्री देवमणि पांडे ने किया। डा. सुधाकर मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डा. सत्यपाल सिंह, पुलिस महानिरीक्षक, कोंकण रेंज, सहित द्रुत कार्य बल तथा केरिपुबल के कार्मिक बडी संख्या में उपस्थित हुए। गोष्ठी का समापन एवं धन्यवाद श्री एन. भारद्वाज, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर ने ज्ञापित किया और गोष्ठी सम्पन्न हुई।

केरिपुबल के सिविक एक्शन कार्यक्रम

सिविक एक्शन कार्यक्रम की शुरूआत 60 के दशक में अमरीकी सेना द्वारा वियतनाम युद्ध के दौरान की थी। प्रारम्भ में इसका उद्देश्य आम जनता में पहुंच बनाना तथा जनता को सैनिक बल के दूसरे पहलू से अवगत कराना था। इसकी सफलताओं को देखते हुए बाद में विश्व के अन्य देशों ने भी इस कार्यक्रम को अपनाया है। इस तरह का कार्यक्रम प्रति विद्रोहात्मक एवं आतंकवाद की लडाई में अत्यंत प्रभावी और फलदायी होता है, क्योंकि इन परिस्थितियों में अर्द्धसैनिक बल अपने ही देश के नागरिकों के विरूद्ध संघर्ष करते हैं। विविध भारतीय समाज में पनपते विद्रोहिता के वातारण में केरिपुबल द्वारा आयोजित किये जाने वाले इस तरह के कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। अतः सुरक्षा बल अपनी तैनाती के क्षेत्र में वहां जनता के लिए कुछ कल्याणकारी कार्य करते है ताकि जनता उनके और नजदीक आ सके और पुलिस व पब्लिक में विश्वास और सुदृढ़ हो, इन्हीं विषयों को ध्यान में रखते हुए केरिपुबल की विभिन्न बटालियनें अपनी तैनाती के क्षेत्र में आम जनता के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करती हैं।

दूसरी बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम

2बटालियन केरिपुबल ने हालाकुरा, जिला-धुबरी में सिविक एक्शन कार्यक्रम (नागरिक अभियान) का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य केरिपुबल तथा स्थानीय नागरिकों के बीच पारस्परिक सहयोग बढाना था। इस कार्यक्रम में स्थानीय विद्यालयों के लगभग 800 छात्र-छात्राएं तथा उनके शिक्षकगण उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए गरीब तथा जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को पढाई-लिखाई एवं खेलकूद का सामान (काफी, पेन्सिल, रबड़, पेन, क्रिकेट का सामान, वालीबाल, बैडमिंटन, नेट, शतरंज, लूडो इत्यादि) वितरित किये गये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला धुबरी के अतिरिक्त जिला उपायुक्त श्री दुलाल चन्द्र दास ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।



एमको रोड माचिस फैक्टरी धुबरी में दूसरा सिविक एक्शन कार्यक्रम का आयोजित किया गया। जिसमें इस कार्यक्रम में स्थानीय विद्यालय के लगभग 500 गरीब तथा जरूरतमंद छात्र-छात्रओं को पढाई-लिखाई एवं खेलकूद के सामान (कापी, पेन्सिल, रबड, पेन, क्रिकेट का सामान, वालीबाल, फुलबाल, बैडमिंटन, नेट, शतरंज, लूडो इत्यादि) वितरित किये गये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि धुबरी के पुलिस अधीक्षक श्री पी0 के0 दत्ता ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

इसके अलावा 2 बटालियन द्वारा ग्राम हालाकुरा, जिला धुबरी में मुफ्त चिकित्सा शिविर लगाया गया तथा स्थानीय लोगों को निःशुल्क दवाईयां बांटी गयी। चिकित्सा शिविर में लगभग 1500 ग्रमीण महिला-पुरूष तथा बच्चों के विभिन्न रोगों का निदान किया तथा दवाईयां बांटी। बल के इस कार्य की स्थानीय लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। चिकित्सा शिविर के दौरान स्थानीय ग्रामीणों को एडस एवं मलेरिया तथा स्थानीय क्षेत्र में फैलने वाले अनेक संक्रामक रोगों के बारे में जानकारी दी गई तथा उनसे बचने के आवश्यक उपाय भी बताये गये।

निचले असम के बदलते वातारण एवं सुधरती कानून व्यवस्था के परिपेक्ष्य में इन आयोजनों द्वारा 2 बटालियन ने आम जनता में यह संदेश दिया कि केरिपुबल केवल कानून-व्यवस्था सुधारने के कठोर कार्य ही नहीं करती है अपितु स्थानीय लोगों की भावनाओं जरूरतों एवं समस्याओं को समझते हुए उनके समाधान हेतु कार्य करने में भी रूचि रखती है। इस तरह के प्रयासों से बल के प्रति आम जनता के रूख में बदलाव आया है।

152 बटालियन के सिविक एक्शन प्रोग्राम

सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत् 152 बटालियन केरिपुबल ने बारामुला तहसील परिसर में एक शौचालय परिसर का निर्माण किया। बारामूला शहर में 103 गॉव आते हैं, यहॉ पर सरकारी काम काज के लिए आने वालों के लिए कोई शौचालय परिसर नहीं था जिससे लोगों को खासकर महिलाओं को भारी दिक्कत का सामना करना पड़ता था। अतः 27 जुलाई, 2005 को केरिपुबल स्थापना दिवस के अवसर पर एक सादे समारोह में जिसमें जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे, पुलिस उपमहानिरीक्षक (परिचालन), केरिपुबल बारामूला श्री राजेश प्रताप सिंह ने इसे जनता को समर्पित किया। इस कार्य को करवाने में स्थानीय लोक निर्माण विभाग ने भी भरपूर सहयोग दिया। बटा. के इस कार्य की क्षेत्रीय जनता ने खूब सराहना की।



12वीं बटा. केरिपुबल के सिविक एक्शन कार्यक्रम



आतंकवाद प्रभावित क्षेत्र में तैनात केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 12वीं बटालियन ने लोगों में आपसी तालमेल और भाईचारा कायम करने के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं बनी, लोहांग, खडोआ इत्यादि गांवों के स्कूली छात्रों के बीच कराई। सीआरपीएफ की 12वीं बटा. के कमांडेंट श्री एस. के. मलिक ने उपस्थित लोगों व छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि इन प्रतियोगिताओं को आयोजित करने का उद्देश्य लोगों, छात्रों व सुरक्षा बलों के बीच आपसी विश्वास कायम करना है। उन्होंने बच्चों से अपने कर्तव्यों का पालन कर देश के विकास में अपना बहुमूल्य सहयोग देने का आह्वान किया। प्रतियोगिता में सर्व श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को श्री मलिक ने पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर तहसीलदार बसोहली पवन शर्मा, निजामुदीन थाना प्रभारी श्री रविंदर व स्थानीय गणमान्य लोग उपस्थित थे।

22 बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम

नलवाड़ी में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 22 बटालियन तैनात है। कमाण्डेन्ट श्री पी.जे. मोहन के मार्ग दर्शन में एम. ई. स्कूल सरियाओली, तथा वर्नपादी विद्यालय घौगरापारा, नलवाड़ी में एक जन कल्याण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्थानीय एडीसी ने टोली में किया तथा ऐसे ही एक सामाजिक कार्य की

शुरूआत घोगरापारा में एम.एस.ए. श्री मध्म कसौमा द्वारा की गयी। इन कार्यक्रमों में गरीब बच्चों को लेखन एवं खेल सामग्री बांटी गयी। इस कार्यक्रम को आयोजित करने का उद्देश्य बल एवं नागरिकों के बीच स्नेहपूर्ण संबंध बनाना है ताकि नागरिकों के दिल में किसी भी विघटनकारी शक्ति का भय व्याप्त ना रहे। इस अवसर पर बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। स्थानीय लोगों ने बल द्वारा आयोजित इन कार्यक्रमों की सराहना की।



80 बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम

धूपधारा जिला-गोवालपाड़ा में स्थित मौरी पारा एल0पी0 स्कूल कल्याणपुर, एल0पी0स्कूल, पटियार पारा आदि में गरीब छात्र एवं छात्राओं के शैक्षणिक उत्थान हेतु पेन, कॉपी, पेन्सिल, स्कूल बेग एवं खेल सामाग्री बॉटी गई ताकि गरीब छात्र एवं छात्राएं पढाई के लिए उत्सुक रहें। दूधनोई क्षेत्र में स्थित जानकूपारा, गुलियानपारा, केन्द्रीय प्राथमिक विद्यालय एवं बालाचारा सरकारी स्कूल तथा स्पोर्टस क्लब के सदस्यों एवं गरीब छात्र-छात्राओं को शिक्षा सम्बधी एवं खेल-कूद की सामग्री वितरित की गई। ग्वालपाड़ा में स्थित उदयपुर एल0पी0 स्कूल खेरक्रग, बरगम जूनियर बेसिक

स्कूल, चामागुरी एल०पी०स्कूल एंव स्पोर्टस क्लब में नागरिक कार्य योजना-2005 कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें श्री अजय भरतन कमाण्डेनट-80 तथा गोवालपाड़ा के उपायुक्त एवं वरिष्ट अतिथिगण मौजूद थे। केरिपुबल के इस जनकल्याणार्थ कार्य को स्थानीय जनता ने काफी सराहा।



116 बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम



जैसा कि विदित है इस बल की पहचान "सेवा भक्ति का ये प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहलाता है" को चरितार्थ करने हेतु जन-जन के हृदय में अपनी छवि बनाने के लिए समय-समय पर जनहित कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इसी क्रम में जरूरत मन्द छात्रों को लेखन सामग्री व क्रीड़ा सामग्री वितरित की गई क्योंकि आज बच्चे कल के करणधार बनेगें और देश की सुरक्षा व संरक्षा का भार उनके कन्धों पर होगा। सीआरपीएफ ही एक मात्र ऐसा बल है जो देश की सुरक्षा से लेकर बच्चों की शिक्षा व विकास के लिए कार्य करता है तथा उनके हृदय में देश प्रेम की भावना जगाता है। ताकि वे विघटनकारियों से विद्रोह कर सच्चे से दिल से बल के हितेषी बन सके। इसमें बल का गौरव और देश की सेवा दोनों ही निहित है।

11 बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम



11 बटा. ने अपने तैनाती के क्षेत्र असम के होबली बारपैटा में स्थानीय जनता के लिए सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए ताकि पुलिस तथा जनता के बीच संबंध और सुदृढ़ बन सके। 11 बटा. के जवानों ने होली बारपैटा जिले के पाचं एल०पी० स्कूल के बच्चों को किताब, कापी स्टेशनरी का सामान तथा स्पोर्टस की वस्तुए वितरित की। जिले के 6 हायर सेकेण्डरी स्कूलों को भी पढ़ाई लिखाई से सम्बधित पुस्तकें तथा स्पोर्टस का सामान वितरित किया। इस अवसर पर केरिपुबल के वरिष्ठ अधिकारी, स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, स्कूल के अध्यापक, प्रेस मिडिया के लोग तथा गांव के महिला पुरूषों ने भी भाग लिया और 11 बटा. द्वारा समाज सेवा स्वरूप किये जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रसंशा की।

109 बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम



सीआरपीएफ की 109 बटा. ने अपने समाजिक कार्यक्रमों की शुरूआत असम के कामरूप जिले के एल०पी० स्कूल नजीराखट, सोनपुर से की। इस कार्यक्रम के अर्न्तगत स्कूली बच्चों को स्टेशनरी तथा स्पोर्टस की वस्तुएं बांटी गई। बटा. के कमान्डेंट श्री एस के मिश्रा ने स्थानीय लोगों को विश्वास दिलाया कि केरिपुबल हमेशा उनकी हर मसीबत में साथ है। बल सरक्षा के साथ-साथ जरूरत मंद स्थानीय लोगों के लिए हर आवश्यक सुविधाए एवं उनके स्वास्थ्य की जांच के लिए दवाईया मफ्त महैया कराने की कोशिश करेगा। इस अवसर पर गोहाटी रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री आर.एस.व्रिक मुख्य अतिथि थे। बटा. द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजीत करने का उद्देश्य भोली भाली जनता को शिक्षित एवं जागरूक बनाना हैं ताकि वे समझ सकें कि पुलिस उनकी हितेसी है दुश्मन नहीं। बटा. द्वारा किए गये इस कार्यक्रम की स्थानीय प्रेस तथा जनता ने खूब प्रसशा की।

25 बटा. केसिविक एक्शन कार्यक्रम



सीआरपीएफ की 25 बटा. द्वारा अपने तैनाती के क्षेत्र असम की एन. सी. हिल एरिया में सामाजिक कार्यक्रमों की शुरूआत की। इस कार्यक्रम के अर्न्तगत बटा. में माईबोंग हायर सेकेण्डरी स्कूल, माईबोंग हाई स्कूल, परमानन्द हाई स्कूल, गर्वमेन्ट हाई स्कूल, कलाचन्द, एमई गर्वमेन्ट हाई स्कूल, गोपेश चन्द्र एल०पी० स्कूल, ओल्ड माईबोंग, एल०पी० स्कूल, तथा कीर्तिपुर एल० पी० स्कूल के छात्र-छात्राओं को आमंत्रित किया और उन्हे स्कूली सामान तथा खेल-कूद की वस्तुएं वितरित की। बटा. द्वारा बच्चों के लिए कबड्डी तथा वालीबाल मैच का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। इस कार्यक्रम में बटा. द्वारा लगभग 40 हजार रूपये का सामान स्कूली बच्चों को बांटा गया। इस अवसर पर बटा. के कमाण्डेन्ट श्री एस.पी. सिंह ने सामाजिक कार्यक्रमों की महत्वता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इन प्रयासों से शान्ति तथा सद्भाव पैदा होता है और क्षेत्र के सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास में मदद मिलती है। श्री एस. पी. सिंह ने छात्रों से परीक्षाओं तथा स्पोर्टस के क्षेत्र में उत्कृष्ट परिणाम हासिल करने का आहवान किया। बटा. द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की स्थानीय जनता तथा प्रेस मीडिया ने बड चढ़ कर प्रशंसा की।

100 बटा. के सिविक एक्शन कार्यक्रम



आर. ए. एफ. की 100 बटा. ने अपने तैनाती क्षेत्र अहमदाबाद में बच्चों के लिए विभिन्न तरह के डिमोस्ट्रशन आयोजित कर उन्हें आपात काल की स्थिति में निपटने की जानकारी दी। इस कार्यक्रम में आरएएफ की 100 बटा. ने सामप्रदायिक दंगों से बिना धातक हथियार के प्रयोग किये निपटने, अल्प समय में कार्रवाई, एरिया परिचितीकरण, फायर फाटिंग, आसुं गैस प्रयोग, आपदा प्रबन्धन जैसे बाड़ भू-स्खलन, भूकम्प, ट्रेन दुर्घटना आदि के बारे में बताया गया। बटा. के द्वितीय कमान अधिकारी श्री डी. के. कोल ने बताया आर ए एफ के जवानों ने इस वर्ष के दौरान बचाव एवं राहत कार्यों द्वारा अहमदाबाद जिले के लगभग 70 लोगों तथा 4 लाख की सम्पति की बचायी है।

“द्रुत कार्य बल द्वारा राहत एवं बचाव कार्य”



अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी, आन्तरिक कानून व्यवस्था संभालने के साथ-साथ द्रुत कार्य बल, अचानक प्राकृतिक आपदा की स्थिति में स्थानीय प्रशासन राहत एवं बचाव कार्य में हर सम्भव मदद करती है। बल की कम्पनियां तैनाती से मुक्त रहने के दौरान परिसर में ही व्यवसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ प्राकृतिक आपदा की स्थिति में किये जाने वाले राहत एवं बचाव कार्यों का कठिन अभ्यास करती हैं। अतः इस बटालियन की सी 107 ने 12 मई, 2005 को अपने नियमित अभ्यास के तहत आग लगने की घटना में किये जाने वाले राहत एवं बचाव कार्यों का अभ्यास किया गया ताकि जरूतर पड़ने पर प्रभावित व्यक्तियों को कैसे कुशलता पूर्वक ऐसे संकट से बाहर सुरक्षित निकाला जा सके एवं जान-माल की क्षति होने से बचाया जा सके।

(भोजपुरी व्यंग)

रोना छुट्टी का

मेहता जी कहलस बुच्ची के माइ से
ढ़ेर दिन भईल मिलके आपन भाई से!
स्टाफ कम बाटे औरी काम ढेर पड़ल बा
सबके नजर हमार छुटिए पर गड़ल बा!
कौनों नैइखे अईसन जे तनिक पैरवी लगाई
राजी खुशी से हमरा के छुट्टी भिजवाई!
कौनों विधि जब दिहलीं 60 दिन छुट्टी के अर्जी
बिगड के कहलन साहेब, ना चली छुट्टी मे कौनों के मर्जी!
बड़ी मिन्नत करली की तीसे दिनही दे द
कहलस काम बड़ा भारी बा पहले निपटा ल!
तबही बबुआ के बिमारी के समाचार धर से आईल
बुच्ची के माई हमरा से रोवते हुए फोन पर बताईल!
दौड़ली बड़ साहेब के केबिन बजैंली सैलुट
बतईली हाल घर के करेजा फाट गईल दू टूक!
पर बड़ साहेब न पिघललन मने मन बडबडैलन
'घर पर पैसा भेज द के सलाह थमईलन
तभी अफसर के ओर करली आपन रूख
तनी मक्खन लगाके बतईली आपन दुख!
कहलस ई. एल. ना मिली सी.एल. चले जा
जल्दी जाके फिरती गाड़ी से लौट के आ!
ओ.एस.एल भईलूं ते वीदाउट-पे कर देब
भविष्य में कौनों इमरजेंसी पड़ी त न जाए देब!
बड़ा अस्मंजस में पड़ल गईली ए भाई
बचचा के बचाई त नौकरी पर आफत आई!
हे भगवान हम फौजीअन के एतना उद्धार कई द
मुह मांगा छुट्टी मिले के बरदान देई द!

सउनि(मं) मनोज कु० निराला
ग्रु०के०, खटखटी

जम्मू कश्मीर में तैनात केंरिपुबल के कार्मिकों की सेवा में दैनिक जागरण

रेजीडेन्ट एडीटर, श्री हरबंस एस. नागोके, (दैनिक जागरण, 77-एडी, गांधी नगर, जम्मू) में अवगत कराया कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के लिए समाचार हेतु दैनिक जागरण द्वारा कई कार्य मुफ्त करने का बीडा उठाया है। अतः बल के कार्मिकों को इसका लाभ उठाना चाहिए:–

- वनतताब में रहने वाले तथा जम्मू सेक्टर में कार्यरत अधिकारी व कर्मी अपने बच्चों के जन्म दिन पर अगर समाचार पत्र के माध्यम से कोई संदेश या शुभकामनाए भेजना चाहते हैं तो जन्म दिन के दो दिन पहले बच्चे की फोटो दैनिक जागरण समाचार पत्र को भेज सकते हैं,
- स्थानान्तरण व सेवा निवति संबंधी समाचार आप उससे संबंधित व्यक्ति के फोटो के साथ दैनिक जागरण समाचार पत्र में छपवा सकते है।
- यदि किसी अधिकारी व कर्मी के परिवार के सदस्य या रिश्तेदार का किसी हादसे में देहांत हो जाता है तो उस व्यक्ति की फोटो दैनिक जागरण समाचार पत्र कार्यालय में भेज सकते हैं ताकि फोटो के साथ इस खबर को स्थानीय एवं जिस क्षेत्र का व्यक्ति रहने वाला है उस क्षेत्र के संबंधित समाचार पत्र में प्रकाशित हो सके।
- दूर के इलाकों में खासकर उन जगहों पर जहां दूरभाष की सुविधा नहीं है, कार्यरत कोई अधिकारी व कर्मी, अपने परिवार के लिए समाचार पत्र के माध्यम से कोई संदेश भेजना चाहता है तो दैनिक जागरण समाचार पत्र में प्रकाशन हेतु संक्षेप में भेजा जा सकता है ताकि परिवार के सदस्यों को आपका संदेश मिल सके।
- बल के अधिकारी, अन्य पदाधिकारी व परिवार के सदस्य शेर-शायरी, गाने, व कहानियां लिखते हों और उनको समाचार पत्र में प्रकाशित करवाना चाहते है तो दैनिक जागरण समाचार पत्र के कार्यालय में छपवाने हेतु भेज सकते है।

सी. आर. पी. एफ. (मार्चिंग) गीत



चलो-चलो ऐ साथियो, देश ने बुलाया है,
बल के इम्तिहान का आज वक्त आया है,
सी. आर. पी. एफ. महान, इस बल के हम जवान, इस बल के हम जवान।
चलो चलो ऐ साथियो.....
पुकारते सभी इसे, हालात ऐसे हों कहीं,
मार-धाड़.....लूट-पाट.....आतंकवाद.....
पुकारते सभी इसे, हालात ऐसे हों कहीं (2)
इससे निपटने में बल का जवाब ही नहीं,
सी. आर. पी. एफ. महान, इस बल के हम जवान, इस बल के हम जवान।
चलो-चलो ऐ साथियो.....
गौरव बल का जानिये, जागहों पे बल के काम से
हाँट स्प्रिंग...सरदार पोस्ट....संसद भवन.....
गौरव बल का जानिये, जगहों पे बल के काम से (2)
दुश्मनों को मात दी, कैसे स्वप्रयास से,
सी. आर. पी. एफ. महान, इस बल के हम जवान, इस बल के हम जवान।
चलो-चलो ऐ साथियो.....
सेवा भक्ति धर्म है, आंतरिक सुरक्षा नारा है,
सेवा भक्ति....आंतरिक सुरक्षा.....सेवा भक्ति,
सेवा भक्ति धर्म है, आंतरिक सुरक्षा नास है (2)
सारे संकटों से जुझे ऐसा बल हमारा है,
सी. आर. पी. एफ. महान, इस बल के हम जवान, इस बल के हम जवान।
चलो-चलो ऐ साथियो.....
चलो चलो ऐ साथियो, देश ने बुलाया है,
बल के इम्तिहान का आज वक्त आया है,
सी. आर. पी. एफ. महान इस बल के हम जवान, इस बल के हम जवान।
चलो चलो.....चलो-चलो.....चला चला.....

सुशील कुमार कपूर
अपर पुलिस उप अपर पुलिस उप महानिरीक्षक (उत्तरी क्षेत्र)

शेरों का गुलदस्ता – (सोल्जर के नाम)

सोल्जर की फितरत पर

हमने हर गम को खुशी में ढाला है,
हमारा हर एक चलन निराला है।
जिन हादसों से लोग मरते हैं,
हमें उन हादसों ने पाला है।

देश के हालात पर

वतन की फिक्र कर नादाँ, कयामत आने वाली है,
तेरी बरबादियों के चर्चें होगें आसमानों में।
गर न संभले, यूँ ही बैठे रहे उलझे खयालों में,
तेरी दास्ताँ तक नहीं मिलेगी दास्तानों में।

यक्ष प्रश्न

धरती की सुलगती छाती के बेचैन शरारे पूछते हैं,
जो लोग तुम बचा न सके, वो खून के धारे पूछते हैं।
कायनात की छाती फटती है, अम्बर के तारे पूछते हैं,
रे रहबरे मुल्क, ऐ कौम बता, ये किसका लहू है कौन मरा!

हौसला अफजाई के लिए

अपनी जमीं अपना आकाश पैदा कर,
अपने कर्मो से एक नया इतिहास पैदा कर।
माँगने से मंजिल नहीं मिलती ऐ दोस्त,
अपने हर कदम में विश्वास पैदा कर।

आखिर में

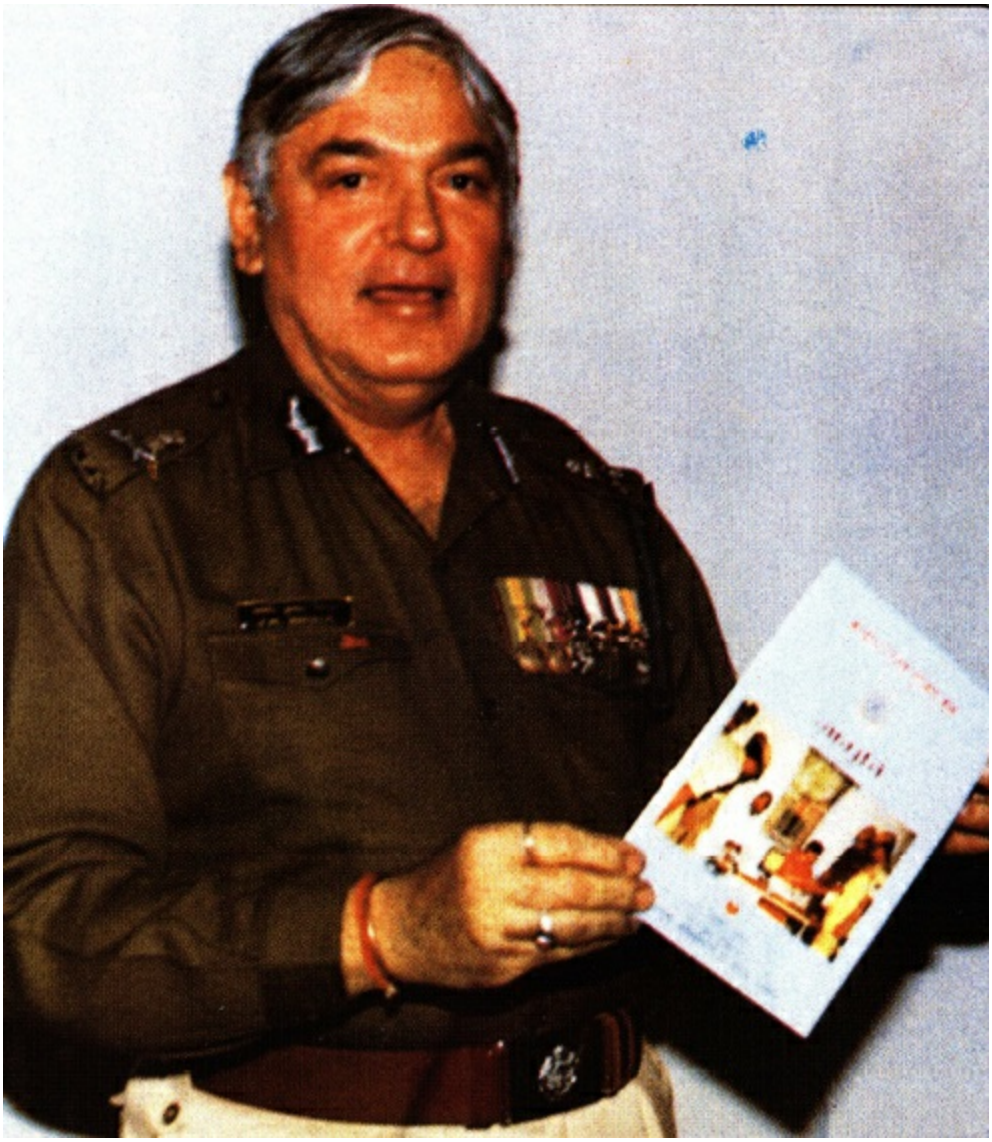
न देश का जिनमें प्रेम होवे, दुःखी के दुःख से जो दिल न रोवे,

खुशामदी बन के शान खोए, वो खर है हरांगेज बशर नहीं।

(के.के.पाण्डेय) उप कमाण्डेंट
केन्द्रीय हथियार भण्डार-दो केरिपुबल, तलेगांव पुण

कावा समाचार

“एच. आई. वी./एड्स” पर अनेक कार्यक्रम



विश्व एड्स दिवस *2004* पर कावा द्वारा आयोजित समारोह में एड्स की जानकारी से संबंधित प्रकाशित पुस्तक "जागृति" का विमोचन करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।

जैसा कि आप जानते हैं कि एड्स/एच.आई.वी. एक लाइलाज बीमारी है, इससे बल, समाज व देश को बचाने का केवल एक ही उपाय है, वह इसकी जानकारी। यह महामारी आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व इस देश में आई थी और जिस गाति से फैल रही है, वह हम सब के लिए चिन्ता का विषय है। इस बीमारी से ग्रसित रोगियों की संख्या दिन प्रति दिन बड़ती जा रही है, अतः हम वक्त रहते नहीं सभले और एहतियाती उपाय नहीं किए तो आगे पछताने के अलावा कुछ हाथ नहीं लगेगा। अतः इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए, इस महामारी से अपने बल को कार्मिकों सुरक्षित रखने के लिए बल के महानिदेशक श्री जे.के सिन्हा ने सभी बल के कार्यालयों व फील्ड फोरमेशनों के कमांडरों को समुचित एहतियाती उपाय करने के लिए दिक्षा निर्देश जारी किए है ताकि इस भंयकर महामारी के प्रकोप से अपने जवानों एवं उनके परिवारों को सुरक्षित रखा जा सकें। परिपत्र का उद्दहण इस प्रकार है:–

"एच.आई.वी. संक्रमण/ एड्स से आप सभी भली-भांति परिचित हैं। यदि समय रहते हम लोग इसका निदान नहीं निकालेंगे अथवा इससे बचने अथवा स्वयं को सुरक्षित रखने की ओर ध्यान नहीं देंगे तो यह बीमारी घातक एवं जानलेवा ही सिद्ध होगी। यही नहीं, यदि हममें से कोई व्यत्ति इससे ग्रसित है और एहतियात नहीं रखता है। तो वह यह बीमारी अपने पति/पत्नि अथवा असुरक्षित यौन संपर्क के जरिये दूसरों को भी इस के जीवाणु दे सकता है एवं आनेवाली सन्तानों को खतरा हो सकता है। अतः इसकी गंभीरता को समझ लेना आवश्यक है।

आवश्यक नहीं है कि यह रोग हममें से किसी को भी अपनी त्रुटियों अथवा गलतियों की वजह से ही हो। सामान्यतया यह रोग अपनी जीवन संगिनी को छोड़कर अन्य किसी से यौन संपर्क करने पर अथवा असुरक्षित संभोग इत्यादि करने पर होता है, किन्तु कई मामलों में खुद की त्रुटि नहीं रहते हुए भी व्यक्ति इसका शिकार हो सकता है जैसे कि अस्पताल इत्यादि में बीमारी से ग्रसित व्यक्ति पर प्रयुक्त सीरिंज का आपके ऊपर प्रयोग होना अथवा ऐसा कोई तरीका जिससे कि ग्रसित व्यक्ति के रक्त का संचरण आपके शरीर में हो। सामान्यतः छूने से, पास बैठने से या रोगी के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार करने इत्यादि से यह रोग नहीं फैलता है। इन मायनों में यह संक्रामक नहीं है।

अपने जीवन के प्रत्येक पहलू से आप स्वयं भली-भांति अवगत होते हैं। यदि हम लोगों ने विगत में ऐसा कोई कृत्य किया है जिससे कि इस रोग के होने की आशंका हो, जिसका कि जीवाणु दीर्घ अंतराल के बाद भी विकसीत हो सकता है, अथवा जाने-अनजाने में ऐसी परिस्थिति में रहे हों जहां कि अन्य कारणों से हमें इस रोग से ग्रसित होने की आशंका हो तो विवेकपूर्ण विकल्प यही होगा कि हम लोग एहतियातन स्वतः अपने रक्त की जांच विशेषकर एच.आई.वी. संक्रमण को ध्यान में रखते हुए अवश्य करवा लें। इसमें किसी शर्म की बात नहीं है तथापि यह हमारा नैतिक दायित्व है कि

हम अपने जीवन साथी एवं आने वाली संतानों को इसके कुप्रभावों से बचायें एवं स्वयं इसके वाहक न बनें।

इस जागरूकता के चलते हमारे कई अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इसमें पहल की है और अपनी जांच स्वयं कराई है। जिन लोगों में एच.आई.वी. सक्रमण पाया गया है उनका इलाज भी कराया जा रहा है, क्योंकि प्रारंभिक अवस्था में इलाज संभव है। इसके बढ़ जाने पर बाद में जान से हाथ धोने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

इस रोग से ग्रसित व्यक्ति सभी प्रकार की मानवीय संवेदनाओं और सहयोग का पात्र है, तिरस्कार का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सामूहिक रूप से हम सभी उसको इस बीमारी के चुंगल से निकालने में कामयाब हो सकते हैं। अस्तु, आपका नेतृत्वकर्ता होने के नाते यह मेरा दायित्व है कि मैं आपको सही वस्तुस्थिति से अवगत कराऊं एवं सही दिशा में आपका आहवान करूं। इस संक्रमण की पहचान रक्त सैम्पल के जरिये की जा सकती है जिसके लिए कि आपको अपनी सहमति देना आवश्यक हैं। यदि आप सहमत हैं तो यह जांच आपकी यूनिट में उपलब्ध मैडिकल इकाई के मार्फत भी करायी जा सकती है। इस जांच के लिए आप द्वारा कोई व्यय/भार देय नहीं होगा एवं सरकारी व्यय से इसकी पूर्ति होगी, किन्तु मेरा आपको यही परामर्श है कि आप इसे करवा अवश्य लें।

जो साथी रक्तदान में आस्था रखते हैं तथा सामाजिक दायित्व/मानवीय/नैतिक दृष्टि से रक्तदान करते रहते हैं, उन्हें तो यह विकल्प और भी सुलभ है क्योंकि रक्तदान के दौरान इस संक्रमण की जांच स्वतः ही की जाती है। अस्तु आप यह विकल्प भी अपना सकते हैं।

सभी पर्यवेक्षीय अधिकारी अपने यूनिट में सम्मेलनों में/भ्रमण/निरीक्षण के दौरान इसे पढ़ेंगे एवं इस अभियान में सक्रिय योगदान देते हुए सभी को इसका महत्व समझायेंगे, यह मेरी गहन आस्था है।



1 दिसम्बर, *2004* को विश्व एड्स दिवस पर आयोजित एड्स जागरूकता प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले हवा० आर.ओ. सुमन को पुरस्कार देते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा



कावा के सहयोग से ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित कार्याशाला में भाग लेने वाले कार्मिकों को एड्स का प्रतीक लगाते तत्कालीन अपर पुलिस उप महानीरिक्षक श्री पी.जे.सिहं

एच.आई.वी./एड्स क्या है ? आइए जानें

लगभग 20 वर्ष पूर्व हूयमन इम्युनो वाइरस/आक्कायर्ड इम्यूनो डेफिसिएंसी सिंड्रोम (एच.आई.वी/एड्स) महामारी हमारे देश में आई थी जो आज बहुत तेजी से फैल रही है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भी इस बीमारी से अछूता नहीं रह पाया है। बल के जवानों में इस बीमारी के फैलने के मुख्य कारण लंबे समय तक परिवार से दूर रहना और एच.आई.वी./एड्स के बारे में जागरूकता की कमी तथा जानकारी का अभाव है। लोगों की आदतों और व्यवहार के कारण यह रोग शहरों से गाँवों में और आम जनता में पहुंच चुका है।

एड्स से एक ही बचाव है। वह है–इसके बारे में पूरी जानकारी रखना। एड्स क्या

है? यह क्यूं और केसे होता है ? एच.आइ.वी. संक्रमण क्या है ? एड्स के क्या कुप्रभाव हैं ? इससे कैसे बचा जा सकता है ? इसके बारे में क्या-क्या भ्रम व्याप्त हैं ? एडस टेस्ट कहां और कैसे आप करा सकते हैं ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर आप द्वारा बखूबी जान लेना आवश्यक है। इन सभी पहलुओं पर लोगों तक पूर्ण जानकारी पहुंचना ही हम सब का कतर्व्य है तो आइए विश्व एड्स दिवस एक दिसम्बर के अवसर पर हम सभी इसके बारे में सही व सटीक जानकारी हर व्यक्ति तक पहुचाने का संकल्प ले ताकि हम अपनी ओर आने वाली पीड़ी को स्वच्छ एंव स्वस्थ्य वातावरण दे सकें। एच.आई.वी./एड्स को बल, समाज व देश से उखाड़ फैसने व इसके संक्रमण को रोकने के लिए एक व्यापक जन जागरण आन्दोलन चलाने की आवश्यकता है ताकि लोगों को इसके बारे में विस्तृत जानकारी देकर के प्रभाव को कम किया जा सके। जो लोग इस किन्ही कारणों से ग्रसित हो चुके और वे यह बीमारी आगे न फैलाए तथा जो स्वस्थ है इससे ग्रसित होने से बचें, उनके लिए यह आवश्यक इसके बारे में विस्तार से जान लें। भारत ही नहीं हर देश की सरकारें बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक व चिकित्सक इस महामारी के बारे में चितंनशील है। इसके सक्रमण को रोकने तथा ग्रसित होने पर इसके इलाज से संबधित उनके रिसर्च की जा रही है, लेकिन अभी तक आशा जनक परिणाम हासिल नहीं हुए है। और यदि इस महामारी का फैलना इसी तरह जारी रहा तो कुछ आने वाले वर्षों में हर तीसरा व्यक्ति इससे ग्रसित होगा। अतः अभी तक एड्स का कोई इलाज नहीं है इसकी जानकारी ही इससे बचने सबसे बड़ा उपाय है। तो आइए जाने कि यह बीमारी है क्या बला?

एच.आई.वी. एवं एड्स शब्द का अर्थ क्या है?

एच.आई.वी. : हयूमन इम्यूनों डैफिशियन्सी वायरस
: एच.आई.वी. विषाणु के शरीर में प्रवेश करने से एड्स होता है।

एड्स : एक्वायर्ड इम्यूनों डैफिशियन्सी सिन्ड्रोम।

एक्वायर्ड इम्यूनो : दूसरों से लगने वाला रोग।

डैफिशियन्सी : शरीर की बचाव प्रणाली का नष्ट होना।

सिम्ड्रोम : बीमारी के लक्षणों का समूह।

एच.आई.वी. वायरस शरीर में प्रवेश करने के बाद 5-10 वर्ष तक निष्क्रिय पड़ा रह सकता है। यह वायरस धीरे-धीरे शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली को नष्ट करता रहता है और इस दौरान शरीर में हानि करने वाले एच.आई.वी. विषाणु धीरे-धीरे संख्या में बढ़ते रहते हैं।

प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली के नष्ट होने से धीरे-धीरे मनुष्य अन्य बीमारियों से अपना बचाव करने में असमर्थ हो जाता है और निमोनिया, टी.बी, कैंसर इत्यादि रोगों से ग्रस्त होने की संभावना बढ़ जाती है।

एड्स/एच.आई.वी. कैसे फैलता है?

- असुरक्षित यौन संबंध अगर एच.आई.वी. ग्रसित मनुष्य के साथ हो, चाहे यह संभोग पुरूष-पुरूष में हो, पुरूष-औरत में या अलग-अलग साथियों में।
- एच.आई.वी. दूषित रक्त एवं रक्त उत्पाद/अंग प्रत्यारोपण।
- दूषित सिरिंजों एवं इन्जैक्शन की सुईयाँ एच.आई.वी.ग्रसित माँ से नवजात शिशु को।

एड्स रोग के लक्षण

- किसी भी व्यक्ति का वजन बिना कारण एक महीने में 10 किलो तक गिर जाना।
- 1-2 महीने तक लगातार शरीर में बुखार का रहना, थकान होना व पसीना आना।
- एक महीने से ज्यादा तक दस्त होना और दवाईयों से आराम न आना।
- गर्दन, बगल व जांघों की ग्रन्थियों में सूजन आना।
- मुँह में तथा जीभ पर सफेद छाले पड़ना।
- शरीर में खुजली या दाने होना।
- इन सभी बीमारियों का लगातार दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होना।

एड्स नियंत्रण का सबसे प्रभावशाली साधन है "एड्स से बचाव" एड्स से बचाव के लिये सावधानियाँ:–

सुरक्षित यौन संबंध

अपरिचित व्यक्ति से यौन संबंध के समय निरोध का प्रयोग करें। विविध साथियों से यौन संबंध न रखें। किसी भी यौन रोग की उपस्थिति में अपनी जांच एवं उपचार जरूर करायें।

रक्त सुरक्षा

रक्त या उसके उत्पादों का प्रयोग करने से पहले उनकी एच.आई.वी. जांच सुनिश्चित कर लें। हमेशा कीटाणुमुक्त या डिस्पोजेबल सीरिंजों एवं सुईयों का प्रयोग करें। सीरिंजों एवं सुईयों का सांझा प्रयोग कभी न करें।

शिशु प्रजनन

एच.आई.वी. से प्रभावित माताएं गर्भ धारण करने से पहले डाक्टर से सलाह लें।

एड्स इन माध्यमों से नहीं फैलता

- एड्स के मरीज के साथ उठने बैठने से।
- एड्स के मरीज के साथ हाथ मिलाने से या छूने से।
- एड्स के मरीज को गले लगाने से।
- मच्छर मक्खी के काटने से।
- सामूहिक शौचालय के प्रयोग से।
- सामूहिक स्नान से।
- खांसने या छींकने से।

उपचार

अगर कोई व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित है तो एड्स की रोगसूचक अवस्था की ओर उसकी प्रगति का जोखिम घटाने के लिए उसके स्वास्थ्य की देखरेख करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- देखदेख तथा सहायता सुलभ कराना
- स्वास्थ्यकर आहार अपनाना
- प्रतिदिन व्यायाम करना
- मदिरा और तम्बाकू से बचना
- तनाव से बचना
- सभी प्रकार संक्रमणों से बचना, अगर ऐसा हुआ तो आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ सकता है
- अवैध दवाएं प्रयोग नहीं करना
- नियमित तौर पर डॉक्टर से जांच करवाना

एंटी-रेट्रोवायरल उपचार

एंटी-रेट्रोवायरल उपचार उपलब्ध है। इस उपचार के दौरान विभिन्न दवाएं दी जाती हैं। परंतु ये दवाएं बहुत महंगी होती हैं और आजीवन लेनी पड़ती हैं। ये दवाएं दिल्ली के लोकनायक एवं राम मनोहर लोहिया अस्पताल में सरकार मुफ्त मुहैया कराती है।

इस एंटी-रेट्रोवायरल उपचार के अनेक लाभ हैं। सर्वप्रथव एंटी-रेट्रोवायरल से शरीर में एचआईवी वायरल भार कम हो जाता है। इसका अर्थ है कि–

- रोगी की प्रतिरोधकता तंत्र को स्वास्थ्य लाभ करने का अवसर मिलता है।
- तब वे खतरनाक समयानुवर्ती संक्रमणों के प्रति कम संवेदनशील हो जाते हैं।



“रक्तदान महादान” मानवीय सेवा स्वरूप बल की 66वीं वर्षगांठ पर आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान करने वाले आर.टी.सी. 5 के कार्मिक



केन्द्रीय कावा समिति द्वारा एड्स पर आयोजित कार्याशाला में भाग लेती कावा सदस्याएं एंव बल के अधिकारी व जवान

- उनके द्वारा एचआईवी तथा तपेदिक जैसे अन्य समयानुवर्ती संक्रमण दूसरों को संचारित किए जाने की संभावना कम हो जाती है।
- उनकी जीवन अवधि बढ़ जाती है और वे अपने परिवार की बेहतर देखभाल कर सकते हैं।
- उनके पास अधिक ऊजा, बेहतर स्वास्थ्य होता है, और इसलिए वे उपयोगी नागरिक बने रह सकते हैं।
- वे कर्णधार शिक्षक बन सकते हैं, दूसरों को जोखिमपूर्ण कार्य के खतरों से परिचित करवा सकते हैं।
- एचआईवी/एड्स, एसटीडी (यौन संचारित रोगों) तथा इसके विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रतिभागियों के ज्ञान में वृद्धि करना।
- अधिक जोखिम से घिरे व्यक्तियों, विशेषकर देह व्यापार में लिप्त महिलाएं तथा पुरूष, समलैंगिक पुरूष तथा नशीली दवाओं के इंजेक्शन लेने वाले व्यक्तियों के साथ उचित व्यवहार करने के लिए प्रतिभागियों को तैयार करना।
- अधिक जोखिम से घिरे व्यक्तियों तथा एचआईवी/एड्स के साथ जीवन बिताने वाले व्यक्तियों में अपने साथी को कंडोम प्रयोग के लिए मनाने की सामर्थ्य पैदा करना तथा इसके लिए अपेक्षित दक्षता हासिल करना।
- समाज में एचआईवी/एड्स के साथ जीने वाले व्यक्यिों के प्रति भेदभाव बंद करने

के लिए सभी उपाय करना तथा इसके लिए अपेक्षित दक्षता हासिल करना।
- यौन संबंधों के दौरान कंडोम के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए दक्षता को हासिल एवं विकसित करना।
- अधिक जोखिम से घिरे व्यक्तियों के लाभार्थ उपलब्ध सेवाओं की जानकारी हासिल करना और उन्हें प्रोत्साहन देना।
- यह कार्यक्रम आपकों, आपके परिवार तथा समाज को शांति, स्वास्थ्य और प्रसन्नता हासिल करने में समर्थ बनाएगा।

केरिपुबल के कार्यालयों में एड्स/एच.आई.वी. एवं नशा मुक्ति पर कार्याशालाओं का आयोजन

ग्रुप केन्द्र, नीमच

7अक्टूबर, 2005, को ग्रुप केन्द्र केरिपुबल नीमच परिसर में एड्स/एच.आई.वी. संक्रमण रोग की रोकथाम एवं नशा मुक्ति पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से स्थानीय सिविल अस्पताल में पदस्थ चिकित्सा विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ अपर पुलिस महानिरीक्षक, नीमच श्री मसूद मुस्तफा, ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में प्राचार्य/पु.उ.म.नि., सी.टी.सी.-प्रथम, नीमच श्री एस.एस. यादव, भी इस मौके पर उपस्थित थे। इस कार्यशाला में डॉ. आर.पी.माहेश्वरी, चिकित्सा विशेषज्ञ एवं एड्स नोड़ल अधिकारी, जिला चिकित्सालय नीमच, डॉ सेफुद्दीन गोहर, चिकित्सा अधिकारी, नशा मुक्ति केन्द्र, जिला नीमच, डॉ सुनील तिवारी, प्रोजेक्ट डायरेक्टर, नशा मुक्ति केन्द्र, जिला-नीमच एवं डॉ बी.एल.मीणा, प्रभारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ ए.के.मेहता, मुख्य चिकित्सा अधिकारी स्टेशन अस्पताल केरिपुबल, नीमच द्वारा बल के कार्मिकों को इस घातक बीमारी के रोकथाम और उससे बचाव/नियंत्रण के विभिन्न उपायों एवं तौर-तरीकों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया। इसके अलावा नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाले दुशपरिणामों से अवगत कराया गया। एड्स/एच.आई.वी. संक्रमण रोग के बचाव व इस से सम्बधित उपस्थित जवानो द्वारा पछे गये प्रश्नो शंकाओ का समाधान विशेषज्ञों द्वारा उनके व्यावहारिक ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर किया गया।



क्षेत्रीय कावा समिति द्वारा आयोजित एड्स जागरूकता कार्याशाला में ग्रुप केन्द्र, नीमच के जवानों एवं उनके परिवार के सदस्यों को जानकारी देते ग्रुप केन्द्र के चिकित्सक

ग्रुप केन्द्र, इम्फाल

परिवार कल्याण केन्द्र, ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल इम्फाल में भी 27 अक्टूबर, 2005 को एड्स/एच.आई.वी. संक्रमण रोग की रोकथाम एवं नशा मुक्ति पर कार्यशाला आयोजित की गई जिसका उद्देश्य जवानों व उनके परिवारों को इस के घातक परिणामों व बचाव के बारे में अवगत करवाना था। इस कार्याशाला से पूर्ण लाभ उठाने के लिए मणीपुर एड्स कन्ट्रोल सोसाईटी के डॉ प्रमोद कुमार, उप निदेशक, मणीपुर एड्स कन्ट्रोल सोसाईटी, डॉ रगुई उप निदेशक, मणीपुर एड्स कन्ट्रोल सोसाईटी, श्री सुशील हुईडरोम, विधि सलाहकार व स्टेट मैनेजर फयूचर ग्रुप ने आश्वासन दिया। इस अवसर पर एक विडियो फिल्म मणीपुर एड्स कन्ट्रोल सोसाईटी द्वारा दिखाई गई जिसका उददेश्य एड्स के प्रसार को रोकना व उससे बचाव कैसे करना है दर्शाया गया था। एड्स/एच.आई.वी. संक्रमण रोग के बचाव व इससे सम्बधित शंकाओ, समाधानों पर जवानों व उनके परिवार के सदस्यों द्वारा उठाए गए सवालों का जबाब उक्त विशेषज्ञों द्वारा दिया गया। इस कार्यशाला में श्री एच.आर.बंगा, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक तथा डॉ गीता दास, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, केरिपुबल, इम्फाल ने भी व्याख्यान दिया तथा इसके प्रसार को रोकने व अन्य सम्बधित कारणों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर रिजीनल कावा अध्यक्षा ने सम्मानीय अतिथियों व सभी उपस्थित अधिकारियो, जवानों व परिवार के सदस्यो के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।



क्षेत्रीय कावा समिति द्वारा आयोजित एड्स जागरूकता कार्याशाला में भाग लेती ग्रुप केन्द्र, इम्फाल की महिलाएं



सी.जी.ओ. काम्पलैक्स, लोदी रोड़, नई दिल्ली में *19* अक्टूबर, *2005* को कावा द्वारा आयोजित बाल दिवस के अवसर पर स्कूली बच्चों को पुरस्कार वितरण करती कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा



19 अक्टूबर, *2005* को सी.जी.ओ. काम्पलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली में आयोजित बाल दिवस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राएं

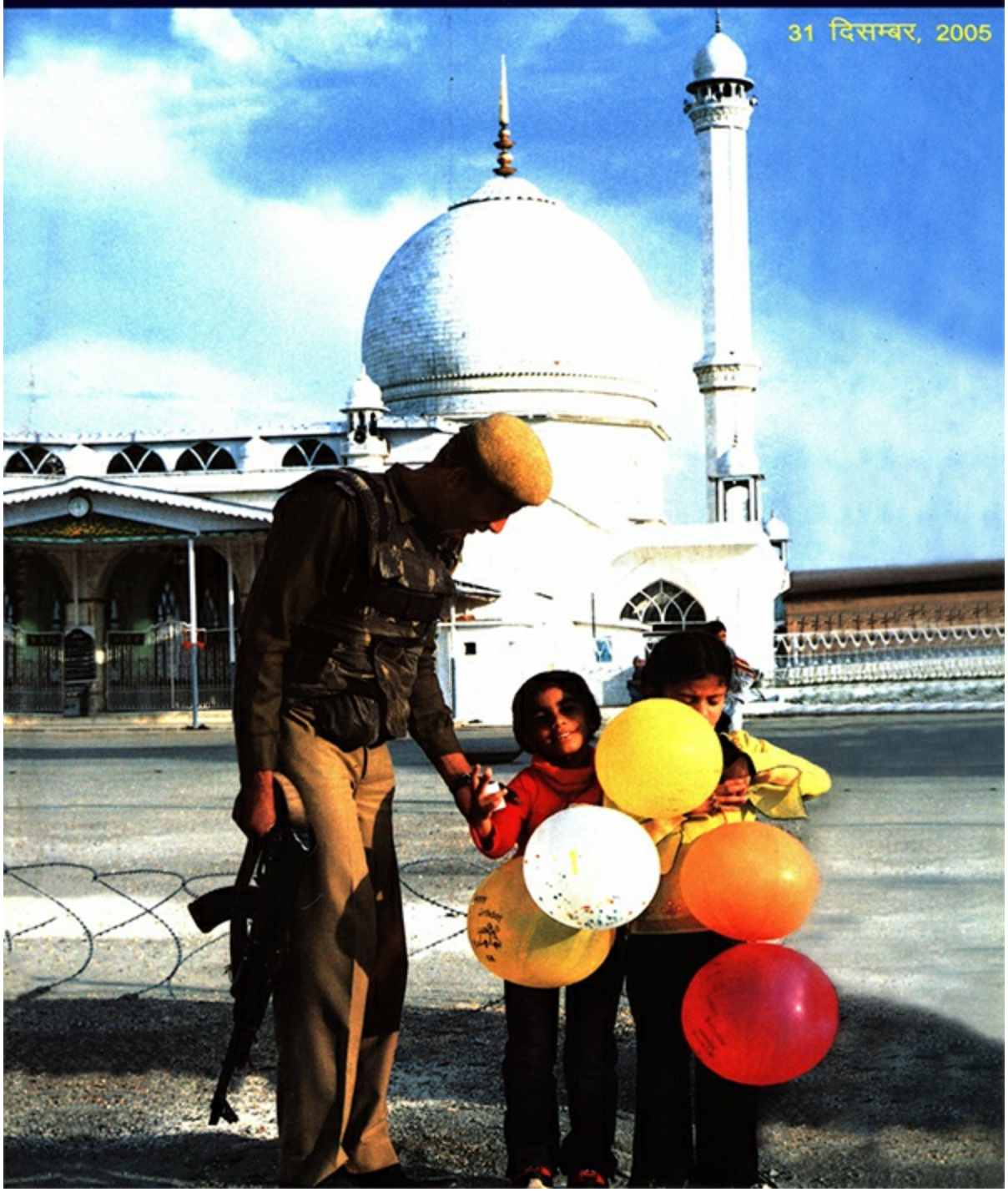
रजि. न. 4767/87



५४वी अखिल भारतीय पुलिस एथलेटिक चैम्पीयनशिप, २००५ मे ४०० मीटर की दौड़ मे रिकार्ड बनाने वाला केरलुवल का एथलेटिक जोसफ.जी.अब्राहम

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

31 दिसम्बर, 2005





बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा ग्रुप केन्द्र, पुणे में आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला का दीप प्रज्वलित कर उदद्घाटन करते हुए



ग्रुप केन्द्र, पुणे में आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले कार्मिकों के बीच बल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खण्ड–18 अंक–8
31 दिसम्बर, 2005
10 पौष, शक, 1927

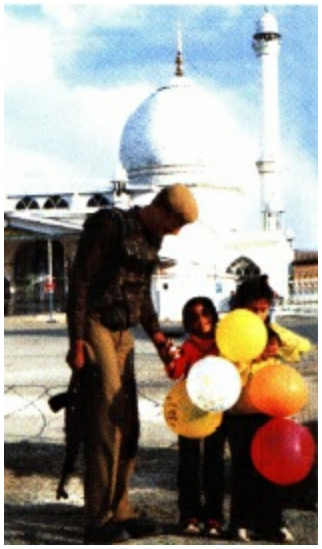
मुख्य सम्पादक
अभिषेक दयाल

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
जन संपर्क अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
जन सम्पर्क अनुभाग

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
यू. एस. प्रिन्टर्स, बी–186, ओखला, औद्योगिक क्षेत्र – I, नई दिल्ली–110020



“हम कश्मीरी आरजुओं की निगहबानी करते हैं”

पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्री पी.वी. बेलगामकर द्वारा हजरतबाल दरगाह पर खींची गयी इस फोटो को श्रीनगर में होरडिंग के तौर पर लगाया गया है।

<u>सम्पादकीय सलाहकार मण्डल</u>

<u>अध्यक्ष</u>

रणजीत सिन्हा, महानिरीक्षक (कार्मिक)

<u>सदस्य</u>

एस.एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण)
आर. पी. सिंह, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
पी. वी. बेलगामकर, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
एल. आर. सिधरा, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
रोज़ी अग्रवाल, उप वित्तीय सलहाकार
अभिषेक दयाल, जन सम्पर्क अधिकारी

नव वर्ष की शुभकामनाएं

अभिलाषएं आकांक्षित पाएं यत्न बनें उपलब्धि,
जीवन में अभिनंदनरत हो श्वास–श्वास समृद्धि,
सुख सुविधाओं का हर पल हो जाए आयुष्मान,
यही कामना नव संवत्सर लाए स्वर्ण विहाना।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

इस अंक में

1. कश्मीर की वादियों में सीआरपीएफ का मानवीय स्वरूप
2. कुशल नेतृत्व एवं अदम्य साहस की अनोखी मिसाल
3. के.रि.पु. बल के जॉबाजों की अमर शौर्य गाथा
4. प्रशिक्षण और परिचालन सेमिनार सह कार्यशाला–2005
5. 54वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलिट चैम्पीयनशिप–2005
6. एचआईवी/एड्स के विरूद्ध के.रि.पु. बल का अभियान
7. एड्स
8. रहस्य व रोमांच से भरा सीआरपीएफ का पलामू अभियान
9. सीआरपीएफ का एडम
10. पूर्वोत्तर की अनन्त यात्रा
11. अमनों चैन है मुकाम
12. आधुनिक समाज में नारी की भूमिका
13. बल की गत तीन माह की महत्वपूर्ण कार्रवाईयाँ
14. शहीदों की स्मृति में
15. कावा समाचार
16. केरिपुबल के सिविक एक्शन कार्यक्रम
17. खेल समाचार




विश्व एड्स


CRPF

सम्पादकीय

जाता हुआ वर्ष हमेशा अपने पीछे कुछ ऐसे निशान छोड़ जाता है, जो या तो आने वाले वर्षों के लिए एक सबक होते हैं या फिर प्रेरणा के स्रोत। 2005 भी इसका अपवाद नहीं है। परम्परा रही है कि जाते वर्ष के अंतिम छोर पर खड़े होकर, हम अपने पिछले पूरे साल पर नजर डाले, अपने साल भर के काम–काज का आंकलन करें और फिर उसके प्रकाश में आगामी वर्ष में प्रवेश करें।

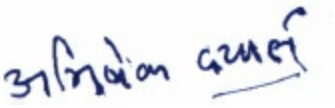
इस वर्ष छत्तीसगढ़ तथा बिहार के जहाँनाबाद में हुई घटनाओं ने हम सुरक्षाबलों की अवधारणाओं को बदलने पर मजबूर किया है। सुरक्षाबलों द्वारा ये दोनों ही घटनाएं बहुत बड़ी चुनौती के रूप में देखी जा रही हैं। इतिहास साक्षी है कि के.रि.पु. बल ने हर इस तरह की चुनौती को स्वीकारा है और आताताइयों को मुँहतोड़ जवाब दिया है, चाहे वह लोकतंत्र के स्तम्भ भारतीय संसद पर हमला हो या फिर अयोध्या में राम जन्म भूमि एवं बाबरी मस्जिद को अपवित्र करने की साजिश। हरेक घटना हमारे लिए एक चुनौती है। देश में इस प्रकार की उभरती चुनौतियों का पूरी दक्षता से मुकाबला करने के लिए एक कार्य योजना को अंतिम रूप दिया जा रहा है। इस माह पुणे में हुई चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में इस विषय पर चर्चा हो चुकी है।

सितम्बर में कश्मीर घाटी की आतंरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी सम्भालने के बाद हमने आतंकवादियों के हौंसले परास्त करने के लिए कई स्तरों पर मुहिम छेड़ी है, और अब इसके आशा जनक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। हमारी प्राथमिकता घाटी में अमन चैन कायम करना है। यह सम्भव तभी होगा जब हम वहाँ की अवाम की मुश्किलों को समझें। अतः घाटी में तैनात बल की यूनिटें अपने–अपने क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम आयोजित कर आम जनता की मुश्किलों को कम करने में प्रयासरत है। अब घाटी की जनता के.रि.पु. बल के मानवीय स्वरूप को भी पहचान चुकी है और विभिन्न कार्यों में बल का साथ दे रही है।

आतंकवाद के बाद कोई दूसरी चुनौती हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर उभरी है तो वह है एच०आई०वी०/एड्स का तीब्रता से लोगों में संक्रमण। हालांकि हम नैतिक तथा अनुशासित हैं, फिर भी हमारे कुछ ही साथी इससे ग्रसित हैं। हो सकता है इससे ग्रसित होने के ऐसे कुछ कारण रहे हों, जो उनकी क्षमता से परे हों, परन्तु हमें अब आगे सोचना है कि आगे इस संक्रमण को कैसे रोका जाय। विश्व एड्स दिवस पर हमारे महानिदेशक श्री जे०के० सिन्हा ने भी बल के सभी फील्ड कमाण्डरों एवं कार्यालय अध्यक्षों से इस संबंध में समुचित उपाय करने का आह्वाहन किया है ताकि हमारे जवान स्वस्थ एवं साहसी बने रहें। यह मात्र अपील थी, लेकिन आप सभी के सहयोग एवं सहायता के बिना इस दुश्मन पर विजयश्री नहीं प्राप्त की जा सकती है।

देश में अमन एवं शान्ति कायम हो, सभी स्वस्थ व निरोगी हों, इसी आशा के साथ

नव वर्ष की पूर्व बेला पर हमारी यही मंगल कामना है।



अभिषेक दयाल

कश्मीर की वादियों में सीआरपीएफ का मानवीय स्वरूप

अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण जम्मू–कश्मीर राज्य की भारत संघ में हमेशा से ही एक महत्वपूर्ण स्थिति रही है। सामरिक दृष्टि से भी इसका बड़ा महत्व है क्योंकि पाकिस्तान, अफगानिस्तान तथा चीन में इसकी सीमाएं मिलती हैं। यह प्राचीन सेंट्रल एशियन ट्रेड रूट पर स्थित है तथा कश्मीर घाटी अति प्राचीन समय से ही भारत के मैदानों तथा मध्य एशिया के उच्च शिखरों के बीच कारवा के लिए विश्राम स्थली रही है। सामरिक महत्व का स्थान होने के साथ–साथ प्रकृति ने इस राज्य को उदारतापूर्ण अद्वतीय सुन्दरता प्रदान की है। इन्हीं कारणों से कश्मीर के लिए भारतीय मानस में एक अद्वितीय स्थान है। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद जम्मू व कश्मीर के तत्कालीन महाराजा हरि सिंह द्वारा 26 अक्टूबर, 1947 को भारत में विलय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के साथ ही यह राज्य भारत संघ में सम्मिलित हो गया। पाकिस्तान द्वारा समर्थित भारी संख्या में सशस्त्र कबीलों द्वारा कश्मीर पर आक्रमण करने के कारण ही इस समय तक यहाँ स्थिति बहुत ही चिंताजनक बन चुकी थी। भारत में विलय होने के बाद भारतीय सशस्त्र बलों ने कश्मीर में पहुँचकर घाटी का तीन चौथाई क्षेत्र 1 जनवरी, 1949 को युद्ध विराम की घोषणा होने से पहले खाली करा लिया था। इस प्रकार हिंसा व अलगाववाद के बीज शुरू में ही वो दिये गये थे।

तत्पश्चात् भारत व पाकिस्तान के मध्य जम्मू व कश्मीर का मामला राजनीतिक व सैनिक रूप से एक अत्याधिक नाजुक मुद्दा बन गया। वैधानिक रूप से जम्मू व कश्मीर भारत का अभिन्न अंग हो, यह पड़ोसी मुल्क को बिल्कुल भी बर्दास्त नहीं था, अतः वह लगातार राज्य में तोड़–फोड़ की गतिविधियों में उलझा रहा तथा इस पर अपना कब्जा लेने की नाकाम कोशिशें भी करता रहा। उसने 1965 तथा 1971 में भारत पर आक्रमण कर कश्मीर को हथियाने के असफल प्रयास भी किए गये।



बीएसएफ से आन्तरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी सभालने के बाद श्रीनगर के लाल चौक पर के.रि.पु. बल के जवान

1989 के दौरान उग्रवाद बढ़ने से पूर्व कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य में केवल 4 से 6 बटालियनें ही तैनात थी। 1989 में पाकिस्तान ने भारत से कश्मीर को अलग करने के लिए अप्रत्यक्ष लड़ाई लड़ने की एक ओर साजिश रची। भारी संख्या में कश्मीरी युवकों को फुसलाकर पाक अधिकृति कश्मीर में बुलाया गया तथा वहाँ उन्हें तोड़फोड़ करने को प्रशिक्षण दिया गया तथा हिंसा फैलाने के लिए राज्य में वापिस भेजा गया।

1989–90 के अंत तक यहाँ का माहौल भयंकर रूप धारण कर चुका था। आतंकवाद का शुरुआती आघात इस बल को सहना पड़ा। आतंकवादी गतिविधियों के कारण राज्य पुलिस पूरी तरह पंगु हो गई थी, अतः के.रि.पु. बल को प्रति–विद्रोहात्मक अभियान चलाने के लिए स्वतंत्र जिम्मेदारी दे दी गई। स्पेशल टास्क फोर्स की संकल्पना भी के.रि.पु. बल की देन थी और साथ ही संपूर्ण कश्मीर घाटी में प्रति–विद्रोहात्मक अभियान चलाए गए। गत तीन सालों में भारी शस्त्रों से लैस आतंकवादियों के साथ संघर्ष में के.रि.पु. बल के जवानों की जाने गई जिससे बल को भारी नुकसान हुआ। 1992 के अंत में के.रि.पु. बल की भूमिका उस समय बदल गई जब सीमा सुरक्षा बल को भारी संख्या में पंजाब से जम्मू व कश्मीर भेजा गया तथा के.रि.पु.बल को अशांतग्रस्त राज्य पंजाब में सामान्य स्थिति बनाए रखने के लिए भेज दिया गया। के.रि.पु. बल की नफरी 129 कंपनियां से घटाकर 89 कंपनियां कर दी गई। के.रि.पु. बल बड़े–बड़े प्रतिष्ठानों व अति विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा में तैनात था

जबाके सीमा सुरक्षा बल को जम्मू व कश्मीर में प्रांते–विद्रोहात्मक अभियानों के संचालन की जिम्मेदारी दी गई।

वैसे के.रि.पु. बल का कश्मीर तथा कश्मीरियों के साथ बहुत पुराना रिस्ता रहा है। के.रि.पु. बल की तैनाती कश्मीर में देश की आजादी से पहले के समय से बनी हुई है। अतः कश्मीरी आवाम के.रि.पु. बल को अच्छी तरह से जानता–पहचानता व समझता है। के.रि.पु. बल के जवानों ने कश्मीरियों की कबीलाई आतंकियों से भी रक्षा की थी जो कश्मीरियों के ही भेष में यहाँ पर अपना कब्जा जमा कर वहाँ की अस्मिता, संस्कृति व सभ्यता को खत्म करना चाहते थे। और आज भी बल के जवान यहाँ की सौम्यता व सुसमिता को हर हाल में बचाए रखने के लिए कृत संकल्प हैं।



12 मई, *2005* को *27* बटा० द्वारा आयोजित सिविक एक्शन कार्यक्रम में स्कूली बच्चों को उपहार बांटते हुए पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर श्री रणजीत सिन्हा

1989 में पंजाब उग्रवाद के खातमे के बाद ही कश्मीर घाटी में उग्रवाद ने अपने पैर जमाने शुरू कर दिये थे। जब पंजाब के लोग धार्मिक भावनाओं में नहीं बहे और दुश्मन के मनसुबों को समझ गये तो वहाँ का आतंकवाद दिन प्रतिदिन अपनी कब्र की ओर बढ़ता गया, और दुश्मन को यह सब अच्छा नहीं लगा। उसने घाटी में रोजी

रोटी की फिक्र में लगे भोले–भाले लोगों को तरह–तरह के प्रलोभन व धार्मिक मजहबी रिश्तों का वास्ता देकर आतंकवाद की चिनगारी सुलगा दी और सीमा पार से इसे हवा देना शुरू कर दी।

के.रि.पु. बल को पंजाब में आंतकवाद का साफाया करने का अच्छा खासा अनुभव था। अतः बल की अच्छी खासी नफरी पंजाब से घाटी में तैनात कर दी गई। इन विगत वर्षों के दौरान कश्मीरी आवाम ने आतंकवादियों के मन्सूबों को भी भापा और सुरक्षा बलों के उददेश्यों को भी। अब अच्छी तरह लोग समझ चुके हैं कि सुरक्षा बल ही उनके सच्चे हितेषी हैं। वर्तमान में कश्मीर में के.रि.पु. बल की 64 बटालियनें यानी लगभग 450 कम्पनियां तैनात हैं। बल के जवान कश्मीर घाटी के दूर दराज के क्षेत्रों में भी जाकर वहाँ की स्थानीय जनता की जान माल की हिफाजत में लगे हुए है, चाहे बर्फीला मौसम हो, तापमान 0° सेंटीग्रेट भी नीचे हो, बर्फीली हवाए, भारी वर्षा या कठोरतम मौसम हो आपको के.रि.पु. बल के जवान श्रीनगर के लाल चौक से लेकर दूर उरी तथा सुदूर दुर्गम क्षेत्रों में वहाँ के आवाम की सुरक्षा एवं सहायता करते मिलेगें। जनता की भावनाओं के अनुरूप सेवा ही बल का असली मकसद है।

कारगिल युद्ध के बाद गठित कमेटी की रिर्पोट के आधार पर मंत्रियों के समूह की सिफारिश पर यह नीति बनाई गई थी कि सीमा पर सुरक्षा का दायित्व सीमा पुलिस निभायेगी जबकि आन्तरिक कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए गठित पुलिस बल अर्थात के.रि.पु. बल को कश्मीर सहित देश के सभी अन्दरूनी भागों में जहाँ केन्द्रीय अर्ध सैनिक बलों की आन्तरिक सुरक्षा के लिए जरूरत होगी, की जिम्मेदारी के.रि.पु. बल को दी जाए। तदुनसार चरण बद्ध तरिके से यह कार्यवाही चल रही है। के.रि.पु. बल ने कश्मीर घाटी सहित मणिपुर से भी सीमा सुरक्षा बल, आई.टी.वी.पी. सी.आई.सए.एफ. आदि फोर्सीं से आतंरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी की कमान अपने नियंत्रण में लेनी आरम्भ कर दी है। धीरे–धीरे कश्मीर घाटी की सम्मपूर्ण सुरक्षा का दायित्व भी अब के.रि.पु. बल के ऊपर आ रहा है। इन जिम्मेदारीयों को पूरी दक्षता से साथ निभाने के लिए बल का हरेक जवान तैयार है। बल ने अपने जवानों को विद्रोहात्मक, फिदायीन व जैवीय हमलों से निपटने का प्रशिक्षण देकर विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए प्राकृतिक आपदाओं से निपटने को भी तैयार किया गया है। अतः अब बल का हर कार्मिक किसी भी प्रकार की चुनौती का सामना करने के लिए पूर्ण रूप से सक्षम है व कृत संकल्प है।

फिजीकली तथा अस्त्र शस्त्रों की लड़ाई में तो बल के जवान आतंकियों के हौसले परास्त कर ही रहे हैं। दूसरी ओर वहाँ के स्थानीय आवाम के दिलों में अपनी जगह बनाने के लिए अपने बहुत चर्चित मानवीय स्वरूप को भी उजागर कर रहे हैं। स्थानीय लोगों के बीच भय मुक्त वातावरण बनाने तथा उनके के दिलों में भरोसा व विश्वास का माहौल कायम करने के लिए बल ने कई प्रयास शुरू किये हैं :–

युवाओं को रोजगार के अवसर मुहैया कराना:– के.रि.पु. बल ने कश्मीरी जनता में सुरक्षा का माहौल कायम करने के साथ–साथ वहाँ के युवाओं के लिए रोजगार के

अवसर भी पैदा किये हैं। घाटी के युवाओं को देश की सुरक्षा में भागेदारी निर्धारित करने के लिए भर्ती का एक विशेष अभियान चलाया है। इस अभियान के तहत बल मे लगभग 2100 कश्मीरी युवाओं को भर्ती किया गया है। के.रि.पु. बल में कश्मीरी युवाओं के शामिल होने से वहाँ का आवाम बल के स्वरूप को और अच्छी तरह जानेगा। जो युवक इसमें शामिल हुए हैं उन्हें देश सेवा के साथ–साथ समाज में सम्मान के साथ जीने का मकसद भी मिला है, वे अपने परिवार का और बेहतर तरीके से भरण पोषण कर सकते हैं।

बल द्वारा सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन:– घाटी में तैनात के.रि.पु. बल की बटालियनों ने अपनी तैनाती के क्षेत्र की सुरक्षा के साथ–साथ वहाँ के स्थानीय आवाम की मुश्किलों को भी पहचाना है। जनता को अपने और करीब लाने के लिए अनेक तरह के सिविक एक्शन कार्यक्रम चलाये जा रहे है :–

चिकित्सा शिविर:– बल की प्रत्येक बटा० समाज सेवा स्वरूप अपनी तैनाती के दूर दराज के क्षेत्रों में जहाँ चिकित्सा सुविधाएं नगण्य है, वहाँ मुफ्त चिकित्सा शिविर लगाकर गरीब असहाय लोगों को दवाईयां तथा चिकित्सा मुहैया करा रही हैं। बल की युनिटें विशेष चिकित्सा के लिए बाहर से भी डॉक्टरस बुलाकर स्थानीय लोगों की समय–समय पर विशेषज्ञों से मुफ्त स्वेच्छक जाँच करवाती है। बल बच्चो तथा वृद्धों के प्रति सदैव सजग रहा है। अतः तैनात यूनिटें विभिन्न अवसरों पर बच्चों के लिए भी पल्स पोलियों, टीकाकरण, नेत्र चिकित्सा, रक्तदान जैसे कार्यक्रम आयोजित करती हैं।

स्कूली बच्चों के लिए कार्यक्रम:– घाटी में तैनात के.रि.पु. बल की यूनिटें बच्चों के लिए भी अनेक कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें यह संदेश दे रही है कि बच्चे ही देश का भविष्य है। अतः दूर दराज के क्षेत्रों में जहाँ अत्यन्त गरीबी है। बच्चों के आमोद प्रमोद के संसाधन उपलब्ध नहीं है। वहाँ बल के जवान बच्चों के लिए विभिन्न तरह के मनोरंजन तथा संस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। बच्चों को खेल–कूद तथा मनोरंजन का सामान भी मुफ्त मुहैया कराया जाता है तथा उनकी हौसला अफजाई की जाती है। गत वर्ष सद्भावना स्वरूप बल ने जम्मू कश्मीर के विभिन्न स्कूली बच्चों के लिए 10 दिन का भारत भ्रमण भी आयोजित किया था जिसमें राजौरी, पुंछ, डोडा, कठुआ तथा जम्मू जिलों के देहाती इलाके के 40 स्कूली बच्चों को यह भ्रमण के.रि.पु. बल ने कराया था। इस टूर के दौरान रहन–सहन, परिवहन तथा भोजन व अन्य विविध खर्चों का वहन के.रि.पु. बल ने ही किया। भारत भ्रमण के दौरान इन छात्रों को अमृतसर, चण्डीगढ, दिल्ली, आगरा, कुरूक्षेत्र, पानीपत, पिन्जौर का भ्रमण कराया गया। इसी तरह का भारत भ्रमण टूर आयोजित करने का अनुरोध श्रीनगर के गुर्जर तथा बकरवाल जाति के देहाती बच्चों को कराने का अनुरोध प्राप्त हुआ है। श्रीनगर में कार्यरत एक अन्य स्वयं सेवी संस्था गिल्ड ने भी अनाथ तथा बेसहारा बच्चों को भारत भ्रमण कराने का अनुरोध किया है। दोनों ही संस्थाओं के अनुरोध पर सक्रिय रूप से विचार कर प्रोग्राम को अंतिम रूप दिया जा रहा है। और शीघ्र ही घाटी के दूर–दराज

के पिछड़ी जातियों के इन बच्चों का भी यह सपना शीघ्र ही साकार होने जा रहा है। ऐसे आयोजनों से बल की उदार छवि परलक्षित होती है।

बल का सर्व शिक्षा अभियान:– किसी क्षेत्र के विकास व उन्नति में शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अतः सर्व शिक्षा अभियान को मूर्त रूप देने के लिए के.रि.पु. बल के जवान समय समय पर स्कूलों में जाकर बच्चों को कॉपी–किताब, स्टेशनरी का सामान, स्कूल बैग आदि मुफ्त मुहैया कराकर उन्हें नियमित स्कूल जाने के लिए प्रेरित करते हैं। बल द्वारा किये जा रहे ऐसे मानवीय कार्यों से घाटी की जनता बेहद खुश है।



जम्मू–कश्मीर के पुंछ जिले के पावर हाउस क्षेत्र में स्थानीय महिलाओं को राहत साम्रगी बांटते हुए *150* बटा० के कमाण्डेन्ट श्री राजीव रंजन कुमार



के.रि.पु. बल द्वारा श्रीनगर में समाज सेवा स्वरूप आयोजित सिविक एक्शन कार्यक्रम में स्थानीय बच्चों को उपहार भेंट करती प्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीमती वहीदा रहमान

महिलाओं के लिए कार्यक्रमः– के.रि.पु. बल ने महिलाओं के लिए भी कई ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया है। जहाँ महिलाएं अनपढ़ गरीब है तथा परिवार की आर्थिक स्थिति नाजुक है, वहाँ उन्हें रोजी–रोटी से संबंधित व्यावसायों में शिक्षित करने में सहायता की जा रही हैं। गरीब महिलाओं व बालिकाओं को सिलाई–कड़ाई की मशीनें बाँटी जाती हैं ताकि वे स्वाभिलम्बी बन सके। गरीबी एवं पिछड़ापन इस क्षेत्र की सबसे भयंकर समस्या है। अतः इस समस्या से निजाकत दिलाने के लिए के.रि.पु. बल के जवान अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत गरीब तथा पिछड़े परिवारों को राशन, कम्बल आदि भी समय–समय पर उपलब्ध कराते हैं ताकि वे भूखे–नंगे ना रहें।

समाज कल्याण के कार्यः– घाटी में तैनात बल के जवानों ने स्थानीय लोगों की जरूरतों को बेखुबी जाना समझा है। अतः अपने समाज कल्याण कार्यक्रम के तहत दूर–दराज के क्षेत्रों में जहाँ बेसिक सुविधाओं का आभाव है वहाँ पर बरात घर स्कूल बिल्डिगों का निर्माण, महिला तथा पुरूष शौचालयों का निर्माण, समुदायिक भवनों एवं सड़कों की मरम्मत व नयी सड़क निर्माण तथा साफ–सफाई अभियान चलाने जैसे मानवीय सेवा के कार्य किये जा रहे हैं। बल के अधिकारी एव जवान समय समय पर विभिन्न क्षेत्रों में जाकर वहाँ के स्थानीय लोगों से उनकी समस्याओं एवं जरूरतों

को पूछते हैं और उनका आंकलन कर समाधान करने के भरसक प्रयास करते हैं। अतः अब बल का मानवीय स्वरूप घाटी जनता को स्वंय ही नजर आ रहा है।

सामाजिक पर्वो को शान्ति रूप से सम्मपन करानाः– विभिन्न तीज–त्यौहारों एवं समारोहों को शान्ति पूर्ण ढंग से आयोजित कराने में के.रि.पु. बल का भी विशेष योगदान रहा है, चाहे किसी भी धर्म या मजहब का समारोह हो, बल के जवानों ने अपनी निरपेक्ष्य एवं निपक्षता छवि का परिचय देते हुए उन्हें पूर्ण श्रद्धा–भाव से सम्पन्न कराया है। पिछले कई वर्षों से विश्व प्रसिद्ध श्रीअमरनाथ यात्रा को सम्पन्न कराने में के.रि.पु. बल का योगदान सराहनीय रहा है।

घाटी में के.रि.पु. बल के जवानों ने स्थानीय लोगों की भावनाओं के अनुरूप अनेक समारोह आयोजित कर उनका दिल जीता है। गत वर्ष बल द्वारा आयोजित समाजिक कार्यक्रम में जानी मानी युवा दिलों की धड़कन अभिनेत्री श्रीमती वाहिदा रहमान भी शामिल हुई। श्रीमती रहमान बल के उदारवादी समाज सेवी स्वरूप से बहुत ही प्रभावित हुई और बल द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रमों में सरीक होने की प्रतिवद्धता दोहराई।

प्राकृतिक आपदाओं के दौरान बचाव एवं राहत कार्यः– सुरक्षा व समाज सेवा के अलावा घाटी में प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भी के.रि.पु. बल के जवानों द्वारा प्रदान की गई सेवाएं कश्मीरी आवाम के मानस पटल पर सदैव बनी रहेगी। इसी वर्ष फरवरी में हुए भारी हिमपात के दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग–1ए सहित सभी मुख्य मार्ग बंद हो गये। बिजली, टेलीफोन तथा पानी की आपूर्ति आदि पूरी तरह बाधित हो गई। के.रि.पु. बल के जवान बर्फ हटाने के कार्य में तुरंत जुट गये। बल के जवानों ने जरूरतमंदों को पीने का पानी, टेन्ट तथा राशन आदि मुहैया कराकर जन जीवन को सामान्य करने में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। के.रि.पु. बल द्वारा पीड़ितों के इलाज के लिए मेडिकल कैम्प भी लगाए तथा मोबाईल मेडिकल यूनिटों से लगभग 10,000 पीड़ितों को चिकित्सा सहायता मुहैया कराई गई। जम्मू के ऊपरी क्षेत्र में भारी हिमपात के दौरान बल द्वारा स्थानीय अस्पतालों के केज्युल्टी वार्डों को कोयले की भी आपूर्ति की।



भूकम्प प्रभावति क्षेत्रों में बचाव एवं राहत कार्यों में लगे के.रि.पु. बल के जवान

जम्मू–कश्मीर में भूकंप के दौरान बचाव एंव राहत कार्य:– 8 अक्टूबर, 2005 को आये भयंकर भूकंप से भारी तभाई हुई। के.रि.पु. बल ने उरी, तंगधार तथा नियंत्रण रेखा से लगे दूर–दराज के अन्य क्षेत्रों में बचाव एवं राहत कार्य शुरू किये। बचाव कार्य के लिए सभी उपकरणों से सज्जित 5 कंपनियों के अलावा चिकित्सा टीम प्रभावित क्षेत्रों में इस प्राकृतिक त्रास्दी से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए तैनात की गई। इसके अतरिक्त **के.रि.पु. बल ने बारामुला जिले के कमालकोट और बांदी सराय गाँवों को गोद लिया है** जिसमें इस भुकंप के दौरान भारी संख्या में तभाई हुई थी। बल द्वारा इन गाँवों का पूरी तरह पुनर्वास किया जा रहा है। के.रि.पु. बल ने अभी तक लगभग 250 लोगों को मलवे से निकालकर सुरक्षित जगह पहुँचाया है, 200 लोगों को चिकित्सा सुविधा मुहैया कराई, 1200 लोगों के रहने के लिए आवास तथा 6300 लोगों को मुफ्त् राशन बाँटा। कमलकोट गाँव में चौबीसों घंटे लंगर चलाया जा रहा है। जरूरतमंद लोगों को टेन्ट तथा आवश्यक सामान बाँटा जा रहा है। पीने का पानी मुहैया कराने के लिए पानी के टेन्कर भेजे जा रहे हैं। पहली बार बल ने सीमा रेखा के नजदीक तंगदार से 15 कि० मी० दूर, एक दूर–दराज के गांव में पहुँचकर मलवे में फसे लोगों को बचाया है। भूकंप आने का पता चलते ही के.रि.पु. बल की जम्मू–कश्मीर क्षेत्र में तैनात 64 बटालियनों के जवानों को हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार किया गया और बचाव एवं राहत कार्य के लिए के.रि.पु. बल ने अपनी 5 अतिरिक्त कम्पनियां तथा 3 टीमें सबसे अधिक प्रभावित हुए बारामूला तथा उरी, के

एल०ओ०सी० के नजदीक बेहद ऊबड़ खाबड़ एरिया में बसे गॉवों में जाकर इस अचानक आई त्रासदी से प्रभावित लोगों की सहायता में जुट गयी। यह ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ अभी पूरी तरह से न तो समुचित यातायात के साधन हैं और न ही रोड़, लोगों का जीवन खेती बाड़ी और पशुपालन पर निर्भर है। यह गाँव पिछड़े हैं, और लोगों की मालीय हालत अच्छी नहीं है। पर्याप्त चिकित्सा सुविधा भी नहीं है। अतः ऐसी स्थिति में यदि कोई प्राकृतिक त्रासदी हो जाए तो लोगों के जान–माल का भारी नुकसान होना लाजमी है। जम्मू–कश्मीर में नागरिक प्रशासन के साथ कानून एवं व्यवस्था कायम करने में लगी के.रि.पु. बल आतंकवाद से लड़ने के साथ–साथ ऐसे मानवीय कार्यों में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती है। अतः इस त्रासदी के बाद प्रधानमंत्री के आहवान पर बल के सभी कार्मिकों ने अपने एक दिन के वेतन के रूप में जम्मू कश्मीर के **भूकंप से प्रभावित लोगों के पुनर्निवास के लिए 4 करोड़ 70 लाख रूपये प्रधानमंत्री के आपदा राहत कोष में दान दिये।** गोद लिए गाँव कमलकोट की आबादी लगभग 1680 है तथा इसमें 163 मकान हैं, भूकम्प से 22 मकान पूरी तरह से ध्वस्त हो गये तथा शेष मकान आशिंक रूप से क्षति ग्रस्त हुए। गांव के 155 लोग मारे गये जबकि 700 लोग घायल हुए। के.रि.पु. बल ने ग्रामिणों के लिए 165 स्थायी आवास स्थापित किये तथा भूकम्प के तुरन्त बाद लंगर शुरू किया। गांव की अर्थ व्यवस्था पूरी तरह से धान की खेती वाड़ी तथा चीड़ के वृक्षों पर टिकी हुई हैं। जिन लोगों के मकान पूरी तरह से टूट गये हैं उनके लिए सैड बनाये गये है। और ठण्ड से बचने के लिए कम्बल व वस्त्र, बल मुहैया करा रहा हैं, गांव में चौबीसों घण्टे लंगर चल रहा है, यह प्रक्रिया जब तक चलती रहेगी तब तक कि यहाँ के लोगों की जिन्दगी पूरी तरह से पटरी पर ना आ जाए तभी के.रि.पु. बल का संकल्प व आदर्श “सेवा भक्ति” पूरी तरह सार्थक होगा।

प्रस्तुति–नि/सम्पादक रनबीर सिंह

कुशल नेतृत्व एवं अदम्य साहस की अनोखी मिसाल

(श्रीनगर के फिरदोस सिनेमा परिसर पर फिदायीन हमला)

जम्मू–कश्मीर पिछले लगभग डेढ़ दशक से भयंकर आतंकवाद की चपेट में है। देश की जन्नत कहा जाने वाला कश्मीर आज इस आतंकवाद के कारण डरा सा और

सहमा हुआ है। विकास और विकासोलता को गाते में ब्रेक सी लग गयी हैं, चारों ओर नजर उठाकर देखे तो वहाँ एक अजीब सी खामोशी नजर आयेगी और जब यह खोमोशी टूटती है तो सुनाई पड़ती हैं गोलियों की आवाज और विस्फोटों के धमाके। क्या हो गया हमारी जन्नत को? किसकी लग गई इसको नजर? सुबह जहाँ सूफी सन्तों की वाणियां, कुरान शरीफ की आयते सुनाई देती थी, अब अक्सर गोलियों की आवाज सुनाई देती हैं। यह सब क्यों हो रहा है? और कौन करवा रहा है? इस केसर की क्यारी में कौन छुपे बैठे हैं? ऐसी बहुत–सी बाते, और बहुत से अधसुलझे प्रश्न, जिनके उत्तर शायद हम किसी के पास नहीं है। कानून व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी तथा कश्मीर की आवाम की सुरक्षा का दायित्व के.रि.पु. बल के ऊपर है। इसीलिए इस समय बल की 86 बटालियनें इस घाटी प्रदेश में आतंकवाद का खात्मा करने के लिए तैनात है। और आशा है कि जिस प्रकार पंजाब का आतंकवाद खत्म हुआ उसी तरह कश्मीर में भी शान्ति जरूर आयेगी। जो हमारे युवा पथ भ्रमित हो गये हैं वे अपने वतन की मिट्टी को याद कर घर लौटकर जरूर आयेगें और तभी होगी आवाद हमारी जन्नत, हमारा कश्मीर, हमारा स्वर्ग।

जैसे–जैसे समय बदला, नई–नई तकनीक बदली, आतंकवादियों ने भी अपनी रणनीति बदली, इसके कई जीते–जागते उदाहरण हम सभी पिछले कुछ वर्षों के दौरान देख चुके हैं। अभी आतंकवादियों ने फिदायीन हमलों की जो रणनीति अपनाई है वह सुरक्षा बलों के लिए वास्तव में एक सोचनीय विषय है, क्योंकि फिदायीन अचानक किसी भी भेष में, सामान्य नागरिक, यात्री, साधु, या फकीर नेता या फिर भिखारी, किसी का भी रूप धारण कर किसी भी समय सुरक्षा बलों के कैम्पों, धार्मिक स्थलों तथा अति महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों व अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों के ठिकानों में घुसकर अचानक अन्धाधुन्ध फायरिगं कर देते हैं जिससे सुरक्षा बलों तथा सामान्य जनता को भारी धन जन की हानि होती हैं। फिदायीन का मकसद सुरक्षाबलों को अधिक से अधिक नुकसान पहुँचाना और जनता में दहशत पैदा करना है। अतः इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा बलों ने भी। अपनी कार्यशैली में बदलाव कर तदुनसार। कार्रवाई आरम्भ कर दी है, और उसके आशा जनक परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं।



23 नवम्बर, *2005* को फिरदोस सिनेमा परिसर में हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने वाले *96* बटा० के लॉस ना० मो० मदीन, सि० आर.वी.टिग्गा, सि० सी.के. बोरो तथा सि० अजय कुमार

कश्मीर घाटी में अमन चैन कायम करने तथा आतंकवाद को जड़ से मिटाने के लिए वैसे तो के.रि.पु. बल की कई बटालियनें विभिन्न इलाकों में तैनात हैं उनमे से 96 बटा० श्रीनगर में इस कार्य में लगी हुई हैं। इसकी एक कम्पनी डी–96 जदीबल थाने के अन्तर्गत हवल में फिरदोस सिनेमा परिसर में अपना मुख्यालय स्थापित कर डयूटी कर रही है। हुआ यह कि 23 नवम्बर, 2005 को करीब दोपहर के 2:30 बजे दो फिदायीन अचानक भींड से प्रकट हुए और कम्पनी की आउटर पोस्ट पर तैनात गार्ड कमांडर हव० रूघाराम के ऊपर अन्धाधुन्ध फायरिंग एवं ग्रनेड फेंकते हुए आगे भागे। इससे हव० रूघाराम वहीं शहीद हो गया और सिपाही गौतम ठकुरिया बुरी तरह जख्मी। डयूटी पर तैनात दूसरे संतरी ने तुरंत फायरिंग का जबाब दिया परंतु दुर्भाग्य वस कवर फायरिंग की आड़ में आतंकवादी कैम्प परिसर में घुसने में कामयाब हो गये। लेकिन गेट पर तैनात संतरी सिपाही आर.वी. टिंगा ने अदभुत सूझबूझ एवं उच्चकोटि के साहस का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादी पर फायरिंग की

और एक आतंकवादी को जख्मी कर दिया।

परिसर के प्रथम तल पर स्थित बेतार केन्द्र में डयूटी पर तैनात हव० रेडियों आपरेटर सुरेश कुमार ने बटा० मुख्यालय तथा अन्य कम्पनियों के मुख्यालयों को आतंकवादियों के परिसर में घुसने की सूचना दे दी और साथ ही आतंकवादी पर ऊपर से फायरिंग भी करता रहा जिससे आतंकवादी मुख्य बिल्डिगं में घुस नहीं सका। आतंकवादी ने परिसर में खड़ी गाड़ी की ओट ले ली और बिल्डिंग के पीछे की ओर जाने लगा, लेकिन अगले मोर्चे पर सर्तक प्रहरी सिपाही अजय कुमार ने आतंकवादी के ऊपर अंधाधुंध फायरिंग की जिससे एक आतंकी वही ढेर हो गया, परन्तु दूसरा आतंकी आगे भागा, जहाँ डी कम्पनी का हव० सुभाष चन्द्र मोर्चा सभाले हुआ था, पर पीछे से आतंकवादी ने उसके ऊपर फायर कर दिया और वह वही शहीद हो गया। इस आतंकी ने आगे बढकर जी कम्पनी के गार्ड रूम पर भी एक हथगोला फेंका जिससे बल के 4 जवान जख्मी हो गये, इस आतंकवादी ने अन्धाधुन्ध फायरिंग करके गार्ड रूम में घुसने की कोशिश की, इस कार्रवाई में सिपाही पी. वी. चन्द्रन बुरी तरह घायल हो गया जिसकी अस्पताल में बाद में मृत्यु हो गई।

इसी दौरान सिपाही चन्द्रकांत बोरो जो स्वयं निहत्था था, ने दरवाजे के पीछे ओट लेकर अदम्य साहस एवं उच्चकोटि की व्यावसायिक कुशलता तथा कर्तव्य परायणता का अनुकरणीय उदाहरण प्रदर्शित करते हुए अपने प्राणों की परवाह न करते हुए आतंकवादी को पकड़ लिया और उसकी राईफल की वैरल को ऊपर की ओर मोड दिया और अपने सहपाठी लॉस ना० मो० मदीन से आतकंवादी को मारने के लिए कहा लॉस ना० मो० मदीन ने सूझ–बूझ का परिचय देते हुए आतंकवादी पर फायर नहीं किया क्योंकि यदि वह आतंकवादी पर फायर करता तो उसकी गोली अपने ही साथी सि० बोरो को भी लग सकती थी। अतः लॉस ना० मो० मदीन ने चतुराई से काम लेते हुए आतंकवादी के सिर पर अपनी राईफल की वट से वार किया जिससे आतंकवादी बुरी तरह घायल हो गया। इस कार्यवाही में लॉस ना० मो० मदीन की राईफल की बट भी टूट गयी। इसी बीच सिपाही बोरो ने तुरन्त कार्यवाही करते हुए आतंकी की राईफल छुडा ली जैसे ही आतंकवादी ने स्वयं ही ग्रनेड से बिस्फोट करना चाहा उन्होने उसे मार दिया।

क्षेत्र की नाके बन्दी कर दी गयी, अन्य सुरक्षा बलों तथा 96 बटा० की शीघ्र या त्वरित कार्रवाई टीम ने क्षेत्र की सघन जाँच की। घायल कर्मियों को अस्पताल पहुँचाया। इस कार्रवाई में दोनों ही फिदायीन मारे गये तथा उनसे दो एक. के. 56 राईफल, 8 मैग्जीन 7 चाईनीज ग्रनेड, 159 ए. के. राईफल की गोलियां, 2 जाली पहचान पत्र, 2 जाकेट की तरह के पोंच बरामद हुए।

आतंकवादियों के इस खतरनाक मिशन को नाकाम करने में के.रि.पु. बल की 96 बटा० के दो जवान कर्तव्य पथ पर शहीद हुए तथा 5 गम्भीर रूप से घायल। जिनमें से एक की मृत्यु बाद में अस्पताल में हो गयी। यह हैरानी की बात नहीं हैं तो क्या है कि अभी तक किसी भी आतंकवादी ग्रुप ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। घाटी में

ऐसे हमलों की घटनाए प्रायः होती रहती है और हम के.रि.पु. बल वालो से अक्सर पाला पड़ता रहता हैं। और जिस तरह से 96 बटा० के बहादुर जवानों ने बल की गौरवशाली परम्पराओं और अपनी व्यावसायिक कुशलता का परिचय देते हुए आम जनता तथा सरकारी सम्पत्ति को बिना किसी तरह की क्षति पहुँचाए 15 मिनट के अन्दर ही दोनों फिदायिनों को मार कर उनके मनसूबों पर पानी फेर दिया और एक नया इतिहास रचा। इस कार्यवाही के दौरान सिपाही चन्द्र कान्त बोरो, लैस ना० मो० मदीन, सिपाही अजय कुमार, सिपाही आर.वी. टिग्गा, हव० (आर.ओ.) सुरेश कुमार ने जिस बहादुरी व साहस तथा सूझबूझ का परिचय दिया वह एक सच्चा वीर, निडर तथा साहसी सिपाही ही कर सकता है। जम्मू–कश्मीर में शान्ति के लिए किए गये प्रयासों के इतिहास में इन जाबाज बल के जवानों की गाथा सदैव दर्ज रहेगी। यदि किसी तरह वह जीवित आतंकवादी बिल्डिंग के अन्दर घुस जाते तो के.रि.पु बल को भारी नुकसान व आघात पहुँचा सकते थे। सूझ–बूझ और समय पर की गयी कार्रवाई के परिणाम स्वरूप हमारे इन वीर साहसी साथियों ने के.रि.पु. बल की लाज बचाई जिस पर हमें ही नहीं पूरे देश को गर्व है।



23 नवम्बर, *2005* को श्रीनगर के फिरदोस सिनेमा परसिर में हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने वाले *96* बटा० के कामिकों के साथ पुलिस उप महानिरीक्षक *(*परिचालन*)* श्री एस. आर. ओझा एंव बटा० कमाण्डेन्ट श्री राकेश सिंह चौहान आतंकवादियों से बरामद हथियार एवं गोली बारूद के साथ

जम्मू कश्मीर में हुए फिदायीन हमलों के इतिहास में यह एक ऐसी पहली घटना

थी जब किसी फिदायीन को पूरी तरह से हथियार एंव गोली बारूद से लैस अंधाधुंध फायरिंग करते हुए अदंर की ओर जाते समय इतने करीब से जिन्दा पकड़ कर उससे गुत्थम गुत्था लड़ाई की हो और उसे मारा हो। यह सब के.रि.पु. बल के उच्चकोटि के अनुशासन, व्यावसायिक निपुणता, अदम्य साहस, धैर्य, कतर्व्य निष्ठा, फर्ज की खातिर सर्वस्व कुर्बान करने की परम्परा का परिणाम है। आज तक कोई भी फिदायीन बल के परिसर में घुसने के बाद जीवित बचकर नहीं जा सका। इस कार्रवाई में हमारे बहादुर साथी रूघा राम, हव० सुभाष चन्द्र, सिपाही बी.पी. चन्द्रन द्वारा दिया गया बलिदान सदैव स्मरणीय रहेगा। इनकी सहादत हमें हमेशा अपने फर्ज पर सब कुछ बलिदान करने की प्रेरणा देती रहेगी और इन साथियों की कमी भी हमें हमेशा महसूस होगी। मृतक आतंकवादियों की पहचान पाकिस्तानी नागरिक अब्दुल जुबेर और अब्दुल रहमान के रूप में हुई।

इन वीर कार्मिकों द्वारा इस कार्रवाई में प्रदर्शित अदम्य साहस एवं वीरता को मान्यता देते हए बल के महानिदेशक श्री जे के. सिन्हा ने लांस/नायक मोहम्मद मदीन सि० आर० बी० टिग्गा, सि० अजय कुमार और सि० चन्द्र कांत बोरो को समय से पूर्व हवा० के पद पर पदोन्नति की घोषणा करते हुए कहा कि के.रि.पु बल में जब तक ऐसे बहादुर, निडर एवं कर्तव्य पथ पर अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले हमारे वीर जवान रहेगें तब तक कोई भी दुश्मन हमारी शान्ति एवं एकता अखण्डता को खण्डित नहीं कर सकता। यह है देश प्रेम और बलिदान की सर्वोच्च परम्परा का एक अनुकरणीय उदाहरण। हम श्रद्धांजलि देते है और सलाम करते है उन वीर सिपाहियों को जिन्होने वतन की इज्जत और साथियों की हिफाजत में अपने आप को कुर्वान कर दिया, इस महान अभियान में।

के.रि.पु. बल के जाबाजों की अमर शौर्य गाथा

(संसद पर फिदायीन हमले में शहीद हुए वीरों को राष्ट्र की श्रद्धांजलि)



13 दिसम्बर, *2005* को संसद पर हुए फिदायीन हमले में शहीद कार्मिकों को श्रद्धांजलि देते प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह

हर आतंकवादी हमला अपने पीछे कुछ शौर्य गाथाए छोड़ जाता है। इन गाथाओं के नायक और नायिकाएं हमेशा अपने अन्य सहयोगियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहते हैं। यही हुआ था 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद भवन पर हुए आतंकवादी हमले में भी–

इस हमले में कुल मिलाकर सात वर्दीधारी जवान अपनी जान कुर्बान कर वतन के लिए जान देने वाले शहीदों की कतार में शामिल हुए। पाँच जवान फर्ज को अंजाम देते हुए शहीद हुए तो बाकी इसलिए गोलियों की बौछार झेल गये ताकि बाकी लोग सुरक्षित रह सके। पाँच शहीद हुए वर्दीधारियों में एक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 88 महिला बटालियन की कांस्टेबल कमलेश कुमारी थी। बाकी जवान दिल्ली पुलिस के श्री नानक चन्द, रामपाल सिंह, धनपाल सिंह, ओम प्रकाश, और विजेयन्द्र सिंह सहित संसद की सुरक्षा में तैनात संसद के वॉच एण्ड वार्ड के सुरक्षा कर्मी जे.पी.यादव और मातबर सिंह की जान चली गई थी। सी.पी.डबल्यू डी. का माली देशराज भी आंतकवादियों की गोली से शहीद हुआ था। इलेक्ट्रोनिक मीडिया का कर्मचारी विक्रम सिंह बिष्ट भी हमले में घायल हो गया जिसकी बाद में मृत्यु हो गई। इस तरह इस हमले में कुल 9 जवान व कर्मी शहीद हो गये थे। कमलेश कुमारी इस घटना में शहीद हुई अकेली महिला थी। उन्हें श्रेय जाता है कि उन्होंने अपनी जान पर खेलकर इस हमले के बारे में संसद परिसर में तैनात अन्य सुरक्षा बलों को सचेत किया।

13 दिसंबर, 2001 को हुआ यह हादसा कई कारणों से हमेशा याद किया जाता रहेगा। याद किये जाने वाले कारणों में से एक होगा, संसद परिसर में तैनात के.रि.पु. बल जवानों की तुरंत कार्रवाई जिसने एक बड़े हादसे को टाल दियां, अगर आतंकवादी अपने मकसद में कामयाब हो जाते तो शायद दिल्ली के 13 दिसंबर को न्यूयार्क के 11 सितंबर बनने में ज्यादा देर नहीं लगती। के.रि.पु. बल के जवानों की तत्परता इस कदर थी कि 14 सितम्बर 2001 के हिन्दुस्तान अखबार ने "... और यह बिना कमीज पहने राईफल लेकर निकल पड़ा" शीर्षक से अगले दिन खबर छापी–

"सच में ही सीआरपीएफ देश की शान है। जिस तरह जवानों ने आज अपनी जान पर खेलकर देशभक्ति की भावना का परिचय दिया है, उससे साबित हो गया है कि जब तक ऐसे सपूत हैं देश को कोई खतरा नहीं हैं यह कहना है संसद भवन के एक कर्मचारी का जिसने संसद भवन में हुए खूनी खेल को अपनी आंखों से देखा था।

उक्त कर्मचारी ने अपना नाम न छापने के अनुरोध पर बताया कि वह परिसर में ही खड़ा था कि अचानक गोलियां चलने की आवाज सुनाई दी। इसके बाद दिल्ली पुलिस के सुरक्षाकर्मियों ने उसे कहीं छिप जाने को कहा। तभी सीआरपीएफ का एक जवान राईफल लेकर बाहर की ओर लपका। हैरत की बात यह थी कि उसने मात्र पेंट ही पहन रखी थी। दिलेरी के साथ उसने आतंकियों का सामना करना शुरू कर दिया।

उक्त कर्मचारी ने सीआरपीएफ जवानों की दिल खोल कर प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस तरह सीआरपीएफ के जवानों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए आतंकियों पर जवाबी हमला किया, उससे देश के प्रत्येक नागरिक को सबक लेना चाहिए। उसने जवानों की तारीफ करते हुए कहा कि इस वाकये ने साबित कर दिया है कि जब तक देश में ऐसे सपूत हैं देश की आन को कोई खतरा नहीं हो सकता। संसद भवन में माली का काम करने वाले मनोहर लाल शर्मा भी सीआरपीएफ के जवानों के प्रति नतमस्तक दीखे। उन्होंने बताया कि इन जवानों ने देशभक्ति की एक अनूठी मिसाल कायम की है, जिस पर प्रत्येक भारतवासी गर्व या फर्क कर सकता है। उन्होंने बताया कि किसी भी जवान ने अपने प्राणों की रत्ती भर भी परवाह नहीं की और आतंकियों को ढेर कर दिया। श्री शर्मा के अनुसार यदि सीआरपीएफ के जवान तत्परता न दिखाते तो इस हमले के परिणाम और भी गम्भीर होते।

एशियन ऐज में छपी खबर के मुताबिक प्रत्यक्षदर्शी उद्यान विभाग का एक कर्मचारी बाबू राम कहता है, जब गोलियां चली, तो मैं और मेरे साथी अपनी जान बचाने के लिए भागे। देशराज जो पौधों को पानी दे रहा था, गोलियों से छलनी हो कर वहीं ढेर हो गया। सीआरपीएफ के जवानों ने तुरंत फायरिंग का जवाब दिया और आतंकवादियों को मार गिराया, इससे पहले कि वो अपने मिशन में कामयाब होते। 14 दिसम्बर, 2001 के अखबार के.रि.पु. बल के जवानों की बहादुरी के कारनामों से भरे पड़े हैं। हिन्दुरस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ इण्डिया, इंडियन एक्सप्रेस, स्टेटसमैन, पायनियर, जागरण, नवभारत टाइम्स और दूसरे लगभग हर अखबार ने के.रि.पु. बल के जवानों की तुरन्त कार्रवाही और प्रजेंस ऑफ माइंड की भरपूर तारीफ की। जवानों

की जरा सी चूक भारतीय लोकतंत्र की चूलें हिला सकती थी ये बात, कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता और देश सेवा की शपथ से बंधे जवान ही जानते हैं। यही वजह है कि बिना एक पल गंवाये किसी भी खतरे के सामने कूद पड़ने के उनके प्रशिक्षण ने ऐन वक्त पर काम किया और चार दहशतगर्दों को संसद भवन के अंदर कोई कहर ढाने से पहले ही ढेर कर दिया था।



यू.पी.ए. की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गाँधी संसद पर हुए फिदायीन हमले में शहीद हुए कार्मिकों को *13* दिसम्बर *2005* को श्रद्धांजलि देती हुई



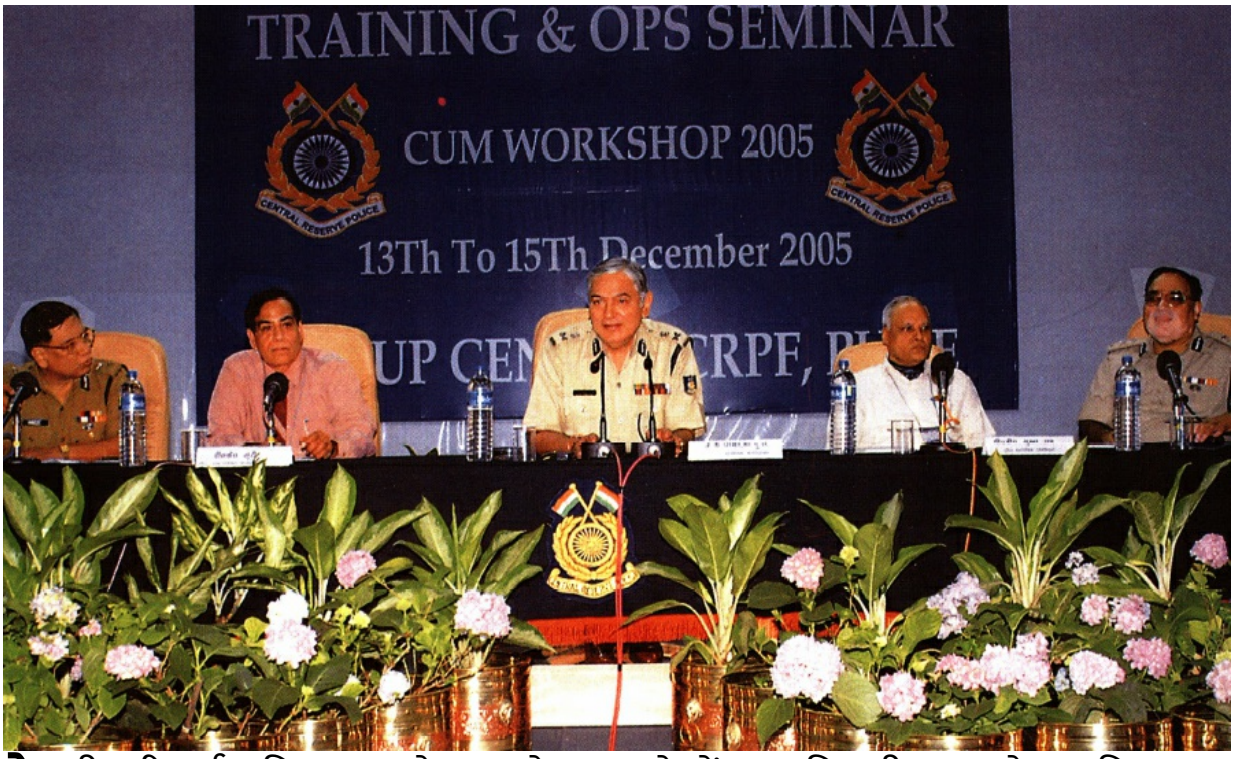
संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने वाले के.रि.पु. बल के जवान

दुश्मन के इरादे चाहे जो भी हों, मन्सूबे बांधने के लिए वह स्वतंत्र है, किन्तु उनकी हर मन्सूबा हर इरादा हमारे जवानों के फौलादी वतनपरस्ती के जज्बे से टकराकर ढेर हो जाएगा। देश आश्वस्त रहे उसकी हिफाजत का जिम्मा के.रि.पु. बल का है, और इस जिम्मे को बल के जवान अपनी जान पर खेल कर भी पूरा करेंगें। उसी तरह जिस तरह 13 दिसम्बर को संसद भवन के गेट नं. (1) पर 33 बटालियन के हेड कांस्टेबल वाई.बी.थापा और कांस्टेबल सुखबिन्दर सिंह ने किया, आत्मघाती आतंकवादी को ढेर कर। जिस तरह अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह गेट नं० 5 पर 23 बटालियन के कांस्टेबल श्यामबीर सिंह और कांस्टेबल विजय बहादुर सिंह ने किया दूसरे आतंकवादी को ढेर कर। जिस तरह गेट नं० 12 पर संतोष कुमार, कांस्टेबल कुलवंत सिंह, कांस्टेबल मफतबल, कांस्टेबल सत्यवान और कांस्टेबल काली मैथ्यू ने किया तीन आतंकवादियों को ढेर कर।

13 दिसंबर, 2001 को भारत की संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने वाले जाबाजों को देश के इतिहास में सदैव श्रद्धा एवं सम्मान के साथ याद किया जाता रहेगा। जिन्होने लोकत्रंत के सर्वोच्च मन्दिर को अपने उच्चकोटि के पराक्रम एवं परिचालनिक दक्षता का प्रदर्शन करते हुए अपवित्र होने से बचाया तथा हमले का

दुःसाहस करने वाले आतंकवादियों को मार गिराया। इस हमले के दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों एवं फिदायीन के बीच आधा घंटे तक गोलीबारी हुई और बल के जवानों ने पाँचों आतंकवादियों को संसद परिसर के बाहर ही मार गिराया। हालाकि इस हमले में उनकी साथी महिला सिपाही कमलेश कुमारी भी कर्तव्य की बेदी पर शहीद हो गयी। सिपाही कमलेश कुमारी अपनी ड्यूटी स्थान पर डटी रही और अपने आस–पास ड्यूटी पर तैनात अन्य सुरक्षा बल के जवानों को उग्रवादियों के आने की खबर दी। इस कार्रवाई में शहीद **कमलेश कुमारी, सिपाही डी. संतोष कुमार, हवलदार वाई. बी. थापा, सिपाही श्याम बीर सिंह तथा सुखविन्दर सिहं संसद भवन में उग्रवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में प्रदर्शित तत्परता, अदम्य साहस एवं कर्तव्य निष्ठा का उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए कमलेश कुमारी को महामहिम राष्ट्रपति ने वर्ष 2002 में गणतंत्र दिवस पर देश का सबसे बड़ा नागरिक सम्मान "अशोक चक्र" तथा अन्य बल के कार्मिकों को शौर्य चक्र प्रदान किया।** जब भी आतंकवाद के विषय में चर्चा होगी तब फर्ज पर कुर्बान होने वाले लोकत्रंत की गरिमा कायम रखने वाले इन वीर साथियों को याद किया जायेगा। 13 दिसम्बर को प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, लोक सभा, राज्य सभा, अध्यक्ष सहित सभी बड़े–बड़े नेताओं, बुद्धि जीवियों सहित देश प्रमियों ने फर्ज परस्त बहादुरों को याद किया, जो हमारे बीच नहीं रहे उन्हे श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

प्रशिक्षण और परिचालन सेमिनार सह कार्यशाला–2005



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ग्रुप केन्द्र, पुणे में चार दिवसीय 13 से 16 दिसम्बर, 2005 तक वार्षिक प्रशिक्षण एवं परिचालन सेमिनार सह कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें देश के सुदूर क्षेत्रों से बल के कार्मिकों, अधीनस्थ एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला को आयोजित करने का उद्देश्य प्रशिक्षण संस्थाओं में चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं वास्तविक युद्ध क्षेत्र जहाँ संस्थागत प्रशिक्षण का उपयोग होता है एवं विद्यमान में प्रदान किए जा रहे प्रशिक्षण में अन्तर की पहचान कर दोंनों में अन्तर को कम करने के लिए किया गया था।

अपने उद्घाटन उद्बोधन में बल के महानिदेशक श्री जे० के० सिन्हा ने जम्मू एवं कश्मीर में बल की गौरवशाली उपलब्धियों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि हमें अपने विरोधियों (उग्रवादियों) की कार्यप्रणाली को समझते हुए उनके तोड़ के लिए सामरिक तौर–तरीके इजाद कर कारगर तरीके से कार्यान्वित करने के लिए सत्त प्रशिक्षण एवं प्रयास की आवश्यकता है। अयोध्या एवं दिल्ली में विस्फोटों की घटनाएं इस बात की द्योतक हैं कि यदि हम जागरूक व तैयार न रहे तो आतंकवादी कभी–भी कहीं भी वार कर सकते हैं। महानिदेशक ने वामपंथी छापामारों को अन्य उग्रवादियों से ज्यादा खतरनाक बताते हुए कहा कि ये नक्सलवादी संसाधनों की कमी होते हुए भी सुरक्षा बलों की कार्य प्रणाली तथा अपनी हर असफलता का विश्लेषण कर सामरिक नीति में परिवर्तन करते रहते है। यदि ऐसा विरोधी जब हमारे सामने हो तो हमें अपनी सामरिक नीति, परिचालन प्रणाली के तौर तरीकों को भी निश्चित रूप से बदलना होगा।

कार्यशाला के विषय वस्तु को ही अपने प्रस्तुतीकरण में हाईलाइट करते हुए श्री

सी०वी० मैथ्यू, उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण) ने बताया कि अपनी कार्यकुशलता एवं प्रभावशीलता के लिए जानी जाने वाली केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल हालांकि अपने प्रशिक्षण पर लगभग अठहत्तर करोड़ छयालीस लाख तेरह हजार रूपये व्यय करता है, फिर भी इसका परिचालन कौशल के विकास में कोई खास फायदा नहीं हो रहा है। इसका एक कारण यह भी है कि विभिन्न कोर्सों के लिए डिटेल किए गये कार्मिकों में अभिरूचि की कमी, शारीरिक कोर्स पूरा किए बिना कोर्स से वापस जाने की कार्मिको की प्रवृति है। इसके साथ ही प्रशिक्षणपरांत प्रशिक्षण में सुधार हेतु निर्मित स्थायी आदेश संख्या 11/88 में निर्दिष्ट फीडबैक प्रणाली का पूर्णतः पालन न होना।

हम रोटेशनल ट्रेनिंग को भी तैनाती की जरूरतों के अनुरूप पूरा नहीं कर पाते है और जहाँ हमें इसके लिए समय मिलता भी है तो उसमें रूचि नहीं दिखाते है। चलचित्र के एक छोटे हिस्से को प्रदर्शित करते हुए श्री मैथ्यू ने संस्थागत एवं जमीनी सिखलाई के बीच अन्तर को पाटने का आह्वान किया एवं इसके लिए कुछ सटीक तरीके भी सुझाए।

उच्चकोटि की अपने परम्परा के अनुरूप कार्यशाला सह सेमिनार में कम्प्यूटर निर्मित कई आन्तरिक प्रस्तुतीकरण दिए गये। श्री पी.एस. राजौरा, कमाण्डेन्ट 73 बटा० ने अपने प्रस्तुतीकरण में 'फील्ड प्रशिक्षण–आपरेशनल प्रवीणता का आधार' विषय पर प्रशिक्षण के वातावरण, निर्माण, प्रेरणात्मक पहलू एवं सतत् प्रशिक्षण पर बल दिया, वहीं प्रशिक्षण में रिसर्च एवं डेवलपमेंट की महत्वता पर बल देते हुए निदेशक, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी श्री डी०एन०एन बिष्ट ने आन्तरिक सुरक्षा अकादमी द्वारा प्रशिक्षण के क्षेत्र में की जा रही पहल पर विस्तार से चर्चा की एवं वर्ष 2006 की अकादमी की प्राथमिकताओं के बारे में बताया। पुलिस उप महानिरीक्षक, अनंतनाग श्री जेड० एफ० खान ने अपने प्रस्तुतीकरण में इस बात पर बल दिया कि एक बटा० द्वारा किये जाने वाले सभी कार्य वास्तव में प्रशिक्षण के ही विषय हैं अतः उनमे गलतियों का आकलन कर उन्हें दूर करने के उत्पाद उन्मुख चक्र की रचना कर लेनी चाहिए। पुलिस उप महानिरीक्षक, रायपुर श्री गौतम सवांग ने अपने प्रस्तुतीकरण में वामपंथी उग्रवादियों के संगठनात्मक ढांचे, उनकी कार्य–प्रणाली व नापाक इरादों पर प्रकाश डालते हुए, यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि जिस तैयारी एवं समझदारी से उपद्रवी अपने को संगठित करते जा रहे हैं, अगर इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया तो यह सभी के लिए घातक हो सकता है। उन्होंने इन वामपंथियों के विरूद्ध अभियानों मे कुछ तरीके अपनाने का सुझाव भी दिए।

कार्यशाला में केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज–III में वामपंथी उग्रवादियों के विरूद्ध आपरेशन के सटीक तरीकों को दृश्य–श्रवण एवं वाह्य प्रस्तुतीकरण द्वारा प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया। संस्थान ने यह दिखाने का प्रयास किया कि पूर्व में घटित आपरेशनल गलतियों को किस प्रकार से हम अच्छे अंजाम तक पहुँचा सकते हैं।



प्रशिक्षण सेमिनार के दौरान वित्तीय मामलों में मितव्ययता बरतने वाले सर्वश्रेष्ट ग्रुप केन्द्र की ट्राफी ग्रुप केन्द्र, पुणे को मिली ।ग्रुप केन्द्र, पुणे के कमाण्डेन्ट श्री जसबीर सिंह सन्धू को ट्राफी प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा



ग्रुप केन्द्र, पुणे में आयोजित प्रशिक्षण सेमिनार के समापन पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते स्थानीय कलाकार

कार्यशाला के दौरान विभिन्न सेक्टरों द्वारा प्रायोजित कई विषय आपसी सहमति के लिए रखे गये इसमें निम्न मुख्य थे:–

1. प्रशिक्षण संस्थाओं को हथियार/गोला/बारूद का आवंटन।
2. ड्यूटी बटालियनों के लिए एक और एम्बुलेंस।
3. जवानों के लिए आसूचना संबंधी कोर्स।
4. बटालियनों को माइन्स से बचाव करने वाले वाहन।
5. सीधे नियुक्त अधिनस्थ अधिकारियों/अण्डर आफिसर (मं०) कार्मिकों के लिए कम्प्यूटर शिक्षा।
6. छत्तीसगढ़ में तैनात बटालियनों के लिए माइन्स खोजी यन्त्र।
7. बल को उग्रवाद से लड़ने के लिए और अधिक तैयार करना।

8. विद्रोहियों के संचार तंत्र को समझने पकड़ने, एवं रोकने की क्षमता विकसित करना।

9. थर्मल इमेजर कंपनी स्तर तक उपलब्ध कराना।

10. प्रशिक्षण संस्थान में पदस्थापन की अवधि पदोन्नति के लिए वैध मानना।

11. प्रशिक्षण भत्ता में बढ़ोत्तरी।

12. 5.56 इन्सास राइफल खासकर उसकी मैगजीन में कमी।

13. कर्मियो के लिए हल्के जूतों की खरीद।

14. सभी के लिए हल्के बुलेट प्रूफ जैकेट।

कार्यशाला के दौरान कई मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई जिसमें नवारक्षियों को ऑपरेशनल क्षेत्रों पर तैनाती से पूर्व प्रशिक्षण, बल की 25 प्रतिशत बटालियनों को कठिन प्रति विद्रोहात्मक ऑपरेशन से हटाकर प्रशिक्षण के लिए रखना इत्यादि शामिल था। विभिन्न कोर्सों के पाठ्यक्रम में सुधार संबंधी सभी प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों की बैठक में भी कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई जिसके बाद विभिन्न कोर्सों के पाठ्यक्रमों में आज के परिप्रेक्ष्य में कई विषयों को समायोजित करने पर सहमति हुई।

कार्यशाला की समाप्ति पर बल के महानिदेशक ने अपने समापन भाषण में कहा कि परिचालनिक एवं व्यावसायिक कुशलता का सारा दारोमदार मानव संसाधन पर ही निर्भर है जिसे प्रशिक्षण से ही पूरा किया जा सकता है। ऐसे में प्रशिक्षण को बल के प्रशिक्षण संस्थानों तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता। आज यह आवश्यक है कि जहाँ हम प्रशिक्षण संस्थानों में अपने सर्वश्रेष्ठ कार्मिकों को प्रशिक्षण पर भेजें वहीं परिचालनिक कुशलता प्राप्त करने के लिए यूनिटों में भी प्रशिक्षण को एक दैनिक प्रक्रिया के रूप में शामिल करे। इसके लिए आवश्यकता है उत्प्रेरणा, लगन एवं समर्पणभाव की।

पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री सी०वी० मैथ्यू ने कार्यशाला के सफल संचालन के लिए सभी आगुन्तक अधिकारियों व कार्मिकों का आभार प्रकट किया और आशा व्यक्त की कि कार्यशाला मे लिए गये निर्णयों से बल की कार्यक्षमता एवं परिचालनिक दक्षता में प्रभावी सुधार लाने में मदद मिलेगी।

54वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलीट चैम्पीयनशिप–2005



खेल कूद–क्रीड़ा एक ऐसा विषय है जिसमें व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक सभी पहलूओं के साथ–साथ शान्ति पूर्वक स्वभाव, साम्प्रदायिक सहनशीलता तथा आपसी भाईचारे आदि सभी प्रकार की अन्तः शक्तियों एवं क्षमताओं का समावेश होता है। खेल कूद वर्दीधारी कार्मिकों में शारीरिक चुस्ती–फुर्ती, आपसी सहचारा एंव दल गत भावना की प्ररेणा भी जागृत करते हैं। और ऐसे सभी क्रियाकलाप सरकार के संरक्षण में आयोजित किये जाते हैं। पुलिस बल के कार्मिक अपने प्रदर्शन से अपनी यूनिट, फोर्स तथा देश का नाम रोशन करते हैं। पुलिस एथलिट चैम्पीयनशिप पुलिस बलों के एथलिटों में उनकी प्रतियोगी प्रतिभा को दिखाने का एक अवसर प्रदान करती है ताकि वे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय चैम्पीयनशिपों में और कड़ा मुकाबला पूरे जोश और विश्वास के साथ कर सके। साथ ही ऐसी प्रतिस्पर्धाएं पुलिस कार्मिकों को अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने एवं खेल भावना विकसित करने तथा प्रतियोगियों के बीच आपसी मेल जोल बढ़ाने के अवसर प्रदान करती हैं।

क्रीड़ा पुलिस बलों के क्रियाकलापों का एक अहम हिस्सा हैं, क्रीड़ा से स्वस्थ्य शरीर तथा स्वस्थ्य मस्तिष्क का विकास होता है। इन चैम्पीयनशिपों को आयोजित करने का उद्देश्य पुलिस कार्मिकों में से प्रतिभावान एवं होनहार खिलाड़ियों को तलाशना है।

हर वर्ष अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप आयोजित करने का उद्देश्य पुलिस बल के कार्मिकों को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसा मंच प्रदान करना हैं कि वे अपनी क्षमताओं का पूरी तरह से प्रदर्शन कर सकें। यह चैम्पीयनशिप खिलाड़ियों में अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने के साथ–साथ उन्हे एक ऐसा प्लेट फार्म

भी प्रदान करती हैं जहाँ एक दूसरे के साथ–साथ रहकर अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सके एक दूसरे को समझ सके ताकि उनमें सहोदर तथा भाई चारे की भावना पैदा हो।

अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप का आयोजन पहली बार उड़ीसा में 1951 में हुआ था। तभी से लेकर आज तक हर वर्ष इस प्रतियोगिता का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है। इस प्रतिस्पर्धा में देश के सभी राज्य व केन्द्र शासित तथा केन्द्रीय पुलिस बलों के खिलाड़ी भाग लेते हैं। यह चैम्पीयनशिप पुलिस कार्मिकों में खेल भावना पैदा करने के साथ–साथ आपसी भाई चारे की भावना भी जागृत करती हैं। तथा इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बल मिलता है। अखिल भारतीय पुलिस प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वाले अनेको पुलिस के खिलाडियों ने विश्व पुलिस खेलों, कॉमन वैल्थ गेम, एशियन गेम में अपनी खेल प्रतिभा का उम्दा प्रदर्शन कर अनेको पदक जीते हैं और देश का गौरव बढ़ाया है। अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप ने के.रि.पु. बल मे भी गुरूवचन सिंह रंधावा, हरीश चन्द, आर. एस. बल, परमजीत सिहं, जिंसी फिलिप्स, प्रवीन कुमार, सुनीता रानी, मंजीत कौर आदि जैसे विश्व स्तर के चोटी के खिलाड़ी पैदा किए जिन पर आज भी के.रि.पु. बल ही नहीं पूरा देश गर्व करता है।



बल के माहनिदेशक श्री जे. के. सिन्हा अखिल भारतीय पुलिस एथलीट चैम्पीयनशिप, *2005* के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि दिल्ली के उप राज्यपाल श्री बी. एल. जोशी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।

हालांकि अखिल भारतीय पुलिस खेलों का आयोजन हर वर्ष होता है और इनके आयोजन की जिम्मेदारी हर वर्ष अलग–अलग राज्य पुलिस बलों तथा केन्द्र पुलिस बलों को दी जाती हैं। अखिल भारतीय पुलिस खेल प्रतिस्पर्धाओं में अनेकों खेलों को शामिल किया गया हैं जिसमें एथलेटिक सबसे महत्वपूर्ण एवं कड़ी प्रतिस्पर्धा है। इस प्रतिस्पर्धा में पुलिस बलों के महिला तथा पुरूष दोनों ही वर्ग के खिलाड़ी भाग लेते हैं। एथलीट प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वाले खिलाड़ी का मनोबल ऊँचा होने के साथ–साथ उसका स्टेमना भी सुदृढ़ होना जरूरी है। वैसे तो केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कई खेलों की अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप हर वर्ष आयोजित कराता रहा हैं, लेकिन एथलेटिक चैम्पीयनशिप आयोजित करने का अवसर 19 वर्ष के बाद इस वर्ष ही मिला है। अखिल भारतीय खेल प्रतिस्पर्धा आयोजित कराने की जिम्मेदारी अखिल भारतीय पुलिस खेल संघ की है। इस संघ के अध्यक्ष आसूचना ब्यूरो के निदेशक होते हैं तथा अन्य पुलिस बलों तथा खेल प्राधिकारों के प्रतिनिधि इसके सदस्य होते हैं। किसी प्रतिस्पर्धा को आयोजित कराने की जिम्मेदारी संघ की समिति तथा एथलेटिक फेडरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा निर्धारित की जाती है। अतः 23 से 26 नवम्बर, 2005 तक आयोजित हुई 4 दिवसीय अखिल भारतीय पुलिस एथलेटिक चैम्पीयनशिप आयोजित कराने की जिम्मेदारी भी केन्द्रीय पुलिस बल को इसी परिपेक्षय में दी गयी और बल ने इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया।

4 दिवसीय 54वीं अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप का शुभारम्भ दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में हुआ दिल्ली के उप राज्यपाल महामहिम श्री बी.एल. जोशी ने इसका उद्घाटन किया। इस एथलिट चैम्पीयनशिप में विभिन्न राज्य तथा केन्द्रीय पुलिस बलों की 24 टीमों के 1250 श्रेष्ठ एथेलीटों ने भाग लिया। दिल्ली के उप राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी ने चैम्पीयनशिप का उद्घाटन करते हुए कहा कि केरिपुबल द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता से दिल्ली में होने वाले आगामी कॉमन वैल्थ खेलों को आयोजित करने में काफी मदद् मिलेगी। श्री जोशी ने आगे कहा कि सुरक्षा बलों में क्रीडा का माहौल बल कार्मिक में अनुशासन बनाये रखने तथा भाई चारे की भावना पैदा करने में सहायक होता है। केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि खिलाडियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ऊँचाइयों तक पहुंचाने के लिए सभी सुविधाएं मुहैया कराई जायेगी। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि अभी बल में खेल संस्कृति का माहौल पैदा किया जाएगा। जिससे खिलाडियों के सर्वागीण विकास में मदद् मिलेगी।

54वीं अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप के पहले दिन के खेल में केरिपुबल की महिला धावक आशिक बीवी ने 100मी0 की हर्डल दौड़ के फाइनल में 14.11 सैकेण्ड में दूरी तय कर अनिशा के. विजयन के 2004 के पुराने रिकार्ड 14.61 सैकेण्ड को तोड़ा। केरिपुबल की ही अनिशा के. विजयन इस स्पर्धा में दूसरे स्थान पर रही जबकि तमिलनाडु पुलिस की वाई. सी. जया तीसरे स्थान पर रहीं। 200मी0 की महिला दौड़ के फाइनल में वी. टी. सिन्धु ने 24.46 सैकेण्ड में पूरी कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया जबकि पजांब पुलिस की मंजीत कौर तथा केरिपुबल की मीरा सिंह को

रजत एवं कांस्य पदक से सन्तोष करना पड़ा।

800मी0 की पुरूष दौड़ में केरिपुबल के संजीव कुमार ने 1.51 सैकेण्ड में पूरी कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। पंजाब पुलिस के निशान सिंह को दूसरा तथा सीमा सुरक्षा बल के नगेन माझी को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। 800 मी0 की महिला फाइनल दौड़ 2.11 सैकेण्ड में पूरी कर केरिपुबल की एम.सी. सलमा ने पहला स्थान प्राप्त किया जबकि उड़ीसा पुलिस की सरस्वती चन्द दूसरे तथा पजांब पुलिस की कंवलजीत कौर को तीसरा स्थान ही हाथ लगा। इस तरह पहले दिन के खेल में केरिपुबल की महिला एथेलीट जीत पर जीत दर्ज करती गयीं।



***54*वीं अखिल भारतीय पुलिस चैम्पीयनशिप में केरिपुबल की *(*महिला*)* एथलीट आशिक बीबी अपनी क्षमता का प्रदर्शन करती हुई।**



केरिपुबल की एथलीट मरियान सी थारीयान ऊँची छलांग लगाते हुए।

शोटपुट पुरूष वर्ग में पंजाब पुलिस के नवप्रीत सिंह ने 18.20 मी0 फैंक कर अपनी टीम को स्वर्ण पदक दिलाया, केरिपुबल के मुकेश सिंह ने 17.52 मी0 तथा पजांब पुलिस के कुलविन्दर सिंह ने 17.3 मी० फेंक कर क्रमशः रजत तथा कांस्य पदक जीते।

महिलाओं की ऊंची कूद में केरिपुबल की मरियान सी. थारीयान ने 1.72 मीटर ऊँची छलागं लगाकर बल को स्वर्ण पदक दिलाया जबकि केरिपुबल की दिव्या श्री जे. आर. ने 1.69 तथा दीपा ए.के. ने 1.66 मी0 ऊँची छलांग लगाकर रजत तथा कांस्य पदक जीता। इस तरह इस प्रतिस्पर्धा में तीनों पदक केरिपुबल की महिला खिलाडियों के ही नाम रहे। 1999 में आयोजित अखित भारतीय पुलिस खेलों में महिलाओं की ऊँची कूद में केरिपुबल की दीपा ए.के. ने 1.76 मी0 की जम्प लगाकर रिकार्ड बनाया था। पहले दिन चली खेल प्रतिस्पर्धाओं में पुरूष वर्ग में केरिपुबल की टीम ने सर्वाधिक अकं 41 बनाए जबकि पंजाब पुलिस ने 25 तथा सीमा सुरक्षा बल ने 18 अंक प्राप्त किये। इसी प्रकार महिला वर्ग में भी केरिपुबल की टीम ने 63 अंक बनाकर सबसे पहला स्थान प्राप्त किया जबकि पंजाब पुलिस ने 25, बिहार पुलिस ने 5 अंक उडीसा पुलिस ने 5 अंक तथा तमिलनाडु पुलिस ने भी 5 अंक प्राप्त किये।

दूसरे दिन की एथलीट प्रतियोगिताओं में भी केरिपुबल का दबदबा बना रहा और केरिपुबल के एथलीट जोसफ जी अब्राहम ने 400 मी0 पुरूष हर्डल दौड़ 50.91

सैकेण्ड में पूरी कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। जोसफ जो अब्राहम ने इस स्पर्धा में 1998 में पंजाब पुलिस के साहब सिंह के 51.52 सैकेण्ड के रिकार्ड को तोड़ा। इस स्पर्धा में पंजाब पुलिस के गुरूप्रीत सिंह तथा रनजोद सिंह दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहे। इस एथलीट चैम्पीयनशिप में केरिपुबल के एथलिटों ने ही नहीं अन्य पुलिस बलों के एथलिटों ने भी कई नये रिकार्ड बनाये। सीआईएसएफ के डी.वी. गिरीस कुमार ने 4.90 मी0 में नया रिकार्ड कायम किया जबकि इस स्पर्धा में केरिपुबल का समशेर सिंह तथा बीएसएफ के सुभाष चन्द्र को दूसरा तथा तीसरा स्थान ही मिला।



200 **मीटर की फाइनल दौड़ की विजेता केरिपुबल की महिला एथलीट वी.टी. सिन्धु को स्वर्ण पदक प्रदान करते दिल्ली के उप राज्यपाल श्री बी. एल. जोशी**

पहले दिन की 100 मी0 की महिला हर्डल दौड़ में रिकार्ड बनाने वाली केरिपुबल की आशिक बीवी ने दूसरे दिन के खेल में 400 मी० की दौड़ 54.59 सैकेण्ड में पूरी कर पहला स्थान प्राप्त किया। पंजाब पुलिस की मंजीत कौर तथा कंवलजीत कौर को क्रमश: दूसरा तथा तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

10 किमी0 महिला वाक प्रतिस्पर्धा में केरिपुबल की संध्या के. जे. तथा रवीना अंटिल ने पहला एवं दूसरा स्थान प्राप्त किया। पजांब पुलिस की संजीव कौर इस स्पर्धा में तीसरा सथान ही प्राप्त कर सकी।

10000 मी० की पुरूष दौड के फाइनल में पजांब पुलिस के अमन सैनी ने स्वर्ण पदक जीता। केरिपुबल के एथलीट उपेन्द्र दूसरे स्थान तथा सीमा सुरक्षा बल के पूर्ण

एन. के. ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसी तरह 1500 मी0 की महिला दौड़ में सलमा एम तथा दीपिका विश्वास ने बल के विजय अभियान को जारी रखते हुए इस प्रतिस्पर्धा में पहला तथा दूसरा स्थान प्राप्त किया। पंजाब पुलिस की विनीता ठाकुर तीसरे स्थान पर रही। महिला चक्का फेंक में केरिपुबल की सरोज ने स्वर्ण पदक जीता जबकि पंजाब पुलिस की स्वर्णजीत कौर तथा बलजीत कौर को रजत तथा कास्यं पदक पर ही संतोष करना पड़ा। दूसरे दिन के खेल में भी केरिपुबल के एथलीट सबसे अधिक अंक अर्जित कर अंक तालिका में पुरूष तथा महिला दोनों ही वर्ग में आगे रहे।

तीसरे दिन के खेल में केरिपुबल की अनीशा के विजयन ने महिला ट्रिपल जम्प में 13.31 मी० लम्बी छलांग लगा कर इस स्पर्धा में नया रिकार्ड रचा। अनीशा ने 2004 के अपने ही 12.84मी0 के रिकार्ड को तोडा। इससे पूर्व अनीशा ने लम्बी कूद में 6.13 मी0 कूद कर पुलिस खेलों में एक नया इतिहास रचा था। इस रिकार्ड को कायम करने के बाद अनीशा ने कहा कि इस वर्ष के रिकार्ड को देखने से मुझे लगता है कि मैंने अपनी कुशलता में काफी अच्छा सुधार किया है। एवं अन्तर्राष्ट्रीय तथा कॉमन वैल्थ खेलों में और बेहतर छलागं लगाकर उत्कृष्ट प्रदर्शन करूगी। महिला पोल वाल्ट स्पर्धा में बल की दीपा चौधरी ने 3.40 मी0 छलागं लगाकर पिछली पुलिस स्पर्धा के रिकार्ड को तोडा। पजांब पुलिस की कर्मजीत कौर दूसरे स्थान पर रही जबकि केरिपुबल की ही बरनानी राय को तीसरा स्थान मिला।

प्रसिद्ध मैराथन दौड़ के पुरूष वर्ग के फाइनल में सीमा सुरक्षा बल के होशियार सिंह ने 2.24.01 सैकेण्ड में यह दूरी तय कर पहला स्थान प्राप्त किया जबकि केरिपुबल के बालाराम दूसरे स्थान पर रहे।

400 मी0 हर्डल महिला दौड़ में केरिपुबल की आशिक बीवी ने 59.20 सैकेण्ड में यह दूरी तय कर पहला स्थान प्राप्त किया। इसी प्रतिस्पर्धा में 400 मी० की दौड़ में भी आशिक बीवी ने पहला स्थान प्राप्त किया था। इस तरह केरिपुबल के पुरूष एथलिटों के साथ-साथ बल की महिला एथलिटों ने भी अपना वर्चश्व बनाये रखा और एक के बाद एक पदक जीतती गई।

110 मी0 पुरूष हरडल दौड़ में पजांब पुलिस के गुरूप्रीत सिंह ने 14.16 सैकेण्ड में यह दूरी पार कर सीमा सुरक्षा बल के हरविन्दर तथा केरिपुबल के धंमपाल को परास्त किया। 1500 मी0 की पुरूष फाइनल दौड़ में केरिपुबल के धावक टी. एम. संजीव ने 3.57.87 सैकेण्ड में तयकर पहला स्थान प्राप्त किया। सीमा सुरक्षा बल के जी. जी. थोमस तथा मनोज कुमार दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहे।

तीसरे दिन की स्पर्धा में पुरूष तथा महिला एथलिटों ने पहले दिन की तरह पदक तालिका में सबसे अधिक अकं अर्जित किए। अकं तालिका में पजांब। पुलिस पुरूष वर्ग दूसरे तथा सीमा सुरक्षा बल तीसरे स्थान पर रहे, अन्तिम तथा चौथे दिन भी केरिपुबल के एथलिटों का बोलबाला रहा और केरिपुबल की टीम ने 4X100मी0 की रिले महिला दौड़ 46.57 सैकेण्ड में तय कर एक नया कीर्तमान स्थापित किया। तमिलनाडु पुलिस तथा पश्चिमी बगांल की महिला टीमें इस प्रतियोगिता में दूसरे तथा

तीसरे स्थान पर रहीं।



54वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलीट चैम्पीयनशिप के दौरान अपनी क्षमता का लम्बी कूद में प्रर्दशन करता बल का एथलीट।



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज वी पाटील चैम्पीयनशिप ट्राफी बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा एवं पुलिस महानिरीक्षक प्रशिक्षण केरिपुबल श्री ओ.पी. सिंह को प्रदान करते हुए

100मी0 डाश स्पर्धा 10.71 सैकेण्ड में पूरी कर सीमा सुरक्षा बल के जगदीश बसक सर्वश्रेष्ठ घावक बने। पजांब पुलिस के मनजिंदर सिंह दूसरे तथा केरिपुबल के जोरावर सिंह तीसरे स्थान पर रहे। 100 मी0 महिला दौड़ में केरिपुबल की पी. टी. सिन्धु, मीरा सिंह, तथा अनीशा के. विजयन ने पहला दूसरा तथा तीसरा स्थान प्राप्त कर तीनों ही पदक जीते 5000 मी0 की महिला दौड़ में केरिपुबल की दीपिका विश्वास पहले स्थान पर रही जबकि उत्तर प्रदेश पुलिस की गीता राय तथा पजांब पुलिस की बैनी मौर क्रमशः दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहीं।

20 किलामीटर वाक स्पर्धा में पंजाब पुलिस के गुरूप्रीत सिंह ने 1 घटा 30 मिनट 01 सैकेण्ड में तय कर स्वर्ण पदक जीता जबकि केरिपुबल के एम.एस.विठल तथा बिक्रमजीत सिंह ने रजत तथा कास्यं ! पदक जीता।

प्रतिस्पर्धा की सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट का खिताब केरिपुबल की महिला एथलीट आशिक बीवी को मिला। आशिक बीवी ने 100 मी0 महिला हर्डल तथा 400 मी0 की महिला दौड़ में नया कीर्तिमान कायम किया था। आशिक बीवी ने 4X400 मी0 की रिले दौड़ में भी भाग लिया। पुरूष वर्ग में सर्वश्रेष्ठ एथेलिट का खिताब केरिपुबल के ही जोशिफ जी. अब्राहम को मिला। उसने 400 मी0 की हर्डल दौड़ मे नया कीर्तिमान बनाया तथा 4X400 मी0 कि रिले दौड़ में टीम का प्रतिनिधित्व किया था।

इस तरह 54वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलीट चैम्पीयनशिप के पुरूष वर्ग में केरिपुबल की टीम ने 9 स्वर्ण, 8 रजत तथा 8 कास्य पदक जीत कर कुल 166 अकं बनाये और पहले स्थान पर रही। पजांब पुलिस तथा सीमा सुरक्षा बल दोनो ही कुल 20 पदक तथा 143 अकं अर्जित कर संयुक्त रूप से इस चैम्पीयनशिप के उप विजेता रहे। इस चार दिन तक चली चैम्पीयनशिप में 7 नये कीर्तिमान कायम किये गये जिनमें से 6 केरिपुबल के एथलिटों ने बनाए।

चैम्पीयनशिप का समापन दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शिवराज वी पाटिल ने किया सर्वाधिक पदक तथा अंक प्राप्त करने वाली केरिपुबल की टीम को ट्राफी प्रदान कर प्रतियोगिता का समापन करते हुए श्री पाटिल ने कहा कि खिलाडियों को आगामी होने वाले कॉमन वैल्थ खेलों में एक मजबूत प्रतियोगी फोर्स के रूप में प्रस्तुत करने के लिए सभी सहायता दी जाएगी। गृह मंत्री ने कहा कि खेल में पदक जीतना एवं उत्कृष्टता का प्रदर्शन करना अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी देश की उन्नति एंव विकास का प्रतीक है। श्री पाटिल ने खिलाडियों के लिए समुचित संसाधन मुहैया करने पर जोर देते हुए कहा कि खेल देश के युवाओं को स्वस्थ्य एवं रोग मुक्त रखने में सहायक होते हैं। गृह मंत्री ने आगे कहा कि पुलिस बल कार्मियों द्वारा आन्तरिक सुरक्षा बनाए रखने तथा आंतक विशेष मुहिम चलाने जैसी डयूटियों के निष्पादन के बाबजूद भी खेलों में भी अपनी क्षमता व बुद्धि का कुशल

प्रदर्शन कर देश के लिए अनेकों पदक एंव प्रशंसा पत्र जीते हैं। केरिपुबल के महानिरीक्षक श्री जे. के. सिन्हा ने कहा कि इस प्रतिस्पर्धा के आयोजन से पुलिस बलों के एथलिटों को कॉमन वैल्थ खेलों में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयारी करने में मदद मिलेगी। श्री सिन्हा ने आशा व्यक्त की कि गत चार वर्षों से प्रतिस्पार्धाओं में भाग लेने वाले पुलिस बलों के एथलीट आगामी कॉमन वैल्थ खेलों में पदक जरूर जीतेगें।

अखिल भारतीय पुलिस खेल नियत्रण ! बोर्ड एवं आसूचना ब्यूरो के निदेशक श्री ई. एस. नरसिम्हन ने केरिपुबल महानिदेशक को चैम्पीयनशिप का ध्वज अपनी सुरक्षा एवं हिफाजत में रखने के लिए सुपुर्द किया। अतः चार दिन तक चली इस 54वीं अखिल भारतीय पुलिस एथलीट चैम्पीयनशिप का समापन एक भव्य समारोह के साथ हुआ।

प्रस्तुति-निरी./सम्पादक रनबीर सिंह



चैम्पीयनशिप ट्राफी के साथ केरिपुबल की महिला तथा पुरूष एथलीट टीम जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में

एचआईवी/एड्स के विरूद्ध केरिपुबल का

अभियान

1दिसम्बर, 2005 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने विश्व एड्स दिवस पर अपने कार्मिकों में एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूकता पैदा करने की एक मुहिम छेड़ी है। इस मुहिम में केरिपुबल के लगभग 2.50 लाख कार्मिकों को एचआईवी/एड्स से संबंधित जानकारी दी गयी। इस मुहीम को राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप में चलाने का उद्देश्य जवानों में ही नहीं बल्कि देश के विभिन्न भागों में रह रहे उनके परिवारों के सदस्यों में भी एड्स के प्रति जागरूकता जागृत करना था।

ऐसे कई एक कारण है जिससे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों में एचआईवी/एड्स से ग्रसित होने का अधिक खतरा बना रहता है। एक मुख्य कारण यह भी हो सकता है कि जवान लम्बे अरसे तक देश के दूर-दराज के अति संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात रहते है और अपने परिवार से लम्बे समय तक मिल नहीं पाते हैं। ऐसे में उनका सेक्स कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में आकर असुरक्षित सेक्स क्रिया में सम्मलित होना स्वभाविक है। दूसरा कारण यह भी हैं कि बल की अधिकांश तैनाती ऐसे जगहों पर होती है जहाँ एड्स से संक्रमित लोग ज्यादा संख्या में पाये जाते हैं और तीसरा कारण यह भी हो सकता है कि बल के जवान कई दुर्गम क्षेत्रों में तैनाती के दौरान बीमार या दुर्घटना ग्रसित हो जाते हैं और कभी-कभी उन्हे आपालकालीन स्थिति में इलाज हेतु अनहाईजेनिक तथा असुरक्षित औषधालयों में ले जाना पड़ता है जहाँ डिसपोजेबिल सीरिंज तथा रक्त जॉच के सही साधन तक नहीं होते है। अतः ऐसे कई कारक है जिनकी वजह से हमारे जवान इस महामारी के चुगल में फंस जाते हैं। केरिपुबल ने इस की भयावता को जाना व समझा और इसकी बढ़ती तीव्रता को ध्यान में रखते हुए बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा ने बल में सभी स्तर के फील्ड कमांडरों (सेक्शन स्तर तक) कार्यालय प्रमुखों को विस्तृत दिशा निर्देश जारी कर विश्व एड्स दिवस पर उनके अधीन कार्यरत जवानों को एचआईवी/एड्स के बारे में पूरी जानकारी देने व इससे बचने के समुचित उपाय सुझाने का आहवान किया है। श्री सिन्हा ने फील्ड कमांडरों/कार्यालय अध्यक्षों को अपने संदेश में आगाह किया है कि वे इस महामारी की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए अपने जवानों से इस मुददे पर नियमित चर्चा जरूर करें, उन्हे नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों पर चलने की सलाह दे। श्री सिन्हा ने इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों, वृत चित्रों, पोस्टर के जरिये जवानों को एचआईवी/एड्स के बारे में अधिक से अधिक जानकारी देने को भी कहा है।



विश्व एड्स दिवस पर कावा द्वारा आयोजित गोष्ठी का उदघाटन करते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा एंव कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा

इस अवसर पर कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने कहा कि इस महामारी से महिलाएं ज्यादा प्रभावित होती है, इसके प्रमुख कारण अशिक्षा, गरीबी, पश्चिमीकरण, सामाजिक कुप्रथाएं रूढियां, महिलाओं में शंका एवं शर्म का होना आदि है। श्रीमती सिन्हा ने सभी फील्ड बटालियनों / कार्यालयों से विश्व एड्स दिवस पर कार्यशाला, सेमीनार, परिचर्चाए आदि जैसे हर संभव कार्यक्रम आयोजित कर अपने कार्मिकों को एड्स/ एचआईवी से सम्बन्धित जानकारी देने को कहा ताकि उनके अन्दर एचआईवी / एड्स से सम्बन्धित पनप रही सभी शक या शंकाओं को दूर किया जा सके। और वे स्वंय अपने परिवार व समाज को सुरक्षित रखने में सक्षम बन सके तभी तो होगी हमारी स्वस्थ्य पीढी ।

विश्व एड्स दिवस पर बल मुख्यालय में भी कावा के सहयोग से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा सहित सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में भाग लेने वालों ने एचआईवी/एड्स के बारे में अधिक से अधिक जानकारी एवं जागरूकता फैलाने के विभिन्न माध्यमों/ तरीके के बारे में चर्चा की कि किस प्रकार से बल कार्मिकों एंव

उनके परिवारों के सदस्यों को इस महामारी के बारे में अवगत कराया जाय। इस अवसर पर एक क्विज का भी आयोजन किया गया। जिसमें उपस्थित लोगों को एचआईवी/एड्स से संबंधित जानकारी। के बारे में 15 प्रश्न पूछे गये, जिन। लोगों ने सबसे अधिक प्रश्नों के सही उत्तर दिये, उन्हे मुख्य अतिथि बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा ने पुरस्कृत किया। महानिदेशक भी इस प्रतियोगिता में प्रतियोगी थे, उन्हे पुरस्कार कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि । सिन्हा ने दिया। इस अवसर पर प्रेस मीडिया के लोग भी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि श्री जे.के. सिन्हा ने कावा की भूमिका की प्रशंसा करते हुए कहा कि कावा बल कार्मिकों की महिलाओं को इस लाइलाज बीमारी (एड्स) के बारे में जानकारी एंव जागरूक कराकर एक शुभ/ नेक काम कर रही है, एचआईवी / एड्स एक ऐसी बीमारी है जिसको लग गई समझो कि उसकी निश्चित मौत होनी है, कोई उसे नहीं बचा सकता, केवल सांत्वना एवं भरोसा देने के अलावा और कोई हमारे पास विकल्प नहीं है।



विश्व एड्स दिवस पर ग्रुप केन्द्र, ग्रेटर नोएडा में जवानों को एडस की जानकारी देते वहां के चिकित्सा अधिकारी।

कावा केरिपुबल की महिलाओं की एक गैर सरकारी संस्था है जिसने न केवल अपने बल कार्मिकों की महिलाओं को एक कुशल एवं जागृत गृहणी बनाने की पहल

की है बल्कि उन्हे एक आत्म निभर एवं स्वंय निणय लेने वाली सशक्त महिला बनने का अवसर पदान किया है। कावा ऐसे अनेक कार्यक्रम चला रही है जिससे कि महिलाएं इस महामारी को जड़ से उखाड़ देने के लिए निःसंकोच हो कर पुरानी परंपराओं/ रूढियों से बाहर आए । श्रीमती सिन्हा ने कहा कि यह तभी सम्भव है जब हम स्वंय यह प्रण कर ले कि कभी अनैतिक कार्य नहीं करेगें। अपने प्राचीन आदर्श एकलः पति-पत्नी का पालन करेगें, चाहे परिस्थितिया कैसी भी क्यों न हो, अपने नैतिक मूल्यों का ह्रास नहीं होने देगें। अतः इस प्रण एवं प्रतिज्ञा के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया कि प्रत्येक इस बीमारी के बारे में एक परिवार को जरूर जागरूक करेगा तभी सम्भव हो सकेगा स्वस्थ बल, स्वस्थ समाज एंव स्वस्थ राष्ट्र का हमारा सपना सच।



एड्स क्विज में भाग लेने वाले प्रतियोगी महानिदेशालय केरिपुबल के उप कमा0 श्री पंकज कुमार को पुरस्कार देते बल के महानिदेशक श्री जे. के. सिन्हा

इसी तरह के कार्यक्रम केरिपुबल की सभी फील्ड युनिटों तथा कार्यालयों में आयोजित किये गये जिनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार से है: —

गुप केन्द्र, ग्रेटर नोएडा में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



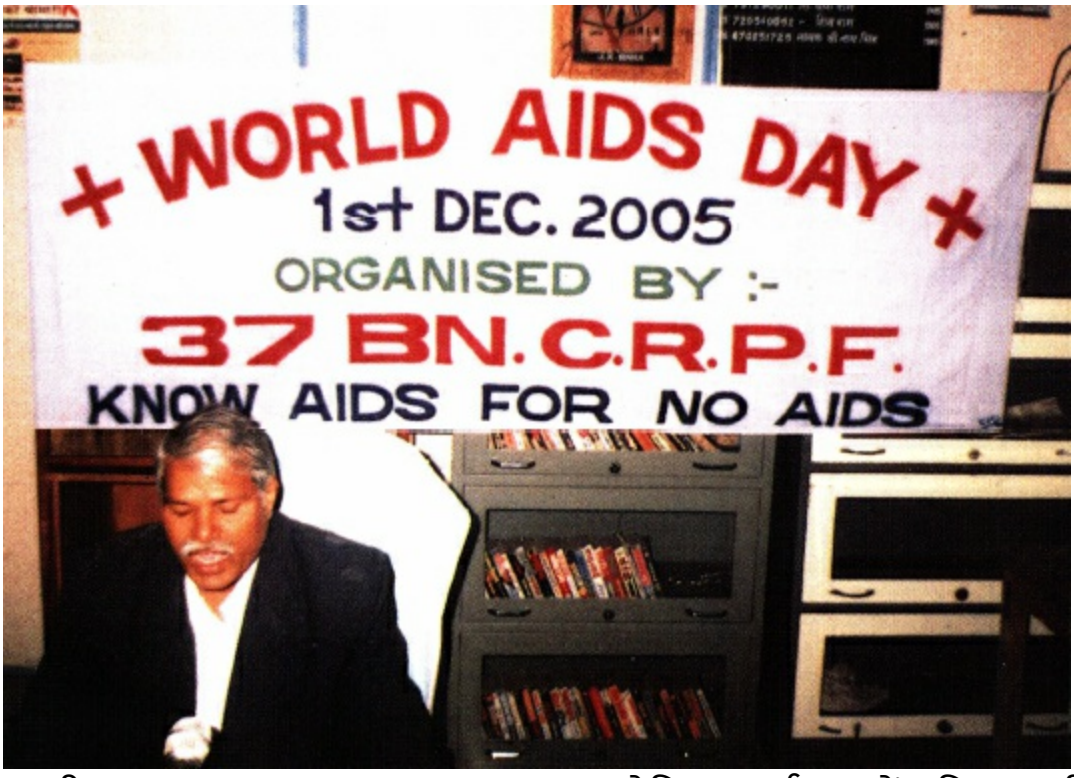
ग्रुप केन्द्र, ग्रेटर नोएडा में 1 दिसम्बर, 2005 को विश्व एड्स दिवस मनाया गया। ग्रुप केन्द्र, के मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा 9:30 बजे समस्त अधिकारियों, स्टाफ एवं जवानों को इस दिवस की महत्ता और एड्स के बचाव से संबंधित उपायों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि यदि हमने इस बीमारी को रोका नहीं तो एक दिन यह महामारी का रूप ले लेगी। इस ग्रुप केन्द्र के जवानो को जागरूक करने के लिए ग्रुप केन्द्र परिसर एवं अस्पताल में एड्स से संबन्धित पोस्टर भी जगह-जगह लगाए गए।

22 बटा. में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



1 दिसम्बर, 2005 को विश्व एड्स दिवस पर 22 बटालियन द्वारा भी एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बटालियन के सभी अधिकारियों व कार्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर डा0 साबन अली अहमद, सीनियर कन्सलटैंट फिजीशियन एण्ड फिजीसियन रिस्पोंसिबल फॉर एड्स मैंनेजमेंट, नलबाड़ी (असम) को आमंत्रित किया गया। डॉ0 अली ने उपस्थित अधिकारियों व जवानों को बैनरों व पोस्टरों की मदद से बताया कि एड्स क्या है? यह कैसे व कब शुरू हुआ? आम आदमी इससे कैसे संक्रमित होता हैं? इसके साथ ही उन्होंने इसके बचाव के उपायों से भी अवगत कराया। बटालियन कण्माडेन्ट ने भी इस विषय की विस्तृत जानकारी जवानों को दी एवं इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं से भी अवगत कराया।

37 बटा. में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



सीआरपीएफ द्वारा एड्स जागरूकता पर आयोजित कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक अरूण देव गौतम मुख्य अतिथि तथा बटा0 के कमाण्डेन्ट ने जवानों को संबोधित करते हुए कहा कि एड्स लाइलाज होने के कारण मानव समाज के लिए चुनौती बन गई है। इससे केवल सतर्कता रखने पर ही बचा जा सकता है। उन्होनें कहा कि सीआरपीएफ एक ऐसी फोर्स है जो देश को एकता के सूत्र में बांधने का काम करती है। स्थानीय पुलिस जब अपने कार्यों से विश्वनीयता खो देती है तब | सीआरपीएफ उसके कार्यो का सफलता पूर्वक निर्वहन करती है। ऐसे में इसे कमजोर करने के लिए कुछ अराजक तत्व एड्स जैसी विनाशक बीमारी को हमारी फोर्स में लाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि एड्स से डरने की जरूरत नहीं है बल्कि इसे समझने एवं सतर्कता बरतने की जरूरत है। कार्यक्रम में जवानों को जिला अस्पताल के स्वेच्छिक जांच एवं परामर्श केन्द्र के सलाहकार सरेश भारती ने एड्स संबंधी विभिन्न जानकारियां दी। इस अवसर पर कलेक्टर मनोज पिगुंआ ने कहा कि जागरूकता के अभाव में लोग एड्स की चपेट में आ जाते हैं और संकोच से वे अपनी जांच नहीं करवाते हैं। मदारी कला जत्था द्वारा नुक्कड़, का प्रदर्शन किया गया । वाद-विवाद एवं परिचर्चा के बीच एड्स के प्रति जागरूकता लाने की अपील की गई।

8 बटा. में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



1दिसम्बर, 2005 को विश्व एड्स दिवस के अवसर पर बटालियन मुख्यालय में उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के माध्यम से एक वृहद शैक्षिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके लिये आवश्यक प्रचार सामग्री एवं नाट्य मंण्डली सोसाईटी द्वारा प्रदान की गई। कार्यक्रम का आयोजन बटालियन मुख्यालय, आशियाना, लखनऊ में किया गया जिसमें बटालियन मुख्यालय एवं लखनऊ में तैनात बटालियन की तीन कम्पनियों के अधिकारियों एवं जवानों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में स्थानीय पत्रकारों तथा आम जनता ने भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ एड्स की जानकारी से किया गया। एड्स से बचाव के उपायों के प्रति जागरूक होने के लिये प्रोत्साहित किया गया। इसके पश्चात् उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा उपलब्ध कराई गई "स्वरांजली कला केन्द्र" के कलाकारों द्वारा लोक नृत्य एवं नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से उपस्थित कार्मिकों को एड्स की जानकारी दी।

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी माउन्ट आबु में एचआईवी/ एड्स पर कार्यक्रम



आन्तरिक सुरक्षा अकादमी माउन्ट आबू में 1 दिसम्बर, 05 को विश्व एडस दिवस पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अकादमी के मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं ग्लोबल अस्पताल के डा0 शैली खंडलेवाल, डा0 उदय रेनाडे उपस्थित हुए। इस अवसर पर अकादमी के सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों के साथ-साथ 51 बटा0 के अधिकारी एवं कार्मिक भी उपस्थित थे। अवगत कराया गया कि 1986 मे इस बीमारी का भारत में पहले मरीज का पता चला था। उसके पश्चात से इस बीमारी ने अपने पैर तेजी से फैलाए और आज पूरे देश में इस बीमारी से लाखों लोग ग्रसित है। एड्स ने अब विश्व में महामारी का रूप ले लिया है। एड्स के फैलने के मुख्य कारणों में असुरक्षित यौन सम्बन्ध दूषित रक्त को दसरे व्यक्ति को देना एक ही इन्जेक्शन का अलग–अलग व्यक्तियों के लिए उपयोग करना आदि है। अभी तक एड्स के ईलाज के लिए दवाई की खोज नहीं हो पाई है। जो दवाईयां अभी उपलब्ध है उनसे मरीज की जान केवल कुछ ही समय के लिए बचाई जा सकती है, परन्तु इसका अन्त तो मृत्यु ही है। अतः एड्स फैलाने वाले कारणों के प्रति सजग रहना ही एड्स से बचाव का एक मात्र उपाय है। उन्होंने आगे बताया कि एड्स पीड़ित से घृणा नहीं बल्कि उन्हें भी अन्य रोगियों की तरह ही साहनभूति की आवश्यकता है। एड्स स्पर्श, एक साथ खाना खाने, सार्वजनिक स्थान का उपयोग करने से नहीं फैलता । अतः एड्स के रोगी से प्रेम पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

117 बटा. में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



117 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बालाघाट में 1 दिसम्बर, 05 को विश्व एड्स दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बटालियन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। बटा0 के कमाण्डेन्ट श्री सी0टी0 वेंकटेश ने संगोष्ठी में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं जवानों को एड्स की जानकारी एवं बचाव के बारे में संक्षिप्त रूप से बताया। जिला अस्पताल बालाघाट के श्री ए0के0 जैन, वरिष्ठ चिकित्साधिकारी, श्री आर0के0 वर्मा, चिकित्साधिकारी तथा श्री प्रवीन खरे, परामर्शदाता ने बटालियन के जवानों एवं कर्मचारियों को एड्स जैसी खतरनाक बीमारी से बचने के उपायों पर विस्तृत रूप में प्रकाश डाला। बल के जावानों ने चिकित्सा सलाहकार श्री प्रवीन खरे से खुलकर बातचीत की तथा इसके नियंत्रण एवं बचाव के बारे में जानकारी हासिल की। इस अवसर पर इस बटालियन के कुल 14 जवानों द्वारा स्वेच्छिक रक्तदान भी किया गया ।

ग्रुप केन्द्र–दो, अजमेर में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम पर कायक्रम



1 दिसम्बर, 2005 को विश्व एड्स दिवस पर ग्रुप केन्द्र-दो, अजमेर के महत्वपूर्ण स्थानों पर एड्स के विषय से संबंधित संदेश लिखे बैनर एवं पोस्टरों को लगाया गया। प्रातः 10:00 बजे मनोरंजन कक्ष में सभी अधिकारी/कर्मचारियों को एड्स से होने वाली समस्याओं एंव इसकी रोकथाम के उपायों के बारे में डॉ० दिनेश मेहता, मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा बताया गया। इस उपलक्ष्य में जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कालेज, अजमेर के पी.एस.एम. विभाग के डॉ० लाल थडानी, स्वास्थ विभाग अजमेर के संयुक्त निदेशक डॉ० चौपडा एंव अतिरिक्त सी.एम.एच.ओ, अजमेर के डॉ० लक्ष्मण भी गोष्ठी में उपस्थित हुए। एड्स फैलने के कारणों तथा इसके बचाव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां सभी कार्मिकों को दी गई। इस उपलक्ष्य में नवारक्षियों/ प्रशिक्षुओं द्वारा भी एड्स पर अपने अपने विचार प्रस्तुत किए गए एवं उन्होनें उपस्थित डाक्टरों से इस विषय से संबन्धित शंकाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। डाक्टरों द्वारा उनकी शंकाओं का समाधान किया गया। ग्रुप केन्द्र के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री सी.जे.एच.एस. हीरा ने एच.आई.वी. व एड्स का तात्पर्य समझाते हुए इससे सतर्कता बरतने का आह्वान किया। 11:30 बजे परिवार कल्याण केन्द्र में भी ग्रुप केन्द्र की सभी महिलाओं को एड्स के बारे में डॉ० (श्रीमती) विजय लक्ष्मी चौहान, चिकित्सा अधिकारी द्वारा जानकारी दी गयी तथा इससे संबन्धित सभी समस्याओं एवं रोकथाम के उपायों के बारे में बताया गया। श्रीमती हीरा ने उपस्थित महिलाओं को इस ओर जागरूक रहने का आह्वान किया।



ग्रुप केन्द्र, दो अजमेर में विश्व एड्स दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ग्रुप केन्द्र के कार्मिकों के परिवार के सदस्यों को एच.आई.वी./एड्स की जानकारी देते हुए चिकित्सक

ग्रुप केन्द्र, भोपाल में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम

ग्रुप केन्द्र भोपाल में 1 दिसम्बर, 2005 को परिवार कल्याण केन्द्र परिसर में विश्व एड्स दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी अधिकारियों, कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। प्रभारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी व अन्य वक्ताओं ने एड्स के बारे में अपने अपने विचार व्यक्त किए और इसके रोक-थाम इत्यादि की विशेष जानकारी जवानों को दी।

38 बटा. में एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम

38 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, रायगढ में बटा० मुख्यालय में एड्स जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस मौके पर एड्स कंट्रोल सोसाईटी के संयुक्त निदेशक डॉ० आर.के.पांडा एवं एन.जी.ओ. सलाहकार सुरी नंदिता नायक ने एड्स जागरूकता पर प्रकाश डाला।

घर-परिवार से दूर रहकर देश की रक्षा करने वाले सी.आर.पी.एफ. के जवानों को एड्स/एचआईवी के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से इस शिविर का आयोजन किया गया था। आमन्त्रित वक्ताओं द्वारा जवानों को जानकारी देने के अतिरिक्त उनकी शंकाओं का भी समाधान किया गया। इस अवसर पर बटा० कमाण्डेन्ट श्री सूरत सिंह ने कहा कि इस प्रकार के शिविर जवानों को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।अज्ञानता बस कई जवान भटक जाते हैं, उन्हें ऐसे कार्यक्रमों से सही मार्गदर्शन मिलेगा। डॉ० आर.के.पांडा ने बताया कि एड्स आज महामारी का रूप ले चुकी है, एड्स के वायरस मनुष्य के शरीर में पनपते हैं। इस अवसर पर सुश्री नंदिता नायक ने बताया कि यह रोग आमतौर पर युवा वर्ग को अधिक होता है। अभी तक इसका कोई ईलाज नहीं है।



ग्रुप केन्द्र, सिंदरी द्वारा आयोजित एचआईवी/एड्स जागरूकता कार्यक्रम में कार्मिकों को जानकारी देते हुए ग्रुप केन्द्र के अधिकारी व चिकित्सक

79 बटा० द्वारा रक्तदान शिविर

"स्मारक शहीद दिवस" पर अपने वीर साथियों की याद में 79 बटा० केरिपुबल द्वारा अपने बटा० मुख्यालय में 21 अक्टूवर, 05 को "पुलिस शहीद दिवस" के अवसर पर एक रक्तदान शिविर का आयोजन कर अपने दिवंगत साथियों को सच्ची

श्रद्धांजलि अर्पित करने तथा समाज कल्याण हेतु रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बटा० के 50 कार्मिकों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। रक्तदान शिविर का आयोजन जी.बी. पंत, अस्पताल, अगरतला के सौजन्य से किया गया। इसके मुख्य अतिथि पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री डी.सी. डे थे। इस अवसर पर श्री डी.सी.डे ने 79 बटालियन के अधिकारियों एवं जवानों के इस पुण्य कार्य की प्रशंसा की तथा रक्तदान को महादान बताया। इस रक्तदान शिविर में रक्तदान करने वाले कार्मिक अधिक और किट कम थी, 79 बटा० के अनेक जवान रक्तदान करने के लिए इन्तजार कर रहे थे लेकिन किटें समाप्त हो गई। 79 बटा० के अधिकारियों एवं जवानों के इस महापुण्य एवं समाज सेवा के कार्य की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।



चंड़ीगढ स्टेशन पर केरिपुबल के कार्मिकों के लिए एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



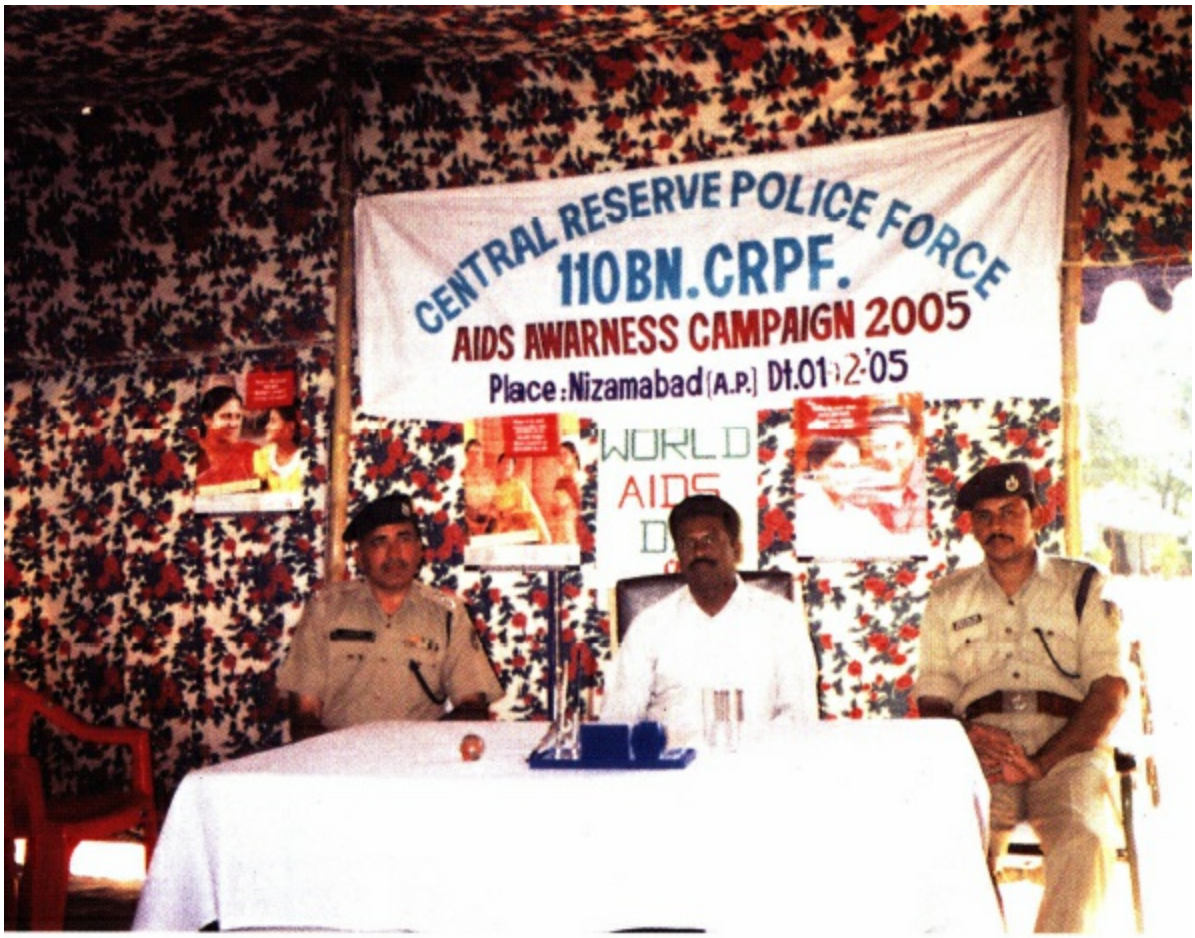
1दिसम्बर, 2005 को विश्व एड्स दिवस पर केरिपुबल कार्मिकों के लिए चंड़ीगढ स्थित बल के सभी कार्यालयों के लिए स्टेशन स्तर की एड्स/एचआईवी पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें बल के सभी रैंक के कार्मिकों ने भाग लिया इस अवसर पर 86 बटा. के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने एचआईवी/एड्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा इससे बचने के उपाय सुझाये। कार्मिकों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं जानकारी बढ़ानें के लिए एड्स से सम्बन्धित बैनर पोस्टर तथा अन्य प्रिन्टेड सामग्री बॉटी गई।

66 बटा० द्वारा एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



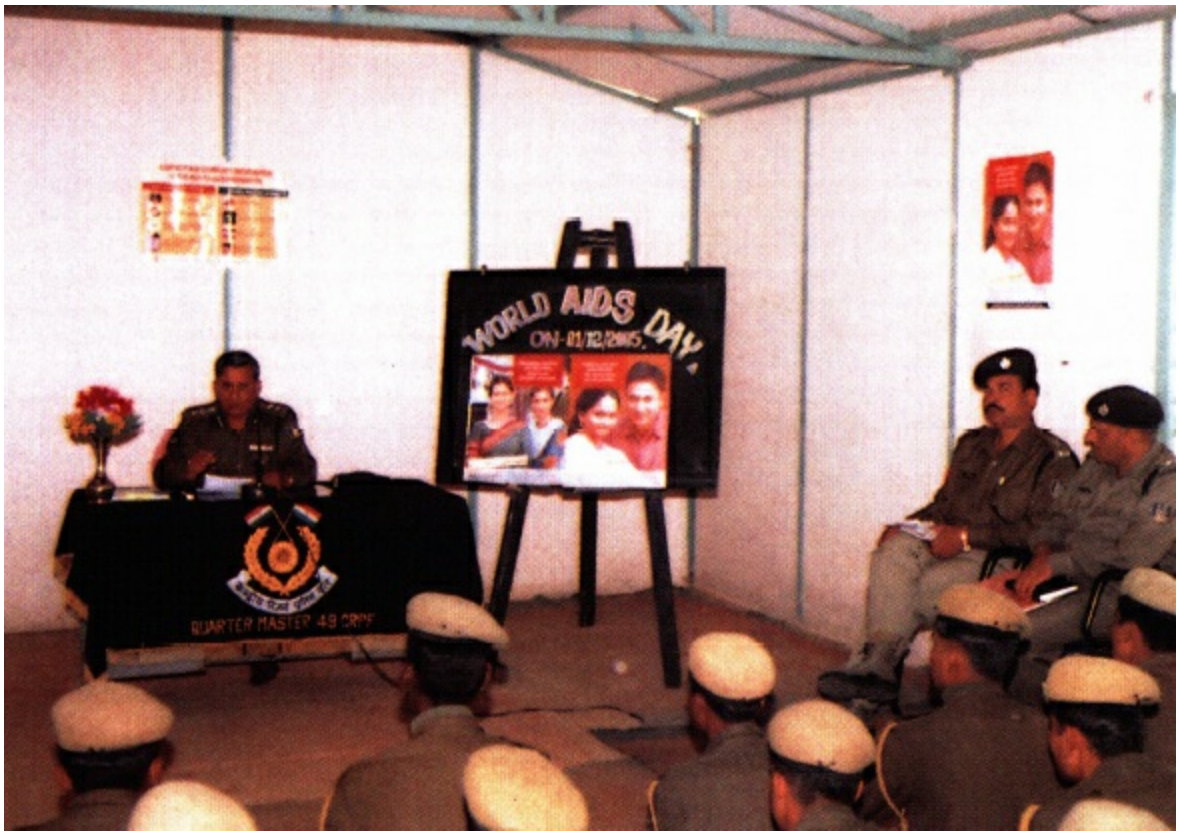
विश्व एड्स दिवस के अवसर पर 86 बटा० के मुख्यालय में अपने कार्मिकों को एचआईवी/एड्स की विस्तृत जानकारी देने हेतु एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पी. एच. सी. कुमारघाट के मुख्य चिकित्सा अधिकारी श्री आर. एन. चक्रवर्ती ने एड्स के फैलने के कारणों तथा निवारण के बारे में बल कार्मिकों को विस्तार पूर्वक समझाया और जवानों से कहा कि यह लाइलाज बीमारी है। अतः इससे सर्वदा दूर रहने के हर सम्भव प्रयास करने चाहिए। इस अवसर पर बटालियन कमाण्डेट श्री एम. पी. बहुगुणा ने भी जवानों को इसके बारे में जानकारी दी।

110 बटा० द्वारा एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



विश्व एड्स दिवस के अवसर पर अपने जवानों की जानकारी हेतु बटा० मुख्यालय निजामाबाद में कार्याक्रम आयोजन किया गया जिसमें 83 बटा० के डा० एस प्रधान ने एचआईवी/एड्स की समस्या से जूझ रहे लोगों के बारे में बताया और कहा कि यह बीमारी मुख्यतः हमारी ना समझी तथा बिना प्रकोशन के सक्रंमित महिला या पुरूष के एक दूसरे के सम्पर्क में आने से फैलने का ज्यादा खतरा है। इस अवसर पर बटा० के उप कमांडेट श्री रोहिनी राजा ने जवानों का अह्वान किया कि वे अपने नैतिक चरित्र को बनाये रखे तथा इस महामारी के बढ़ते हुए प्रकोप को देखते हुए इसके बारे में अधिक से अधिक जानकारी स्वयं तो हासिल करें ही साथ ही अपने परिवार के सदस्यों को भी इसके दुशपरिणामों से अवगत कराएं। इस अवसर पर एचआईवी/एड्स से सम्बन्धित प्रिन्टेड बुकलेट वाटीं गयी।

49 बटा० द्वारा एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम

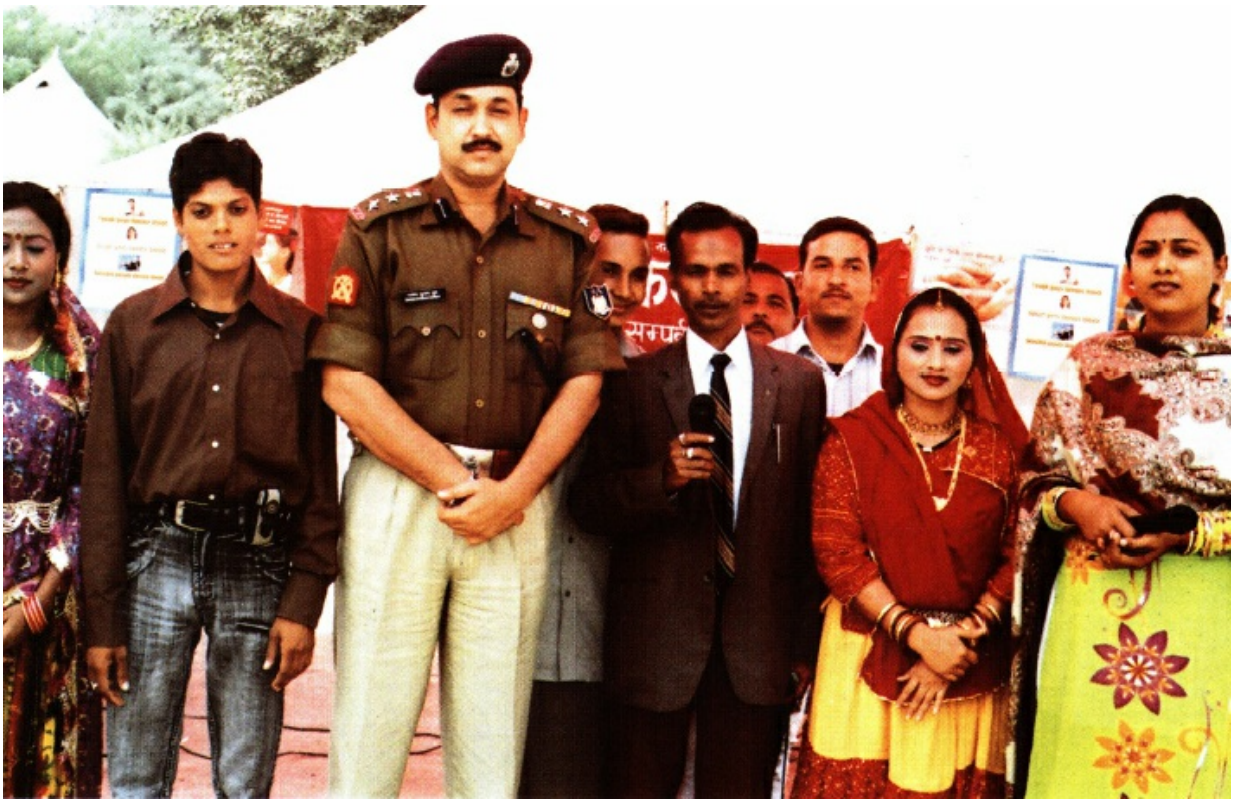


1दिसम्बर, 2005 को विश्व एड्स दिवस के अवसर पर बटा० मुख्यालय शिलांग में एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें बटा० के कमाण्डेन्ट श्री छोटू राम यादव ने अधिकारी तथा जवानों को एचआईवी/एड्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा इसके बढ़तें हुए प्रकोप से बचने के उपाय अमल में लाने को कहा। श्री यादव ने जवानों को बताया कि एड्स लाइलाज बीमारी है जिसका अभी तक कोई इलाज नहीं है। अतः इससे संक्रमित होने से बचने के सभी उपाय किये जाय ताकि स्वयं के साथ-साथ अपने परिवार को भी स्वस्थ रख सकें।

152 बटा० द्वारा एचआईवी/एड्स पर कार्यक्रम



बटा० मुख्यालय में भी विश्व एड्स दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम को आयोजित कर अपने कार्मिकों को एड्स तथा एचआईवी के बारे में विस्तृत जानकारी दी। बटा० के चिकित्सा अधिकारी अब्दुल नाजर ने कार्मिकों को इसकी भयावता के बारे में बताते हुए कहा कि यह एक ऐसी बीमारी है जो लग तो बडी आसानी से जाती है लेकिन इससे छुटकारा पाना नामुमकिन है। अतः हम सभी को इसके बारे में पूरी जानकारी रखते हुए ऐहतियाती सभी उपाय करने चाहिए ताकि हम अपने देश समाज व परिवार को स्वस्थ एवं सुरक्षित रख सकें डा० नाजर ने जवानों द्वारा पूछी गई सभी शंकाओं का समाधान भी किया। इसके अलावा बल के विभिन्न कार्यालय फील्ड फोरमेशनों से एचआईवी/एड्स की रोकथाम से सम्बन्धित विभिन्न तरह के कार्यक्रम आयोजित कर अपने जवानों को ही नहीं स्थानीय लोगों को भी इस के दुश एवं दूरगामी परिणामों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर एचआईवी/एड्स पर कार्यरत विभिन्न चिकित्सा अधिकारियों द्वारा विस्तृत जानकारी दी गयी तथा जवानों एवं लोगों की शंकाओं का समाधान किया गया। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर बल के कार्मिकों ने एक स्वर में एचआईवी/एड्स को देश समाज से उखाड़ फेंकने की प्रतिबद्धता दौहराई।



8 **बटा० द्वारा विश्व एड्स दिवस पर अपने कार्मिकों में एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए आयोजित कार्यक्रम प्रदर्शित नुक्कड़ नाटक में भाग लेने वाले कलाकार एवं कमाण्डेन्ट श्री मनोज कुमार दुबे**

एड्स

एड्स जितना जैविक और चिकित्सा-सम्बन्धी चिन्ताओं का विषय है उतना ही सामाजिक और राजनीतिक महत्व का। एड्स अब विश्व के विशेष क्षेत्रों अथवा अधिक खतरे-भरे आचरण वाले व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है, यह गृहणियों, गर्भस्थ शिशुओं, युवाओं, अमीरों, गरीबों यहाँ तक कि फोर्सो के जवानो अथवा किसी को कहीं भी संक्रमित कर सकता है।

एचआईवी/एड्स की स्थिति भारत में भयास्पद है। इस समय देश में 51.3 लाख लोग एचआईवी से संक्रमित हैं, यह संस्था विश्व में दूसरे स्थान पर आती है। एड्स के कुल मामलों में से 35 प्रतिशत मामले 15-29 आयु वर्ग के है। प्रतिदिन लगभग 1500 लोग एचआईवी से संक्रमित हो जाते हैं और उनमें से 50 प्रतिशत की आयु 25 वर्ष से

कम है। अनजाने में अपने सहभागी को इस वायरस से संक्रामेत कर रहे हैं।

युवा लोगों को विशेषकर युवा महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा एचआईवी संक्रमित होने की संभावना अधिक है जिसके मुख्य कारण हैं सामाजिक मापदण्ड और मनोवृतियां, विचारधाराएं और प्रतिबंध, बेरोजगारी और गरीबी, आचरण और अनुभवहीनता, अज्ञानता और भ्रांतिया। किन्तु इसके जैविक कारण भी हैं।

वर्तमान परिस्थिति में, युवा लोग इस महामारी के घेरे में हैं और यदि इसे रोका नहीं गया तो यह देश के बड़े और सर्वाधिक गतिमान मानव संसाधन एवं विकास को कुंठित कर देगी। अब जो आचरण वे अपनायेंगे और कदाचित अपने जीवन में लगातार हानि बनाए रखेंगे, वह आगामी दशकों में इस महामारी का मार्ग-निर्धारक बनेगा।

एच – मानव

आई – प्रतिरोधकक्षमताह्रास

वी – वायरस

एचआईवी एक वायरस है जो मनुष्य की रोग प्रतिरोधक प्रणाली को क्षीण कर देता है।

एचआईवी उन अनेक वायरसों में से एक है जो प्रतिगामी – वायरस (रिट्रोवायरस) कहलाते हैं।

इस समय दो प्रकार के एचआईवी वायरस हैं, एचआईवी I और एचआईवी II, एड्स पैदा करते हैं।

यह वायरस अत्यंत छोटा होता है, बाल की मोटाई से एक हजार गुना छोटा, और कांटेदार वेल्लित औजार अथवा पूर्ण खिले हुए सूरजमुखी के फूल जैसा दिखाई देता है।

एड्स क्या है ?

ए अभिग्रहीत वंशानुगत न होकर एक व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति से यह लगता है।

आई प्रतिरोध शरीर के प्रमुख रक्षा-तंत्र की दुर्बलता या अपर्याप्तता, शरीर की रोग प्रतिरोधक प्रणाली

एस लक्षणों का समूह यह केवल एक रोग या लक्षण नहीं है, अपितु एक साथ कई रोग या लक्षण प्रस्तुत करता है।

एड्स एक दशा है जो एचआईवी के परिणामस्वरूप पनपती है।

एड्स कोई एकल रोग नहीं है, अपितु रोगों के समूह का लक्षण है, जो मानव की प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास कर वायरस द्वारा शरीर के रक्षा–तंत्र को नष्ट कर पनपता

है।

एच आई वी से संक्रमित होने के मार्ग

रक्त चढ़ाया जाना, यौन सम्पर्क, दूषित सुइयां, सीरिंजें या चुभीले औजार, माता पिता से बच्चे को

रक्त–वाहित संक्रमण

एचआईवी संक्रमित रक्त और रक्त उत्पादों का चढ़ाया जाना एचआईवी के संक्रमण का एक बहुत प्रबल स्रोत है।

एचआईवी संक्रमित रक्त की एक यूनिट चढ़ाने से व्यक्ति को इसके संक्रमण की संभावना 90-95प्रतिशत बढ़ जाती है। रक्त चढ़ाए जाने से पूर्व रक्त का एचआईवी परीक्षण किया जाना कानूनन अनिवार्य है। इसका अर्थ यह है कि चढ़ाए जाने से पूर्व रक्त की प्रत्येक यूनिट का एच आई वी परीक्षण किया जाना चाहिए।

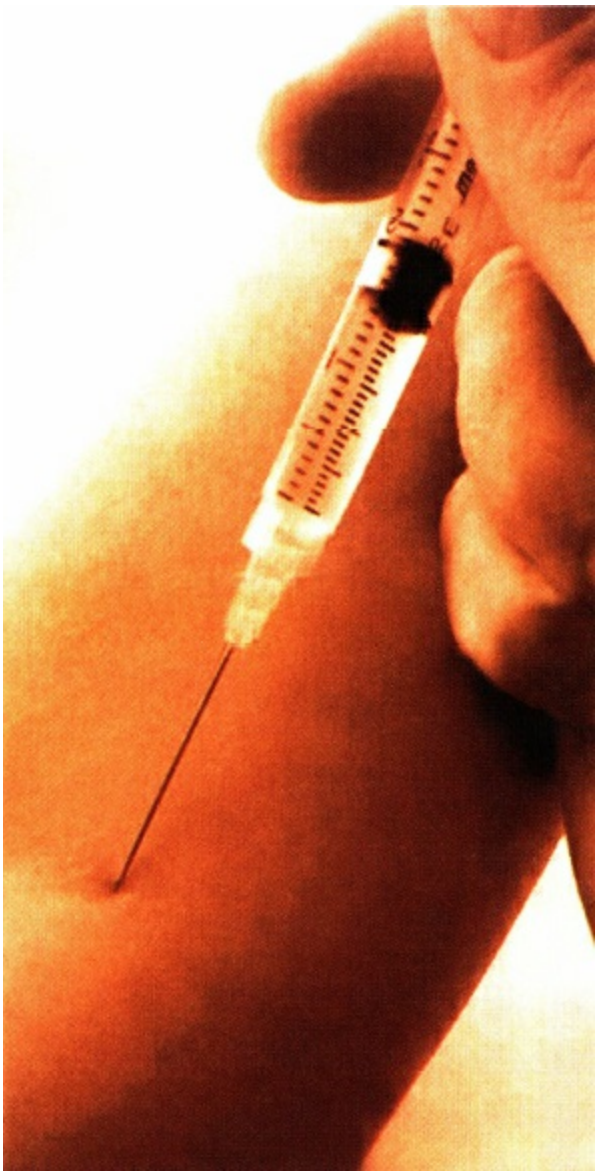
सुइयां, सीरिजें और चुभीले औजार

एचआईवी का संक्रमण ऐसी अ–निष्कीटित सुइयों, सीरिंजों, ब्लेडों, चाकुओं, शल्य उपकरणों तथा अन्य चुभीले औजारों द्वारा भी हो सकता है जो किसी अन्य संक्रमित व्यक्ति पर प्रयोग किए गए हों।

इनमें वे औजार भी शामिल हैं जिनका प्रयोग खतना, गोदना, एक्यूपंक्चर, कान-छेदन और परम्परागत उपचारों के लिए किया जाता है।

प्रयुक्त सुइयां और सीरिंजे रक्त के छूटे हुए तनिक से अंश से दूषित हो सकती हैं। यदि इन सुइयों या सीरिंजों का प्रयोग किया जाए तो संक्रमित रक्त एचआईवी को सीधा रक्त वाहिनियों में संप्रेषित कर सकता है।

उपचार–केन्द्रों और अस्पतालों में सामान्य इंजेक्शनों द्वारा एचआईवी के संक्रमण का खतरा मात्र 0.03 प्रतिशत है।



इंजेक्शन से नशीली दवाएं लेने वालों में एक ही सीरिंज का अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा प्रयोग किया जाना आम बात हैं ऐसे आचरण से एचआईवी संक्रमित होने का खतरा बहुत बढ़ जाता है (1-10 प्रतिशत) क्योंकि सुई से नशीली दवाएं लेने वाले लोग बहुधा छोटी मात्रा में दूसरे के रक्त का स्वयं में संचरण कर लेते हैं।

माता पिता से बच्चों में संक्रमण

कम उम्र के बच्चों में माता-पिता से संक्रमण आया उनके एचआईवी संक्रमित हो जाने का एक प्रमुख कारण है।

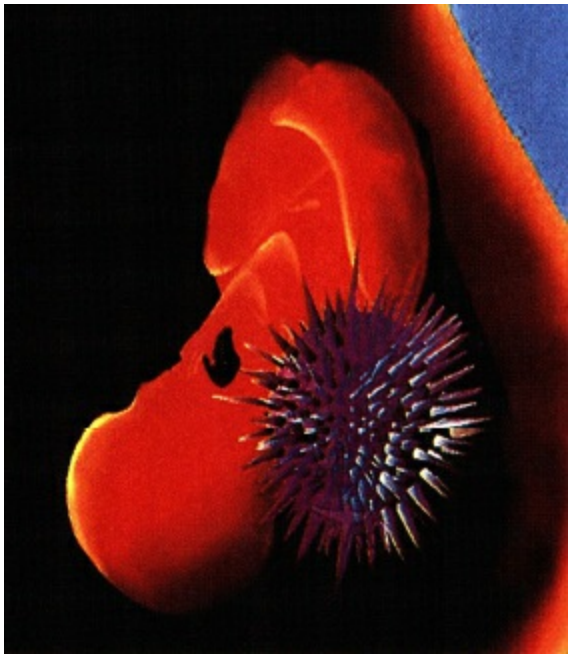
रोकथाम के हस्तक्षेप के अभाव में, इस बात की संभाव्यता है, कि किसी एचआईवी पाजिटिव महिला का बच्चा संक्रमित हो जाएगा (25 प्रतिशत से 35

प्रांतेशत है)।

बच्चे में वायरस का प्रवेश गर्भावस्था, प्रसव–वेदना, जनन–काल अथवा जन्म के पश्चात् स्तन–पान के दौरान हो सकता है।

उन संक्रमित शिशुओं में जिन्हें मा का दूध नहीं दिया गया हैं, माता-पिता से संक्रमण होने के लगभग दो-तिहाई मामले जनन-काल के आस-पास होते हैं और शेष गर्भावस्था के दौरान (अधिकतर अंतिम तीन मास में)

जिन समुदायों में स्तनपान का चलन हैं वहां यह संक्रमण समस्त संक्रमणों का एक-तिहाई है।



एड्स के छोटे-बड़े लक्षण

एचआईवी संक्रमित कुछ लोगों में ऐसे एक या अधिक संकेत और लक्षण विकसित होने लगते हैं जो एड्स का आधार हैं। इनहें गलती से कितनी ही अन्य बीमारियों में से कोई एक समझ लिया जाना आसान है। बहुतों को तपेदिक यानी टीवी हो जाती हैं, बच्चों में यह बहुधा उनके विकास में कमी, बहुत समय तक चलने वाले दस्त और निमोनिया के रूप में प्रकट होती है जिन पर उपचार का प्रभाव नहीं होता।

एच आई वी संक्रमण के छोटे-बड़े लक्षण ये हैं:

- लम्बे अरसे तक चलने वाली अस्पष्ट थकान
- सूजी हुई गिल्टियां (लसीका ग्रंथियां)
- 10 दिन से अधिक चलने वाला बुखार कम्पन
- अत्यधिक पसीना आना, विशेष कर रात को

- फेन सहित, मुख के विकार और सूजे हुए, पीड़ाजनक मसूड़े
- गले में खराश
- खांसी
- सांस फूलना
- शौच-निवृत्ति की आदत में अन्तर आना जिसमें कब्ज भी शामिल है
- बार-बार दस्त लगना
- स्थिति-जन्य विशिष्ट संक्रमण के लक्षण (जैसे कैंटिडा, न्यूमोसिस्टिस आदि)
- टयूमर (फोड़ा)
- चर्म पर चकते अथवा विभिन्न प्रकार के विकार
- न चाहते हुए भी वजन में कमी
- अशान्ति और बेचैनी की अनुभूति
- सरदर्द

ये लक्षण उन लोगों में भी आम हैं जो एचआईवी से संक्रमित नहीं हैं।

जब इनमें से कई एक साथ उभरते हैं और बराबर बने रहते हैं तो यह एड्स विकसित होने का द्योतक हो सकता है।

एड्स की पहचान कैसे की जाती है

एक या अधिक स्थितिजन्य संक्रमणों, कैंसर तथा अन्य रोगों से। एचआईवी/एड्स की पुष्टि के लिए दो या अधिक तत्वों को विचार में लिया जाता है।

प्रथम, रक्त में सीडी4 (श्वेत रक्त कोशिकाओं का एक प्रकार) की संख्या गिर कर 200 प्रति माइक्रोलीटर से नीचे पहुंच जाती है जबकि सामान्य रूप से यह 800 से 1200 प्रति माइक्रोलीटर होनी चाहिए।

दूसरे, सूक्ष्म रक्त परीक्षण द्वारा रक्त में एचआईवी की उपस्थिति दर्शाना आवश्यक है। इसकी सर्वाधिक प्रयुक्त विधि 'एलिसा' के नाम से जानी जाती है जिससे कि एचआईवी संक्रमण के फलस्वरूप शरीर में उत्पन प्रति-कायों (एंटीबॉडीज) का पता चल जाता है।

प्रारम्भिक 'एलिसा' परीक्षण के परिणामों की पुष्टि के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अन्य त्वरित/सरल परीक्षणों का जायजा लिया है। सरल अथवा त्वरित स्क्रीनिंग परीक्षणों से परिणाम बहुत शीघ्र आते हैं (3 से 6 मिनट के अंदर)।

स्क्रीनिंग परीक्षण का पुनः 'एलिसा' या अन्य सरल परीक्षण किया जाना कम से कम उतना सही तो है ही जितना कि 'वेस्टर्न ब्लोट' द्वारा प्रारम्भिक स्क्रीनिंग परीक्षण की पुष्टि किया जाना।

एड्स उपचार और टीका

एड्स का अभी तक कोइ उपचार नहीं हैं और इसका टीका आना दूर की बात हो सकती है। वायरल-पुनर्रावृत्ति निरोधक दवाएं एचआईवी/एड्स से संक्रमित लोगों को अधिक वर्षों तक जीने में सहायता कर सकती हैं, किन्तु यह उपचार नहीं है। ये दवाएं बहुत मंहगी हैं और अधिकतर लोगों की पहुंच के बाहर हैं। इसके अतिरिक्त ये दवाएं भारी प्रतिक्रिया पैदा कर सकती हैं, इनका अकेला प्रयोग किया जाने पर प्रतिरोध विकसित होने की बहुत संभावना है।



एचआईवी किस प्रकार प्रतिरोधक प्रणाली को नष्ट करता है।

1. प्रतिरोधक प्रणाली हमारी रोग निरोधक प्रहरी है।
2. श्वेत रक्त कोशिकाएं हमारे शरीर पर आक्रमण करने वाले कीटाणुओं को मारती है।
3. एच आई वी हमारी श्वेत कौशिकाओं में प्रविष्ट कर हमारी प्रतिरोधक प्रणाली पर आक्रमण करता है।
4. एच आई वी हमारी प्रतिरोधक प्रणाली को हमारे शरीर की रक्षा करने से रोकता हैं।
5. एच आई वी द्वारा हमारी प्रतिरोधक प्रणाली क्षीण कर दिए जाने पर, कीटाणु हमारे शरीर में हावी हो जाते हैं और हम बीमार पड़ जाते हैं।
6. एड्स तथा लक्षणों का विकास

भ्रांतियां और गलत धारणाएं

एचआईवी इन बातों से नहीं फैलता:—

- एचआईवी संक्रामेत लोगों के साथ उन्हों बतनों में खाने से।
- एचआईवी/एड्स प्रभावित लोगों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले तालाबों में तैरने से।
- एचआईवी/एड्स प्रभावित लोगों के साथ मिलने-जुलने से अथवा कभी उनके साथ रहने का मौका पड़ जाने से।
- ऐसे मच्छरों द्वारा काटे जाने से जो पहले ही किसी एचआईवी संक्रमित व्यक्ति को काट चुके हैं।
- एचआईवी संक्रमित लोगों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले शौचालयों के प्रयोग से।
- एचआईवी/एड्स ग्रस्त लोगों से हाथ मिलाने, से।
- रक्त-दान करने से (निष्कीटित सुइयों द्वारा)
- एचआईवी संक्रमित लोगों के साथ काम करने से।
- एचआईवी/एड्स प्रभावित बच्चों के साथ अन्य बच्चों के खेलने से यह नहीं फैलता है।

एच आई वी/एड्स की रोकथाम

इसकी रोकथाम के लिए कोई टीका अथवा इलाज नहीं हैं। आज इसका विकल्प यही है कि इसकी रोकथाम के लिए ऐसे उपायों पर अमल किया जाए जो सुरक्षित हैं। ऐसे व्यवहार के पालन से महत्वपूर्ण अन्तर आ सकता है।

- तब तक यौन संबंध न बनाएं जब तक विवाह नहीं हो जाता और फिर अपने साथी के प्रति वफादार रहें।
- युवाओं को लिंग प्रवेशक यौन संपर्क से दूर रहने की आवश्यकता है। सुरक्षित निकट सम्पर्क का विकल्प अपनाकर यह किया जा सकता है।
- केवल एक ही विश्वनीय असंक्रमित साथी के साथ यौन संपर्क बनाएं।
- उन व्यक्तियों के साथ यौन संपर्क से बचें जिनके अनेक साथी हैं। यौन संपर्क में सदैव कंण्डोम का प्रयोग करें।
- यदि आप सुई, सीरिंज अथवा अन्य ऐसे उपकरणों का प्रयोग करते हैं जो त्वचा को भेदते हैं तो यह सुनिश्चित कीजिए कि वे विसंक्रमित कर लिए गए हैं।
- कभी भी दूसरे लोगों के रेजर, ब्लैड, सुई और सीरिंज का प्रयोग न करें।
- रक्त चढ़ाए जाने से पूर्व इस बात पर जोर दें और यह सुनिश्चित करें कि रक्त का परीक्षण कर लिया गया है और यह प्रमाणित किया गया है कि यह एचआईवी मुक्त है।
- रतिजनित संक्रमणों का शीघ्र पता लगाकर उनका उपचार अवश्य करायें।
- कंण्डोम का सही और निरन्तर प्रयोग करें।



एचआईवी/एड्स से संक्रमित जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

यह पता चलने पर कि आप एचआईवी से संक्रमित हैं आपके जीवन में एकाएक परिवर्तन आ जाएगा। आप अनेक भावनाओं का अनुभव करने लगेंगे जैसे भय, सब कुछ खो जाना, दुख, अवसाद, वंचित होना, नाराजगी, चिन्ता। भले ही डाक्टर आपको कितना भी आश्वासन दें, आप कितनी भी प्रभावी औषधी का इलाज करा रहे हों, संक्रमण का आपके शरीर पर कितना भी कम प्रभाव पड़ रहा हो, अथवा दिमागी तौर पर आप कितना भी तैयार हों, आपको मंत्रणा और समर्थन की बहुत आवश्यकता होगी। अपनी जीवन शैली में समायोजन के नम्र सुझाव आपको स्वस्थ और लाभकारी जीवन बिताने में सहायक हो सकता हैं। पूर्ण डाक्टरी जांच, इलाज और स्वास्थ्य की

देखभाल के लिए स्वास्थ्य के किसी पेशेवर डाक्टर के पास नियमित रूप से जाइए।

यह सुनिश्चित कीजिए कि आप परिस्थितिजन्य होने वाले आम संक्रमणों और अन्य रोगों, जो एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों को लग सकते हैं जैसे क्षयरोग और रतिजनित संक्रमण, के बारे में अपनी जांच करा लें, क्योंकि उनसे आपके स्वास्थ्य को क्षति पहुंच सकती है। एचआईवी संक्रमण से बचने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएं।

- अपने यौन साथी (यों) को एचआईवी के संभावित खतरे के बारे में सूचित करें। आपके स्थानीय स्वास्थ्य विभाग के पास अधिसूचना कार्यक्रम है जिससे आपको सहायता मिल सकती है।
- पूर्वापायों का अनुसरण जैसे हमेशा कंण्डोम का प्रयोग और अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त सुइयों का प्रयोग न करके, वायरस से दूसरों की रक्षा कीजिए।
- रक्त, प्लाजमा, वीर्य, शरीर के अंगों अथवा अन्य ऊतकों को दान में न दें।
- नियमित व्यायाम करें
- निषिद्ध औषधों का प्रयोग न करें
- तम्बाकू और मद्य सेवन से बचें
- उत्तम पौष्टिक और स्वस्थ आहार लेने की आदत डालें।
- थकान और तनाव से बचें।
- जब भी संभव हो विश्सनीय मित्रों और परिवार का समर्थन हासिल करें और पेशेवर डाक्टर से मंत्रणा लेने पर विचार करें।

इसी तरह के अनुभवों के दौर से गुजरने वाले लोगों के समूह का समर्थन लें। इस प्रकार आप एचआईवी से संक्रमित होने के बावजूद भी एक लम्बे समय तक बेहतर जीवन जी सकते है तथा अपने परिवार समाज व देश मे इसके प्रसार को रोकने में आप मदद कर सकते है।

प्रस्तुति- निरी./सम्पादक रनबीर सिंह

रहस्य व रोमांच से भरा सीआरपीएफ का पलामू अभियान

बी0 के0 शर्मा
कमाण्डेन्ट-13 बटा0 केरिपुबल



स्थानीय वृद्ध लोगों को समाज सेवा स्वरूप लुंगी बांटते *13* बटा*0* केरिपुबल के अधिकारी व जवान

हरी-भरी वादियों, पर्वतों से भरा, अपने आप में प्रकृति की लगभग सभी नेमतों को संजोये समेटे झारखण्ड का एक खूबसूरत केन्द्र है पलामू। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों प्रकृति ने स्वयं अपने हाथों से इस जिले का श्रृंगार किया हो। नेतरहाट, बेतला जैसे स्थल पर्यटन की असीम संभावनाओं से लबालब हैं। छोटी सी रानी के रूप में विख्यात नेतरहाट न सिर्फ पलामू बल्कि राज्य के पर्यटन के क्षेत्र का सिरमौर है। इस क्षेत्र में नेतराहाट से महुआडांड़, बेतला होते हुए सड़क मार्ग से लौटना की एक बेहद रोमांचक व खूबसूरत यात्रा है। रास्ते में ऊँचे-ऊँचें वृक्षों से आच्छादित पर्वतों की श्रृंखला, घाटियों के मध्य सर्पीले सड़क तथा रास्ते में सड़क को पार करती पहाड़ी नदी का जल सचमुच बेहद रोमांचित करते हैं जो किसी खूबसूरत दृश्य या पेंटिंग का आभास देता है। रास्ते में पड़ने वाले सुग्गा बांध की प्राकृतिक छटा तथा वहाँ का शांत तथा आकर्षक वातावरण बरवस ही मन को मोह लेता है। जलप्रपात सें गिरता पानी को तथा उसके प्रभाव को घंटों बैठ कर लोग निहारते नजर आते हैं। सुग्गा बांध से कुछ ही दूरी पर है मारोमार स्थित बन विभाग का ट्री हाउस जिसकी खूबसूरती देखते ही बनती है। इसको बनाने वाले की कारिगरी सहज ही मन को भा जाती है। नेतरहाट से बेतला राष्ट्रीय उद्यान तक की यात्रा के दौरान हो सकता है सड़क पर ही लंगूरों की टोली तथा हाथियों का झुण्ड टहलता मिल जाय। बेतला राष्ट्रीय उद्यान प्रोजेक्ट टाइगर के तहत आता है तथा कहा जाता है कि दुनिया में बाघों की सबसे पहले गणना 1923 में वहाँ की गयी थी। बाघों के अलावा यहाँ हाथी, सांड, चीतल, लंगूर, बंदर इत्यादि

प्रमुख रूप से नजर आते हैं।

वर्तमान में यह मनोहर रहस्यमयी भू-भाग उग्रवाद की काली छाया से आच्छादित है जिसकी जड़े विकास से विमुख व भौगोलिक कारकों से कटे जनमानस के बीच गहराती जा रही है। स्थिति की गंभीरता का एहसास कराने के लिए यह तथ्य ही पर्याप्त हैं कि पर्यटकों के समूह जो उग्रवाद से पूर्व समय में निर्भीक होकर विचरण करते थे, आज लगभग नगण्य हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में क्षेत्र में तैनात केरिपुबल के लिए जनमानस के भय को दूर करना व उनके विश्वास की पुर्नवापसी एक मुख्य चुनौती है जिसके लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अबोध रूप से सतत् प्रयत्नशील है। विगत महीनों में केरिपुबल की गारू व महुआडांड में तैनाती से इस प्रयास में गुणात्मक एंव संख्यात्मक वृद्धि हुई जिससे क्षेत्रीय लोगों में आशा की एक लौ जली है व स्फुर्ती चेतना का संचार हुआ है।



13 बटा*0* द्वारा पकड़े गये माओवादी तथा उनसे बरामद हथियार



बल का मानवीय पहलू: असहाय व वृद्ध महिलाओं को छाता बॉटते *13* बटा*0* केरिपुबल के कार्मिक

इस कड़ी में उग्रवादियों के विरूद्ध ऑपरेशन 'ब्लैक टॉप', 'ग्रीन लीफ व 'के-2' चलाए गए जिसका उद्देश्य था उग्रवादियों के मंसूबों को ध्वस्त करना व आम नागरिकों के विश्वास को जीतना। इस काम में केरिपुबल को आशानुरूप सफलता मिली है। उग्रवादियों के साथ कई मुठभेड़े हुई जिसमें उनको काफी क्षति उठानी पड़ी। उनकी शरण-स्थली व प्रशिक्षण स्थल को ध्वस्त कर दिया गया। सरयू कुमुंडी, मेटॉर व डांडिला की घटनाओं से राष्ट्र विरोधी ताकतों का हौसला पस्त हुआ है। इन अभियानों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि केरिपुबल का नुकसान इन अभियानों में नगण्य रहा। उग्रवादियों के कुठित इरादों का पर्दाफाश लोगों के बीच में किया गया जिसके तहत उग्रवादियों के काले कारनामों की सूची ग्रामीणों के बीच वितरित की गयी। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का मानवीय स्वरूप लोगों ने मुफ्त स्वास्थ्य शिविर के दौरान देखा, सैकड़ों की संख्या में बच्चों को फुटबॉल, महिलाओं को चप्पल पुरूषों को लुंगी व बनियान तथा बुजुर्गों को छाता वितरित किये गये। साथ ही सामूहिक भोज का आयोजन गाँवों में पुलिस व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तरफ से आयोजित किया गया। यह सब क्रिया कलाप जनता के प्रति पुलिस का सहयोग व

सहभागिता का घोतक है। भविष्य में भी इस तरह के क्रिया कलापों को समय समय पर आगे भी आयोजित करने की आवश्यकता है ताकि जनता का सहयोग उग्रवाद के सफाए में मील का पत्थर साबित हो।

हंसना मत

1. एक पिता अपने पुत्र को समझा रहे थे बेटे आजकल जमाना बहुत बदल गया है, किसी भी शादी/व्याह के लिए सरकार से यदि एक क्विंटल चीनी की मांग करो तब जाकर सरकार कहीं 30 किग्रा0 चीनी देती है। अगर कहीं चंदा मांगने जाओ और 51/- रूपये की मांग करो तब जाकर कोई 11 रूपए देता है। और हां यदि शादी में ससुरजी से स्कूटर मांगना चाहो तो उनसे कार मांगना, तब कहीं जाकर स्कूटर मिलेगा, समझे।

   बेटा बोला – जी पिताजी समझ गया। पिता ने पूछा – अच्छा बताओ क्या समझा?

   बेटा बोला – यही कि शादी में मैं अपने ससुरजी से सासु मां को मांगूगा तब जाकर कहीं पत्नी मिलेगी।

2. एक व्यक्ति ने अपने दूध वाले से झल्लाकर कहा-तुममें और गाय में केवल एक ही अन्तर है कि वह शुद्ध दूध देती है और तुम पानी मिलाकर देते हो। दूध वाले ने उत्तर दिया-नहीं जनाब, एक अन्तर और भी है, मैं उधार देता हूं जबकि गाय उधार नहीं देती।

3. सेठ ने एक ग्राहक रमेश से पूछा-आपके पिता की मृत्यु कैसे हुई? रमेश-जी उनके बाँई आँख के नीचे गोली लग गई थी।

   सेठ ने कहा – ओह ! शुक्र है उनकी आँख बच गई।

निरीक्षक (एच. टी.) नागराज द्विवेद्धी
पश्चिमी सेक्टर

(व्यंग्य)

सीआरपीएफ का एडम

अनिल गुप्ता, उप कमां.

रेलवे क्लर्क ने मुझे देखा और उठकर भाग खड़ा हुआ। मैं उसके सेक्शन अफसर के पास गया। वो भी मुझे देखते ही भड़क उठा। बोला, "आप लोगों की समस्या क्या है।" मैं खुद हैरान था, पूछा, "जी मैं कुछ समझा नहीं,"

"जनाब अब और ज्यादा समझने के लिए तो आपको रेलवे के ट्रेनिग स्कूल में कोर्स करना पड़ेगा।" "देखिए मैं तो एक सीधी सी बात पता करने आया हूँ, अजमेर से गुवाहाटी तक ट्रेन के कनेक्शन के बारे में।"

जनाब आप पहले आदमी नहीं है, पहले एक आया, पूछा ट्रेन जाती है, बता दिया जाती है, फिर दूसरा लड़का आया और बोला ब्रॉड गेज की है या मीटर गेज की। वो भी बता दिया। आज फिर एक लड़का आया था, पूछ रहा था कोई एक्सप्रेस चलती है उस रूट पर कि नहीं। वो भी बता दिया। अभी वो गया भी नहीं था कि आपकी यूनिट से फोन आ गया, बीच में कहाँ-कहाँ रूकती है। मेरा जी चाहा अपने बाल नोच लूं। अच्छा-खासा दिमाग चाट लिया मेरा। गुवाहाटी से अजमेर तक बीच के सारे स्टेशन लिखवा लिये। अब आप आएं हैं, कहिऐ आप की क्या सेवा करूं।

"जनाब नाराज न हों, हमारे एक साहब अभी नए नए बदली होकर आए हैं, शायद उन्हें अपने परिवार वालों को बुलाना है।" मगर आप लोग इन्क्वायरी तो ऐसे कर रहे है, जैसे कोई स्पेशल ट्रेन चलवानी है गुवाहाटी और अजमेर के बीच। आपको चाहिए क्या, ये बताईए? मुझे तो आप बस ये बता दीजिए बीच में राजधानी का कनेक्शन कहीं हो सकता है। "नहीं हो सकता, और पूछिए।" "जी और तो मुझे कुछ पता नहीं करना है।" "मगर मैं बता देता हूँ।"

उन्होनें अपने क्लर्क को आवाज लगायी और बोले "इन्हें अजमेर से गुवाहाटी जाने वाली सारी ट्रेनों के जनरल डब्बे से लेकर ए.सी. फर्स्ट तक के सारे किराये बता दो, सारी ट्रेनों के चलने और पहुचने के समय बता दो, ये भी बता दो कि किस किस ट्रेन में पैंट्री सर्विस है। और किस में नहीं।

फिर वो मुझसे मुखातिब हुए, "इतना हो जाने के बाद मुझे नहीं लगता कि आपको कुछ और जानकारी भी चाहिए होगी।" "हॉ, अगर अगले तीन महीने की रिजर्वेशन की पोजीशन और बता दें, मुझे लगता है, मुझे फिर नहीं आना पड़ेगा।"

उसने अपने बाल नोंच लिये और बोला, "लगता है मैं पागल हो जाऊंगा" खैर। किसी तरह सारी जानकारी का चिट्टा इकट्ठा करके मैं अपने साहब के पास पहुंच गया। मुझे पूरा यकीन था कि अब साहब को कोई शक नहीं रहेगा, आखिर एक विश्वास के साथ एक अफसर को भेजा था। और मुझे यकीन था कि मैंने उनके विश्वास की रक्षा की है, लेकिन उनके चेहरे के भाव देखकर मेरा यकीन हिल गया। वो कुछ संतुष्ट नहीं हुए। बोले," यार तुम अफसर हो, तुम्हें पता करके आना चाहिए था इसके अलावा कोई अलटरनेटिव रूट भी है क्या। " अगले दिन मैं फिर पहुंच गया। मुझे देखते ही वो साहब बोले," साहब आप लोंगों को और कोई काम नहीं है, क्या ?

“है क्यों नहीं, हम आपकी सुरक्षा के लिए तैनात हैं।” “पर जनाब आपको इन्कायरियों से फुरसत मिलेगी तो सुरक्षा करेगें ? मैं तो आपको हमेशा यहीं देखता हूँ, आपका अपना ही एड्म खत्म नहीं होता तो फिर डयूटी कब करते है।” दबी जुबान से सी.आर.पी.एफ में सभी कहते है कि सीआरपीएफ का अपना ही एडम खत्म नहीं होता, आज बाहर का आदमी भी कह रहा था, वो भी मेरे ही मुँह पर, खैर मैं फौरन मतलब की बात पर आ गया। उसने बता दिया कि कोई अलटरनेटिव रूट नहीं है। मैंने लौट कर डरते डरते साहब को बता दिया। मैं मन ही मन खैर मना रहा था कि कहीं और कोई शंका बाकी न रह गयी हो।

मेरा शक ठीक निकला। साहब कुछ संतुष्ट नजर नहीं आ रहे थे। मैंने पूछा “साहब बात क्या है, किसे आना है।” साहब ने बताया कि गर्मियों की छुट्टियों में उनके परिवार को आना है। उन्हीं का रिजर्वेशन करवाना है, इसीलिए पता कर रहा था, बहुत लम्बा रूट है, कुछ जच नहीं रहा।”

“मगर साहब गर्मियों की छुट्टियों में तो अभी ढाई महीने हैं।” “हाँ मगर अभी से प्लान करेगें, तो रिजर्वेशन वगैरा आराम से मिल जाएगा” साहब अगर अभी इतना टाइम है तो आप डेक्कन एयर से क्यों नहीं करवा लेते।

“अरे यार इतने पैसे कहाँ है, जो पूरे परिवार को जहाज से बुलवाऊं।” “साहब अगर तीन महीने पहले बुक करवाएगें तो रेल के टिकट से भी सस्ता पड़ेगा। दिल्ली से गुवाहाटी तक का किराया सिर्फ 800/- रूपये है।”

“क्या”

“हाँ साहब”

उन्होने तुरंत कंट्रोल रूम को फोन करके कहा कि एयरपोर्ट पर जो कंपनी कमाण्डर है, उससे कहो कि फौरन दिल्ली से गुवाहाटी आने वाली सारी फ्लाईट के शेडयूल और किराये की जानकारी प्राप्त करके मुझसे बात करे। साथ ही ये भी पता करेगा, कि अजमेर से दिल्ली के बीच के कनेक्शन के लिए भी कुछ रिबेट वगैरा है क्या। जल्दी पता करके मुझे रिपोर्ट देगा।” मैंने राहत की सांस ली। मेरी छुट्टी हो गयी थी, अब बारी एयरपोर्ट वाले कंपनी कमाण्डर की थी।

कविता

यदि रेगिस्तान में गर्मी नहीं होती,
कश्मीर में सर्दी नहीं होती,
मैं भी घर होता आज,
तन पर वर्दी नहीं होती।
हम सभी रंगमंच की कठपुतली हैं,

जिसकी डोर भगवान के हाथ में हैं,
जब चाहे खींच सकता है।

सिपाही सर्वेश यादव
152 बटा0 केरिपुबल



कैसा हैं भैया तेरा हाल

कैसा है भैया तेरा हाल, कैसा है भैया तेरा हाल।
तीस साल के बाद मिले, पूछने अपनों का हाल।
कैसा है भैया तेरा हाल, कैसा है भैया तेरा हाल,।
गले मिले गदगद हुए, लगे पूछने अपनों का हाल,
कैसा है भैया तेरा हाल, कैसा है भैया तेरा हाल,
कहाँ गई वे चेहरे की लाली, कहाँ गया वो दिल बेहाल।
कैसा है भैया तेरा हाल, कैसा है भैया मेरा हाल,।
देख चमकती चाँद पे, गिने चुने कुछ काले बाल,
मन ना रूका, पूछा एक सवाल, तीस बरस का बीता काल,।
उत्तर मिला- आशीर्वाद है गोदरेज बाबा का, अब तक काले है बाल,
ऐसा है भैया तेरा हाल, ऐसा है भैया मेरा हाल।
जब पूछ रहे थे अपनो का हाल, पीछे से एक आवाज उठी,
नया रंग रोगन कराकर आयी है, पर है गाडी वही पुरानी 'वाकसाल'।
ऐसा है भैया तेरा हाल, ऐसा है भैया मेरा हाल।
बैठे बीते दिनों का लेखा जोखा लेने, उठे मन में कई सवाल,
क्या खोया क्या पाया, कौन गया कौन आया।

जिस बल में भर्ती हुए थे, क्या हैं उसका हाल।
तीस बरस का बीता काल, कितनी बदली इसकी चाल,
देख बदलती इसकी चाल, दिन पिघला मन में हुआ मलाल।
फिर सोचा मन रखने को, शायद बदला है काल।
ऐसा है भैया तेरा हाल, ऐसा है भैया मेरा हाल,
क्या खोया, क्या पाया, अब मिले है, कब मिलेगें।
लेकर ऐसे कई ख्याल, फिर निकलेगें अपने पथ पर।
ओढे उम्मीदों की ढाल, ऐसा है भैया तेरा हाल,
ऐसा है भैया मेरा हाल

30 वर्षों की बल में सेवा पूरी होने पर आयोजित एक पुनर्मिलन सेमिनार में एक कवि के हृदय से उद्धरित हुई उपरोक्त कविता बदलते समय की व्यथा दर्शाती है। यह कविता अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री रणजीत सिंह ने सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के पुनर्मिलन समारोह के दौरान लिखी और पढ़ी भी।

पूर्वोत्तर की अनन्त यात्रा

वीरेन्द्र कुमार सिंह
नि (मं0) 65 बटा0 केरिपुबल असम

भूमि, पवन, जल जिस मार्ग से जाने की आज्ञा होगी जाऊंगा और जिसे मेरा अधिकारी मुकर्रर किया जाएगा उसकी सारी आज्ञाओं का तन मन से पालन करूँगा-चाहे उसमें प्राण जाने का भय भी क्यों ना हो यह वह अमृत वचन है जो एक सैनिक कभी भूल नहीं सकता। महीनों के अथक प्रशिक्षण के बाद जब कसम परेड में उक्त वचन दुहराने पड़ते हैं तो मन रोमांचित हो उठता है। देश भक्ति की सहस्त्र धारायें बहने लगती हैं। एक ही बात मन में आती है, "जननि जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" अर्थात मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है। ट्रेनिंग बहुत अच्छी से पूरी हुई। प्रशिक्षण के उपरान्त प्रथम पोस्टिंग पूर्वोत्तर क्षेत्र में हुई। हैदराबाद से दीमापुर पहुँचा। यह बात 1983 की संभवतः अप्रैल-मई की है।

ट्रांजिट कैम्प दीमापुर से कानवाई प्रातः वेला में इम्फाल के लिए चली। बूँदाबांदी हो रही थी। एक घंटा भी नहीं बीता था कि ऊपर की चढ़ाई शुरू हो गई। एक तरफ ऊँचे पहाड़ तो दूसरी तरफ सैकड़ों/हजारों फीट गहरी खाई। घने बादलों के बीच भागती गाड़ियों के पास से बादलों की असंख्य टोलियाँ कितनी करीब से गुजर जाती

थी, लगे जैसे मुट्ठी में कैद कर लूँ, जी भर देंखूँ। इस प्रकार की यह पहली यात्रा थी मेरी इसलिए बड़ा रोमांच का अनुभव हो रहा था। मन ही मन गा उठा "दिल कहे रूक जा रे रूक जा, और हाँ, समस्त अनुभव के सारांश यही है कि जो बात पूर्वोत्तर में है वह कहीं नहीं है। हरियाली अनवरत, वर्षा, बांस के पेड़ों की अनंत श्रृंखलायें, सागवान से भरे परे जीवित जंगल, जीवित पहाड़, विस्मयकारी जीवन शैली, पहाड़ों को समतल बनाकर खेती किए गए धान के छोटे-छोटे खेत, बादलों की आँख मिचौनी, और बाँस रूपी संसाधन से बने छोटे-छोटे मकान सब और सब कितने अच्छे लगते हैं, सबके सब कितने अलग लगते हैं।



पर्वोतर क्षेत्र में पेटोलिंग करते हुए *129* बटा*0* केरिपुबल के जवान

याद है, वर्ष, 2002 में कुछ महीनों के लिए जब हमारी बटालियन जोधपुर में थी उस समय हमने पशुओं की स्थिति का बारीकी से अवलोकन किया था। चारे की भारी कमी, वर्षा का नामोनिशां नहीं। ले-देकर चारे के नाम पर नीम या बबूल के पेड़ों से अपनी उमर जी कर गिर चुके सूखे पत्तों का चारा और कुछ नहीं, "कूतर" चारे का घोर अभाव। कुछ दानी, पुण्यात्मा महापुरुषों ने गौशालायें बनवा दी हैं। कहीं-कहीं

प्याऊ भी, परन्तु प्रकृति की व्यवस्था के सामने मनुष्य की क्या हैसियत? एक बछड़े से लगाव हो गया। एक दो दिन कुछ खाने को दे दिया। बस फिर क्या था, उसने मेरा राह चलना मुश्किल कर दिया। कहीं दूर से उसे दीख जाऊँ दौड़कर भागा आता। कुछ न कुछ मिल ही जाएगा। उसके लिए बोरी में चारा मंगाकर रखा। कोई देख न पाए कितने पहले सुबह मैस के पिछवाड़े आकर एक कोने में बैठ जाता। नींद खुलने पर सबसे पहले उसे थोड़ा चारा दे आता। मैस का यदि थोड़ा बहुत झूठा भी बचा हो तो दे देता। आत्मीयता के भाव से दोनों प्राणी अभिभूत हो जाते। फार्मासिस्ट प्रणव सउनि(मं0) ब्रहम्मानंद, सिपाही गुलाम मुस्तफा, महापुरूष हंसराज जी सहित 35 बटालियन के सभी लोग इस शाश्वत प्रेम के प्रत्यक्ष गवाह रहे। मेरे स्थानांतरण के बाद इन मित्रों ने बटालियन के जोधपुर से मूवमेंट तक उस व्यवस्था को जीवित रखा।

कितनी हरियाली है यहाँ। कितने कूतर (चारे) हैं यहाँ। चारे, जंगल, नाले, पहाड़, झरने और काले-काले घने बादल। दोपहर आते-आते हमें कोहिमा में थे। सीधी ढलान पर एक सीध में बने मकानों से ऐसा लगा जैसे कि ऊपर बना मकान नीचे बने मकान पर गिरने ही वाला है। बाँस और लकड़ियों से बने ये मकान कितने अच्छे लगते हैं। हमारी कानवाई अब नीचे की ओर घने जंगलों के बीच गुजर रही थी। नीचे और नीचे जाना है। कुछ देर बाद समतल और धान के खेत और इन्हीं के बीच से गुजरता हमारा काफिला इम्फाल पहुँच गया। एक नियत स्थान के बाद गाड़ियों का काफिला छोटे-छोटे टुकड़ों में अपने-अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ा। मैं 29 बटालियन पहुँचा। तब 29 बटा0 लाम्फेल-पेट (इम्फाल) में थी। वहाँ छोटे-छोटे दो-तीन तालाब थे, उन्हीं पर तमाम सैनिक स्नानादि किया करते। बाल्टी से पानी निकालकर स्नान करना पड़ता। उन तालाबों में जोंक काफी बहुतायत मात्रा में थी, सो यदा-कदा जवानों को इन्हें भी अपने खून का कुछ भाग देना पड़ जाता। लोग चिल्लाते-खींचो मत, केवल उसके ऊपरी हिस्से पर नमक डालो, निकल आएगा और वाकई नमक के स्पर्श मात्र से वह स्वतः ही बाहर निकल कर गिर पड़ता। अपने ही खून को लोग पैरों से मसल देते। कुछ महीने के अन्दर ही सउनि (मं0) में चयन के उपरांत 73 बटा0 गांधीनगर चला गया। बापू की धरती, साबरमती के सन्त की जन्मभूमि पहूँचा। पोरबंदर, सोमनाथ व द्वारिका की भी यात्रायें की और तीन साल के बाद पुनः वापस 68 बटालियन (मणिपुर) के लिए चल पड़ा। मन में पुन: वही उल्लास-उमंग और बादलों को छूने की, उस मनोहारी दृश्य को फिर से एकबार देखने की चाह। तब 68 बटा0 मंत्री पोंखरी इम्फाल में थी और मिलिट्री के साथ जुड़ी हुई थी। परन्तु मेरे ज्वाइन करने के अगले ही महीने वह मूव होकर चुड़ाचान्दपुर के लिए चल पड़ी। मणिपुर का एक और मनोरम स्थल चुड़ाचान्दपुर। ऊँची-पहाड़ी पर स्थित बटा0 मुख्यालय में एक्स आर्मी के एक साथी दिलवाग सिंह थे। वस्तुतः साहसी और हिम्मती। सरदार जी होने के बावजूद (जिनकी पहचान छिप नहीं सकती) के साथ मीलों दूर मोर्निंग वाक पर जाया करते। कभी दो किलोमीटर कभी उससे भी ज्यादा और कभी-कभी और ज्यादा। यह बात वर्ष 1986-87 की है। तब तुलनात्मक रूप से अधिक शान्ति थी। कोई भय नहीं, कोई चिन्ता नहीं। सुना-बाद के वर्षों में स्थितियों में निरन्तर गिरावट आती गई और जवानों का बाहर

निकलना उतना सुगम नहीं रहा। बटालियन मुख्यालय की एक खास विशेषता यह थी कि वहाँ अमरूद के जंगली पेड़ थे। और वे भी इतने थे कि हम सब खा नहीं पाते थे। चूँकि हमारी बटालियन के अधीन ही लो कटक हाईड्रोलिक्टक प्रोजेक्ट की सुरक्षा की जिम्मेवारी थी, इसलिए संभवतः एशिया की सर्वश्रेष्ठ हाईड्रो इलेक्टिक प्रोजेक्ट, लोकटक का दो-तीन बार भ्रमण-दर्शन का संयोग भी मिला। अपने विद्युत उत्पादन की क्षमता तथा अन्य विशेषताओं के कारण इसका देश ही नहीं वरन् एशिया में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में हमारे जवान किन-किन विपदाओं, विपरीत परिस्थितियों व कठिन हालात में अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन कर रहें हैं। यह बगैर इन इलाकों में गए नहीं जाना व समझा जा सकता। हमारे कमाण्डेन्ट थे श्री वसवराज सिद्रमप्पा कल्लूर। स्टेनों की अतिरिक्त ड्यूटियों के निर्वहन के कारण एक दिन प्रातः ही उनका आदेश मिला कि एक कम्पनी में भारी वर्षा व आंधी से बहुत नुकसान हुआ है, चलो देखने चलते हैं। कोमकेइरप के पास स्थित उस कम्पनी को जाकर देख रोना आ गया। वर्षा से भारी तबाही हुई थी। सारा टेन्ट, एसबेस्टस उड़ गया था। कैम्प में वर्षा का पानी इतना जमा हो गया था कि लगे कि चारपाई अब डूबने वाली है। लोगों ने चारपाई पर बॉक्स व अन्य सामान कम्बलों से ढक रखा था, परन्तु इसके बावजूद भी उन्हें अधिक चिन्ता अपनी ड्यूटी व हथियारों की सुरक्षा को लेकर थी। उनके अदम्य साहस, धैर्य व सहनशीलता के आगे हम सब नत मस्तक थे।

वर्ष 1988 में यूनिट का ए0सी0ओ0 में दिल्ली आना हुआ। मुझे भी युनिट के साथ आना पड़ा। लेकिन पूर्वोत्तर क्षेत्र साथ के आत्मीय लगाव ने एक वार फिर वापस पहुँचा दिया। यह 1999 की जुलाई की बात है। 35 बटा0 का मुख्यालय थोउबल में स्थित था। थोउबल जिला स्थित बटा0 मुख्यालय पहुँचाने पर समझ में आया कि इन ग्यारह सालों में परिस्थितियों में कितना बदलाव आ गया है। पहले हम कैम्प से पाँच-पाँच किलोमीटर दूर पैदल सुबह टहलने जाया करते थे, लेकिन अब और खासतौर से थोउबल में एकदम छोटे से एरिया में बसे बटालियन मुख्यालय से पाँच कदम भी दूर नहीं जा सकते। तब मोबाईल का चलन शुरू ही हुआ था और कम लोगों के पास ही था। इसलिए जिन्हे फोन से बात करनी होती वे सुबह में तीन चार गाड़ियों के अन्दर बैठकर सुरक्षा की पूरी तैयारी के बीच डेढ़ कि0मी0 दूर स्थित थोउबल मार्केट तक जाते, बात करके आते। सबकी बात हो ही जाती यह निश्चित नहीं था। लोगों के चेहरों से पढ़ा जा सकता था कि किनकी बात घर-परिजनों से नहीं हो पाई।

परन्तु उस दिन आर0 के0 सिंह द्वि0क0अधि0 के साथ मैं भी गया था। उनकी भी बातें हुई थी। हम दोनों प्रफुल्लित मन से लोगों के साथ लौटे। यह 3 अक्टूबर, 1999 की सुबह की बात है। लौटकर सबसे पहले उन्होने मुझे बुलाया। कि कहा, कोर्स में जाना है, टूर टी0ए0 एडवान्स का स्वीकृति आदेश बना दीजिए, और एक आवेदन पत्र भी। मैं अभी सूगनू जा रहा हूँ, शाम को लौटने तक यह काम हो जाना चाहिए। मैंने कहा हो जाएगा सर। वे चले गए और फिर कभी लौटकर नहीं आएं, सूगनू थाने में एक पहाड़ी के बीच अम्बुश के शिकार हुए और इस घटना में उनके अतिरिक्त एक सहायक कमाण्डेन्ट व अन्य छः जवान भी शहीद हो गए।

वासांसि जीर्णा नियथा विहायं,
नवानि ग्रहणातिनरोपरानी,
तथा शरीरा निविहाय जीर्णा,
अन्यानि संया ति नवानि देही।

".... भूमि, पवन, जल...चाहे उसमें प्राण जाने का भय भी क्यूं ना हो।"

जैसे एक इन्सान भी कभी-कभी क्रुरता कर बैठता है, वैसे ही मन को मोहने, दिल को छूने वाली इन हरियालियों ने क्रुरता की। ये जंगल ना होते तो अम्बुश ना होता, वे उग्रवादी छुपते कहाँ, जाते कहाँ? ये घने जंगल व यहाँ की भौगोलिक बनावट सहज ही उग्रवादियों के छुपाव के लिए छद्म साधन बन जाते हैं। तीन पहाड़ियों की तो पैदल ही खाक छानी थी फिर चौथी पहाड़ी को क्यों छोड़ दिया? संभवतः इसलिए कि जल्दी पहुँचकर सारे काम सम्पादित कर जल्द वापस लौटें और बाकी बचे कार्यों को निष्पादित कर सकें। लेकिन प्यारे से दीखने वाले मन को मोहने वाली इन झाड़ियों ने, हरियालियों ने, चुगली खाई, दगा दे गई। उस भयंकर भयातुर माहौल में भी हमारे जवानों ने हिम्मत नहीं हारी। खासतौर से एस0आई0 प्रताप सिंह ने जिन्होंने एक दो बम के गोले दागे जिससे घात लगाकर बैठे उग्रवादी और अधिक नुकसान ना कर सके खास तौर से हथियार व गोले बारूद सुरक्षित रह गए। एक सैनिक की ट्रेनिंग काम आई। और यह सीख भी दे गयी कि ऑपरेशनल एरिया में भावनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है। वहाँ केवल दृढ विश्वास, संकल्पशक्ति, साहस व ट्रेनिंग की मौलिक सिखलाई ही काम आती है, उसे ना भूलें, ना हीं नजरअंदाज करें। मुझे ठीक से याद है, उस दिन ठीक आधी रात को हम समस्त स्टाफ कमाण्डेन्ट श्री ओ0 डी0 माथुर के ऑफिस चैम्बर में एकत्रित थें, शब्द नहीं थे। शौक, सम्बेदना और वियोग के भाव थे। जीवन की एक ऐसी भी अवस्था होती है जब आँखें खुली होती हैं, पर कुछ दिखाई नहीं देता, कान खुले रहते हैं, पर कुछ सुनाई नहीं देता। सब उपस्थित थे परन्तु केवल शोक के भाव, सम्बेदानाओं के भाव-शब्द नहीं, आवाज नहीं, उन समस्त शहीदों को हम सबका सहस्त्र नमन्।

"न जायते मृयते वा कदाचित्
नायं भूत्वा भविता वा. न. भूयः
अजो नित्यः शाश्वतोयं पूराणे,
न हन्यते हन्य माने शरीरे।"

और हम पूर्वोत्तर को ही क्यों दोष दें। तथाकथित शान्त कहे जाने वाले क्षेत्र

झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश के नक्सली प्रभावित क्षेत्रों की हालत क्या इससे अलग और क्या इससे बेहतर हैं? कदापि नहीं। अभी 3 सितम्बर-2005 की बात है। माईन प्रोटेक्टेड व्हीकल (एमवीपी) में बैठ कर लौट रहे जवान, छत्तीसगढ़ के वीजापुर जिले के घने जंगलों से ऑपरेशन ग्रिनहंट अभियान से लौट ही रहे थे कि गाड़ी को विस्फोटकों से उड़ा दिया गया जिसमें हमारे 22 साथी शहीद हो गए। मुझे याद है 9 सितम्बर, 2005 का वह काला दिन सम्भवतः रविवार था। हैदराबाद में बटालियन मुख्यालय था। सीआरपीएफ सेवा से त्यागपत्र दे चुके पूर्व एसआई ए० विष्णु कुमार आए थे, उनके साथ दोपहर का खाना खा रहा था, एक जवान आया। कुछ परिस्थतियां ऐसी होती हैं जिनमें उससे जुड़े व्यक्ति के चेहरे को पढ़ा जा सकता है, भाव से सब कुछ जाना जा सकता है। उसने बोला सी०ओ० साहब ने याद किया है, सब लोग इकट्ठा हो रहे हैं। मैंने पूछा कोई बड़ी घटना?" उसने कहा, हॉ। मैंने फिर पुछा कितने ? उस जवान ने कहा, शायद दस। बस, दिल बैठ गया। मन में एक ही कामना थी, यह झूठ हो जाए, जब कैम्प पहुँचे तो मालूम हुआ कि कोई हताहत नहीं हुआ। परन्तु नियति की क्रूर गति को कोई नहीं जानता। हॉ, राहत की बात यह हुई कि जब कैम्प पहुँचा तो यह संख्या घटकर पॉच पर टिक गई थी, विभिन्न श्रोतों से फिर जानने का प्रयास किया कि यह भी झूठ निकले और ना हो तो कम से कम, संख्या कम हो आए। परन्तु होनी को कोई टाल नहीं सकता और ईस्ट गोदावरी जिले के। रम्पाचौड़ावरम थाने के मरिडमिल्ली के पास आई.ई.डी. ब्लास्ट में हमारे 35 बटा० के पॉच जवान शहीद हो चुके थे। सिविल ट्रक जिसमें सभी सवार थे, के लगभग परखचे उड़ गए, पर्याप्त मात्रा में राशि लेकर कमाण्डेन्ट श्री के. अर्केश के नेतृत्व मे एक टीम तुरंत प्रस्थान कर गई। हैदराबाद से चली ट्रेन सुबह राजामुन्द्री पहुंची, वहाँ से एक कार व एक टाटा सूमो में हम लोग विशाखापत्नम पहूॅचे, जहॉ स्थानीय प्रशासन द्वारा पॉचों शवों को राजकीय सम्मान के साथ अन्तिम भावभीनी विदाई की तैयारियॉ की जा चुकी थी। सी०ओ० साहब को देखते ही मिडिया वालों ने घेर लिया व प्रश्नों की झड़ी लगा दी। उन्होंने भरी ऑखों से केवल इतना ही कहा, **"It is not appropriate to comment anything at this moment. sorry please."** महानगर के मेयर स्थानीय राजनेतागण, वरिष्ठ पुलिस पदाधिकारी व हजारों की संख्या में आम जनता शहीदों को भावभीनी विदाई हेतु एकत्रित थी। सब बारी-बारी आते, पुष्पांजलि अर्पित करते, बैण्ड रो बजता, फिर दूसरे, तीसरे और क्रमशः। अन्त में सैनिकों ने अपने हथियार उलटे कर लिए, बिगुल बज उठा, सब का दिल चिल्ला उठा। विदाई समारोह सम्पन्न हुआ। सबकी आँखें नम थी, आखिर मातृभूमि की सेवा करते उनके पॉच भाई जो काम आए थे। बाद में हम सब अन्य घायलों को देखने अस्पताल गए और उस स्थान पर भी गए जहॉ आई ई डी ब्लास्ट की घटना हुई थी। कितनी विपरीत परिस्थितयों और विषम भौगोलिक वातावरण में हमारे जवान अपनी सेवायें देते हैं।

यह उड़ीसा के कोरापुट, रायगढ़ा, संबलपुर, छत्तीसगढ़, झारखण्ड और बिहार के नक्सली प्रभावित क्षेत्रों, आन्ध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी, खम्यम व अन्य नक्सली प्रभावित जिले, मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश, असम के उल्फा प्रभावित क्षेत्रों, समस्त

नागालैण्ड व मणीपुर के चूडाचान्दपुर व थौउबल जैसे इलाकों में जाये बगैर नहीं समझा जा सकता है। हमें अपने जवानों पर गर्व है और उससे भी अधिक गर्व है उन शहीदों पर जिन्होंने मातृभूमि की सेवा करते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पे मरने वालों का यहीं बाकी निशां होगा।"

चौथी बार फिर पूर्वोत्तर में तब आना हुआ जब मेरा स्थानान्तरण पुलिस उप महानिरीक्षक खटखटी में हुआ। नागालैण्ड का एक मात्र व्यावसायिक शहर है दीमापुर जिसे नागालैण्ड की वाणिज्य राजधानी कैपिटल कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगीं। बड़े पैमाने पर व्यावसायिक कारोबार होता है और जीवनोपयोगी समस्त वस्तुयें मिल जाती है। रेलहेड से जुड़ा होने के कारण इसका महत्व और भी है। और यहीं मणिपुर का प्रवेश द्वार भी है जहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा मणिपुर आया जाया जा सकता है। यहाँ से दो घंटे की यात्रा करके असम के मशहूर काजीरंगा नेशनल पार्क भी जा सकते हैं। दीमापुर का "हांगकांग मार्केट" यात्रियों और खासकर फौजियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है, जहाँ देशी व विदेशी वस्तुयें उचित दाम पर मिलती हैं। लेकिन अगर देश के एकमात्र कुत्तों के हाट का आपने दीमापुर में दर्शन भ्रमण नहीं किया तो आपने कुछ नही देखा इस प्रकार के दर्शन का सौभाग्य शायद हीं कहीं मिल सके। एक हाट जिसमें कुत्ते ही कुत्ते, गर्दन तक बोरियों में बंधे कुत्ते, सफेद कुत्ते, लाल कुत्ते, काले कुत्ते और कुत्ते ही कुत्ते। अगर एक भौंकता तो सब भौंकने लगते और जब वे भौंकते-भौंकते थक जाते तब चुप हो जाते। तब केवल निरीह दो काली काली ऑखे कैद की अवस्था को परिलक्षित कर जाती। ऐसे जैसे वे बोल रही हों, मुझे आजाद करा दो ना। उन्हें क्या मालूम, वे दोपाये के शिकार होकर उनके भोज्य पदार्थ बन चुके हैं।



देश के पूर्वोतर क्षेत्रों में सुरक्षा जांच करते *49* बटा० केरिपुबल के जवान

रानी इन्डस्ट्रियल एरिया, जिला कामरूप असम स्थित 65 बटा० के मुख्यालय में जब इन शब्दों को कलमबद्ध कर रहा हूँ तब पूर्वोत्तर की यह मेरी पॉचवी यात्रा है। सब कुछ पूर्व जैसा ही है। वही जीवन शैली, वही रहन-सहन, भाषा और वही हरियाली वही जंगल, बॉस के पेड़ों की अनन्त श्रृंखलायें, झील तालाब, धान के खेत और चारे ही चारे। काश इन चाराओं को हम, राजस्थान, जोधपुर ले ला पाते, चारे की तलाश में भटक रहे उन असंख्य पशुधन को ये उपलब्ध करा पातें और यह भी कितना अच्छा होता अगर वहाँ की शान्ति, नीखता, स्वच्छदंता, उन्मुक्ता यहाँ पूर्वोत्तर में ले कर आ पातें, काश ऐसा हो पाता। और कभी ऐसा हुआ तो अपने को धन्य समझुंगा, अब मेरी पूर्वोत्तर की अनन्त यात्रा पूर्ण हुई। आईए हम सब पूर्वोत्तर में सुख, समृद्धि व शान्ति की कामना करें।

अमनों चैन है मुकाम

हनुमन्त सिहं रावत

कमाण्डेन्ट-152 बटालियन केरेपुबल

30 जनवरी, 2005 की शरद की रात। रह रह कर बर्फवारी हो रही थी कि डोडा (जम्मू व कश्मीर) शहर से करीब 10 किमी० दूर पहाड़ी पर स्थित गॉव नाशला बजरानी, थाना डोडा के अब्दुल अजीज के घर के दरवाजे पर करीब साढ़े ग्यारह बजे दस्तक हुई। घर के अन्दर से ही अब्दुल अजीज ने पुकारा, "कौन है?" जवाब मिला "मुजाहिदीन"। अब्दुल अजीज एक कुशल बढ़ई था और ढोक बजाने में माहिर था। आतंकवादी जो सर्दियों में ऊँचे पहाड़ों की कन्दराओं में छिपे रहते थे, उससे कई बार उनके लिए ढोक बनाने को कह चुके थे, परन्तु वह हर बार टाल जाता था।

घर के कमरे में 55 वर्षीय अब्दुल अजीज, उसकी 45 वर्षीय बीबी नसीना बेगम, 15 वर्षीय लड़का खुर्शीद अहमद, 10 वर्षीय बेटी रूबीना बानों, 5 वर्षीय बेटी रेहना बानू व ढेड वर्षीय शाफिया बानू थे। बच्चे सो रहे थे व मॉ बाप जाग रहे थे। सर्दी के कारण सब बच्चे जो एक दूसरे से सट के सो रहे थे, दरवाजे पर लगातार होती दस्तकों से जाग गए। छोटों ने तो रोना शुरू कर दिया अब्दुल अजीज व उसकी बीबी ने हिम्मत रखते हुए दरवाजा खोलने से मना कर दिया और शोर मचाना शुरू कर दिया। परन्तु पूरे आस पड़ोस में इतना हिम्मती कौन था जो उनकी पुकार का जबाव देता।

कड़ाके की सर्दी के कारण बच्चे जो उठ गए थे व दुबक कर बैठे थे। अब और भी सहम गए थे। भय से उनके गले सूख गये थे और छोटों ने रोना भी बन्द कर दिया था। आतकंवादियों ने अब्दुल अजीज के दरवाजा न खोलने को उनके हुक्म की नाफरमानी मानते हुए घर की खिड़की को तोड़कर एक हथगोला अन्दर फेंक दिया।

हथगोले के धमाके के साथ अब्दुल अजीज की दुनिया ही उजड गई। उस धमाके ने उसके परिवार को लील लिया। सिर्फ वो और उसकी ढेड़ वर्षीय बेटी शफिया बानू ही जीवित बचे और वो भी जख्मी हालत में। इसी धमाके के साथ ही अब्दुल अजीज की उस बहादुरी के जज्बे का भी अन्त हुआ। सिपाही की बहादुरी और आम आदमी की बहादुरी में फर्क है। बहुधा पहली बहादुरी हथियार और ताकत से होती है जबकि दूसरी कलेजे की हिम्मत से। अब कश्मीर में अमन् आये या बहारें इसे गुलों-गुलजार कर दे, इससे अब्दुल अजीज को कोई सरोकार नहीं। आवाम् का एक महत्वपूर्ण पुर्जा टूट कर बिखर चुका था।

जबावदारी किसकी है अभी यह तय होना बाकी है। (सच्ची घटना पर आधारित)

"यात्रा"

एक यात्री बस में चढ़ा
कंडक्टर ने पूछा कहा से बैठे हो,

यात्री बोला बैठना कहॉ से, हम तो
बस चली है तभी से खडे हैं।
देखकर यात्री की खड़ी बोली,
कंडेक्टर बोला टिकट ले लो देते क्यों हो गोली।
यात्री बोला बुखार आया तो गोली खानी पडेगी।
गर्मी बहुत है अब बस चलानी पडेगी।
कंडेक्टर बोला टिकट लेते हो या चैकर को बुलाऊॅ,
एक महीने के लिए अन्दर कराऊॅ,
यात्री बोला तुम्हारी बस से अच्छी रेल है,
जेल भेजना कोई बच्चों का खेल है।
आजकल घूसखोर मर्डर करने वाले जेल नहीं जाते,
जनता का माल जनता के सामने खाते।
इतने में दो पुलिस वाले आए,
एक ने इधर से पकडा एक ने उधर लगाया,
बस की यात्रा मंहगी पडी 200 रु० देकर घर आया,
आते ही दरवाजे पर लिखवाया,
बिना टिकट यात्रा मत करना,
चाहे अपने जेब में पुराना टिकट ही रखना,
इसलिए कहता हूॅ दोस्तों कानून गरीबों के लिए होता है।
अमीरों के पैर की ये जूती है।
कर-कर घौटाले पहनते है सफेद कपडे,
कानून की चलते हैं ऊंगली पकडे
जनता से माग कर वोट जनता पर ही चढते है,
खुद खाकर देश को खुद आवाद करते हैं।

सि० रविन्द्र सिंह
82 बटालियन कारिपुबल

आधुनिक समाज में नारी की भूमिका

ह०. (आरमोरर) अर.बी. कुलकर्णी
ए.डब्ल्यू. एस-7

हमारे भारतवर्ष में नारी का स्थान हमेशा से पूज्यनीय रहा है। जब हम भारतीय संस्कृति के इतिहास को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि नारी का स्थान पारिवारिक व सामाजिक भलाई में हमेशा ऊँचा रहा है। इसलिए तो कहा गया है कि नारी समाज की नींव है। हमारे वेदों में भी नारी को श्रद्धा और प्रेम का प्रतीक बताया गया है। नारी इस जगत के श्रृष्टिकारिणी हैं, जगद्गुगरू शंकराचार्य ने नारी को पूज्य और श्रृष्टि की नींव बताते हुए कहा है:-

यत्र पूज्यन्ते नारीणाम्। तत्र निवेशती देवायः।

इसका अर्थ यह है कि जहॉ नारी की पूजा होती है वहॉ देवता निवास करते हैं। इस प्रकार समाज में नारी को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। समाज तथा देश के हित को ध्यान में रखते हुए नारी को यथा स्थान दिलाने की आवश्यकता है। जहॉ पर नारी का इतना महत्व हो, वहाँ आज के परिवेश मे वह जीवन के हर क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभा सकती है। एक समय था जब नारी घर की चारदिवारी में कैद रहती थी, चूल्हा-चक्की व बच्चों का पालन पोषण ही उसका काम था, परन्तु आज के परिवर्तनशील युग में वह घर से बाहर आकर अपनी स्वयं की प्रतिभा को दुनिया के सामने उजागर कर रही है। और हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा चुकी है। आज नारी संगीत, साहित्य, कला और, राजनीति क्षेत्र में भी अपनी दक्षता को उजागर करते हुए जो भूमिका निभा रही है वह देश के लिए गौरव की बात है। पर जब हम ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के बारे में सोचते हैं, जो आज भी निरक्षरता तथा गरीबी की बृहद् समस्या से पीड़ित है, बड़ा दुख होता है। इसका मुख्य कारण अशिक्षा और आर्थिक रूप से पिछड़ापन है। लेकिन अब धीरे-धीरे सरकार नारी शिक्षा को विशेष प्राथमिकता दे रही है, और हाल ही में सरकार द्वारा एक शिक्षा नीति बनाई है जिसमें लड़कियों को 12वीं तक शिक्षा निःशुल्क प्रदान करने की व्यवस्था दी गई है। उच्च शिक्षा के लिए भी लडकियों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। देश के हर गॉव में आज स्कूल खुले है, पर आर्थिक मजदूरी अभी भी साक्षरता के आड़े आ रही है, खासकर लड़कियों को पढ़ाने के लिए स्कूल नहीं भेजा जा रहा है। कुछ लोग यह मानते हैं कि लड़की पराया धन है, उसे पराये घर जाना है। यह धारणा बिल्कुल गलत है। जब लड़की अपनी प्रतिभा को जागृत कर आत्मनिर्भर बनेगी तो वह अपने भविष्य के सुखी जीवन की नींव स्वंय रख सकती है।



श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा में तैनात बल की मुस्तैद महिला कार्मिक

बदलती परिस्थितियों में साक्षरता व्यापक प्रचार-प्रसार से ही नारी का उत्थान संभव हैं। हम रोजाना रेडियों, टी.वी. और समाचार पत्रों में पढ़ते-सुनते रहे हैं कि नारी पर अन्याय और शोषण हो रहा है। ये सब घटनाएं इस लिए घटित हो रही है कि पुरूष प्रधान समाज नारी की भूमिका के प्रति जागरूक नहीं है। उनकी मानसिकता ठीक नहीं है। वे लोग शिक्षा या साक्षरता के महत्व को अभी तक ठीक से नहीं समझ पाये हैं। जरूरत इस बात कि है कि समाज में नारी की विशिष्ट भूमिका को ध्यान में रखकर उसे आगे बढ़ने के मौके दिए जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में नारी शिक्षा पर समाज जोर दें ताकि वह एक कुशल गृहणी बनकर अपने परिवार को कुशलता से चला सकें। आज का युग परिवर्तनशील युग है। समाज में अग्रणी भूमिका व पारिवारिक जिम्मेदारी जैसी दोहरी भूमिका निभाने वाली नारी भी अब शोषण तथा अन्याय के विरोध खड़ी हो गयी है। और देश की विधान सभाओं तथा लोकसभा जैसी प्रमुख संस्थाओं में चुनकर अपनी प्रतिभा को देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रति स्थापित कर रही है। स्व० प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गॉधी ने हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि विश्व में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा मनवाया था। आज नारी विश्व के हर राष्ट्र के निमार्ण में सामाजिक व राजनैनिक क्षेत्रों में पुरूषों के समान कार्यरत हैं। चाहे वह घर, परिवार की जिम्मेदारी की बात हो, राजनीति की, खेल जगत की, वैज्ञानिक उन्नति, या फिर

सुरक्षा की, आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कार्य करते हुए परिवार समाज व देश की प्रगति में सहायता दे रही है।

यदि सुखी और समृद्ध समाज बनाना है तो हमें नारी शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। शिक्षित नारीवर्ग का भी यह कर्तव्य है कि वे समाज के अनपढ़ बच्चों को शिक्षित कर एक अच्छा भविष्य दे ताकि वे आगे चलकर देश के एक श्रेष्ठ नागरिक बने। इसलिए हमें नारी को सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रसस्त करते हुए उसे पुरूषों के समान हर क्षेत्र में आगे लाने के अवसर देने होगें। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह सामाजिक अंधविश्वासों जैसे बालविवाह, सती–प्रथा और दहेज प्रथा जैसी बुराईयों में नारी के मनोबल को मजबूत करते हुए उसका साथ दे। नारी ही केवल अन्यायपूर्ण नीतियों को न्यायपूर्ण नीतियों में परिवर्तित कर सकती है। जरूरत है उसे जागृत होने की, सुदृढ़ बनने की। आज के युग में जिसे हम 'कलियुग' कहते हैं, नारी अपनी बहुआयामी प्रतिभा द्वारा 'सतयुग' की ओर मोड़ सकती है। अतः आज जरूरत है तमाम जनमानस को आत्मचिंतन की कि नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व व स्वरूप को पहचानने की। जहॉ तक साक्षर महिलाओं के उत्थान का प्रश्न है, अगर वे चाहे तो अपने जीवन की हर मंजिलों को बहुत आसानी से तय कर सकती हैं। साक्षर नारी अपने परिवार व समाज को ही केवल गौरवान्वित नही करेगी बल्कि अन्य अनपढ़ जनता को साक्षरता के प्रति जागृत कर उन्हें भी सुखी जीवन जीने की राह की ओर ले जा सकेगी। आज शिक्षित महिलाओं को उन क्षेत्रों में विशेष ध्यान देने की जरूरत है जहॉ पर साक्षरता के प्रचार-प्रसार की अत्यंत कमी है। दहेज प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह इन सभी सामाजिक कुप्रथाओं के रोकथाम के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों ने कानून तो बना दिये परन्तु इसके बावजूद भी आज ये सभी सामाजिक कुप्रथाएँ आम जनमानस के सुखी जीवन को दीमक की तरह तहस-नहस कर रही हैं। शिक्षित नारी इस क्षेत्र में बहुत कुछ कर सकती है। वह प्रत्येक जिला व तहसील में रचनात्मक कार्यक्रमों, विचार गोष्ठियों, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा इन बुराईयों को रोक सकती है। इस तरह से सदियों से चली आ रही इन सामाजिक कुप्रथाओं को मिटा सकती हैं। नारी समाज को जागृत कर उसमें अमूल परिवर्तन ला सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता प्रसार की धीमी गति को तेज कर सकती हैं। देहाती लोग कृषि कार्यों में ऐसे उलझे रहते हैं कि उनको अपने परिवार के बच्चों के पढ़ाई-लिखाई के प्रति ध्यान ही नहीं रहता और न ही वे बच्चों को स्कूल भेजने के प्रति दिलचस्पी रखते हैं। यदि उनकी महिलाएं शिक्षित होगी तो वे बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देगी। इस तरह के ग्रामीण माहौल में शिक्षित महिलाओं का योगदान समाज के उत्थान की दिशा में 'मील का पत्थर' साबित हो सकता है। जरूरत समाज और प्रशासन में महिलाओं को उत्साहित करने की है। तथा ग्रामीण बच्चों व खासकर लड़कियों के उत्थान हेतु कारगर कदम उठाने की। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वे देश व समाज के हित को ध्यान में रखते हुए नारी वर्ग के विकास की दिशा में आगे आये और उन्हें वह गौरव दिलाए जिसकी वह हकदार हैं। अंततः नारी के लिए कहा गया है :-

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है।

जग को जीवन देनेवाली, मौत भी तुझसे हारी है।

बल की गत तीन माह की महत्वपूर्ण कार्रवाईयां

बीजापुर (छतीसगढ) नक्सल विराधी कार्रवाई

3सितम्बर, 2005 समय लगभग शाम के पौने सात बजे होगें, 87 बटालियन के केरिपुबल के कार्मिक एन्टी माईन्स सुरक्षित गाड़ी से नक्सलवादियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान से लौट रहे थे कि पडेडा गॉव के नजदीक नदी क्षेत्र में थाना बीजापुर जिला वीजापुर, छतीसगढ़ में नक्सलवादियों ने घने जंगल के बीच से निकलने वाली सड़क के बीचो बीच में आई०ई०डी० बिछा दी और जैसे ही केरिपुबल की एन्टी माइन गाड़ी गुजरी भारी बिस्फोट हुआ जिससे गाड़ी में सवार बल की गश्ती पार्टी पूरी तरह जख्मी हो गयी और गाड़ी के परखच्चे उढ़ गये। इस विस्फोट मे केरिपुबल के 22 जवान तथा राज्य पुलिस के 2 जवान शहीद हो गये। केरिपुबल की पार्टी के नेतृत्व करने वाले कमाण्डेन्ट श्री सी.वी.के. टोपो भी बुरी तरह घायल हो गये। घटना की जानकारी मिलते ही बल की अन्य टुकड़ी घटना स्थल पर तुरन्त भेजी गयी परन्तु रास्ते में नक्सलवादियों ने उसे फायरिंग करके इंगेज कर दिया। इस घटना में हवलदार हीरा बल्लभ, हव० सुभाष सिंह, रशीद अहमद, हव.(आर.ओ.) बी. एन. पति, सिपाही हरिराम, राजेन्द्र, जसवीर सिंह, चतुर सिह, धर्मेन्द्र राय, मोहमद नजमूल हुसैन, भुलनशाह, रनधीर मृत्युंजय कुमार, उमेश्वर प्रसाद सिंह, युगल कुमार राय, विनोद कुमार, अरूण कुमार, अविनाश कुमार, सी पुरूषोत्तम, एच. के. मंडल, सुगंदा कोच, नर्सिह सहायक आर०एन० मेहतो कर्तव्य पथ पर शहीद हो गये।

बिनाइधिया, चतरा (झारखण्ड) नक्सल विराधी कार्रवाई

8 अक्टूबर, 2005 को 136 बटा० को खबर लगी की कि एम०सी०सी० के नक्सलवादी गंज गॉव के एक घर मे कुछ नकदी छिपाकर रख रहे हैं। केरिपुबल की 136 बटा० की दो प्लाटून, सहायक कमाण्डेन्ट श्री जे०डी० अमर के नेतृत्व में एस.डी.पी.ओ. छपरा तथा राज्य पुलिस के कार्मिकों ने साथ मिलकर रेड तथा सर्च आपरेशन चलाया तथा एक स्टील का ताला लगा बॉक्स बरामद किया। बक्से को घर से बाहर लाया गया और जैसे ही बाक्स का ताला तोड़ा गया एक भयानक विस्फोट हुआ। साथ ही पहले से छिपे उग्रवादियों ने बल के जवानों पर अंधा-धुन्ध फायरिंग कर दी। बल के जवानों ने भी फायरिंग का जबाब दिया और 1030 बजे तक गोली बारी चलती रही जब तक कि और पुलिस फोर्स घटना स्थल पर नहीं पहुंची। इस घटना में

बल के सहायक कमा० श्री जे०डी० अमर, उप नि० वाहिद अली, हव० शान्तेस्वरूप, सिपाही नानक सिह, अश्वनी कुमार, अब्बदुल रसीद और सिपाही अब्बदुल रसीद खान तथा नाजीर अहमद खान, जगदीश सिंह कतर्व्य पथ पर शहीद हो गये।

तुलसीबाग कालोनी, श्रीनगर आतंक विरोधी कार्रवाई

18 अक्टूबर, 2005 को लगभग 09:50 बजे पुलिस थाना शेरेगड़ी की तुलसीबाग कालोनी, श्रीनगर में अचानक एक संदिग्ध व्यक्ति एम०एल०सी० मोहमद यूसूफ तंरगामी के निवास में घुसने की कोशिश करने लगा, वह एम०एल०ए० से मिलना चाहता था जब उसे एम०एल०ए० के पीएसओ ने सुरक्षा जॉच के लिए मेन गेट पर रोका तो उसने अपने छिपे हुए हथियार को निकालकर पी०एस०ओ० के ऊपर फायरिंग कर दी और पी०एस०ओ की फायर हिट होने से घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गयी। सुरक्षा डयूटी के लिए तैनात केरिपुबल की टुकड़ी के संतरी ने आतंकवादी के ऊपर तुरन्त जबाबी फायर किया और आतंकवादी को घायल कर दिया। घायल होने के बावजूद भी आतंकवादी अंधा धुन्ध फायरिंग करता हुआ पास के सचिवालय स्टाप की विल्डिंग में घुस गया। केरिपुबल के जवानों तथा तंरगामी के दूसरे पीएसओ ने पीछा किया और आतंकवादी को सीढ़ियों पर चढ़ते हुए मार गिराया। मारे गये आतंकवादी से एक ए०के०-47 राइफल एक मैगजीन, 6 गोलियां तथा 6 हथगोले बरामद किये। जब ये घटना घटित हो रही थी वही पास में 10-15 आदमियों के एक झुण्ड के बीच एक दूसरा आंतकवादी जम्मू कश्मीर के शिक्षा मंत्री श्री गुलाम नवी लोन के निवास में छिपा हुआ था जैसे श्री लोन बाहर निकले उनके ऊपर उस आतंकी ने फायरिंग कर दी। फायरिंग में श्री गुलाम नवी लोन, केरिपुबल की 112 बटा० का हव० शम्भू प्रसाद भगत दो अन्य सिविलयन घायल हो गये जिनकी बाद में मृत्यु हो गई। गोली की आवाज सुनकर केरिपुबल की अन्य टुकड़िया कमाण्डों टीम के साथ घटना स्थल पर पँहुची। केरिपुबल के जवानों, एसओजी तथा जम्मू कश्मीर पुलिस ने एरिया की घेरा बंदी कर दी और जॉच अभियान शुरू किया। ए०एस० कालेज के पास लगे गोगीबाग में एक सिविलियन के घर से एक ए०के०-47 राइफल, एक मैगजीन, 5 गोलियां तथा 3 हथगोले बरामद हुए। घर के मालिक ने यह स्वीकारा कि एक युवा आतंकवादी उसके घर पर हथियार एवं गोलाबारूद छोड़कर गया था। सभी घायलों को तुरन्त अस्पताल ले जाया गया जहॉ अस्पताल में गुलाम नवी लोन तथा केरिपुबल के हवलदार शम्भू प्रसाद भगत की मृत्यु हो गयी।

अमीरा कादल श्रीनगर आतंक विरोधी कार्रवाई

23 अक्टूबर,2005 के लगभग 1405 बजे केरिपुबल के जवान थाना शेरगड़ी, अमीरा कादिर, श्रीनगर क्षेत्र में एरिया की छानबीन कर रहे थे तभी एक अंजान आतंकवादी ने साइलेंसर पिस्टल से पार्टी के ऊपर फायरिंग कर दी और गोली बल

के उ०नि० मिथाई लाल के सिर तथा सिपाही रूपाकेशोर की छाती को भेदती निकल गई। दोनों कार्मिकों को शीघ्र अस्पताल में ले जाया गया जहा उप नि० मिथाई लाल वीर गति को प्राप्त हो गये।

लालचौक, श्रीनगर आतंक विरोधी कार्रवाई

14 नवम्बर,2005 को लगभग 1500 बजे केरिपुबल की 131 बटा० के लाल चौक पर बने बंकर पर कुछ अज्ञात आतंकवादियों ने हथगोला फेंका, साथ ही पार्क व्यू हास्पीटल से फायरिंग कर दी। इस कार्रवाई में केरिपुबल के सिपाही धनंजय सिंह तथा सिपाही घनश्याम कुमार शहीद हो गये और केरिपुबल के चार जवान एवं एक राज्य पुलिस का जवान घायल हो गया। घायलों को तुरन्त अस्पताल में भेजा गया। केरिपुबल द्वारा क्षेत्र की घेरा बंदी कर जॉच तलाशी ली गयी। इस कार्रवाई में एक पाकिस्तानी आतंकवादी अब्बू खालिद एवं एक अन्य आंतकवादी अजीज अहमद उर्फ अबी सुमन्ना लश्करे तोएबा को गिरफ्तार किया। घटनास्थल से एक ए०के०-47 राइफल, 5 मैगजीन, 3 हथगोला, 100 पाकिस्तानी नकदी तथा अन्य संदिग्ध दस्तावेज बरामद हुए।

अवन्तीपुरा, पुलवामा आतंक विरोधी कार्रवाई

16 नवम्बर , 2005 को लगभग 0945 बजे अवंतीपुरा बस स्टैंड जिला पुलवामा में जाने वाली केरिपुबल की कॉनवाई के ऊपर अवन्तीपुरा मिनी बस स्टेंड पर कुछ अज्ञात आतंकवादियों ने अंधा-धुन्ध फायरिंग कर दी, आरओपी डयूटी पर तैनात केरिपुबल के जवानों ने तुरन्त जबावी कार्रवाई की, परन्तु घनीआवादी एवं भीड़ भाड़ का लाभ उठाते हुए आतंकवादी भाग गये। इस कार्यवाही में केरिपुबल की तीन बसों पर फायरिंग हुई जिसमें बैठे बल के तीन जवान घायल हो गये। आर.ओ.पी. डयूटी पर तैनात केरिपुबल के जवान को भी गोली लगी और वह बुरी तरह घायल हो गया जिसकी बाद में मृत्यु हो गयी। इसकी सूचना मिलते ही बल की और टुकड़िया आ गई तथा एरिया की घेरा बन्दी कर दी गई। क्षेत्र की सघन जॉच की गई परन्तु खाली गोलियों के खोखे के अलावा और कुछ हाथ नहीं लगा।

श्रीनगर के फिरदोस सिनेमा परिसर पर आतंक विरोधी कार्रवाई

यह घटना 23 नवम्बर, 2005 को लगभग 1430 बजे श्रीनगर के फिरदोस सिनेमा हाल परिसर में तैनात डी/96 बटा० की हैं। अचानक भीड़ भरे इलाके से दो फिदायीन आम जनता के भेष भूषा। में डी/96 बटा० के कैम्प में फायरिंग करते तथा हथगोला फैंकते हुए अंदर घुस गये। एक आतंकवादी को केरिपुबल के जवानों ने तुरन्त कार्रवाई कर कैम्प के अंदर घुसने से पहले ही मार गिराया, परन्तु दूसरा आतंकवादी

पारेसर में घुसने में कामयाब हो गया। केरेपुबल के जवानों ने अदम्य साहस एवं कुशल व्यावसायिक दक्षता का उत्कृष्ट प्रर्दशन करते हुए उसे भी पकड़ लिया और निहत्था कर दिया। दोनों ही फिदायनी मारे गये जिनकी पहचान मंसुरियन ग्रुप लश्करे तोइवा आतंकी ग्रुप के गुलाम नवी लोन तथा विलाल अहमद मीर के रूप में की गई। आतंकवादियों से दो ए०के० 56 राईफल, 8 मैगजीन, 159 असला, 7 चीनी हथगोला तथा अन्य संदिग्ध दस्तावेज बरामद हुए। इस कार्रवाई में हमारे 3 वीर साथी हव० रूधाराम, सुभाष चन्द एवं सिपाही वी०पी० चन्द्रन कर्तव्य पथ पर शहीद हो गये।

तमेंगलोंग मणिपुर उग्रवाद विरोधी कार्रवाई

12 नवम्बर, 2005 को लगभग 1415 बजे जब केरिपुबल की 132 बटालियन के जवान चेनलॉन जिले के थाना जिरीबान के नजदीक तोंलीन क्षेत्र में तलाशी एवं जॉच कर रहे थे तो लगभग 25 अज्ञात उग्रवादियों ने बल की पार्टी पर अचानक फायरिंग कर दी। के०रि०पु०बल के जवानों ने भी जबाबी कार्रवाई करते हुए उन पर फायर किया। इस गोलीबारी में के०रि०पु०बल के हवलदार निशान सिंह, हवलदार/(चालक) विजय कुमार सिंह, सिपाही संजीव कुमार सिंह, सिपाही धनंजय सिंह, तथा सिपाही घनश्याम कुमार कर्मभूमि पर शहीद हो गये।

शहीदों की स्मृति में

वर्ष 2005 के दौरान देश के विभिन्न भागों में आतंकवादियों, उग्रवादियों तथा नक्सलवादियों के विरूद्ध चलाए गये विभिन्न अभियानों में हमारे कुछ साथी कर्तव्य पथ पर शहीद होकर वीरता की अपनी ऐसी मिसालें कायम कर गये हैं जो आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का सबक बनेंगी। हम ऐसे वीर साथियों को सलाम करते है और श्रद्धाजलि देते हैं। गत तीन माह के दौरान विभिन्न कार्रवाईयों में शहीद हुए साथियों का पूर्व पृष्ठों पर दिया गया ब्यौरा के अलावा इस पूरे वर्ष में अनेक इसी तरह के अभियानों में बल के कई साहसी जवानों ने कुबार्नीयां दी है। सीआरपीएफ समाचार कर्तव्य पथ पर बिछुडे अपने इन वीर साथियों को नमन करता है तथा ईश्वर उनकी आत्म शान्ति की प्रार्थना करता है:-



हव० **मनीकुमार** 23 बटा० 7 जनवरी, 05 श्रीनगर (जम्मु-कश्मीर),
उ०नि० **वी. गोविन्द भाई** 54 बटा० 13 जनवरी, 05 दक्षिण (त्रिपुरा),
सि० **परमार गनपति भाई** 54 बटा०, 13 जनवरी, 05, दक्षिण (त्रिपुरा),
उ०नि०, **अजमीन अनसारी,** 50 बटा० 15 जनवरी, 05, श्रीनगर,
सि० **वेद पाल** 50 बटा० 15 जनवरी, 05 श्रीनगर,
सि० **रक्षाराम पाठक** 141 बटा० 19 जनवरी, 05 पुलवामा,
हव० **मोहिन्दर सिंह** 77 बटा० 24 फरवरी, 05 श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर),
सि० **सयद शमसुददीन** 77 बटा0 24 फरवरी, 05 श्रीनगर
सि० **प्रेम सिंह तोमर** 66 बटा० 6 मार्च, 05 ढलाई (त्रिपुरा),
हव० **चन्द्रेश सिंह** 140 बटा० 5 मई, 05 कानकेर (छतीसगढ़),
सि० **श्याम लाल** 140 बटा० 5 मई, 05 कानकेर (छतीसगढ़),

सि० **दीपक शर्मा** 138 बटा० 23 मई 05 बस्तर (छतीसगढ़).
सि० **विजय प्रताप** 138 बटा० 23 मई, 05 बस्तर (छतीसगढ़),
सि० **मोरटेट विलास पिराजी** 138 बटा० 23 मई, 05 बस्तर (छतीसगढ़),
सि० **सोयेल राना मण्डल** 138 बटा0 23 मई, 05 बस्तर (छतीसगढ़),
उ०नि० **ईश्वर सिंह** 45 बटा० 31 मई, 05 पश्चिमी चमपरान (बिहार),
सि० **नितिन मसुल** 45 बटा० 31 मई, 05 पश्चिमी चम्परान (बिहार),
स०कमा० **श्री आर.एस. मिश्रा** 119 बटा० 1 जून, 05 दंतवाडा (छतीसगढ़),
हव० **राम कुमार सिंह** 119 बटा० 1 जून, 05 दंतवाडा (छतीसगढ़),
सि० **अजयपाल सिंह भदोरिया** 119 बटा० 1जून,05 दंतवाडा (छतीसगढ़),
सि० **राम सिया मिश्रा** 119 बटा० 1 जून, 05 दंतवाडा,
सि० **कोरटेशा के.** 119 बटा० 1 जून, 05 दंतवाडा (छतीसगढ़),
सि० **मथुरा सिंह तोमर** 119 बटा० 1 जून, 05 दंतवाडा (छतीसगढ़),
निरी०(म०) **टी.आर.वी. प्रसाद** 69 बटा० 13 जून, 05 पुलवामा,
उ०नि०(म०) **ए.बी. अम्बर राव** 69 बटा० 13 जून, 05 पुलवामा,
उ०नि० **रमेशकुमार भगल** 69 बटा० 13 जून, 05 पुलवामा,
हव० **शालिगराम जगतप** 45 बटा० 23 जून, 05 मोतीहारी,
ह०(आर.ओ.) **ए. शक्तिवेल** 78 बटा० 29 जून, 05 डोडा,
सि० **अनीश फिलीप** 78 बटा० 29 जून, 05 डोडा,
ह०(आर.ओ.) **राम भूवन यादव** 5 बटा० 29 जूलाई, 05 श्रीनगर,
सि० **सुखवीन्दर सिंह** 39 बटा० 11 अगस्त, 05 तिनसुखिया,
सि० **मोहिन्दर पाल** 130 बटा० 11 अगस्त, 05 पश्चिम इम्फाल,
सि० **एच. आर. गेदम** 5 बटा० 17 अगस्त, 05 अंनतनाग,
उ०नि० **मिथाई लाल** 67 बटा० 23 अक्टूवर, 05 श्रीनगर,
हवा० **निशान सिंह** 132 बटा० 12 नवम्बर, 05 तमेंगलांग (मणीपुर),
सि० **विजय कुमार सिंह** 132 बटा० 12 नवम्बर, 05 तमेंगलांग,
सि० **संजीव कुमार सिंह** 132 बटा० 12 नवम्बर, 05 तमेंगलांग,
सि० **दीपक शर्मा 155** बटा० 16 नवम्बर, 05, पुलवामा,

कावा समाचार

केरिपुबल अकादमी, कादरपुर (गुडगांवा) में कावा द्वारा एच.आई.वी./एड्स पर कार्यशाला

सी.आर.पी.एफ. अकादमी (गुड़गाँव) कादरपुर में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी प्रशिक्षुओं में एचआईवी/एडस के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए कावा ने 3 दिसम्बर,2005 को राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन के सहयोग से एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि एचआईवी/एडस एक विश्व व्यापी समस्या है, इसका अभी तक कोई समाधान नहीं निकला है, ऐसा नहीं है कि इसके इलाज के लिए प्रयास नहीं किये जा रहे हैं, हमारे डॉक्टर व वैज्ञानिक इसका इलाज खोजने में प्रयासरत हैं, लेकिन बैहरहाल इसकी जानकारी ही इससे बचाव है। श्रीमती सिन्हा ने कहा कि आज के युवा कल देश के कर्णधार बनेगें, उनके कंधों पर ही देश के विकास एवं सुरक्षा का दायित्व आना है। अतः उन्हें इस भयानक महामारी के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। श्रीमती सिन्हा ने प्रशिक्षुओं का आहवान किया कि वे एचआईवी/एड्स की पूरी जानकारी प्राप्त करें ताकि इसके सम्बन्धित फैल रही तरह तरह की भ्रांतियों से, जब वे प्रशिक्षण के बाद फील्ड में जाए तो अपने अधीनस्थ कार्मिकों को अवगत करा सकें। नेतृत्व कर्ता होने के नाते उनका यह दायित्व है कि वे अपने अधीन कार्यरत जवानों के सुख, दुख से अवगत हो, उनकी परेशानियों को समझें। अज्ञानता वंश एड्स रोगियों के साथ हो रहे बुरे वर्ताव के वारे में बताएँ कि व्यावहारिक जीवन में एड्स के रोगियों के प्रति प्यार बाँटे, नफरत नहीं।

कावा सदस्या श्रीमती आरती महापात्र ने प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ चर्चा के दौरान एचआईवी/एड्स के बारे में जानकारी दी तथा उनसे इस महामारी को जड से उखाडने के लिए सतत् प्रयास करने को कहा। श्रीमती आरती ने प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि जब कभी वे अपने जवानों के साथ चर्चा करें, इस बीमारी के भयानक परिणामों के बारे में उन्हें जरूर बताए क्योंकि जितनी उग्रवादियों से लोगों की सुरक्षा जरूरी है उतनी ही इस महामारी से स्वयं अपने परिवार व देश को बचाना जरूरी है।



कावा द्वारा एड्स पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेती कावा सदस्या एंव केरिपुबल अकादमी के अधिकारी व प्रशिक्षु

कार्यशाला में नाको के प्रतिनिधि श्री विलाल अहमद ने भी प्रशिक्षुओं को एचआईवी/एड्स क्या है ? कैसे फैलता है ? इसके बचाव के क्या क्या तरीके है और यदि किन्ही कारणों से कोई इससे पीड़ित हो गया है तो उसके साथ कैसा व्यवहार एवं आचरण किया जाए आदि के बारे में विस्तार से बताया। श्री विलाल ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा एड्स के प्रति देशव्यापी चल रही इस जंग में युवा प्रशिक्षुओं को शामिल होकर अपने परिवार, समाज, बल, देश तथा विश्व को मुक्त कराने के लिए आगे आकर कार्य करने का आहवान किया। उन्होंने बताया कि अफ्रीका के कई देशों में तो एचआईवी संक्रमण 39 प्रतिशत तक पहुँच चुका है। और हालात इतने बुरे है कि परिवार का मुखिया 8-10 वर्ष का बच्चा है। इस बीमारी के कारण मूल पीढ़ी लगभग समाप्त होती नजर आ रही है। बल के कार्यों को ध्यान में रखते हुए इस बात पर भी प्रकाश डाला कि कभी-कभी यह बीमारी गहरे घावों से भी फैलती है। श्री विलाल ने बल कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों के बीच एचआईवी/एडस के प्रति जागरूकता पैदा करने में कावा द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि कावा गॉव - देहात से आई बल कार्मिकों की महिलाओं, हो सकता जिन्होनें कभी इस बीमारी के नाम के बारे में भी न सुना हो, को जानकारी देकर बडे पुण्य का काम कर रही है। क्योंकि इससे ग्रसित व्यक्ति ही केवल प्रभावित नहीं होता बल्कि

उसका सारा परिवार बिखर जाता है।

श्री विलाल अहमद के सत्र के बाद प्रशिक्षु अधिकारियों को अपनी शंकाओं के समाधान हेतु प्रश्न पूछने का अवसर भी दिया। अधिकारियों ने अपने प्रश्नों को लिखकर प्रश्न बाक्स में डाला, इस तरह कुल 22 प्रश्न विभिन्न अधिकारियों द्वारा पूछे गये। इन प्रश्नों का समाधान कावा के संयुक्त सचिव श्री प्रभात त्रिपाठी ने किया। श्री त्रिपाठी ने प्रशिक्षुओं से कहा कि शंका/संकोच से बीमारी सदैव बढ़ती है। अतः सभी प्रशिक्षु अधिकारी इस बीमारी के बारे में अध्ययन करें, जाने और समझे। किसी भी तरह की कोई शंका हो तो निःसंकोच पूछे, तभी वे आगे चलकर अपने जवानों को इस बारे में जानकारी दे सकेगें।

इस अवसर पर बल के महानिदेशक श्री जे०के० सिन्हा, पुलिस महानिरीक्षक (संभरण) श्री एस०एस० रावत, उप महानिरीक्षक श्री आर०के० गौड़, (प्रशिक्षण प्रभारी), ग्रुप केन्द्र, गुडगॉव के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री इमरान मिर्जा सहित प्रशिक्षक स्टाप ने भी इस कार्यशाला में हिस्सा लिया। बल के महानिदेशक श्री सिन्हा ने कावा तथा नाको द्वारा इस महामारी को रोकने में किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि एक ओर जहॉ कावा महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है वहीं दूसरी ओर उनके स्वास्थ्य व शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर उन्हें एक जागरूक गृहणी बनाने में सक्रिय है ताकि वे आधुनिकता के इस दौर में स्वयं अपने परिवार तथा बच्चों को स्वस्थ्य एवं सुरक्षित रख सके। श्री सिन्हा ने कावा द्वारा एड्स नियंत्रण के संबंध में की जा रही पहल का स्वागत किया और कहा कि कि के०रि०पु०बल देश का पहला ऐसा अर्द्ध-सैनिक बल है जिसने इस बीमारी से बल कार्मिकों के संक्रमित होने को स्वीकारा है।

श्री सिन्हा ने नाको के प्रयासों की, प्रशंसा करते हुए कहा कि नाको हर स्तर पर चाहे हमारे देहाती अति पिछले ग्रामीण क्षेत्र के लोग हों या आधुनिकता के प्रतिविम्व शहरी क्षेत्र के रहने वाले लोग या फिर अनुशासित सैनिक एवं अर्द्धसैनिक बल के जवान, सभी को इस लाइलाज बीमारी से बचाने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहा है। श्री सिन्हा ने प्रशिक्षुओं से भी कहा कि वे अपना अनुशासित व नैतिक चरित्र बनाये रखे तभी एक अच्छे कुशल नेतृत्वकर्ता बन सकते है तथा अपने अधीनस्थों को नैतिक दायित्व के निर्वहन के लिए कह सकते हैं। इसलिए आपका हर कार्य उत्कृष्ट होना चाहिए।

इस कार्यशाला में **DGAFMS** एवं **CHHAYA DHAWANI** द्वारा तैयार की गई एचआइवी/एडस से संबन्धित फिल्म “आखिरी दस्तक” दिखाई गई। कार्यशाला में प्रशिक्षु अधिकारियों ने एचआईवी/एड्स से संबन्धित अपनी शंकाओं के बारे में पूछा तथा अपने आपको किन्ही भी परिस्थितियों में नैतिक रहने की प्रतिबद्धता दोहराई।



केरिपुबल अकादमी, कादरपुर में कावा द्वारा एचआईवी/एड्स पर प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यशाला में विस्तृत जानकारी देते नाको के प्रतिनिधि श्री विलाल अहमद

कावा सदस्या श्रीमती जमुना रावत ने नाको के अधिकारियों एवं अकादमी के प्राधिकारियों का इस कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया और आशा व्यक्त की कि भविष्य में कावा द्वारा आयोजित इस तरह की अन्य सभी कार्यशालाओं के आयोजन में नाको तथा बल के महानिदेशक सहित वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहेगा ताकि कावा ऐसे संवेदनशील विषयों पर और अधिक कार्य कर सके।

ग्रुप केन्द्र, सिन्दरी में परिवार कल्याण दिवस

ग्रुप केन्द्र, सिन्दरी में 11 नवम्बर, 2005 को परिवार कल्याण दिवस, 2005 का आयोजन हुआ। समारोह की अध्यक्षता ग्रुप केन्द्र सिंदरी के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री हेमराज ने की। इस समारोह में झारखण्ड राज्य के 16 जिलों की कुल 25 विधवाओं एवं आश्रितों को आमंत्रित किया गया, परन्तु उनमें से केवल 06 आश्रितों ने समारोह में भाग लिया।



आश्रितों का स्वागत करते हुए श्री हेमराज ने उन्हें परिवार कल्याण दिवस मनाये जाने के बारे में बताया कि इसे आयोजित करने का उद्देश्य शहीद कार्मिकों के आश्रितों की समस्याओं का समाधान करना है। सरकार एवं केरिपुबल द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं सहित भुगतान संबंधी सभी जानकारियाँ दी। आश्रितों से यह अपील की गई कि यदि उनकी कोई समस्या/कठिनाई हो तो वे बेझिझक बताये जिससे उनका हल विभागीय स्तर पर करने के लिए समुचित कार्रवाई की जा सके। आश्रितों एवं उनके साथ आए हुए रिश्तेदारों की चिकित्सा जांच की और आवश्यक दवाईयां उपलब्ध कराई गई। जलपान एवं भोजन के पश्चात आश्रितों को आने एवं जाने का किराया देकर रूखसत किया गया।

ग्रुप केन्द्र, सिन्दरी में परिवार कल्याण शिविर का आयोजन



ग्रुप केन्द्र, सिन्दरी में 17 से 19 नवम्बर, 05 तक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस चिकित्सा शिविर का उद्घाटन कावा कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती वीणा सक्सेना द्वारा किया गया। कावा द्वारा लगाये गए इस चिकित्सा शिविर में इस ग्रुप केन्द्र की चिकित्सा अधिकारी डॉ० (श्रीमती) सुनीता कुमारी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस चिकित्सा शिविर में अपने ग्रुप के कार्मिकों के अलावा अन्य स्थानीय गरीब लोगों का भी इलाज कर उनको भी दवाइयाँ दी गई। तीन दिन तक लगे इस चिकित्सा शिविर में लगभग 500 लोगों को दवाईयाँ दी गई। चिकित्सा शिविर के समापन पर कावा अध्यक्षा ने ग्रुप केन्द्र के कार्मिकों के परिवारों को भी कावा के उद्देश्य के बारे में बताया।

परिवार कल्याण केन्द्र नीमच में कौमीय एकता दिवस का आयोजन

परिवार कल्याण केन्द्र नीमच में 19 से 25 नवम्बर, 2005 तक कौमी एकता दिवस के रूप में मनाया गया। 22 नवम्बर को राष्ट्र निर्माण में भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका एवम् भागीदारी के विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें निम्नलिखित पहलुओं पर चर्चा की गई:—

- संयुक्त पारेवार के लाभ
- परम्परागत एकीकृत परिवार अपनाने से फायदे,
- पुनर्विवाह
- जच्चा बच्चा स्वास्थ देखभाल
- प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत अनपढ़ महिलाओं को शिक्षित करने के लिये लगातार परिवार कल्याण केन्द्र में कक्षाएं चलाने संबन्धी चर्चा।
- स्टेशन अस्पताल केरिपुबल नीमच द्वारा विभिन्न नियोजन संबन्धी सामग्री बांटी गई तथा महिला मुख्य चिकिसा अधिकारी ने महिलाओं को परिवार सीमित रखने के विभिन्न तरीकों के बारे में बताया।
- परिवार कल्याण केन्द्र की गरिमा बढ़ाने के लिए इसमें कार्यरत सदस्यों को मेहनत और लगन से कार्य करने हेतु प्रेरित किया गया।

"सी.आर.पी.एफ. वालो से सीख लो"

हर समय खुशहाल रहना सी.आर.पी.एफ वालों से सीख लो।
सब में रहकर अलग रहना सी.आर.पी.एफ. वालों से खीख लो,
झंझटों में रहकर बचना सी.आर.पी.एफ. वालों से सीख लो,
ऑख गैरों से लडाना बच्चा-बच्चा जानता।
ऑख खुद से लडाना सी.आर.पी.एफ. वालों से सीख लो,
औरों की ऑखों में आने के लिए सब सज रहो।
अपनी आँखों से सामना करना सी.आर.पी.एफ. वालो से सीख लो,
भय से डरकर भागना चाहे जिससे सीख लों।
घूसखौरी, रिश्वतखौरी, भ्रष्टाचार के दलदल में सब फस रहे।
देखते है सी.आर.पी.एफ. वाले तो अपनी, आन के लिए सज रहे,
जीते जी बचाने के लिए सब वैध है।
हर समय मर-मर के बचना सी.आर.पी.एफ. वालो से सीख लो,
सुख में सुखी, दुख में दुखी रहना नर जानते।
हर समय आन्नद में रहना सी.आर.पी.एफ. वालो से सीख लो,
नेता बनकर संसद में जाना, बहुतेरो से सीख लो।
संसद में रहकर संसद पे मरना सी.आर.पी.एफ. वालो से सीख लो,

हव०/(आर.ओ) राजेश कुमार डी/60बटा. सिगलन प्लाटून

“वतन”

वहारें है फिदा जिस पर यह है ऐसा चमन अपना हमारी यहा खुश नसीबी है कि भारत वतन है अपना।

जिस खाक ने पैदा किया उसमें समा जायें।
तमन्ना इतनी है कि हम अपने बतन के काम आ जायें।
वहारें हैं फिदा जिस पर यह है ऐसा चमन अपना।
हमारी यह खुश नसीबी है कि भारत वतन है अपना।
हिफाजत हम करें इसकी, इसे जन्नत बना जायें।
तमन्ना है कि हम अपने वतन के काम आ जायें।
भूला दें कोम के खातिर अपने रंजों राहत लो।
उठां लें अपने कन्धों पर अपने वतन की हर मुसीबत को।
बहादुर बन के हर तूफान से लड़ना सिखा जायें।
तमन्ना है कि हम अपने बतन के काम आ जायें।
यह भारत है हमारी मॉ हमें मॉ से हकीकत है।
इसकी लाज रखने में हमारी सबकी इज्जत है।
वतन के दुश्मनों पर हम कयामत बनके छा जायें।
तमन्ना है कि हम अपने वतन के काम काम आ जायें।

हव० अखलेश कुमार गौतम
111 बटा० केरिपुबल

केरिपुबल के सिविक एक्शन कार्यक्रम

150 बटा० के सिविक एक्शन कार्यक्रम



8अक्टूबर, 2005 को जम्मू संभाग में आए अति बिनाशकारी भूकम्प से जम्मू संभाग के कुछ इलाकों में कई मकानों, इमारतों विशेषकर पूंछ में एतिहासिक किले व जम्मू में मुबारक-मण्डी कॉम्पलेक्स और कई सरकारी/निजी इमारतों को नुकसान पहुॅचा। कमाण्डेंट 150 बटालियन ने न केवल पूॅछ क्षेत्र में हुए संभावित नुकसान की जानकारी तुरन्त अपने उच्च अधिकारी को दी, बल्कि उनसे अनुमति प्राप्त करके अपनी बटालियन के उपलब्ध जवानों, गाड़ियों तथा हॉस्पीटल-स्टॉफ के साथ सबसे पहले पहुॅचकर भूकम्प प्रभावित लोगों को प्राथमिक चिकित्सा, पीने का पानी व खाने की सामग्री इत्यादि उपलब्ध करवाई। इस बटालियन के बहुत से जवान स्वेच्छा से रक्तदान हेतु भी आगे आए। पूॅछ क्षेत्र में तैनात भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारी ब्रिगेडियर संधू ने अपने दल-बल के साथ भूकम्प प्रभावित क्षेत्र में पहुॅचने पर वहॉ पहले से ही 150 बटालियन के कार्मिकों को प्रभावित लोगों की सेवा एवम् सहायता करते पाया, तो उन्होंने कमाण्डेंट 150 बटालियन द्वारा की गई पहल की सराहना की एवम् तत्पश्चात् राहत एवम् बचाव कार्य का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया। कमाण्डेंट 150 बटालियन एवम् उनकी बटालियन के अन्य कार्मिकों द्वारा निःस्वार्थ एवम् जनकल्याण भाव से किए गए राहत एवम् बचाव कार्य के लिए पूरी बटालियन की प्रशंसा की।

22 बटा० के सिविक एक्शन कार्यक्रम



22बटा. द्वारा रणाकुची (हिलचा) मनसा मन्दिर प्रांगण में सिविक एक्शन कार्यक्रम 2005 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नलबाडी जिले के एस.पी.डा० शरत फुकन द्वारा किया गया। सिविक एक्शन कार्यक्रम में बटा० द्वारा 41,000 रूपये मूल्य की खेल-कूद पठन पाठन व लेखन सामग्री जिले के विभिन्न स्कूली छात्र छात्राओं को बांटी गयी। इस अवसर पर वाहिनी के जवानों व स्कूली छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। इस कार्यक्रम में बटा० अधिकारी व जवानों के अलावा नजदीकी गांव के स्कूलों के पाँच सौ से अधिक लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बटा० कमाण्डेंट ने जनता से अपील की कि इस प्रदेश व जिले को उन्नति व प्रगति के लिए वह सुरक्षा बलों को अपना सहयोग दे ताकि उग्रवाद को जड से मिटाया जा सके। और प्रदेश के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर एक अच्छे नागरिक बन सके ताकि उन पर यह देश, प्रदेश व उनका परिवार गर्व करे।

29 बटा० के सिविक एक्शन कार्यक्रम



कोकराझाड़ जिले के सालाकांटी बीटीपीएस में स्थित 29वीं बटा० केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने आतंकवाद से लड़ने के साथ ही साथ जिले में जन कल्याण कार्यक्रमों का आयोजन कर स्थानीय लोगों का दिल जीता है। सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत बटालियन ने सालाकाटी बालिका विद्यालय के प्रांगण में एक शौचघर बनवाया। इस का उद्घाटन करते हुए बटालियन के कमांडेंट नीरज कुमार ने कहा कि हम जनता के सेवक तथा रक्षक दोनों ही हैं। इसलिए वर्दी से डरने की जरूरत नहीं है। वर्दी तो आप लोगों की रक्षा के लिए पहनी हैं। इसलिए उन्होने बच्चों से अपील की कि खाकी वर्दी से डरें नहीं। अगर बच्चे ही वर्दी से डरने लगेंगे तो वर्दी पहनने का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता है। वर्दी से तो देश के दुश्मन डरते हैं। आप लोग तो देश के सच्चे नागरिक हैं। हम लोग यहां आतंकवाद से लड़ने आये हैं ताकि इस देश की जनता एवं छोटे-छोटे बच्चों का भविष्य संवर सके। आप चाहें तो आतंकवाद को जड़ से मिटाने में हमारी मदद कर सकते है। इस अवसर पर विद्यालय के सभी बच्चों को लेखन एवं पठन-पाठन सामग्री का वितरण किया गया।

द्रुत कार्य बल द्वारा राहत एवं बचाव कार्य



101बटा. आरएएफ अपनी प्रारम्भिक जिम्मेदारी, आन्तरिक कानून व्यवस्था सामान्य बनाने एवं प्राकृतिक आपदाओं के समय स्थानीय प्रशासन के साथ राहत एंव बचाव कार्य में हर सम्भव मदद करती है। बल की कम्पनियॉ खाली समय में बटालियन परिसर में व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ प्राकृतिक आपदा की स्थिति के दौरान किये जाने वाले राहत एंव बचाव कार्य का कठिन अभ्यास भी करती है। बटालियन की सी-101 द्वारा अपने नियमित अभ्यास के दौरान मकानों में आग लगने की दशा में किये जाने वाले राहत एवं बचाव कार्यों का अभ्यास किया ताकि समय पर प्रभावित व्यक्तियों को संकट से बाहर सुरक्षित निकाला जा सके एवं जनता के जान माल की रक्षा की जा सके।

116 बटा० में सतर्कता सप्ताह का आयोजन



केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार पुलिस उप महानिरीक्षक (परि०) केरिपुबल बोगाईगांव के तत्वाधान में 116 बटा० केरिपुबल मुख्यालय में 7 से 11 नवम्बर, 2005 तक सर्तकता सप्ताह मनाया गया तथा इस उपलक्ष्य में एक वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। 116 बटा० के द्वि०क०अ० श्री जयराम यादव ने जवानों को सत्य निष्ठा की शपथ दिलाने के पश्चात दो मिनट का मौन रखकर पूर्व राष्ट्रपति श्री के० आर० नारायण को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। वाद बिवाद प्रतियोगिता में 20 कार्मिक शामिल हुए। वाद विवाद प्रतियोगिता में भ्रष्टाचार विषय के पक्ष तथा विपक्ष में बोलना था, पक्ष में बोलने के लिए सि०बी०पी० सिंह 116 बटा० को प्रथम स्थान, सि० निर्मल ठाकुर को दूसरा, सि० चालक एच०एस० तिवारी को तीसरा जबकि विपक्ष में बोलने के लिए सि० ए०के० मिश्रा को प्रथम, सि० राजबीर सिंह को दूसरा एवं उप निरी० अशोक कुमार को तीसरा विजेता घोषित किया गया। प्रतियोगिता के अन्त में श्री जयराम यादव द्वारा विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार दिये गये। इस अवसर पर श्री यादव ने सभी जवानों को यह सुझाव दिए कि लोक सेवक होने के नाते निष्पक्ष ईमानदार होने की छवि बनाए और अपने कार्यकलापों में सुधार लाए तथा भ्रष्टाचार रहित समाज व देश की स्थापना में अपना बहुमूल्य सहयोग दें।

144 बटा० द्वारा गॉधी जयन्ती समारोह



2अक्टूबर, 2005 को विगत वर्षों की भाँति, 144 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, नौगॉव के अधिकारियों तथा जवानों ने गॉधी जयन्ती का समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया। समारोह का शुभारम्भ बटालियन ने एक अलग रूप से किया। बटालियन के सभी अधिकारी तथा जवान नौगॉव स्थित अनाथ आश्रम गये। वहॉ पर साफ-सफाई की तथा बच्चों को दोपहर का भोजन वितरित किया। भोजन अनाथाश्रम में बटालियन के जवानों ने तैयार कर वितरित किया। तत्पश्चात बटालियन के कमाण्डेन्ट सहित सभी ने आश्रम के बच्चों एवं स्टाफ के साथ भोजन किया। इस आयोजन की प्रेरणा स्त्रोत रही श्रीमति गोगोई, जिनकी प्रेरणा व अथक प्रयासों से यह आयोजन सफलता पूर्वक आयोजित हुआ।



इस अवसर पर सायंकाल के समय बटालियन के जवानों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कियें जिसमें नौगॉव स्कूली बच्चों के साथ-साथ नौगॉव शहर के स्थानीय कलाकारों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में बटालियन के अधिकारियों, जवानों के साथ-साथ उनके परिवार के सदस्यों तथा आसपास के स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। समारोह में कमाण्डेंट श्री एल०सी० गोगोई ने बटालियन के 78 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को ट्रैक सूट बॉटें तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों द्वारा बल को दी जा रही सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उनका उत्साह बढाया। श्री गोगोई ने बताया कि विश्व के किसी भी नगर में अगर महात्मा गॉधी जी की सबसे अधिक प्रतिमायें है तो वह शहर लंदन है। और ये प्रतिमायें महात्मा गॉधी जी के सम्मान में उन अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गई है जिन्हें महात्मा गॉधी जी ने भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। अन्त में गॉधी जी को शत्-शत् नमन कर उनके उपदेशों को अपने जीवन में अपनाने का सभी ने संकल्प लिया।

पश्चिमी सेक्टर में राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु कवि गोष्ठी का आयोजन



19 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, गावंडी स्टेशन रोड, देवनार, मुम्बई में एक कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता पश्चिमी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री ए.के.माथुर ने की। अन्तर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत एक विश्वविद्यालय समतुल्य संस्थान है जहां पर जनसंख्या विज्ञान में अध्यापन, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण कार्य संचालित किए जाते हैं।

काव्य गोष्ठी में मुम्बई के जाने माने पत्रकार व कवि श्री कैलाश सेंगर, श्री अजय अटपटू, श्री गौरव कुमार शर्मा आदि ने अपनी-अपनी रचनाएं सुनाई।

काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए श्री ए० के० माथुर ने जनसंख्या विज्ञान संस्थान एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह दुख की बात है कि हम अपने सरकारी काम-काज में आज भी विदेशी भाषा का प्रयोग करते है, जो हमारी गुलाम मानसिकता की परिचायक है। वास्तव में कोई भी भाषा कठिन या सरल नहीं होती है। आवश्यकता है भाषा के प्रति मानसिकता की, जब तक हिंदी के प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन नहीं आएगा तब तक इसका विकास नहीं हो सकता। इतना अवश्य है कि अंग्रेजी को शुरू से रोजगार से जोड़ देने के कारण इसका विस्तार देश में अधिक हुआ है। इस अवसर पर श्री माथुर ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की तथा राजनीति पर आधारित एक व्यग्गं रचना “मैंने

तुम्हारा मत पाया है, तुम भी मुझसे क्रुद्ध मत पाओ" पढ़ी।

इसी तरह भारतीय विमान पत्न प्राधिकरण, पश्चिमी क्षेत्र मुख्यालय, मुम्बई द्वारा आयोजित समारोह की अध्यक्षता के लिए पुलिस महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर श्री ए० के० माथुर को आमंत्रित किया गया, इस अवसर पर विमान पत्तन प्राधिकरण के अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए श्री ए.के. माथुर ने रोचक तरीके से खेल-खेल में हिन्दी सीखने के तरीके बताते हुए सभी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिन्दी के समन्वय पर जोर दिया। इस अवसर पर उन्होंने अपनी एक रचना भी सुनाई।

72वीं बटा० के कार्मिकों की झारखण्ड के पुलिस महानिदेशक द्वारा प्रशंसा

72वीं बटा० के अधिकारियों एवं जवानों द्वारा 8 से 13 अगस्त, 2005 तक झारखण्ड पुलिस के साथ संयुक्त रूप से चलाये गये ब्लैक टॉप नामक परिचालन अभियान में अपने साहस का परिचय देते हुए भारी मात्रा में विस्फोटक एवं अन्य सामग्री जब्त की। ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, रॉची में इन बहादुर अधिकारियों तथा जवानों को सम्मानित करने के लिए एक समारोह आयोजित किया गया, जिसमें झारखण्ड के पुलिस महानिदेशक ने 72वीं बटा० के तीन अधिकारियों तथा 14 जवानों को परिचालन क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए टाईटन की घड़ी तथा फिलीप्स का रेडियों एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

झारखण्ड के महानिदेशक, ने केरिपुबल की परिचालनिक क्षमता तथा योग्यता की सराहना करते हुए कहा कि केरिपुबल के बहादुर अधिकारियों व जवानों ने झारखण्ड जैसे कठिन भौगोलिक परिस्थितियों वाले राज्य में भी अपने प्रशिक्षण एवं दक्षता के कारण प्रशासन एवं जनता का दिल जीत लिया है। उन्होनें विशेष तौर पर 72वीं बटा० की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस बटा० ने एक वर्ष से कम समय में ही बोकारो, गिरीडीह, हजारीबाग जिलों में तैनात रहते हुए अपनी परिचालनिक दक्षता के कारण विशेष स्थान बना लिया है। इस बटा० के जवानों ने झॅमरा, हिशीम तथा पारसनाथ जैसे विषम पहाड़ी स्थलों पर विशेष अभियान चला कर माओवादियों के हौसलों को पस्त किया है। समारोह में पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपुबल, सिंदरी द्वारा महानिदेशक, झारखण्ड को बल की ओर से एक स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया।

बल के महानिदेशक ने 72 बटा० के कार्यो को सराहा

बल के महानीदेशक श्री जे. के. सिन्हा, ने झारखण्ड के सिंदरी स्थित 167 वाहिनी, केरिपुबल के दीक्षांत समारोह में शामिल होने के लिए झारखण्ड दौरे के दौरान 72 बटालियन, केरिपुबल का भी दौरा किया तथा पत्रकार एवं इलक्ट्रोनिक मीडिया के प्रतिनिधियों से चर्चा की। झारखण्ड में पहली बार किसी बटा० ने स्वंय की मदद से

बनाइ गइ प्रो-फैबेकेड्ट हट्स को देखा। महानिदेशक ने 72वीं बटा० द्वारा इतनी अल्प अवधि में कमाण्डेन्ट श्री भानु प्रताप सिंह के नेतृत्व में प्रशासनिक/परिचालनिक क्षेत्रों में अर्जित की गई उपलब्धियों की सराहना की तथा उन्हें महानिदेशक का प्रशंसा पत्र/डिस्क दिये जाने तथा केन्द्रीय कल्याण निधि से बटा० की कल्याण निधि के लिए एक लाख की राशि तथा अधिकारी मैंस के लिए दो ए.सी. की स्वीकृति प्रदान करने की घोषणा की।

"यादें"

जब जब हमने तुझे "याद" किया है,
यादों के बदले में हमें दर्द दिया है।
चाहकर भी तुझे भूल न पाये,
पल पल तेरी याद सताये।
तू ही बता हम क्या करें,
जहर जुदाई का पिऊ मैं कैसे।
जीना हम को रास न आया,
जीवन बन गया मौत का साया।
बेबस और मजबूर हुऍ हम,
खुद गरजी से जब दूर हुऍ हम।
खुदा करे तू कभी याद न आये,
यादे तेरी बस दफन हो जाये।
करता हूॅ मैं बस यही फरियाद,
अपनो की कभी आये न "याद"।

बलबीर सिंह कॉग
सहायक कमाण्डेंट 37 बटा० केरिपुबल

अन्य खेल समाचार

इन्टर बटा० (आप्स) अनन्तनाग बैडमिंटन प्रतियोगिता



पुलिस उप-महानिरीक्षक (ऑप्स) अनन्तनाग के मार्ग दर्शन में 22 अक्टूबर, 05 को 154 बटालियन में बैडमिंटन प्रतियोगिता आयोजित की गई। (ऑप्स) अनन्तनाग यूनिटों की 10 टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। सिंगल मैच में 154 बटा० के सि० उमेश कुमार प्रथम स्थान पर रहे, द्वितीय स्थान पर 174 बटालियन के हव० अनिल कुमार एवं तृतीय स्थान पर 143 बटालियन के सि. नीमेश एम. रहे। डबल्स मुकाबले में भी 154 बटालियन के सि० उमेश कुमार एवं स.उ.नि. (मं.) बीनू मैथ्यू ने संयुक्त रूप से प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान 143 बटालियन के सहायक कमाण्डेन्ट श्री दुर्गा राम एवं सि० ब्रिजेश एम. एवं प्रभात रंजन को मिला। इस प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि श्री जेड. एफ. खान, पुलिस उप-महानिरीक्षक, अनंतनाग (परि०) रेंज थे। श्री जेड. एफ. खान ने प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किये।

प्रथम राजीव गांधी अन्तर्राष्ट्रीय जिम्नास्टिक टूर्नामेन्ट में केरिपुबल को दो स्वर्ण पदक



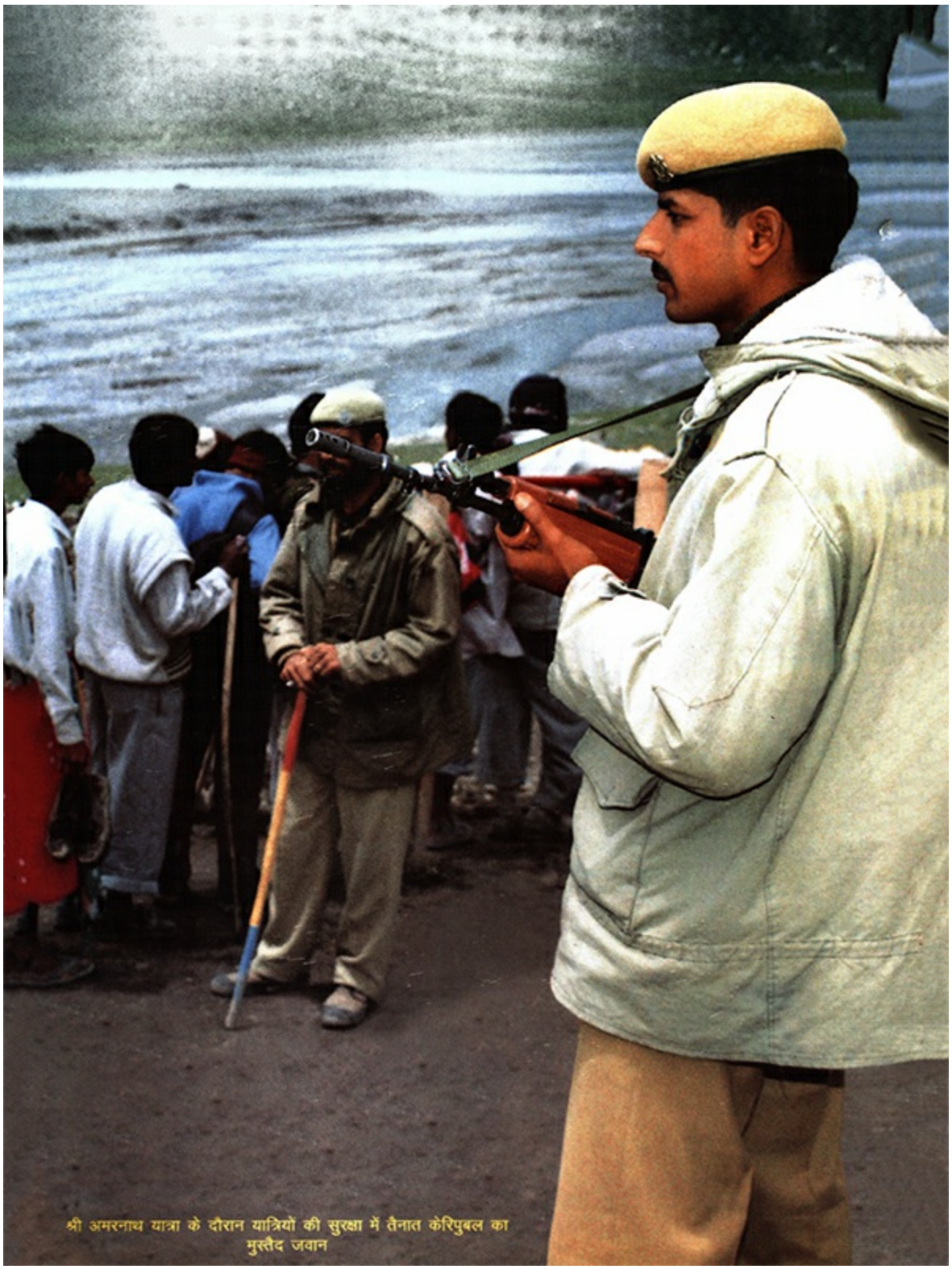
ग्रुप केन्द्र, इलाहबाद में प्रथम राजीव गॉधी अन्तर्राष्ट्रीय जिमनास्टिक टूर्नामेन्ट 18 से 21 अगस्त, 05 तक हैदराबाद में सम्पन्न हुआ। 93 बटा० केरिपुबल के निरीक्षक मयंक श्रीवास्तव ने भारत बी टीम की ओर से इसमें भाग लिया एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 02 स्वर्ण प्रदक प्राप्त किये। मयंक को इस खेल में सर्वश्रेष्ठ खिलाडी भी चुना गया। इस प्रतियोगिता में भारत के अलावा श्रीलंका, बंग्लादेश, मलेशिया, ईरान, सऊदीअरब एवं फिलीपीन्स के खिलाड़ियों ने भी भाग लिया था।



विश्व एड्स दिवस पर बल मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में एड्स क्विज में भाग लेने वाले कार्मिकों को पुरस्कृत करते बल के महानिदेशक



प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए कावा द्वारा आयोजित केरिपुबल अकादमी, कादरपुर में एड्स जागरूकता कार्यशाला में भाग लेती कावा सदस्या एवं अधिकारीगण



श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा में तैनात केरिपुबल का मुस्तैद जवान